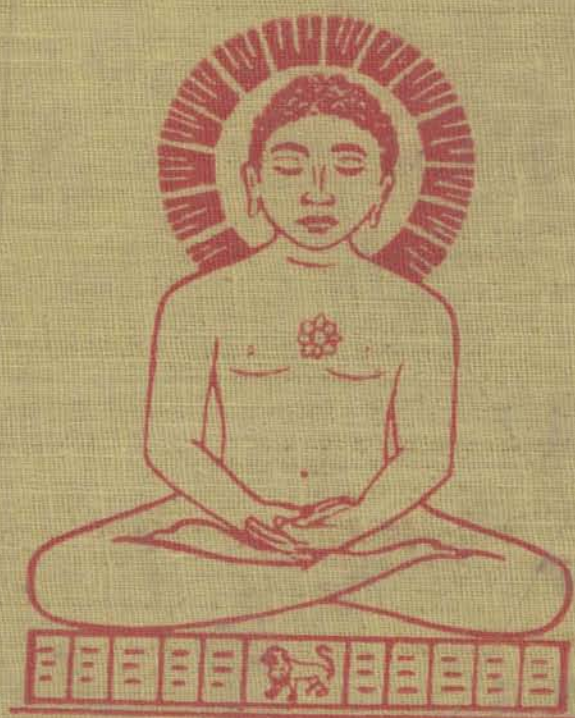


उवंगसुत्ताणि

४

[खण्ड १]

ओवाइयं * रायपसेणियं * जीवाजीवाभिगमे



वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में
निम्नगंध पाठ्यपत्र

उवंगसुत्ताणि ४

(खण्ड १)

ओवाइयं • रायपसेणियं • जीवाजीवाभिगमे

धावना प्रमुख :
आचार्य तुलसी

संपादक :
युवाचार्य महाप्रज्ञ

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूँ (राजस्थान)

प्रकाशक :

**जैन विश्व भारती,
लाडनू**

प्रबंध सम्पादक :

श्रीचन्द्र रामपुरिया,

आर्थिक सहयोग :

**श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)**

प्रकाशन तिथि :

**विक्रम सम्वत् २०४४ (दीपावली)
ई० १९८७**

पृष्ठांक : ८००

मूल्य

४००/-

मुद्रक :

**मित्र परिषद् कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित
जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनू (राजस्थान)**

On the occasion of Ācārya Tulsi Amrit Mahotsava Year

Niggantham Pāvayaṇam

UVAṄGA SUTTĀṆI

IV

(PART 1)

OVĀIYAM • RĀYAPASEṆIYAM • JĪVĀJĪVĀBHIGAME

(Original Text Critically Edited)

Vācanā-pramukha :
ĀCĀRYA TULSI

Editor :
YUVĀCĀRYA MAHĀPRAJÑA

Publisher :
JAIN VISHVA BHARATI
LADNUN (RAJASTHAN)

Publisher :

**JAIN VISHVA BHARATI
Ladnun—341 306**

Managing Editor :

Shrichand Rampuria,

By Munificence :

**Shri Ramlal Hansraj Golchha
Viratnagar (Nepal)**

Year of Publication :

**Vikram Samvat 2044 (Dīpāvalī
1987 A.D.**

Pages : 800

***Price i* 400/-**

Printers :

JAIN VISHVA BHARATI PRESS,

**[Established through the financial co-operation of
Mitra Parishad, Calcutta)**

Ladnun (Rajasthan)

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिवर्चनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोधपूर्ण-सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है :

संपादक :	गुवाचार्य महाप्रज्ञ
पाठ-संशोधन सहयोगी :	मुनि सुदर्शन
„	मुनि मधुकर
„	मुनि हीरालाल

शब्दकोश :

„

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूं कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

समर्पण

पुट्टो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणी जणि जस्स निच्चं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्षुस्स तस्स प्पणिहाणपुट्ठं ॥

वित्तीडियं आगममुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।
सज्झाय-सज्झाण-रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुट्ठं ॥

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम भाणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुट्ठं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था ।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से ।

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
श्रुत-सद्धान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से ।

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में ।
हेतुभूत श्रुत सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से ।



प्रकाशकीय

आगम संपादन एवं प्रकाशन की योजना इस प्रकार है—

१. आगम-सुत ग्रंथमाला—मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण ।
२. आगम-अनुसंधान ग्रंथमाला—मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण ।
३. आगम-अनुशीलन ग्रंथमाला—आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण ।
४. आगम-कथा ग्रंथमाला—आगमों से संबंधित कथाओं का संकलन और अनुवाद ।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रंथमाला—आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण ।
६. आगमों के केवल हिंदी अनुवाद के संस्करण ।

प्रथम आगम-सुत ग्रंथमाला में निम्न ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं—

- (१) दसवेआलियं तह उत्तरज्ज्ञयणाणि
- (२) आयरो तह आधारचूला
- (३) निसीहज्ज्ञयणं
- (४) उववाह्यं
- (५) समवाओ
- (६) अंगसुत्ताणि (खं० १)—इसमें आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग—ये चार अंग समाहित हैं ।
- (७) अंगसुत्ताणि (खं० २)—इसमें पंचम अंग भगवती प्रकाशित है ।
- (८) अंगसुत्ताणि (खं० ३)—इसमें ज्ञाताधर्मकथा, उपायकदशा, अंतकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं ।
- (९) नवसुत्ताणि (खं० ४)—इसमें 'आवस्सयं, दसवेआलियं' उत्तरज्ज्ञयणाणि, नंदी, अणुओगदाराइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहज्ज्ञयणं—ये नौ आगम ग्रंथ हैं ।

उक्त में से प्रथम पांच ग्रंथ जैन श्वेताम्बर तेरांथी महासभा, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुए हैं एवं अंतिम चार ग्रंथ जैन विश्व भारती, लाइन्स द्वारा प्रकाशित हुए हैं ।

द्वितीय आगम अनुसंधान ग्रंथमाला में निम्न ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं—

- १) दसवेआलियं

(२) उत्तराध्ययणाणि (भाग १ और २)

(३) ठाणं

(४) समवाजो

(५) सूयगडो (भाग १ और भाग २)

उक्त में से प्रथम दो ग्रन्थ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुए हैं और अंतिम तीन ग्रन्थ जैन विश्व भारती, लाहनों द्वारा प्रकाशित हुए हैं। दसवेआलियं का द्वितीय संस्करण भी जन विश्व भारती, लाहनों द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तीसरी आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला में निम्न दो ग्रन्थ निकल चुके हैं—

(१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन ।

(२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन ।

चौथी आगम-कथा ग्रन्थमाला में अभी तक कोई ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हो पाया है।

पाँचवीं वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला में दो ग्रन्थ निकल चुके हैं—

(१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति खं० १)

(२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति खं० २)

छठी ग्रन्थमाला में केवल आगम हिंदी अनुवाद ग्रन्थमाला के संस्करण के रूप में एक 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है।

उक्त प्रकाशनों के अतिरिक्त दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन (मूल पाठ मात्र) गुटकों के रूप में प्रकाशित किए जा चुके हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन उबंगमुत्ताणि, खंड १ में (१) ओवाइयं (२) रायपसेणियं और (३) जीवाजीवाभिगमे—इन तीन उपांग आगमों का पाठान्तर सहित मूलपाठ मुद्रित है। साथ ही साथ इन तीनों उपांगों की संयुक्त शब्दसूची भी अन्त में संलग्न कर दी गई है। भूमिका में इन ग्रन्थों का संक्षेप में परिचय प्राप्त है, अतः यहाँ इस विषय पर प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है।

आगम प्रकाशन कार्य की योजना में निम्न महानुभावों का सहयोग रहा—

(१) सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी)।

(२) रामलालजी हंसराजजी गोलछा, विराटनगर।

(३) स्व० जयचंदलालजी गोठी, सरदारनगर।

(४) रामपुरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, कलकत्ता।

(५) बेगराज भंडारलाल चोरडिया चेरिटेबल ट्रस्ट।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है। इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

यह ग्रन्थ जैन विश्व भारती के निजी मुद्रणालय में मुद्रित होकर प्रकाशित हो रहा है। मुद्रणालय के स्थापन में मित्र-परिषद्, कलकत्ता के आर्थिक-सहयोग का सौजन्य रहा, जिसके लिए उक्त

संस्था को अनेक धन्यवाद है।

यह ग्रन्थ आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित हो रहा है।

आगम-संपादन के विविध आयामों के वाचना-प्रमुख हैं आचार्यश्री तुलसी और प्रधान संपादक तथा विवेचक हैं युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी। इस कार्य में अनेक साधु-साध्वी सहयोगी रहे हैं।

इस तरह अथक परिश्रम के द्वारा प्रस्तुत इस ग्रन्थ के प्रकाशन का सुयोग पाकर जैन विश्व भारती अत्यंत कुतज्ञ है।

जैन विश्व भारती

१६-११-८७

लाडनूँ (राज०)

श्रीचंद रामपुरिया

कुलपति

सम्पादकीय

प्रस्तुत पुस्तक में तीन ग्रन्थ हैं—ओवाइयं, रायपमेणियं और जीवाजीवाभिगमे ।

ओवाइयं

औपपातिक का पाठ आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर स्वीकार किया गया है । प्रस्तुत सूत्र में वाचनान्तरों की बहुलता है । यह सूत्र वर्णनकोश है । इसलिए अन्य आगमों में स्थान-स्थान पर 'जहा ओववाइए' इस प्रकार का समर्पण-वचन मिलता है । उन आगमों के व्याख्याकारों द्वारा अपने व्याख्या-ग्रन्थों में अवतरित पाठ तथा कहीं-कहीं समर्पण-सूत्रों के पाठ औपपातिक के स्वीकृत पाठ में नहीं मिलते हैं । वे पाठ वाचनान्तर में प्राप्त हैं । समर्पण-वचन पढ़ने वालों के लिए यह एक समस्या बन जाती है ।

प्रस्तुत आगम का पाठ आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर ही नहीं, किन्तु अन्य आगमों व व्याख्या-ग्रन्थों में प्राप्त अवतरणों व समर्पणों के आधार पर भी निर्धारित होना चाहिए था । किन्तु समग्र अवतरणों व समर्पणों का संकलन हुए बिना वैसा करना संभव नहीं ।

इस विषय में कुछ संकलन हमने किया है—

भगवई

७।१७५	एवं जहा ओववाइए जाव
७।१७६	एवं जहा उववाइए (दो बार)
७।१९६	जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते
९।१५७	"जहा ओववाइए जाव एमाभिमुहे ।" "एवं जहा ओववाइए जाव तिविहाए" ।
९।१५८	"जहा ओववाइए जाव सत्यवाह" । "जहा ओववाइए जाव खत्तियकुंडग्गामे" ।
९।१६२	ओववाइए परिसा वण्णओ तहा भाणियव्वं ।
९।२०४	"जहा ओववाइए जाव मगगतसमणुत्तिहंती" । "एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्वं" ।
९।२०४	जहा ओववाइए जाव महापुरिसं
९।२०८	जहा ओववाइए जाव अभिनंदता
९।२०९	एवं जहा ओववाइए कूणिओ जाव निग्गच्छइ
११।५९	जहा ओववाइए
११।६१	जहा ओववाइए कूणियस्स
११।८५	जहा ओववाइए जाव गहणयाए

११।८८, १९८	एवं जहेव ओववाइए तहेव
११।१३८	जहा ओववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणवरे
११।१५४	एवं जहा दढपइणस्स
११।१५६	एवं जहा दढपइणो
११।१५६	जहा ओववाइए
११।१६६	जहा अम्मडो जाव बंभलोए
१२।३२	एवं जहा कूणिओ तहेव सव्व
१३।१०७	जहा कूणिओ ओववाइए जाव पज्जुवासइ
१४।१०७	एवं जहा ओववाइए जाव आराहमा
१४।११०	एवं जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया
१५।१८६	एवं जहा ओववाइए दढप्पइणवत्तव्वया
१५।१८६	एवं जहा ओववाइए जाव सव्वदुक्खाणमंतं
२५।५६६	जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए
२५।५७०	जहा ओववाइए जाव लूहाहारे
२५।५७१	जहा ओववाइए जाव सव्वगायं

भगवई वृत्ति

पत्र ७	ओपपातिकात् सव्याख्यातोऽत्र दृश्यः
पत्र ११	ओपपातिकवद्वाच्या
पत्र ३१७	“एवं जहा उववाइए” त्ति तत्र चेदं सूत्रमेवम्
पत्र ३१८	“एवं जहा उववाइए जाव” इत्यनेनेदं सूचितम्
पत्र ३१९	“जहा चेव उववाइए” त्ति तत्र चैवमिदं सूत्रम्
पत्र ४६२	“जहा उववाइए” त्ति तत्र चेदं सूत्रमेवं लेशतः
पत्र ४६३	“जहा उववाइए” त्ति तदेव लेशतो दृश्यते
पत्र ४६३	“एवं जहा उववाइए” तत्र चैतदेवं सूत्रम्
पत्र ४६३	“जहा उववाइए” त्ति चेदमेवं सूत्रम्
पत्र ४६३	“जहा उववाइए परिमावन्नओ” त्ति यथा कौणिकस्योपपातिके
पत्र ४७६	“जहा उववाइए” त्ति एवं चैतत्तत्र
पत्र ४७६	“जहा उववाइए” त्ति अनेन यत्सूचितं तदिदम्
पत्र ४८१	“जहा उववाइए” त्ति करणादिदं दृश्यम्
पत्र ४८२	“एवं जहा उववाइए” त्ति अनेन यत्सूचितं तदिदम्
पत्र ५१६	“जहा उववाइए” इत्येतस्मादतिदेशादिदं दृश्यम्
पत्र ५२०	“एवं जहा उववाइए” इत्येतत्करणादिदं दृश्यम्
पत्र ५२१	“एवं जहेवे” त्यादि “एवम्” अनंतरदशितेनाभिलापेन यथोपपातिके सिद्धान-
पत्र ५२१	धिकृत्य संहननाद्युक्तं तथैवेहापि
	वाक्यपद्धतिरूपपातिकप्रसिद्धाऽध्येता

पत्र ५४२	“जहा उववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे” त्ति यथौपपातिकेऽट्टणसाला व्यतिकरो-----
पत्र ५४५	“जहा दढपइन्ने” त्ति यथौपपातिके दृढप्रतिज्ञोऽधीतस्तथाऽयं वक्तव्यः तच्चैवम्
पत्र ५४५	“एवं जहा दढपइन्ने” इत्यनेन यत्सूचितं तदेवं दृश्यम्
पत्र ५४८	“जहा उववाइए” इत्यनेन यत्सूचितम्
पत्र ५४९	“जहा अम्मडो” त्ति यथौपपातिके अम्मडोऽधीतस्तथाऽयमिह वाच्यः
पत्र ५६३	“एवं जहा उववाइए जाव आराहण” त्ति इह यावत्करणादिदमर्थतो लेशेन दृश्यम्—
पत्र ५६३	“एवं जहे” त्यादिना यत्सूचितम्
पत्र ६६६	“एवं जहा उववाइए” इत्यादि भावितमेवाभ्मडपरिव्राजककथानक इति ।
पत्र ६२४	“जहा उववाइए” त्ति अनेनेदं सूचितम्
पत्र ६२४	“जहा उववाइए” त्ति अनेनेदं सूचितम्
पत्र ६२४	“जहा उववाइए” त्ति अनेनेदं सूचितम्

ज्ञातावृत्ति पत्र २ वर्णकग्रन्थोन्नावसरे वाच्यः—

विवागसुयं

१।१।७०	जहा दढपइण्णे
२।१।३६	जहा दढपइण्णे
२।१।०१	जहा दढपइण्णे

रायपसेणियं

सू० ३, ४	असोयवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया ओववाइयगमेणं नेया
सू० ६८८	एगदिसाए जहा उववाइए जाव अप्पेगतिया

रायपसेणिय वृत्ति

पृ० ३	सम्प्रत्यस्या नगर्या वर्णकमाह— (यहां औपपातिक का उल्लेख नहीं)
पृ० ८	यावच्छब्दकरणात् “सहिंए कित्तिंए नाए सच्छत्ते” इत्याद्यौपपातिकग्रन्थप्रसिद्ध- वर्णकपरिग्रहः
पृ० १०	अशोकवरपादपस्य पृथिवीशिलापट्टकस्य च वक्तव्यता औपपातिकग्रन्थानुसारेण ज्ञेया ।
पृ० २७	यावच्छब्दकरणाद्राजवर्णको देवीवर्णकः समवसरणं चौपपातिकानुसारेण ताव- द्वक्तव्यं यावत्समवसरणं समाप्तम्
पृ० ३०	यावच्छब्दकरणात् “आइकरे तित्थगरे” इत्यादिकः समस्तोपि औपपातिकग्रन्थ- प्रसिद्धो भगवत्तद्वर्णको वाच्यः, स चातिगरीयानिति न लिख्यते, केवलमौपपातिक- ग्रन्थादवसेयः
पृ० ३६	बह्वे उगमा भोगा इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तं सर्वमवसातव्यं यावत् समग्रापि राज- प्रभृतिका परिगत्युपासीता अवतिष्ठते

पृ० ११६ “एवं जहा उबवाइए तहा भाणियव्वं” इति एवं यथा औपपातिके ग्रन्थे तथा वक्तव्यम् । तच्च एवं

पृ० २८८ इत्यादिरूपा धर्मकथाऔपपातिकग्रन्थादवसेया

जंबुद्वीवपण्णत्ती

२।६५ एवं जाव णिग्गच्छइ जहा ओववाइए जाव आउलबोलबहुलं
२।८३ एवं जहा ओववाइए रुच्चेव अणगारवण्णओ जाव उड्डं जाणु
३।१७८ एवं ओववाइयगमेणं जाव तस्स

जंबुद्वीवपण्णत्ती वृत्ति

शा० वृ० पत्र १४ “वण्णओ” ति ऋद्धस्तिमितसमूहा इत्यादि
“ ” “ औपपातिकोपाङ्गप्रसिद्धः समस्तोपि वर्णको द्रष्टव्यः
“ ” “ विरातीतमित्यादिर्वर्णकस्तत्परिक्षेपि वनखण्डवर्णकसहितऔपपातिकतोऽवसेयः
“ ” “ “वण्णओ” ति अत्र राज्ञा “मत्तयाहिमवन्तमहन्ते” त्यादिको राजाश्च “सुकु-
मालपाणिपाये” त्यादिको वर्णकः प्रथमोपाङ्गप्रतिद्वोऽभिधातव्यः
“ ” “ यथा च समवसरणवर्णकं तथौपपातिकग्रन्थादवसेयं
“ ” “ “तए णं मिहिलाए णयरीए शिघाडगे” त्यादिकं “जाव” पंजलिउडा पज्जुवासंती”
ति पर्यन्तमौपपातिकगतमवगन्तव्यम्
एवोपाङ्गादवगन्तव्यमिति

शा० वृ० पत्र १४३ “यथौपपातिके” एवं यथा प्रथमोपाङ्गे निपातः, औपपातिक-
गमश्चार्यं

शा० वृ० पत्र १५४ यथौपपातिके सर्वोऽणगारवर्णकस्तथाऽत्रापि वाच्यः

शा० वृ० पत्र १५५ कियदावदित्याह—ऊर्ध्वजानुनी येषां ते ऊर्ध्वजानवः अत्र यावत्पद-
संग्राह्यः “अप्पेगइया दोमासपरिआया” इत्यादिकः औपपातिकग्रन्थो विस्तर-
भयान्न लिखित इत्यवसेयम्

शा० वृ० पत्र २६४ एवमुक्तक्रमेण औपपातिकगमेन—प्रथमोपाङ्गगतपाठेन तावद् वक्तव्यं यावत्तस्य
राज्ञः पुरतो महाश्वाः

शा० वृ० पत्र ३२५ वृक्षवर्णनं प्रथमोपाङ्गतोऽवसेयम्

सूरपण्णत्ती वृत्ति

पत्र २ यावच्छब्देनौपपातिकग्रन्थप्रतिपादितः समस्तोपि वर्णकः आश्नजणसमूहा” इत्या-
दिको द्रष्टव्यः

पत्र २ तस्यापि चतस्रस्य वर्णको वक्तव्यः स औपपातिकग्रन्थादवसेयः

पत्र २ तस्य राज्ञः तस्याश्च देव्या औपपातिकग्रन्थोक्तो वर्णकोऽभिधातव्यः

पत्र २ समवसरणवर्णनं च भगवत औपपातिकग्रन्थादवसेयम्

पत्र ३ “बह्वे उग्गा भोगा” इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तम्

पत्र ३ अत्र यावच्छब्दादिदमौपपातिकग्रन्थोक्तं द्रष्टव्यम्

चंद्रपण्णत्ती हस्तलिखित वृत्ति

पत्र ५	औपपातिकग्रन्थप्रसिद्धः समस्तोपि वर्णको द्रष्टव्यः स च ग्रन्थगौरवभयान्नलिख्यते केवलं तत एवौपपातिकादवसेयः
पत्र ५	औपपातिकग्रन्थोक्तो वेदितव्यः
पत्र ५	तस्य राजस्तस्याश्च देव्या औपपातिक ग्रन्थोक्तो वर्णकोऽभिधातव्यः
पत्र ५	समवसरणवर्णनं च भगवत औपपातिकग्रन्थादवसेयम्
पत्र ६	“बह्वे उग्गा भोगा” इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तं सर्वमवसेयम्

उवंगा

१।१४१	जहा दढपइण्णो
२।१३	जहा दढपइण्णो

दसाओ

१०।२	रायवण्णओ एवं जहा ओववातिए जाव चेल्लणाए—
१०।१४-१६	सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उववाइयगमेणं नेयव्वं जाव पज्जु- वासइ—

दसा. हस्त. वृत्ति

वृत्ति पत्र ११	औपपातिकग्रन्थप्रतिपादितः समस्तोपि वर्णको वाच्यः स चेह् ग्रंथगौरवभयान्न लिख्यते केवलं तत एवौपपातिकादवसेयः । दसा. ५।४
द० ५।५ ह०वृ० पत्र ११	चैत्यवर्णको भणितव्यः सोप्यौपपातिकग्रन्थादवसेयः
द० ५।६ वृ० पत्र ११	औपपातिकोक्तं पाठसिद्धं सर्वमवसेयं.....
द० १०।२ ह०वृ० पत्र २५	“तस्य वर्णको यथा औपपातिकानाम्नि ग्रन्थेऽभिहितस्तथा”
द० १०।२ ह०वृ० पत्र २५	विस्तरव्याख्या तूपपातिकानुसारेण वाच्या—
द० १०।३ ह०वृ० पत्र २५	आदिकरः यावत्करणात्.....समस्तो औपपातिकग्रन्थप्रसिद्धो.....केवल- औपपातिकग्रन्थादवसेयः—
द० १०।६ ह०वृ० पत्र २६	जावत्ति यावत्करणात् जणवूहेइ वा.....उग्गा भोगा—इत्याद्यौपपातिक- ग्रन्थोक्तम्—
द० १०।१४-१६ ह०वृ० पत्र २८	उववातिगमेणीति औपपातिकग्रन्थोक्तकौणिकवन्दनगमनप्रकारेणाय- मपि निर्गतः
द० १०।२१ ह०वृ० पत्र २९	इहावसरे धम्मकथा औपपातिकोक्ता भणितव्या
अन्य आगमों में ओवाइयं के सूत्र :—	

ओवाइयं	भगवई	राय०	जंबु०
सू० ३२	२५।५५६-५६३		
सू० ३३	२५।५६४-५६८		
सू० ३६	२५।५७६-५७९		
सू० ४०	२५।५८२-५८८		

ओवाइयं	भगवई	राय०	जंबु०
सू० ४३	२५।६००-६१२		
सू० ४४	२५।६१३-६१८		
सू० ६४	६।२०४	सू० ४६-५५	३।१७८
सू० ६५			३।१८०
सू० ६६			३।१७९

समर्पण सूत्र

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार औपपातिक में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं :—

जाव—उदए जाव भीणे (११७)

एवं जाव—अपडिविरया एवं जाव (१६१)

सेसं तं चेव—परलोगस्स आराहगा सेसं तं चेव (१५७)

एवं—एवं उवज्झायाणं थेराणं (१६)

अभिलावेणं—एवं एएणं अभिलावेणं (७३)

एवं तं चेव—सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव गणत्थ गंगामट्टियाए (१२३)

भाणियव्वं—एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं (४०)

कंदमंतो एएसि वण्णओ भाणियव्वो जाव सिविय (१०)

णयव्वं—तं चेव पसत्थं णयव्वं । एवं चेव वड्विणओ वि एएहि पएहि चेव णयव्वो (४०)

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्थ-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं । इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है ।

सूत्र १	कुक्कुड	कुंकड	(ख)
" १	०मुसुंढि०	०मुसुंढि०	(क, ख)
" १	०वक्क	०वक्क	(ग)
" १	०भत्त०	०हत्त०	(क)
" १	०कीला०	०खीला०	(क, ख)
" १	०तुरंग०	०तुरंग०	(क)
" १	दरिसणिज्जा	दरिसणीया	(क, ख)
" २	कालागुरु	कालागुरु०	(क)
" २	०कहक०	०कहक०	(क, ख, ग)
" ४	०निकुरंबभूए	०णिउरंबभूए	(ख)
" ५	दरिसणिज्जा	दरिसणिज्जा	(क, ख)
" ५	गुलुइय	गुलुइय	(क)
सूत्र ६	अब्भंतर०	अब्भंतर०	(क)
" ६	बाहिर	बाहिर	(ग)
" ६	णीवेहि	णीवेहि	(क)

॥ १३	°हलधर°	°हलहर°	(वृ)
॥ १६	°हणुए	°हणूए	(क)
॥ १६	भुयगीसर°	भुयईसर°	(क, ख, ग)
॥ १६	अकरंडुय°	अकरंदुय°	(क, ख)
॥ १६	°च्छर°	°यब°	(बु)
॥ १६	गुप्फे	°गोफे°	(ग)
॥ १६	°वीढेणं	°पीढेणं	(क, ख)
॥ २१	जया	जदा	(क)
॥ २६	आयावाया	आदावाया	(ग)
॥ २६	परवाया	परवादा	(ग)
॥ ३१	ओमोयरिया	अवमोयरिया	(वृ)
॥ ३२	बारसभत्ते	बारसमभत्ते	(क)
		बारसमेभत्ते	(ग)
॥ ३२	चउद्दस°	चोद्दसम°	(क, ख)
		चोद्दसमे°	(ग)
॥ ३२	सोलस°	सोलसम°	(क, ख)
		सोलसमे°	(ग)
॥ ३२	चउमासिए	चउम्मासिए	(ख)
॥ ३३	°भोइत्ति	°भोईत्ति	(ग)
॥ ३४	दव्वभि°	दव्वभि°	(क)
॥ ४०	इंतस्स	इंतस्स	(ग)
॥ ४३	°पजुत्ते	°पजुत्ते	(ग)
॥ ४३	उसण्ण°	खोसण्ण°	(क, ग)
॥ ४३	°रूई	°रूयी	(ग)
॥ ४४	दंसणावरणिज्ज°	दंसणावरणीय	(ख)
॥ ४६	°वीत्ती°	°वीती°	(ग)
॥ ४६	तोयवट्ठ°	°तोयवट्ठ°	(क)
॥ ४६	°वण्णिय°	°वण्णिय°	(ग)
॥ ५०	विहस्सती	वहस्सती	(ग)
॥ ५१	°तिरीडधारी	°किरीडधारी	(ख)
सूय ५२	महाफलं	महाफलं	(क, ख, ग)
॥ ५२	गतगता	गतगता	(क)
॥ ५२	पच्चोरुहंति	पच्चोरुभंति	(ग)
॥ ५५	पाडियक्कपाडियक्काइं	पाडियक्कपाडियक्काइं	(ख)
॥ ५६	पयोत्त-लट्ठि	पतोद-लट्ठि	(क)
		पयोत्त-लट्ठि	(ग)

॥ ६३	अभिभगेहि	अभभगेहि	(क)
॥ ६३	°मिसमिसंत°	°मिसमिसंत°	(ग)
॥ ६३	°सुसिलिट्ट°	°सुसिलिट्ट°	(क, ग)
॥ ६३	°बीइयंगे	°बीजियंगे	(क)
॥ ६४	कूवग्गाहा	कूतुयग्गाहा	(ग)
॥ ६४	°तुरगाणं	°तुरगाणं	(क)
॥ ६४	सखिखिणी°	°सखिखिणी°	(क)
॥ ६७	°मुदंग°	°मुदंग°	(ग)
॥ ६८	भट्टितं	भट्टितं	(क)
॥ ७१	°कोंच°	°कुंच°	(ग, वृ)
॥ ८२	वइर°	वज्ज°	(ख)
॥ ८२	°णिघस°	°निकस°	(ख)
॥ ८६	वेयणिज्जं	वेदणिज्जं	(क, ग)
॥ ९०	से जे	सेज्जे	(क, ख)
॥ ९२	से जाओ	सेज्जाओ	(क, ख)
॥ ९२	°उरियाओ	°पुरियाओ	(क, ग)
॥ ९५	कुक्कुइया	कोकुइया	(ख, ग)
॥ ९७	°अहव्वण	°अथव्वण°	(क, ख, ग)
॥ १०५	अलाउ°	लाउ°	(ग)
॥ ११७	चरिमेहि	चरमेहि	(क)
॥ १५८	°वंटिया	°वंटिया	(ख)
॥ १५९	भूई°	भूई°	(क, ख, ग)
॥ १६४	अणगारा	अणकारा	(क, ग)
॥ १७०	तेल्ला°	तिल्ल° (क); तेल° (ख)	
॥ १७५	वय°	वइ°	(क, ख, ग)
॥ १९५	गा. १ पइट्टिया	पत्तिट्टिया	(क, ख)

प्रति-परिचय

(क) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गद्यया पुस्तकालय', सरदारशहर से श्री मदनचन्द जी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४० तथा पृष्ठ ८० है। प्रत्येक पत्र ११।। इंच लम्बा तथा ४।। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में ४ से १३ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४६ तक अक्षर हैं। पत्र के चारों ओर सूक्ष्माक्षरों में टीका लिखी हुई है। प्रति सुन्दर, कलात्मक तथा पठित मालूम होती है। प्रति के अंत में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है :—

इति श्री उववाईसुचं समाप्तं ॥ ग्रन्थ ११६७ ॥छ॥ संवत् १६२३ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ दिने।
आगरा नगरे। पातिसाह श्री अकबर जलालदीन राज्य प्रवर्त्तमाने ॥ श्री बृहत् खरवर
गच्छालंकार श्री पूज्यराज श्री ६ जिनरिघसूरिविजयराज्ये पंडित श्रीलब्धिवर्द्धन

मुनिभिरुपपातिका नाम उपांगं लिखापितं ॥छ॥ वाच्यमानं चिरं नद्यात् ॥ शुभं भवतु
लेखकवाचकयोः ॥श्री॥

(ख) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गद्गैया पुस्तकालय' सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ५६ तथा पृष्ठ ११८ हैं। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में पाठ की ७ से ९ तक पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। पाठ के ऊपर-नीचे दोनों ओर राजस्थानी भाषा का अर्थ है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है :—

श्री उवाई उपांग पढमं समत्तं ॥ ग्रंथाग्रं १२२५ ॥ ॥छ॥ ॥श्री॥ ॥ संवत् १६६५ वर्षे पोष मासे शुक्लपक्षे सप्तमी तिथौ श्री सोमवारे। श्री श्री विक्रम नगरे। महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंहजी विजयराजे पं० कर्मसिंह लिपीकृता ॥छ॥

(ग) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गद्गैया पुस्तकालय' सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं। प्रत्येक पत्र १०।। इंच लम्बा तथा ४।। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पंक्ति में १५ पंक्तियाँ तथा प्रत्येक पंक्ति में ४६ से ४८ तक अक्षर हैं। प्रति के अन्त में है—
उवाईयं समत्तं ॥ ग्रंथाग्रं १२०० शुभमस्तु ॥छ॥ श्री ॥ लिखा है किन्तु संवत् नहीं दिया है। पर पत्र, अक्षर तथा चित्रों के आधार से यह प्रति १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

(घ) हस्तलिखित वृत्ति की प्रति: यह 'श्रीचन्द गणेशदास गद्गैया पुस्तकालय', सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसकी पत्र संख्या ७५ तथा पृष्ठ १५० हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियाँ तथा प्रत्येक पंक्ति में ५५ से ६० तक अक्षर हैं। प्रति १०। इंच लम्बी तथा ४। इंच चौड़ी है। प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—

शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ लेखकपाठकयोश्च भद्रं भवतु ॥छ॥

संवत् १९९६ वर्षे मार्गशीर्ष शुदि भीमे लिखितं ॥छ॥ श्रीः ॥

यादृशं पुस्तके दृष्ट्वा ॥ तादृशं लिखितं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धं वा ॥ मम दोषो न दीयते ॥ छ ॥छ॥

(ब०पा०) वृत्ति-सम्मत पाठान्तर

कुछ विशेष-हस्तलिखित वृत्ति तथा मुद्रित वृत्ति में वाचनान्तर पाठ सदृश नहीं है। हमने मूल आधार हस्तलिखित वृत्ति को माना है।

रायपसेजियं

प्रस्तुत सूत्र का पाठ-निर्णय हस्तलिखित आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर किया गया है। सूर्याभ के प्रकरण में जीवाजीवाभिगम और दृढप्रतिज्ञ के प्रकरण में औपपातिक सूत्र का भी उपयोग किया है। वृत्तिकार ने स्थान-स्थान पर वाचनाभेद की प्रचुरता का उल्लेख किया है। वृत्तिकाल में पाठभेद की समस्या उग्र थी, उत्तरकाल में वह उग्रतर हो गई। फिर भी हमने उपलब्ध साधन सामग्री का सूक्ष्मेक्षिकया प्रयोग कर पाठ निर्धारण किया है। अधिकार की भाषा में कोई नहीं कह सकता कि यह पाठ-निर्धारण सर्वात्मना वृत्ति रहित है, किन्तु इतना कहा जा सकता है कि इस कार्य में तटस्थता और वृत्ति का सर्वात्मना उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत सूत्र की पाठपूर्ति अत्यन्त श्रम साध्य हुई है। पाठपूर्ति से सूत्र का शरीर बृहत् हुआ है। साथ-ही-साथ पाठ-बोध की सुगमता और कथावस्तु की सरसता बढ़ी है।

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं; इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

सूत्र संख्या	८	मउड	मतुड	(क)
"	८	°घेयं	°घेज्जं	(क)
"	९	णाइ°	णादि°	(क, ख, ग, च)
"	१०	उकिट्टाए	ओकिट्टाए	(छ)
"	१२	पट्ठे	वट्ठे (ख, ग); मट्ठ	(च)
"	१३	णाइय	णातिय	(क, ख, ग, घ, च, छ)
"	१५	हंत	हंद	(च)
"	१५	अभिवंदए	अभिवंदते	(छ)
"	२४	आयंस°	आतंस°	(घ, च)
"	३७	मिउ°	मउ°	(क, ख, ग)
"	३७	पासाईए	पासातीए	(क, ख, ग, घ)
"	४०	अतीव	अतीत	(च)
"	४८	तिसोबाण°	तिसोमाण°	(क, ख, ग, च)
"	५६	महालतेणं	महालएणं	(ख, ग, घ)
"	५६	वेमाणिएहि	वेमाणितेहि	(क, ख, ग, घ)
"	६६	विरचिय	विरतिय	(क, ख, ग, च)
"	७१	°वायाणं	वाइयाणं	(क, ख, ग, छ)
"			वाययाणं	(घ)
"	७५	ओणमंति	तोममंति	(क, घ)
"	७६	मउ	मिउ	(क्वचित्)
"	७७	°टाणं	°ताणं	(क, च, छ)
"	११८	मत्थए	मत्थते	(क, ख, ग, घ)
"	११८	जएणं विजएणं	जतेणं विजतेणं	(क, ख, ग, घ)
"	१२४	बहुईओ	बहुगीओ	(क, ख, ग, घ)
"			बहुगीतो	(च, छ)
"	१२६	दार°	वार°	(क, ख, ग, च, छ;)
"			वार	(घ)
"	१३०	°कवेल्लुयाओ	°कवेलुयातो	(क, ख, ग, घ)
"	१३५	संकलाओ	संखलाओ	(क्वचित्)
"	१३७	पगंठगा	पकंठगा	(घ, च)
"	१५४	साए पहाए एएसे	साते पहाते पतेसे	(क, ख, ग, घ, च, छ)

" १५६	सव्वोउय°	सव्वोउत° (क,ख,ग,घ)
" १७३	पिणद्ध	°विनद्ध° (घ)
" १७३	तिठाण	तित्थाण° (क,ख,ग,घ,च,छ)
" १८५	आईणग	आदीणग (क,ख,ग,घ)
" १८६	उड्ढं	उद्धं (क)
" १९७	°वेइया	°वेतिया (क,ख,ग,घ,च,छ)
" १९७	फलएसु	°फलतेसु (क,ख,ग,घ,च,छ)
" २१६	तओ	तगो (क); ततो (छ)
" २२८	°बिटा	°बेटा क,ख,ग,छ; बेठा (च)
" २४५	सुविरइ-रयत्ताणे	सुइरइ-रइत्ताणे (क,ख,ग,घ,छ)
" २६२	कडुच्छुयं	कडुच्छयं (क,ख,ग,घ)
" ६५४	चरियासु	चलियासु (क,ख,ग)
" ६६४	पीय°	पील° (क,ख,ग)
" ६८३	°विद°	°वद° (घ)
" ६८७	°वूहे	°पूहे (क,ख,ग)
" ६९५	°परिभाइत्ता	परिभागेत्ता (क,ख,ग,घ,च,छ)
" ७०६	कोट्टयाओ	कोट्टाओ (क,घ)
" ७२०	अगिलाए	अइलाए (क,च)
" ७५४	अओ°	अयो° (क,ख,ग); अय° (घ)
" ७५५	भिच्चा	भेच्चा (घ)
" ७६०	किसिए	कसिए (क,ख,ग,घ,छ)
" ७७१	वाउकायस्स	वाउयागस्स (क,ख,ग,घ,च,छ)
" ७८७	भिक्खुयाणं	भिछुयाणं (घ, च)
" ७९१	°प्पओगेण	प्पयोगेण (घ)

प्रति-परिचय

(क) यह प्रति सरदारशहर 'श्रीचन्द गणेशदास मधैया पुस्तकालय' से प्राप्त है। इसके ४६ पत्र तथा ६८ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०। इंच तथा चौड़ाई ४। इंच है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५० से ५५ तक अक्षर हैं यह प्रति वि० सं० १६७१ की लिखी हुई है। इसकी पृष्पिका निम्नोक्त है—

‘तमो जिणाणं जियभयाणं णमोसुय देव्याए भगवईए णमो पणत्तीए भगवईए णमो भगवओ अरहओ पासस्स पस्से सुपस्से पस्स णीणभोए । छ । रायपसेणइयं समत्तं । छ । ग्रंथाग्रं २०७६ समर्थित-मिदं सूत्रं छ संवत् १६७१ वर्षे भाद्रवा सुदि ११ ।

आगे भी पृष्पिका है पर उस पर हड़ताल फेरी हुई है।

(ख), (ग) पत्र क्रमशः ५५, ६१ । ये दोनों प्रति ‘क’ प्रति के सदृश ही हैं।

(घ) यह प्रति ‘यति कवकचन्दजी’ पाली (मारवाड़) की है। इसके पत्र ५४ व पृष्ठ १०८ हैं।

प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०॥ इंच व चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४६-४८ अक्षर हैं। यह प्रति वि० सं० १५६६ की लिखी हुई है। प्रति के अन्त में निम्न पुष्पिका है—

॥छा॥ शुभं भवतु लेखकपाठकयोः श्री संघस्य च ।। सं० १५६६ वर्षे चैत्र सुदि २ तिथी अष्टौह श्रीमदणहिल्लपत्तने श्री बृहत्खरतरगच्छे श्रीवर्धमानसूत्रिसंताने श्री जिनभद्रसूरिपट्टानुक्रमेण श्री जिन-हंससूरिराज्ये वाचनाचार्यजयाकारगणिशिष्य वा० धर्मविलासगणिवचनार्थ भ० वस्तुपालभार्यया लीली श्रावकया । पुत्ररत्न भ० सालिगपुमुखपरिवार स श्रीकया सू श्रेयार्थं च लेखितं श्री राजप्रश्नीयोपांग ।

(च) यह प्रति पूनमचन्द बुद्धमल दुधोड़िया, छापर (राजस्थान) के संग्रह से प्राप्त है। इस प्रति के ४२ पत्र तथा ८४ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १२ इंच तथा चौड़ाई ५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५४ तक अक्षर हैं। प्रथम दो पत्रों में २ चित्र हैं। लिपि सुन्दर पर अशुद्धि बहुत है। यह प्रति अनुमानित सोलहवीं शताब्दि की है।

(छ) यह प्रति भी उपरोक्त दुधोड़िया, छापर (राजस्थान) के संग्रह से प्राप्त है इस प्रति के पत्र ४१ व पृष्ठ ८२ हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५७ से ६० अक्षर हैं। लिपि साधारण पर शुद्ध है। अन्त में लिखा है—लिपि सं० १६६५ वर्षे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे सप्तमी शुक्ले बब्बेरकपुरे पं० लब्धि कल्लोलगणिनालेखि ।

(व) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गर्धया पुस्तकालय' सरदारशहर से प्राप्त है। इसके ५२ पत्र तथा १०४ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०॥ इंच तथा चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रत्येक पत्र में १७ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ६५ से ७० तक अक्षर हैं। यह प्रति वि० सं० १६०५ में लिखी हुई है। इसकी पुष्पिका निम्नोक्त है—

इति मलयगिरिविरचिता राजप्रश्नीयोपांगवृत्तिका समाप्तिमिति । प्रत्यक्षरगणनया ग्रन्थाग्रं ॥छा॥ ॥छा॥ प्रत्यक्षर गणनातो ग्रन्थमात्रं विनिश्चितं । सप्तत्रिंशत्शतान्यत्र । श्लोकाणां सर्वं संख्ययाः ॥छा॥ ग्रन्थाग्रं श्लोक ३७०० ॥छा॥ श्री ॥ संवत् १६०५ वर्षे श्रावण सुदि १३ भीमे पत्तन वास्तव्यं ॥ पं० रद्रासुतजिगनाथ लिखितं ॥ शुभं भवतु ॥

जीवाजीवाभिगमे

प्रस्तुत सूत्र का पाठ निर्णय हस्तलिखित आदर्शों तथा वृत्तिके आधार पर किया गया है।

मलयगिरि की वृत्ति प्राचीन आदर्श के आधार पर निर्मित है इसीलिए ताडपत्रीय आदर्श और वृत्ति का पाठ समान चलता है। इस विषय में ३।२।१८, ४।५।७, ५।७।८, ८।२।६ सूत्र तथा इनके पाद टिप्पण द्रष्टव्य है। अर्वाचीन आदर्शों में पाठ का इतना बड़ा अन्तर मिलता है यह बहुत ही विमर्शनीय और अन्वेषणीय है।

जीवाजीवाभिगम के आदर्शों में पाठ की एक समानता नहीं रही है इसकी सूचना जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के वृत्तिकार शान्तिचन्द्र ने भी दी है।^१

१. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वृत्ति पत्र १०८—

अत्र चाधिकारे जीवाभिगमसूत्रादर्शं क्वचिदधिकपदम् अपि दृश्यते तत्तु वृत्तावत्याख्यातं स्वयं पर्यालोच्यमानमपि न नार्थप्रदमिति न लिखितं, तेन तत् सम्प्रदायादवगन्तव्यं, तमन्तरेण सम्यक् पाठशुद्धेरपि कर्तुमशक्यत्वादिति ।

उपाध्याय शान्तिचन्द्र ने कल्पवृक्ष के विवरण का पाठ जीवाजीवाभिगम से उद्धृत किया है। चतुर्थ कल्पवृक्ष के स्वरूप वर्णन में उन्होंने 'कणग निगरण' पाठ उद्धृत किया है। उसका अर्थ किया है सुवर्ण राशि।^१ जीवाजीवाभिगम की वृत्ति में 'कणग निगरण' पाठ व्याख्यात है—“कनकस्य निगरणं कनकनिगरणं गालितं कनकमिति भावः।”^२ लिपि-परिवर्तन के कारण पाठ परिवर्तन हुआ है। आदर्शों में 'कूडागारट्ट' पाठ मिलता है। मुद्रित तथा हस्तलिखित वृत्ति में भी 'कूटागाराद्यानि' पाठ उपलब्ध होता है।

जीवाजीवाभिगम की वृत्ति में यह व्याख्यात नहीं है। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति में इसकी व्याख्या मिलती है—“कूटाकारेण—शिखराकृत्याद्यानि”^३

आचार्य मलयगिरि ने आदर्शगत पाठभेद का स्वयं उल्लेख किया है।^४ वृत्तिकार ने जिन गाथाओं को अन्यत्र कहकर उद्धृत किया है। अर्वाचीन आदर्शों में वे गाथाएं मूल पाठ में समाविष्ट हो गई हैं।^५

वृत्ति में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की टीका का उल्लेख मिलता है। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के व्याख्याकार मलयगिरि के उत्तरवर्ती ही हैं। इसलिए यह उल्लेख प्रक्षिप्त है अथवा मलयगिरि के सामने उसकी कोई प्राचीन व्याख्या रही है यह अन्वेषण का विषय है।^६

कहीं-कहीं वृत्ति में भी कुछ विमर्शनीय लगता है। 'तिरिवच्छ' पाठ की व्याख्या वृत्तिकार ने 'श्रीवृक्ष' की है। प्रकरण की दृष्टि से 'श्रीवत्स' होना चाहिए।^७

मूल टीकाकार और मलयगिरि के सामने पाठभेद तथा अर्थभेद की जटिलता रही है और व्याख्याकारों के समय में इस विषय में कुछ चर्चाएं भी होती रही हैं। इस विषय में वृत्ति का एक उल्लेख बहुत ही ऐतिहासिक महत्त्व का है। वृत्तिकार ने लिखा है कि यह सूत्र विविध अभिप्राय वाला होने के कारण दुर्लभ्य है। इसकी व्याख्या सम्यक् सम्प्रदाय के आधार पर ही ज्ञातव्य है। सूत्र

१. जम्बूद्वीप वृ० प० १०२—“कनकनिकरः सुवर्णराशिः।”

२. जीवाजीवाभिगम वृ० प० २६७।

३. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वृ० प० १०७

देखें जीवाजीवाभिगम ३।५६४ का पादटिप्पण।

४. (क) जीवाजीवाभिगम वृ० प ३२१

“इह बहुधा सूत्रेषु पाठभेदाः परमेतावानेव सर्वत्राप्यर्थो नार्थभेदान्तरमित्येतद्व्याख्यानसारेण सर्वेष्वनुगतव्या न मोघव्यमिति।”

(ख) जीवा० वृ० प० ३७६

इह भूयान् पुस्तकेषु वाचनभेदो गलितानि च सूत्राणि बहुषु पुस्तकेषु ततो यथाऽवस्थितवाचनभेदप्रतिपत्त्यर्थगलितसूत्रोद्धरणार्थं चैवं सुगमन्यपि विव्रियन्ते।

५. जीवा वृ० प० ३३१, ३३३, ३३४ तथा ३।८२०, ८३०, ८३४, ८३७ के पादटिप्पण द्रष्टव्य हैं।

६. जीवाभिगम वृ० प० ३८२ स्वर्चिस्सिहादीनां वर्णनं दृश्यते तद् बहुषु पुस्तकेषु न दृष्टमित्युपेक्षितं अवश्यं चेत्तद्व्याख्यानं प्रयोजनं तर्हि जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति टीका परिभावनोया, तत्र सविस्तरं तद् व्याख्यानस्य कृतत्वात्।

७. जीवा जीवाभिगम वृ० प० २७१—

“श्रीवृक्षेणांकितं—लाञ्छितम् वृक्षो येषां ते श्री वृक्षलाञ्छित वक्षसः”।

के अभिप्राय को जाने बिना मनमाने ढंग से व्याख्या करना उनकी अवहेलना करना है।^१ सूत्र की आशातना या अवहेलना न हो। इस दृष्टिकोण ने पाठ और अर्थ की परम्परा को सुरक्षित रखने में काफी योग दिया है फिर भी बुद्धि की तरतमता और लिपिप्रभाव के कारण पाठ और अर्थ में परिवर्तन हुआ है। पाठ की विविधता के कारण हमें भी पाठ के निर्धारण में काफी श्रम करना पड़ा है। पाठान्तर और उनके टिप्पणों से उसका अंकन किया जा सकता है।

‘ता’ संकेतित प्रति संक्षिप्त पाठप्रधान है, जैसे १:४१ सूत्र से --“ताइं भते कि पुडाइं आहारेंति अपु मोयमा पुडा णो अपु । आया णो अणोया अणंतरो णवरं अणूइं पि आ बायराइं पिआ उड्डं वि इ आदि पि इ सविस्सए णो अविस्सए आणुपुब्बि णो अणानुपुब्बि अचल्लहि वाघातं प सिय तिदिसि ष्क । नो वण्णतो काला नी गंधतो सु २ असतो नो फासहो तेहि पोरारणं विपरिणामेत्ता अपुव्व वण्ण गुण ष्क उप्पाएत्ता आतसरीर खेत्तागाडे पोग्गले सव्वप्पणत्ताए आहारमाहारेंति” ।

लिपि-दोष के कारण “किं तिदिसि के स्थान में “कतिदिसि” (क) । ‘ता’ का अनेक जगह पाठान्तर नहीं लिया है, वहां पाठ बहुत संक्षिप्त है।

शब्दान्तर और रूपान्तर

१।१	जिणखायं	जिणखायं (ख)	जिणखातं (ता)
”	अणुवीइ	अणुवीतियं	(क,ख)
”	रोएमाणा	रोतमाणा	(ता)
१।१४	संघयण	संघतण	(ता)
”	सण्णाओ	सण्णातो	(क)
”	जोगुवओगे	जोगुवतोगे	(क)
१।१६	कोहकसाए	कोहकसाते	(क)
१।२१	कण्हलेस्सा	किण्हलेस्सा	(ग,ट)
१।२६	आणपाणु°	आणपाण°	(ट)
१।७२	छिरविरालिया	छिरविरालिया (क) छिरिविरालिया (ख;)	

१. जीवाजीवाभिगम वृ०प० ४५० —

“सूत्राणि ह्यस्मिन् विचित्राभिप्रायतया दुर्लक्ष्याणीति सम्यक्संप्रदायादवसातस्थानि, सम्प्रदायश्च यथोक्तस्वरूप इति न काचिदनुपपत्तिः, न च सूत्राभिप्रायमज्ञात्वा अनुपपत्तिरदभावनीया, महाशातनायोगतो महाजनर्थप्रसक्तेः सूत्रकृतो हि भगवन्तो महीयांसः प्रमाणिकृताश्च महोयस्तरंस्तत्कालवर्त्तिभिरन्यैविद्वद्भिस्ततो न तत्सूत्रेषु सनागप्यनुपपत्तिः, केवलं सम्प्रदायावसाये यत्नो विधेयः ये तु सूत्राभिप्रायमज्ञात्वा यथा कथञ्चिदनुपपत्तिमुद्भावयन्ते ते महतो महीयस आशातयन्तीति दीर्घतरसंसारभाजः, आह च टीकाकारः --“एवं विचित्राणि सूत्राणि सम्यक्संप्रदायादवसेयानोत्पत्तिनाय तदभिप्रायं नानुपपत्तिचोदना कार्या, महाशातनायोगतो महाजनर्थप्रसंगदिति” एवं च ये सम्प्रति दुष्प्रमानुभावतः प्रवचनस्योपप्लवाय धूमकेतव इवोत्थिताः सकलकालसुकराध्यवृत्तिनसुविधिभागान्छात्सुविहितसाधुषु मत्तरिणस्तेऽपि वृद्धपरम्परायातसम्प्रदायादवसेयं सूत्राभिप्रायमपास्योत्सुत्रं प्ररूपयन्तो महाशातनाभाजः प्रतिपत्तव्या अपकर्णयितव्याश्च वृत्तस्तत्त्ववेदिभिरिति कृतं प्रसङ्गेन” ।

१।७३	थीह	छिरियविरालिया (ग,ट); छीरवीराली (ता)
१।१००	तहप्पगारा	धिभु (क)
१।१०१	दुआगइया	तहप्पकारा (क,ख,ग,ट)
१।११६	आहारो	दुयामतिया (ग)
२।५६	पलिओवमाई	आधारो (ता)
२।६०	अब्भहियाई	पलितोवमाई (क,ख,ग,ट)
२।७४	फुफुअग्गि	अब्भधियाई (ग)
२।६२	वासपुहत्तं	फुफुअग्गि (क); पुफअग्गि (ग)
२।२४१	एतासि	वासपुहत्तं (क); वासपुहुत्तं (ग,ट)
२।१४६	वणस्सति°	एतेसि (क,ख,ग,ट); एगासि (ता)
३।५	जोयण	वणप्फइ° (क,ख,ग)
३।६	आवबहुले	जोतण (क)
३।३३	आबाधाए	अवबहुले (क); आवबहुले (ता)
३।४८	जे णं इमं	आबाधाए (क,ख,ट)
३।७३	असीउत्तरे	जेणिमं (ता)
३।७७	अडहत्तरे	आसीउत्तरे (ता)
३।७७	किण्हपुड	अडसत्तरी (ग); अट्टुत्तरे (ता)
३।८०	बाहल्लेणं	किण्हपुड (क,ग)
३।६४	केरिसगा	पाहलेणं (ता)
३।६६	फुडित°	केरिसता (क,ख,ग)
३।११८	उसिणवेदणिज्जेसु	फुडिग° (ता); स्फुटित° (मवृ)
३।११८	विरच्चिय	उसुणवेदणिज्जेसु (ता)
३।११६	एगाहं	विरइय (क,ग,ट)
३।२३४	एत्थ	एकाहं (ख,ग,ट)
३।३२३	जंबूणतमया	तत्थ (क,ख,ग,ट); यत्थ (ता)
३।३७१	उवगारियलयणे	जंबूणतमया (क); जंबूणतामया (ग,ट,ता)
३।३७२	खंभुग्गय	ओवारियलयणे (क,ख,ग,ट,त्रि;)
३।४१२	धूवधडियाओ	उवकारियलयणे (ता)
३।५६३	ओविय°	धंभुग्गय (क,ग)
३।७३३	बायालीसं	धूमधडियाओ (क,ख)
३।७५०	,	उच्चितिय (क,ख); उच्चिय (ग)
३।७४८	केलासे	बायालीसं (ता)
३।७६४	एगुणयालं	बातालीसं (ता)
		केतिलासे (ख); कइलासे (ग,ट,त्रि)
		इऊयालं (क); ऊयालं (ख,ता;)
		इगुयालं (ग)

३।७६८	इगयालीसं	एयालीसं (क,ख,ट);	एगयालीसं (ग)
		इतालीसं	(ता)
३।८२६	तेणट्ठेणं	एएणट्ठेणं	(ग,त्रि)
३।८३८।१३	मणूसणं	मणूसणं	(ता)
३।८४०	कयाइ	कदायी	(ता)
३।८४१	बलाहका	बलाहता	(ता)
३।८४१	बादरे विज्जुकारे	वातरे विज्जुतारे	(ता)
	बादरे थणियसद्दे	वातरे थणितसद्दे	(ता)
३।८४१	नदीओइ वा णिहीति वा	णंदीति वा णिधयोति वा	(ता)
३।८६०	सुपक्कखोयरसेइ	सुपिक्कखोतरसेति	(ता)
३।८७७	खोदवरणं	खोयवरणं	(क,ख,ग,ट,त्रि)
३।९४६	खोदसरिसं	खोतोदसरिसं	(ता)
३।९६८	हेट्ठिपि	हट्ठिपि (ग,ट,ता);	हिट्ठिपि (त्रि)
३।१००७	सव्वहेट्ठिल्लं	सव्वहेट्ठिमयं	(ता)
३।१००७	सव्वोप्परिल्लं	सव्वुप्परिल्लं	(क,ख,ट)
३।१००७	सव्वव्विभत्तरिल्लं	सव्वव्वभत्तरं	(ता)
५।३७	णिओदा	णिओता	(ता)
५।५४	°णिओदजीवा	°णिओदजीवा	(क,ख,ग,ट,त्रि)
५।५८	°णिओदजीवा	°णिओयजीवावि	(क,ख,ग,ट,त्रि)
६।११	अणाइए	अणादीए	(ता)
६।२८	सकासाई	सकसादी	(ता)
६।१३१	ओहिदंसणी	अवघिदंसणी	(ग,त्रि)
		ओघिदंसणि	(ता)

प्रति परिचय

(क) (मूलपाठ) पत्र ६४ संवत् १५७५ (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्द्र गणेशदास गधैया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र ६४ व पृष्ठ १८८ हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ५३-५६ तक अक्षर हैं। इसकी लम्बाई १३। इंच व चौड़ाई ५ इंच है। यह अति सुन्दर लिखी हुई है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

संवत् १५७५ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ भृगुवासरे पत्तननगरमध्ये मोढजातीय जोशी वीट्टलसुत लटकणलिखितम् । छ।

यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं भया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥१॥ शुभं भवतु, लेखक-पाठकयोः कल्याणमस्तु छ । छ । श्री । श्री । छ । ग्रं० ५२००

(ख) (मूलपाठ) पत्र ८०

यह 'प्रति' पूर्वलिखित सरदारशहर की है। इसके पत्र ८० व पृष्ठ १६० हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ६१ करीब अक्षर हैं। इसकी लम्बाई १२ इंच व चौड़ाई ४। इंच है।

‘प्रति’ प्राचीन है व बहुत जीर्ण है, अन्त में लिपि संवत् नहीं है परन्तु अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

(ग) (मूलपाठ) पत्र ६० सचित्र

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय की है। इसके पत्र ६० व पृष्ठ १८० हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में ६३ करीब अक्षर लिखे हुए हैं। इसकी लम्बाई ११॥ इंच व चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रति के आदि पत्र में तीर्थकर देव की प्रतिमा का सुनहरी स्याही में सुन्दर चित्र है। प्रति बहुत सुन्दर लिखी हुई है। ‘प्रति’ के मध्य ‘बावडी’ व उसके मध्य लाल बिन्दु हैं।

इस प्रति के अन्त में पुष्पिका व लिपि संवत् नहीं है परन्तु अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए। यह प्रति ‘ताडपत्रीय प्रति’ व टीका से प्रायः मेल खाती है।

‘ता’ ताडपत्रीय फोटो प्रिन्ट (जैसलमेर भण्डार)

यह प्रति टीका से प्रायः मिलती है। इसमें तीसरी ‘प्रतिपत्ति’ के १०५ सूत्र से ११५ सूत्र तक के पत्र नहीं हैं।

(ट) (टब्बा) लिपि संवत् १८०० यह प्रति संधीय ग्रन्थालय लाडनू की है। यह प्रति कालू-गणी द्वारा पठित (पारायणकृत) है व उनके द्वारा स्थान-स्थान पर पाठ संशोधन भी किया हुआ है।

जीवाजीबाभिगम टीका (हस्तलिखित)

यह प्रति ‘श्रीचन्दजी गणेशदासजी गधैया’ पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र २५० व पृष्ठ ५०० हैं। प्रत्येक पत्र में पंक्ति १५ अक्षर ६५ करीब है। लम्बाई १० × ४^१/_२ लिपि सं० १७१७, प्रति की लिपि सुन्दर है।

सहयोगानुभूति

जैन-परंपरा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवद्विगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गये थे, वे इस लंबी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गये हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थदृष्टिसमन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारंभ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कार्य के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुस्तर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूँ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के ओवाइयं तथा रायपसेणियं के पाठ सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी तथा जीवाजीबाभिगमे के पाठ सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी और मुनि हीरा-

लालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है। जीवाजीवामिगमे के पाठ सम्पादन में मुनि छत्रमल जी, मुनि बालचंदजी, मुनि हंसराजजी और मुनि मणिलाल जी का भी सहयोग रहा है।

ओवाइयं की शब्द सूची मुनि श्रीचन्दजी तथा रायपसेणियं और जीवाजीवामिगमे की मुनि हीरालालजी ने तैयार की है। प्रूफ संशोधन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि हीरालालजी और साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी व समणी कुसुम प्रज्ञा का सहयोग रहा है।

ओवाइयं तथा रायपसेणियं का ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलालजी “आमेद” ने तैयार किया है। इस ग्रन्थ के प्रथम दो परिशिष्ट मुनि हीरालालजी ने तैयार किए हैं। पाठ के पुनर्निरीक्षण के समय भी मुनि हीरालालजी विशेषतः संलग्न रहे हैं।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचंदजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया/कुलपति-जैन विश्व भारती/प्रारंभ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर वे अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष खेमचन्दजी सेठिया और मंत्री श्रीचन्द बेंवाणी का भी योग रहा है। संपादकीय और भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद जैन विश्व भारती के अन्तर्गत अनेकान्त शोधपीठ के डायरेक्टर नयमल टांडिया ने तैयार किया है।

एक लक्ष्य के लिये समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अध्यात्म साधना केन्द्र, महरोली

अक्षय तृतीया

१ मई, १९८७

नई दिल्ली

—युवाचार्य महाप्रज्ञ

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक का नाम उवंगमुत्ताणि है। इसमें बारह उपांगों का पाठान्तर तथा संक्षिप्तपाठ सहित मूलपाठ है। इसके दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में तीन उपांग हैं:—

१. ओवाइयं २. रायपसेणियं ३. जीवाजीवाभिगमे।

द्वितीय खंड में तीन उपांग हैं—

१. पणवणा २. जंबुद्वीवपण्णत्ती ३. चंदपण्णत्ती ४. सुरपण्णत्ती
५. निरयावलियाओ [कप्पियाओ] ६. कप्पवडिलियाओ ७. पुण्फियाओ
८. पुण्फचूलियाओ ९. वण्हदसाओ

प्राचीन व्यवस्था के अनुसार आगम के दो वर्गीकरण मिलते हैं।

१. अंगप्रविष्ट

२. अंगबाह्य

उपांग नाम का वर्गीकरण प्राचीनकाल में नहीं था। नन्दीसूत्र में उपांग का उल्लेख नहीं है। उससे पहले के किसी आगम में उपांग की कोई चर्चा नहीं है। तत्त्वार्थभाष्य में उपांग का प्रयोग मिलता है। उपलब्ध प्रयोगों में सम्भवतः यह सर्वाधिक प्राचीन है।^१

अंग और उपांग की संबन्ध योजना

तत्त्वार्थभाष्य में उपांग शब्द का उल्लेख है, किन्तु उसमें अंगों और उपांगों का सम्बन्ध वर्णित नहीं है। इसकी चर्चा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति तथा निरयावलिका के वृत्तिकार श्रीचन्द्रसूरि द्वारा रचित सुखबोधा सामाचारी नामक ग्रन्थ में मिलती है।^२ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति के अनुसार अंगों और उपांगों की सम्बन्ध-योजना इस प्रकार है:—

अंग

आचारांग

सूत्रकृतांग

स्थानांग

समवायांग

भगवती

उपांग

औपपातिक

राजप्रश्नीय

जीवाजीवाभिगम

प्रज्ञापवा

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति

१. तत्त्वार्थभाष्य १/२० : तस्य च महाविषयवत्त्वात्तत्तानर्थान्विशिक्त्य

प्रकरणसामर्थ्यपेक्षमंगोपांगनानात्वम् ।

२. सुखबोधा सामाचारी, पृष्ठ ३४ ।

ज्ञाताधर्मकथा	चन्द्रप्रज्ञप्ति
उपासकदशा	सूर्यप्रज्ञप्ति
अन्तकृतदशा	निरयावतिका [कल्पिका]
अनुत्तरोपपातिकदशा	कल्पावतंसिका
प्रश्नव्याकरण	पुष्पिका
विपाकश्रुत	पुष्पचूलिका
दृष्टिवाद	वृष्णिदशा ^१

१. ओवाइयं

नाम बोध

प्रस्तुत आगम का नाम ओवाइयं [औपपातिक] है। इस का मुख्य प्रतिपाद्य उपपात है। समवसरण इसका प्रासंगिक विषय है। मुख्य प्रतिपाद्य के आधार पर प्रस्तुत सूत्र का नाम 'ओवाइयं' किया गया है। इसका संस्कृत रूप औपपातिक होता है। प्राकृत नियम के अनुसार वकार का लोप करने पर 'ओववाइयं' का 'ओवाइयं' रूप बन गया। नन्दी सूत्र में यही नाम उपलब्ध होता है।^२

विषय-वस्तु

औपपातिक का मुख्य विषय पुनर्जन्म है। उपपात के प्रकरण में अमुक प्रकार के आचरण से अमुक प्रकार का आगामी उपपात होता है, यही विषय चर्चित है।

उपोद्घात प्रकरण में अनेक वर्णक हैं—नगरी वर्णक, चैत्य वर्णक, उद्यान वर्णक, राज वर्णक आदि-आदि। इन वर्णकों से प्रस्तुत सूत्र वर्णक सूत्र बन गया। इन्हीं वर्णकों के कारण अनेक समर्पणों में इसका उपयोग हुआ है।

व्याख्या ग्रंथ

औपपातिक का प्रथम व्याख्या ग्रन्थ नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरिकृत वृत्ति है। उसके प्रारम्भिक श्लोक से यह ज्ञात होता है कि अभयदेवसूरि को इस वृत्ति से पूर्व कोई अन्य वृत्ति प्राप्त नहीं थी। उन्होंने अन्य ग्रन्थों का अवलोकन कर इसका निर्माण किया था। स्वयं उन्होंने लिखा है—

श्रीवर्द्धमानमानम्य, प्रायोऽन्यग्रन्थवीक्षिता ।

औपपातिकशास्त्रस्य, व्याख्या काचिद्विधीयते ॥

वृत्तिकार ने कुछ स्थलों पर पूर्वज आचार्यों के अभिमतों का उल्लेख भी किया है—

१. स्नानाद्वा पाण्डुरीभूतगात्रा इति वृद्धाः [वृत्ति, पृ० १७१] ।

२. खूणिकारस्त्वाह [वृत्ति पृ० २२४]

३. अस्य च वृद्धोक्तस्याधिकृतगाथाविवरणस्यार्थ भावार्थः । [वृत्ति, पृ० २२५]

१. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, शान्तिचन्द्रीया वृत्ति, पत्र १, २ ।

२. नन्दी, सूत्र ७६ ।

यह वृत्ति न बहुत विस्तृत है और न अति संक्षिप्त । इसके मध्यम आकार में विवेचनीय स्थल अधिकांशतया व्याख्यात हैं ।^१

प्रस्तुत सूत्र में वाचनान्तरों की बहुलता है । वृत्तिकार ने प्रथम सूत्र की व्याख्या में लिखा है—इस सूत्र में बहुत वाचनाभेद है । जों बुद्धिगम्य होगा उसकी मैं व्याख्या करूँगा ।^२ सम्भवतः इतने वाचनान्तर किसी अन्य सूत्र में प्राप्त नहीं हैं । यदि वृत्तिकार ने इनका संकलन नहीं किया होता तो ये लुप्त हो जाते ।

वृत्ति के अन्त में त्रिशंकी प्रशस्ति है । उसमें वृत्तिकार ने अपने गुरु श्री जिनेश्वरसूरि, चन्द्रकुल तथा रचनास्थल—अणहिलपाटकनगर और वृत्ति के संशोधक द्रोणाचार्य का उल्लेख किया है—

चन्द्रकुल-विपुल-भूतल-गुणप्रवर-वर्धमानकल्पतरोः ।

कुसुमोपमस्य सूरिः, गुणसौरभ-भरित-भवनस्य ॥१॥

निस्सम्बन्धविहारस्य सर्वदा श्रीजिनेश्वराह्वस्य ।

शिष्येणाभयदेवाख्यसूरिण्यं कृता वृत्तिः ॥२॥

अणहिलपाटकनगरे श्रीमद्द्रोणाख्यसूरिमुख्येन ।

पण्डितगुणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेयम् ॥३॥

इसका दूसरा व्याख्या-ग्रन्थ स्तबक है । यह विक्रम की अठारहवीं शती का है । इसके कर्ता सम्भवतः धर्मसी मुनि हैं ।

२. रायपसेणियं

नाम बोध

प्रस्तुत सूत्र का नाम 'रायपसेणियं' है । पं० बेचरदास दोशी ने प्रस्तुत सूत्र का नाम 'रायपसेणइयं' रखा है । उन्होंने सिद्धसेनगणी द्वारा उल्लिखित 'राजप्रसेनकीय' और मुनि चन्द्रसूरि द्वारा उल्लिखित 'राजप्रसेनजित' को इसका आधार माना है ।^३

प्रस्तुत सूत्र का सर्वाधिक प्राचीन उल्लेख नंदी सूत्र में मिलता है । वहां इसका नाम 'रायपसेणिय' है ।^४ नंदी की चूणि और उसकी हरिभद्रसूरि तथा आचार्य मलयगिरि कृत वृत्तियों में इसकी व्याख्या नहीं है । आचार्य मलयगिरि ने प्रस्तुत सूत्र के विवरण में 'राजप्रशनीय' नाम का उल्लेख किया है । राजा प्रदेशी ने केशीस्वामी से प्रश्न पूछे थे । प्रस्तुत सूत्र में उनका वर्णन है । अतः इसका नाम 'राजप्रशनीय' है ।^५

१. औपपातिक, वृत्ति, पृ० २ : इह च बहवो वाचनाभेदा दृश्यन्ते, तेषु च यमेवावभोत्स्यामहे तमेव व्याख्यास्यामः ।

२. रायपसेणइयं, प्रदेशक, पृ० ६, ७ ।

३. नंदी, सू० ७७ ।

४. (क) रायपसेणिय वृत्ति, पृ० १ :

अथ कस्माद् इवमुपाङ्गं राजप्रशनीयाभिधानमिति ? उच्यते, इह प्रदेशिनामा राजा भगवतः केशिकुमारभ्रमणस्य समीपे यात् जीवविषयान् प्रश्नानकार्षात्, यानि च तस्मै केशिकुमारभ्रमणो गणभूत् व्याकरणानि व्याकृतवान् ।

(ख) रायपसेणिय वृत्ति, पृ० २ राजप्रशनेषु भवं राजप्रशनीयम् ।

विषय-वर्णन की दृष्टि से मलयगिरि की व्याख्या उचित है और उसके आधार पर उनके द्वारा स्वीकृत नाम भी अनुचित प्रतीत नहीं होता, किन्तु शब्दशास्त्रीय दृष्टि से उनके द्वारा स्वीकृत नाम समालोच्य है। पं० बेचरदासजी ने उसकी समालोचना की है। उनका तर्क है—‘प्रश्न’ शब्द का प्राकृत रूप ‘पण्ह’ और ‘पसिण’ होता है, किन्तु ‘पसेण’ नहीं होता। उच्चारण शास्त्र की वैज्ञानिक रीति से ‘पसिण’ तक का परिवर्तन ही उचित नहीं लगता है। प्राकृत व्याकरण की दृष्टि से भी ‘पसेण’ रूप घटित नहीं होता। इसे आर्ष रूप मान तो फिर शुद्धाशुद्ध प्रयोग की मर्यादा ही टूट जाएगी।’

पण्डितजी का तर्क बलवान् है फिर भी अभीमांस्य नहीं है। हमारी दृष्टि के अनुसार—

[१] ‘पसेणिय’ का मूल रूप ‘पसिणिय’ [सं० प्रश्नित] है। इकार का एकार होना उच्चारण शास्त्र की दृष्टि से असंगत नहीं है। यह परिवर्तन अनेक स्थानों में मिलता है। उदाहरण के लिए कुछ शब्द यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं:—

पिहुणीणं	पेहुणेणं	[दे०]
णिव्वाणं	णेव्वाणं	[सं० निर्वाणम्]
णिव्वुती	णेव्वुती	[सं० निर्वृत्तिः]
तिगिच्छियं	तेगिच्छियं	[सं० चिकित्सितम्]
बिटा	बेटा	[सं० वृत्तम्]
बि	बे	[सं० द्वि]
तिकालं	तेकालं	[सं० त्रिकालम्]

[२] आगम-सूत्रों तथा प्राचीन ग्रन्थों में ‘रायपसेणिय’ पाठ उपलब्ध है। ‘रायपसेणिय’ पाठ कहीं भी उपलब्ध नहीं है। नंदी सूत्र में ‘रायपसेणिय’ नाम मिलता है। इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। पाक्षिक सूत्र में भी ‘रायप्पसेणिय’ पाठ मिलता है।^१ पाक्षिक सूत्र के अवचूरि-कार ने भी इसका संस्कृत रूप ‘राजप्रश्नियं’ किया है।^२

[३] प्रसेनजित् का प्राकृत रूप ‘पसेणइय’ बनता है। स्थानांग में पांचवें कुलकर का नाम ‘पसेणइय’ है।^३ अन्यत्र भी अनेक स्थलों में यह मिलता है।

प्रस्तुत सूत्र का विषयवस्तु यदि राजा प्रसेनजित् से संबद्ध होता तो इसका नाम ‘रायपसेणइय’ होता, किन्तु इसकी विषयवस्तु राजा पण्डी से संबद्ध है। इस दृष्टि से भी ‘रायपसेणइय’ नाम संगत नहीं है। दीघनिकाय में पायासी राजा प्रसेनजित् के सामंत रूप में उल्लिखित है। किन्तु प्रस्तुत सूत्र में राजा प्रसेनजित् का कोई उल्लेख नहीं है। अतः ‘रायपसेणइय’ नाम का कोई आधार प्राप्त नहीं होता।

१. रायपसेणइयं, प्रवेशक, पृ० ६

२. पाक्षिक सूत्रम्, पृ० ७६

३. पाक्षिक सूत्रम्, अवचूरि, पृ० ७७

राजः प्रवेशि नाम्नः प्रश्नानि, तान्यधिकृत्य कृतमध्ययनम्—राजप्रश्नियम् ।

४. ठाणं, ७१६२

विषयवस्तु के आधारपर 'रायपणिसिंह' नाम की कल्पना की जा सकती है। किन्तु इसका कोई प्राचीन आधार प्राप्त नहीं है।

राजा प्रदेशी के प्रश्न प्रस्तुत सूत्र की रचना के आधार रहे हैं, इसलिए इसका नाम 'रायपणिसिंह' ही होना चाहिए।

व्याख्या ग्रन्थ

प्रस्तुत सूत्र के व्याख्या-ग्रन्थ दो हैं—[१] वृत्ति और [२] स्तबक [टब्बा, बालावबोध]। वृत्ति संस्कृत में लिखित है और स्तबक गुजराती मिश्रित राजस्थानी में। वृत्ति के लेखक सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य मलयगिरि हैं और स्तबककार हैं पार्श्वचन्द्रगणी [१६ वीं शती] और मुनि धर्मसिंह [१८ वीं शती]। स्तबक संक्षिप्त अनुवाद ग्रन्थ है। प्रस्तुत सूत्र के रहस्यों को स्पष्ट करने वाला व्याख्या ग्रन्थ वास्तव में वृत्ति ही है। वृत्तिकार ने सूत्र के सब विषयों को स्पष्ट नहीं किया है, फिर भी उन्होंने अनेक स्थलों में अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएं दी हैं।

वृत्तिकार को वृत्ति-निर्माण में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके सामने सबसे बड़ी कठिनाई पाठ-भेद की थी। इसका उन्होंने स्थान-स्थान पर उल्लेख किया है।^१ वर्तमान कठिनाइयों के आधार पर वृत्ति दो भागों में विभक्त हो गई। पूर्वभाग में वृत्तिकार ने सुगमपदों की भी व्याख्या की है। उत्तरभाग में केवल विषमपदों की व्याख्या की है। अतएव पूर्वभाग की व्याख्या विस्तृत और उत्तरभाग की संक्षिप्त है। पूर्वभाग की विस्तृत व्याख्या के उन्होंने दो हेतु बतलाए हैं—

१. विषय की नवीनता

२. पाठ-भेद की प्रचुरता

उत्तरभाग की संक्षिप्त व्याख्या के भी तीन हेतु बतलाए हैं—

१. पाठ की सुगमता

२. पूर्व व्याख्यातपदों की पुनरावृत्ति

३. पाठ-भेद की अल्पता।^२

वृत्तिकार ने लौकिक विषयों को लौकिक कला के निष्णात व्यक्तियों से जानने का अनुरोध किया है।^३ राजप्रशनीय और जीवाभिगम में अनेक स्थलों पर प्रकरण की समानता है। दोनों के व्याख्याकार आचार्य मलयगिरि हैं। इसलिए उनके समप्रकरणों की वृत्ति में भी प्रचुर समानता है। वृत्तिकार को जीवाभिगम की मूल टीका प्राप्त थी। उसका वृत्तिकार ने प्रस्तुत वृत्ति में स्थान-स्थान

१. रायपणिसिंह वृत्ति, पृ० २०४, २४१, २५६

२. रायपणिसिंह वृत्ति, पृ० २३६ :

इह प्राक्तनो ग्रन्थः प्रायोऽपूर्वः भूयानपि च पुस्तकेषु वाचनाभेदस्ततो माञ्भूत् शिष्याणां सम्मोह इति क्वापि सुगमोऽपि यथावस्थितवाचनाक्रमप्रदर्शनार्थं लिखित, इत ऊर्ध्वं तु प्रायः सुगमः प्राग्व्याख्यातस्वरूपश्च न च वाचना-भेदोऽप्यतिबाधर इति स्वयं परिभावनोयः, विषमपदव्याख्या तु विधास्यते इति ।

३. वही, पृ० १४५ :

एते नर्तनविषयः अभिनयविषयश्च नाट्यकुशलेभ्यो वेदितव्यः ।

पर उल्लेख किया है ।^१ एक स्थान पर जीवाभिगम-चूर्णि का भी उल्लेख किया है ।

वृत्ति का ग्रन्थ परिमाण तीन हजार सात सौ श्लोक है—

प्रत्यक्षरगणनातो ग्रन्थमानं विनिश्चितम् ।
सप्तत्रिंशच्छतान्यत्र श्लोकानां सर्वसंख्यया ॥

१. (क) रायपसेणियवृत्ति पृ० १००

आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्-विजयदूष्यं वस्त्रविशेषः इति ।

(ख) वही, पृ० १५८

आह च जीवाभिगममूलटीकाकारः अगंलाप्रासादा यत्रागंला नियम्यन्ते इति ।

जीवाभिगममूलटीकाकारेण—आवर्त्तनपीठिका यत्रेन्द्रकीलको भवति इति ।

(ग) वही, पृ० १५९

आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्—कूटो माडभागः उच्छयः शिखरम् इति ।

आह च—जीवाभिगममूलटीकाकृत्—अंकमयाः पक्षास्तदेकदेशभूता एवं पक्ष बाहवोऽपि
ब्रूयन्ते इति ।

(घ) वही, पृ० १६०

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण ओहाडणी हारग्रहणं ? महत् क्षुल्लकं च पुंछनी इति ।

(च) वही, पृ० १६१

आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्—नैवेधिकी निषीदनस्थानम् इति ।

(छ) वही, पृ० १६८

आह च जीवाभिगममूलटीकाकारः प्रकण्ठो पीठविशेषी इति ।

(ज) वही, पृ० १६९

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—प्रासादावतंसकौ प्रासादविशेषौ इति ।

(झ) वही, पृ० १७६

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—मनोगुलिका नाम पीठिका” इति ।

(ट) वही, पृ० १७७

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण-ह्यकण्ठी—ह्यकण्ठप्रमाणी रत्नविशेषौ एवं सर्वेऽपि
कण्ठा वाच्ये इति ।

(ठ) वही, पृ० १८०

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—तैलसमुद्गकौ सुगन्धितैलाधारौ ।

(ड) वही, पृ० १८९

जीवाभिगममूलटीकायामपि ४६—“उष्पित्थं श्वासयुक्तम्” इति ।

(ढ) वही, पृ० १९५

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—दशमण्डपाः स्फाटिका मण्डपा इति ।

(त) वही, पृ० २२६

जीवाभिगममूलटीकाकारः—“विब्वोयणा-उपधानकान्युच्यन्ते” इति ।

वृत्ति के प्रारंभ में वृत्तिकार ने भगवान् महावीर को नमस्कार किया है और गुरु के आदेश से राजप्रश्नीय सूत्र के विवरण की सूचना दी है:—

प्रणमत-वीरजिनेश्वरचरणयुगं परमपाटलच्छायम् ।
अधरीकृतमतवासवमुकुटस्थितरत्नरुचिचक्रम् ॥
राजप्रश्नीयमहं, विवृणोमि यथाजामं गुरुनियोगात् ।
तत्र च शक्तिमशक्ति, गुरवो जानन्ति का चिन्ता ॥१॥

वृत्ति की परिसमाप्ति में वृत्तिकार ने गुरु की विजयकामना और पाठक की ज्ञानकामना की है—

अधरीकृतचिन्तामणि-कल्पलता-कामवेनुमाहात्म्याः ।
विजयन्तां गुरुपादाः विमलीकृतशिष्यमतिविभवाः ।
राजप्रश्नीयमिदं गम्भीरार्थं विवृण्वता कुशलं ।
यदवापि मलयगिरिणा साधुजनस्तेन भवतु कृती ।

३. जीवाजीवाभिगमे

नामबोध

प्रस्तुत आगम का नाम जीवाजीवाभिगमे है। इसमें जीव और अजीव इन दो मूलभूत तत्त्वों का प्रतिपादन है। इसलिए इसका नाम जीवाजीवाभिगमे रखा गया है। इसमें नौ प्रतिपत्तियाँ [प्रकरण] हैं। इनमें जीवों के संख्यापरक वर्गीकरण किए गए हैं।

१. संसारीजीव के दो प्रकार—जस और स्थावर ।
२. संसारीजीव के तीन प्रकार—स्त्री, पुरुष और नपुंसक ।
३. संसारीजीव के चार प्रकार—नैरयिक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव ।
४. संसारीजीव के पांच प्रकार—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय ।
५. संसारीजीव के छह प्रकार—पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक वनस्पति-कायिक और त्रसकायिक ।
६. संसारीजीव के सात प्रकार—नैरयिक, तिर्यञ्च, तिर्यञ्चणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देव और देवी ।
७. संसारीजीव के आठ प्रकार—प्रथम समय नैरयिक, अप्रथम समय नैरयिक, प्रथम समय तिर्यञ्च, अप्रथम समय तिर्यञ्च ।
प्रथम समय मनुष्य, अप्रथम समय मनुष्य
प्रथम समय देव, अप्रथम समय देव ।
८. संसारीजीव के नौ प्रकार—पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक वायुकायिक, वनस्पति-कायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय ।
९. संसारीजीव के दस प्रकार—प्रथम समय एकेन्द्रिय, अप्रथम समय एकेन्द्रिय
प्रथम समय द्वीन्द्रिय, अप्रथम समय द्वीन्द्रिय ।

प्रथम समय त्रीन्द्रिय, अप्रथम समय त्रीन्द्रिय
प्रथम समय चतुरिन्द्रिय, अप्रथम समय चतुरिन्द्रिय
प्रथम समय पञ्चेन्द्रिय, अप्रथम समय पञ्चेन्द्रिय ।

तीनों प्रतिपत्ति के आठवें सूत्र से अन्त तक सर्व जीवाभिगम का निरूपण किया गया है। वह वर्गीकरण भिन्न दृष्टि से किया गया है, उदाहरणस्वरूप—जीव के दो प्रकार सिद्ध और असिद्ध ।

जीव के तीन प्रकार सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यक्मिथ्यादृष्टि ।

प्रस्तुत आगम में अवान्तर विषय विपुल मात्रा में उपलब्ध है। इसमें भारतीय समाज और जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। स्थापत्य कला की दृष्टि से पद्मवरवेदिका और विजयद्वार का वर्णन बहुत महत्त्वपूर्ण है ।

प्रस्तुत आगम में आदेशों का संकलन मिलता है। एक विषय में स्थविरों के अनेक मत थे। मत के लिए आदेश शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत आगम उत्तरवर्ती ग्रन्थ है। इसलिए इसमें स्थविरों के अनेक मतों का संकलन मिलता है। वृत्तिकार ने आदेश का अर्थ प्रकार किया है।^१ तात्पर्यार्थ में अनेक मतों का संकलन भी सिद्ध होता है। जीवा० २/२० में चार आदेशों का संकलन है। २/४८ में पांच आदेश उपलब्ध हैं। वृत्तिकार ने लिखा है कि पांच आदेशों में कौन सा आदेश समीचीन है, इसका निर्णय अतिशय ज्ञानी ही कर सकते हैं। सूत्रकार स्थविरों के समय में वे अतिशयज्ञानी उपलब्ध नहीं थे इसलिए सूत्रकार ने इस विषय में कोई निर्णय नहीं किया, केवल उपलब्ध आदेशों का संकलन कर दिया।^१

रचनाकार

प्रस्तुत आगम की रचना स्थविरों ने की है। इसका आगम के प्रारंभ में स्पष्ट निर्देश है।^१

व्याख्या ग्रन्थ

प्रस्तुत आगम की दो व्याख्याएं उपलब्ध हैं एक आचार्य हरिभद्रकृत और दूसरी आचार्य मलयगिरिकृत। आचार्य हरिभद्रकृत टीका संक्षिप्त है, मलयगिरिकृत टीका बहुत विस्तृत है। मलयगिरि ने अपनी वृत्ति में 'इतिबृद्धाः' तथा मूलटीका, मूलटीकाकार और चूर्ण का अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है ।

१. जीवजीवाभिगम वृ० प० ५२ "आदेश शब्द इह प्रकारवाची" आदेशोक्ति पगारो "इतिवचनात्, एकेन प्रकारेण, एक प्रकारमधिकृत्येतिभावार्थः"

२. वही वृ० प० ५६ "अमीषां च पञ्चानामादेशानामन्यतमादेशसमीचीनतानिर्णयोऽतिशयज्ञानिभिः सर्वोत्कृष्ट-श्रुतलब्धि-संपन्नैर्वा कर्तुं शक्यते, ते च सूत्रकृतप्रतिपत्तिकाले नासीरन्निति सूत्रकृष्ण निर्णयं कृतवानिति" ।

३. जीवाजीवाभिगमे १/१—'इह खलु जिणमयं जिणाणुमयं जिणाणुलोमं जिणप्पणीतं जिणपरुवियं जिणक्खायं जिणाणुचिण्णं जिणपग्गत्तं जिणदेसियं जिणपसस्यं अणुवीइ तं सहहमाणा तं पत्तिमाणा तं रोएमाणा थेरा भगवन्तो जीवाजीवाभिगमे णामज्झयणं पणवइंसु" ।

‘इतिवृद्धाः’^१

इयं च व्याख्या मूलटीकानुसारेण कृता ।^२

“उक्तञ्च मूलटीकायाम्” ।^३

“आह च मूलटीकाकृत्”^४

“ताद् च मूलटीकाकृता वैविक्रयेन न व्याख्याता इति संप्रदायादवसेयाः”^५

“मूलटीकाकारेणव्याख्यातात्”^६

“आह च मूलटीकाकारः” — “उक्तं चूणी”^७

“आह च मूलटीकाकारः” — “उक्तञ्च मूलटीकाकारेण” ।^८

उक्तं मूलटीकायाम्

“आह च मूलटीकाकारः”^९

“उक्तं च मूलटीकायाम्”^{१०}

“आह च मूलटीकाकारः”^{११}

“आह च मूलटीकाकारः”^{१२}

“उक्तं च मूलटीकायां”^{१३}

“उक्तं च मूलटीकाकारेण”^{१४}

“आह च मूलटीकाकारः” — “चूणिकास्त्वेवमाह”^{१५}

“आह च मूलटीकाकारः” — “आह च चूणिकृत्”^{१६}

“उक्तं च मूलटीकायां” — “जीवाभिगम मूलटीकायां”^{१७}

“आह च मूलटीकाकारोपि” — “आह च चूणिकृत्”^{१८}

“तथा चाह मूलटीकाकारः”^{१९}

“आह च मूलचूणिकृत्”^{२०}

“मूलटीकाकारोप्याह....चूणिकारोप्याह”^{२१}

“आह चूणिकृत्”^{२२}

“तथा चाह मूलटीकाकारः”^{२३}

“आह च चूणिकृत्”^{२४}

“उक्तं चूणी”^{२५}

“आह च मूलटीकाकारः”^{२६}

“आह चूणिकृत् आह च टीकाकारः”^{२७}

“मूलटीकाकारेणापि”^{२८}

“आह च मूलटीकाकारः”^{२९}

१. वृ० प० २७	६. वृ० प० १४१	१७. वृ० प० २१०	२४. वृ० प० ४३८
२. वृ० प० ६४	१०. ११. वृ० प० १४२	१८. वृ० प० २१४	२५. वृ० प० ४४१
३. वृ० प० १०६	१२. वृ० प० २७७	१९. वृ० प० ३२१	२६. वृ० प० ४४२
४. वृ० प० १२२	१३. वृ० प० १८४	२०. वृ० प० ३५४	२७. वृ० प० ४४४
५. ६. वृ० प० १३६	१४. वृ० प० २०४	२१. वृ० प० ३६६	२८. वृ० प० ४५०
७. वृ० प० १३७	१५. वृ० प० २०५	२२. वृ० प० ३७०	२९. वृ० प० ४५२
८. वृ० प० १८०	१६. वृ० प० २०९	२३. वृ० प० ३८४	३०. वृ० प० ४५७

कार्य-संपूर्ति

इसके संपादन का बहुत कुछ श्रेय पुवाचार्य महाप्रज्ञ को है, क्योंकि इस कार्य में अर्हर्निश ने जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य संपन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तररहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनयशीलता, श्रमपरायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण-भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्तव्यपरता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

प्रस्तुत आगमों के पाठ संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

अपने शिष्य-साधु-साध्वियों के सहयोग से पाठ संशोधन का बृहत् कार्य सम्यग् रूप से सम्पन्न हो सका है, इसका मुझे परम हर्ष है।

अक्षय तृतीय, १ मई १९८७

अध्यात्म साधना केन्द्र,
महरोली—नई दिल्ली

आचार्य तुलसी

EDITORIAL

The present volume consists of three *āgamas*—*Ovāiyam*, *Rāyapaseṇiyam* and *Jīvājīvābhigame*.

OVĀIYAM

The text of *Aupapātika sūtra* has been constituted on the basis of the manuscripts and the *vr̥tti*. The references to different ancient versions in this *sūtra* are in abundance. It is a repository of descriptions. That is why we find at various places the instruction—*jahā ovavāie* (as in *Ovavāia*), referring to similar describers of the other *āgamas*. Neither the commentaries of those *āgamas* nor their authentic texts of the latter contain the describers accepted in the *Aupapātika*. Those describers, however, are available in other versions. It poses a problem for those who study the describers.

The text of this *Āgama* must be determined not only on the basis of *ādarśas* and *vr̥tti* but also on the basis of the describers available in the *āgamic* commentaries and the texts of the other *āgamas*. But it is difficult to do so without the compilation of the totality of describers.

Some of the describers are as follows :

Bhagavaī :

- 7/175 : evaṁ jahā ovavāie jāva
- 7/176 : evaṁ jahā uvavāie, evaṁ jahā uvavāie
- 7/196 : jahā kūpio jāva pāyacchitte
- 9/157 : “jahā ovavāie jāva egābhimuhe” “evaṁ jahā ovavāie jāva tivihāe”
- 9/158 : “jahā ovavāie jāva satthavāha” “jahā ovavāie jāva khattiya-kupḍaggāme”
- 9/162 : ovavāie parisā vannaō tahā bhāṇiyavvaṁ
- 9/204 : “jahā ovavāie jāva gaganatalamanulihantī” “evaṁ jahā ovavāie taheva bhāṇiyavvaṁ”
- 9/204 : jahā ovavāie jāva mahāpurisa
- 9/208 : jahā ovavāie jāva abhinandatā
- 9/209 : evaṁ jahā ovavāie kūpio jāva niggaḥchai
- 11/59 : jahā ovavāie
- 11/61 : jahā ovavāie kūpiyassa
- 11/85 : jahā ovavāie jāva gahaṇayāe

- 11/88 : 198 : evaṃ jaheva ovavāie taheva
 11/138 : jahā ovavāie taheva aṭṭapasālā taheva majjapaghare
 11/154 : evaṃ jahā daḍhapainpassa
 11/156 : evaṃ jahā daḍhapainne
 11/159 : jahā ovavāie
 11/169 : jahā ammaḍo jāva bambhaloe
 12/32 : evaṃ jahā kūṇio taheva savvam
 13/107 : jahā kūṇio ovavāie jāva pajjuvāsai
 14/107 : evaṃ jahā ovavāie jāva ārāhagā
 14/110 : evaṃ jahā ovavāie ammaḍassa vattavvayā
 15/186 : evaṃ jahā ovavāie daḍhappainpavattavvayā
 15/189 : evaṃ jahā ovavāie jāva savvadukkhāṇamantam
 25/569 : jahā ovavāie jāva suddhesaṇṇie
 25/570 : jahā ovavāie jāva lūhāhāre
 25/571 : jahā ovavāie jāva savvagāya

Bhagavatī Vṛtti :

- patra 7 : aupapātikāt savyākhyāno'tra dṛśyaḥ
 „ 11 : aupapātikavadvācyā
 „ 317 : “evaṃ jahā uvavāie” tti tatra cedam sūtramevam.....
 „ 318 : “evaṃ jahā uvavāie jāva” ityanenedam sūcitam.....
 „ 319 : “jahā ceva uvavāie” tti tatra caivamidam sūtram.....
 „ 462 : “jahā uvavāie” tti tatra cedam sūtramevaṃ leśatab.....
 „ 463 : “jahā uvavāie” tti tadeva leśato darśyate.....
 „ 463 : “evaṃ jahā uvavāie” tatra caitadevaṃ sūtram.....
 „ 463 : “jahā uvavāie” tti cedamevaṃ sūtram.....
 „ 463 : “jahā uvavāie parisāvanṇao” tti yathā kauṇikasyaupapātike
 „ 476 : “jahā uvavāie” tti evaṃ caittattatra.....
 „ 479 : “jahā uvavāie” tti anena yatsūcitam tadidam.....
 „ 481 : “jahā uvavāie” tti karaṇādidaṃ dṛśyam.....
 „ 482 : “evaṃ jahā uvavāie” tti anena yatsūcitam tadidam.....
 „ 519 : “jahā uvavāie” ityetasmādatideśādidaṃ dṛśyam.....
 „ 520 : “evaṃ jahā uvavāie” ityetatkaraṇādidaṃ dṛśyam.....
 „ 521 : “evaṃ jaheve” tyādi “evam”, anantaradarśitenābhilāpena yathau-
 papātike siddhānadhikṛtya saṃhananādyuktaṃ tathaivehāpi.....
 „ 521 : vākyapaddhatiraupapātikaprasiddhā'dhyetā.....
 „ 542 : “jahā uvavāie taheva aṭṭapasālā taheva majjapaghare” tti yathau-
 papātike'tṭapasālā vyatikaro.....
 „ 545 : “jahā daḍhapainne” tti yathaupapātike dṛḍhapratijñō'dhīstastathā'
 yaṃ vaktavyaḥ taccaivam.....
 „ 545 : “evaṃ jahā daḍhapainno” ityanena yatsūcitam tadevaṃ dṛśyam.....
 „ 548 : “jahā uvavāie” ityanena yatsūcitam
 „ 549 : jahā ammaḍo” tti yathaupapātike ammaḍo'dhīstastathā'yamiha
 vācyah

patra 563 : “evaṃ jahā uvavāie jāva ārāhaga” tti iha yāvatkaraṇādīdāmarthato
leśena dṛśyam.....

„ 563 : “evaṃ jahe” tyādinā yatsūcitam.....

„ 696 : “evaṃ jahā uvavāie” ityādi bhāvitamevāmmaḍaparivṛājakakathā-
naka iti

„ 924 : “jahā uvavāie” tti anenedaṃ sūcitam.....

„ 924 : “jahā uvavāie” tti anenedaṃ sūcitam

„ 924 : “jahā uvavāie” tti anenedaṃ sūcitam.....

Jñātāvṛtti

„ 2 : “varṇakagrantho”trāvasare vācyah.....

Vivāgasuyam

1/1/70 : jahā daḍhapaiṇṇe

2/1/36 : jahā daḍhapaiṇṇe

2/10/1 : jahā daḍhapaiṇṇe

Rāyapaseṇiyam

sūtra 3,4 : asoyavarapāyave puḍhavisilāpaṭṭae vattavvayā ovavāiyagameṇaṃ
neyā

„ 688 : egadisāe jahā uvavāie jāva appeḡatiyā

Rāyapaseṇiya vṛtti

page 3 : sampratyasyā nagaryā varṇakamāha—(Here *Aupapātika* has not
been mentioned)

„ 8 : yāvacchabdakaraṇāt “saddie kittie nāe sacchatte” ityādyaupapātika-
granthaprasiddhavarṇakaparigrahaḥ

„ 10 : aśokavarapādapasya pṛthivīśilāpaṭṭakasya ca vaktavyatā aupapātika-
granthānusāreṇa jñeyā

„ 27 : yāvacchabdakaraṇādrājavarṇako devīvarṇakaḥ samavasaraṇaṃ
caupapātikānusāreṇa tāvadvaktavyaṃ yāvatsamavasaraṇaṃ samāp-
tam

„ 30 : yāvacchabdakaraṇāt “āikare titthagare” ityādikah samasto`pi
aupapātikagranthaprasiddho bhagavadvarṇako vācyah, sa cātiga-
rīyāniti na likhyate, kevalamaupapātikagranthādavaseyaḥ

„ 39 : bahave uggā bhogā ityādyaupapātikagranthoktaṃ sarvamavasāta-
vaṃ yāvat samagrāpi rājaprabhṛtikā pariṣatparyupāsīnā avatiṣṭhate

„ 116 : “evaṃ jahā uvavāie tathā bhāṇiyavvaṃ” iti evaṃ yathā aupapālike
granthe tathā vaktavyaṃ. tacca evaṃ

„ 288 : ityādirūpā dharmakathāaupapātikagranthādavaseyā

Jambuddivapaṇṇatī

2/65 : evaṃ jāva ṇiggacchai jahā ovavāie jāva āulabolabahulam

2/83 : evaṃ jahā ovavāie sacceva aṇagāraṇṇao jāva uḍḍhañjāṇū

3/178 : evaṃ ovavāiyagameṇaṃ jāva tassa

Jambuddivapaṇṇattī Vṛtti :

- Śā. Vṛ. patra 14 : “vaṇṇao” tti ṛddhastimitasamṛddhā ityādi
 „ aupapātikopāṅgaprasiddhaḥ samasto’pi varṇako draṣṭavyaḥ
 „ cirātītamityādirvarṇakastatparikṣepi vanakhaṇḍavarṇa kasahita-
 aupapātikato’vaseyaḥ
 „ “vaṇṇao” tti atra rājño “mahayāhimavantamahante” tyādikorā-
 jñāśca “sukumālapāṇīpāye” tyādikovarṇakaḥ prathamopāṅgapra-
 siddho’bhidhātavyaḥ
 „ yathā ca samavasaraṇavarṇakaṁ tathaupapātikagranthādavaseyam
 „ “tae naṁ mihilāe ṇayaīe siṅghāḍage” tyādikaṁ “jāva” pañjaliudā
 pajjuvāsantī” ti paryantamaupapātikagatamavagantavyam... evo-
 pāṅgādavagantavyamiti
 „ 143 : “yathaupapālike” evaṁ yathā prathamopāṅge... nipātaḥ, aupa-
 pātikagamaścāyam
 „ 154 : yathaupapālike sarvo’ṇagāravarṇakastathā’tṛāpi vācyāḥ
 „ 155 : kiyadyāvadityāha—ūrdhvaṁ jānunī yeṣāṁ te ūrdhvajānavaḥ.....atra
 yāvatpadasaṁgrāhyaḥ “appegaiyā domāsapariāyā” ityādikaḥ aupa-
 pātikagrantho vistarabhayāṇna likhita ityavaseyaṁ
 „ 264 : evamuktakrameṇa aupapātikagamena prathamopāṅgatatapāṭhena
 tāvad vaktavyaṁ yāvattasya rājñaḥ purato mahāśvāḥ
 „ 325 : vṛkṣavarṇanam prathamopāṅgato’vaseyaṁ

Sūrapaṇṇattī Vṛtti

- patra 2 : “yāvacchabdenaupapātikagranthapratipāditaḥ samasto’pi varṇakaḥ
 āinnajāṇasamūhā” ityādiko draṣṭavyaḥ
 „ 2 : tasyāpi caityasya varṇako vaktavyaḥ sa caupapātikagranthādava-
 seyaḥ
 „ 2 : tasya rājñaḥ tasyāśca devyā aupapātikagranthokto varṇako’bhidhā-
 tavyaḥ
 „ 2 : samavasaraṇavarṇanaṁ ca bhagavata aupapātikagranthādavaseyam
 „ 3 : “bahave uggā bhogā” ityādyaupapātikagranthovaktam
 „ 3 : atra yāvacchabddādidamaupapātikagranthoktaṁ draṣṭavyam

Candrapaṇṇattī (Ms. Vṛtti)

- patra 5 : aupapātikagranthaprasiddhaḥ samasto’pi varṇako draṣṭavyaḥ sa ca
 granthagauravabhayāṇna likhyate kevalaṁ tata evaupapātikādava-
 seyaḥ
 „ 5 : aupapātikagranthokto veditavyaḥ
 „ 5 : tasya rājñastasyāśca devyā aupapātikagranthokto varṇako’bhidhā-
 tavyaḥ
 „ 5 : samavasaraṇavarṇanaṁ ca bhagavata aupapātikagranthādavaseyam
 „ 6 : “bahave uggā bhogā” ityādyaupapātikagranthoktaṁ sarvamava-
 seyam

Uvaṅgā

1/141 : jahā daḍhapaiṇṇo

2/13 : jahā daḍhapaiṇṇo

Dasā

10/2 : rāyavaṇṇao evaṃ jahā ovavātie jāva cellaṇṇe—

10/14-19 : sakoreṇṇamalladāmeṇaṃ chatteṇaṃ dharijjaṃāpeṇaṃ uvavāiyaga-
meṇaṃ neyavvaṃ jāva pajjuvāsai.....

Dasā. (Ms. Vṛtti)

Vṛtti patra 11 : aupapātikagranthapratipāditāḥ samasto'pi varṇako vācyaḥ sa
ceha granthagauravabhayāṇṇa likhyate kevalaṃ tata evaupapā-
tikādvaseyaḥ. Dasā, 5/4

D. 5/5, Ms. Vṛtti patra 11 :

caityavarṇako bhaṇitavyaḥ sopyaupapātikagranthādvaseyaḥ

D. 5/6, Ms. Vṛttipatra 11 :

aupapātikoktaṃ pāṭhasiddhaṃ sarvamavaseyaṃ.....

D. 10/2, Ms. Vṛttipatra 25 :

“tasya varṇako yathā aupapātikānāmnigranthe'bhihitastathā”

D. 10/2, Ms. Vṛttipatra 25 :

vistaravyākhyā tūpapatikānusāreṇa vācya.....

D. 10/3, Ms. Vṛttipatra 25 :

ādikaraḥ yāvatkaraṇāt..... samasto aupapātikagranthaprasiddho ..
...kevalamaupapātikagranthādvaseyaḥ...

D. 10/6, Ms. Vṛttipatra 26 :

jāvatti yāvatkaraṇāt jaṇavūhei vā.....uggā bhogā.....ityādyaupapā-
tikagranthoktaṃ

D. 10/14-19, Ms. Vṛttipatra 28 :

uvavāiyagameṇīti aupapātikagranthoktakaṇṇikavandanagamana-
prakāreṇāyamapi nirgataḥ

D. 10/21, Ms. Vṛttipatra 29 :

ihāvasare dharmmakathā aupapātikoktā bhaṇitavyā

Sūtras of Ovāiyam in other āgamas :

<i>Ovāiyam</i>	<i>Bhagavat</i>	<i>Rāya.</i>	<i>Jambu.</i>
Sūtra 32	25/559-563	—	
„ 33	25/564-568	—	
„ 36	25/576-579	—	
„ 40	25/582-598	—	
„ 43	25/600-612	—	
„ 44	25/613-618	—	
„ 64	9/204	Sū. 49-55	3/178

„ 65	—	—	3/180
„ 66	—	—	3/179

The Describer sūtras

The Describer *sūtras* take several concise forms in the *Aupapātika*. These are :—

jāva :	udae jāva jhiṇe (117)
evaṃ jāva :	apaḍivirayā evaṃ jāva (161)
sesaṃ taṃ ceva :	paralogassa ārahagā sesaṃ taṃ ceva (157)
evaṃ :	evaṃ uvajjhāyānaṃ therāṇaṃ (16)
abhiḷāveṇaṃ :	evaṃ eenaṃ abhiḷāveṇaṃ (73)
evaṃ taṃ ceva :	sagaḍaṃ vā evaṃ taṃ ceva bhāṇiyavvaṃ jāva naṇṇattha gaṅgāmaṭṭhiyāe (123)
bhāṇiyavvaṃ :	evaṃ ceva pasatthaṃ bhāṇiyavvaṃ (40)
	kandaṃanto eesiṃ vaṇṇao bhāṇiyavvo jāva siviya (10).
ṇeyavvaṃ :	taṃ ceva pasatthaṃ ṇeyavvaṃ. evaṃ ceva vaiviṇṇao vi eehiṃ paehiṃ ceva ṇeyavvo. (40)

Variant words and forms

The variant words and forms as approved by Grammar and holy usage in *Āgamas* are important from the linguistic standpoint. Hence they have been distinguished from the variant readings and are given below :

Sūtra 1	kukkuḍa	kuṅkaḍa	(kha)
„ 1	°musundhi°	°musandhi°	(ka, kha)
„ 1	°vaṃka	°vakka	(ga)
„ 1	°bhatta°	°hatta°	(ka)
„ 1	°kīlā°	°khīlā°	(ka, kha)
„ 1	°turaga°	°turaṅga°	(ka)
„ 1	darisaṇijjā	darisaṇiyā	(ka, kha)
„ 2	kālāgaru	kālāguru°	(ka)
„ 2	°kahaga°	°kahaka°	(ka, kha, ga)
„ 4	°nikurambabhūe	°ṇiurambabhūe	(kha)
„ 5	darisaṇijjā	darasaṇijjā	(ka, kha)
„ 5	gulaiya	guluiya	(ka)
„ 6	abbhintara°	abbhantara°	(ka)
„ 6	bāhira	bahira	(ga)
„ 9	ṇīvehiṃ	ṇitehiṃ	(ka)
„ 13	°haladhara°	°halahara°	(vṛ)
„ 19	°haṇue	°haṇūe	(ka)
„ 19	bhuyagīsara°	bhuyaīsara°	(ka, kha, ga)
„ 19	akaraṇḍuya°	akaranduya°	(ka, kha)
„ 19	°ccharu°	°tharu°	(vṛ)

Sūtra 19	gupphe	°gophe°	ga)
„ 19	°vīdheṇam	°pīdheṇam	(ka, kha)
„ 21	jayā	jadā	(ka)
„ 26	āyāvāyā	ādāvāyā	(ga)
„ 26	paravāyā	paravādā	(ga)
„ 31	omoyariyā	avamoyariyā	(vr)
„ 32	bārasabhatte	{ bārasamabhatte bārasamebhatte	(ka) (ga)
„ 32	cauddasa°	{ coddasama° coddasame°	(ka, kha) (ga)
„ 32	solasa°	{ solasama° solasame°	(ka, kha) (ga)
„ 32	caumāsie	caummāsie	(kha)
„ 33	°bhoitti	°bhoitti	(ga)
„ 34	davvābhi°	davvabhi°	(ka)
„ 40	entassa	intassa	(ga)
„ 43	°pautte	°pajutte	(ga)
„ 43	usaṇṇa°	osaṇṇa°	(ka, ga)
„ 43	°rūf	°ruyf	(ga)
„ 44	darisaṇāvaraṇijja°	daṁsaṇāvaraṇiya	(kha)
„ 46	°vīci°	°vīti°	(ga)
„ 46	toyapaṭṭham	°toyavaṭṭham	(ka)
„ 49	°vaṇṇiya°	°paṇṇiya°	(ga)
„ 50	viḥassati	vahassati	(ga)
„ 51	tiriḍadhāri	kirīḍadhāri	(kha)
„ 52	mahapphalam	mahāphalam	(ka, kha, ga)
„ 52	gayagayā	gatagatā	(ka)
„ 52	paccoruhanti	paccorubhanti	(ga)
„ 58	pāḍiyakkapāḍiyakkāim	pāḍiekkapāḍiekkāim	(kha)
„ 59	paoya-laṭṭhim	{ patoda-laṭṭhim payotta-laṭṭhim	(ka) (ga)
„ 63	abbhimṅgehim	abbamṅgehim	(ka)
„ 63	°misimisanta°	°mismisanta°	(ga)
„ 63	°susiliṭṭha°	°susaliṭṭha°	(ka, ga)
„ 63	°vīyaṅge	°vīiyaṅge	(ka)
„ 64	kūvaggāhā	kūtuyaggāhā	(ga)
„ 64	°turaṅgāṇam	°turaṅgāṇam	(ka)
„ 64	sakhiṇkhiṇi°	sakiṇkiṇi°	(ka)
„ 67	°muniṅga°	°mudaṅga°	(ga)
„ 68	bhaṭṭittam	bhaṭṭattam	(ka)
„ 71	°koṇca°	°kuṇca°	(ga, vr)

„ 82	vaira°	vajja°	(kha)
„ 82	°pighasa°	°nikasa°	(kha)
„ 86	veyañijjam	vedañijjam	(ka, ga)
„ 90	se je	sejje	(ka, kha)
„ 92	se jāo	sejjāo	(ka, kha)
„ 92	°uriyāo	°purīyāo	(ka, ga)
„ 95	kukkuiyā	kokuiyā	(kha, ga)
„ 97	°ahavvaṇa	°athavvaṇa°	(ka, kha, ga)
„ 105	alāu°	lāu	(ga)
„ 117	carimehim	caramehim	(ka)
„ 158	°veñṭiyā	°vañṭiyā	(kha)
„ 159	bhūi°	bhūi°	(ka, kha, ga)
„ 164	añagārā	añakārā	(ka, ga)
„ 170	teliā°	{ tilla°	(ka)
		{ tela°	(kha)
„ 175	vaya°	vai°	(ka, kha, ga)
„ 195	gā. 1, pañṭhiyā	pattipñṭhiyā	(ka, kha)

Description of the Manuscripts

(क) This was obtained from Gadhaiyā Library, Sardarshahar, through Shri Madanchandji Gauthi. It contains 40 leaves and 80 pages. Each leaf is 11-3/4" long and 4-1/2" wide. There are 4 to 13 lines in each leaf, each line containing 40 to 46 letters. Commentary is inscribed in very small letters in the margin on all sides. The manuscript is beautiful, artistic and appears to have been used and read. The following eulogy is given at the end of the copy—

“iti śrī uvavāisūtram samāptam. grantha 1167. cha. Saṃvat 1623 varṣe phālguna sudi 3 dine. Agra nagare. pātisāha śrī Akbara Jalāludīna rājya pravartamāne. śrī vīṣat kharataragacchālāṅkāra śrī pūjyarāja śrī 6 Jinasiṅgha-sūrivijayarājye paṇḍita śrī Labdhivardhanamunibhirupapātikā nāma upāṅgam likhāpitam. cha. vācyamānam ciraṁ nandyāt. śubham bhavatu lekha-kavācakayoḥ. śrī.”

(ख) This manuscript was also obtained through Shri Madanchandji Gauthi from Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 59 leaves and 118 pages. Each page is 10-1/4" long and 4-1/2" wide. There are 7 to 9 lines in each leaf and each line contains 40 to 45 letters. The upper and lower margins of the page contain the translation of the text in Rajasthani language. The following eulogy by the scribe appears at the end of the manuscript—

“śrī uvāi upāṅgam paḍhamam samattam. granthāgram 1225. cha. śrī. Saṃvat 1665 varṣe pauṣa māse śuklapakṣe saptamī tithau śrī somavāsare. śrī śrī vikrama nagare mahārājādhirāja mahārāja śrī rāyasinghji vijayarāja paṇḍita karmasiṅghena lipikṛtā. cha.”

(ग) This manuscript was also obtained through Sri Madanchandji Gauthi from Gadhaiyā Library, Sardarshahar. Each page contains 26 leaves and 52 pages. Each page is 10-1/2" long and 4-1/2" wide. Each page contains 15 lines with 46 to 48 letters in each line. The manuscript concludes with—“*uvāṇīyaṁ samattam, granthāgra 1200, śubhamastu cha. śrī,*” but the year is not mentioned therein. Looking at its leaves, letters and illustrations, the copy must be belonging to the 17th century.

(ख) This manuscript of the *vṛtti* was obtained through Shri Madanchandji Gauthi from Gadhaiyā Library, Sardarshahar. It has 75 leaves and 150 pages. Each leaf contains 13 lines with 55 to 60 letters in each line. The size of the leaf is 10-1/4" × 4-1/4". The manuscript is revised and clear. In the eulogy the following is inscribed—“*Śubham bhavatu. kalyāṇamastu. lekhaṇapāṭhakayośca bhadraṁ bhavatu, cha. saṁvat 1996 varṣe Mārgaśīrṣa sudi 1, bhaume likhitam, cha. śrī yādṛśam pustake dṛṣṭvā, tādṛśam likhitam mayā/yadī śuddhamāśuddham vā, mama doṣo na dīyate|| cha. cha.*”

(ग. ग.) Variant readings based on the *Vṛtti*

There are no identical readings of different versions in the special manuscript of the *vṛtti* and the printed *vṛtti*. We have taken the manuscript *vṛtti* as authoritative.

Rāyapaseṇiyam

The text of this *sūtra* has been determined on the basis of manuscripts and the *Vṛtti*. *Jīvājīvābhigama* and *Aupapātika-sūtras* have also been used for determining the texts of the *Sūryābha* and the *Dṛṣṭhapratijñā* chapters respectively. The commentator has mentioned the abundance of variant readings in different versions at every step. At the time of composing the commentary it posed a serious problem, but in later times it assumed still more serious dimensions. Even then we have revised the text by analysing the available material very minutely. None can claim that the revision of this text is totally flawless but this much can be asserted that we have maintained utmost neutrality and patience in our attempt to perform the task.

The construction of the text of this *sūtra* has exacted vast labour, and resulted in the enlargement of the body of the *sūtra*, as also in the intelligibility of the text and the tastefulness of the subject-matter.

Variant words and forms

The variant words and forms as approved by grammatical rules and holy usage in *Āgamas* are important from the linguistic standpoint, so they have been distinguished from the variant readings and are given below—

Sūtra No. 8	mauḍa	matuḍa	(ka)

„	8	°dheyam	°dhejjam	(ka)
„	9	ṇāi°	ṇādi°	(ka, kha, ga, ca)
„	10	ukit̥thāe	okit̥thāe	(cha)
„	12	paṭṭhe	{ vaṭṭhe	(kha, ga)
			{ maṭṭhe	(ca)
„	13	ṇāiya	ṇātiya	(ka, kha, ga, gha, ca cha)
„	15	hanta	handa	(ca)
„	15	abhivandae	abhivandate	(cha)
„	24	āyaṁsa°	ātaṁsa°	(gha, ca)
„	37	miu°	mau°	(ka, kha, ga)
„	37	pāsāṭe	pāsāṭie	(ka, kha ga, gha)
„	40	atīva	atīta	(ca)
„	48	tisovāṇa°	tisomāṇa°	(ka, kha, ga, ca)
„	56	mahālateṇam	mahālaeṇam	(kha, ga, gha)
„	56	vemāṇiehim	vemāṇitehim	(ka, kha, ga, gha)
„	69	viraciya	viratiya	(ka, kha, ga, ca)
„	71	°vāyāṇam	{ vāiyāṇam	(ka, kha, ga, cha)
			{ vāyayāṇam	(gha)
„	75	oṇamanti	tonamanti	(ka, gha)
„	76	mau	miu	(kvacit)
„	77	°tāṇam	°tāṇam	(ka, ca, cha)
„	118	matthae	matthate	(ka, kha, ga, gha)
„	118	jaeṇaṁ vijaṇam	jateṇaṁ vijateṇam	(ka, kha, ga, gha)
„	124	bahuṭo	{ bahugṭo	(ka, kha, ga, gha)
			{ bahugṭo	(ca, cha)
„	129	dāra°	{ vāra	(ka, kha, ga, ca, cha)
			{ bāra	(gha)
„	130	°kavelhuyāo	°kavelhuyāto	(ka, kha, ga, gha)
„	135	saṅkalāo	saṅkhalāo	(kvacit)
„	137	pagaṇṭhagā	pakaṇṭhagā	(gha, ca)
„	154	sāe pahāe paese	sāte pahāte patese	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
„	159	savvouya°	savvouta°	(ka, kha, ga, gha)
„	173	°piṇaddha	°vinaddha°	(gha)
„	173	tīthāṇa°	titthāṇa°	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
„	185	āṇaga	āṇaga	(ka, kha, ga, gha)
„	189	uddham	uddham	(ka)
„	197	°veiyā	°vetiyā	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
„	197	phalaesu	°phalatesu	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)

219	tao	{ tago (ka) tato (cha)
228	°binṭā	{ °benṭā (ka kha, ga, cha) bethā (ca)
245	suvirai-rayattāṇe	suirai-raittāṇe (ka, kha, ga, gha, cha)
292	kaḍucchuyam	kaḍucchayam (ka, kha, ga, gha)
654	cariyāsu	caliyāsu (ka, kha, ga)
664	pīya°	pīla° (ka, kha, ga)
683	°vinda°	°vanda° (gha)
687	°vūhe	°pūhe (ka, kha, ga)
695	°paribhāittā	paribhāgettā (ka, kha, ga, gha, ca, cha)
706	koṭṭhayāo	koṭṭhāo (ka, gha)
720	agilāe	ailāe (ka, ca)
754	ao°	{ ayo° (ka, kha, ga) aya° (gha)
755	bhiccā	bheccā (gha)
760	kisie	kasie (ka, kha, ga, gha, cha)
771	vāukāyassa	vāuyāgassa (ka, kha, ga, gha, ca, cha)
787	bhikkhuyāṇam	bhichuyāṇam (gha, ca)
791	°ppaogeṇa	°ppayogeṇa (gha)

Description of the Manuscript

(क) This manuscript was obtained from Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 49 leaves and 98 pages. Each leaf is 10-1/2 'x 4-1/2'', with 13 lines in each leaf and 50-55 letters in each line. It was scribed in V.S 1671 and the following is its colophon :

“namo jīṇāpaṇṇaṃ jīyabhayāṇaṃ ṇamosuya devayāe bhagavaṇe ṇamo paṇṇattīe bhagavaṇe ṇamo bhagavao arahao pasassa passe supasse passavaṇiṇabho. cha. Rāyapaseṇaiyaṇṇaṃ samattāṇṇaṃ. cha. granthāgraṇṇaṃ 2079 samarthitamidaṇṇaṃ sūtraṇṇaṃ. cha. saṃvat 1671 varṣe bhādravā sudi 11”

This colophon runs still further, but this faint portion is coloured with yellow.

(ख) They contain 55 and 61 leaves respectively.

(ग) Both of them are similar to the manuscript (क).

(घ) This manuscript belongs to Yati Kanakachandji of Pali (Marwar). Its size is 10½' x 4½'. It contains 54 leaves and 108 pages, with 13 lines in each page and 46 to 48 letters in each line.

It was scribed in V.S 1566. The following colophon is appended at the end of the manuscript :—

“cha. śubham bhavatu lekha-ka-pāṭhakayoḥ śrī saṅghasya ca. saṁvat 1566 varṣe caitra sudi 2 tithau adyeha śrīmadanaḥillapattane śrī vṛhat-kharatara-gacche śrī Vardhamānasūrisantāne śrī jinabhadrasūripaṭṭānukrameṇa śrī jinamaṁsasūrirajye vācanācharyajayākāraganīśiṣya vā. dharma-vilāsagani-vācanārtham bha. vastupālabhāryayā lili śravikayā. Putraratna bha, sāliga pumukhaparivāra saśrīkayā suśreyārtham ca lekhitam śrī Rājaprasāniyo-pāṅgam.

(च) This manuscript was obtained from the collection of Punamchand Buddhamai Dudheria of Chhapar (Rajasthan). Each leaf is 12"×5". There are 42 leaves and 84 pages in this copy, with 15 lines in each page and 48 to 54 letters in each line. Two illustrations are given in the first two pages. The script is beautiful but abounds in mistakes. Approximately it belongs to the sixteenth century.

(छ) This manuscript also was obtained from the collection of Punamchand Buddhamai Dudheria of Chhapar (Raj.) It contains 41 leaves and 82 pages, with 15 lines in each page and 57 to 60 letters in each line. The script is ordinarily fair but flawless. It ends with the following colophon—“lipi saṁvat 1665 varṣe kārtika māse śukla pakṣe sapṭamī śukre Babberakapure paṇḍita Labdhikallolagaṇinā lekhi.”

(जू) It was obtained from Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. Its size is 10½"×4½". It contains 52 leaves and 104 pages, with 17 lines in each page and 65 to 70 letters in each line. This manuscript was scribed in V.S. 1605 and ends with the following colophon :—

“iti malayagiriviracitā rājaprasāniyopāṅgavṛttikā samarthitā. samāptam iti. pratyakṣaragaṇanayā granthāgram. cha. cha. pratyakṣaragaṇanāto granthamānam vinīcitam. saptatrimśatsātānyatra. ślokanām sarvasaṁkhyayāḥ. cha, granthāgram śloka 3700, cha. śrī. saṁvat 1605 varṣe śrāvaṇa sudi 13, bhāume pattana vāstavyam, paṇḍita Rudrasuta Jiganātha likhitam. śubham bhavatu.

JIVĀJIVĀBHIGAME

The text of this sūtra has been revised on the basis of manuscripts and its *vṛtti*.

The *vṛtti* by Malayagiri is based on old *ādarśa*, hence the texts of palm leaf and the *vṛtti* are identical. The *sūtras* 3/218, 457, 578, 826 together with their footnotes may be consulted in this connection. A great variety of readings in the relatively later editions provides ample room for deliberation and research.

The fact regarding the dissimilarity of readings in the manuscripts of *Jivājivābhigama* has also been pointed out by Śānticaṇḍra, the commentator of *Jambūdvīpaprajñapti*.¹

Upādhyāya Śānticaṇḍra has quoted the text about the description of the *Kalpavṛkṣa* from *Jivājivābhigama*. In describing the fourth *Kalpavṛkṣa* he has quoted the reading '*Kaṇaga-nigaraṇa*' which he explains as 'the heap of gold.'² In the *Vṛtti* of *Jivājivābhigama* the term '*Kaṇaganigaraṇam*' has been explained as '*Kanakasya nigaraṇam, kanaka-nigaraṇam, gālitaṁ, kanakamiti bhāvaḥ*'.³ The change in script has led to change in reading. We find the reading "*Kūḍāgā-raṭṭha*" in some manuscripts. In the printed editions as well as the hand-written copy we find the reading '*Kūṭāgārādyāni*'. It has not been explained in the *Vṛtti* of *Jivājivābhigama*. Of course, it has been explained in the *Vṛtti* of "*Jambūdvīpa-prajñapti*"—"Kūṭākāreṇa—śikharākṛtyāḍhyāni."⁴

Acarya Malayagiri has himself mentioned the variant readings of the manuscripts.⁵ The verses, which the commentator quotes from other sources, have been included in the original text in comparatively recent manuscripts.⁶

In the *Vṛtti* we find the mention of the commentary on *Jambūdvīpa-prajñapti*. The commentators of *Jambūdvīpa-prajñapti* definitely belong to a period later than that of Malayagiri. Hence it is a matter worthy of investigation whether this mention is an interpolation or whether Malayagiri had really got with him some old commentary of *Jambūdvīpa-prajñapti*.⁷

At some places the *vṛtti* contains a lot of matter worth deliberation. The commentator has explained the term "*Śrīvaccu* as *śrīvṛkṣa*. Looking to the context it should be *śrīvatsa*."

1. Jambūdvīpaprajñapti Vṛtti. p. 108 :

atra cādhikāre jivābhigamasūtrādarśe kvacidadhikapaḍam api dṛśyate tattu vṛttāvatyākhyātam svayaṁ paryālocyamānamapi na nārthapradamīti na likhitaṁ, ten tat sampradāyāda vagantavyam, tamantareṇa samyak pāṭhaśuddherapi kartumaśakyatvādīti.

1. Jambūdvīpa Vr. patra 102 : kanakanikaraḥ suvarṇarāśiḥ.

2. Jivājivābhigama, Vr. p. 267.

3. Jambūdvīpaprajñapti Vr. p. 107 : See the footnote of Jivājivābhigama, 3/594.

4. (a) Ibid. Vr. p. 321 :

īha bahudhā sūtreṣu pāṭhabhedāḥ parametāvāneva sarvatrāpyartha nārthabhedāntaramitye-tadvyākhyānusāreṇa sarvepyanugantavyā na mogghavyamīti.

(b) Ibid. Vr. p. 376 :

"īha bhūyaṁ pustakeṣu vācanābhedo galitāni ca sūtrāṇi bahuṣu pustakeṣu tato yathā-vasthitavācanābheda-pratipattiyartham galitasūtroddharaṇārtham caivaṁ sugamānyapi vivriyante.

5. Ibid, Vṛtti p. 331, 333, 334, 334; 3/820, 830, 834, 837 : The footnotes are worth seeing.

6. jivābhigama, Vṛtti p. 382 :

kvacit sīṃhādīnāṁ varṇanāṁ dṛśyate tad bahuṣu pustakeṣu na dṛṣṭamītyupekṣitaṁ, avas-yaṁ cet tadvyākhyānena prayojanāṁ tarhi Jambūdvīpaprajñapti śikā paribhāvānīyā tatra savistaraṁ tadvyākhyānasya kṛtatvāt.

7. Ibid., vṛtti p. 271 :

"Śrīvṛkṣeṇāñkitaṁ—lāñchitaṁ vṛkṣo yeṣāṁ te śrīvṛkṣalāñchita vakṣasaḥ."

The original commentator and Malayagiri had before them the intricacies of variant readings and different expositions and in the times of later commentators also such discussions were often held. In this connection, a topic mentioned in the *vṛtti* is of historical importance. The commentator writes that this *sūtra* is obscure on account of the peculiarity of aim and purpose. It can be explained only on the basis of the right tradition and solid ground. It is sheer repudiation of the *sūtra* if it is explained carelessly and whimsically.¹ Due care had been taken that the *sūtra* may not be repudiated or wrongly interpreted. Consequently, attempt was made to preserve the text and its meaning. Even then due to variation in intelligence and scribe's carelessness discrepancies in readings and expositions have taken place. On account of the variant readings we had to take great pains in arriving at the correct text. The reader can estimate the labour involved by the variant readings and notes thereon appended in the edition.

The manuscript marked "tā" is an abridged version of the text, e.g. the following *sūtra* 1/41—"tāim bhante kiṃ puḍāim āhārenti apu goyamā puṭṭhā ṇo apu. ogā ṇo aṇogā aṇantaro ṇavaram aṇūim pi ā bāyarāim piā uḍḍham vi i ādiṃ pi i savisae ṇo avisae āṇupuvvīm ṇo aṇāpupuvvim ācchaddi vāghātam pa siya tidisi ṣka. ṇo vaṇṇato kālā nī gandhato su 2 rasato ṇo phāsaho tesim porā-ṇam vipariṇāmettā apuvva vaṇṇa guṇa ṣka uppācittā ātasarīra khettoḍḍhe poggale savvappaṇattāe āhāramāhārenti,"

Due to the flaw in script the reading like *katidisim* (ka) has found place in place of *kimtidisim*. We have not accepted the readings of the *ṭī* manuscript in many places, because they are too much abridged.

Variant words and forms

1/1	Jiṇakkāyam	Jiṇakhāyam	(kha)
		Jiṇakhātam	(tā)
„	aṇuvī	aṇuvītiyam	(ka, kha)
„	roemāṇā	rotamāṇā	(tā)
1/14	saṅghayaṇa	saṅghataṇa	(tā)

I. Ibid., *Vṛtti* p. 450 :

sūtrāṇi hyamūni vicitrābhiprāyatayā durlakṣyāṇi samyaksampradāyādavasātavayāni, sampradāyaśca yathoktasvarūpa itī na kācidanupapattīḥ, na ca sūtrābhiprāyamajñātvā anupapattirudbhāvanīyā, mahāśātanāyogato mahā'narthaprasakteḥ, sūtrakṛto hi bhagavanto mahīyānsaḥ pramāṇikṛtāśca mahīyastaraistatkālavarttibhiranyairvidvadbhīstato na tatsūtreṣu manāgapyanupapattīḥ, kevalam sampradāyāvasāye yatṇo vidheyāḥ, ye tu sūtrābhiprāyamajñātvā yathā-kathāñcidanupapattimudbhāvayante te mahato mahīyasa āśātayanti dīrghatārasaṃsārābhājāḥ, āha ca śikākāraḥ—"evam vicitrāṇi sūtrāṇi samyaksampradāyādavaseyāṇīyavijñāya tadabhiprāyaṇaṇānupapatticodanā kāryā, mahāśātanāyogato mahā'narthaprasaṅgādīti" evam ca ye samprati duṣṣamānubhāvataḥ pravacanasyopaplavāya dhūmaketava ivotṭhitāḥ sakalakālasukarāvyavacchinnaśuvīdhimārgānuṣṭhātṛsuvihitasādhuṣu matsariṇaste'pi vṛddhaparamparāyātasampradāyādavaseyaṃ sūtrābhiprāyamapāsyotsūtram prarūpayanto mahāśātanābhājāḥ pratipattavyā apakarnayitavyāśca dūratatattvavedibhiriti kṛtaṃ prasaṅgena".

„	saṇṇāo	saṇṇāto	(ka)
„	joguvaoge	joguvatoge	(ka)
1/19	kohakasāe	kohakasāte	(ka)
1/21	kaṇhalessā	kiṇhalessā	(ga, ʈa)
1/26	āṇapāṇu°	āṇapāna°	(ʈ)
1/72	chīravirāliya	chiravirāliya	(k)
		chirivirāliya	(kha)
		chirivavirāliā	(ga, ʈa)
		chīravirāli	(tā)
1/73	thihū	thibhu	(ka)
1/100	tahappagārā	tahappakārā	(ka, kha, ga, ʈa)
1/101	duāgaiyā	duyāgatiyā	(ga)
1/119	āhāro	ādāro	(tā)
2/59	paliovamāim	palitovamāim	(ka, kha, ga, ʈa)
2/60	abbhahiyāim	abbhadhiyāim	(ga)
2/74	phumphuaggi	phumphaaggi	(ka)
		pumpahaaggi	(ga)
2/92	vāsapuhattam	vāsapudhattam	(ka)
		vāsapuhuttam	(ga, ʈa)
2/241	etāsi	etesi	(ka, kha, ga, ʈa)
		egāsi	(tā)
2/149	vaṇassati°	vaṇapphai°	(ka, kha, ga)
3/5	joyaṇa°	jotaṇa	(ka)
3/6	āvabahule	avabahule	(ka)
		āvabahule	(tā)
3/33	abādhāe	ābādhāe	(ka, kha, ʈa)
3/48	je ṇam imam	jeṇimam	(tā)
3/73	asīuttaram	āsīuttare	(tā)
3/77	aḍahattare	aḍasattari	(ga)
		aṭṭhuttare	(tā)
3/77	kiṇhapuḍa	kiṇṇapuḍa	(ka, ga)
3/80	bāhaleṇam	pāhaleṇam	(tā)
3/94	kerisagā	kerisatā	(ka, kha, ga)
3/96	phuḍita°	phuḍiga°	(tā)
		sphuṭita°	(ma, vṛ)
3/118	usiṇavedaṇijjesu	usuṇavedaṇijjesu	(tā)
3/118	viraciya	viraiya	(ka, ga, ʈa)
3/119	egāham	ekāham	(kha, ga, ʈa)
3/234	ettha	tattha	(ka, kha, ga, ʈa)
		yattha	(tā)
3/323	jambūṇadamayā	jambūṇatamayā	(ka)
		iambūṇatāmāyā	(ga, ʈa, tā)

3/371	uvagāriyālayaṇe	ovāriyalayaṇe	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
		uvakāriyalayaṇe	(tā)
3/372	khambhuggaya	thambhuggaya	(ka, ga)
3/412	dhūvadhāḍiyāo	dhūmadhāḍiyāo	(ka, kha)
3/593	oviya°	uvvitiya	(ka, kha)
		uvviya	(ga)
3/733	bāyālīsam	bādālīsam	(tā)
3/750	bāyālīsam	bātālīsam	(tā)
3/748	kelāse	ketilāse	(kha)
		kailāse	(ga, ṭa, tri)
3/794	egunayālam	iūyālam	(ka)
		ūyālam	(kha, tā)
		iguyālam	(ga)
3/798	egayālīsam	eyālīsam	(ka, kha, ṭa)
		egayālīsam	(ga)
		itālīsam	(tā)
3/829	teṇaṭṭhenam	eeṇaṭṭhenam	(ga, tri)
3/838/13	maṇussāṇam	maṇūsāṇam	(tā)
3/840	kayāi	kadāyī	(tā)
3/841	balāhakā	balāhatā	(tā)
3/841	bādare vijjukāre	vātare vijjutāre	(tā)
	badare thaṇiyasadde	vātare thaṇitasadde	(tā)
3/841	nadī oi vā ṇihīti vā	ṇandīti vā ṇidhayoti vā	(tā)
3/860	supakkakhoyarasei	supikkakhot araseti	(tā)
3/877	khodavarāṇṇam	khoyavarāṇṇam	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
3/949	khodasarisaṁ	khotodasarisaṁ	(tā)
3/998	heṭṭhimpī	haṭṭhimpī	(ga, ṭa, tā)
		hiṭṭhampī	(tri)
3/1007	savvaheṭṭhillaṁ	savvaheṭṭhimayaṁ	(tā)
3/1007	savvovarillaṁ	savvupparillaṁ	(ka, kha, ṭa)
3/1007	savvabbhimaṭṭarillaṁ	savvabbhantaṭṭaraṁ	(tā)
5/37	ṇiodā	ṇiotā	(tā)
5/54	°ṇiodajīvā	°ṇigodajīvā	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
5/58	°ṇiodajīvā	°ṇioyajīvāvi	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
9/11	aṇāie	aṇādīe	(tā)
9/28	sakāsāi	sakasādī	(tā)
9/131	ohidaṁsaṇi	avadhidaṁsaṇi	(ga, tri)
		odhidaṁsaṇi	(tā)

Description of the Manuscript

(क) Original text : leaves 94; saṁvat 1575; Hand-written.

This Ms. belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 94 leaves and 188 pages with 15 lines in each page and 53-56 letters in each line. Its size is $13\frac{1}{4}" \times 5"$. It is beautifully scribed. The following is the eulogy at the end :—

“Saṃvat 1575 varṣe āśvinamāse kṛṣṇapakṣe trayodaśyām tithau bhṛguvāsare pattananagaramadhye moḍhajātiya Joṣī vīṭṭhalasuta lākaṇalikhitam. cha. yādṛśam pustake dṛṣtam, tādṛśam likhitam mayā/yadi śuddhamaśuddham va mama doṣo na dīyate //1// śubham bhavatu lekhaka-pāṭhakayoḥ kalyāṇamastu. cha. cha. śrī. śrī. cha. granthāgra 5200.

(६) Original text : leaves 80.

This Ms. belongs to Sardarshahar mentioned above. It contains 80 leaves and 160 pages, with 15 lines in each page and nearly 61 letters in each line. Its size $12" \times 4\frac{1}{4}"$. The Ms. is very old and tattered. The scribing year is not mentioned at the end, but most probably it must belong to the 16th century.

(७) Original text : leaves 90. Illustrated.

It belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 90 leaves and 180 pages with 15 lines in each page and about 63 words per line. Its size is $11\frac{1}{2}" \times 4\frac{1}{2}"$. On the first page there is beautiful illustration in golden ink of the image of the Tirthaṅkaradeva. It is very beautifully scribed. In the centre there is *bāvaḍī* and in the middle of that there is a red circular spot.

There is no puṣpikā and scribing year at the end of the ms., but most probably it belongs to the 16th century.

It almost tallies with the palmleaf manuscript and the commentary.

(८) Palmleaf photo-print of Jaisalmer Bhaṇḍāra.

This copy mostly tallies with the commentary. It does not contain the pages containing the sūtras 105-115 of the third *pratipatti*.

(९) टब्बा : Scribing year 1800. It belongs to the Order's Library, Ladnun. It had been thoroughly studied by Ācārya Kālūgaṇī (the eighth pontiff) and the text had been corrected by him at various places.

Jivāvivābhigama tīkā (Hand-written)

It belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 250 leaves, and 500 pages with 15 lines per page and about 65 letters per line. Its size is $10" \times 4\frac{1}{4}"$. The scribing year is saṃvat 1717. The script is very beautiful.

Acknowledgements

Jainism has a long tradition of councils held for compiling the texts of the *Āgamas*. Ere 1500 years from today there had been four councils on *Āgama*. After Devarddhigaṇī no well-planned *Āgama* council was held. The *Āgamas*

compiled at that time fell into disorder during this long interval. So a well-organised council was the need of the hour to revise the *Āgamas* again. Ācārya Tulsī tried his best for a general consensus on *Āgama*-editing but it could not materialise. Lastly it was decided that if our editing of *Āgamas* is research-oriented, unbiased and punctilious, it will be universally accepted. On this consideration we started our work of holding the council for critically editing the *Āgamas*.

Ācāryaśrī Tulsī is the chief of this *vācanā*. *Vācanā* means “teaching”, that comprises so many activities like search of the correct text, translation, critical and comparative study, and so on. In all these activities the active cooperation, guidance and encouragement from the Ācāryaśrī is always available to us. It was our forte for undertaking such onerous task.

Instead of expressing my gratitude to the Ācāryaśrī and thereby feeling relieved from the burden of his gratefulness, I feel it better to require more energy through his blessings and become heavier for taking up the next assignment.

In editing the texts of *Ovāiyam* and *Rāyapaseṇiyam* of this book Muni Sudarshan, Muni Madhukara, Muni Hiralal and in editing the text of *jīvājīvābhigame* Muni Sudarshan & Muni Hiralal have worked with diligence and perseverance. Muni Chatramal, Muni Balchand, Muni Hansraj and Muni Maṇilal have also lent remarkable cooperation in editing the text of *Jīvājīvābhigame*.

Word index of *Ovāiyam* has been prepared by Muni Shrichand and that of *Rāyapaseṇiyam* and *Jīvājīvābhigame* by Muni Hiralal. Muni Sudarshan, Muni Hiralal and Sādhvī Siddhaprajñā, and Samāṇī Kusumaprajñā actively cooperated in correcting the proofs of the book.

The general get-up of *Ovāiyam* and *Rāyapaseṇiyam* has been prepared by Muni Mohanlal “Amet”. The first two indexes have been prepared by Muni Hiralal. In the revision of the text also he was remarkably helpful.

While evaluating their cooperation in the accomplishment of this assignment I express my gratefulness to all of them.

The services of Late Madanchand Gauthi, who had a deep insight into the *Āgamas* and who helped me in editing the text of the *Āgamas*, cannot be forgotten at this stage. If he had been alive, he would have been very happy at this achievement.

Shri Shrichand Rampuria, Kulapati, Jain Vishva Bharati and the Managing Editor of *Āgama* Literature, has been actively involved in the *Āgama* work from the very beginning. He is fully-determined and working hard to reach the *Āgama* literature to the laymen. Having relieved himself of his well-set Advocate's job he has been devoting most of his time to the *Āgama* programme. Shri

Khemchand Sethia, President and Shri Shrichand Bengani, Secretary of Jain Vishva Bharti have also actively cooperated in this task. The English rendering of the Editorial and the Introduction were done under the supervision of Dr. N. Tatia and Dr. V. P. Jain by Shri R.S. Soni & Samāṇīs Chinmayaprājñā and Ujjvalaprājñā have also been actively associated with it.

It is simple formality to mention the names of those proceeding in the same direction with the same speed for a common goal. Really it is a sacred duty for us and we have all fulfilled it.

—Yuvācārya Mahāprajña

Adhyātma Sadhanā Kendra,
Mehrauli, Delhi.
Akṣaya Tṛtīyā, 1st May, 1987.

INTRODUCTION

The present book is *Uvaṅgasuttānti*. It contains the original text of twelve *Upāṅgas* with variant readings and abbreviated texts. It has two parts. The first part contains three Āgamas (1) *Ovāiyam*, (2) *Rāyapaseṇiyam* and (3) *Jivājivābhigame*. The second part contains nine āgamas : (1) *Paṇṇavaṇṇā*, (2) *Jambuddīva-pannattī*, (3) *Candapanṇattī*, (4) *Sūrapanṇattī*, (5) *Nirayāvallyāo* (*Kappiyāo*), (6) *Kappavaḍḍisiyāo* (7) *Pupphiyāo*, (8) *Pupphacūliyāo*, (9) *Vaṇhidasāo*.

In the ancient tradition we find the following two classifications of the āgamas :—

(1) *Aṅgapraviṣṭa* and (2) *Aṅgabādhya*.

There was no such categorisation as *Upāṅga* in the old tradition. *Nandīsūtra* bears no mention of any *Upāṅga*. In any older āgama too, *Upāṅga* has not been mentioned. The *Tattvārthabhāṣya* uses this word for the first time, which is the earliest in the available texts.¹

Relation between Aṅga and Upāṅga

Tattvārthasūtra mentions the word *Upāṅga*, but it does not indicate any relationship between them. We find it mentioned in the *vr̥tti* of *Jambūdvīpaprajñapti* and the *Sukhabodhā Sāmācārī* at page 34, composed by Shrichandra Sūri, the commentator of *Nirayāvalikā*. According to *Jambūdvīpaprajñapti*, the interrelationship between *aṅgas* and *upāṅgas* is shown as under :—

<i>Aṅga</i>	<i>Upāṅga</i>
Ācārāṅga	—Aupapātika
Sūtrakṛtāṅga	—Rājaprasāṇiya
Sthānāṅga	—Jivājivābhigama
Samavāyāṅga	—Prajñāpanā
Bhagavatī	—Jambūdvīpaprajñapti
Jñātādharmakathā	—Candraprajñapti
Upāsakadaśā	—Sūryaprajñapti
Antakṛddāśā	—Nirayāvalikā (Kalpikā)
Anuttaropapātikadaśā	—Kalpāvatansikā

1. *Tattvārthabhāṣya*, 1/20 : tasya ca mahāviśayatvāttānāstānādhikṛtya prakaraṇasamāptya-pekṣamaṅgopāṅganānātvaṃ.

Praśnavyākaraṇa	—Puṣpikā
Vipākaśruta	—Puṣpacūlikā
Dṛṣṭivāda	—Vṛṣṇidaśā ¹

1. *Ovāiyam*

Nomenclature

The present *āgama* is called *Ovāiyam* (Aupapātikā). Its main theme is *upapāta*. *Samavasaraṇa* is its incidental treatment. On the basis of the main theme treated herein, it is known as *Ovāiyam* (Skt. Aupapātika). On deleting letters “va” as per the Prakrit Grammar Rule, we get *ovāiyam* form in place of *ovavāiyam*. We come across the same name in the Nandīsūtra.²

Subject-Matter

The main theme enunciated in the *Aupapātika* is ‘rebirth’, that so and so *upapāta* (instantaneous rebirth) takes place because of such and such conduct.

The exordium consists of many types of descriptions of town, monastery, garden, king etc. The present sūtra has come to be known as a Varṇaka (describer) sūtra because of these descriptions and has been used in various epilogues for this reason.

Commentaries

The first commentary of the Aupapātika is the *vṛtti* by Abhayadeva Sūri, the commentator of the nine *āgamas*. The introductory verse shows that Abhayadeva Sūri had got no other earlier *vṛtti* in front of him. He composed this *vṛtti* with the help of other texts. He himself mentions :—

śrīvarddhamānamānamya prāyo’nyagranthavikṣitā /
aupapātikaśāstrasya vyākhyā kācidvidhīyate //

The commentator has mentioned the views of the foregoing ācāryas at several places.

1. snānādvā pañḍurībhūtagātrā iti vṛddhāḥ/(Vṛtti p. 171)
2. cūrṇikārastvāha/(Vṛtti p. 224)
3. asya ca vṛddhoktasyādhikṣtagāthāvivarāṇasyārtham bhāvārthaḥ/
(Vṛtti p. 225)

This commentary is neither too elaborate nor too abridged. Its medium size contains most of the points worth discussing.

The *Ovāiyam* contains numerous variant readings. Abhayadeva has described the first sūtra thus—“This sūtra is abundant in variant readings. I shall deal with only what is intelligible.”³ Most probably such variant readings do

1. Jambūdvīpaprajñapti, Śānticandriyā Vṛtti, patra 1, 2.

2. Nandīsūtra, 76.

3. Aupapātika, vṛtti, page 2 :

iha ca bahavo vācanābheda dṛśyante, teṣu ca yamevāvabhotsyāmahe tameva vyākhyāsyāmaḥ.

not appear in any other sūtra. If the commentator had not compiled them, they would have passed into oblivion.

The commentary ends with an eulogy in three verses, in which the commentator mentions the names of his *guru*—Shri Jineśvara Sūri, of the Candra lineage, and the place of composition—Aṇahī'apātakanagar and Droṇācārya who revised the Vṛtti :

candrakula-vipula-bhūtala-yugappravara-vardhamānakalpataroḥ /
kusumopamasya sūreḥ guṇasaurabha-bharita-bhavanasya //
nissambandhavihārasya sarvadā śrījineśvarāhvasya /
śiṣyeṇābhayadevākhyasūriṇeyam kṛtā vṛttiḥ //
aṇahīlapātakanagare śrīmaddroṇākhyasūrimukhyena /
paṇḍitaḡuṇena guṇavatpriyeṇa saṁśodhitā ceyam //

The second commentary on the *Ovāya* is '*Stabaka*', which was probably composed by Muni Dharmasī and belongs to the eighteenth century of the Vikram era.

2. Rāyapaseṇīyam

Nomenclature

This sūtra is called *Rāyapaseṇīyam*. Pt. Bechardas Doshi has named it as *Rāyapaseṇīyam*, stating that it is based on the '*Rājaprasenakiya*' referred to by *Siddhasenagaṇī* and *Rājaprasenajīta* referred to by Muni Candrasūri.¹

The earliest mention of this sūtra is found in *Nandīśūtra*, under the name *Rāyapaseṇīya*.² The name has not been explained in the *Nandī cūṛṇī* and its commentaries by Haribhadrasūri and Ācārya Malayagiri who has named it as '*Rājaprasṇīya*' while dealing with it. King Pradeśī had asked some questions to Keśisvāmī. The present sūtra contains replies to the questions and hence the name '*Rājaprasṇīya*'.³

From the point of view of treatment of the subject-matter, Malayagiri's commentary is quite in order and the name does not sound awkward or improper on that account. But lexicographically the name is open to criticism, specially by Pt. Bechardas who contends that—"the word '*prasṇa*' takes the forms '*paṇḥa*' and '*paṣiṇa*' in Prakrit, and not the form '*paseṇa*'. There is no form as '*paseṇa*' according to Prakrit grammar. If we recognise it

1. Rāyapaseṇīyam, praveśaka, page 6 & 7.

2. Nandī, sūtra 77.

3. (a) Rāyapaseṇīya vṛtti, page 1 :

atha kasmād idam upāṅgam rājaprasṇīyābhidhānamīti ? ucyate, iha pradeśināmā rājā bhagavataḥ keśikumāraśramaṇasya samīpe yān jīvaviṣayān prasṇānakārṣit, yāni ca tasmai keśikumāraśramaṇoganaḥ bhṛt vyākaraṇāni vyākṛtavān.

(b) Rāyapaseṇīya Vṛtti, page 2 :

rājaprasṇeṣu bhavam rājaprasṇīyam.

as an authoritative form (*āṛṣa*), all rules about the correct or wrong usage of words in Prakrit would have been set to naught.¹

Pt. Bechardas's contention may be valid, but it is not irrefutable. In our view—

(1) The original form of '*paseṇiya*' is '*paṣiṇiya*' (Skt. *praśnita*). In pronunciation, assumption of the form 'i' by 'e' is quite consistent. We find such departure elsewhere too. For example :—

pihuṇṇam	=	pehuṇṇam	(Deśi)
ṇivvāṇam	=	ṇevvāṇam	(Skt. <i>nirvāṇam</i>)
ṇivvutī	=	ṇevvutī	(Skt. <i>nirvṛttiḥ</i>)
tigicchiyam	=	tegicchiyam	(Skt. <i>cikitsitam</i>)
binṭā	=	benṭā	(Skt. <i>vṛttam</i>)
bi	=	be	(Skt. <i>dvi</i>)
tikālam	=	tekālam	(Skt. <i>trikālam</i>)

(2) In the *Āgama-sūtras* and old scriptures we find the text as *rāyapaseṇiya*. The usage '*rāyapaseṇaiya*' is not available anywhere. In the *Nandisūtra* we come across '*rāyapaseṇiya*' as mentioned earlier. In '*Pākṣika sūtra*' too, '*rāyappaseṇiya*' occurs.² The composer of the *avacūri* of *Pākṣika sūtra* gives its Sanskrit form as '*rājapraśniyam*'.³

(3) *Prasenajit* takes the form '*paseṇaiya*' in Prakrit. In the *Sthānāṅga sūtra* the fifth *kulakara* is named as '*paseṇaiya*'.⁴ This form is available at various other places too.

If the subject-matter of the present *sūtra* had been related to King *Prasenajit*, the name could have been "*Rāyapaseṇaiyam*". But in fact the subject-matter relates to King *Paesī*; hence the form "*rāyapaseṇaiya*" is not compatible. In the *Dīghanikāya* King *Pāyāsī* is mentioned as a feudal lord to *Prasenajit*. But here we find no mention of King *Prasenajit*. Therefore the usage '*Rāyapaseṇaiyam*' has no basis.

From the point of view of the subject-matter we may conjecture about the name '*Rāyapaesiyam*', but there is no basis for such a conjecture.

King *Pradeśī*'s queries form the basis of the composition of the *sūtra* in question. Therefore its name must be '*Rāyapaseṇiya*' and none else.

Commentaries

Its two commentaries are named as (i) *vṛtti*, and (ii) *ṣaḍbā* or

1. *Rāyapaseṇaiyam*, *praveśaka*, page 6.

2. *Pākṣikasūtram*, page 76.

3. *Pākṣikasūtram* *Avacūri*, page 77 :

Rājñāḥ pradeśi nāmñāḥ praśnāni, tānyadhikṛtya kṛtam adhyayanam—rājapraśniyam.

4. *Ṭhāpaṇ*, 7/62

bālāvabodha). The former is in Sanskrit while the latter is in the admixture of Rajasthani and Gujarati. Vṛtti was composed by the renowned annotator Ācārya Malayagiri while the stabaka was written jointly by Pārśvacandragāṇī (16th Century) and Muni Dharmasingh (18th Century). Stabaka is a short piece of translation but *vṛtti* is the real commentary which clarifies the underlying meaning of the sūtra. Although the *vṛtti* has not been able to explain the whole theme, yet the commentator has provided valuable information at various places.

The author had to face many obstacles in writing the *vṛtti*, the most difficult of them being the variations in text. He has mentioned this difficulty at several places.¹ To surmount these obstacles the *vṛtti* has been bifurcated in two parts :—

(i) The first part : for commentary of intelligible words, and (ii) the later part : for commentary of technical terms. Thus the first part is quite extensive, while the later part is brief. The causes of detailed treatment in the first part are twofold :—

- (a) Novelty of the subject-matter.
- (b) Abundance of variant readings.

Likewise the later part has been treated in brief due to the following reasons :

- (a) Intelligibility of the text.
- (b) Repetition of the terms already explained.
- (c) Small number of variant readings.²

The commentator desires us to learn the mundane topics from the experts of that art.³ Both Rājaprasāniya and Jivābhigama bear identical topics at various places. Ācārya Malayagiri is the commentator of both of them. That is why the topics of the commentaries are largely identical. The commentator had obviously got the original commentary of Jivābhigama, which fact has been mentioned time and again in this commentary.⁴

1. Rāyapaseṇiya Vṛtti, p. 204, 241, 259.

2. Rāyapaseṇiya Vṛtti, page 239 :

īha prāktano granthaḥ prāyo'pūrvaḥ bhūyānapi ca pustakeṣu vācanābhedaṣṭato mā'bhūt śiṣyāṇaṃ sammoha itī kvāpi sugamo'pi yathāvasthitavācanākramapradaṛśanārthaṃ likhita, ita ūrdhvaṃ tu prāyaḥ sugamaḥ prāgyākhyaṭasvarūpaśca na ca vācanābhedo'pyatibādara itī svayaṃ paribhāvanīyaḥ, viṣamapadavyākhyā tu vidhāsyate ita.

3. Ibid., page 145 :

etc nartanaavidhayaḥ abhinayavidhayaśca nāṭyakuśalebhyo veditavyāḥ.

4. (a) Ibid, page 100 :

āha ca jivābhigamamūlaṭikākṛt vijayadūṣyam vastraviśeṣaḥ itī.

(b) Ibid, page 158 :

āha ca jivābhigamamūlaṭikākāraḥ argalāprāsādā yatrārgalā niyamyante itī.

At one stage Jivābhigama cūṛpi has also been mentioned.

Vṛtti contains 3700 ślokaḥ :—

pratyakṣaragaṇanāto granthamānaṁ viniścitam /
saptatrimśacchatānyatra ślokānāṁ sarvasamkhyā //

At the very outset, the commentator remembers Lord Mahāvīra reverentially and with guru's permission proceeds with the commentary on the Rājaprasānya sūtra :—

praṇamata vīrajineśvaracaraṇayugaṁ paramapāṭalacchāyam /
adharīkṛtanatavāsavamukūṣasthitaratnarucicakram //
rājaprasānyamaham vivṛṇomi yathā'gamaṁ guruniyogāt /
tatra ca śaktimaśaktiṁ guravo jānanti kāmā cintā //

At the end, the commentator prays for the victory of his preceptor as also attainment of knowledge for the reader :—

adharīkṛtacintāmaṇi-kalpalatā-kāmadhenu-māhātmyāḥ /
vijayantāṁ gurupādāḥ vimalīkṛtaśiṣyamativibhavāḥ //
rājaprasānyamidam gambhīrārtham vivṛṇvatā kuśalam /
yadavāpi malayagiriṇā sādhujanastena bhavatu kṛti //1//

jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa—āvaritanapiṭhikā yatrendrakīlako bhavati iti.

(c) Ibid, page 159 :

āha ca jivābhigamamūlaṭīkākṛt—kūṭo māḍabhāgaḥ ucchayaḥ śikharam iti.

āha ca—jivābhigamamūlaṭīkākṛt—āṅkamayāḥ pakṣāstadekadeśabhūtā evaṁ pakṣa bāhavo'pi dṛṣṭavyā iti.

(d) Ibid, p. 160 :

uktaṇca jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa ohāḍaṇi hāragrahaṇam ? mahat kṣullakam ca puñchanī' iti.

(e) Ibid, p. 161 :

āha ca jivābhigamamūlaṭīkākṛt—naiśedhikī niṣīdanasthānam iti.

(f) Ibid, p. 168 :

āha ca jivābhigamamūlaṭīkākāraḥ—prakaṇṭhau piṭhaviśeṣi iti.

(g) Ibid, p. 169 :

uktaṇca jivābhigamamūlaṭīkāyām—prāsādāvatamsakau prāsādaviśeṣau iti.

(h) Ibid, p. 176 :

uktaṇca jivābhigamamūlaṭīkāyām—manogulikā nāma piṭhikā iti.

(i) Ibid, p. 177 :

uktaṇca jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa—haya kaṇṭhau—hayakaṇṭhapramāṇau ratnaviśeṣau evaṁ sarve'pi kaṇṭhā vācyā iti.

(j) Ibid, p. 180 :

uktaṇca jivābhigamamūlaṭīkāyām—tailasamudgaku sugandhitailādhārau.

(k) Ibid, p. 189 :

jivābhigamamūlaṭīkāyāmapī (46)—uppiṭṭham śvāsayuktaṁ iti.

(l) Ibid, p. 195 :

uktaṇca jivābhigamamūlaṭīkāyām—dagamaṇḍapāḥ-sphāṭikā maṇḍapā iti.

(m) Ibid, p. 226 :

jivābhigamamūlaṭīkākāraḥ—bibbayanā—upadhānakānyucyante iti.

JIVĀJIVĀBHIGAME

Nomenclature

The āgama under review is Jivājivābhigame. Jīva and ajīva—the two basic tattvas—have been dealt with herein, hence it has been named as Jivājivābhigama. It contains nine chapters in which the sentient beings have been numerically classified :—

1. Two kinds of mundane beings—mobile and immobile.
2. Three kinds of mundane beings—woman, man and eunuch.
3. Four kinds of mundane beings—hellish-beings, animals, men and gods.
4. Five kind of mundāne beings—one-sensed, two-sensed, three-sensed, four-sensed and five-sensed.
5. Six kinds of mundane beings—earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, air-bodied, vegetation-bodied and mobile-bodied beings.
6. Seven kinds of mundane beings—hellish, male animals, female animals, men, women, gods and goddesses.
7. Eight kinds of mundane beings—first time hellish, second time hellish, first time animal, second time animal, first time man, second time man, first time god, second time god.
8. Nine kinds of mundane beings—earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, air-bodied, vegetation-bodied, two-sensed, three-sensed, four-sensed and five-sensed.
9. Ten kinds of mundane beings—one time one-sensed, second time one-sensed, one time two-sensed, second time two-sensed, one time three-sensed, second time three-sensed, one time four-sensed, second time four-sensed, first time five-sensed, second time five-sensed.

The whole of Jivābhigama has been dealt with upto the end of the eighth sūtra of the ninth *pratipatti*. This classification is based on various other criteria, e.g., two kinds of sentient beings—emancipated (*siddha*) and non-emancipated (*asiddha*).

A sentient being has three other categories too—one possessing right vision, perverted vision and right-cum-perverted vision.

In this āgama secondary subjects are available in abundance, which provide detailed information about Indian society and life. From the architectural point of view the description of 'padmavara' (lotus) altar and 'vijayadvāra' (gate of victory) is very important.

The āgama is a compilation of various *ādeśas* (view-points). The sthaviras

held divergent views on single topics. The word *ādeśa* was used for a view-point. This *āgama* is supplementary in nature. Hence it embodies various view-points of the sthaviras. The commentator uses *ādeśa* in the sense of "kinds".¹ In essence the compilation of various viewpoints is clearly proved. In Jīvājīvābhigame, 2/20, we find four *ādeśas* whereas in 2/48 there are five. The commentator is of the view that only the extraordinarily gifted persons can pass a judgment as to which of five *ādeśas* is proper. There were no such gifted persons during the period of the *sthaviras*, hence the commentator has obviously abstained from expressing his own views on the subject. He has simply compiled the available *ādeśas*.²

The sthaviras are the authors of this *āgama*. This is clearly indicated at the beginning of the *āgama*.³

Commentaries

Two commentaries are available on this sūtra—one by Ācārya Haribhadra, and the other by Ācārya Malayagiri. The former is concise whereas the latter is quite elaborate. Malayagiri's vṛtti contains the ascription "iti vṛddhāḥ" as well as the mention of the original text, the commentator and the cūrṇi at several places :

'iti vṛddhāḥ'⁴

'iyam ca vyākhyā mūlaṭīkānusāreṇa kṛtā'⁵

'uktaṇca mūlaṭīkāyām'⁶

'āha ca mūlaṭīkāḥ'⁷

'tāi ca mūlaṭīkāḥ kṛtā vaiviktyena na vyākhyātā iti sampradāyādavaseyāḥ'⁸

'mūlaṭīkāḥ kareṇāvyākhyānāt'⁹

'āha ca mūlaṭīkāḥ kareṇa—uktaṁ cūrṇau'¹⁰

'āha ca mūlaṭīkāḥ kareṇa—uktaṁ mūlaṭīkāḥ kareṇa'¹¹

1. Jīvājīvābhigama, Vṛtti p. 53 :

"ādeśa śabda iha prakāravāci"—'ādesotti pagaro'iti vacanāt, ekenaparakāreṇa, ekaparakāramadhikṛtyetibhāvārthaḥ'.

2. Ibid., p. 59 :

amīśāṁ ca pañcānāmādeśānāmanyatamādeśasamīcīnatānirṇayo'tisayajñānibhiḥ sarvotkrṣṭa-śrūta labdhisampannairvā kartuṁ śakyate te ca sūtrakṛtpratipattikāle nāsīranniti sūtrakṛtānirṇayam kṛtavāniti".

3. Jīvājīvābhigame, 1/1 :

"iha khalu jīṇamayaṁ jīṇāṇumayaṁ jīṇāṇulomaṁ jīṇappaṇitaṁ jīṇaparūviyaṁ jīṇakkhāyaṁ jīṇāṇucinnaṁ jīṇappaṇataṁ jīṇadesiyaṁ jīṇapasatthṁ aṇuvīi taṁ saddahamāṇā taṁ pattiya-māṇā taṁ pattiyaṁ māṇā taṁ roemaṇā therā bhagavanti jīvājīvābhigame nāmajjhayaṇaṁ paṇṇavaimsu".

4. Vṛtti, p. 27

8. „ p. 136

5. „ p. 64

9. „ p. 136

6. „ p. 109

10. „ p. 137

7. „ p. 122

11. „ p. 180

- 'uktaṁ mūlaṭīkāyām'¹
 'āha ca mūlaṭīkākāraḥ'²
 'uktaṁ ca mūlaṭīkāyām'³
 'āha ca mūlaṭīkākāraḥ'⁴
 'āha ca mūlaṭīkākāraḥ'⁵
 'uktañca mūlaṭīkāyām'⁶
 'uktañca mūlaṭīkākāreṇa'⁷
 'āha ca mūlaṭīkākāraḥ', 'cūrṇikāstvevamāha'⁸
 'āha ca mūlaṭīkākāraḥ' 'āha ca cūrṇikṛt'⁹
 'uktañca mūlaṭīkāyām', 'Jīvābhigama mūlaṭīkāyām'¹⁰
 'āha ca mūlaṭīkākāro'pi'. 'āha ca cūrṇikṛt'¹¹
 'tathā cāha mūlaṭīkākāraḥ'¹²
 'āha ca mūlacūrṇikṛt'¹³
 'mūlaṭīkākāro'pyāha.....cūrṇikāro'pyāha'¹⁴
 'āha cūrṇikṛt'¹⁵
 'tathā cāha mūlaṭīkākāraḥ'¹⁶
 'āha ca cūrṇikṛt'¹⁷
 'uktaṁ cūrṇau'¹⁸
 'āha ca mūlaṭīkākāraḥ'¹⁹
 'āha cūrṇikṛt āha ca ṭīkākāraḥ'²⁰
 'mūlaṭīkākāreṇāpi'²¹
 'āha ca mūlaṭīkākāraḥ'²²

Fulfilling the assignment

The credit of editing this text goes to a great extent to Yuvācārya Mahāprajña, because the work has been accomplished through his perseverance day and night, otherwise this onerous task was difficult to be finalised. He is basically inclined towards yoga. Therefore it is easy for him to maintain his equipoise (concentration). Not only that, being engrossed in the study of the *Āgamas* in a routine manner he has developed a keen intellect in grasping the inner mysteries of things. The credit of his intellectual development goes to his humbleness, diligence and total surrender to his preceptor. He has been displaying such inclination since childhood. Since he came over to me, this

1. Vṛtti, p. 141	12. Vṛtti, p. 354
2. „ p. 142	13. „ p. 369
3. „ p. 142	14. „ p. 370
4. „ p. 277	15. „ p. 384
5. „ p. 186	16. „ p. 438
6. „ p. 204	17. „ p. 441
7. „ p. 205	18. „ p. 442
8. „ p. 209	19. „ p. 444
9. „ p. 210	20. „ p. 450
10. „ p. 214	21. „ p. 452
11. „ p. 321	22. „ p. 457

learning has been gradually increasing. I am quite satisfied with his capacity to work and his dutifulness.

Several other saints have cooperated in revising the text of this *āgama*. I heartily bless them and wish that their work-born capacity should develop all the more.

My joy knows no bounds to see that the gigantic task of text revision has been successfully brought to completion through the cooperation of my disciples—the monks and nuns of the order.

Adhyātma Sādhana Kendra,
Mehrauli—New Delhi,
Akṣaya Tṛtīyā,
1st May, 1987.

—Ācārya Tulsī

રાયપસેણિયં

સૂરિયામ્નો

સૂત્ર ૧ સે ૬૬૮

પૃ૦ ૧ સે ૧૬૧

ઉક્તેવ-પદં ૧, સૂરિયામ્નસ ઓહિપઓમ-પદં ૭, સૂરિયામ્નેણ મગવઓ વંદણ-પદં ૮, આમિઓ-
ગિય-દેવ-પેસણ-પદં ૯, આમિઓગિય-દેવેહિ મગવઓ વંદણ-પદં ૧૦, વંદણાણુમોદણ-પદં ૧૧,

आभिओगिएहि जोयणमंडलनिव्वत्तण-पदं १२, सूरियाभस्स गमण-ओसणा-पदं १३, सूरिया-
 भविमाणवासिदेवाणं समवसरण-पदं १६, जाणविमाण-विउव्वण-पदं १७, ०तिसोवाणपडिरूवग-
 विउव्वण-पदं १९, ०तोरण-पदं २०, ०अट्टमंगल-पदं २१, ०अय-पदं २२, ०छत्तातिछत्तादि-
 पदं २३, ०भूमिभाग-विउव्वण-पदं २४, ०मणि-वण्णावास-पदं २५, ०पेच्छाघरमंडव-विउव्वण-
 पदं ३२, ०पेच्छाघरमंडवे भूमिभाग-विउव्वण-पदं ३३, ०पेच्छाघरमंडवे उल्लोय-विउव्वण-पदं
 ३४, ०पेच्छाघरमंडवे अक्खाडग-विउव्वण-पदं ३५, ०अक्खाडए मणिपेडिया-विउव्वण-पदं ३६,
 ०मणिपेडियाए सीहासण-विउव्वण-पदं ३७, ०सीहासणे विजयदूस-विउव्वण-पदं ३८, ०विजयदूसे
 अंकुस-विउव्वण-पदं ३९, ०अंकुसे मुत्तादाम-विउव्वण-पदं ४०, ०भद्रासण-विउव्वण-पदं
 ४१, जाणविमाण-विउव्वणस्स निगमण-पदं ४५, जाणविमाणारोहण-पदं ४७, पयाण-सज्जा-
 पदं ४९, जाणविमाण-पच्चोरुहण-पदं ५६, सूरियाभस्स वंदण-पदं ५८, वंदणाणुमोदण-पदं ५९,
 पज्जुवासणा-पदं ६०, धम्मदेसणा-पदं ६१, पण्ह-वागरण-पदं ६२, नट्टविहि-उवदंसण-पदं ६३,
 कूडागारसाला-दिट्ठंत-पदं १२१, सूरियाभ-विमाण-पदं १२४, ०पामार-पदं १२७, ०कविसीस-
 पदं १२८, ०दार-पदं १२९, ०वंदणकलस-पदं १३१, ०णागदंत-पदं १३२, ०मालभंजिया-पदं
 १३३, जालकडग-पदं १३४, ०घंटा-पदं १३५, ०वणमाला-पदं १३६, ०पगंठग-पदं १३७,
 ०तोरण-पदं १३८, ०दार-पदं १६२, ०वणसंड-पदं १७०, ०वणसंड-भूमिभाग-पदं १७१,
 ०वणसंड-जलासय-पदं १७४, ०वणसंड-घरग-पदं १८२, ०वणसंड-मंडवग-पदं १८४,
 ०वणसंड-पासायवडेंसग-पदं १८६, ०भूमिभाग-पदं १८७, ०उवगारिया-लयण-पदं १८८,
 ०पउमवरवेइया-पदं १८९, ०उवगारिया-लयण-पदं २०२, ०भूमिभाग-पदं २०३, मूलपासाय-
 वडेंसग-पदं २०४, ०पासायवडेंसग-पदं २०५, ०सुहम्म-सभा-पदं २०९, ०सुहम्म-सभा-दार-
 पदं २१०, ०मुहमंडव-पदं २११, ०दार-पदं २१२, ०भूमिभाग-उल्लोय-पदं २१३, ०मंगलग-
 पदं २१४, ०पेच्छाघर-मुहमंडव-पदं २१५, ०भूमिभाग-उल्लोय-पदं २१६, ०अक्खाडग पदं २१७,
 ०मणिपेडिया-पदं २१८, ०सीहासण-पदं २१९, ०मंगलग-पदं २२०, ०मणिपेडिया-पदं २२१,
 ०चेइयथूभ-पदं २२२, मंगलग-पदं २२३, ०मणिपेडिया-पदं २२४, जिणपडिसा-पदं २२५,
 ०मणिपेडिया-पदं २२६, ०वेइयव्वख-पदं २२७, मंगलग-पदं २२९, ०मणिपेडिया-पदं २३०,
 ०महिदञ्जय-पदं २३१, मंगलग-पदं २३२, ०नंदापुक्खरिणी-पदं २३३, ०तिसोवाणपडिरूवग-
 पदं २३४, ०मणीगुलिया-पदं २३५, ०गोमाणसिया-पदं २३६, ०भूमिभाग-पदं २३७,
 ०मणिपेडिया-पदं २३८, ०चेइय-खंभ-पदं २३९, जिण-पकहा-पदं २४०, मंगलग-पदं २४१,
 ०मणिपेडिया-पदं २४२, ०सीहासण-पदं २४३, ०मणिपेडिया-पदं २४४, ०देवसयणिज्ज-पदं
 २४५, ०मणिपेडिया-पदं २४६, ०महिदञ्जय-पदं २४७, मंगलग-पदं २४८, ०पहरणकोस-पदं
 २४९, मंगलग-पदं २५०, सिद्धायतण-पदं २५१, ०मणिपेडिया-पदं २५२, ०जिणपडिसा-पदं
 २५३, ०उववायसभा पदं २६०, ०अभिसेगसभा-पदं २६५, ०अलंकारियसभा-पदं २६७,
 ०ववसायसभा-पदं २६९, सूरियाभदेव-पदं २७४, सूरियाभस्स अभिसेग-पदं २७७, अभिसेग-
 काले देवकिच्च-पदं २८१, वद्धावण-पदं २८२, अलंकरण-पदं २८३, सिद्धायतणपवेस-पदं २८८,
 ०थुइ-पदं २९२, ०दाहिणिल्लं पइ गमण-पदं २९४, उत्तरिल्लं पइ गमण-पदं ३१३, ०पुरवि-
 मिल्लं पइ गमण-पदं ३३२, ०सुहम्मसभापवेस-पदं ३५१, ०उववायसभापवेस-पदं ४१४,
 ०अभिसेगसभापवेस-पदं ४७४, ०अलंकारसभापवेस-पदं ५३४, ०ववसायसभापवेस-पदं ५९४,
 ०सूरियाभविमाणे अचवणिया-पदं ६५४, ०नंदापुक्खरिणी-गमण-पदं ६५६, ०सुहम्मसभा-निसीदण-
 पदं ६५६, ०सूरियाभ-वण्णग-पदं ६६५ ।

पएसि कहाणां

सूत्र ६६८ से ८१७

१६२ से २१२

केयइ-अद्ध-पदं ६६८, सेयविया-पदं ६६९, मिगवण-पदं ६७०, पएसि-पदं ६७१, सूरियकंता-
 पदं ६७२, सूरियकंत-पदं ६७३, चित्त-सारहि-पदं ६७५, कुणाला-पदं ६७६, सावत्थी-पदं
 ६७७, कोट्ठय-पदं ६७८, जियसत्तु-पदं ६७९, पाहुड-उवणयण-पदं ६८०, चित्तस्स आवास-
 पदं ६८५, केसि-आगमण-पदं ६८६, चित्तस्स जिण्णासा-पदं ६८७, कंचुइपुरिसस्स निवेदण-
 पदं ६८९, चित्तस्स केसि-समीवे गमण-पदं ६९०, धम्मदेसणा-पदं ६९३, चित्तस्स गिहि-
 धम्म-पडिवज्जण-पदं ६९५, समणोवासय-वण्णग-पदं ६९८, जियसत्तुणा पाहुड-पेसण-पदं ६९९,
 चित्तस्स निवेयण-पदं ७००, केसिस्स पडिवयण-पदं ७०३, पुणोनिवेयण-अब्भुवगमण-पदं ७०४,
 उज्जाणपाल-निट्ठेसण-पदं ७०६, पाहुड-उवणयण-पदं ७०८, केसिस्स सेयविया-आगमण-पदं
 ७११, उज्जाणपालगणं चित्तस्स निवेदण-पदं ७१३, चित्तस्स केसि-पज्जुवासणा-पदं ७१४,
 चाउज्जाम-धम्मदेसणा-पदं ७१७, चित्तस्स निवेदण-पदं ७१८, केसिस्स पडिवयण-पदं ७१९,
 चित्त-पएसि-पदं ७२३, पएसि-केसि-पदं ७३६, जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७४८, तज्जीव-तच्छरीर-
 पदं ७५०, जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७५१, तज्जीव-तज्जरीर-पदं ७५२, जीव-सरीर-अणत्त-पदं
 ७५३, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५४, जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७५५, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५६,
 जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७५७, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५८, जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७५९,
 तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७६०, जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७६१, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७६२,
 जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७६३, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७६४, मूढ-कट्ठहारय-पदं ७६५,
 अक्कोसं पइ पएसिस्स वित्तवकणा-पदं ७६६, केसिस्स समाधान-पदं ७६७, पएसिस्स पडिकूल-
 वट्ठण-हेउ-पदं ७६८, ववहारग-पदं ७६९, जीवोवदंसणट्ठ-निवेदण-पदं ७७०, केसिस्स
 समाधान-पदं ७७१, हरिथ-कुंथु-जीव-समाणत्त-पदं ७७२, कुल-परपरागयदिट्ठि-अच्छट्ठण-पदं
 ७७३, अयहारग-दिट्ठत्त-पदं ७७४, पएसिस्स गिहिधम्म-पडिवज्जण-पदं ७७५, आयरिय-
 विणयपडिवत्ति-पदं ७७६, पएसिस्स अत्त-निवेदण-पदं ७७७, पएसिस्स खामणा-पदं ७७८,
 चाउज्जामधम्म-कहण-पदं ७७९, रमणिज्ज-अरमणिज्ज-पदं ७८०, पएसिणा रज्जस्स चउभाग-
 करण-पदं ७८८, पएसिस्स समणोवासयत्त-पदं ७८९, पएसिस्स रज्जोवरह-पदं ७९०, सूरिकंताए
 सूरियकंतेण भंतणा-पदं ७९१, सूरियकंताए विसण्णओग-पदं ७९३, पएसिस्स समाहि-मरण-पदं
 ७९५, सूरियाभ-देव-पदं ७९७, दढपइण्णग-पदं ७९९ ।

संकेत-निर्देशिका

- ० ये दोनों बिन्दु पाठ-पूर्ति के द्योतक हैं। पाठ-पूर्ति के प्रारम्भ में भरे बिन्दु और समापन में रिक्त बिन्दु ० का संकेत किया गया है। देखें, पृष्ठ ८, सू ८
- ' ' यह दो या उससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है।
- ० पाठ में संलग्न दिया गया एक बिन्दु अपूर्ण पाठ होने का सूचक है। देखें, पृष्ठ ३, पाठान्तर १२, पृ० ११६, सूत्र १४२
- [?] कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिह्न आदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें, पृ० २२, सूत्र ३२
- × जोस पाठ नहीं होने का द्योतक है। देखें, पृ० ६ पाठान्तर ६
- जाव आदि पर जो अंक है वे पूर्ति आधार स्थल के द्योतक हैं। जैसे—पृ० ६, पाठान्तर १५
- पृ० १०२ सूत्र ६६ पाठान्तर का अंक ६
- पृ० ६७, सूत्र ४५, पाठान्तर का अंक ५
- पृ० ११५, सूत्र १३६, पाठान्तर का अंक १४
- पृ० ११६, सूत्र १४२, पाठान्तर का अंक २
- पृ० १२५, सूत्र १२६, पाठटिप्पणांक १, २, ३ आदि
- सं० पा० संक्षिप्त पाठ

नाबृ० नायाधम्मकहाओ वृत्ति

जं० पुवृ० जंबुहीवपण्णत्ती पुण्यसागरीयवृत्ति

„ शावृ० „ „ शान्तिचन्द्रीयवृत्ति

„ हीवृ० „ „ हीरविजयवृत्ति

राय० वृ० रायपसेणियं वृत्ति

राय० सू० रायपसेणियं सूत्र

ओ०सू० ओवाइयं सूत्र

उत्त० उत्तरज्झयणाणि

भ० भगवती

पण्ण० पण्णवणा

जी० जीवा० जीवाजीवाभिगमे

जंबु०/जंबू० जंबुहीवपण्णत्ती

पण्हा० पण्हावागरणं

रायपसेणइयं

सूरियाभो

उक्तेव-पदं

१. तेणं^१ कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नामं^२ नयरी होत्था—‘रिद्ध-त्थिमिय’^३—समिद्धा जावं^४ पासादीया दरिसणीया^५ अभिरूवा पडिरूवा ॥

२. तीसे णं आमलकप्पाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अंवसालवणे नामं चेइए होत्था—चिराईए^६ जावं^७ पडिरूवे ॥

३. *तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे असोगवरपायवे पण्णत्ते ॥

४. तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा ईसि खंधसमत्तलीणे, एत्थ णं महं एक्के पुढवि-सिलापट्टए पण्णत्ते^८ ॥

५. सेयो राया । धारिणी देवी ॥

६. सामी समोसडे । परिसा निग्गया जावं^९ राया पज्जुवासइ ॥

सूरियाभस्स ओहिपओग-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरियाभे^{१०} देवे सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्माए सूरियाभंसि सीहासणंसि चउहि सामाणियसाहस्सीहि, चउहि अग्गमहिसीहि सपरिवाराहि, तिहि परिसाहि, सत्तहि अणिएहि, सत्तहि अणियाहिर्वीहि, सोलसहि आयक्खदेवसाहस्सीहि, अन्नेहि वहूहि सूरियाभविमाणवासीहि वेमाणिएहि देवेहि देवीहि य सद्धि संपरिवुडे महयाहयनट्ट^{११}—गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवादिय-रवेणं^{१२} दिव्वाइ भोगभोगाइ भूजमाणे विहरति, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्वीवं दीवं विउलेणं

१. नमो अरिहंतारं नमो सिद्धारं नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्व साहूणं ।

तेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. नाम (क, ख, छ); णाम (च) ।

३. रिद्धत्थिमिय (क, ख, ग, च); रिद्धित्थिमिय (घ, छ) ।

४. ओ० सू० १ ।

५. दरिसणिज्जा (वृ) ।

६. पोरणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. ओ० सू० २-७ ।

८. सं० पा०—असोगवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया ओववाइयगमेणं नेया । पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यं ओ० सू० ८-१३ ।

९. ओ० सू० १६-६६ ।

१०. सूरियाभे णामं (वृ) ।

११. महतामहतनट्टं (क, ख, ग, च) ।

१२. परुप्पवादियरवेणं (ख) ।

ओहिणा आभोएमाणे-आभोएमाणे पासति' ॥

सूरियाभेण भगवओ वंदण-पदं

८. तत्थ^१ समणं भगवं महावीरं जंबुदीवे (दीवे ?) भारहे वासे आमलकप्पाए नय-रीए वहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासति, पासित्ता हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे^२ परमसोमणस्सिए हरिसवस^३-विसप्पमाणहियए विगसियवरकमलणयणे^४ पयलिय^५-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइयवच्छे पालंव-पलंवमाण-धोलंत-भूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सुरवरे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति, करेत्ता 'तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठपयाइ'^६ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं^७ धरणितलंसि निहट्ठु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि 'निवेसेइ, निवेसेत्ता'^८ ईसि पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता 'कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ, पडिसाहरेत्ता'^९ करयलपरिगहियं 'दसनहं सिरसावत्तं'^{१०} मत्थए अंजलि कट्ठु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं^{११} 'पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं'^{१२} लोमुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं जीवदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्क-वट्ठीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं वियट्ठुछउमाणं^{१३} जिणाणं जावयाणं^{१४} 'तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं'^{१५} 'सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं'^{१६} सिवमयलमरुयमणंतमक्खय-मव्वावाहमपुणरावत्तयं^{१७} सिद्धिगइनामधेयं^{१८} ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आइगरस्स तित्थयरस्स जाव सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगते, पासइ^{१९} मे भगवं तत्थगते इहगतं ति कट्ठु वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता 'सीहासणवरगए पुव्वाभिमुहं सण्णिसण्णे'^{२०} ॥

१. पासइ पासित्ता (क, छ) ।	१३. × (क, ख, ग, घ) ।
२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	१४. विउट्ठुछम्माणं (क); × (ख, ग, घ); विउट्ठुछउमाणं (च) ।
३. पीयमणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	१५. जाणगाणं (क, ख, ग, घ) ।
४. हरसवस (घ) ।	१६. बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं तिण्णाणं तारयाणं (क, ख, ग, घ) ।
५. विहसियं (छ) ।	१७. × (क, ख, ग, घ); सव्वण्णूणं सव्वदंसीणं (च) ।
६. पयलिय (च) ।	१८. 'मपुणरावत्ति (च) ।
७. सत्तट्ठपयाइ तित्थयराभिमुहे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	१९. 'नामधेज्जं (क) ।
८. जाणं (च, छ) ।	२०. पासउ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. णिमेइ णिमेत्ता (क, ख, ग, घ) ।	२१. × (क, ख, ग, घ, च, छ); सिहासनवरगतः गत्वा चं (वृ) ।
१०. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	
११. सिरसावत्तं दसनहं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	
१२. सहसंबुद्धाणं (ओ० सू० २१) ।	

आभिओगिय-देव-वेसण-पदं

६. 'तए णं तस्स सूरियाभस्स' इमे एयारूवे 'अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे'^१ समुपज्जित्था—सेयं^२ खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्तए नमंसित्तए सक्कारि-
त्तए सम्माणित्तए कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासित्तएत्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता
आभिओगिए देवे सट्ठावेइ, सट्ठावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवानुप्पिया ! समणे भगवं
महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहा-
पडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं गच्छह णं तुमे^३
देवानुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं आमलकप्पं नयरीं अंबसालवणं चेइयं समणं भगवं
महावीरं तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेह, करेत्ता वंदह णमंसह, वंदित्ता णमंसित्ता
साइं-साइं नामगोयाइं साहेह, साहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता
जोयणपरिमंडलं जं किंवि 'तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा'^४ अमुइं अचोक्खं पूइयं
दुब्बिभगंधं तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय एगंते एडेह, एडेत्ता णच्चोदगं णाइमट्ठियं पविरल-
फुसियं^५ रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदयवासं वासह, वासित्ता णिहयरयं णट्ठरयं भट्ठरयं^६
उवसंतरयं पसंतरयं करेह, करेत्ता जलयथलयभासुरप्पभूयस्स वेंटट्ठाइस्स दसद्धवणस्स कुसु-
मस्स जन्तुस्सेहपमाणमेत्ति^७ ओहिं^८ वासं वासह, वासित्ता कालागरु-पवरकुंदुरुक्क^९-तुरुक्क-
धूव^{१०}-मधमघेत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधं^{११}-वरगंधं^{१२} गंधवट्ठिभूतं दिव्वं सुरवराभि-

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. मणोगए अज्झत्थिए चितिए पत्थिए संकप्पे (वृ) ।

३. 'सेयं खलु' अतः प्रारभ्य 'पज्जुवासित्तएत्ति कट्ठु' इतिपर्यन्तः पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । ज्ञाताधर्मकथायां अस्य संवादी पाठो लभ्यते । द्रष्टव्यं अंगसुत्ताणि भाग ३ पृष्ठ ३७१ : नायाधम्मकहाओ २।१।१।१२ । आदर्शेषु विस्तृतः पाठो लभ्यते—एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमल-
कप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-
पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं

गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवातामि । एयं मे पेच्चा हियाए सुहाए खमाए दयाए णिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सतित्ति कट्ठु ।

४. तुम्हे (छ) ।

५. तूणं वा, काष्ठं वा, काष्ठशकलं वा, पत्रं वा, कचवरं वा (वृ) ।

६. पफुसियं (क, ख, ग, घ, च) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. 'पमाणमेत्तं' (क, ख, ग, घ) ।

९. ओह (क, घ, च) ।

१०. 'कुंदुरुक्क' (क, ख, ग, घ, च); 'कुंदुरुक्क' (छ) ।

११. धूय (क, ख, ग, घ); धूमय (च) ।

१२. सुगंधि (पडण्णगसमवाओ सू० १४४) ।

१३. वरगंधियं (घ) ।

गमणजोगं करेह य 'कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता" य खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

आभिओगिय-देवोहं भगवओ वंदण-पदं

१०. तए णं ते आभिओगिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठं^१ *चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं^२ हियया करयल-परिगहियं दसणहं^३ सिरसावत्तं 'मत्थए अंजलि"^४ कट्ठु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगत्ताणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं^५ अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं^६ जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहावायरे पोग्गले परिसाडेंति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायंति, परिया-इत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति^७, समोहणित्ता उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए^८ तुरियाए 'चवलाए चंडाए'^९ जवणाए^{१०} सिग्घाए उद्धूयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झमज्झेणं वीईवयमाणा-वीईवयमाणा जेणेव जंबुदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव आमलकप्पा णयरी जेणेव अंवसालवणे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं महावीरं तिकखुत्तो 'आयाहिणं पयाहिणं'^{११} करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अम्हे णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स आभियोग्गा देवा देवाणुप्पियं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं भंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो ॥

वंदणानुमोदण-पदं

११. देवाइ" ! समणे भगवं महावीरे 'ते देवे'^{१२} एवं वयासी—'पोराणमेयं देवा ! जायमेयं देवा ! किच्चमेयं देवा ! करणिज्जमेयं'^{१३} देवा ! आइण्णमेयं देवा ! अब्भणुण्णाय-मेयं देवा ! जण्णं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवा अरहंते भगवंते वंदंति

१. कारावेह करेत्ता य कारावेत्ता (क, ख, ग, घ, च) ।

२. सर्वादर्शेषु 'एवमाणत्तियं' पाठोस्ति, किन्तु अर्थविचारणया तथा औपपातिकं (६१ सूत्रं) अनुसृत्य 'एयमाणत्तियं' पाठः स्वीकृतः । 'एवमाणत्तियं' लिपिदोषाज्जात इति संभाव्यते ।

३. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव हियया ।

४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. अंजलि मत्थए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. जोइरसाणं (घ, च) ।

७. रयणाणं जाव (च, छ) ।

८. समोहणंति (क, ख, ग, घ, छ) ।

९. ओकिट्ठाए (घ) ।

१०. चंडाए चवलाए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. जयणाए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. आयाहिणपयाहिणं (क, छ) ।

१३. देवाय (क, ख, ग, घ, च, छ); तए णं देवा य (घ) ।

१४. देवा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१५. जुत्तमेयं देवा पोराणमेयं देवा किच्चमेयं देवा(छ); पोराणमेतत्....जीतमेतत्....अभ्यनु-
ज्ञातमेतत्....करणीयमेतत् आचीर्णमेतत्....
(वृ) ।

नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता तओ साइं-साइं णामगोयाइं साहिंति, तं पोराणमेयं देवा !
 *जीयमेयं देवा ! किच्चमेयं देवा ! करणिज्जमेयं देवा ! आइण्णमेयं देवा !^० अब्भ-
 णुण्णायमेयं देवा ! ॥

आभिओगिएहिं जोयणमंडलनिव्वत्तण-पदं

१२. तए णं ते आभिओगिया देवा^१ समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा
 हट्ठं *तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं^० हियया समणं
 भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति,
 अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसि-
 रंति, तं जहा—रयणाणं* वइराणं वेरुलियाणं लोहियवखाणं मसारगल्लाणं हंसगव्भाणं
 पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं
 फलिहाणं^० रिट्ठाणं अहावायरे^१ पोग्गले परिसाडेंति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परिया-
 यंति, परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संवट्ठयवाए^०
 विउव्वंति, से जहाणामए—भइयदारए^१ सिया तरुणे वलवं जुगवं जुवाणे^१ अप्पायंके^१
 थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पिट्ठंतरोरुपरिणए^१ घण-णिचिय-वट्ठवलियखंधे^१ चम्मेट्ठग-
 दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचियगते उरस्सवलसमण्णागए तलजमलजुयलवाहू लंघण-पवण-
 जइण-पमहणसमत्थे^१ छेए दक्खे पत्तट्ठे^१ कुसले मेधावी णिउणसिप्पोवगए एगं महं दंड-
 संपुच्छणि वा सलागाहत्थगं वा^१ वेणुसलाइयं वा गहाय रायंगणं वा रायंतेउरं वा आरामं
 वा उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा^१ अतुरियमचवलमसभंतं निरंतरं सुनिउणं सव्वतो
 समंता संपमज्जेज्जा, एवामेव^१ तेवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा संवट्ठयवाए^०

१. पोराणमेयं (क, ख, ग, घ, च) ।

२. सं० पा०—देवा जाव अब्भणुण्णायमेयं ।

३. देवा २ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

५. सं० पा०—रयणाणं जाव रिट्ठाणं ।

६. अहावायरे (क, ख, ग, च) ।

७. संवट्ठवाए (क) ।

८. कम्मादारए (क, ख, ग, घ, च); भइयदारए
 कम्मादारए (छ) ।

९. जुगवं बलवं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. अप्पायंके थिरसंघयणे (क, ख, ग, घ, च, छ)

११. पडिपुण्णपाणिपाए पिट्ठंतरोरुपरिणए (क, ख,
 ग, घ, च, छ); दढपाणिपायपासपिट्ठंतरोरु-
 परिणते (अणु० ४१६, जी० ३११८) ।

१२. वलियवलिखंधे (क, ख, ग, घ, छ); वलिय-
 वलिखंधे (च); अतः परं आदर्शेषु पाठानां-

कमो भिन्नो विद्यते—लंघणवग्गणजवणवायाम-
 समत्थे (°गयणवायामणसमत्थे—च, °जयण
 वायामपमहणसमत्थे—छ) चम्मेट्ठदुघणमुट्ठिय-
 समाहयनिचियगते (°गायगते—क, ख, ग,
 घ) उरस्सवलसमण्णागए तालजमलजुयल-
 बाहू (°जुयलफलिहनिभवाहू (क, ख, ग, घ,
 च) ।

१३. वायामणसमत्थे (वृपा) ।

१४. पट्ठे—प्रष्ठे—वाग्मी (वृ, जी० ३११८) ।

१५. सलागाहत्थगं वा दंडसंपुच्छणि वा (वृ) ।

१६. देवउलं वा सभं वा पवं वा आरामं वा
 उज्जाणं वा (वृ) ।

१७. एवमेव (च); एवमे (छ) ।

१८. संवट्ठवाए (क, ख, ग, घ, छ); संवट्ठवाए
 (च) ।

विउव्वंति, विउव्वित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वतो समंता जोयणपरिमंडलं जं किञ्चि 'तणं वा पत्तं वा' *कट्टं' वा सक्करं वा असुइं अचोक्खं पूइयं दुब्भिगंधं तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय एगंते एडेंति, एडित्ता खिप्पामेव उवसमंति, उवसमित्ता—दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता अब्भवह्लए विउव्वंति, से जहाणामए—भइयदारगे सिया तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं दगवारणं वा 'दगथालगं वा दग-कलसगं वा दगकुंभगं वा' गहाय आरामं वा *उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा अतुरियं *मच्चवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं सव्वतो समंता आवरिसेज्जा, एवामेव तेवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा अब्भवह्लए विउव्वंति, विउव्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायंति, पतणतणाइत्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति, विज्जुयाइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं णच्चोदगं णातिमट्ठियं तं पविरल-फुसियं रयरैणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगं वासं वासंति, वासेत्ता णिहयरयं णट्टरयं भट्टरयं उव-संतरयं पसंतरयं करेंति, करेत्ता खिप्पामेव उवसामंति, उवसामित्ता—

तच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता पुप्फवह्लए विउव्वंति, से जहाणामए—मालागारदारए सिया तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं 'पुप्फछज्जियं वा पुप्फपडलगं वा पुप्फचंगेरियं वा' गहाय रायंगणं वा *रायंतेउरं वा आरामं वा उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा अतुरियमच्चवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं सव्वतो समंता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेज्जा, एवामेव ते सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा पुप्फवह्लए विउव्वंति, विउ-व्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायंति, *पतणतणाइत्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति, विज्जुयाइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं जलयथलयभासुरप्पभूयस्स बेट्टाइस्स दसद्धवण्णकुसुमस्स जण्णुस्सेहपमाणमेत्ति ओहिं वासं वासंति, वासित्ता कालागरु-पवरकुंदुरुक्कं—तुरुक्कं-धूव-मघमघेत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्ठिभूतं दिव्वं सुरवराभिगमणजोगं करेंति य कारवेंति य करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव उवसामंति, उवसामित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं

१. सं० पा०—पत्तं वा तहेव ।

२. तृणकाष्ठादि (वृ) ।

३. उवसमिति (च, छ); पच्चुवसमंति (वृ) ।

४. विउव्वंति अब्भवह्लए विउव्वित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. दगवेलगं (क, ख, ग, घ, च); दगवालगं (छ); दगकुंभगं वा दगथालगं वा दगकलसगं वा (वृ) ।

६. सं० पा०—आरामं वा जाव पवं ।

७. सं० पा०—अतुरिय जाव सव्वतो ।

८. पतणतणायंति (क, ख, ग, घ, छ) ।

९. पफुसियं (क, ख, ग, घ) ।

१०. पुप्फडलगं वा पुप्फचंगेरियं वा पुप्फवत्थियं वा (क, ख, ग, घ, च); पुप्फपडलगं वा पुप्फ-पत्थियं वा पुप्फचंगेरियं वा पुप्फछज्जियं वा (छ) ।

११. सं० पा० रायंगणं वा जाव सव्वतो ।

१२. पतणतणायंति (क, ख, ग, घ, छ);

सं० पा०—पतणतणायंति जाव जोयणपरिमंडलं ।

१३. उव्विं (क); ओहं (च) ।

१४. कुंदुरुक्क (ख, ग, घ, च) ।

१५. गंधवरगंधियं (च, छ) ।

महावीरं तिव्वुत्तो' *आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदेति नमंसंति°, वंदेत्ता नमं-
सित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ अंवसालवणाओ चेइयाओ पडिण्णिव्वमंति,
पडिण्णिव्वमिन्ता ताए उक्किट्ठाए' *तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धयाए
दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झमज्जेणं° वीईवयमाणा-वीईवय-
माणा जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव सूरियाभे
देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

सूरियाभस्स गमण-घोसणा-पदं

१३. तए णं से सूरियाभे देवे तेसि आभिओगियाणं देवाणं अंतिए' एयमट्ठं सोच्चा
निसम्म हट्ठतुट्ठ'-*चित्तमाणंदिए पीडमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए
पायत्ताणियाहिवइं देवं सहावेत्ति, सहावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया !
सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्माए मेघोघरसियगंभीरमहुरसइं जोयणपरिमंडल सूसरं घंटं
तिव्वुत्तो उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे महया-महया सट्ठेणं उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एवं
'वयाहि—आणवेइ' णं भो ! सूरियाभे देवे, गच्छति णं भो ! सूरियाभे देवे जंबुदीवे दीवे
भारहे वासे आमलकप्पाए णयरीए अंवसालवणे चेइए समणं भगवं महावीरं अभिवंदाए,
तुब्भेवि णं भो ! देवाणुप्पिया ! सव्विड्डीए' *सव्वजुतीए सव्ववलेणं सव्वसमुदएणं
सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडिय-
सट्ठसण्णिनाएणं महया इड्डीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-
जमगसमग-पडुप्पवाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-
मुइंग-दुंदुहि-णिग्घोस° णाइयरवेणं' णियगपरिवालसद्धि संपरिवुडा साइं-साइं जाणविमा-
णाइं दुरुद्धा समाणा अकालपरिहीणं' चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतिये' पाउब्भवह ॥

१४. तए णं से पायत्ताणियाहिवती देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ'-
*चित्तमाणंदिए पीडमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए' करयलपरिग्ग-
हियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं
पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव मेघोघरसिय-
गंभीरमहुरसइं जोयणपरिमंडला सुस्सरा घंटा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं मेघोघ-

१. सं० पा०—तिव्वुत्तो जाव वंदित्ता ।

९. अंतिके (वु) ।

२. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणा ।

१०. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

३. अंते (क, ख, ग) ।

११. अतः परं 'क, च, छ' इत्यादर्शेषु 'एवं देवो'

४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

'ख, ग' आदर्शयोः 'एवं देवा' इत्येव पाठो

५. वयासी आणवेसि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

विद्यते । वृत्तौ 'जाव पडिसुणित्ता' इति संक्षिप्त-

६. सव्विड्डीए (छ) ; सं० पा०—सव्विड्डीए

पाठस्य निर्देशोस्ति—यावच्छब्दकरणात् 'कर-

जाव णाइयरवेणं ।

७. णातियरवेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

यलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए

८. अकालपरिहीणा (ख, ग, घ, च, छ) ।

अंजलिं कट्टु एवं देवा ! तहत्ति आणाए

विणएणं वयणं पडिसुणेइ' ति द्रष्टव्यम् ।

रसियगंभीरमहुरसद् ज्योयणपरिमंडलं सूसरं घटं तिक्खुत्तो उल्लालेति ।

तए णं तीसे^१ सेघोघरसियगंभीरमहुरसद्वाए ज्योयणपरिमंडलाए सूसराए घंटाए तिक्खुत्तो उल्लालियाए समाणीए^२ से सूरियाभे विमाणे पासायविमाण-णिकखुडावडिय-सद्धंटापडिसुया^३-सयसहस्ससंकुले जाए यावि होत्था ॥

१५. तए णं तेसिं सूरियाभविमाणवासिणं वहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंतरइपसत्त-तिच्चप्पमत्त-विसय-सुहमुच्छियाणं सूसरघंटारव-विउलवोल-‘तुरिय-ववल’-पडिवोहणे कए समाणे घोसणकोऊहलदिण्णकण्ण-एगम्मचित्त-उवउत्त-माणसाणं से पाय-त्ताणीयाहिवई देवे तस्सि घंटारवंसि णिसंत-पसंतंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणे एवं वयासी—हंतं^४ सुणंतु भवंतो सूरियाभविमाणवासिणो वहूवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सूरियाभविमाणपइणो वयणं हियसुहत्थं । आणवेइ णं भो ! सूरियाभे देवे, गच्छइ णं भो ! सूरियाभे देवे जंबुद्वीवं दीवं भारहं वासं आमलकप्पं नयारि अंवसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं अभिवंदए, तं तुब्भेवि णं देवाणुप्पिया ! सव्विड्डीए^५ अकालपरिहीणं^६ चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवह ॥

सूरियाभविमाणवासिदेवाणं समवसरण-पदं

१६. तए णं ते सूरियाभविमाणवासिणो वहूवे वेमाणिया देवा य देवीओ य पायत्ता-णियाहिवइस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्टुट्ठं-^७ *चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं^८ हियया अप्पेगइया वंदणवत्तियाए अप्पेगइया पूयणवत्तियाए अप्पेगइया सक्कारवत्तियाए अप्पेगइया सम्माणवत्तियाए^९ अप्पेगइया कोऊ-हलवत्तियाए^{१०} ‘अप्पेगइया असुयाइं सुणिस्सामो, अप्पेगइया सुयाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो, अप्पेगइया सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्तेमाणा’^{११} अप्पेगइया अण्णमण्णमणुवत्तेमाणा^{१२} अप्पेगइया जिणभतिरागेणं ‘अप्पेगइया धम्मो ति’^{१३} अप्पेगइया जीयमेयं ति कट्ठु सव्विड्डीए जाव’^{१४} अकालपरिहीणं^{१५} चेव’^{१६} सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवन्ति ॥

१. तीए (ख, ग, घ, च, छ) ।

२. समाणाए (घ) ।

३. *वडिसुया (क, ख, ग, घ, च) ।

४. × (ख, ग, घ, च) ।

५. हंतं (च); अहं भो (छ) ।

६. पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यं त्रयोदशसूत्रम् ।

७. अकालपरिहीणा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—हट्टुट्ठु जाव हियया ।

९. अतः परं औपपातिके (सू० ५२) जम्बुद्वीप-प्रज्ञप्तौ (५१२७) च ‘दंसणवत्तियं’ पाठो विद्यते । नात्रासौ लभ्यते ।

१०. कोऊहलवत्तियाए (क, घ); कोऊहलवत्ति-याए (च); कुतूहलजिनभक्तिरागेण (वृ) ।

११. अप्पेगइया सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्ते-माणा अप्पेगइया अस्सुयाइं सुजेस्सामो अप्पेग-इया सुयाइं निस्सकियाइं करिस्सामो (वृ) ।

१२. अण्णमण्णमन्नेमाणा (च, छ) ।

१३. × (वृ) ।

१४. राय० सू० १३ ।

१५. अकालपरिहीणा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१६. एव (क, घ); एवं (ख, ग, च) ।

जाणविमाण-विउवण-पदं

१७. तए णं से सूरियाभे देवे ते सूरियाभविमाणवासिणो वहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सव्विड्ढीए जाव^१ अकालपरिहीणं चेव अंतियं पाउवभवमाणे पासति, पासित्ता हट्टुटुटु^२—*चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण^३ हियए आभिओ-गियं देवं सदावेति. सदावेत्ता एवं वयासी --खिप्पामेव भो ! देवानुप्पिया ! अणेगखंभ-सयसण्णिविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं^४ ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्तर-रु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्तं खंभुग्गय-वइरवेइया^५-परिगयाभिरामं विज्जाहर-जमलजुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं^६ रुवगसहस्सकलियं भिसमाणं^७ भिब्भिसमाणं^८ चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलि-चलिय-महुर-मणहरसरं सुहं कंतं दरिसणिज्जं णिउणओवियं^९-मिसिमिसेत्तमणिरयणघंटियाजाल-परिक्खित्तं^{१०} जोयणसयसहस्सविट्ठिण्णं दिव्वं गमणसज्जं सिग्घगमणं गाम जाणविमाणं विउव्वाहि, विउव्वित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं^{११} पच्चप्पिणाहि ॥

१८. तए णं से आभिओगिए देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्टुटुटु^{१२} *चित्त-माणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण^{१३} हियए करयलपरिग्गहियं^{१४} *दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं^{१५} पडि-सुणेइ, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमत्ति, अवक्कमत्ति वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता संखेज्जाइ^{१६} जोयणाइं^{१७} *दंडं निसिरति, तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खवाणं मसारगल्लाणं हंसगवमाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं^{१८} अहावायरे पोग्गले 'परिसाडेइ, परिसाडित्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाएइ, परियाइत्ता'^{१९} दोच्चं पि वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणति, समोहणित्ता अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं^{२०} *लीलट्ठियसालभंजियागं ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्तर-रु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउम-लयभत्तिचित्तं खंभुग्गय-वइरवेइया-परिगयाभिरामं विज्जाहर-जमलजुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं रुवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलि-चलिय-महुर-मणहरसरं सुहं कंतं दरिसणिज्जं णिउण-

१. सय० सू० १३ ।

२. मं० पा०—हट्टुटुटु जाव हियए ।

३. *सालिभंजियागं (च, छ) ।

४. वरवइरवेइया (क, ख, ग, घ, च); पवरवइर-वेइया (छ) ।

५. अच्चीसहस्समालणीयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. भासिमाणं (क, ख, घ, च) ; भासमाणं (ग); भिसिमाणं (छ) ।

७. भिब्भिसिमाणं (क, ख, ग, घ) ।

८. *उचितानि (वृ) ।

९. मिसिमिसेत्तमणिरयणं (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. एवमाणत्तियं (ख, ग, घ, च, छ) ।

११. सं० पा०—हट्टुटुटु जाव हियाए ।

१२. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव पडिसुणेइ ।

१३. सं० पा०—जोयणाइं जाव अहावायरे ।

१४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१५. सं० पा०—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव जाणविमाणं ।

ओविय-मिसिमिसेतमणिरयणवंटियाजालपरिक्खित्तं जोयणसयसहस्सवित्थिण्णं दिव्वं गमणसज्जं सिग्घगमणं णाम दिव्वं जाणविमाणं वेउव्विउं पवत्ते यावि होत्था ॥

० तिसोवाणपडिरूवग-विउव्वण-पदं

१९. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिंसिं तिसोवाण-पडिरूवए विउव्वति, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं । तेसि तिसोवाणपडिरूवगाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया णिम्मा, रिट्टामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवण्णरूपामया फलगा, लोहितक्खमइयाओ सूईओ, वइरामया संघी, णाणामणिमया अवलंबणा अवलंबणबाहाओ यं पासादीयां *दरिसणिज्जा अभिरूवां पडिरूवा ॥

० तोरण-पदं

२०. तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं तोरणा पण्णत्ता । तेसि णं तोरणाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—तेणं तोरणा णाणामणिमया, णाणामणिएसुं थंभेसु उवनिविट्ठसण्णिविट्ठा, 'विविहुमुत्तंतरारूवोवचिया', विविहतारारूवोवचिया *ईहामिय-उसभ-तुरग-तर-मगर-विहग-वालग-किन्तर-रुह-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गय-वइरवेइया-परिगयाभिरामा विज्जाहर-जमलजुयल-जंतजुत्ता पिव अच्चीसहस्समालणीया रूवगसहस्सकलिया भिसमाणा भिम्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुह्फासा सस्सिरीयरूवा घंटावलि-चलिय-महुर-मणहरसरा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवां पडिरूवा ॥

० अट्ठमंगल-पदं

२१. तेसि णं तोरणाणं उप्पि अट्ठमंगलगा पण्णत्ता, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-वट्ठमाणग-भट्टासण-कलस-मच्छ-दप्पणा *सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा पीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा समरीइया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवां पडिरूवा ॥

० भय-पदं

२२. तेसि णं तोरणाणं उप्पि बह्वे किण्हचामरज्झए *नीलचामरज्झए लोहियचामर-

१. विउव्वियं (क, ख, ग, च, छ) ; वेउव्वियं (घ) ।	मणिमया णाणामणिमएसु (वृ) ।
२. तिदिंसि ततो (क, ख, ग, घ, च) ।	७. विविहुमुत्तंतरोवचिया (जी० ३।२८८) ।
३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	८. विविहतारारूवोवचिया विविहुमुत्तंतरोवचिया (क, ख, ग, घ, च, छ) ; सं० पा०—विविहतारारूवोवचिया जाव पडिरूवा ।
४. सं० पा०—पासादीया जाव पडिरूवा ।	क्वचिदेतत्साक्षाल्लिखितमपि दूश्यते (वृ) ।
५. तिसोमाणं (च) ।	९. सं० पा०—दप्पणा जाव पडिरूवा ।
६. पुरतो तोरणे विउव्वति ते णं तोरणा णाणामणिमएसु (क, ख, ग, घ) ; पुरतो तोरणा विउव्वति ते णं तोरणा णाणामणिमएसु (छ) ; पुरतो तोरणे विउव्वइ तोरणा णाणा-	१०. सं० पा०—किण्हचामरज्झए जाव सुविकल-चामरज्झए ।

ज्झए हालिहचामरज्झए° सुक्किलचामरज्झए अच्छे सण्हे रुपपट्टे वइरदंडे° जलयामल-
गंधिए सुरम्मे° पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे विउव्वइ ।।

० छत्तातिछत्तादि-पदं

२३. तेसि णं तोरणणं उप्पि बह्वे छत्तातिछत्ते 'पडागाइपडागे घंटाजुगले चामर-
जुगले' उप्पलहत्थए पउम° - णलिण - सुभग - सोगंधिय-पोंडरीय-महापोंडरीय-सतपत्त-
सहस्सपत्तहत्थए सव्वरयणामए अच्छे° *सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे णीरए निम्मले निप्पंके
निक्कंकडच्छाए सप्पमे समरीइए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे
विउव्वइ ।।

० भूमिभाग-विउव्वण-पदं

२४. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरम-
णिज्जं भूमिभागं विउव्वति, से जहाणामए—आलिगपुक्खरेइ वा मुइंगपुक्खरेइ वा
'परिपुण्णे सरतलेइ' वा करतलेइ वा चंदमंडलेइ वा सूरमंडलेइ वा आयंसमंडलेइ वा
उरब्भचम्मेइ वा 'वसहचम्मेइ वा' वराहचम्मेइ वा सीहचम्मेइ वा वग्घचम्मेइ वा 'मिग-
चम्मेइ वा'° दीवियचम्मेइ वा अणेगसंकुकीलगसहस्सवितते°, आवड-पच्चावड-सेट्ठि-पसेट्ठि-
'सोत्थिय-सोवत्थिय'°-पूसमाणव-वद्धमाणग-'मच्छंडग-मगरंडग'°-'जार-मार'°-फुल्लावलि-
पउमपत्त-सागरतरंग-वसंतलय-पउमलयभत्तिचित्तेहि सच्छाएहि सप्पभेहि समरीइएहि
सउज्जोएहि णाणाविहपंचवण्णेहि मणीहि उवसोभिए, तं जहा—किण्हेहि णीलेहि लोहि-
एहि हालिदेहि सुक्किलेहि ।

० मणि-वण्णावास-पदं

२५. तत्थ णं जेते किण्हा मणी, तेसि णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से
जहाणामए—जीमूतएइ वा अंजणेइ वा खंजणेइ वा कज्जलेइ वा 'मसीइ वा मसीगुलियाइ
वा'° गवलेइ वा गवलगुलियाइ वा भमरेइ वा भमरावलियाइ वा भमरपतंगसारेइ° वा

१. वइरामयदंडे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. परिपुण्णसरतलेइ (वृ) ।

२. सुक्कमे (क, ख, ग, घ) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. घंटाजुगले पडागाइपडागे (क, ख, ग, घ, च) ;

८. छगलचम्मेइ वा (वृ) ; जीवाजीवाभिगमे

घंटाजुगले चामरजुगले पडागाइपडागे (छ) ।

(३।२७७) 'विगचम्मेति वा' इति पाठोस्ति ।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ती (४।३०) गंगामहानद्यास्तोर-

९. 'सहस्सवितते' जाणाविहपंचवन्नेहि मणीहि

णवणने तथा जीवाजीवाभिगमे (३।२६१ वापी-

उवसोभिते (वृ) ।

वणने च स्वीकृतपाठस्य संवादी पाठो लभ्यते ।

१०. सोवत्थिय (च) ; सोत्थिय (छ) ।

४. अत्र सर्वसु प्रतिषु 'कुमुद' इति पाठो लभ्यते,

११. मच्छंडा-मगरंडा (च, छ) ।

किन्तु वृत्तौ 'पद्महस्तकाः' पाठो व्याख्यातोस्ति

१२. जारा-मारा (च) ।

तथा १३८ सूत्रे जाव 'पउमहत्था' एवंविधः

१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ; क्वचित् 'मसी

पाठः प्राप्यते, तेनात्र 'पउम' इति पाठो

इति वा मसीगुलिया इति वा' न दृश्यते (वृ) ।

युज्यते ।

१४. पत्तसारेइ (क, ख, ग, घ, छ) ।

५. सं० पा०—अच्छे जाव पडिरूवे ।

जंवूफलेइ वा अट्टारिट्ठेइ वा परपुट्ठेइ वा गएइ वा गयकलभेइ वा 'किण्हसप्पेइ वा' किण्हकेसरेइ वा आगासथिगलेइ वा किण्हसोएइ वा किण्हकणवीरेइ वा किण्हबंधुजीवेइ वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, 'ते णं किण्ह' मणी इत्तो इट्ठतराए चैव कंततराए चैव 'पियतराए चैव' मणुण्णतराए चैव मणामतराए चैव वण्णेणं पणत्ता ॥

२६. तत्थ णं जेतै नीला मणी, तेसि णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पणत्ते, से जहाणामए—भिगेइ वा भिगपत्तेइ वा सुएइ वा सुयपिच्छेइ वा चासेइ वा चासपिच्छेइ वा णीलीइ वा णीलीभेदेइ वा णीलीगुलियाइ वा सामाएइ वा 'उच्चंतगेइ वा' वणरातीइ वा हलधरवसणे इ वा मोरग्गीवाइ वा 'पारेवयग्गीवाइ वा' अयसिकुसुमेइ वा 'वाणकुसुमेइ वा' अंजणकेसियाकुसुमेइ वा नीलुप्पलेइ वा नीलासोगेइ वा 'णीलकणवीरेइ वा णीलबंधुजीवेइ वा' भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं नीला मणी इत्तो इट्ठतराए चैव *कंततराए चैव पियतराए चैव मणुण्णतराए चैव मणामतराए चैव वण्णेणं पणत्ता ॥

२७. तत्थ णं जेतै लोहिया मणी, तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पणत्ते, से जहाणामए—ससरुहरेइ वा उरब्भरुहरेइ वा वराहरुहरेइ वा मणुप्सरुहरेइ वा महिसरुहरेइ वा बालिदगोवेइ वा वालदिवाकरेइ वा संस्रभरागेइ वा गुजद्धरागेइ वा जासुअणकुसुमेइ वा किसुयकुसुमेइ वा पालियायकुसुमेइ वा जाइहिगुलएइ वा सिलप्पवालेइ वा पवालअंकुरेइ वा लोहियक्खमणीइ वा लक्खारमगेइ वा किमिरागकंबलेइ वा चीणपिट्ठरासीइ वा 'रत्तुप्पलेइ वा' रत्तासोगेइ वा रत्तकणवीरेइ वा रत्तबंधुजीवेइ वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं लोहिया मणी इत्तो इट्ठतराए चैव *कंततराए चैव पियतराए चैव मणुण्णतराए चैव मणामतराए चैव वण्णेणं पणत्ता ॥

२८. तत्थ णं जेतै हालिद्दा मणी, तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पणत्ते, से जहाणामए—चंपएइ वा चंपगच्छलीइ वा 'चंपगभेएइ वा' हालिद्दाइ वा हालिद्दाभेदेइ वा हलिद्दागुलियाइ वा हरियालियाइ वा हरियालभेदेइ वा हरियालगुलियाइ वा 'चिउरेइ वा

१. परट्ठेइ (क, ख, ग, च); परट्ठुतेइ (घ) । १०. सं० पा०—इट्ठतराए चैव जाव वण्णेणं ।

२. × (क, ख, ग, घ, च) ।

३. गोयमा ! णो (जी० ३।२७८) ।

४. ओवम्मं समणाउसो ! ते णं किण्ह (वृ) ।

५. × (वृ) ।

६. उच्चंतंति वा (क, ख, ग, घ) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. × (क, ख, ग, घ, च, छ); इत्त उर्ध्वं क्वचित्—इदनीलेइ वा महानीलेइ वा मरगतेइ वा इति दृश्यते (वृ) ।

९. णीलबंधुजीवेइ वा णीलकणवीरेइ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. उरब्भरुहरेइ वा ससरुहरेइ वा नररुहरेइ वा वराहरुहरेइ वा बालिदगोवेइ (क, ख, ग, घ); उरब्भरुहरेइ वा नररुहरेइ वा वराहरुहरे वा बालिदगोवेइ (च); उरब्भरुहरेइ वा ससरुहरेइ वा वराहरुहरेइ वा बालिदगोवेइ (छ) ।

१२. किमिकंदलेइ (क, ख, ग); किमिरागरत्तकंबलेइ (जी० ३।२८०) ।

१३. × (क, ख, ग, घ) ।

१४. सं० पा०—इट्ठतराए चैव जाव वण्णेणं ।

१५. × (क, ख, ग, घ) ।

चिउरंगरातेइ वा" वरकणगेइ वा" वरकणगनिघसेइ वा" वरपुरिसवसणेइ वा अल्लकी-
कुसुमेइ वा चंपाकुसुमेइ वा कुहंडियाकुसुमेइ वा 'कोरंटकदामेइ वा" तडवडाकुसुमेइ वा
घोसेडियाकुसुमेइ वा सुवण्णजूहियाकुसुमेइ वा सुहिरण्णकुसुमेइ वा 'वीययकुसुमेइ वा"
पीयासोमेइ वा पीयकणवीरेइ वा पीयबंधुजीवेइ वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे
समट्ठे, ते णं हालिद्वा मणी एत्तो इट्ठतराए चेव" *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्ण-
तराए चेव मणामतराए चेव" वण्णेणं पण्णत्ता ॥

२९. तत्थ णं जेतै सुक्किला मणी, तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से
जहानामए—अंकेइ वा 'संखेइ वा चंदेइ वा कुमुद-उदक-दयरय-वहिघण-खीर-खीरपूरेइ वा
कोंचावलीइ वा हारावलीइ वा हंसावलीइ वा वलागावलीइ वा चंदावलीइ वा" सारतिय-
बलाहएइ वा धंतधोरुप्पपट्ठेइ वा सालिपिट्टरासीइ वा कुंदपुप्फरासीइ वा कुमुदरासीइ
वा सुवक्खिवाडीइ वा पिहुणमिजियाइ वा भिसेइ वा मणालियाइ वा गयदंतेइ वा लवंग-
दलएइ वा पोंडरियदलएइ वा" सेयासोमेइ वा सेयकणवीरेइ वा सेयबंधुजीवेइ वा भवे एया-
रूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं सुक्किला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव" *कंततराए चेव
पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव" वण्णेणं पण्णत्ता ॥

३०. तेसि णं मणीणं इमेयारूवे गंधे पण्णत्ते, से जहानामए—कोट्टपुडाण वा तगर-
पुडाण वा एलापुडाण वा चोयपुडाण वा चंपापुडाण वा दमणापुडाण वा कुंकुमपुडाण वा
चंदणपुडाण वा उसीरपुडाण वा मरुआपुडाण वा जातिपुडाण वा जूहियापुडाण वा मल्लिया-
पुडाण वा ण्हाणमल्लियापुडाण वा केतमिपुडाण वा पाडलिपुडाण वा णोमालियापुडाण" वा
अगुरुपुडाण वा लवंगपुडाण वा 'वासपुडाण वा कप्पूरपुडाण वा" अणुवायंसि वा" ओभिज्ज-
माणण वा कोट्टिज्जमाणण वा भंजिज्जमाणण" वा उक्किरिज्जमाणण वा विक्किरिज्ज-
माणण वा परिभुज्जमाणण" वा भंडाओ" भंडं साहरिज्जमाणण वा" ओराला मणुण्णा
मणहरा घाणमणनिव्वुतिकरा सव्वओ समंता गंधा अभिनिस्सवंति" भवे एयारूवे सिया ?

१. चउरंगेइ वा चउरंगरातेइ वा (क, च, छ);	८. वा सिधुवारमल्लदामेति वा (जी० ३१२८२)।
चउरंगेइ वा चिउरंगरातेइ वा (ख, ग);	९. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं ।
चिउरंगेइ वा चिउरंगरातेइ वा (घ) ।	१०. णेमालिया" (च) ।
२. × (वृ) ।	११. कप्पूरपुडाण वा वासपुडाण वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
३. वा सुवण्णसिप्पेइ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	१२. वा पडिकूलवायंसि (छ) ।
४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	१३. रुचिज्जमाणण (जी० ३१२८३) ।
५. कोरंटवरमल्लदामेति वा (क, ख, ग, च, छ);	१४. परिभाइज्जमाणण वा (वृषा) ।
वीअकुसुमेइ वा कोरंटवरमल्लदामेति वा	१५. भंडाओ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
(घ) ।	१६. × (छ) ।
६. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं ।	१७. अभिनिस्सदंति (क, ख, ग); अभिनिस्सरंति (छ, वृ); अभिनिस्सवन्ति (वृषा) ।
७. संखेति वा चंदेति वा कुंदेति वा दंतेति वा	
हंसावलीति वा कोंचावलीति वा हारावलीति	
वा चंदावलीति वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	

णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव' *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्ण-तराए चेव मणामतराए चेव' गंधेणं पण्णत्ता ॥

३१. तेसि णं मणीणं इमेयारूवे फासे पण्णत्ते, से जहानामए—आइणेइ वा रूएइ वा बूरेइ वा णवणीएइ वा हंसगम्भतूलियाइ वा सिरीसकुसुमनिचयेइ वा बालकुमुदपत्तरासीइ' वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव' *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव' फासेणं पण्णत्ता ।

० पेच्छाघरमंडव-विउव्वण-पदं

३२. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं पिच्छाघरमंडवं विउव्वइ—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं अब्भुगय - सुकय-वइरवेइया' 'तोरणवररइय' 'सालभंजियागं' सुसिलिट्ठ - विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-वेरुलिय-विमलखंभं णाणामणिकणगरयणखचिय-उज्जलबहुसमसुविभत्तभूमिभागं' ईहामिय-उसभ-तुरग - नर - मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुह-सरभ - चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्तं 'खंभुगय - वइरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्स-मालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिन्भिसमाणं चक्खुत्तोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीय-रूवं' कंचणमणिरयणधूमियागं णाणाविहपंचवण्णघंटापडागपरिमंडियग्गसिहरं चवलं मरीतिकवयं विणिम्भयंतं लाउल्लोइयमहियं' गोसीस-सरस-रत्तचंदण-दहूर-दिन्नपंचंगुलितलं उवचियवंदणकलसं वंदणघड-सुकय-तोरणपडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-मल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभिमुक्क - पुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेतंगंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्ठिभूतं 'अच्छर-गण-संघ-संविक्किणं दिव्वतुडियसट्ठसंपणाइयं' 'अच्छ' *सण्हं लण्हं घट्ठं मट्ठं णीरयं निम्मलं निप्पकं निकककडच्छायं सप्पभं समरीइयं सउज्जोयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं' पडिरूवं ।

० पेच्छाघरमंडवे भूमिभाग-विउव्वण-पदं

३३. तस्स णं पिच्छाघरमंडवस्स अंतो' बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति जाव' मणीणं फासो ॥

१. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव गंधेणं ।

२. बालकुसुमपत्तरासीइ (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

३. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव फासेणं ।

४. वरवेइया (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्तावपि 'वरवेइया' इति व्याख्यातमस्ति, किंतु जीवा-जीवाभिगमस्य (३।३७२) सूत्रस्य तथा ज्ञाता-धर्मकवायाः (१।१।५६) सूत्रस्य सन्दर्भे 'वइर-वेइया' इति पाठ उपयुक्तोस्ति । प्रस्तुतसूत्रस्य (१७) सूत्रे यानविमानवर्णनेपि 'वइरवेइया' इति पाठो लभ्यते ।

५. तोरणवरवइर (क, ख, ग, घ) ।

६. सालिभंजियागं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. 'सुविभत्तदेसभायं' (क, ख, ग, घ, च); 'सुविभत्तदेसभूमिभायं' (छ) ।

८. × (च) ।

९. मीरीति' (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. लाइयउल्लोइयमहियं (वृ) ।

११. दिव्वतुडियसट्ठसंपणाइयं अच्छरघणसंघसंविइण्णं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. सं० पा०—अच्छं जाव पडिरूवं ।

१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१४. राय० सू० २४-३१ ।

० पेच्छाघरमंडवे उल्लोय-विउव्वण-पदं

३४. तस्स णं पेच्छाघरमंडवस्स उल्लोयं विउव्वति—पउमलयभत्तिचित्तं^१ अच्छं^२ *सण्हं लण्हं घट्ठं मट्ठं णीरयं निम्मलं निप्पकं निक्कंकडच्छायं सप्पभं समरीइयं सउज्जोयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं^३ पडिरूवं ॥

० पेच्छाघरमंडवे अक्खाडग-विउव्वण-पदं

३५. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगं वइरामयं अक्खाडगं विउव्वति ॥

० अक्खाडए मणिपेडिया-विउव्वण-पदं

३६. तस्स णं अक्खाडयस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महेगं मणिपेडियं विउव्वति—
अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं वाहल्लेणं, सव्वमणिमयं अच्छं^२ *सण्हं लण्हं घट्ठं मट्ठं णीरयं निम्मलं निप्पकं निक्कंकडच्छायं सप्पभं समरीइयं सउज्जोयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं^३ पडिरूवं ॥

० मणिपेडियाए सीहासण-विउव्वण-पदं

३७. तीसे णं मणिपेडियाए उव्वरि, एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वइ। तस्स णं सीहासणस्स इमेयारूसे वण्णावासे पण्णत्ते—तवणिज्जामया चक्कला, रययामया सीहा, सोवणिण्या पाया, णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं, जंबूणयमयाइं गत्ताइं, वइरामया संधी, णाणामणिमए वेच्चे^४ से णं सीहासणे ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुह-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ते ससारसारोवच्चियमणिरयणपायपीढे^५ अत्थरग-मिउमसूरग-णवतयकुसंत-लिव^६-केसर-पच्चत्थुयाभिरामे^७ 'आईणग-रूय-वूर-णव-

१. जीवाजीवाभिगमे (३।३०८) 'पउमलयाभत्ति-
चित्ता जाव सामलयाभत्तिचित्ता सव्वतवणिज्ज-
मया' इति पाठो लभ्यते । किन्तु प्रस्तुतसूत्रा-
दर्शेषु केवलं पक्षलताया एव उल्लेखो विद्यते,
वृत्तावपि इत्यमेवास्ति — पक्षलताभक्तिचित्रं
'जाव पडिरूवमि' ति, यावच्छब्दकरणात्
'अच्छं सण्हं' मित्यादिविशेषणकदम्बकपरिग्रहः ।

२, ३. सं० पा०—अच्छं जाव पडिरूवं ।

४. वच्चे (च) ।

५. संसारं (क, ख, ग, च, छ) ।

६. प्रस्तुतसूत्रे अस्य पदस्य द्वौ पाठभेदौ लभ्येते—
लिवल (क); लिब्व (ख, ग, घ, च, छ) ।
ज्ञाताधर्मकथायां (१।१।१८) अस्य पदस्य
'लिब्व' इति पाठभेदो विद्यते । जीवाजीवा-
भिगमे (३।३।११) मूलपाठे 'लिब्व' इति पदं
विद्यते, पाठान्तरे च 'लिवल' इति पदमस्ति ।

एतैः पाठभेदैर्दर्शयते 'लिब्व' इति पाठस्य
'लिब्व' इति रूपे परावर्तनं जातम् । वृत्तिकारै-
र्यथा यथा पाठो लब्धस्तथा तथा व्याख्यातः—
नायाधम्मकहाओ (वृत्तिपत्र १७) लिम्बो-
बालोरभ्रस्योर्णायुक्ताकृत्तिः । जीवाजीवाभिगमे
(वृत्तिपत्र २१०) लिच्चानि—नमनशीलानि
च केशराणि । रायपसेणइयवृत्तौ लिम्बानि
कोमलानि नमनशीलानि च केशराणि मध्ये
यस्य मसुरकस्य तत् नवत्वक्कुशान्तलिम्ब-
केशरम् । रायपसेणइयवृत्तौ कोमलानि, जीवा-
जीवाभिगमस्य वृत्तौ नमनशीलानि इति
व्याख्यातमस्ति । अनेन अर्थसादृश्यं प्रतीयते ।
'लिब्व' इति पदं लिपिकाराणां प्रसादत एव
जातमस्ति ।

७. पत्थयाभिरामे (च); पडुत्थुयाभिरामे (छ) ।

णीय-तूलफासे सुविरइययत्ताणे ओयवियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे रत्तंसुअसंवुए सुरम्मे^१ पासाईए^२ दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

० सीहासणे विजयदूस-विउव्वण-पदं

३८. तस्स णं सीहासणस्स उवरि, एत्थ णं महेणं विजयदूसं विउव्वइ^३—संखं^४-कुंद-दगरय-अमयमहियफेणपुजसन्निगासं सव्वरयणामयं अच्छं सण्हं^५ पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥

० विजयदूसे अंकुस-विउव्वण-पदं

३९. तस्स णं सीहासणस्स उवरि विजयदूसस्स य बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं एगं वयरामयं अंकुसं विउव्वति^६ ॥

० अंकुसे मुत्तादाम-विउव्वण-पदं

४०. तस्सि च णं वयरामयंसि अंकुसंसि कुंभिकं मुत्तादामं विउव्वति^७ । से णं कुंभिके मुत्तादामे अण्णेहि चउहि कुंभिकेहि^८ मुत्तादामेहि तदद्दुच्चत्तपमाणमेत्तेहि^९ सव्वओ समंता संपरिखित्ते । ते णं दामा त्वणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरमंडियागा^{१०} णाणा-मणिरयणवित्रिहहारद्धहारउवसोभियसमुदया^{११} ईसि अण्णमण्णमसंपत्ता^{१२} पुव्वावरदाहिणुत्तरागएहि वाएहि मंदायं-मंदायं^{१३} एज्जमाणा-एज्जमाणा^{१४} पलंबमाणा^{१५}-पलंबमाणा^{१६} पडंझमाणा^{१७}-पडंझमाणा उरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमण्णिव्वुत्तिकरेणं सहेणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा-आपूरेमाणा सिरीए अतीव^{१८}-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

० भट्टासण-विउव्वण-पदं

४१. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स सीहासणस्स अवरुत्तरेणं^{१९} उत्तरेणं उत्तरपुर-

१. सुविरइ-रयत्ताणे (रइत्ताणे—ख, ग, घ) ओयविय (उवचिय—क, च, छ) खोमदुगुल्लपट्ट-पडिच्छायणे रत्तंसुअसंवुए (संवुडे—च, छ) सुरम्मे आईणगल्लवूरणवणीयतूलफासमउए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. पासातीए (क, ख, ग, घ) ।

३. विउव्वंति (वृ) । एकवचनस्य कर्ता कथं बहु-वचनं क्रियायाम् ।

४. संख (घ, छ, वृ) ।

५. जीवाजीवाभिसमे (३।४।१२) जाव पदेन पूर्णः पाठः सूचितोस्ति ।

६, ७. विउव्वंति (वृ) । एक वचनस्य कर्ता कथं बहुवचनं क्रियायाम् ।

८. अद्वकुंभिकेहि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. 'पमाणेहि' (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. 'पयरमंडियागा (ख, ग); 'पइरमंडियागा (च); × (वृ) ।

११. 'समुदया (वृ) ।

१२. 'संपत्ता वाएहि (घ, च, छ) ।

१३. एइज्जमाणाणं २ (क, ख, ग); एइज्जमाणाणं २ (घ); एइज्जमाणां एइज्जमाणां (च) ; एयज्जमाणाणं एयज्जमाणाणं (छ) ।

१४. पलंबमाणा (क, ख, ग) ।

१५. पलंबमाणाणं (घ) ।

१६. पडंझमाणा (क) ; पडंझमाणा (ख, ग, च, छ) ।

१७. अतीव (च) ।

१८. 'अवरुत्तरेणं' अत्र सप्तमी स्थाने तृतीया वर्तते । स्थानाङ्गसूत्रे वृत्तिकारेण 'दाहिणेणं' 'एतादृशेषु प्रयोगेषु 'णं' वाक्यालंकारत्वेन स्वीकृतम् । किन्तु अत्र वृत्तिकृता तृतीया सप्तमी विभक्तिरूपेण व्याख्याता ।

त्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ ॥

४२. तस्स णं सीहासणस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं अग्गमहिस्सीणं सपरिवाराणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ ॥

४३. तस्स णं सीहासणस्स दाहिणपुरत्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स अन्निभतरपरिसाए अट्ठण्हं देवसाहस्सीणं अट्ठ भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ । एवं—दाहिणेणं मज्झिमपरिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति । दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरपरिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति । पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवतीणं सत्त भद्दासणे विउव्वति ॥

४४. तस्स णं सीहासणस्स चउर्दिसि, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति, तं जहा—पुरत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ ॥

जाणविमाण-विउव्वणस्स निगमण-पदं

४५. तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए—अइरुगयस्स वा हेमंतियवालियसूरियस्स^१, खयरिगालाण वा रत्ति पज्जलियाणं, जवाकुसुमवणस्स^२ वा केसुयवणस्स वा पारियायवणस्स वा सव्वतो समंता संकुसुमियस्स भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे^३ समट्ठे । तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स एत्तो इट्ठतराए चेव^४ *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव^५ वण्णे पण्णत्ते । गंधो य फासो य जहा^६ मणीणं ॥

४६. तए णं से आभियोमिए देवे दिव्वं जाणविमाणं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिगहियं^७ *दसण्हं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता तमाणत्तियं^८ पच्चप्पिणति ॥

जाणविमाणारोहण-पदं

४७. तए णं से सूरियाभे देवे आभियोगस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठं^९ *तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^{१०} हियए दिव्वं जिणिदाभिगमणजोगं उत्तरवेउव्वियरूवं विउव्वति, विउव्वित्ता चउर्हि अग्गमहिस्सीहि सपरिवाराहि, दोहि अणिएहि, तं जहा—गंधव्वाणिएण य णट्ठाणिएण य सर्द्धि संपरिवुडे तं दिव्वं जाणविमाणं अणुपयाहिणीकरिमाणे पुरत्थिभिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं दुरुहति,

१. *बालसूरियस्स (छ) ।

५. राय० सू० ३०, ३१ ।

२. जासुमणस्स (क, ख, ग, घ, च) ; जावसुमणस्स (छ) ।

६. सं० पा०—करयलपरिगहियं जाव पच्चप्पिणति ।

३. इणमट्ठे (क, ख, ग, घ, च) ।

७. सं० पा०—हट्ठ जाव हियए ।

४. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव वण्णे ।

दुरुहिता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे ॥

४८. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ तं दिव्वं जाण-विमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणा उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरुहंति, दुरुहिता पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वणत्थेहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति । अवसेसा देवा य देवीओ य तं दिव्वं जाणविमाणं^१ *अणुपयाहिणीकरेमाणा^२ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरुहंति, दुरुहिता पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वणत्थेहिं भद्दासणेहिं निसीयंति ॥

पयाण-सज्जा-पदं

४९. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स तं दिव्वं जाणविमाणं दुरुहस्स समाणस्स अट्ठममला^३ पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ^४—*णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ^५-दप्पणा ॥

५०. तयणंतरं च णं पुण्णकलसभिगार-दिव्वायवत्तपडागा^६ सच्चामरा दंसणरइया आलोयदरिसणिज्जा^७ वाउद्धयविजयवेजयंतीपडागा ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ॥

५१. तयणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं पलंवकोरंटमल्लदामोवसोभितं चंदमंडल-निभं समुस्सियं विमलमायवत्तं पवरसीहासणं च मणिरयणभत्तिचित्तं सपायपीढं सपाउया-जोयसमाउत्तं^८ बहुकिंकरामरपरिगहियं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थियं ॥

५२. तयणंतरं च णं वइरामय-वट्ट-लट्ट-संठिय-सुसिलिट्ट-परिघट्ट-मट्ट-सुपत्तिट्टिए विसिट्ठे^९ अणेगवरपंचवण्णकुडभी-सहस्सपरिमंडियाभिरामे^{१०} वाउद्धयविजयवेजयंतीपडा-गच्छत्तातिच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे जोयणसहस्समूसिए महतिमहालए महिदज्जए पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिए ॥

५३. तयणंतरं च णं सुरूव^{११}—णेवत्थ-परिकच्छिया सुसज्जा सव्वालंकारभूसिया महया भड-चडगर-पहगरेणं पंच अणीयाहिवइणो पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ॥

५४. तयणंतरं च णं बह्वे आभियोगिया देवा देवीओ य सएहिं-सएहिं रूवेहिं, सएहिं-सएहिं, विसेसेहिं, सएहिं-सएहिं विह्वेहिं, सएहिं-सएहिं णिज्जोएहिं,^{१२} सएहिं-सएहिं णेवत्थेहिं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ॥

१. सं० पा०—जाणविमाणं जाव दाहिणिल्लेणं ।

६. सहस्सुस्सिए (वृ) ।

२. मंगलगा (वृ) ।

१०. सुरूव (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—सिरिवच्छ जाव दप्पणा ।

११. एतत्सूत्रं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

४. दिव्वा य छत्तपडागा (ओ० सू० ६४, जं० ३।१७८) ।

१२. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (३।१७८) चिह्नाङ्कित-पाठस्य स्थाने एतादृशः पाठो विद्यते—‘एवं वेसेहिं चिधेहिं निजोएहिं’ । अस्य पाठस्य ‘वेसेहिं’ इति पदं सम्यक् प्रतिभाति । ‘विसे-सेहिं’ इति पदस्य कश्चिद् विशिष्टोर्थो नैव ज्ञायते । *णेज्जाएहिं (क, ख, ग, घ) ।

५. लोयदरिसणिज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. तयणंतरं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. समाउया^८ (क, ख, ग, घ) ।

८. सिट्ठो (क, ख, ग); सिट्ठे (घ, च, छ) ।

५५. तयणंतरं च णं सूरियाभविमाणवासिणो बह्वे वेमाणिया देवा य देवीओ य सव्विड्ढीए जाव' नाइयरवेणं सूरियाभं देवं पुरतो पासतो य मग्गतो य समणुगच्छंति ॥

जाणविमाण-पच्चोरुहण-पदं

५६. तए णं से सूरियाभे देवे तेणं पंचाणीयपरिखित्तेणं वइरामयवट्ट-लट्ट-संठिय^१-
 *सुसिलिट्ट-परिघट्ट-मट्ट-मुपतिट्टिएणं विसिट्ठेणं अणेगवरपंचवण्णकुडभी-सहस्सपरिमडिया-
 भिरामेणं वाउद्धयविजयवेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिएणं तुमेणं गगणतलमणुलिहंतसिह-
 रेणं^२ जोयणसहस्समूसिएणं महत्तिमहालतेणं महिदज्झएणं पुरतो कडिडज्जमाणेणं चउहि
 सामाणियसाहस्सीहि^३, *चउहि अग्गमहिसीहि सपरिवाराहि, तिहि परिसाहि, सत्तहि अणिएहि
 सत्तहि अणियाहिबईहि^४ सोजसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि अण्णेहि य वहुहि सूरियाभविमाण-
 वासीहि वेमाणिएहि देवेहि देवीहि य सद्धि संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव' नाइयरवेणं सोध-
 म्मस्स कप्पस्स मज्झमज्झेणं तं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुति दिव्वं देवाणुभावं उवदंसेमाणे-
 उवदंसेमाणे 'पडिजागरेमाणे-पडिजागरेमाणे'^५ जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरिल्ले
 णिज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छति, जोयणसयसाहस्सिएहि विग्गहेहि ओवयमाणे वीतिवय-
 माणे^६ ताए उक्किट्टाए^७ *तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्धाए उद्धयाए दिव्वाए
 देवगईए^८ तिरियमसंखिज्जाणं दीवसमुदाणं मज्झमज्झेणं वीतीवयमाणे-वीतीवयमाणे
 जेणेव 'नंदीसरवरे दीवे'^९ जेणेव दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरपव्वए तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छत्ता तं दिव्वं देविड्ढि^{१०} *दिव्वं देवजुति^{११} दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरेमाणे-
 पडिसाहरेमाणे पडिसंखेवेमाणे-पडिसंखेवेमाणे जेणेव जंबुद्वीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव
 आमलकप्पा नयरी जेणेव अंबसालवणे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छत्ता समणं भगवं महावीरं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं^{१२} तिक्खुत्तो आयाहिणं
 पयाहिणं करेइ, करेत्ता^{१३} समणस्स भगवओ महावीरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे^{१४} तं दिव्वं
 जाणविमाणं ईसि चउरंगुलमसंपत्तं धरणित्तलंसि ठवेई, ठवेत्ता चउहि अग्गमहिसीहि
 सपरिवाराहि, दोहि अणिएहि य-गंधव्वाणिएण य णट्टाणिएण य सद्धि संपरिवुडे ताओ
 दिव्वाओ जाणविमाणाओ पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति ॥

५७. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ ताओ
 दिव्वाओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति । अवसेसा
 देवा य देवीओ य ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं
 पच्चोरुहंति ॥

१. राय० सू० १३ ।

२. सं० पा०—संठिय जाव जोयणसहस्समूसिएणं ।

३. सं० पा०—सामाणियसाहस्सीहि जाव सोल-
 सहि ।

४. राय० सू० १३ ।

५. उवलालेमाणे उवलालेमाणे (वृ) ।

६. वयमाणे (क, ख, ग, घ, च) ।

७. सं० पा०—उक्किट्टाए जाव तिरियमसं-
 खिज्जाणं ।

८. नन्दीश्वरो द्वीपः (वृ) ।

९. सं० पा०—देविड्ढि जाव दिव्वं ।

१०. विमाणेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१२. दिसाभागे (क, ग, च) ।

सूरियाभस्स-वंदण-पदं

५८. तए णं से सूरियाभे देवे [चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं ?]^१ चउहिं अग्गमहि-
सीहिं^२ *सपरिवाराहिं, तिहिं^३ परिसाहिं, सत्तहिं^४ अणिएहिं, सत्तहिं^५ अणियाहिवईहिं^६,
सोलसहिं^७ आयरक्खदेव-साहस्सीहिं^८ अण्णेहिं य वहूहिं^९ सूरियाभविमाणवासीहिं^{१०} वेमाणिएहिं^{११}
देवेहिं^{१२} देवीहिं य सद्धिं^{१३} संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव^{१४} णाइयरवेणं^{१५} जेणेव समणे भगवं महावीरे
तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं
करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते ! सूरियाभे
देवे देवाणुप्पियं वंदामि नमंसांमि^{१६} *सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं^{१७}
पज्जुवासामि ॥

वंदणाणुमोदण-पदं

५९. सूरियाभाइ ! समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी—पोराणमेयं
सूरियाभा ! 'जीयमेयं सूरियाभा !'^१ किच्चमेयं सूरियाभा ! करणिज्जमेयं सूरियाभा !
आइण्णमेयं सूरियाभा ! अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा ! जण्णं भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-
वेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता तओ पच्छा साइं-साइं
नाम-गोत्ताइं साहंति, तं^२ पोराणमेयं सूरियाभा ! जाव अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा !

पज्जुवासणा-पदं

६०. तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठं^१
*तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेति,
उट्ठेत्ता^२ समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे नातिदूरे
सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासति ॥

धम्मदेसणा-पदं

६१. तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभस्स देवस्स तीसे य महत्तिमहालियाए
'इसिपरिसाए मुणिपरिसाए जतिपरिसाए विदुपरिसाए देवपरिसाए खत्तियपरिसाए इक्खाग-
परिसाए कोरव्वपरिसाए अणेगसयाए अणेगवंदाए अणेगसयवंदपरिवाराए परिसाए ओहवले
अइवले महव्वले अपरिमियवल-वीरिय-तेय-माहण्ण-कंतिजुत्ते सारय-णवत्थणिय-महुरगंभीर-
कोच्चणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे, उरे वित्थडाए कंठे वट्ठियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए^१ अमम्म-

१. सप्तमसूत्रानुसारेणात्रैष पाठो युज्यते ।

५. सं० पा०—नमंसांमि जाव पज्जुवासामि ।

२. सं० पा०—अग्गमहिंसीहिं जाव सोलसहिं ।

६. × (क, ख, ग, घ, छ) ।

३. राय० सू० १३ ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. णाइएणं (क, ख, ग, घ, च) ।

८. सं० पा०—हट्ठ जाव समणं ।

९. रायपसेणइयवृत्तौ आचार्यमलयगिरिणा औपपातिकस्य पाठः समुद्धृतः, स च अभयदेवसूरिव्याख्यात-
पाठात् किञ्चिद् भिद्यते—

(ओवाइय वृत्ति पृ० १४७)

(रायपसेणइय वृत्ति पृ० ११६)

अगरलयाए अमम्मणाए सव्वक्खरसण्णि-
वाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए
सरस्सईए

पं० वेचरदास द्वारा संपादित)

अगगयाए अमम्मणाए फुडविसयमहुरगंभीर-
गाहिगाए सव्वक्खरसन्निवाइयाए गिराए

णाए सुव्वत्तक्खर-सण्णवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयण-
णीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ—अरिहा धम्मं परिकहेइ” जाव परिसा
जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

पण्ह-वागरण-पदं

६२. तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा
निसम्म हट्ठुट्ठ^१—*चित्तमाणंदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण^२-हियए
उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी
—अहण्णं भंते ! सूरियाभे देवे किं भवसिद्धिए ? अभवसिद्धिए ? सम्मदिट्ठी ? मिच्छ-
दिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभवोहिए ? दुल्लभवोहिए ? आराहए ?
विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?

सूरियाभाइ ! समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी—सूरियाभा ! तुमण्णं
भवसिद्धिए, नो अभवसिद्धिए^३ । *सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी । परित्तसंसारिए, नो
अणंतसंसारिए । सुलभवोहिए, नो दुल्लभवोहिए । आराहए, नो विराहए^४ । चरिमे, नो
अचरिमे ॥

नट्टविहि-उव्वदंसण-पदं

६३. तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठुट्ठ-
चित्तमाणंदिए^५ *पीइमाणे^६ परमसोमणस्सिए^७ हरिसवस-विसप्पमाणहियए समणं भगवं
महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—तुम्हे णं भंते ! सव्वं जाणह
सव्वं पासह, ‘सव्वओ जाणह सव्वओ पासह’^८, सव्वं कालं जाणह सव्वं कालं पासह, ‘सव्वे

सव्वभासाणुगामिणीए सव्वसंसयविमोयणीए
अपुणरत्ताए सरस्सईए

अत्र ‘अगरलयाए,’ ‘पुण्णरत्ताए’ इति शब्दद्वयं आलोच्यमस्ति । ‘अगरलयाए’ (सुविभक्ताक्षरतया)
इति पाठापेक्षया ‘अगगयाए’ (अगद्गदया) इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति ।

‘पुण्णरत्ताए’ इति पाठस्य व्याख्या अभयदेवसूरिणा इत्थं कृतास्ति—‘पूर्णा च स्वरकलाभिः रक्ता
च—गेयरागानुरक्ता या सा तथा तथा ।’

वृत्तिकारेण आदर्शे एतादृश एव पाठो लब्धस्तेन तथा व्याख्यातः ।

रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १६०) गेयस्य अष्टगुणानां व्याख्या प्रसंगे ‘पूर्ण,’ ‘रक्तं’ इतिगुणद्वयं
व्याख्यातमीरितं यथा—तत्र यत् स्वरकलाभिः परिपूर्णं गीयते तत् ‘पूर्णम्,’ गेयरागानुरक्तेन यद्
गीयते तद् ‘रक्तम्’ । एषा व्याख्या अभयदेवसूरिकृत ‘पूर्णरक्त’ व्याख्यया तुल्यास्ति । अनया ज्ञायते
सा व्यर्थी नास्ति, तेन आचार्यमलयगिरिणा समुद्धृतः औपपातिकपाठो वाचनान्भेदस्य प्रतीयते ।

१. चिन्हाङ्कितपाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते । एष ४. सं० पा०—चित्तमाणंदिए जाव परमसोमण-
वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । द्रष्टव्यानि औपपाति- स्सिए ।

कस्य ७१ से ७६ सूत्राणि ।

५. *सोमणसे (क, ख, ग, च, छ) ।

२. सं० पा०—हट्ठुट्ठ जाव हियए ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—अभवसिद्धिए जाव चरिमे ।

भावे जाणह सव्वे भावे पासह^१ । जाणंति णं देवाणुप्पिया ! मम पुब्बिं वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमातियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं वत्तीसतिवद्धं नट्टविहिं उवदंसित्तए ॥

६४. तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे सूरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणइ तुसिणीए संचिट्ठति ॥

६५. तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—तुब्भे णं भंते! सव्वं जाणह^२ “सव्वं पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं कालं जाणह सव्वं कालं पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह । जाणंति णं देवाणुप्पिया ! मम पुब्बिं वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमातियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं वत्तीसतिवद्धं नट्टविहिं^३ उवदंसित्तएत्ति कट्ठु समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुररत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ^४, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरति^५, *तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहावायरे पोग्गले परिसाडेति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परिआएइ परिआइत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति, समोहणित्ता^६ बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति, से जहानामए—आलिग-पुक्खरेइ वा जाव^७ मणीणं फासो ॥

६६. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे पिच्छाघरमंडवं विउव्वति—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं वण्णओ^८ अंतो बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं उल्लोयं अक्खाडगं च मणिपेढियं च विउव्वति ॥

६७. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं सीहासणं सपरिवारं जाव^९ दामा चिट्ठंति ॥

६८. तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवतो महावीरस्स आलोए पणामं करेति, करेत्ता अणुजाणउ मे भगवंति कट्ठु सीहासणवरगए तित्थयराभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

६९. तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए नाणामणिकणगरयणविमल-महरिह-‘निउण-ओविय’-मिसिमिसेतविरवियमहाभरण-कडग^{१०}-तुडियवरभूसणुज्जलं पीवरं पलंबं दाहिणं भुयं पसारेति ।

१. × (क, ख, ग, च, छ) ।

२. सं० पा०—जाणह जाव उवदंसित्तए ।

३. समोहणइ (क, ख, ग, च, छ) ।

४. सं० पा०—निसिरति अहावायरे अहासुहुमे

दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं जाव बहुसम^{१०} ।

५. राय० सू० २४-३१ ।

६. राय० सू० ३२-३६ ।

७. राय० सू० ३७-४४ ।

८. निउणोविय (क, ख, ग); निउणोवचिय (घ, च) ।

९. कणग (क, ख, ग, घ, च) ।

तओ णं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिब्बयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोव्वेयाणं एगाभरण-वसणगहियणिज्जोयाणं दुहओ संवेल्लियग्गणियत्थाणं 'आविद्धतिलयामेलाणं पिणद्धगेव्वेज्जकंचुयाणं' उप्पीलिय-चित्तपट्ट-परियर-सफेणकावत्तरइय-संगय-पलंब-वत्थंत-चित्त-चित्तललग-नियंसणाणं एगावलि-कंठरइय-सोभंत-वच्छ-परिहत्थ-भूसणाणं अट्टसयं नट्ट-सज्जाणं देवकुमाराणं णिग्गच्छइ ॥

७०. तयणंतरं च णं नानामणिं * कणगरयणविमल-महरिह-निउण-ओविय-मिसि-मिसेतविरचियमहाभरण-कडग-तुडियवरभूसणुज्जलं पीवरं पलंबं वामं भुयं पसारति ।

तओ णं सरिसियाणं सरित्तयाणं सरिब्बतीणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोव्वेयाणं एगाभरण-वसणगहियणिज्जोईणं दुहओ संवेल्लियग्गणियत्थीणं आविद्धतिलयामेलाणं पिणद्धगेव्वेज्जकंचुईणं नानामणि-कणग-रयण-भूसण-विराड्यंगमंगीणं चंदाणणाणं चंदद्ध-समनिलाडाणं चंदाहियसोमदंसणाणं उक्का इव उज्जोवेमाणीणं सिंगारागारचारुवेसाणं संगयागय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलासललिय-संलावनिउणजुतोवयारकुसलाणं गहिया-उज्जाणं अट्टसयं नट्टसज्जाणं देवकुमारीणं णिग्गच्छइ ॥

७१. तए णं से सूरियाभे देवे 'अट्टसयं संखाणं विउव्वइ, अट्टसयं संखवायाणं विउव्वइ, अट्टसयं सिंगाणं विउव्वइ, अट्टसयं सिगवायाणं विउव्वइ, अट्टसयं संखियाणं विउव्वइ, अट्टसयं संखियवायाणं विउव्वइ', अट्टसयं खरमुहीणं विउव्वइ, अट्टसयं खरमुहिवायाणं विउव्वइ, अट्टसयं पेयाणं विउव्वइ, अट्टसयं पेयावायगाणं विउव्वइ, अट्टसयं पिरिपरियाणं विउव्वइ, अट्टसयं पिरिपरियावायगाणं विउव्वइ, एवमाइयाइं' एगूणपण्णं आउज्जविहाणाइं विउव्वइ, विउव्वित्ता तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयाओ य सहावेति ॥

७२. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सूरियाभेणं देवेणं सहाविया समाणा हट्ठं * तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण-हियया जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं * दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं कायव्वं ॥

७३. तए णं से सूरियाभे देवे ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेह,

१. × (वृ) ।

२. तयाणंतरं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—नानामणि जाव पीवरं ।

४. सरिसयाणं (क, ख, ग, वृ) ।

५. 'मेलानं (छ) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च) ।

७. × (ख, ग, घ) ।

८. परिपरियाणं (च, छ) ।

९. अतः परं वृत्तौ अन्येषां आतोद्यानां नामान्यपि उल्लिखितानि सन्ति द्रष्टव्यानि वृत्तिपत्राणि १२६-१२८ । ७७ सूत्रे शेषातोद्यानां नामानि साक्षाल्लिखितानि सन्ति ।

१०. एवमातियाणं (क, ख, ग, घ, छ); एवमातियाणि (च) ।

११. सं० पा०—हट्ठ जाव जेणेव ।

१२. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता ।

करेत्ता वंदह नमंसह, वंदित्ता नमंसित्ता गोयमाइयाणं^१ समणाणं निगंथाणं तं दिव्वं देविडिहं दिव्वं देवजुति दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं वत्तीसइवद्धं^२ णट्टविहि उवदंसेह, उवदंसित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

७४. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठं^३ *तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं^४ पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं^५ *तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेत्ति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता^६ नमंसित्ता जेणेव गोयमादिया समणा निगंथा तेणेव निगच्छंति ॥

७५. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करेत्ति, करेत्ता समामेव पंतीओ बंधंति, बंधित्ता समामेव ओणमंति, ओणमित्ता समामेव उण्णमंति^७, उण्णमित्ता एवं सहियामेव ओणमंति, ओणमित्ता सहियामेव उण्णमंति, उण्णमित्ता संगयामेव^८ ओणमंति, ओणमित्ता संगयामेव उण्णमंति, उण्णमित्ता थिमियामेव^९ ओणमंति, ओणमित्ता थिमियामेव उण्णमंति, उण्णमित्ता समामेव पसरंति, समामेव आउज्जविहाणाइं गेण्हंति, गेण्हित्ता समामेव पवाएसु समामेव पगाइंसु समामेव पणच्चिंसु ॥

७६. किं ते ? उरेण मंदं, सिरेण तारं, कंठेण वितारं, तिविहं तिसमयं^{१०}-रेयग-रइयं गुंजावंककुहरोवगूढं^{११} रत्तं तिट्ठाणकरणसुद्धं सकुहरगुंजंतं^{१२}-वंस-तंती-तल-ताल-लय-गहसुसंप-उत्तं महुरं समं सललियं मणोहरं मउरिभियपयसंचारं सुरइं सुणंति वरचारुरूवं दिव्वं णट्टसज्जं गेयं पगीया^{१३} वि होत्था ॥

७७. 'किं ते'^{१४} ? उद्धमंताणं—संखाणं सिगाणं संख्याणं खरमुहीणं पेयाणं पिरिपिरियाणं, आहम्मंताणं—पणवाणं पडहाणं, अप्फालिज्जमाणाणं—भंभाणं होरंभाणं, तालिज्जंतीणं—भेरीणं झल्लरीणं दुंदुहीणं, आलवंताणं^{१५}—मुरयाणं^{१६} मुइंगाणं नंदीमुइंगाणं, उत्तालिज्जंताणं—आलिगाणं कुतुंवाणं गोमुहीणं मद्दलाणं^{१७}, मुच्छिज्जंताणं—वीणाणं विपंचीणं वल्लकीणं, कुट्टिज्जंतीणं—महंतीणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं, सारिज्जंताणं—बद्धीसाणं सुधोसाणं नदिघोसाणं, फुट्टिज्जंतीणं^{१८}—भामरीणं छभामरीणं^{१९} परिवायणीणं, छिप्पंताणं—

१. गोयमातियाणं (च) ।

१०. सकुहरकुजंतं (क, ख, ग, च) ।

२. द्वात्रिंशद्विधम् (वृ) ।

११. गीया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—हट्ठ जाव करयल जाव पडिसुणंति ।

१२. किं च ते देवकुमारा देवकुमारिकाश्च प्रगीतवन्त

४. सं० पा०—महावीरं जाव नमंसित्ता ।

प्रनतितवन्तश्च ? (वृ) ।

५. उब्भमंति (क, ख, ग) ।

१३. आलिपंताणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. थिमियमेव (क, घ, च); थिमियामेव (छ) ।

१४. मुरयवराणं (क, छ); मुरजवराणं (घ) ।

७. संगयामेव (क, घ, च) ।

१५. महीलीणं मद्दलाणं (घ) ।

८. तिसम (क, ख, ग, घ, च) ।

१६. स्पन्दनम् (वृ) ।

९. कुंजावंकं (क) । गुंजा + अवंकं = गुंजावंकं ।

१७. उब्भामरीणं (क, ख, ग) ।

तूणाणं तुंबवीणाणं, आमोडिज्जंताणं—आमोटाणं^१ झंझाणं^२ नउलाणं, अच्चिज्जंतीणं—
मुगुदाणं हुडुक्कीणं विचिक्कीणं, वाइज्जंताणं—करडाणं डिडिमाण किणियाणं^३ कडंबाणं^४,
ताडिज्जंताणं—दहरगाणं दहरिगाणं कुतुंबराणं^५ कलसियाणं मड्डयाणं^६ आताडिज्जंताणं^७—
तलाणं तालाणं कंसतालाणं, घट्टिज्जंताणं—रिमिसियाणं^८ लत्तियाणं मगरियाणं सुंसुमारि-
याणं, फूमिज्जंताणं—वंसाणं^९ वेलूणं वालीणं परिलीणं बद्धगाणं^{१०} ॥

७८. तए णं से दिव्वे गीए 'दिव्वे नट्टे दिव्वे वाइए'^{११}, 'अब्भुए गीए अब्भुए नट्टे
अब्भुए वाइए, सिंगारे गीए सिंगारे नट्टे सिंगारे वाइए, उराले गीए उराले नट्टे उराले
वाइए, मणुण्णे गीए मणुण्णे नट्टे मणुण्णे वाइए^{१२}, 'मणहरे गीए मणहरे नट्टे'^{१३} मणहरे
वाइए, उप्पिजलभूते कहकहभूते^{१४} दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

७९. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स
सोत्थिय-सिरिवच्छ-नदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पण-मंगलभत्तिचित्तं णामं
दिव्वं नट्टविधिं उवदंसंति ॥

८०. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करंति, करेत्ता
तं चेव भाणियव्वं जाव^{१५} दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

८१. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स
आवड-पच्चावड-सेडि-पसेडि-सोत्थिय-सोवत्थिय^{१६}-पूसमाणव^{१७}-वद्धमाणग-मच्छंडा-मगरंडा-
जारा-मारा^{१८}-फुल्लावलि-पउमपत्त-सागरतरंग-वसंतलता^{१९}-पउमलयभत्तिचित्तं णामं दिव्वं
णट्टविहिं उवदंसंति ॥

८२. एवं च एक्किक्कियाए णट्टविहीए समोसरणादिया एसा वत्तव्वया जाव^{२०} दिव्वे
देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

८३. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स

१. आमोटाणं (क, च, छ) ।	१२. सं० पा०—एवं अब्भुए सिंगारे उराले मणुन्ते ।
२. कुंभाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	१३. मणहरे नट्टे मणहरे गीते (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
३. किरियाणं (क, ख, ग, घ) ।	१४. 'कहा' (क, ख, ग, घ, च, छ); 'कहण' (घ) ।
४. करंबाणं (क) ।	१५. राय० सू० ७५-७८ ।
५. कुतुंबाणं (क, ख, ग, घ, च, छ); एतत्पदं वृत्त्याधारेण स्वीकृतम् । वृत्तेः १२७ पृष्ठेपि 'कुस्तुम्बराणाम्' इति पदं दृश्यते ।	१६. + (च, छ) ।
६. मड्डयाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	१७. पूसमाणग (क, ख, ग, घ, छ); पूसमाण (घ) ।
७. आवडिज्जंताणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	१८. मच्छंडग-मगरंडग-जार-मारा (छ) ।
८. गिरिसियाएणं (क); गिरिसियाणं (ख, ग, घ, च, छ) ।	१९. चतुर्विंशतितमे सूत्रे 'लय' शब्दो विद्यते अत्र तु 'लता' ।
९. कुमिवंसाणं (क) ।	२०. राय० सू० ७५-७८ ।
१०. पव्वगाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	
११. दिव्वे वाइए दिव्वे नट्टे (वृ) ।	

ईहामिअ-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग - वालग-किन्नर-रुह - सरभ-चमर - कुंजर- वणलय-
पउमलयभत्तिचित्तं णामं दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

८४. एगओवकं, 'एगओखहं दुहओखहं', 'एगओचक्कवालं दुहओचक्कवालं चक्कद्ध-
चक्कवालं' णामं दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

८५. चंदावलिपविभत्ति च^१ सूरवलिपविभत्ति च वलयावलिपविभत्ति^२ च हंसावलिप-
विभत्ति च एगावलिपविभत्ति च तारावलिपविभत्ति च 'मुत्तावलिपविभत्ति च कणगाव-
लिपविभत्ति च'^३ रयणावलिपविभत्ति च 'आवलिपविभत्ति च'^४ णामं दिव्वं णट्टविहि उवदं-
सेति ॥

८६. चंदुग्गमणपविभत्ति च सूरुग्गमणपविभत्ति च उग्गमणुग्गमणपविभत्तिं च णामं
दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

८७. चंदागमणपविभत्ति च सूरुगमणपविभत्तिं च आगमणागमणपविभत्तिं च णामं
दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

८८. चंदावरणपविभत्ति च सूरुवरणपविभत्तिं च आवरणावरणपविभत्तिं च णामं
दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

८९. चंदत्थमणपविभत्ति च सूरत्थमणपविभत्तिं च अत्थमणत्थमणपविभत्तिं च णामं
दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

९०. चंदमंडलपविभत्तिं च सूरमंडलपविभत्तिं च नागमंडलपविभत्तिं च जक्खमंडल-
पविभत्तिं च भूतमंडलपविभत्तिं च 'रक्खस-महोरग-गंधव्वमंडलपविभत्तिं च'^५ मंडलपवि-
भत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

९१. 'उसभमंडलपविभत्तिं च सीहुमंडलपविभत्तिं च'^६, ह्यविलंबियं गयविलंबियं,
'ह्यविलसियं गयविलसियं'^७, मत्तह्यविलसियं मत्तगयविलसियं, 'मत्तह्यविलंबियं मत्तगय-
विलंबियं'^८ दुयविलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

९२. सागरपविभत्तिं^९ च नागरपविभत्तिं च सागर-नागरपविभत्तिं च णामं दिव्वं
णट्टविहि उवदंसेति ॥

९३. नंदापविभत्तिं च चंपापविभत्तिं च नंदा-चंपापविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहि

१. × (ख, ग, वृ) ।

२. चक्कदुचक्कवालं (क, घ) ।

३. वा (घ) ।

४. वलियावलि° (क, ख, ग) ।

५. कणगावलिपविभत्तिं च मुत्तावलिपविभत्तिं च
(घ) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । आदर्शेषु एतेषां
नाट्यविधीनां पाठः सर्वत्र एकरूपो नास्ति ।
क्वचित् नाट्यविशेषभौतिकं नाम लिखितमुप-
लभ्यते, यथा—उग्गमणुग्गमणपविभत्तिं आगम-

णागमणपविभत्तिं, क्वचिद् एतद् नास्ति । अत्र

जीवाजीवाभिगमवृत्ति (पत्र २४६) रपि द्रष्टव्या

७. णट्टविहं (घ, च, छ) ।

८. × (वृ) ।

९. उसभल्लियविककंतं सीहुल्लियविककंतं (क, ख,
ग, घ, च, छ) ।

१०. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. सगडुद्धियपविभत्तिं च सागडुद्धियं (क, ख, ग, घ,
च, छ) ।

उवदंसेति ॥

१४. मच्छंडापविभक्तिं च मयरंडापविभक्तिं च 'जारापविभक्तिं च मारापविभक्तिं च' मच्छंडा-मयरंडा-जारा-मारापविभक्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१५. 'क' ति ककारपविभक्तिं च 'ख' ति खकारपविभक्तिं च 'ग' ति गकारपविभक्तिं च 'घ' ति घकारपविभक्तिं च 'ङ' ति ङकारपविभक्तिं च ककार-खकार-गकार-घकार-ङकार-पविभक्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१६. एवं—चकारवग्गो वि ॥

१७. टकारवग्गो वि ॥

१८. 'तकारवग्गो वि ॥

१९. पकारवग्गो वि' ॥

१००. असोयपल्लवपविभक्तिं च अंबपल्लवपविभक्तिं च जंबूपल्लवपविभक्तिं च कोसं-
वपल्लवपविभक्तिं च पल्लवपविभक्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०१. पउमलयापविभक्तिं* च नागलयापविभक्तिं च असोगलयापविभक्तिं च चंपग-
लयापविभक्तिं च चूयलयापविभक्तिं च वणलयापविभक्तिं च वासंतियलयापविभक्तिं च अइ-
मुत्तयलयापविभक्तिं च कुंदलयापविभक्तिं च° सामलयापविभक्तिं च लयापविभक्तिं च णामं
दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०२. दुयं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०३. विलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०४. दुयविलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०५. अंचियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०६. रिभियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०७. अंचियरिभियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०८. आरभडं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०९. भसोलं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

११०. आरभडभसोलं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१११. उप्पायनिवायपवत्तं^१ संकुचिय-पसारियं^२ रियारियं^३ भंतसंभंतं णामं दिव्वं
णट्टविहिं उवदंसेति ॥

११२. तए णं ते वहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करेति
जाव^४ दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

१. जारपविभक्तिं च मारपविभक्तिं च (छ) ।

२. तवग्गो वि पवग्गो वि (क, ख, ग, घ, छ) ।

३. पल्लव २ पविभक्तिं च (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—पउमलयापविभक्तिं जाव सामलया-
पविभक्तिं ।

५. लया २ पविभक्तिं (घ) ।

६. उप्पायनिवायपवत्तं (क, ख, ग, घ, च) ;
उप्पायनिवायपविभक्तं (छ) ; अयं पाठो वृत्त्य-
नुसारी स्वीकृतः ।

७. रयारइयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ; रेवका-
रचितं (वृ) ।

८. राय० सु० ७१-७८ ।

११३. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स 'चरमपुव्वभवणनिबद्धं च चरमचवणनिबद्धं च चरमसाहरणनिबद्धं च चरमजम्मणनिबद्धं च चरमअभिसेअनिबद्धं च चरमबालभावनिबद्धं च चरमजोव्वणनिबद्धं च चरमकामभोगनिबद्धं च चरमनिक्खमणनिबद्धं च चरमतवचरणनिबद्धं च चरमणाणुप्पायनिबद्धं च चरमतिथपवत्तणनिबद्धं च चरमपरिनिव्वाणनिबद्धं च चरमनिबद्धं च" णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

११४. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य चउव्विहं बाइत्तं वाएंति, तं जहा—ततं विततं घणं सुसिरं ॥

११५. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारियाओ च चउव्विहं गेयं गायंति, तं जहा—'उक्खित्तं पायंतं मंदायं रोइयावसाणं च" ॥

१. पुव्वभवचरियनिबद्धं च देवलोयचरियणिबद्धं च चवणचरियणिबद्धं च साहरणचरियणिबद्धं च जम्मणचरियणिबद्धं च अभिसेअचरियनिबद्धं च बालभावचरियनिबद्धं च कामभोगचरियनिबद्धं च तवचरणचरियनिबद्धं च तिथपवत्तणचरियनिबद्धं च परिनिव्वाणचरियनिबद्धं च चरिमचरियनिबद्धं च (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. भूसिरं (जी० ३।४४७) ।

३. रायपसेणइय (सू० ११५) रायपसेणइय (सू० २८१) स्थानाङ्ग (४।६३४) जीवाजीवाभिगम (३।४४७)

उक्खित्तं	उक्खितायं	उक्खित्तए	उक्खित्तं
पायंतं	पायंतायं	पत्तए	पवत्तं
मंदायं	मंदायं	मंदए	मंदायं
रोइयावसाणं	रोइयावसाणं	रोविदए	रोइयावसाणं

रायपसेणइय (सू० ११५) वृत्ति :—'उत्क्षिप्तं' प्रथमतः समारभ्यमाणम् पादान्तम्—पादवृद्धम् वृद्धादि-चतुर्मागिरूपपादवृद्धम् इति भावः । मध्यभागे मूर्छनादिगुणोपेततया मन्दं मन्दं धोलनात्मकम् रोचितावसानम् इति—रोचितं यथोचितलक्षणोपेततया भावितम्—सत्यापितम् इति यावत् अवसानं यस्य तद् रोचितावसानम् (वृत्ति, पृ० १४४, १४५) ।

रायपसेणइय सू० २८१ । अत्र वृत्तिकृता नास्ति किञ्चिद् व्याख्यातम् स्थानाङ्ग (४।६३४) वृत्तिकारेण लिखितमत्र—नाट्यगेयाभिनयसूत्राणि सम्प्रदायाभावान्न विवृतानि (वृत्ति, पत्र २७२) ।

जीवाजीवाभिगम (३।४४७) । वृत्ति :—'उत्क्षिप्तं' प्रथमतः समारभ्यमाणम् 'प्रवृत्तम्' उत्क्षेपावस्थातो विक्रान्तं मनाग्भरेण प्रवर्तमानं मन्दायमिति—मध्यभागे मूर्छनादि गुणोपेततया मन्दं मन्दं धोलनात्मकं 'रोचितावसानं' मिति रोचितं—यथोचितलक्षणोपेततया भावितं सत्यापितमिति यावत् अवसानं यस्य तद् रोचितावसानम् (वृत्ति, पत्र २४७) ।

रायपसेणइयसूत्रे द्विवारं गेयस्य उल्लेखोस्ति, तत्र द्वितीयवारे प्रथमवर्तिनो द्वयोः शब्दयोः स्वार्थिकः क प्रत्ययः कृतोस्ति तेन 'उक्खित्तायं, पायंतायं' पाठो जातः । यद्यपि आदर्शेषु 'पायंतायं' पाठो दृश्यते किन्तु लिपि दोषाद् एवं जातः प्रतीयते । तेन अस्माभिर्मूले 'पायंतायं' पाठः स्वीकृतः ।

जीवाजीवाभिगमे त्रयः शब्दाः रायपसेणइयशब्देभ्यस्तुल्या वर्तन्ते केवलं द्वितीयशब्दो भिन्नोस्ति । स्थानाङ्गे 'पत्तए, रोविदए' द्वौ शब्दौ भिन्नौ वर्तन्ते । असौ वाचनाभेदोस्ति अथवा लिपिदोषेण परिवर्तनं जातमिति न निश्चेतुं शक्यते ।

११६. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं णट्टविहिं उवदंसेति, तं जहा—अचियं रिभियं आरभडं भसोलं च ॥

११७. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं अभिणयं' अभिणेति, तं जहा—'दिट्ठतियं पाडंतियं' सामन्नओविणिवाइयं' लोगमज्झावसाणियं' च' ॥

११८. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य गोयमादियाणं समणाणं निगंथाणं दिव्वं देविडिडि दिव्वं देवजुति दिव्वं देवाणुभावं' दिव्वं वत्तीसइबद्धं' नट्टविहिं उवदंसित्ता समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अजालिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एयमाणत्तियं' पच्चप्पिणंति ॥

११९. तए णं से सूरियाभे देवे तं दिव्वं देविडिडि दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरइ, पडिसाहरेत्ता खणेणं जाते एगे एगभूए ।

१२०. तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता नियगपरिवालसद्धिं संपरिवुडे तमेव दिव्वं जाण-विमाणं दुरुहति, दुरुहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

१. णट्टं अभिणयं (क, ख, ग, घ, च) ।

२. पाडियंतियं (क, घ); पाडियं (ख, ग, च, छ); २८१ सूत्रेपि सर्वप्रतिष 'पाडंतियं' पाठो विद्यते ।

३. सामंतोवणिवाइयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. अंतोमज्झावसाणियं (क, ख, ग, घ); २८१ सूत्रे एतत्तुल्यप्रकरणे सर्वासु प्रतिषु 'लोगमज्झावसाणियं' इति पाठोस्ति तथा जीवाजीवाभिगमे (३।४४७) पि एष पाठो लभ्यते ।

५. रायपसेणइय (सू० ११७, २८१)	स्थानांग (४।६३७)	जीवाजीवाभिगम (३।४४७)
दिट्ठंतियं	दिट्ठंतिते	दिट्ठंतियं
पाडंतियं	पाडिसुते	पाडिसुयं
सामन्नओविणिवाइयं	सामन्नओविणिवाइयं	सामन्नतोविणिवातियं
लोगमज्झावसाणियं	लोगमज्झावसिते	लोगमज्झावसाणियं

स्थानाङ्गवृत्तौ नास्ति व्याख्यातोसौ पाठः ।

रायपसेणइयसूत्रे प्रथमवारमसौ व्याख्यातोस्ति—'दाष्टान्तिकम् प्रात्यन्तिकम् सामान्यतोविनिपातम् लोकमध्यावसानिकम् ।' (वृत्ति, पृ० १४५) । वृत्त्यनुसारेणात्र 'सामन्नओविणिवातं' पाठो गुज्यते । जीवाजीवाभिगमवृत्तावपि 'सामान्यतोविनिपातिकम्' इति व्याख्यातमस्ति । आदर्शेषु 'सामंतोवणिवाइयं' जातम् । सम्भवतः 'सामन्नओ' स्थाने 'सामन्नो' जातः अस्यैव 'सामन्नो' रूपे परिवर्तनं जातमिति प्रतीयते । स्थानांगे 'पडिसुते' पाठस्तथा जीवाजीवाभिगमवृत्तौ 'प्रतिश्रुतिकम्' इति व्याख्यातोस्ति पाठः । एतौ द्वावपि 'रायपसेणइयसूत्रस्य' 'पाडंतियं' शब्दाद् वाचनाभेदं गच्छतः ।

६. देवाणुभावं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. वत्तीसइनिबद्धं (क, ख, च, छ) ।

८. एवमाणत्तियं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

कूडागारसाला-दिट्ठंत-पदं

१२१. 'भंतेति' ! भयवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी'^१—

१२२. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स एसा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे कहिं गते कहिं अणुप्पविट्ठे ? गोयमा ! सरीरं गए सरीरं अणुप्पविट्ठे ॥

१२३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सरीरं गए सरीरं अणुप्पविट्ठे ? गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहतो लिक्का गुत्ता गुत्तद्वारा णिवाया णिवायगंभीरा । तीसे णं कूडागारसालाए अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे 'जणसमूहे एगं' महं अब्भवद्दलं वा वासवद्दलं वा महावायं वा एज्जमाणं^४ पासति, पासित्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुप्पविसित्तानं चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—सरीरं गए, सरीरं अणुप्पविट्ठे ॥

सूरियाभ-विमाण-पदं

१२४. 'कहिं णं'^५ भंते ! सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे नामं विमाणे पणत्ते ? गोयमा ! जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं पुरओ^६ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं 'बहुईओ जोयणकोडीओ बहुईओ जोयणकोडाकोडीओ'^७ उड्ढं दूरं वीतीवइत्ता, एत्थ णं सोहम्मे नामं

१. भंतेति (क, ख, ग) ।

२. पुस्तकान्तरे तु इदं वाचनान्तरं दृश्यते—'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जिट्ठे अन्तेवासी' इत्यादि—'इदंभूई नामं अणगारे गोयमसगोत्ते सत्तुस्सेहे समचउरंसंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे महातवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविपुलतेयलेस्से चउदसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाई समणस्स भगवतो महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे भाणकोट्टोवगए संजमेण तथसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले, उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले, समुप्पणसड्ढे समुप्पणसंसए समुप्पणकोउहल्ले, उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवंतं महावीरं तिवस्सुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, तिवस्सुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी'—(वृ) ।

३. जणसमूहे चिट्ठति, तए णं से जणसमूहे एगं (च, छ); जनसमूहः तिष्ठति, स च एकं (वृ) ।

४. एज्जमाणं वा (क, ख, ग, घ) ।

५. कहणं (क); कहणं (ख, ग, च, छ); कहं णं (घ) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च) ।

७. बहुगीतो जोयणसहस्सातो बहुगीतो जोयणकोडाकोडीतो बहुगीतो जोयणसहस्सकोडीओ (क, ख, ग, च); बहुगीतो जोयणकोडीतो बहुगीतो जोयणकोडाकोडीतो बहुगीतो जोयणसहस्सकोडीतो (घ) ।

कप्पे पण्णत्ते—पाईणपडीणायते उदीणदाहिणवित्थिण्णे अद्धचंदसंठाणसंठिते अच्चिमालि-
भासरासिवण्णाम्भे, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविकखंभेणं, असंखेज्जाओ
जोयणकोडाकोडीओ परिकखेवेणं, 'सव्वरयणामए अच्छे सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे णीरए
निम्मले तिप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समरीइए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे
पडिरूवे', एत्थं णं सोहम्माणं देवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्साइं भवन्ति इति
मक्खायं' । ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१२५. तेसि णं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा—असोग-
वडेंसए सत्तवण्णवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे सोधम्मवडेंसए ते णं वडेंसगा
सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१२६. तस्स णं सोधम्मवडेंसगस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमेणं तिरियं असंखेज्जाइं
जोयणसयसहस्साइं वीईवइत्ता, एत्थं णं सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे विमाणे पण्णत्ते—
अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयामविकखंभेणं, गुणयालीसं च सयसहस्साइं वावन्नं च
सहस्साइं अट्ठ य अडयाले जोयणसते परिकखेवेणं, [सव्वरयणामए अच्छे जाव
पडिरूवे ?] ॥

० पागार-पदं

१२७. से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिकखित्ते । से णं पागारे तिण्णि
जोयणसयाइं उड्डं उच्चत्तेणं, मूले एगं जोयणसयं विकखंभेणं, मज्झे पन्नासं जोयणाइं
विकखंभेणं, उप्पि पणवीसं जोयणाइं विकखंभेणं । मूले वित्थिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पि तणुए,
गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

० कविसीस-पदं

१२८. से णं पागारे णाणाविहपंचवण्णेहि कविसीसएहि उवसोभिए, तं जहा—
किण्हेहि नीलेहि लोहितेहि हालिहेहि सुक्किलेहि कविसीसएहि । ते णं कविसीसगा एगं
जोयणं आयामेणं, अद्धजोयणं विकखंभेणं, देसूणं जोयणं उड्डं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामया
अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१. प्रतिषु एष पाठो नास्ति । वृत्तिगतस्य
'सर्वात्मना रत्नमयः यावत् करणात् अच्छे
सण्हे घट्ठे' इति पाठस्यानुसारेण स्वीकृतोयं
पाठः ।

२. तत्र (वृ) ।

३. विमाणवासं (क, ख, ग, छ) ।

४. मक्खाया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. सहिवण्णं (क, ख, ग) ।

६. रायं सू० २१ ।

७. वीतीवइज्जा (क, ख, ग, घ) ।

८. ऊयालीसं (क, ख, ग, घ) ।

९. कोष्ठकवर्ती पाठः प्रतिषु नोपलभ्यते, किन्तु
१२४ सूत्रक्रमेण अत्रासौ युज्यते । संक्षिप्त-
पद्धत्यनुसारेण लिपिकारैर्न लिखित इत्यनु-
मीयते ।

१०. पणवीसं (घ) ।

११. सव्वकणगामए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. रायं सू० २३ ।

१३. णाणामणिपंचवण्णेहि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१४. सव्वमणिया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१५. रायं सू० २१ ।

० द्वार-पदं

१२६. सूरियाभस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए दारसहस्सं-दारसहस्सं भवतीति मक्खायं । ते णं दारा पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खं-भेणं, तावइयं चैव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुह-सरभ-चमर-कुंजर - वणलय - पउमलयभत्तिचित्ता खंभुगय - वइरवेइया-परिगयाभिरामा विज्जाहर-जमल-जुयल-जंतजुत्ता पिव अच्चीसहस्समालणीया^१ रुवग-सहस्सकलिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा ॥

१३०. वण्णो दाराणं तेसिं होइ, तं जहा—वइरामया णिम्मा, रिट्ठामया पइट्ठाणा, वेरुलियमया खंभा, जायरूवोवचिय - पवरपंचवण्णमणिरयणकोट्टिमत्तला, हंसगभमया^२ एलुया, गोमेज्जमया इंदकीला, लोहियक्खमईओ दारचेडाओ, जोईरसमया उत्तरंगा,^३ लोहियक्खमईओ सूईओ, वइरामया संधी, नाणामणिमया समुग्गया, वइरामया अग्गला अग्गलपासाया, रययामईओ^४ आवत्तणपेढियाओ, अंकुत्तरपासगा, निरंतरियघणकवाडा, भित्तीसु चैव भित्तिगुलिया छप्पन्ना तिण्णि होति, गोमाणसिया तत्तिया, णाणामणिरयण-वालरूवग^५-लीलट्ठियसालभंजियागा, वइरामया कूडा, रययामया^६ उस्सेहा, सब्बतवणिज्जमया उत्तलोया, णाणामणिरयणजालपंजर-मणिवंसग^७-लोहियक्ख-पडिवंसग^८-रययभोमा^९, अंका-मया पक्खा पक्खबाहाओ, जोईरसमया^{१०} वंसा वंसकवेल्लुयाओ^{११}, रययामईओ पट्टियाओ, जायरूवमईओ ओहाडणीओ, वइरामईओ उवरिपुंछणीओ, सब्बसेयरययामए छायेण, अंकमय-कणगकूडतवणिज्जथूभियागा, सेया 'संखतल-विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीरफेण-रययणिगरप्पगासा, तिलग-रयणद्धचंदचित्ता'^{१२}, नाणामणिदामालंक्रिया, अंतो बहिं च सण्हा, तवणिज्ज-वालुया-पत्थडा, सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

० वंदणकलस-पदं

१३१. तेसिं णं दाराणं उभओ पासे^१ दुहओ निसीहियाए सोलस-सोलस वंदणकलस-परिवाडीओ पण्णत्ताओ । ते णं वंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा

१. 'मालिणीया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

पाठः ।

२. 'गया (क, ख, ग, घ, च) ।

७. 'वंस (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।३००)

८. 'वंस (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

वेरुलियामया कवाडा^२ इति पाठो विद्यते ।

९. 'भोम्मा (क, ख, ग, घ) ।

४. वइरामई (जी० ३।३००); आह च जीवा-भिगममूलटीकाकारः—'अग्गलापासादा यत्रा-ग्गला नियम्यते' इति । एतौ द्वौ अपि वज्जरत्त-मयो (वृ) ।

१०. 'रसा' (क, ख, ग, छ) ।

११. 'कवेडयातो (छ) ।

१२. संखतल - विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीरफेण-रययनियर-प्पगासद्धचंदचित्ताइं (वृपा); 'इत्ता

५. वालगरूवग (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

(क, ख, ग, घ, च) ।

६. रययामय (क, ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवा-भिगमस्य (३।३००) अनुसारेण स्वीकृतोयं

१३. पासा (क, ख, ग, घ, छ) ।

चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिधाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव^१ पडिरूवा^२ महया-महया मंहिदकुंभसमाणा^३ पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

० नागदंत-पदं

१३२. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस नागदंतपरि-
वाडीओ पण्णत्ताओ । ते णं नागदंता मुत्ताजालंतरुसियहेमजाल-‘गवक्खजाल-खिखिणीघंटा-
जालपरिक्खत्ता’^४ अब्भुग्गया अभिणिसिद्धा तिरियं सुसंपग्गहिया^५ अहेपन्नगद्धरूवगा
पन्नगद्धसंठाणसंठिया सव्ववइरामया अच्छा जाव^६ पडिरूवा महया-महया गयदंतसमाणा
पण्णत्ता समणाउसो !

तेसु णं नागदंतएसु बह्वे किण्हसुत्तबद्धा वग्धारियमल्लदामकलावा नीलमुत्तबद्धा
वग्धारियमल्लदामकलावा लोहितमुत्तबद्धा वग्धारियमल्लदामकलावा हालिद्दसुत्तबद्धा
वग्धारियमल्लदामकलावा सुक्किलमुत्तबद्धा वग्धारियमल्लदामकलावा ।

ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरमंडियगा^७ नाणामणिरयण-विविहहारद्धहार
उवसोभियसमुदया^८ *ईसि अण्णमण्णमसंपत्ता पुब्बावरदाहिणुत्तरागएहि वाएहि मंदायं-
मंदायं एज्जमाणा-एज्जमाणा पलंबमाणा-पलंबमाणा पझंझमाणा-पझंझमाणा उरालेणं
मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमण्णिव्वुत्तिकरेणं सट्ठेणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा-
आपूरेमाणा^९ सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

तेसि णं नागदंताणं उवर्रि अण्णाओ सोलस-सोलस नागदंतपरिवाडीओ पण्णत्ताओ ।
ते णं नागदंता^{१०} *मुत्ताजालंतरुसियहेमजाल - गवक्खजाल - खिखिणीघंटाजालपरिक्खत्ता
अब्वुग्गया अभिणिसिद्धा तिरियं सुसंपग्गहिया अहेपन्नगद्धरूवा पन्नगद्धसंठाणसंठिया सव्व-
वइरामया अच्छा जाव पडिरूवा महया-महया^{११} गयदंतसमाणा पण्णत्ता समणाउसो !

तेसु णं नागदंतएसु बह्वे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता । तेसु णं रययामएसु
सिक्कएसु बह्वे वेरुलियामईओ धूवघडीओ पण्णत्ताओ । ताओ णं धूवघडीओ कालागरु-
पवरकुंदुरुक्कतुरुक्क-धूव-मघमघेतसंधुद्धयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्ठिभूयाओ
ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं घाणमण्णिव्वुत्तिकरेणं गंधेणं ते पदेसे सव्वओ समंता
आपूरेमाणा-आपूरेमाणा^{१२} *सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा^{१३} चिट्ठंति ॥

० सालभंजिया-पदं

१३३. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस सालभंजिया-

१. राय० सू० २१ ।

२. पडिरूवगा (वृ) ।

३. इवकुंभसमाणा (क. ख, ग, घ, च, छ);
जीवाजीवाभिगमे (३।३०१) पि ‘मंहिदकुंभ-
समाणा’ इति पाठो विद्यते ।

४. ‘जाला-खिखिणीजाल’ (क, ख, ग, घ, च,
छ) ।

५. सुसंपग्गहिया (वृ) ।

६. राय० सू० २१ ।

७. ‘मण्डितानि (वृ) : ‘पतरगमंडिता (जी०
३।३०२); प्रस्तुतागमस्य चत्वारिंशत्तमे सूत्रे
‘पयरमंडियागा’ इति पाठो विद्यते ।

८. सं० पा०—‘समुदया जाव सिरीए ।

९. सं० पा०—नागदंता तं चेव गयदंतसमाणा ।

१०. सं० पा०—आपूरेमाणा जाव चिट्ठंति ।

परिवाडीओ पण्णत्ताओ । ताओ णं सालभजियाओ लीलट्टियाओ सुपइट्टियाओ सुअलं-
कियाओ^१ णाणाविहरावसणाओ णाणामल्लपिण्णद्धाओ मुट्ठिगेज्जसुमज्झाओ आमेलग-जमल-
जुयल-वट्ठिय-अब्भुण्णय-पीण-रइय-संठियपओहराओ^२ रत्तावंगाओ असियकेसीओ मिउ-
विसय-पसत्थ-लक्खण-संवेल्लियग्गसिरयाओ ईसि असोगवरपायवसमुट्टियाओ वामहत्थग्ग-
हियग्गसालाओ ईसि अद्धच्छिकडक्खच्चिट्ठितेहि^३ लूसमाणीओ^४ विव, चक्खुल्लोयणलेसेहि^५
अण्णमण्णं खिज्जमाणीओ विव, पुढविपरिणामाओ सासयभावमुवगयाओ चंदाणणाओ
चंदविलासिणीओ चंदद्वसमणिडालाओ चंदाहियसोमदंसणाओ उक्का विव उज्जोवेमाणाओ
विज्जु-घण-मिरिय-सूर-दिप्पंत-तेय-अहिययर-सन्निकासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ पासाई-
याओ^६ *दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ तेयसा अतीव-अतीव उवसोभेमाणीओ-
उवसोभेमाणीओ^७ चिट्ठंति ॥

० जालकडग-पदं

१३४. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस 'जालकडगा
पण्णत्ताओ'^८ । ते णं जालकडगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० घंटा-पदं

१३५. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस घंटापरिवाडीओ
पण्णत्ताओ । तासि णं घंटाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तं जहा—जंबूणयामईओ घंटाओ.
वइरामईओ लालाओ, णाणामणिमया घंटापासा, तवणिज्जामईओ संकलाओ, रययामयाओ
रज्जूओ । ताओ णं घंटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ हंसस्सराओ कुंचस्सराओ सीहस्सराओ
दुंदुहिस्सराओ णंदिस्सराओ णंदिघोसाओ मंजुस्सराओ मंजुघोसाओ सुस्सराओ सुस्सर-
घोसाओ^९ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमणनिव्वुतिकरेणं सट्ठेणं ते पदेसे सब्बओ
समंता आपूरेमाणाओ-आपूरेमाणाओ^{१०} *सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणाओ-उवसोभे-
माणाओ^{११} चिट्ठंति ॥

० वणमाला-पदं

१३६. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस वणमाला-
परिवाडीओ पण्णत्ताओ । ताओ णं वणमालाओ णाणादुमलय-किसलय-पल्लव-समाउलाओ
छप्पयपरिभुज्जमाण-सोहंत-सस्सिरीयाओ पासाईयाओ^{१२} *दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

याम् ।

२. संठियपीवरपओहराओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. *माणाओ (घ) ।

५. *लेसातो (क, ख, ग, घ) ।

३. *कडक °(क, घ, च); *कडक्क °(ख, ग);
वृत्तिकारेण 'अर्ध' तिर्यग् वलितं इति व्याख्या-
तम् । जीवाजीवाभिगमस्य (पत्र २०७) वृत्तो
'अड्ड' तिर्यग् वलितं इति व्याख्यातमस्ति ।
अत्रापि 'अड्ड' इति पदं युक्तमस्ति । एतद्
देशीभाषा पदं विद्यते, 'आडो' इति भाषा-

६. सं० पा०—पासाईयाओ जाव चिट्ठंति ।

७. जालकडगपरिवाडीओ पण्णत्ताओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. *णिग्घोसाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. सं० पा०—आपूरेमाणाओ जाव चिट्ठंति ।

१०. सं० पा०—पासाईओ ।

पडिरूवाओ° ॥

० पगंठग-पदं

१३७. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस पगंठगा पण्णत्ता । ते णं पगंठगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, पणवीसं जोयणसयं बाहल्लेणं, सव्ववइरामया अच्छा जाव° पडिरूवा । तेसि णं पगंठगाणं उवरि पत्तेयं-पत्तेयं पासायवडेंसगा पण्णत्ता । तेणं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पणवीसं³ जोयणसयं विक्खंभेणं⁴, अम्भुगयमूसिय-पहसिया⁵ इव, विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धयविजयवैजयंतीपडाग-च्छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतर-रयणं⁶ पंजरुम्मिलियव्व मणिकणगधूभियागा वियसियसयवत्त-पोंडरीय⁷-तिलगरयणद्धचंद-चित्ता⁸ अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्ज-वालुयापत्थडा सुहफासा ससिसरीयरूवा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा जाव दामा⁹ ॥

० तोरण-पदं

१३८. तेसि णं दाराणं उभओ पासे [दुहओ णिसीहियाए° ?] सोलस-सोलस तोरणा पण्णत्ता—णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठसन्निविट्ठा जाव° पउमहत्थगा ॥

१३९. तेसि णं तोरणणं पुरओ° दो दो सालभंजियाओ° पण्णत्ताओ । जहा हेट्ठा तहेव° ॥

१४०. तेसि णं तोरणणं पुरओ नागदंतगा पण्णत्ता । जहा हेट्ठा जाव° दामा ॥

१४१. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो ह्यसंघाडा गयसंघाडा नरसंघाडा किन्नरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव° पडिरूवा° ॥

१. राय० सू० २१ ।

२. पणु° (च) ।

३. अत्र 'आयाम-विक्खंभेणं' इति पाठः अपेक्षितोऽस्ति । जीवाजीवाभिगमे (३।३०७) एतत्तुल्यप्रकरणे 'आयाम-विक्खंभेणं' इति पाठो विद्यते ।

४. पहासिया (छ, वृ) ।

५. सूत्रे चात्र विभक्तिलोपः प्राकृतत्वात् (वृ) ।

६. °रीया (क, ख, ग, घ) ।

७. अतोऽग्रे आदर्शेषु 'णाणामणिदामालंकिया' इति पाठो लभ्यते । वृत्तौ नास्ति व्याख्यातोऽसौ । जीवाजीवाभिगमवृत्तावपि (पत्र २०६) नास्ति व्याख्यातः । मुद्रितवृत्तौऽसौ केनापि प्रक्षिप्तः । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्वृत्तित्रयेऽसौ व्याख्यातो दृश्यते ।

८. °णिज्जा (क, ख, ग, घ, च) ।

९. जावदामा उवरि पगंठगाणं उभया छत्ताइच्छत्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) 'दामा' इति पाठः ग्रहणेन ३३-४० सूत्रस्य 'चिट्ठंति' पर्यन्तः पाठो ग्राह्यः ।

१०. उभयोः पार्श्वयोरेकैकनैषेधिकीभावेन या द्विधा नैषेधिकी तस्याम्—इति वृत्त्यनुसारेण कोष्ठकान्तर्गतः पाठो युज्यते ।

११. राय० सू० २०-२३ ।

१२. पुरतः प्रत्येकम् (वृ) ।

१३. सालि° (च छ) ।

१४. राय० सू० १३३ ।

१५. राय० सू० १३२ ।

१६. राय० सू० २१ ।

१७. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।३१८) संक्षिप्तपाठ एव स्वीकृतोऽस्ति ।

१४२. *तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो हयपंतीओ^१ ॥

१४३. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो हयवीहीओ^२ ॥

१४४. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो हयमिहुणाइं^३ ॥

१४५. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो पउमलयाओ^४ *दो दो नागलयाओ दो दो असोगलयाओ दो दो चंपगलयाओ दो दो चूयलयाओ दो दो वणलयाओ दो दो वासंतिय-लयाओ दो दो अइमुत्तयलयाओ दो दो कुंदलयाओ दो दो^५ सामलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ^६ *णिच्चं माइयाओ णिच्चं लवइयाओ णिच्चं थवइयाओ णिच्चं गुलइयाओ णिच्चं गोच्छि-याओ णिच्चं जमलियाओ णिच्चं जुवलियाओ णिच्चं विणमियाओ णिच्चं पणमियाओ [णिच्चं सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरीओ ?] णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरीओ^७ 'सव्वरयणामईओ अच्छाओ'^८ *सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णीरयाओ निम्मलाओ निप्पंकाओ निक्कंकडच्छायाओ सप्पभाओ समरीइयाओ सउज्जोयाओ पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ^९ पडिरूवाओ ॥

१४६. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो दिसासोवत्थिया^{१०} पणत्ता—सव्वरयणामया^{११} अच्छा पडिरूवा ॥

१४७. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो वंदणकलसा पणत्ता । ते णं वंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा^{१२} *सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पल-पिधाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा महया-महया महिंदकुंभसमाणा पणत्ता समणाउसो^{१३} ! ॥

१४८. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो भिगारा पणत्ता । ते णं भिगारा वरकमलपइ-ट्ठाणा^{१४} *सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिधाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा^{१५} महया मत्तगयमहामुहाकतिसमाणा^{१६} पणत्ता समणा-उसो ! ॥

१४९. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो आयंसा पणत्ता । तेसि णं आयंसाणं इमेयारूवे वण्णावासे पणत्ते, तं जहा—तवणिज्जमया पगंठगा,^{१७} अंकामया मंडला 'अणुग्वसितनिम्म-

१. सं० पा०—एवं पंतीओ वीही मिहुणाइं;

वीहीतो पंतीतो (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. राय० सू० १४१ ।

३. सं० पा०—पउमलयाओ जाव सामलयाओ ।

४. सं० पा०—कुसुमियाओ सव्वरयणामईओ ।

५. 'मय अच्छा (वृ); सं० पा०—अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ।

६. अक्खयसोवत्थिया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. जाम्बूनदमया (वृपा) ।

८. सं० पा०—वरकमलपइट्ठाणा तहेव ।

९. सं० पा०—वरकमलपइट्ठाणा जाव महया ।

१०. मत्तगयमुहाकतिं (क, ख, ग, घ, च, छ); मत्तगयमहामुहागिइं (वृ) ।

११. अतः परं प्रयुक्तादर्शेषु एतादृशः पाठो लभ्यते—'वेरुलियमया सुरया वइरामया दोवारंगा नानामणिया मंडला' एष वृत्ती नास्ति व्याख्यातः । जीवाजीवाभिगमादर्शेषु (३।३२२) एष पाठः किञ्चिद्भेदेनोप-लभ्यते—वेरुलियमया छरूहा वइरामया वरंगा णाणामणिमया वलक्खा अंकमया मंडला । तस्य

लाए छायाए" समणुबद्धा, चंदमंडलपडिणिकासा महया-महया अद्धकायसमाणा पणत्ता समणाउसो ! ॥

१५०. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो वइरनाभा थाला पणत्ता—अच्छ-तिच्छाडिय-सालि^१-तंदुल-णहंसदिट्ठ-पडिपुण्णा इव चिट्ठंति सव्वजंबूणयमया अच्छा जाव पडिरूवा महया-महया रहचक्कसमाणा^२ पणत्ता समणाउसो ! ॥

१५१. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो पातीओ पणत्ताओ । 'ताओ णं'^३ पातीओ अच्छोदगपरिहत्थाओ णाणाविहस्स^४ फलहरियगस्स बहुपडिपुण्णाओ विव चिट्ठंति सव्व-रयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ महया-महया गोकलिजगचक्कसमाणीओ^५ पणत्ताओ समणाउसो ! ॥

१५२. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो सुपइट्ठगा^६ पणत्ता । 'ते णं सुपइट्ठगा सुसव्वो-सहिपडिपुण्णा णाणाविहस्स च पसाधणभंडस्स बहुपडिपुण्णा'^७ इव चिट्ठंति सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१५३. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो मणोगुलियाओ^८ पणत्ताओ । तासु णं मणोगु-लियासु बहवे सुवण्णरूपामया फलगा पणत्ता । तेसु णं सुवण्णरूपामएसु फलगेसु बहवे वइरामया नागदंतया पणत्ता । तेसु णं वइरामएसु णागदंतएसु बहवे रययामया^९ सिक्कगा पणत्ता । तेसु णं रययामएसु^{१०} सिक्कगेसु बहवे वायकरगा पणत्ता । ते णं वायकारगा किण्हसुत्तसिक्कग^{११}-गवच्छिया^{१२} नीलसुत्तसिक्कग-गवच्छिया लोहियसुत्तसिक्कग-गवच्छिया हालिद्दसुत्तसिक्कग-गवच्छिया सुक्किलसुत्तसिक्कग-गवच्छिया सव्ववेरुलियमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

वृत्तावपि (पत्र-२१३) असौ व्याख्यातोस्ति ।

प्रस्तुतागमे वृत्तिकारेण मलयगिरिणा उपलब्धा-दर्शेषु नैष पाठो दृष्टः, तेन न व्याख्यातः अथवा उत्तरवर्तिभिलिपिकारैः जीवाजीवा-भिगमादर्शमनुसृत्य अत्रापि प्रक्षिप्तः अथवा वाचना भेदस्यापि संभावनाकर्तुं शक्या ।

१. 'निम्मलाते छायाते (क, ख, ग, घ);

× (च, छ) ।

२. सालिय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. रहचक्कवालसमाणा (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्तौ 'रथचक्रसमानानि' इति व्याख्यात-मस्ति । जीवाजीवाभिगमे (३।३२३) पि 'रहचक्कसमाणा' इति पाठोस्ति ।

४. तोणं (क, ख, ग, घ, च) ।

५. णाणामणिपंचवण्णस्स (क, ख, ग, घ, छ) ।

६. गोकलिजर^१ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सुपइट्ठा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. णाणाविहभंडविरइया (क, ख, ग, घ, च, छ); मूलपाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतोस्ति । जीवाजीवाभिगमे (३।३२५) पि एतादृश एव पाठो दृश्यते ।

९. मणगुं (क, ख, ग, घ); मणिगुं (च, छ) ।

१०. वइरामया (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्तौ तथा जीवाजीवाभिगमस्य (३।३२६) आदर्शेषु वृत्तावपि (पत्र २१४) च रजतप-दमुपलभ्यते । प्रस्तुतागमस्यादर्शेषु 'वइर' इति पदं केनापि लिपिदोषादिकारणेन प्रविष्टम-भूत् ।

११. वइरामएसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. 'सिक्का' (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. गवत्थिता (घ) ।

१५४. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो चित्ता रयणकरंडगा पणत्ता—से जहाणामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चित्ते रयणकरंडए वेरुलियमणि^१-फालियपडल^२-पच्चोयडे साए पहाए ते पएसे सव्वतो समंता ओभासेति उज्जोवेति तावेति पभासेति^३, एवमेव तेवि चित्ता रयणकरंडगा साए पभाए ते पएसे सव्वओ समंता ओभासेति उज्जोवेति तावेति पभासेति^४ ।

१५५. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो हयकंठा गयकंठा नरकंठा किन्नरकंठा किंपुरिसकंठा महोरगकंठा गंधव्वकंठा उसभकंठा सव्वरयणामया^५ अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१५६. 'तेसि णं तोरणणं पुरओ'^६ दो दो पुप्फचंगेरीओ मल्लचंगेरीओ चुण्णचंगेरीओ गंधचंगेरीओ वत्थचंगेरीओ आभरणचंगेरीओ सिद्धत्थचंगेरीओ^७ लोमहत्थचंगेरीओ पणत्ताओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

१५७. 'तेसि णं तोरणणं'^८, पुरओ दो दो पुप्फपडलगाइं^९ *मल्लपडलगाइं चुण्ण-पडलगाइं गंधपडलगाइं वत्थपडलगाइं आभरणपडलगाइं सिद्धत्थपडलगाइं^{१०} लोमहत्थपडलगाइं पणत्ताइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं^{११} *सण्हाइं लण्हाइं घट्ठाइं मट्ठाइं णीरयाइं निम्मलाइं निप्पंकाइं निक्कंकडच्छायाइं सप्पभाइं समरीइयाइं सउज्जोयाइं पासादीयाइं दरिसणिज्जाइं अभिरूवाइं^{१२} पडिरूवाइं ॥

१५८. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो सीहासणा पणत्ता । तेसि णं सीहासणाणं वण्णाओ जाव^{१३} दामा ॥

१५९. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो रूपमया^{१४} छत्ता पणत्ता । ते णं छत्ता वेरुलियविमलदंडा^{१५} जंबूणयकणिया वइरसंधी मुत्ताजालपरिगया अट्टसहस्सवरकंचण-सलागा दहरमलयसुगंधि-सव्वोउयसुरभिसीयलच्छाया मंगलभत्तिचित्ता चंदागारोवमा ॥

१६०. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो चामराओ पणत्ताओ । ताओ णं चामराओ 'चंदप्पभ-वेरुलिय-वइर-नानामणिरयणखचियचित्तदंडाओ'^{१६} 'सुहुमरययदीहवालाओ संखंक-कुंद - दगरय - अमयमहियफेणपुंसन्निगासातो'^{१७} सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

१. वेरुलिया^० (क, ख, ग, घ, च) ।

२. फलिह^० (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. पगासति (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. पगासेति (क, ख, ग, घ) ।

५. 'वइरामया' (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. तेसु णं हयकंठाएसु जाव उसभकंठाएसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सिद्धत्था^० (ख, ग, च, छ); सिद्धत्थम^० (वृ) ।

८. तासु णं पुप्फचंगेरीसु जाव लोमहत्थचंगेरीसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. सं० पा०—पुप्फपडलगाइं जाव लोमहत्थपडलगाइं ।

१०. सं० पा०—अच्छाइं जाव पडिरूवाइं ।

११. राय० सू० ३७-४० ।

१२. रूपच्छदा (जीवा० ३१३३२) ।

१३. तिविट्ठदंडा (क, ख, ग); निविट्ठदंडा (घ) ।

१४. णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्ज-लविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१५. संखंक-कुंद - दगरय-अमयमहियफेणपुंसन्निगा-साओ सुहुमरययदीहवालाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१६१. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो तेल्लसमुग्गा कोट्टसमुग्गा पत्तसमुग्गा चोयग-
समुग्गा तगरसमुग्गा एलासमुग्गा हरियालसमुग्गा हिगुलयसमुग्गा मणोसिलासमुग्गा
अंजणसमुग्गा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरुवा ॥

० दार-पदं

१६२. सूरियाभे णं विमाणे एगमेगे दारे^१ अट्टसयं चक्कज्झयाणं, एवं^२ मिगज्झयाणं^३
गरुडज्झयाणं^४ रुच्छज्झयाणं^५ छत्तज्झयाणं पिच्छज्झयाणं सउणिज्झयाणं सीहज्झयाणं,
उसभज्झयाणं, अट्टसयं सेयाणं चउ-विसाणाणं नागवरकेऊणं ॥

१६३. एवामेव सपुव्वावरेण सूरियाभे विमाणे एगमेगे दारे 'असीयं असीयं'^६ केउ-
सहस्सं भवति इति मक्खायं ॥

१६४. तेसि णं दाराणं एगमेगे दारे^७ पण्णट्ठि-पण्णट्ठि भोमा पण्णत्ता । तेसि णं
भोमाणं भूमिभागा उल्लोया य भाणियव्वा^८ [तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभाए जाणि
तेत्तीसभाणि भोमाणि^९] । तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं सीहासणे
[पण्णत्ते ?] सीहासणवण्णओ^{१०} सपरिवारो । अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं-पत्तेयं 'सीहासणे
पण्णत्ते'^{११} ॥

१६५. तेसि णं दाराणं उत्तरागारा^{१२} सोलसविहेहि रयणेहिं उवसोभिया, तं जहा—
रयणेहिं^{१३} *वइरेहिं वेरुलिएहिं लोहियक्खेहिं मसारगल्लेहिं हंसगम्भेहिं पुलगेहिं सोगंधिएहिं
जोईरसेहिं अंजणेहिं अंजणपुलगेहिं रयएहिं जायरूवेहिं अंकेहिं फलिहेहिं^{१४} रिट्ठेहिं ॥

१६६. तेसि णं दाराणं उप्पिं अट्टट्ट मंगलगा^{१५} *पण्णत्ता^{१६} ।

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२. हिगुरूपं (क); हिगुलुयं (ख, ग, घ) ।

३. वारे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. अट्टसयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. मिगि (च) ।

६. जंग० (च, छ) ।

७. पण्डितवेचरदासजीसंपादितवृत्तौ (पृ० १८०)

‘रुद्ध’ इतिपदं मुद्रितमस्ति, किन्तु नास्यात्रसङ्ग-
तिर्दृश्यते । प्रस्तुतसूत्रस्य हस्तलिखितवृत्तौ
‘रुच्छ’ इति पदमस्ति । ‘घ’ संकेतितादर्शेपि
‘रुच्छ’ इतिपदं लभ्यते । जीवाजीवाभिगम-
सूत्रस्य (३३२५) हस्तलिखितवृत्तावपि
‘रुच्छ’ इतिपदं निर्दिष्टमस्ति । शेषप्रयुक्ता-
दर्शेषु एतत् पदं अस्य स्थाने वा अन्यत् पदमनु-
पलब्धमस्ति ।

८. आसीयं (क, ख, ग, घ); असीयं (घ, छ) ।

९. सूरियाभे विमाणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. राय० सू० २४-३१, ३४ ।

११. कोष्ठकवर्तिपाठः आदर्शेषु नोपलभ्यते, वृत्ता-
वस्ति व्याख्यातः—बहुमध्यदेशभागे यानि
त्रयस्त्रिंशत्तमानि भौमानि । जीवाजीवाभिगमे
(३३३६) एतत् संवादी पाठो विद्यते ।

१२. राय० सू० ३७-४४ ।

१३. भद्रासणा पण्णत्ता (क, ख, ग, घ, च, छ);
शेषेषु च भौमेषु प्रत्येकमेकैकं सिंहासनं
परिवारहितम् (वृ) ।

१४. उत्तिमां (क, ख, ग, घ, च, छ); उवरिमां
(वृपा) ।

१५. सं० पा०—रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं ।

१६. सं० पा०—मंगलगा सज्जया जाव छत्ताति-
छत्ता ।

१७. राय० सू० २१ ।

१६७. तेसि णं दाराणं उप्पिं वह्वे किण्हचामरज्झया^१ ॥

१६८. तेसि णं दाराणं उप्पिं वह्वे^२ छत्तातिछत्ता^३ ॥

१६९. 'एवामेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे चत्तारि दारसहस्सा भवंतीति मक्खाय'^४ ॥

० वणसंड-पदं

१७०- सूरियाभस्स विमाणस्स चउहिसिं पंच जोयणसयाइं अवाहाए^५ चत्तारि वण-संडा पणत्ता, तं जहा—'असोगवणे, सत्तावणवणे चंपगवणे, चूयवणे' पुरत्थिमेणं^६ असोगवणे, दाहिणेणं सत्तवणवणे, पच्चत्थिमेणं चंपगवणे, उत्तरेणं चूयवणे । ते णं वणसंडा साइरेगाइं अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं^७ आयामेणं, पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं, 'पत्तेयं पत्तेयं'^८ पागारपरिखित्ता 'किण्हा किण्होभासा'^९ *नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिक्वा तिक्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया तिक्वा तिक्वच्छाया घणकडिय-कडच्छाया^{१०} रम्मा महामेहणिकुरंवभूया^{११} वणसंडवणओ^{१२} ।

० वणसंड-भूमिभाग-पदं

१७१. तेसि णं वणसंडाणं अंतो बहुसमरणिज्जा भूमिभागा पणत्ता—से जहानामए आलिगपुक्खरेति वा जाव^{१३} णाणाविह^{१४} पंचवण्णेहि^{१५} 'मणीहि य'^{१६} तणेहि य उवसोभिया^{१७} ।

१७२. तेसि णं गंधो फासो णायव्वो^{१८} जहक्कमं ॥

१७३. तेसि णं भंते ! तणाण य मणीण य पुव्वावरदाहिणुत्तरागतेहि वातेहि

१. राय० सू० २२ ।

२. राय० सू० २३ ।

३. × (वृ)? एवामेव....मक्खायं (वृपा) ।

४. आवाहाते (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. पुव्वेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. जोयणसहस्साइं (च, छ) ।

८. पत्तेयं (क, ख, ग, घ, च) ।

९. किण्हा किण्होभासा जाव पडिमोयणा सुरम्मा

(वृ); अत्र वृत्तिकृतान्येपि केचिच्छब्दा व्याख्याताः । सं० पा०—किण्होभासा ते णं पायवा मूलमंतो ।

१०. वृत्तौ यावत्पदसूचितः पाठो व्याख्यातोस्ति ।

तत्र 'घणकडितडियच्छाया' इति पाठस्य

व्याख्या उपलभ्यते—'घनकडितडियच्छाया,

इति इह शरीरस्य मध्यभागे कटिस्ततोऽन्य-
स्यापि मध्यभागः कटिरिव कटिरित्युच्यते,
कटिस्तदमिव कटितटं घना—अन्योऽन्यशाखा-
प्रशाखानुप्रवेशतो निविडा कटितटे-मध्यभागे
छाया येषां ते तथा—मध्यभागे निविड-
तरच्छाया इत्यर्थः । अस्माभिः यावत्पदसूचितः
पाठः औपपातिकादवतारितः तेन तदनुसारी एव
पाठः स्वीकृतः । द्रष्टव्यं औपपातिक (सू० ४)
सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

११. ओ० सू० १-७ ।

१२. राय० सू० २४ ।

१३. णाणामणि (क) ।

१४. × (क, च, छ) ।

१५. राय० सू० २४-२६ ।

१६. राय० सू० ३०, ३१ ।

‘मंदायं-मंदायं’ एड्याणं वेड्याणं ‘कंपियाणं चालियाणं फंदियाणं’ घट्टियाणं खोभियाण उदीरियाणं केरिसए सद्दे भवइ ? गोयमा ! से जहानामए सीयाए वा संदमाणीए वा रहस्स वा सच्छत्तस्स सज्जयस्स सघटस्स सपडागस्स सत्तोरणवरस्स सनंदिघोसस्स सखिखणिहेमजालपरिखित्तस्स हेमवय-चित्तविचित्त^१-तिणिस-कणगणिज्जुत्तदारुयायस्स^२ सुसंपिणद्वारकमंडलधुरागस्स^३ कालायससुकयणेमिजंतकम्मस्स आइण्णवरतुरगसुसंपत्तस्स कुसलणरच्छेयसारहि-सुसंपरिग्गहियस्स^४ सरसय-वत्तीस-तोण-परिमंडियस्स सककडावयंस-गस्स^५ सचाव-सर-पहरण-आवरण-भरियजोहजुज्ज^६-सज्जस्स रायंगणंसि वा रायंतैउरंसि वा, रम्मंसि वा मणिकोट्टिमत्तलंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अभिघट्टिज्जमाणस्स उराला^७ मणुण्णा मणोहरा^८ कणमणनिव्वुड्करा सद्दा सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, भवेयारूवे सिया ? णो इणदठे समदठे । से जहानामए वेयालियवीणाए उत्तरमंदा-मुच्छियाए^९ अंकै^{१०} सुपइट्टियाए कुसलभरनारिसुसंपग्गहियाते चंदण-सार-निम्मिय-कोण-परिघट्टियाए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयम्मि मंदायं-मंदायं एड्याए वेड्याए [कंपियाए^{११}] चालियाए [फंदियाए^{१२}] घट्टियाए खोभियाए उदीरियाए ओराला मणुण्णा मणोहरा कणमण-निव्वुड्करा सद्दा सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, भवेयारूवे सिया ? णो इणदठे समदठे । से जहानामए किन्नराण वा किंपुरिसाण वा महोरगाण वा गंधव्वाण वा भट्टसालवण-गयाण वा नंदणवणगयाण वा सोमणसवणगयाण वा^{१३} पडगवणगयाण वा हिमवंत-मलय-मंदरगिरि^{१४}-गुहासमन्नागयाण वा एगओ^{१५} सहियाणं^{१६} सन्निसन्नाणं समुव्विट्ठाणं^{१७} पमुइय-पक्कीलियाणं गीयरइ-गंधव्वहरिसियमणाणं^{१८} गज्जं पज्जं कत्थं^{१९} गेयं पयवद्धं पायवद्धं

१. मंदायं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. चालियाणं (क, ख, ग, घ, च); चलियाणं स्पन्दिद्याणं (छ) ।

३. छ प्रतौ ‘विचित्त’ इति पाठोऽस्ति, अन्यासु च प्रतिषु ‘चित्त’ इति पाठः, किन्तु वृत्तौ जीवा-जीवाभिगमे (३।२८५) तद्वृत्तौ (पत्र १६२) च—चित्रविचित्रं—मतोहारिचित्रोपेतम् इति व्याख्यातमस्ति ।

४. ‘णिज्जत्त’ (क, ख, ग, घ, च) ।

५. ‘द्धाचक्क’ (क, ख, ग, घ, च) ।

६. ससंपग्गं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. कंकडां (क, ख, ग, घ, च) ।

८. भरियज्ज (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. नियट्टिज्जमाणस्स उराला (छ) ।

१०. × (वृ) ।

११. समुच्छियाए (च, छ) ।

१२. अंक (क, च, छ); अंकं (ख, ग, घ) ।

१३, १४. अस्मिन्नेव सूत्रे पूर्वं ‘कंपियाणं चालियाणं

फंदियाणं’ इति पाठः, तद्वत् अत्र ‘कंपियाए—फंदियाए’ इति पाठो न लभ्यते । जीवाजीवाभि-गमे (३।२८५) एष पाठ उपलब्धोऽस्ति ।

१५. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१६. कंदरं (क, ख, ग, घ); मंदिरं (छ) ।

१७. एकयओ (क, ख, ग, घ) ।

१८. संगहियाणं (च, छ) ।

१९. सहिताणं समुहागयाणं समुपविट्ठाणं संनिवि-ट्ठाणं (जीवा० ३।२८५) ।

२०. अत्रादर्शेषु ‘गंधव्वरइहसियमणाणं’ इति पाठो लभ्यते । वृत्तौ नास्त्यसौ व्याख्यातः । पंडित बेचरदाससम्पादिते प्रस्तुतसूत्रे ‘गंधव्वहसियम-णाणं’ इति पाठो दृश्यते । किन्तु अर्थ विचार-णया नैषोपि सम्यक् प्रतिभाति । जीवाजीवाभि-गमस्य (३।२८५) सन्दर्भे असौ पाठः स्वी-कृतोऽस्ति ।

२१. गच्छं (क, ख, ग, घ, च) ।

‘उक्खित्तायं पयत्तायं’ मंदायं रोइयावसाणं सत्तसरसमन्नागयं अट्टरसमुसंपउत्तं^१ छद्दोस-
विप्पमुक्कं एक्कारसालंकारं अट्टगुणोक्कवेयं, गुंजावंककुहरोवगूढं^२ रत्तं^३ तिट्ठाणकरणसुद्धं^४
•सकुहरगुंजंतवंस-तंती-तल-ताल-लय-गहमुसंपउत्तं मट्टरं समं सललियं मणोहरं मउरिभिय-
पयसंचारं सुरइं सुणत्ति वरचारुक्कं दिव्वं णट्टसज्जं गेयं^५ पगीयाणं भवेयारुक्के सिया ?
हंता सिया ॥

० वणसंड-जलासय-पदं

१७४. तेसि णं वणसंडाणं तत्थ तत्थ ‘देसे तहिं तहिं’^६ बहूओ खुड्डा-खुड्डियाओ वावीओ
पुक्खरिणीओ दीहियाओ गुंजालियाओ सरसीओ^७ सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ विल-
पंतियाओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ^८ समतीराओ वयरामयपासाणाओ
तवणिज्जतलाओ सुवण्ण-सुज्झं^९-रयय-वालुयाओ वेरुलिय-मणि-फालिय-पडल-पच्चोयडाओ
सुओयारं^{१०}-सुउत्ताराओ णाणामणि-तित्थं^{११}-सुबद्धाओ चाउक्कोणाओ आणुपुव्वसुजायवप्प-
गंभीरसीयलजलाओ^{१२} संछन्नपत्तभिस-मुणालाओ बहुउप्पल-कुमुय-तलिण-सुभग-सोगंधिय-
पोडरीय-सयवत्त-सहस्सपत्त-केसरफुल्लोवचियाओ छप्पयपरिभुज्जमाणकमलाओ अच्छ-
विमलसलिलपुण्णाओ ‘पडिहत्थभमंतमच्छकच्छभ-अणेगसउणमिहुणगपविचरिताओ पत्तेयं-
पत्तेयं पउमवरवेदियापरिक्खित्ताओ पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ’^{१३} अप्पेगइयाओ
आसवोयगाओ ‘अप्पेगइयाओ वारुणोयगाओ’^{१४} अप्पेगइयाओ खीरोयगाओ अप्पेगइयाओ
घओयगाओ अप्पेगइयाओ खोदोयगाओ^{१५} अप्पेगत्तियाओ पगईए^{१६} उयगरसेणं पण्णत्ताओ
पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥

१७५. तासि णं खुड्डाखुड्डियाणं वावीणं^{१७} •पुक्खरिणीणं दीहियाणं गुंजालियाणं
सरसीणं सरपंतियाणं सरसरपंतियाणं^{१८} विलपंतियाणं पत्तेयं-पत्तेयं चउट्ठिसि चत्तारि

१. ओक्खित्तायं पयत्तायं (च, छ); उक्खित्तायं पयत्तायं (जीवा० ३।२८५) ।
२. × (क, ख, च, छ); जीवाजीवाभिगमे (३।२८५) प्यसावस्ति ।
३. गुंजावक्कं (क, ख, ग, घ, च, छ) । गुंजा + अवंकं = गुंजावंकं ।
४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
५. सं० पा०—तिट्ठाणकरणसुद्धं पगीयाणं ।
६. तहिं तहिं देसे देसे (क, छ); तहिं देसे देसे (ख, ग, घ, च) । जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) पि ‘देसे तहिं तहिं’ इत्येव दृश्यते ।
७. × (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्त्याधारेण स्वीकृतोसौ पाठः । जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) पि दृश्यते, तद्वृत्तावपि चास्ति व्याख्यातः ।

८. कूडाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. सज्झं (क, ख, ग, घ, च); सुब्भं (जीवा० ३।२८६) ।
१०. सुहोयार (जीवा० ३।२८६) ।
११. × (क, ख, ग, घ, च) ।
१२. अणुं (क, ख, ग, घ, च) ।
१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) प्यसावस्ति ।
१४. × (क, ख, ग, घ, च) ।
१५. खोयगातो (घ) । अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) एतत् अतिरिक्तं विशेषणं लभ्यते—अप्पेगत्तियाओ अमयरससमरसोदाओ ।
१६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१७. सं० पा०—वावीणं जाव विलपंतियाणं ।

तिसोमाणपडिरूवगा पण्णत्ता । तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं 'अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया नेमा रिट्टामया पत्तिट्टाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवण्णरूपमया फलगा, लोहितक्खमइयाओ सूइओ, वयरामया संधी, णाणामणिमया अबलंबणा अबलंबण-वाहाओ य पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा" ॥

१७६. *तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं तोरणं पण्णत्तं" ॥

१७७. तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं उप्पि अट्टमंगलगा पण्णत्ता*० ॥

१७८. तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं उप्पि बह्वे किण्हचामरज्झया*० ॥

१७९. तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं उप्पि बह्वे छत्तातिछत्ता*० ॥

१८०. 'तासि णं खुड्डाखुड्डियाणं वावीणं* पुक्खरिणीणं दीहियाणं गुंजालियाणं सरसीणं सरपंतियाणं सरसरपंतियाणं* बिलपंतियाणं" तत्थ तत्थ 'देसे तहिं तहिं" बह्वे उप्पायपव्वयगा नियइपव्वयगा* जगईपव्वयगा" दारुइज्जपव्वयगा दगमंडवा दगमंचगा" दगमालगा दगपासायगा" उसड्डा" खुड्डुखुड्डुगा अंदोलगा पक्खंदोलगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१८१. तेसु" णं उप्पायपव्वएसु" *नियइपव्वएसु जगईपव्वएसु दारुइज्जपव्वएसु दगमंडएसु दगमंचएसु दगमालएसु दगपासायएसु उसड्डएसु खुड्डुखुड्डुएसु अंदोलएसु* पक्खंदोलएसु बहूइं हंसासणाइं कोचासणाइं गरुलासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं 'भट्टासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं" सीहासणाइं" पउमासणाइं दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं ॥

० वणसंड-घरग-पदं

१८२. तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ 'देसे तहिं तहिं" बह्वे आलिघरगा मालिघरगा कयलिघरगा लयाघरगा अच्छणघरगा पिच्छणघरगा मज्जणघरगा" पसाधणघरगा गम्भ-

१. वणो (क, ख, ग, घ, च); वणतो (छ) ।	११. जईं (क, ख, ग) ।
२. सं० पा०—तोरणाणं भया छत्ताइछत्ता य जेयव्वा ।	१२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
३. राय० सू० २० ।	१३. *पव्वयगा (क, ख, ग, घ, च) ।
४. राय० सू० २१ ।	१४. उसरदगा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
५. राय० सू० २२ ।	१५. तेसि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
६. राय० सू० २३ ।	१६. सं० पा०—उप्पायपव्वएसु पक्खंदोलएसु ।
७. सं० पा०—वावीणं जाव बिलपंतियाणं ।	१७. पक्खासणाइं मगरासणाइं भट्टासणाइं (क, ख, ग, घ, छ) ।
८. तामु (तासि) णं खुड्डावावीसु जाव बिलपंति-यासु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।	१८. उसभासणाइं सीहासणाइं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. तहिं तहिं देसे देसे (क, ख, ग, घ); तेहिं तेहिं देसे देसे (च, छ) ।	१९. तहिं तहिं देसे देसे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१०. निययं (क, ख, ग, घ, च, छ, वृपा) ।	२०. × (क, ख, ग, घ, च) ।

वरगा मोहणघरगा^१ सालघरगा जालघरगा 'कुसुमघरगा चित्तघरगा'^२ गंधव्वघरगा आयंस-
घरगा^३ सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिख्वा ॥

१८३. तेसु णं आलिघरगेसु^४ *मालिघरगेसु कयलिघरगेसु लयाघरगेसु अच्छणघरगेसु
पिच्छणघरगेसु मज्जणघरगेसु पसाधणघरगेसु गब्भघरगेसु मोहणघरगेसु सालघरगेसु
जालघरगेसु कुसुमघरगेसु चित्तघरगेसु गंधव्वघरगेसु^५ आयंसघरगेसु तहिं तहिं घरएसु
वहूइं हंसासणाइं^६ *कोंचासणाइं गरुलासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं
भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं सीहासणाइं पउमासणाइं^७ दिसासोवत्थियासणाइं
सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिख्वाइं ॥

० वणसंड-मंडवग-पदं

१८४. तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ देसे^८ तहिं तहिं वहूवे जाइमंडवगा^९ जूहियामंडवगा
'मल्लियामंडवगा णोमालियामंडवगा'^{१०} वासंतिमंडवगा^{११} 'दहिवासुयमंडवगा सूरिल्लि-
मंडवगा'^{१२} तंवोलिमंडवगा मुद्दियामंडवगा णागलियामंडवगा अतिमुत्तलयामंडवगा अप्फोया-
मंडवगा^{१३} मालुयामंडवगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिख्वा ॥

१८५. तेसु णं जाइमंडवएसु^{१४} *जूहियामंडवएसु मल्लियामंडवएसु णोमालियामंडवएसु
वासंतिमंडवएसु दहिवासुयमंडवएसु सूरिल्लिमंडवएसु तंवोलिमंडवएसु मुद्दियामंडवएसु
णागलियामंडवएसु अतिमुत्तलयामंडवएसु अप्फोयामंडवएसु^{१५} मालुयामंडवएसु वहूवे
पुढविसिलापट्टगा अप्पेगतिया हंसासणसंठिया जाव अप्पेगतिया दिसासोवत्थियासण-
संठिया अण्णे य वहूवे वरसयणासणविसिट्ठसंठाणसंठिया^{१६} पुढविसिलापट्टगा पणत्ता
समणाउसो! आईणग-खूय-वूर^{१७}-णवणीय-तूल-फासा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिख्वा ।
तत्थ^{१८} णं वहूवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्ठंति
हंसंति^{१९} रमंति ललंति कीलंति कित्तंति^{२०} मोहेंति पुरा पोरणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं
सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलविवारं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति^{२१} ॥

१. मोहं (क, ख, ग, घ) ।

२. चित्तघरगा कुसुमघरगा (क, ख, ग, घ,
च, छ) ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—आलिघरगेसु जाव आयंसघरगेसु ।

५. सं० पा०—हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थियास-
णाइं ।

६. देसे देसे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. जातिमंडवसंठाणगा (क, ख, ग, घ, छ) ।

८. णेमालिया^२ मल्लिया^३ (घ); नोमालिया^४
मल्लिय^५ (छ) ।

९. वासंति^६ (क, ख, ग, घ) ।

१०. सूरिल्लिमंडवगा दहिवासुयमंडवगा (क, ख,
ग, घ) ।

११. अणया^७ (क, ख, ग, घ) ।

१२. सं० पा०—जाइमंडवएसु जाव मालुयामंडव-
एसु ।

१३. मंसलसुघट्टविसिट्ठं^८ (क, ख, ग, घ, च, छ,
वृषा) ।

१४. पुर (क, ख, ग, घ) ।

१५. अत्थि (क, ख, ग, घ, च) ।

१६. × (वृ) ।

१७. × (वृ) ।

१८. चिट्ठंति विहरंति (च, छ) ।

० वणसंड-पासायवडेंसग-पदं

१८६. तेसि णं वणसंडाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं पासायवडेंसगा पणत्ता । ते णं पासायवडेंसगा पंच जोयणसयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुगयमूसिय-पहसिया इव^१ तहेव^२ बहुसमरमणिज्जभूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं^३ । तत्थं णं चत्तारि देवा महिड्ढिया^४ *महज्जुइया महावला महायसा महासोक्खा महाणुभागा^५ पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—असोए^६ सत्तपण्णे चंपए चूए^७ ॥

० भूमिभाग-पदं

१८७. सूरियाभस्स णं देवविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पणत्ते^८ जाव^९ तत्थ णं वह्वे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति^{१०} *सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्ठंति, हमंति रमंति ललंति कीलंति कित्तंति मोहेति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलविवागं पच्चणुभवमाणा^{११} विहरंति ॥

० उवगारिया-लयण-पदं

१८८. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसे, एत्थ णं महेगे उवगारिया^{१२}-लयणे पणत्ते—एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसय-सहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिन्नि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अट्ठंगुलं च किंचिविसेसूणं परिवखेवेणं, जोयणं वाहल्लेणं, सब्व-जंठूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

० पउमवरवेइया-पदं

१८९. से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेण सब्वओ समंता संपरिखित्ते । सा णं पउमवरवेइया अट्ठजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं, उवकारिय-लेणसमा परिवखेवेणं ॥

१९०. तीसे णं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णावासे पणत्ते, तं जहा—वइरामया^{१३}

१. राय० सू० १३७ ।

२. राय० सू० २४-३४ ।

३. राय० सू० ३७-४४ ।

४. सं० पा०—महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया ।

५. असोए (क, ख, ग, घ, च) ।

६. वृत्तो अतोप्रे अधिकं विवृतमस्ति—ते णं इत्यादि, ते अण्णोकादयो देवाः स्वकीयस्य वनखण्डस्य स्वकीयस्य प्रासादावतंसकस्य, सूत्रे बहुवचनं प्राकृतत्वात् प्राकृते वचनव्यत्ययोऽपि भवतीति, स्वकीयानां सामानिकदेवानां स्वासां स्वासामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वासां स्वासां परिषदां स्वेषां स्वेषामनीकानां स्वेषां स्वेषामनीकाधिपतीनां स्वेषां स्वेषामात्म-

रक्षाणां 'आहेवच्चं पोरेवच्चं' इत्यादि प्राग्वत् ।

'प्राग्वद्' इति वृत्तिकारस्य सूचनया ज्ञायते वृत्तिकारस्य सम्मुखे भिन्नवाचनायाः मूलपाठः आसीत् ।

७. पणत्ते, तं जहा—वणसंडविहूणे (क, ख, ग, घ, च, छ) । यद्यप्यसौ पाठः सर्वासु प्रतिषु लभ्यते तथापि नावश्यकः प्रतिभाति । वृत्तावपि नास्ति गृहीतोसौ ।

८. राय० सू० २४-३१ ।

९. सं० पा०—आसयंति जाव विहरंति ।

१०. उवगारिय (घ); उवाइय (छ) ।

११. सं० पा०—वइरामया भुवणरूपामया फलगा नाणामणिमया ।

*नेमा रिट्टामया पडट्टाणा वेरुलियामया खंभा सुवण्णरूपामया फलगा लोहितक्खमईयो सूईओ वइरामया संधी° नाणामणिमया कलेवरा णाणामणिमया कलेवरसंघाडगा णाणामणिमया रूवा णाणामणिमया रूवसंघाडगा अंकायमा° *पक्खा पक्खवाहाओ, जोईरसमया वंसा वंसकवेल्लुयाओ रययामईओ पट्टियाओ जायरूवमईओ ओहाडणीओ, वइरामईओ° उवरि-पुंछणीओ 'सव्वसेयरययामए छायणे' ॥

१६१. सा णं पउमवरवेइया एगमेगेणं हेमजालेणं एगमेगेणं गवक्खजालेणं एगमेगेणं खिंखिणीजालेणं एगमेगेणं 'घंटाजालेणं एगमेगेणं मुत्ताजालेणं' एगमेगेणं मणिजालेणं एगमेगेणं कणजालेणं एगमेगेणं रयणजालेणं एगमेगेणं पउमजालेणं सव्वतो समंता संपरिखित्ता° । ते णं जाला° तवणिज्जलंबूसगा जाव° उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

१६२. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे° तहिं तहिं वहवे हयसंघाडा° *गयसंघाडा तरसंघाडा किन्नरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा° उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा° ॥

१६३. *तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं वहवे हयपंतीओ° ॥

१६४. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं वहवे हयवीहीओ° ॥

१६५. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं बहई हयमिहुण्णाई° ॥

१६६. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं वहवे पउमलयाओ° ॥

१६७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पउमवरवेइया पउमवरवेइया ? गोयमा ! पउमवरवेइयाए णं तत्थ तत्थ देसे° तहिं तहिं वेइयासु वेइयावाहासु य वेइयफलएसु° य वेइयपुडंतरेसु य, खंभेएसु खंभवाहासु खंभसीसेसु° खंभपुडंतरेसु, सूईसु सूईमुखेसु सूईफलएसु

१. सं० पा०—अंकायमा....उवरिपुंछणीओ ।

२. सव्वरयणामए अच्छायणे (ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवाभिगमवृत्ती (३।२६४, वृत्ति पत्र १८०) 'सव्वसेयरययामए छायणे' इति पाठो व्याख्यातोस्ति । रायपसेणीयवृत्ती 'सव्वरयणामए' इति पाठो लिपिदोषाज्जातः । वृत्तिकृता 'एतत् सर्वं द्धारवत् भावनीयं' इत्युल्लिखितम् । तत्रापि च 'सव्वसेयरययामए' इति पाठोस्ति (राय० सू० १३०), वृत्तावपि (पू० १६०) 'रजतमयं' इति व्याख्यातमस्ति ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. रयणजालेणं सव्वरयणजालेणं (क, ख, ग, घ, च); सव्वरयणजालेणं (छ) ।

५. × (छ) ।

६. परिक्षिप्ताः (वृ) ।

७. दामा (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

८. राय० सू० ४० ।

९. देसे देसे (क, ख, ग, घ, छ) ।

१०. सं० पा०—हयसंघाडा जाव उसभसंघाडा ।

११. सं० पा०—पडिरूवा जाव पंतीतो वीहीतो मिहुणाणि लयाओ ।

१२, १३, १४. राय सू० १६२ ।

१५. राय० सू० १४५ ।

१६. देसे देसे (क, ख, ग, घ, छ) ।

१७. × (वृत्ति, जी० ३।२६६) ।

१८. °फलतेसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

सूईपुडंतरेसु, पक्खेसु पक्खवाहासु 'पक्खपेरंतरेसु पक्खपुडंतरेसु' बहुयाइं उप्पलाइं^१ पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं^२ सयवत्ताइं सहस्सवत्ताइं सव्वरयणा^३मयाइं अच्छाइं^४ पडिरूवाइं महया वासिक्कलत्तसमाणाइं^५ पण्णत्ताइं समणाउसो ! से एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पउमवरवेइया पउमवरवेइया ॥

१६८. पउमवरवेइया णं भंते ! किं सासया असासया ? गोयमा ! सिय सासया सिय असासया ॥

१६९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सासया सिय असासया ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, वण्णपज्जेवेहिं^६ गंधपज्जेवेहिं^७ रसपज्जेवेहिं^८ फासपज्जेवेहिं^९ असासया ! से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय सासया सिया असासया ॥

२००. पउमवरवेइया णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! ण कयाति णासि, ण कयाति णत्थि, ण कयाति न भविस्सइ, भुविं 'च भवइ य'^{१०} भविस्सइ य, धुवा णियया सासया अक्खया अब्बया अवट्ठिया णिच्चा पउमवरवेइया ॥

२०१. सा णं पउमवरवेइया एणेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता । से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविकखंभेणं, उवयारिया^{११}-लेणसमे परिक्खेवेणं । वणसंडवण्णओ भाणियव्वो जाव^{१२} विहरंति ॥

० उवगारिया-लयण-पदं

२०२. तस्स णं उवयारिया^{१३}-लेणस्स चउट्ठिसि चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता वण्णओ तोरणा^{१४} इया छत्ताइच्छत्ता^{१५} ॥

० भूमिभाग-पदं

२०३. तस्स णं उवयारिया-लयणस्स उव्वरि बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव^{१६} मणीणं फासो ॥

० मूलपासायवडेंसग-पदं

२०४. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगे मूलपासायवडेंसए पण्णत्ते । से णं मूलपासायवडेंसते^{१७} पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विकखंभेणं अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ^{१८} भूमिभागो उल्लोओ^{१९} सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं^{२०} अट्ठट्ठ मंगलगा इया छत्ताइच्छत्ता ॥

१. × (वृत्ति); जीवाजीवाभिगमे (३।२६९)

८. राय० सू० १७०-१८५ ।

'पक्खपेरंतरेसु' इत्येकमेव पदमस्ति ।

१०. अतः परं 'अट्ठट्ठमंगलगा इति पदं गम्यमस्ति ।

२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. राय० सू० १६-२३ ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. राय० सू० २४-३१ ।

४. राय० सू० १५७ ।

१३. पासाय" (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. वासिक्कय" (क, ख, ग, घ, छ) ।

१४. राय० सू० १३७ ।

६. भवइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१५. "राय० सू० २४-३४ ।

७, ९. उवगारिया (क, ख, ग, घ, च) ।

१६. राय० सू० ३७-४४ ।

० पासायवडेंसग-पदं

२०५. से णं मूलपासायवडेंसगे^१ अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाण-
मेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिखित्ते^२ । ते णं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्डं
उच्चत्तेणं पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय जाव वण्णओ^३ भूमिभागो
उल्लोओ^४ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं^५ अट्ठट्ठं मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता^६ ॥

२०६. ते णं पासायवडेंसया अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं
सव्वओ समंता संपरिखित्ता । ते णं पासायवडेंसया पणवीसं जोयणसयं उड्डं उच्चत्तेणं,
वावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ भूमिभागो उल्लोओ
सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं अट्ठट्ठं मंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ॥

२०७. ते णं पासायवडेंसगा अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं
सव्वओ समंता संपरिखित्ता । ते णं पासायवडेंसगा वावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च
उड्डं उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं वण्णओ^७ उल्लोओ^८ सीहासणं
अपरिवारं^९ अट्ठट्ठं^{१०} मंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ॥

२०८. ते^{११} णं पासायवडेंसया अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसगेहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं
सव्वतो समंता संपरिखित्ता । ते णं पासायवडेंसगा एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च उड्डं
उच्चत्तेणं, पन्नरसजोयणाइं अड्ढाइज्जे कोसे विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ भूमि-
भागो जाव^{१२} झया छत्तातिच्छत्ता ॥

० सुहम्म-सभा-पदं

२०९. तस्स णं मूलपासायवडेंसयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं सभा सुहम्मा पण्णत्ता—
एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, वावत्तरिं जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं,
अणेगखंभसयसन्निविट्ठा जाव^{१३} अच्छरगणसंघसंविक्किण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणाइया अच्छा
जाव पडिरूवा ॥

१. पासाय^१ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. परिक्षिप्तः (वृ) ।

३. राय० सू० १३७ ।

४. राय० सू० २४-३४ ।

५. राय० सू० ३७-४४ ।

६. राय० सू० २१-२३ ।

७. राय० सू० १३७ ।

८. राय० सू० २४-३४ ।

९. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. पासायउवरिं अट्ठट्ठं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. 'च, छ' प्रत्योरेतसूत्रं नैव दृश्यते । वृत्तौ

(पृ० २१३) अर्द्धतृतीयक्रोशाधिकपंचदश

योजनोर्ध्वानां प्रासादावतंसकानां सूत्रमस्ति

व्याख्यातम् । यथा—'ते पि प्रासादावतंसका
अन्यैश्चतुर्भिः प्रासादावतंसकैस्तदद्धोच्चत्व-
प्रमाणैः अनन्तरोक्तप्रासादावतंसकाद्धोच्चत्व-
प्रमाणैर्मूलप्रासादावतंसकापेक्षया षोडशभाग-
प्रमाणैः सर्वतः समंतात् संपरिक्षिप्ताः;
तदद्धोच्चत्वप्रमाणमेव दर्शयति—एकत्रिंशतं
योजनानि श्लोकं च ऊर्ध्वमुच्चैस्त्वेन पंचदश-
योजनानि अर्द्धतृतीयांश्चैवक्रोशान् विष्क-
म्भतः । एतेषामपि स्वरूपादि वर्णनमनन्त-
रोक्तम्' ।

१२. राय० सू० २०५ ।

१३. राय० सू० ३२ ।

० सुहम्म-सभा-दार-पदं

२१०. सभाए णं सुहम्माए तिदिसिं तओ दारा पणत्ता, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं । ते णं दारा^१ सोलस^२ जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं, अट्ट जोयणाइं विक्खंभेणं, तावतियं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा^३ जाव^४ वणमालाओ^५ ॥

० मुहमंडव-पदं

२११. तेसि णं दाराणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं मुहमंडवे पणत्ते । ते णं मुहमंडवा एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं “अणेगखंभसयसन्निविट्ठा जाव” अच्छरणसंघसंविक्किणा दिव्वतुडियसद्द-संपणाइया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० दार-पदं

२१२. तेसि णं मुहमंडवाणं तिदिसिं तओ दारा पणत्ता, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं । ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं अट्ट जोयणाइं विक्खंभेणं, तावतियं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा जाव^४ वणमालाओ ॥

० भूमिभाग-उल्लोय-पदं

२१३. तेसि णं मुहमंडवाणं भूमिभागा उल्लोया^१ ॥

० मंगलग-पदं

२१४. तेसि णं मुहमंडवाणं उवरि अट्ट मंगलग शया छत्ताइच्छत्ता^२ ॥

० पेच्छाघर-मुहमंडव-पदं

२१५. तेसि णं मुहमंडवाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं पेच्छाघरमंडवे पणत्ते । मुहमंडव-वत्तव्वया^३ जाव^४ दारा ॥

० भूमिभाग-उल्लोय-पदं

२१६. “तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं भूमिभागा उल्लोया^१” ॥

० अक्खाडग-पदं

२१७. तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं वइरामए अक्खाडए पणत्ते ॥

० मणिपेडिया-पदं

२१८. तेसि णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेडिया

१. दारा साइरेगाइं (छ) ।

८. राय० सू० १२६-१३६ ।

२. सोलस सोलस (व) ।

९. राय० सू० २४-३४ ।

३. वरकमलं (छ) ।

१०. राय० सू० २१-२३ ।

४. राय० सू० १२६-१३६ ।

११. मुहमंडवा वण्णेयव्वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. वणमालाओ तेसि णं दाराणं उवरि मंगलरूवा छत्ताइछत्ता (छ) ।

१२. राय० सू० २११, २१२ ।

६. सं० पा०—वण्णओ सभाए सरिसो ।

१३. सं० पा०—भूमिभागा उल्लोया ।

७. राय० सू० ३२ ।

१४. राय० सू० २४-३४ ।

पण्णत्ता । ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयामविकखंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाह्ल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

० सीहासण-पदं

२१६. तासि णं मणिपेढियाणं उवरि पत्तेयं-पत्तेयं सीहासणे पण्णत्ते । सीहासणवण्णओ^१ सपरिवारो ॥

० मंगलग-पदं

२२०. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं उवरि अट्ठ मंगलगा झया छत्तातिछत्ता^२ ॥

० मणिपेढिया-पदं

२२१. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ । ताओ णं मणिपेढियाओ सोलस जोयणाइं आयामविकखंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाह्ल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

० चेइयथूभ-पदं

२२२. तासि णं मणिपेढियाणं^३ उवरि पत्तेयं-पत्तेयं चेइयथूभे^४ पण्णत्ते । ते णं चेइय-थूभा सोलस जोयणाइं आयामविकखंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सेया संखं^५-*कुंद-दगरय-अमय-महिय-फेणपुंजसन्निगासा^६ सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० मंगलग-पदं

२२३. तेसि णं चेइयथूभाणं उवरि अट्ठ मंगलगा झया छत्तातिछत्ता जाव सहस्स-पत्तहत्थया ॥

० मणिपेढिया-पदं

२२४. तेसि णं चेइयथूभाणं 'पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसि'^७ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ । ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयामविकखंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाह्ल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

० जिणपडिमा-पदं

२२५. तासि णं मणिपेढियाणं उवरि चत्तारि जिणपडिमातो जिणुस्सेहपमाणमेत्ताओ पलियंकनिसन्नाओ^८ थूभाभिमुहीओ सन्निखित्ताओ चिट्ठति, तं जहा—उसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा ॥

० मणिपेढिया-पदं

२२६. तेसि णं चेइयथूभाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ । ताओ णं मणिपेढिताओ सोलस जोयणाइं आयामविकखंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाह्ल्लेणं,

१. राय० सू० ३७-४४ ।

'चेइय' इति पदं युज्यते ।

२. राय० सू० २१-२३ ।

५. सं० पा०—संखं सव्वरयणामया ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. चउद्दिसि पत्तेयं-पत्तेयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. थूभे (क, ख, ग, घ, च, छ) ; वृत्तस्था

जीवाजीवाभिगमस्य (३।३८१) अनुसारेण

७. 'सन्तिसण्णा (वृ) ।

सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

० चेइयरुक्ख-पदं

२२७. तासि णं मणिपेडियाणं उवरि पत्तेयं-पत्तेयं चेइयरुक्खे पण्णत्ते । ते णं चेइय-
रुक्खा अट्ट जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं, अट्टजोयणं उव्वेहेणं, दो जोयणाइं खंधो, 'अट्टजोयणं
विक्खंभेणं', छ जोयणाइं विडिमा, बहुमज्झदेसभाए अट्ट जोयणाइं आयामविक्खंभेणं',
साइरेगाइं अट्ट जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता ॥

२२८. तेसि णं चेइयरुक्खाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामयमूल-
रययसुपइडियविडिमा' रिट्टामय-विउलकंद-वेरुलिय"-रुइलखंधा सुजायवरजायरूवपढमग-
विसालसाला नाणामणिमयरयणविहिहाहप्पसाह-वेरुलियपत्त-तवणिज्जपत्तबिटा
जंबूणय-रत्त-मउय-सुकुमाल-पवाल-पल्लव-वरंकुरधरा" विचित्तमणि रयणसुरभि-कुसुम-
'फल-भर'-नमियसाला 'सच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया" अहियं नयणमणिव्वु-
इकरा' अमयरससमरसफला' पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा" ॥

१. अट्टजोयणाइं (क, ख, ग, घ, च, छ);
'अट्टजोयणं विक्खंभेणं' एष वृत्त्यनुसारी
पाठोस्ति । प्रत्यनुसारी पाठ इत्थमस्ति—'अट्ट
जोयणाइं विक्खंभेणं' प्रतीनां 'अट्ट जोयणाइं'
एष पाठः अशुद्धः प्रतीयते । जीवाजीवाभिगमे
(३।३८६) 'अट्टजोयणं विक्खंभेणं' इत्येव पाठो
दृश्यते ।
२. विष्कम्भेन (वृ) ।
३. 'सुविडिमा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. विउलाकंदा वेरुलिया (क, ख, ग, घ, च),
वृत्तौ 'विउल' शब्दो न व्याख्यातः ।
५. सोभियावरंकुरगसिहरा (क, ख, ग, घ, च,
छ) ।
६. भरभरिय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
८. मणनयणणिं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. 'फला सच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउ-
ज्जोया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१०. २२८ सूत्रानन्तरं प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ एवं
व्याख्यातमस्ति—एते च चैत्यवृक्षा अन्यैर्बहु-
भिस्तिलकलवक - छत्रोपग- शिरीष-सप्तपर्ण -
दधिपर्ण-लोघ्र-धव-चन्दन-नीप-कुटज-पनस-ताल-

तमाल- प्रियाल- प्रियङ्गु- पारापत - राजवृक्ष =
नन्दिवृक्षः सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षिप्ता,
ते च तिलका यावन्तन्दिवृक्षा मूलमन्तः कन्द-
मन्त इत्यादि सर्वमशोकपादपवर्णनायामिव
तावद् वक्तव्यं यावत् परिपूर्णं लतावर्णनम् ।
प्रयुक्तादर्शेषु एतद्व्याख्यानुसारी पाठो नैव
लभ्यते । किन्तु जीवाजीवाभिगस्य आदर्शेषु
तादृशः पाठो लभ्यते स चैवमस्ति— तेणं
चेइयरुक्खा अणोहि बहूहि तिलय-लवय-
छत्रोपग-सिरीष-सत्तिवण्ण-दहिवण्ण -लोघ्र-धव-
चंदण-(अज्जुण?) नीव-कुडय-कयंब - पणस -
ताल-तमाल-पियाल-पियंगु - पारावय-रायरुक्ख-
नंदिरुक्खेहि सव्वओ समंता संपरिक्खत्ता । ते
णं तिलया जाव नंदिरुक्खा कुस-विकुस-विसुद्ध-
रुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो जाव सुरम्मा ।

ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा अण्णाहि
बहूहि पउमलयाहि जाव सामलयाहि सव्वतो
समंता संपरिक्खत्ता । ताओ णं पउमलयाओ
जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ जाव
पडिरूवाओ (जीवा० ३।३८८-३९०) ।

जीवाजीवाभिगमस्य वृत्तावपि एष व्याख्या-
तोस्ति ।

० मंगलग-पदं

२२६. तेसि णं चेइयरुक्खाणं उवरि अट्ठु मंगलगा झया छत्ताइछत्ता ॥

० मणिपेढिया-पदं

२३०. तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढिया पण्णत्ता । ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठु जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणि-मईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

० मंहिदज्झय-पदं

२३१. तासि णं मणिपेढियाणं उवरि पत्तेयं-पत्तेयं मंहिदज्झए पण्णत्ते । ते णं मंहिद-ज्झया सट्ठि जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं, अट्ठकोसं उव्वेहेणं, अट्ठकोसं^१ विक्खंभेणं वइरामय-वट्ठ-^२लट्ठ-संठिय-सुसिलिट्ठ^३-परिघट्ठ-मट्ठ-सुपत्तिट्ठिया विसिट्ठा^४ अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्स-परिमंडियाभिरामा वाउद्धुयविजय-वेजयंती-पडाग-च्छत्तातिच्छत्तकलिया^५ तुंगा गगणतल-मणुलिहंतसिहरा^६ पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

० मंगलग-पदं

२३२. तेसि णं मंहिदज्झयाणं उवरि अट्ठु मंगलगा झया छत्तातिछत्ता ॥

० नंदापुक्खरिणी-पदं

२३३. तेसि णं मंहिदज्झयाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं नंदा^१ पुक्खरिणी पण्णत्ता । ताओ णं पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस^२ जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छाओ जाव^३ पगईए^४ उदगरसेणं पण्णत्ताओ^५ *पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ^६ । पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइयापरिक्खत्ताओ, पत्तेयं-पत्तेयं वणसंड-परिक्खत्ताओ^७ ।

० तिसोवाणपडिरूवग-पदं

२३४. तासि णं णंदाणं पुक्खरिणीणं तिदिसि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता । तिसोवाणपडिरूवगाणं वण्णओ^१ तोरणा झया छत्तातिछत्ता ।

० मणोगुलिया-पदं

२३५. सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं मणोगुलियासाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुरत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, बाहिणेणं अट्ठसाहस्सीओ, उत्तरेणं अट्ठसाहस्सीओ । तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरूपामया फलगा पण्णत्ता । तेसु णं सुवण्णरूपामएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंतया पण्णत्ता । तेसु णं वइरामएसु

१. जोयणं (क, ख, ग, घ); जोइणं (च, छ) ।

७. द्वाविंश (छ) ।

२. लट्ठि पसिलिट्ठ (क, ख, ग, घ, च) ।

८. राय० सू० १७४ ।

३. X (क, ख, ग, घ, च) ।

९. पगइयाओ (क, ख, ग, घ, च); पगइयाओ

४. ०छत्तकलिया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

(छ) ।

५. गगणतलमभिकंखमाणं (क, ख, ग, घ, च,

१०. सं० पा०—पण्णत्ताओ ।

छ) ।

११. राय० सू० १८६-२०१ ।

६. नंदाओ (क, ख, ग) ।

१२. राय० सू० १९-२३ ।

णागदंतएसु किण्हसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा' चिट्ठंति ॥

० गोमाणसिया-पदं

२३६. सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं गोमाणसियासाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
 १*पुरत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, दाहिणेणं अट्ठसाहस्सीओ,
 उत्तरेणं अट्ठसाहस्सीओ । तासु णं गोमाणसियासु बह्वे सुवण्णरूपामया फलगा पण्णत्ता ।
 तेसु णं सुवण्णरूपामएसु फलगेसु बह्वे वइरामया नागदंतया पण्णत्ता° । तेसु णं वइरामएसु
 णागदंतएसु बह्वे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता । तेसु णं रययामएसु सिक्कगेसु बह्वे
 वेरुलियामइओ धूवघडियाओ पण्णत्ताओ । ताओ णं धूवघडियाओ कालागरु-पवर'
 *कुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमघमघंतगंधुद्धयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्ठिभूयाओ
 ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं धाणमणिव्वुत्तिकरेणं गंधेणं ते पदेसे सव्वओ समंता
 आपूरेमाणा-आपूरेमाणा सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठंति ॥

० भूमिभाग-पदं

२३७. सभाए णं सुहम्माए अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव' मणीहि
 उवसोभिए मणिफासो य उल्लोओ य ॥

० मणिपेढिया-पदं

२३८. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगा
 मणिपेढिया पण्णत्ता—सोलस जोयणाइं आयामविकखंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्व-
 मणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० चेइय-खंभ-पदं

२३९. तीसे णं मणिपेढियाए उवरि, एत्थ णं माणवए चेइयखंभे पण्णत्ते—सट्ठि जोय-
 णाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जोयणं उव्वेहेणं, जोयणं विकखंभेणं, 'अडयालीसअंसिए अडयालीसइ-
 कोडीए अडयालीसइविग्गहिए' सेसं जहा' महिदज्झयस्स ॥

० जिण-सकहा-पदं

२४०. माणवगस्स णं चेइयखंभस्स उवरि बारस जोयणाइं ओगाहेत्ता, हेट्ठावि बारस
 जोयणाइं वज्जेत्ता, मज्झे छत्तीसाए° जोयणेसु, एत्थ णं बह्वे सुवण्णरूपामया फलगा
 पण्णत्ता । तेसु णं सुवण्णरूपामएसु फलएसु बह्वे वइरामया णागदंता पण्णत्ता । तेसु णं
 वइरामएसु नागदंतसु बह्वे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता । तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु
 बह्वे वइरामया गोलवट्टसमुग्गया पण्णत्ता । तेसु णं वयरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहुयाओ

१. अत्र समर्पणसूचकः संकेतः केनापि कारणेन
 व्रुटितोस्ति । १३२ सूत्रमिह प्राप्तमस्ति ।

दण्टव्यं जीवाजीवभिगमस्य ३।३६७ सूत्रम् ।

२. सं० पा०—जहा मणोगुलिया जाव णागदंतया ।

३. सं० पा०—कालागरुपवर जाव चिट्ठंति ।

४. राय० सू० २४-३४ ।

५. अडयालीसं असीइए अडयालीसं सइकोडिए

अडयालीसं सइविग्गहे (क, ख, ग, घ, च,
 छ) ।

६. राय० सू० २३१, २३२ ।

७. वत्तीसाए (क, ख, ग); छव्वीसाए (च);
 तीसाए (छ) ।

८. बह्वे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

जिण-सकहाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति । ताओ णं सूरियाभस्स देवस्स अन्नेसि च बहूणं देवाणं य देवीणं य अच्चणिज्जाओ^१ *वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ माणणिज्जाओ सक्कार-णिज्जाओ कत्ताणं मंगलं देवयं चेइयं^२ पज्जुवासणिज्जाओ ॥

० मंगलग-पदं

२४१. माणवगस्स चेइयखंभस्स उवरिं अट्ठु मंगलगा जया छत्ताइच्छत्ता ॥

० मणिपेढिया-पदं

२४२. तस्स माणवगस्स चेइयखंभस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठु जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० सीहासण-पदं

२४३. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगे सीहासणे पण्णत्ते—सीहासण-वण्णतो^३ सपरिवारो ॥

० मणिपेढिया-पदं

२४४. तस्स णं माणवगस्स चेइयखंभस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठु जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० देवसयणिज्ज-पदं

२४५. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगे देवसयणिज्जे पण्णत्ते । तस्स णं देवसयणिज्जस्स इमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते, तं जहा—णाणामणिमया पडिपाया, सोव-णिमया पाया, णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं, जंबूणयामयाइं गत्तगाइं, 'वइरामया संधी', णाणामणिमए वेच्चे, रययामई तूली, 'लोहियक्खमया विब्बोयणा, तवणिज्जमया गंडो-वहाणया' । से णं देवसयणिज्जे 'सालिगणवट्टिए उभओविब्बोयणे' दुहओ उण्णते मज्जे णयगंभीरे^४ गंगापुलिणवालुया^५ उट्ठालसालिसए सुविरइयरयत्ताणे ओयवियखोमदुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे^६ रत्तंसुयसंबुए सुरम्मे आईणग-रूय-बूर-णवणीय-तूलफासे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

० मणिपेढिया-पदं

२४६. तस्स णं देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरत्थिमेणं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठु जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१. सं० पा०—अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणि-ज्जाओ ।

२. राय० सू० ३७-४४ ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. तवणिज्जमया गंडोवहाणया लोहियक्खमया (मई) विब्बोयणा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. णयगंभीरे सालिगणवट्टिए (क, ख, ग, घ, च) ।

७. 'बाल (क, ख, ग, घ, च); 'बालुए (छ) ।

८. अत्र वृत्ती 'प्रतिच्छदनं' विद्यते, किन्तु ३७ सूत्रे 'प्रतिच्छादनम्' अस्ति ।

० महिदज्जय-पदं

२४७. तीसे णं मणिपेढियाए उर्वरि, एत्थ णं खुड्डुए^१ महिदज्जए पण्णत्ते—सट्ठि जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं^२ उव्वेहेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, वइरामयवट्टलट्ठसंठिय-सुसिलिट्ठ^३—परिघट्ट-मट्ठ-सुपतिट्ठिए विसिट्ठे अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सपरिमंडिया-भिरामे वाउद्धयविजय-वेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे^४ पडिरूवे ॥

० मंगलग-पदं

२४८. तस्स णं खुड्डामहिदज्जयस्स उर्वरि अट्ठट्ठ मंगलग अया छत्तातिच्छत्ता ॥

० पहरणकोस-पदं

२४९. तस्स णं खुड्डामहिदज्जयस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स महं एगे चोप्पाले नाम पहरणकोसे पण्णत्ते—सव्ववइरामए अच्छे जाव पडिरूवे । तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स फलिहरयण-खग-गया-धणुप्पमुहा बह्वे पहरणरयणा संनिखित्ता चिट्ठंति—उज्जला निसिया सुतिक्खधारा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

० मंगलग-पदं

२५०. सभाए णं सुहम्माए उर्वरि अट्ठट्ठ मंगलग अया छत्तातिच्छत्ता ॥

० सिद्धायतण-पदं

२५१. सभाए णं सुहम्माए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगे सिद्धायतणे पण्णत्ते—एगं जोयणसयं आयामेणं, पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं, वावत्तरि जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं सभागमएणं जाव गोमाणसियाओ, भूमिभागा उल्लोया तहेवे^५ ॥

० मणिपेढिया-पदं

२५२. तस्स णं सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं वाहल्लेणं^६ ॥

० जिणपडिमा-पदं

२५३. तीसे णं मणिपेढियाए उर्वरि, एत्थ णं महेगे देवच्छंदए पण्णत्ते—सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

२५४. तत्थ णं अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्पमाणमित्ताणं संनिखित्तं संचिट्ठति । तासि णं जिणपडिमाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—तवणिज्जमया हत्थतल-पायतला, अंकामयाइं नक्खाइं अंतोलीहियक्खपडिसेगाइं^७, कणगामईओ जंघाओ, कणगामया

१. खुड्डु (क, ग) ।

४. राय० सू० २०६-२३६ ।

२. २३१ सूत्रे 'अद्धकोस' पाठो विद्यते, अत्र तु सर्वासु प्रतिषु 'जोयण' पाठो लभ्यते । वृत्त्यनुसारेणापि 'अद्धकोस' पाठो युज्यते, यथा—'तस्य प्रमाणं वर्णकश्च महेन्द्रध्वजवद् वक्तव्यम्' ।

५. राय० सू० २४-३४ ।

६. राय० सू० २३८ ।

७. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।४।५) अत्र एष पाठो विद्यते—'कणगामया पादा, कणगामया गोप्फा' । आनखशिखवर्णने एष उपयुक्तोस्ति ।

३. सं० पा०—सुसिलिट्ठ पडिरूवे ।

जाणू, कणगामया ऊरू, कणगामईओ गायलट्टीओ, 'तवणिज्जमईओ नाभीओ, रिट्टामईओ रोमराईओ, तवणिज्जमया चूचुया', तवणिज्जमया सिरिवच्छा', सिलप्पवालमया ओट्टा, फालियामया दंता, तवणिज्जमईओ जीहायो, तवणिज्जमया' तालुया, कणगामईओ नासिगाओ अंतोलोहियक्खपडिसेगाओ, अंकामयाणि अच्छीणि अंतोलोहियक्खपडिसेगाणि', 'रिट्टामईओ ताराओ', रिट्टामयाणि अच्छिपत्ताणि, रिट्टामईओ भमुहाओ, कणगामया कवोला', कणगामया सवणा, कणगामईओ णिडालपट्टियाओ, वइरामईओ सीसघडीओ, तवणिज्जमईओ केसंतकेसभूमीओ, रिट्टामया उवरिभुद्धया ॥

२५५. तासि णं जिणपडिमाणं पिट्ठतो पत्तेयं-पत्तेयं छत्तधारगपडिमाओ पण्णत्ताओ । ताओ णं छत्तधारगपडिमाओ हिमरययकुंदेदुप्पगासाइं सकोरंटमल्लदामं-धवलाइं आयवत्ताइं सलीलं 'धारेमाणीओ-धारेमाणीओ' चिट्ठंति ॥

२५६. तासि णं जिणपडिमाणं उभओ पासे 'दो दो' चामरधारपडिमाओ' पण्णत्ताओ । ताओ णं चामरधारपडिमाओ चंदप्पह-वइर-वेरुलिय-नानामणिरयणखचिय-चित्तदंडाओ' 'सुहुमरययदीहवालाओ संखंककुंदगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ' 'धवलाओ चामराओ' 'गहाय सलीलं वीजेमाणोओ' 'सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरुवाओ' ॥

२५७. तासि णं जिणपडिमाणं पुरतो दो दो नागपडिमाओ 'जक्खपडिमाओ भूय-पडिमाओ' कुंडधारपडिमाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति—सव्वरयणामईओ अच्छाओ

१. तवणिज्जमया चूचुया तवणिज्जामईओ नाभीओ रिट्टामईओ रोमराईओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।४१५) अत्र एष पाठो विद्यते—'कणगमईओ बाहाओ, कणगमईओ पासाओ, कणगमईओ गीवाओ, रिट्टामए मंसु' ।

३. तवणिज्जा' (च, छ) ।

४. 'सेगाओ (च, छ) ।

५. × (वृ) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. 'दामाइं (च, छ) । वृत्तो एकवचनं व्याख्यातम् ।

८. उधारेमाणीओ-उधारेमाणीओ (क, ख, ग, घ, च) ।

९. पत्तेयं पत्तेयं (क, ख, ग, घ, च, छ); मूल-पाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । पूर्ववर्ती 'पत्तेयं पत्तेयं' इति पाठस्य 'एकैका' इति व्याख्यात-मस्ति । अत्र 'प्रत्येकम् उभयोः पार्श्वयोः द्वे

द्वे' इति व्याख्यातमस्ति, अनेन 'दो दो' इति पाठः सङ्गच्छते । द्रष्टव्यम्—जीवाजीवा-भिगमस्य ३।४१७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१०. 'धारग' (क, ख, ग, घ) ।

११. णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जु - ज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. संखंककुंदगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ सुहुमरययदीहवालाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१४. सलीलं उधारेमाणीतो २ (क, ख, ग, घ); सलीलं धारेमाणीओ २ (च, छ) । स्वीकृतपाठः वृत्त्यनुसारी वर्तते । जीवाजीवाभिगम- (३।४१७) सूत्रेण एष एव पाठः स्वीकृतोस्ति ।

१५. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१६. भूयपडिमाओ जक्खपडिमाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

जाव पडिरूवाओ ॥

२५८. 'तत्थ णं देवच्छंदए' जिणपडिमाणं पुरतो अट्टसयं घंटाणं अट्टसयं वंदणकलसाणं अट्टसयं भिगाराणं एवं—आयंसणं थालाणं पाईणं सुपड्डाणं मणोगुलियाणं वायकरगाणं चित्ताणं रयणकरंडगाणं, ह्यकंठाणं^१ *गयकंठाणं नरकंठाणं किन्नरकंठाणं किपुरिसकंठाणं महोरगकंठाणं गंधव्वकंठाणं, *उसभकंठाणं पुप्फचंगेरीणं *मल्लचंगेरीणं चुण्णचंगेरीणं गंध-चंगेरीणं वत्थचंगेरीणं आभरणचंगेरीणं सिद्धत्थचंगेरीणं^२ लोमहत्थचंगेरीणं, पुप्फपडलगाणं^३ *मल्लपडलगाणं चुण्णपडलगाणं गंधपडलगाणं वत्थपडलगाणं आभरणपडलगाणं सिद्धत्थपड-लगाणं^४ लोमहत्थपडलगाणं, सीहासणाणं छत्ताणं चमराणं, तेल्लसमुग्गाणं^५ *कोट्टसमुग्गाणं पत्तसमुग्गाणं चोयसमुग्गाणं तगरसमुग्गाणं एलासमुग्गाणं हरियालसमुग्गाणं हिंगुलय-समुग्गाणं मणोसिलासमुग्गाणं *अंजणसमुग्गाणं, अट्टसयं झयाणं^६, अट्टसयं धूवकडुच्छुयाणं सनिखित्तं चिट्ठति ॥

२५९. तस्स णं सिद्धायतणस्स उवरि अट्टमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ॥

*उववायसभा-पदं

२६०. तस्स णं सिद्धायतणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा उववायसभा पण्णत्ता जहा सभाए सुहम्माए तहेव जाव^७ 'उल्लोओ य'^८ ।

२६१. 'तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता'^९—अट्टजोयणाइं^{१०} *आयाम-विक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सब्बमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा^{११} । देवसयणिज्जं तहेव सयणिज्जवण्णओ^{१२} । अट्टट्ट^{१३} मंगलगा झया छत्तासिच्छत्ता ॥

२६२. तीसे णं उववायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगे हराए पण्णत्ते—एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं तहेव^{१४} ॥

१. तासि णं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—ह्यकंठाणं जाव उसभकंठाणं ।

३. सं० पा०—पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगे-रीणं ।

४. सं० पा०—पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडल-गाणं ।

५. सं० पा०—तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजण-समुग्गाणं ।

६. वृत्ती सङ्ग्रहणीगाथाद्वयमपि दृश्यते—

चंदणकलसा भिगारगा य, आयंसया य थाला य ।

पातीउ सुपड्डा मणगुलिका वायकरगा य ॥१॥

चित्ता रयणकरंडा, ह्य-गय-नरकंठगा य चंगेरी ।

पडलग-सीहासण-छत्त-चामरा समुग्गय-झया य

७. राय० सू० २०९-२३७; तस्याश्च सुधर्मभिमेन स्वरूपवर्णन-पूर्वादिद्वारत्रयवर्णनमुखमण्डप-प्रेक्षा-गृहमण्डपादिवर्णनादिप्रकाररूपेण तावत् वक्तव्यं यावत् उल्लोकवर्णनम् (वृ) ।

८. X (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. असौ पाठो वृत्त्यनुसारी स्वीकृतः—तस्य च बहुसमरणीयभूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागेत्र महत्थेका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता (वृ) ।

१०. सं० पा०—अट्टजोयणाइं ।

११. राय० सू० २४५ ।

१२. अत्र प्रारम्भे 'उववायसभाए णं उवरि' इति वाक्यशेषः ।

१३. राय० सू० २३३ ।

२६३. से णं हराए एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसंडेण सब्बओ समंता संपरि-
क्खित्ते । पउमवरवेइया वणसंडवण्णओ^१ ॥

२६४. तस्स णं हरयस्स त्तिदिसं तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता^२ ॥

० अभिसेगसभा-पदं

२६५. तस्स णं हरयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा अभिसेगसभा पण्णत्ता
सुहम्मागमएणं जाव^३ गोमाणसियाओ । मणिपेढिया^४ सीहासणं अपरिवारं^५ जाव^६

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । राय० सू० १८६-२०१ ।

२. राय० सू० २३४ ।

३. राय० सू० २०६-२३७ ।

४. राय० सू० २६१ ।

५. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ) । २६५, २६७, २६९ एषु त्रिष्वपि सूत्रेषु 'सीहासणं अपरिवारं'
इति पाठो युज्यते, यद्यपि आदर्शेषु तथा पंडितवेचरदास-संपादितवृत्तौ 'सीहासणं सपरिवारं' पाठो
लभ्यते, किन्तु २६५ सूत्रे 'जाव दामा' इति समर्पणवाक्येन 'सीहासणं अपरिवारं' अस्यैव पाठस्य
पुष्टिर्जायते । वृत्तिकृता अपरिवारं सिहासनं व्याख्यातम्, किन्तु लिपिदोषेण मुद्रणदोषेण वा अपरि-
वारस्य स्थाने सपरिवारं जातम् । जीवाजीवाभिगमवृत्त्यवलोकनेन एतत् स्पष्टं भवति ।

जीवाजीवाभिगमवृत्ति (पत्र २३६)

सिहासनवर्णकः प्राग्वत्, नवरमत्र परिवार-
भूतानि भद्रासनानि न वक्तव्यानि ।

तस्याश्चाभिषेकसभाया उत्तरपूर्वस्यां
दिशि अत्र महत्येकालंकारसभा प्रज्ञप्ता,
सा च प्रमाणस्वरूपद्वारत्रयमुखमण्डप-
प्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनप्रकारेणाभिषेक -
सभावत्तावद्वक्तव्या यावदपरिवारं
सिहासनम् ।

तस्या अलंकारसभाया उत्तरपूर्वस्यां
दिशि अत्र महत्येका व्यवसायसभा प्रज्ञप्ता,
सा चाभिषेकसभावत्प्रमाणस्वरूपद्वारत्रय-
मुखमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद्वक्तव्या
यावदपरिवारं सिहासनम् ।

रायपसेणइयवृत्तौ 'न वक्तव्यानि' स्थाने 'च वक्तव्यानि' मुद्रितमस्ति । वृत्त्यनुसारेण अलंकारस-
भायाः व्यवसायसभायाश्च अभिषेकसभावत् वर्णनमस्ति तेनानयोरपि सूत्रयोरपरिवारं सिहासनं
युज्यते । अत्र वृत्तौ च 'यावदपरिवारं सिहासनं' स्थाने 'यावत् परिवारसिहासनं' तथा 'यावत्
सिहासनं सपरिवारं' इति मुद्रितमस्ति । जीवाजीवाभिगमवृत्तेः सन्दर्भे तथा प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तेर्हर्दिन
मुद्रितपाठोऽशुद्धः प्रतीयते । तेनास्माभिः 'अपरिवारं' इति पाठः स्वीकृतः ।

६. राय० सू० ३७-४० ।

रायपसेणइयवृत्ति (पृ० २३५, २३६)

सिहासनवर्णकः प्राग्वत् नवरमत्र परिवार-
भूतानि भद्रासनानि च वक्तव्यानि ।

तस्याश्च अभिषेकसभाया उत्तरपूर्वस्यां
दिशि अत्र महत्येका अलंकारसभाप्रज्ञप्ता,
सा अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-द्वारत्रय-
मुखमण्डप - प्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनप्रकारेण
तावद् वक्तव्या यावत् परिवारसिहासनम् ।

तस्याश्च अलंकारसभाया उत्तरपूर्वस्यां
दिशि अत्र महत्येका व्यवसायसभा प्रज्ञप्ता,
सा च अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-
द्वारत्रय-मुखमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद्
वक्तव्या यावत् सिहासनं सपरिवारम् ।

दामा चिट्ठंति ॥

२६६. तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सुबहु अभिसेयभंडे' संनिखित्ते चिट्ठइ । अट्ठइ मंगलगा तहेव' ॥

• अलंकारियसभा-पदं

२६७. तीसे णं अभिसेगसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, 'एत्थ णं महेगा' अलंकारियसभा पण्णत्ता । जहा' सभा सुधम्मा मणिपेढिया अट्ठ जोयाणाइ' सीहासणं अपरिवारं' ॥

२६८. 'तत्थ णं' सूरियाभस्स देवस्स सुबहु अलंकारियभंडे संनिखित्ते चिट्ठति । सेसं तहेव' ॥

• ववसायसभा-पदं

२६९. तीसे णं अलंकारियसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा ववसायसभा पण्णत्ता । जहा उववायसभा जाव' मणिपेढिया सीहासणं अपरिवारं' अट्ठइ मंगलगा ॥

२७०. तत्थ' णं सूरियाभस्स देवस्स एत्थ णं महेगे पोत्थयरयणे सन्निखित्ते चिट्ठइ । तस्स णं पोत्थयरयणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—'रिट्ठामईओ कंविआओ', तवणिज्जमए' दोरे, नाणामणिमए मंठी, अंकमयाइ पत्ताइ', वेरुलियमए' लिप्पासणे', 'तवणिज्जमई संकला, रिट्ठामए छादणे', रिट्ठामई मसी, वइरामई लेहणी', रिट्ठामयाइ अवखराइं, धम्मिए लेखे' ॥

१. आभि' (क, ख, ग, घ) ।

२. अत्र प्रारम्भे 'अभिसेयसभाए णं उव्वरि' इति वाक्यशेषः ।

३. राय० सू० २१-२३ ।

४. महा (क, ख, ग, घ) ।

५. अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-द्वारत्रय-मुखमण्डप-प्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद् वक्तव्या यावत् परिवारसिंहासनम् (वृ) । राय० सू० २०६-२३७ ।

६. राय० सू० २६१ ।

७. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ) ; द्रष्टव्यं २६५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । राय० सू० ३७-४० ।

८. तस्यो (क, ख, ग, घ) ।

९. राय० सू० २६६ ।

१०. अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-द्वारत्रय-मुखमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद् वक्तव्या यावत् सिंहासनं सपरिवारम् (वृ) । राय० सू० २६०-२६१ ।

११. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ) ; द्रष्टव्यं

२६५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । राय० सू० ३७-४० ।

१२. अत्र प्रारम्भे 'ववसायसभाए णं उव्वरि' इति वाक्यशेषः । राय० सू० २१-२३ ।

१३. तस्स (क, ख, ग, घ) ।

१४. रयणामइयाइ रिट्ठाइं उकंठियाइं (क, ख, ग, च, छ) ; रिट्ठकंठियाइं रयणामयाइं (घ) ।

१५. रयणामए (वृ) ; जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र २३७) रजतमयो दवरगः ।

१६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१७. नाणामणिमए (वृ) ; जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र २३७) नाणामणिमयं लिप्पासनम् ।

१८. लिवासणे (क, ख, ग, घ) ; लिबीमाणे (घ) ।

१९. रिट्ठामए छंदणे तवणिज्जामई संकला (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२०. लेहिणी (घ) ।

२१. सत्थे (क, ख, ग, घ, च, छ, वृपा) ।

२७१. ववसायसभाए णं उवरि अट्ठमंगलगा^१ ॥

२७२. तीसे^२ णं ववसायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, महेगे बलिपीढे पण्णत्ते—अट्ठ जोय-णाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

२७३. तस्स णं बलिपीढस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा^३ नंदा पुक्खरिणी पण्णत्ता । हरयसरिसा^४ ॥

सूरियाभदेव-पदं

[तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरियाभे देवे सूरियाभे विमाणे उववातसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिते अंगुलस्स असंखेज्जतिभागमेत्तीए ओगाहणाए उववण्णे ।]^५

२७४. तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववण्णमित्तए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं^६ गच्छइ, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए सरीस्पज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाण-पज्जत्तीए भासमणपज्जत्तीए]^७ ॥

२७५. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था—‘किं मे पुंवि करणिज्जं ? किं मे पच्छा करणिज्जं ? किं मे पुंवि सेयं ? किं मे पच्छा सेयं ? किं मे पुंवि पि पच्छा वि’^८ हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ? ॥

२७६. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा सूरियाभस्स देवस्स इमेयारूवं अज्झत्थियं^९ *चित्तियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं^{१०} समुप्पण्णं समभिजाणित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं सूरियाभे विमाणे सिद्धायतणंसि जिणपडिमाणं जिणुस्सेहपमाणमेत्ताणं अट्ठसयं संनि-खित्तं चिट्ठति । सभाए णं सुहम्मए माणवए चेइए खंभे, वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूओ जिण-सकहाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति । ताओ णं देवाणुप्पियाणं अण्णेसि च बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य अच्छणिज्जाओ^{११} *वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ माणणि-ज्जाओ सक्कारणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं^{१२} पज्जुवासणिज्जाओ । तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुंवि करणिज्जं, तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छा करणिज्जं, तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुंवि सेयं, तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छा सेयं, तं एयण्णं^{१३} देवाणुप्पियाणं

१. राय० सू० २१-२३ ।

२. प्रयुक्तादर्शेषु २७२, २७३ सूत्रयोः क्रमभेदो विद्यते ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. राय० सू० २६२-२६४ ।

५. एतत् कोष्ठकर्तिसूत्रं आदर्शेषु नोपलभ्यते, वृत्तौ व्याख्यातमस्ति ।

जीवाजीवाभिगमस्य ३।४३६ सूत्रेणापि अस्य समर्थनं जायते ॥

६. पज्जत्तिभावं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. कोष्ठकान्तरवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

८. किं मे पुंवि सेयं किं मे पुंवि पच्छाएवि (क, ख, ग, घ, च)

९. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव समुप्पण्णं ।

१०. सं० पा०—अच्छणिज्जाओ जाव पज्जुवास-णिज्जाओ ।

११. एतं णं (क, ख, ग, घ) ।

पुर्व्वि पि^१ पच्छा वि हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति ॥

सूरियाभस्स अभिसेग-पदं

२७७. तए णं से सूरियाभे देवे तेसि सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठु^२ *चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^३ हियए^४ सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता उववायसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छइ, जेणेव हरए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हरयं अणुपयाहिणीकरे-माणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पुरत्थि-मिल्लेणं^५ तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जलावगहं करेइ, करेत्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकिड्डं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परममूर्ईभूए हरयाओ पच्चोत्तरइ, पच्चोत्तरित्ता जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अभिसेयसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे ॥

२७८. तए णं सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिओगिए देवे सद्दवेंति, सद्दवेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सूरियाभस्स देवस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेह ॥

२७९. तए णं ते आभिओगिआ देवा सामाणियपरिसोववण्णेहि देवेहि एवं वुत्ता समाणा हट्ठु^६ *तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं^७ हियया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं देवा ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं^८ पडिसुणंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं^९ *दंडं निसिरंति, तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रयणाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहावायरे पोग्गले परिसाडेंति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायंति, परियाइत्ता^{१०} दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता अट्ठसहस्सं^{११} सोवण्णिद्याणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं रूपमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरूपमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं रूपमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरूपमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं भोमिज्जाणं कलसाणं, एवं—भिगाराणं आयंसाणं थालाणं पाईणं

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव हियया ।

३. ह्यहियए (ख, ग, घ, च, छ) ।

४. पुरत्थिमेणं (क, ख, ग, घ, च) ।

५. सं० पा०—हट्ठु जाव हियया ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सं० पा०—जोयणाइं जाव दोच्चं ।

८. अट्ठसयं (क, ख, ग, घ, च) ।

सुपतिट्टाणं 'मणोगुलियाणं वायकरगाणं चित्ताणं' रथणकरंडगाणं, पुष्पचंगेरीणं^१
 *मल्लचंगेरीणं चुण्णचंगेरीणं गंधचंगेरीणं वत्थचंगेरीणं आभरणचंगेरीणं सिद्धत्थचंगेरीणं^२
 लोमहत्थचंगेरीणं, पुष्पपडलगाणं^३ *मल्लपडलगाणं चुण्णपडलगाणं गंधपडलगाणं वत्थ-
 पडलगाणं आभरणपडलगाणं सिद्धत्थपडलगाणं^४ लोमहत्थपडलगाणं, सीहासणाणं छत्ताणं
 चामराणं, तेल्लसमुग्गाणं^५ *कोट्टसमुग्गाणं पत्तसमुग्गाणं चोयसमुग्गाणं तगरसमुग्गाणं
 एलासमुग्गाणं हरियालसमुग्गाणं हिगुलयसमुग्गाणं मणोसिलासमुग्गाणं^६ अंजणसमुग्गाणं
 अट्टसहस्सं जयाणं, अट्टसहस्सं^७ धूवकडुच्छुयाणं^८ विउव्वंति, विउव्वित्ता ते साभाविए य वेउ-
 व्विए य कलसे य जाव कडुच्छुए य गिण्हति, गिण्हित्ता सूरियाभाओ विमाणाओ पडि-
 निक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए^९ *चंडाए जवणाए सिग्धाए
 उद्धयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झमज्जेणं^{१०} वीतिवयमाणा-
 वीतिवयमाणा जेणेव खीरोदयसमुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता खीरोयगं
 गिण्हंति, गिण्हित्ता 'जाइं तत्थुप्पलाई'^{११} *पउमाइं कुमुयाइं गलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं
 पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं सयवत्ताइं^{१२} सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव
 पुक्खरोदए समुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरोदयं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं
 तत्थुप्पलाई जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता^{१३} जेणेव समयखेत्ते जेणेव
 भरहेरवयाइं वासाइं जेणेव मागहवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति,
 उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता तित्थमट्ठियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव
 गंग-सिधू-रत्ता-रत्तवईओ महानईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं^{१४}
 गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्ठियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चुल्लहिमवंतसिहरिवासहर-
 पव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे^{१५} सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले
 सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पउम-पुंडरीयदहा^{१६} तेणेव उवागच्छंति,
 उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाई जाव सहस्सपत्ताइं ताइं
 गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव हेमवय-एरण्णवयाइं वासाइं जेणेव रोहियं^{१७}-रोहियंस-सुवण्णकूल-
 रूपकूलाओ महानईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—पुष्पचंगेरीणं जाव लोमहत्थ-
चंगेरीणं ।

३. सं० पा०—पुष्पपडलगाणं जाव लोमहत्थ-
पडलगाणं ।

४. सं० पा०—तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणस-
मुग्गाणं ।

५. अट्टसयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. *च्छुयाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सं० पा०—चवलाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं
जाव वीतिवयमाणा ।

८. सं० पा०—तत्थुप्पलाई जाव सहस्सपत्ताइं ।

९. जाइं तत्थुप्पलाई ताइं गेण्हंति गेण्हित्ता (क,
ख, ग, घ) ।

१०. सरितोदगं (जी० ३।४४५) ।

११. सव्वतूयरे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. *दहे (छ) ।

१३. × (क, ख, ग, घ) ।

उभओकूलमट्टियं गिण्हंति, गिण्हत्ता जेणेव 'सद्वावाति-वियडावाति'-वट्टवेयड्डपव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे^१ *सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हत्ता^२ जेणेव महाहिमवंत-रुप्पिवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छंति^३, *उवागच्छित्ता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति गिण्हत्ता^४ जेणेव महापउम-महापुंडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गिण्हंति, गिण्हत्ता^५ *जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता^६ जेणेव हरिवासरम्मगवासाइं जेणेव हरि^७-हरिकंत-नरनारिकंताओ^८ महाणईओ तेणेव उवागच्छंति^९, *उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति गेण्हित्ता^{१०} जेणेव गंधावाति-मालवंतपरियागा वट्टवेयड्डपव्वया तेणेव^{११} *उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हित्ता^{१२} जेणेव गिसिद्ध-णीलवंत-वासधरपव्वया^{१३} *तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हित्ता^{१४} जेणेव तिगिच्छि^{१५}-केसरि-द्दहाओ तेणेव उवागच्छंति^{१६}, *उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता^{१७} जेणेव पुव्वविदेहावरविदेहवासाइं^{१८} जेणेव सीता^{१९}-सीतोदाओ महाणदीओ तेणेव उवागच्छंति^{२०}, *उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता^{२१} जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव सव्वमागह्वरदामपभासाइं तित्थाइं *तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता तित्थमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव^{२२} सव्वंतरणईओ^{२३} *तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता^{२४} जेणेव सव्वक्खारपव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे^{२५} *सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता^{२६} जेणेव मंदरे पव्वते जेणेव भट्टसालवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव णंदणवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे जाव

१. सद्वावतिवियडावतिपरियागा (क, ख, ग, घ, च, छ) स्वीकृतपाठः वृत्त्यनुसारी वसंतंते । द्रष्टव्यं 'ठाणं' ४।३०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

२. सं० पा०—सव्वतूयरे तहेव जेणेव ।

३. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव ।

४. सं० पा०—गिण्हित्ता तहेव जेणेव ।

५. हरिसलिल (क, ख, ग घ, च, छ) ।

६. नरकंतो (घ); नारिकंताओ (छ) ।

७. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव ।

८. सं० पा०—तेणेव तहेव जेणेव ।

९. सं० पा०—वासधरपव्वया तहेव जेणेव ।

१०. तिगिच्छि (क, घ, ग, घ, च) ।

११. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव ।

१२. महाविदेहेवासे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. × (क, ख, ग, घ) ।

१४. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव ।

१५. जीवाजीवाभिगमे (३।४४५) 'वक्खारपव्वया' पाठः अतः पूर्वं विद्यते ।

१६. सं० पा०—सव्वंतरणईओ जेणेव ।

१७. सं० पा०—सव्वतूयरे तहेव जेणेव ।

सव्वोसहिंसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं च दिव्वं च 'सुमणदामं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पंडगवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे जाव सव्वोसहिंसिद्धत्थए च सरसं च गोसीसचंदणं च दिव्वं च' सुमणदामं दहरमलयसुगंधियगंधे गिण्हंति, गिण्हित्ता एगतो मिलायंति, मिलाइत्ता ताए उक्किट्ठाए^१ *तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्धाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्धानं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा- वीईवयमाणा^२ जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव अभिसेयसभा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वट्ठावेत्ति, वट्ठावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं^३ उवट्ठवेत्ति ॥

२८०. ताए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ, चत्तारि अगमहिंसीओ सपरिवारातो, तिण्णि परिसाओ, सत्त अणियाओ, सत्त अणियाहिंवइणो^४, *सोलस आयरक्ख- देवसाहस्सीओ^५, अण्णेवि बह्वे सूरियाभविमाणवासिणो देवा य देवीओ य तेहिं साभाविएहि य वेउव्विएहि य वरकमलपइट्ठाणेहि^६ सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहि चंदणकयचच्चाएहि आविद्धकंठेगुणेहि पउमुप्पलपिहाणेहि^७ सुकुमालकरयलपरिग्गहिएहि अट्ठसहस्सेणं^८ सोवणि- याणं कलसाणं^९, *अट्ठसहस्सेणं रुपमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं सुवण्णरुप्पामयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसह- स्सेणं रुपमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं^{१०}, अट्ठसहस्सेणं भोमिज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहि सव्वमट्ठियाहिं सव्वतूयरेहिं^{११} *सव्वपुप्फेहि सव्वगंधेहि सव्वमल्लेहिं^{१२} सव्वोसहिंसिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए जाव^{१३} नाइयरवेणं^{१४} महया-महया इंदाभिसेएणं अभिसिचंति ॥

अभिसेगकाले देवकिच्च-पदं

२८१. ताए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स महया-महया इंदाभिसेए वट्ठमाणे—अप्पेग- लिया देवा सूरियाभं विमाणं नच्चोयगं नातिमट्ठियं पविरलफुसियरयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगवासं वासंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं हयरयं तट्ठुरयं भट्ठुरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेत्ति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुइ^{१५}-संमट्ठुत्थंतरावणवीहियं करेत्ति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं मंचाइमंचकलियं करेत्ति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं णाणाविहरागोसियझयपडागाइपडागमंडियं करेत्ति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरस्तचंदणदहर-

१. × (क, ख, घ, घ) ।

२. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव जेणेव ।

३. *सेयं तो (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—अणियाहिंवइणो जाव अण्णेवि ।

५. *ट्ठाणेहि य (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. *सएणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—कलसाणं जाव अट्ठसहस्सेणं ।

९. सं० पा०—सव्वतूयरेहि जाव सव्वोसहिंसिद्ध- त्थएहि ।

१०. राय० सू० १३ ।

११. नाइएणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. सुइं (क, ख, ग, घ) ; सुयं (छ) ।

दिष्णपंचंगुलितलं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं उवचियवंदणकलसं वंदण-
घडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभासं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं आसत्तोसत्त-
विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं पंचवण्ण-
सुरभि'-मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं कालागरु-
पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेतंगंधुद्धुयाभिरामं करेति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं
विमाणं सुगंधगंधियं' गंधवट्टिभूतं करेति, अप्पेगतिया देवा हिरण्णवासं वासंति, सुवण्ण-
वासं वासंति, रयणवासं वासंति, वइरवासं वासंति, पुप्फवासं वासंति, 'फलवासं वासंति',
मल्लवासं वासंति, गंधवासं वासंति, चुण्णवासं वासंति, आभरणवासं वासंति, अप्पेगतिया
देवा हिरण्णविहिं भाएंति, एवं—सुवण्णविहिं रयणविहिं' पुप्फविहिं फलविहिं मल्लविहिं
गंधविहिं चुण्णविहिं आभरणविहिं' भाएंति, अप्पेगतिया देवा चउव्विहं वाइत्तं वाएंति—
तत्तं वितत्तं घणं सुसिरं, अप्पेगइया देवा चउव्विहं गेयं गायंति, तं जहा—उक्खित्तायं
पायत्तायं' मंदायं रोइयावसाणं', अप्पेगतिया देवा दुयं नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगतिया देवा
विलंबियं णट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगतिया देवा दुय-विलंबियं णट्टविहिं उवदंसेति,
अप्पेगतिया देवा अंचियं नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगतिया देवा रिभियं नट्टविहिं उवदंसेति,
अप्पेगइया देवा अंचिय-रिभियं नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगइया देवा आरभडं नट्टविहिं
उवदंसेति, अप्पेगइया देवा भसोलं नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगइया देवा आरभड-भसोलं
नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगइया देवा उप्पायनिवायपसत्तं संकुचिय-पसारियं रियारियं'
भंत-संभंतं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगतिया देवा चउव्विहं अभिणयं अभिण-
यंति, तं जहा—दिट्ठंतियं पाडंतियं सामन्नओविणिवाइयं' लोगमज्झावसाणियं, अप्पे-
गतिया देवा 'बुक्कारेति, अप्पेगतिया देवा पीणेति, अप्पेगतिया लासेति, अप्पेगतिया
तंडवेति"', अप्पेगतिया बुक्कारेति, पीणेति, लासेति, तंडवेति, अप्पेगतिया अप्फोडेंति,
अप्पेगतिया वग्गति, अप्पेगतिया तिवइं छिंदति, अप्पेगतिया अप्फोडेंति, वग्गति, तिवइं
छिंदति, अप्पेगतिया ह्यहेसियं करेति, अप्पेगतिया हत्थिगुलगुलाइयं करेति, अप्पेगतिया
रहघणघणाइयं करेति, अप्पेगतिया ह्यहेसियं करेति, हत्थिगुलगुलाइयं करेति, रहघण-
घणाइयं करेति, अप्पेगतिया 'उच्छलेंति, अप्पेगतिया पोच्छलेंति"', अप्पेगतिया उक्किट्ठियं

१. 'वण्णसरस्सुरभि (ओ० सू० २) ।

२. सुगंधियं (घ); सुगंधवरगंधगंधिए (ओ०
सू० २) ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. अतः परं 'वइरविहिं' इति पाठः प्राप्तोस्ति,
किन्तु आदर्शेषु नोपलभ्यते जीवाजीवाभिगम-
वृत्तौ 'वइरवासं वइरविहिं' एतौ द्वावपि न स्तो
व्याख्यातौ ।

५. तत्थ अप्पेगइया देवा आभरणं (क, ख, ग,
घ, च, छ) ।

६. पायत्तायं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. रोइदां (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं
११५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

८. रेयाइयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. सामंतो (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं ११७
सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१०. वक्कारेति अप्पेगतिया पीणेति अप्पेगतिया
आयासेति अप्पेगतिया तंडावेति (क, च) ।

११. उच्छलेंति अप्पेगतिया पच्छलेंति (क, ख, ग,
घ) ।

करेति, अप्पेगतिया उच्छलेति, पोच्छलेति, उक्किट्ठियं करेति, अप्पेगतिया ओवयंति^१, अप्पेगतिया उप्पयंति, अप्पेगतिया परिवयंति, अप्पेगइया तिण्णि वि, अप्पेगइया सीहनायं नयंति, अप्पेगतिया पाददहरयं करेति, अप्पेगतिया भूमिच्चवेडं दलयंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि, अप्पेगतिया गज्जंति, अप्पेगतिया विज्जुयायंति, अप्पेगइया वासं वासंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि करेति, अप्पेगतिया जलंति, अप्पेगतिया तवंति, अप्पेगतिया पतवेंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि, अप्पेगतिया हक्कारेति, अप्पेगतिया थुक्कारेति^२, अप्पेगतिया थक्कारेति, अप्पेगतिया 'साइं साइं नामाइं साहेति', अप्पेगतिया चत्तारि वि, अप्पेगतिया^३ देवसण्णिवायं करेति, अप्पेगतिया देवुज्जोयं करेति, अप्पेगइया देवुक्कलियं करेति, अप्पेगइया देवकहकहगं^४ करेति, अप्पेगतिया देवदुहदुहगं^५ करेति, अप्पेगतिया चेलुक्खेवं करेति, अप्पेगइया देवसण्णिवायं, देवुज्जोयं, देवुक्कलियं, देवकहकहगं, देवदुहदुहगं, चेलुक्खेवं करेति, अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्तहत्थगया, अप्पेगतिया वंदणकलसहत्थगया अप्पेगतिया भिगारहत्थगया जाव^६ धूवकडुच्छुयहत्थगया हट्ठुट्ठु^७ *चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणं^८ हियया^९ सन्वओ समंता आहावंति परिधावंति ॥

वद्दावण-पदं

२८२. तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्ख-देवसाहस्सीओ अण्णे य बहवे^{१०} सूरियाभरायहाणिवत्थव्वा देवा य देवीओ य महया-महया इदाभिसेगेणं अभिसिचंति, अभिसिचित्ता पत्तेयं-पत्तेयं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं वयासी—जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! 'जय-जय नंदा ! भद्दं ते'^{११}, अजियं जिणाहि, जियं च पालेहि, जियमज्जे वसाहि—इंदो इव देवाणं, चंदो इव ताराणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, भरहो इव मणुयाणं—बहूइं पलिओवमाइं बहूइं सागरोवमाइं बहूइं पलिओवम-सागरोवमाइं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव आयरक्ख-देवसाहस्सीणं सूरियाभस्स विमाणस्स अण्णेसि च बहूणं सूरियाभविमाणवासीणं देवाण य देवीण य 'आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्ठित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहराहि त्ति कट्ठु महया-महया सद्देणं'^{१२} जय-जय सद्दं पउजंति ॥

१. जीवाजीवाभिगमे (३।४४७) केषाञ्चित् १०. बहवे य (क, ख, ग, घ) ।

पदानां व्यत्ययो दृश्यते ।

२. वुक्कारेति (च, छ); थूकुर्वन्ति (वृ) ।

११. जय नंदा भद्दं ते (क, ख, ग, छ); जय जय भद्दं ते (घ) ।

३. साइं नामाइं सावेंति (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. यद्यपि प्रतिषु 'आहेवच्चं जाव महया-महया कारेमाणे पालेमाणे विहराहि' एवं पाठो लभ्यते, किन्तु लिपिदोषादसौ पाठः अशुद्धो जात इति प्रतीयते । जीवाजीवाभिगमे (३।४४८) एष पाठः समीचीनो वर्तते—आहेवच्चं जाव आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहराहित्ति कट्ठु महता-महता सद्देणं जय-जय सद्दं पउजंति ।

४. अप्पेगइया देवा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. देवां (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. दुहदुहगं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. राय० सू० २७६ ।

८. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव हियया ।

९. अतः परं 'सूरियाभे विमाणे' इति पाठोपेक्ष्यते, द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।४४७ सूत्रम् ।

अलंकरण-पदं

२८३. तए णं से सूरियाभे देवे महया-महया इंदाभिसेगेणं अभिसित्ते समाणे^१ अभिसेयसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव अलंकारियसभा^२ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अलंकारियसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरे-माणे अलंकारियसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

२८४. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा अलंकारियभंडं उवट्ठेति ॥

२८५. तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिपति, अणुलिपित्ता नासा-नीसास-वाय-वोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेणं धवलं कणग-खच्चियंत-कम्मं आगासफालिय-समप्पभं दिव्वं देवदूसजुयलं नियंसेति, नियंसेत्ता हारं पिणिद्धेति, पिणिद्धेत्ता अद्धहारं पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता एगावलि पिणिद्धेति, पिणिद्धेत्ता मुत्तावलि पिणिद्धेति, पिणिद्धेत्ता रयणावलि पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता एवं—अंगयाइं केयूराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं^३ दसमुद्दाणंतगं विकच्छसुत्तगं मुरवि कंठमुरवि पालबं कुंडलाइं चूडा-मणिं चित्तरयणसंकडं^४ मउडं—पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्पखखगं पिव अप्पाणं अलंकिय-विभूसियं करेइ, करेत्ता दहरमलय-सुगंधगंधिएहिं गायाइं भुकुंडेति^५ दिव्वं च सुमणदामं पिणिद्धेइ ॥

२८६. तए णं से सूरियाभे देवे केसालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं वत्था-लंकारेणं—चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकियविभूसिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता अलंकारियसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिकखमइ, पडि-णिकखमित्ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छति, ववसायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे^६ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे^७ सण्णिसण्णे ॥

२८७. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा पोत्थयरयणं उवर्णेति^८ ॥

सिद्धायत्तणपवेस-पदं

२८८. तते णं से सूरियाभे देवे पोत्थयरयणं गिण्हति, गिण्हित्ता 'पोत्थयरयणं भुयइ,

१. माणे (क, ख, ग, घ) ।

इति पाठो व्याख्यातोस्ति ।

२. आलंकारिया^९ (क, ख, ग) ।

५. भखंडेइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ; द्रष्टव्यं

३. कडिसुत्तगा (क, ख, ग, घ, च) ।

जीवाजीवाभिगमस्य ३।४५१ सूत्रस्य पादटिप्प-
णम् ।

४. प्रयुक्तादर्शेषु एष पाठो नोपलभ्यते, वृत्तौ एष

६. सं० पा०—सीहासणे जाव सण्णिसण्णे ।

व्याख्यातोस्ति । भगवत्यां (६।१६०) 'एवं

जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं'

७. उवणमंति (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

इति समर्पणपाठोस्ति, तद्वृत्तौ 'रयणसंकडुक्कडं'

मुहत्ता" पोत्थयरयणं विहाडेइ, विहाडित्ता पोत्थयरयणं वाएति, वाएत्ता धम्मियं ववसायं 'ववसइ, ववसइत्ता" पोत्थयरयणं पडिणिक्खवइ', पडिणिक्खवित्ता सीहासणातो अम्भु-
ट्ठेति, अम्भुट्ठेत्ता ववसायसभातो पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता णंदं पुक्खरिणिं पुरत्थिमिल्लेणं
तोरणेणं तिसोवाणपडिक्खवणं पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता हत्थपादं पक्खालेति, पक्खालेत्ता
आयंते चोक्खे परमसुईभूए' एगं महं सेयं रययामयं विमलं सलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहा-
गितिसमाणं भिगारं पगेण्हति, पगेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइ" *पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं
सुभगाइं सोगंधियाइं पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं सयवत्ताइं° सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हति,
गेण्हित्ता णंदातो पुक्खरिणीतो 'पच्चोत्तरति, पच्चोत्तरित्ता" जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहा-
रेत्थ गमणाए ॥

२८६. तए णं 'तस्स सूरियाभस्स देवस्स" चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ जाव
सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अण्णे य वह्वे सूरियाभविमाणवासिणो° वैमाणिया देवा य°
देवीओ य अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्ताहत्थगया सूरियाभं देवं पिट्ठतो-पिट्ठतो
समणुगच्छंति ।

२८७. तए णं 'तस्स सूरियाभस्स देवस्स" आभिओगिया देवा य देवीओ य अप्पेगतिया
वंदणकलसहत्थगया जाव" अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्थगया हट्ठुट्ठु"-*चित्तमाणंदिया
पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया° सूरियाभं देवं पिट्ठतो-पिट्ठतो
समणुगच्छंति ॥

२८८. तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहि जाव आयरक्खदेवसाह-
स्सीहि अण्णेहि वह्वि य" *सूरियाभविमाणवासीहि वैमाणिएहि° देवेहि य देवीहि य सद्धि
संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव" नातियरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता
सिद्धायतणं° पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. राय० सू० १३ ।

२. गिण्हति गिण्हित्ता (क, ख, ग) ; गिण्हति
गिण्हित्ता (घ) ।

३. पडिणिक्खवइ (क) ; पडिक्खवइ (ख, ग, घ) ।

४. × (क, ख, ग, च, छ) ।

५. सं० पा०—उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ।

६. पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता (क, ख, ग, घ, च,
छ) ।

७. तं सूरियाभं देवं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—सूरियाभविमाणवासिणो जाव
देवीओ ।

९. तं सूरियाभं देवं (क, ख, ग, च, छ) ।

१०. राय० सू० २७६ ।

११. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव सूरियाभं ।

१२. सं० पा०—बह्वि य जाव देवेहि ।

१४. जीवाजीवाभिगमे (३।४५७) अतोप्रे यः
पाठोस्ति स प्रकरणदृष्ट्या सङ्गतोस्ति ।
प्रस्तुतसूत्रदर्शे स नोपलभ्यते । वृत्तिश्च
संक्षिप्तास्ति किन्तु तं पाठं बिना प्रकरण-
सम्बन्धो नैव जायते, स च एवमस्ति—
अणुप्पयाहिणीकरेमाणे - अणुप्पयाहिणीकरेमाणे
पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपवि-
सित्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेति,
करेत्ता जेणेव मणिपेठिया जेणेव देवच्छंदए
जेणेव जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामु-
सित्ता जिणपडिमाओ पमज्जति, पमज्जित्ता
दिब्बाए दग्धाराए ण्हावेति, ण्हावित्ता सरसेणं

जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता जिणपडिमाणं आलोए पणाम करेति, करेत्ता लोमहत्थयं गिण्हति, गिण्हिता 'जिणपडिमाणं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जिता' जिणपडिमाओ सुरभिणा' गंधोदएणं ण्हाएइ, ण्हाइत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायार्इ अणुलिपइ, अणुलिपइत्ता, जिणपडिमाणं अहयाइ देवदूसजुयलाइं नियंसेइ, नियंसेत्ता 'अग्गेहि वरेहि गंधेहि मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं वण्णारुहणं चुण्णारुहणं गंधारुहणं आभरणारुहणं' करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहग्गहियकरयलपब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता जिणपडिमाणं पुरतो अच्चेहि सण्हेहि' रययामएहि अच्छरसा-तंदुलेहि अट्ठ-मंगले आलिहइ, तं जहा—सोत्थियं' *सिरिवच्छं नंदियावत्तं वद्धमाणं भद्दासणं कलसं मच्छं' दप्पणं ॥

० थुइ-पदं

२६२. तयाणंतरं च णं चंदप्पभ-वइरवेरुलिय'-विमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गंधुत्तमाणुविद्धं च धूववट्टि विणिम्मयंतं वेरुलियमयं कडुच्छयं पग्गहिय पयत्तेणं' धूवं दाऊण जिणवराणं सत्तट्ट पदाणि ओसरति, ओसरिता दसंगुलि अंजलि करियमत्थयम्मि य पयत्तेणं,' अट्ठसयविमुद्धगंधजुत्तेहि अत्थजुत्तेहि' अपुणरुत्तेहि महावित्तेहि संथुणइ, संथुणिता' वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ', निवाडित्ता ईसि पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं वयासी—नमोत्थुणं अरहंताणं भगवताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोमुत्तमाणं लोगणाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं

गोसीसचंदणेणं गाताइ अणुलिपइ, अणुलिपित्ता जिणपडिमाणं अहयाइ देवदूसजुयलाइं नियंसेइ, नियंसेत्ता अग्गेहि वरेहि गंधेहि मल्लेहि य अच्चेति, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं वण्णारुहणं चुण्णारुहणं गंधारुहणं आभरणारुहणं करेति, करेत्ता जिणपडिमाणं पुरतो अच्चेहि सण्हेहि रययामएहि अच्छरसा-तंदुलेहि अट्ठ-मंगले आलिहति, आलिहिता कयगाहग्गहित-करतलपब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलितं करेति, करेत्ता चंदप्पभ'

तोस्ति ।

४. सण्हेहि सेएहि (च, छ) ।

५. अच्छरसाहि (क, ख, ग, घ, च, छ) ; जीवा-जीवाभिगमवृत्तौ (पत्र २५४) अच्छरस-तन्दुलाः, पूर्वपदस्य दीर्घान्तता प्राकृतत्वात् ।

६. अट्ठ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सं० पा०—सोत्थियं जाव दप्पणं ।

८. रयणवइरवेरुइय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. पत्तयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ; पत्तेयं (घ) ।

१०. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. संथुणिता सत्तट्टपयाइं पच्चोसक्कइ पच्चोस-विकित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. निवडेइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सुरभि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. × (क, ख, ग, घ, छ) ; स्वीकृतः पाठो जीवा-जीवाभिगमवृत्तावपि (पत्र २५४) व्याख्या-

लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिह्यवरणाणं दंसणधराणं विअट्टच्छउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवं अयलं अरुअं अणंतं अक्खयं अब्बावाहं अपुणरावित्ति-सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता—

२६३. जेणेव सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता^१ दिव्वाए दग्धाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेण गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं 'दलयइ, दलइत्ता'^२ कयग्गहगहियं^३ *करयलपब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फं पुंजोवयार-कलियं करेइ, करेत्ता धूवं दलयइ, दलयित्ता—

० दाहिणिल्लं पइ गमण-पदं

२६४. जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थ-एणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दग्धाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेण गोसीसचंद-णेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्त^४ *विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता^५ धूवं दलयइ, दलयित्ता—

२६५. जेणेव दाहिणिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झ-देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता बहुमज्झ-देसभागं लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दग्धाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेण गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ, आलिहित्ता कयग्गहगहियं^३ *करयल-पब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता^५ धूवं दलयइ, दलयित्ता—

२६६. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दग्धाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेण गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्त^४ *विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयल-पब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता^५ धूवं दलयइ,

१. उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जति पमज्जित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. पंचंगुलितलं ददाति (वृ); मंडलगं आलिहइ, आलिहित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. कयग्गह* (क, ख, ग, घ, छ) ।

सं० पा०—कयग्गहगहियं जाव पुंजोवयारक-लियं ।

४. सं० पा०—आसत्तोसत्त जाव धूवं ।

५. सं० पा०—कयग्गहगहिय जाव धूवं ।

६. सं० पा०—आसत्तोसत्त कयग्गहगहिय धूवं ।

दलयित्ता—

२६७. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थं परामुसइ, परामुसित्ता खंभे य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता जहा चेव पच्चत्थिमिल्लस्स दारस्स जाव' धूवं दलयइ, दलयित्ता—

२६८. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थं परामुसति, परामुसित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता तं चेव' सव्वं ॥

२६९. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता तं चेव' सव्वं ॥

३००. जेणेव दाहिणिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्जदेसभागे जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेडिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थं परामुसइ, परामुसित्ता अक्खाडं च मणिपेडियं च सीहासणं च लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसच्चंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं *जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवघारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयगहगहियकरयल पब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलयित्ता—

३०१. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे° तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव' ॥

३०२. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे (उत्तरिल्ला खंभपंती° ?) तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव ॥

३०३. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव ॥

३०४. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° तं चेव ॥

१. राय० सू० २६६ ।

२. राय० सू० २६६ ।

३. राय० सू० २६६ ।

४. सं० पा०—पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं ।

५. सं० पा०—पच्चत्थिमिल्ले दारे तं चेव, उत्तरिल्ले दारे तं चेव, पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव, दाहिणिल्ले दारे तं चेव ।

६. राय० सू० २६६ ।

७. यथा—२६७ सूत्रे 'उत्तरिल्ला खंभपंती,' ३२५,

३३० सूत्रयोः 'दाहिणिल्ला खंभपंती' ३३५, ३४०

सूत्रयोः 'पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती'—इति पाठो

विद्यते, अतः अस्मिन् सूत्रे 'उत्तरिल्ले दारे'

इत्यस्य स्थाने 'उत्तरिल्ला खंभपंती' इति पाठो

युज्यते । किन्तु एष पाठो वृत्तौ प्रतिषु च

क्वापि नोपलब्धः तेन मूलपाठे 'उत्तरिल्लेदारे'

इत्येव सुरक्षितः ।

३०५. जेणेव दाहिणिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ *लोमहृत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता चेइय^२ थूभं च मणिपेढियं च^३ *लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता^४ दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं^५ *जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-मल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयगगहगहियकरयलपढ्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपूजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता^६ धूवं दलयइ, दलयित्ता—

३०६. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणपडिमाए आलोए पणामं करेइ, करेत्ता तं चेव^७ ॥

३०७. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव^८ सव्वं ॥

३०८. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव^९ ॥

३०९. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव^{१०} सव्वं ॥

३१०. जेणेव दाहिणिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहृत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता चेइयरुक्खं च मणिपेढियं च लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता^{११} तं चेव^{१२} ॥

३११. जेणेव दाहिणिल्ले महिदज्जए^{१३} *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहृत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता महिदज्जयं च मणिपेढियं च लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता^{१४} तं चेव^{१५} सव्वं ॥

३१२. जेणेव दाहिणिल्ला नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहृत्थगं परामुसति, परामुसित्ता तोरणं य तिसोवाणपडिरूवए य सालभजियाओ य बालरूवए य लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं^{१६} *चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयगगहगहियकरयलपढ्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपूजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता^{१७} धूवं दलयति, दलयित्ता—

० उत्तरिल्लं पइ गमण-पदं

३१३. सिद्धायतणं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला नंदापुक्खरिणी तेणेव

१. सं० पा०—उवागच्छित्ता थूभं ।

९. राय० सू० २९४ ।

२. सं० पा०—मणिपेढियं च दिव्वाए ।

१०. सं० पा०—महिदज्जए तं चेव ।

३. सं० पा०—पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं ।

११. राय० सू० २९४ ।

४. राय० सू० २९१, २९२ ।

१२. सं० पा०—गोसीसचंदणेणं पुप्फारुहणं आस-
त्तोसत्त धूवं ।

५, ६, ७. राय० सू० २९१, २९२ ।

८. सं० पा०—उवागच्छइ तं चेव ।

उवागच्छति, उवागच्छिता तं चेव' ॥

३१४. जेणेव उत्तरिल्ले महिदज्जाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३१५. जेणेव उत्तरिल्ले चेइयसुखे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ॥

३१६. जेणेव उत्तरिल्ले चेइयथूमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३१७. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा' *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं चेव' ॥

३१८. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं चेव' ॥

३१९. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं चेव' ॥

३२०. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं चेव' ॥

३२१. जेणेव उत्तरिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे जेणेव वइरामए अवखाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता जा चेव दाहिणिल्ले वत्तव्वया सा चेव' सव्वा ॥

३२२. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२३. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२४. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२५. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२६. जेणेव उत्तरिल्लस्स दारे मुहमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२७. जेणेव उत्तरिल्ले मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२८. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२९. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ,

१. राय० सू० ३१२ ।

२. राय० सू० ३११ ।

३. राय० सू० ३१० ।

४. सं० पा०—जिणपडिमा तं चेव ।

५, ६, ७, ८. राय० सू० ३०६ ।

९. राय० सू० ३०० ।

१०, ११, १२. राय० सू० २९६ ।

१३. राय० सू० २९७ ।

१४. राय० सू० २९५ ।

१५, १६. राय० सू० २९६ ।

उवागच्छिता^{११} ॥

३३०. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^{११} ॥

३३१. जेणेव सिद्धायतणस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं चेव^{११} ॥

० पुरत्थिमिल्लं पइ गमण-पदं

३३२. जेणेव सिद्धायतणस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^{११} ॥

३३३. जेणेव पुरत्थिमिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^{११} ॥

३३४. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे^{११} *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^{११} ॥

३३५. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^{११} ॥

३३६. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^{११} ॥

३३७. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ॥^{१०}

३३८. जेणेव पुरत्थिमिल्ले पेच्छाघरमंडवे^{१०} *जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघर-मंडवस्स बहुमज्झदेसभागे जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^{११} ॥

३३९. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^{११} ॥

३४०. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^{११} ॥

३४१. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^{११} ॥

१. राय० सू० २६६ ।

२. राय० सू० २६७ ।

३, ४. राय० सू० २६४ ।

५. राय० सू० २६५ ।

६. सं० पा०—दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे तं चेव पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव ।

७. राय० सू० २६६ ।

८. राय० सू० २६७ ।

९. राय० सू० २६६ ।

१०. सं० पा०—पेच्छाघरमंडवे एवं थूमे जिण-पडिमाओ वेइयरुक्खा महिदउळया नंदापुक्ख-रिणी तं चेव जाव धूवं दलइ रत्ता ।

११. राय० सू० ३०० ।

१२. राय० सू० २६७ ।

१३. राय० सू० २६७ ।

१४. राय० सू० २६६ ।

३४२. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४३. जेणेव पुरत्थिमिल्ले चेइयथूमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४४. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४५. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४६. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४७. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४८. जेणेव पुरत्थिमिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४९. जेणेव पुरत्थिमिल्ले मंहिदज्झए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३५०. जेणेव पुरत्थिमिल्ला नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

सुहम्मसभापवेस-पदं

३५१. जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसिता जेणेव' माणवए चेइयखंमे जेणेव वइरामया गोलवट्टसमुग्गा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता लोमहत्थेणं परामुसइ, परामुसिता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जिता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए विहाडेइ, विहाडेता जिणसकहाओ लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जिता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेता अग्गेहि वरेहि गंधेहि य मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेता धूवं दलयइ, दलयिता जिणसकहाओ वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु पडिणिविखवइ, पडिणिविखवित्ता माणवगं चेइयखंमे लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जिता दिग्वाए दग्धाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयिता पुप्फारुहणं जाव' धूवं दलयइ,

१. राय० सू० २९६ ।

२. राय० सू० ३०५ ।

३, ४, ५. राय० सू० ३०६ ।

६. राय० सू० ३०६ ।

७. राय० सू० ३१० ।

८. राय० सू० ३११ ।

९. राय० सू० ३१२ ।

१०. अतः 'पडिणिविखवइ' पर्यन्तं वृत्तौ (पृष्ठ २६४) भिन्नः पाठो व्याख्यातोस्ति—यत्रैव मणिपीठिका तत्रागच्छति, आलोके च जिनसकथां प्रणामं करोति, कृत्वा यत्र माणवक-

चैत्यस्तम्भो यत्र वज्रमयाः गोलवृत्ताः समुद्गकाः तत्रागत्य समुद्गकान् गृह्णाति, गृहीत्वा विघाटयति, विघाट्य च लोमहस्तकं परामृश्य तेन प्रमाज्यं उदकधारया अभ्युक्ष्य गोशीर्षचन्दनेनानुलिम्पति, ततः प्रधानैर्गन्धमाल्यैरर्चयति धूपं दहति, तदनन्तरं भूयोऽपि वज्रमयेषु गोलवृत्तसमुद्गेषु प्रतिनित्तिक्षिपति । द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य—३।५।१६ सूत्रम् ।

११. राय० सू० २९४ ।

दलयित्ता—

३५२. जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे' *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोम-
हत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता
तं चेव' ॥

३५३. जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे' *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च देवसयणिज्जं च लोमहत्थएणं पमज्जइ,
पमज्जित्ता° तं चेव' ॥

३५४. जेणेव मणिपेढिया जेणेव खुड्डागमहिदज्झए' *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च खुड्डागमहिदज्झयं च लोमहत्थएणं पमज्जइ
पमज्जित्ता° तं चेव' ॥

३५५. जेणेव पहरणकोसे चोप्पालए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं
परामुसइ, परामुसित्ता फलिहरयणपामोक्खाइं पहरणरयणाइं' लोमहत्थएणं पमज्जइ,
पमज्जित्ता दिव्वाए दग्धाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए
दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं' *जाव आभरणांरुहणं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदाम-
कलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फ-
पुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलयित्ता—

३५६. जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
जाव'° धूवं दलयइ, दलयित्ता—

३५७. जेणेव सभाए सुहम्माए दाहिणिल्ले दारे'° *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

१. सं० पा०—सीहासणे तं चेव ।

२. राय० सू० २६४ ।

३. सं० पा०—देवसयणिज्जे तं चेव ।

४. राय० सू० २६४ ।

५. सं० पा०—खुड्डागमहिदज्झए तं चेव ।

६. राय० सू० २६४ ।

७. पहरणकोसे चोप्पालं (क, ख, ग, घ, च, छ);
२४६ सूत्रस्य सन्दर्भे आदर्शगतः पाठः सम्यग्
न प्रतिभाति ।

८. सं० पा०—पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव
धूवं ।

९. प्रस्तुतसूत्रस्य तथा जीवाजीवाभिगमस्य (पत्र
२५७) सभायाः सुधर्माया बहुमध्यदेशभागेऽर्च-
निका पूर्ववत् करोति—इति विवरणानुसारी
पाठोत्र स्वीकृतः । यद्यपि प्रतिषु जेणेव सभाए
सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए जेणेव मणिपेढिया

जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव—इति पाठोस्ति
किन्तु 'जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे'
अयं पाठः पूर्वपंक्तावेवागतस्तेन पुनर्न युज्यते ।

१०. राय० सू० २६३ ।

११. सं० पा०—दाहिणिल्ले दारे तहेव अभिसेयस-
भासरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी
जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २ ता तोरणे
य तिसोवाणे य सालिभंजियाओ बालक्खए
य तहेव, जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ
२ ता तहेव सीहासणे च मणिपेढियं च सेसं
तहेव आययणसरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला नंदा
पुक्खरिणी जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवा-
गच्छइ २ ता जहा अभिसेयसभा तहेव सव्वं
जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता
तहेव लोमहत्थयं परामुसइ, पोत्थयरयणे लोम-
हत्थएणं पमज्जइ २ ता दिव्वाए दग्धाराए

३५८-३७५. (जहा २९४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

३७६. सभं सुहम्मं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ॥

३७७-३९३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

३९४. जेणेव सभाए सुहम्माए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३९५. जेणेव सभाए सुहम्माए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता--

३९६-४१३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

० उववायसभापवेस-पदं

४१४. जेणेव उववायसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता उववायसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ अणुपविसिता जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसिता मणिपेढियं च देवसयणिज्जं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जिता' ॥

४१५. जेणेव उववायसभाए बहुमज्जदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

४१६. जेणेव उववायसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता--

४१७-४३४. (जहा २९४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

४३५. उववायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता--

४३६-४५२. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

४५३. जेणेव उववायसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

४५४. जेणेव उववायसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता--

४५५-४७२. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

४७३. जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसिता तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए य सालभंजियाओ य बालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जिता' ॥

० अभिसेगसभापवेस-पदं

४७४. जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अभिसेयसभं पुरत्थि-

अर्गेहि वरेहि य गंधेहि भल्लेहि य अच्चेइ
२ ता मणिपेढियं सीहासणे च सेसं तं चेव,
पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी । (जेणेव हरए
तेणेव उवागच्छइ २ ता तोरणे य तिसोवाणं
य सालभंजियाओ य बालरूवए य तहेव) ।
कोष्ठकवर्ती पाठः सवसुप्र तिषु वर्तते, किन्तु अस्य
सूत्रस्य वृत्तौ (पृष्ठ २६७) तथा जीवाजीवा-
भिगमस्य वृत्तौ (पत्र २५८) चापि तासौ

व्याख्यातोस्ति । उपपातसभाया अनन्तरमसौ
पाठोऽविकलरूपेण समायातः । संभवतः
लिपिदोषेण सोवापि पुनर्लिखितः ।

१. राय० सू० ३३१ ।

२. राय० सू० २९४ ।

३. राय० सू० २९३ ।

४. राय० सू० ३३१ ।

५. राय० सू० ३३२ ।

मिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता' ॥

४७५. जेणेव अभिसेयभंडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता अभिसेयभंडं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता' ॥

४७६. जेणेव अभिसेयसभाए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' ॥

४७७. जेणेव अभिसेयसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

४७८-४८५. (जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

४८६. अभिसेयसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

४८७-५१३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

५१४. जेणेव अभिसेयसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' ॥

५१५. जेणेव अभिसेयसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५१६-५३३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

० अलंकारसभापवेस-पदं

५३४. जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अलंकारियसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता' ॥

५३५. जेणेव अलंकारियभंडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता अलंकारियभंडं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता' ॥

५३६. जेणेव अलंकारियसभाए बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' ॥

५३७. जेणेव अलंकारियसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५३८-५५५. (जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

५५६. अलंकारियसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५५७-५७३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

५७४. जेणेव अलंकारियसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' ॥

५७५. जेणेव अलंकारियसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५७६-५८३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

० ववसायसभापवेस-पदं

५६४. जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ववसायसभं पुरत्थि-
मिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पोत्थयरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता पोत्थयरयणं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता
दिक्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता
अग्गेहि वरेहि य गंधेहि मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं^१ ॥

५६५. जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोम-
हत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ,
पमज्जित्ता^२ ॥

५६६. जेणेव ववसायसभाए बहुमज्जदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता^३ ॥

५६७. जेणेव ववसायसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५६८-६१५. (जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव जेयव्वाणि) ॥

६१६. ववसायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला नंदा पुक्खरिणी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

६१७-६३३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव जेयव्वाणि) ॥

६३४. जेणेव ववसायसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता^४ ॥

६३५. जेणेव ववसायसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

६३६-६५३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव जेयव्वाणि)^५ ॥

० सूरियाभविमाणे अच्चणिया-पदं

६५४. 'जेणेव वलिपीढे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वलिविसज्जणं करेइ, करेत्ता
आभिओगिए देवे सद्दावेइ', सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सूरियाभे
विमाणे सिंघाडएसु तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु चउम्महेसु महापहपहेसु पागारेसु^६ अट्टालएसु
चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेसु काणणेसु वणेसु वणसंडेसु
वणराईसु^७ अच्चणियं करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥

६५५. तए णं ते आभिओगिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा^८ 'हट्टुट्टु-
चित्तमाणंदिथा पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं
दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं
पडिसुणंति^९, पडिसुणेत्ता सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु तिएसु चउक्कएसु चच्चरेसु

१, २. राय० सू० २६४ ।

३. राय० सू० २६३ ।

४. राय० सू० ३३१ ।

५. वृत्ती (पृष्ठ २६७) अस्य पाठस्य स्थाने भिन्नः

पाठो व्याख्यातोस्ति—बलिपीढे समागत्य तस्य

बहुमध्यदेशभागवत् अर्चनिकां करोति, कृत्वा

च आभियोगिकदेवान् शब्दापयति । 'बलि-

विसज्जणं करेइ' इति पाठः ६५६ सूत्रे 'तए णं
से सूरियाभे देवे' इति पाठान्तरं व्याख्यात-
मस्ति ।

६. पागारएसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. वणेसु वणराईसु काणणेसु वणसंडेसु (क, ख,
ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—समाणा जाव पडिसुणेत्ता ।

चउम्मुहेसु महापहपहेसु पागारेसु अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेसु काणणेसु वणेसु वणसंडेसु वणराईसु अच्चणियं करेति, करेता जेणेव सूरियाभे देवे' *तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सूरियाभं देवं करयलपरिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

० नंदापुक्खरिणी-गमण-पदं

६५६. तए णं से सूरियाभे देवे जेणेव णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता नंदं पुक्खरिणि पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति, पच्चोरुहिता हत्थपाए पक्खालेइ, पक्खालेत्ता णंदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरेइ, पच्चुत्तरेत्ता जेणेव सभा सुधम्मा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

० सुहम्मसभा-निसीदण-पदं

६५७. तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसीहिं आयरक्ख-देवसाहस्सीहिं अण्णेहिं य' वहीहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं' देवेहिं य देवीहिं य सीद्धि संपरिवुडे सव्विड्डीए' *सव्वजुतीए सव्ववलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडियसद्धसण्णनाएणं महया इड्डीए महया जुईए महया वलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-पडुप्प-वाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहिनिगघोस° नाइयरवेणं जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसिता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे ॥

६५८. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं' उत्तरपुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ चउसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति ॥

६५९. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पुरत्थिमेणं चत्तारि अगमहिंसीओ चउसु भद्दासणेसु' निसीयंति ॥

६६०. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपुरत्थिमेणं अम्भितरियाए परिताए अट्ट देवसाहस्सीओ अट्टसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति ॥

६६१. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणेणं मज्झिमाए परिताए दस देवसाह-

१. सं० पा०—देवे जाव पच्चप्पिणंति ।

५. सं० पा०—सव्विड्डीए जाव नाइयरवेणं ।

२. वृत्ती (पृष्ठ २६८) भिन्नः पाठो व्याख्या-तोस्ति—ततः सूर्याभदेवो बलिपीठे बलिवि-सर्जनं करोति, कृत्वा चोत्तरपूर्वां नन्दापुष्क-रिणीमनुप्रदक्षिणीकुर्वन् पूर्वतोरणेनानुप्रविशति अनुप्रविश्य च हस्तौ पादौ प्रक्षालयति । द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।५५६ सूत्रम् ।

६. ४१ सूत्रे उत्तरेणं पाठोस्ति तदनुसारेणात्राप्यसौ युज्यते । जीवाजीवाभिगमे (३।५५८) प्यस्मिन्नेव प्रकरणे चासौ विद्यते ।

७. ४२ सूत्रे 'चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ' इति पाठोस्ति । अत्र 'चउसु भद्दासणेसु निसीयंति' तत्र संभवतः सपरिवारवर्णने साहस्सीओ इति पाठः कृतः ।

३. X (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. वेमाणिय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

स्सीओ दसहि भदासणसाहस्सीहि निसीयंति ॥

६६२. तए ण तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए वारस देवसाहस्सीतो वारसहि भदासणसाहस्सीहि निसीयंति ॥

६६३. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पच्चत्थिमेणं सत्त अणियाहिवइणो सत्तहि भदासणेहि णिसीयंति ॥

६६४. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चउट्ठिसि सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ सोलसहि भदासणसाहस्सीहि णिसीयंति, तं जहा—पुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि साहस्सीओ, दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ, ते णं आयरक्खा सण्णद्ध-वद्ध-वम्मियकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध^१-विमल-वरचिधपट्टा गहियाउहपहरणा ति-णयाणि ति-संधीणि वयरामय-कोडीणि धणूइं पणिज्झ परियाइय-कंडकलावा नीलपाणिणो पीतपाणिणो रत्तपाणिणो चाव-पाणिणो चारुपाणिणो चम्मपाणिणो दंडपाणिणो खगपाणिणो पासपाणिणो नील-पीय-रत्त चाव-चारु-चम्म-दंड-खग-पासधरा^२ आयरक्खा रक्खोवगा गुत्ता गुत्तपालिया जुत्ता जुत्त-पालिया पत्तेयं-पत्तेयं समयओ विणयओ 'किंकरभूया इव' चिट्ठंति^३ ॥

० सूरियाभ-वण्णग-पदं

६६५. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

६६६. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । एमहिड्ढीए एम-हज्जुईए एमहव्वले एमहायसे एमहासोव्वे एमहाणुभागे सूरियाभे देवे । 'अहो णे' भंते ! सूरियाभे देवे महिड्ढीए^४ *महज्जुईए महव्वले महायसे महासोव्वे^५ महाणुभागे ॥

६६७. सूरियाभेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुई से दिव्वे देवाणुभागे—किण्णा^६ लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? पुव्वभवे के आसी ? किणामए वा ? को वा गोत्तेणं ? कयरंसि वा गामसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संवाहंसि वा सण्णिवेसंसि वा ? किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा 'माहणस्स वा' अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म जण्णं सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी^७ *सा दिव्वा देवज्जुई से दिव्वे^८ देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ?

१. बद्धआविद्ध (च, छ) ।

२. पासवरधरा (क, ख, ग, घ, च) ।

३. 'भूयाइ (च); 'भूयाइं (छ) ।

४. अतोये 'छ' प्रती 'एएहि चउट्ठि सामाणिय-साहस्सीहि जाव दिव्वाइं'; वृत्तौ (पृष्ठ २७१) च—तेहि चउट्ठि सामाणियसाहस्सीहि, इत्यादि सुगमं, यावत् 'दिव्वाइं भोगभोगाईं भुजमाणे

विहरति' । द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य

३।५६३ सूत्रम् ।

५. अम्हाणं (छ) ।

६. सं० पा०—महिड्ढीए जाव महाणुभागे ।

७. किण्हा (च) ।

८. × (क, ख, ग, घ) ।

९. सं० पा०—देविड्ढी जाव देवाणुभागे ।

पएसि-कहाणगं

केयइ-अद्ध-पदं

६६८. गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे केयइ^१-अद्धे नामं जणवए होत्था—रिद्ध^२-त्थिमियसमिद्धे पासादीए^३ *दरिसणिज्जे अभिरूवे^४ पडिरूवे ॥

सेयविया-पदं

६६९. तत्थ णं केयइ^१-अद्धे जणवए सेयविया णामं नगरी होत्था—रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा जाव^२ पडिरूवा ॥

मिगवण-पदं

६७०. तीसे णं सेयवियाए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं मिगवणे णामं उज्जाणे होत्था—रम्मे नंदणवणप्पगासे सव्वोउय-पुप्फ^१-फलसमिद्धे सुभसुरभिशीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासादीए^२ *दरिसणिज्जे अभिरूवे^३ पडिरूवे ॥

पएसि-पदं

६७१. तत्थ णं सेयवियाए नगरीए पएसि णामं राया होत्था—महयाहिमवंतं^१-*महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे अच्चंतविसुद्ध-दीहरायकुल-वंसमुप्पसूए णिरंतं रायलक्खण-विराइ-यंगमंगे बहुजणबहुमाणपूइए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुइए मुद्धाहिसित्ते माउपिउसुजाए दयपत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुसिंसदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए सेउकरे केउकरे नरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिस-वरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिन्न-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुधण-बहुजायरूवरयए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डिय-पउरभत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए पडिपुण्ण-जंत-कोस-कोट्टागाराउधगारे वलवं दुव्वलपच्चामित्ते—ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं ओहयसत्तु निहयसत्तु मलियसत्तु उद्धियसत्तु

१. केकइ (छ) ।

२. रिद्धि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे ।

४. केयइ (छ) ।

५. ओ० सू० १ ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सं० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे ।

८. सं० पा०—महयाहिमवंतं जाव विहरइ ।

निज्जियसत्तुं पराइयसत्तुं ववगयदुब्भिवक्खं मारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिवक्खं पसंतडिबड-
मरं रज्जं पसासेमाणे^० विहरइ । अधम्मिए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्माणुए अधम्मपलोई
अधम्मपलज्जणे^० अधम्मसीलसमुयाचारे^० अधम्मेण चैव विट्तिं कप्पेमाणे हण-छिद-भिद-
पवत्तए^३ 'लोहियपाणी पावे चंडे रुद्दे खुद्दे' साहस्सीए उक्कंचण-वंचण^५-माया-नियडि-कूड-
कवड-साइसंपओगबहुले^१ निस्सीले निव्वए निम्मुणे निम्मेरे निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे,
बहूणं दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सरिसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणयाए^६ अधम्मकेऊ
समुट्ठिए,^७ गुरुणं णो अब्भुट्ठेइ णो विणयं पउंजइ, 'समण-माहणाणं नो अब्भुट्ठेइ नो विणयं
पउंजइ',^८ सयस्स वि य णं जणवयस्स णो सम्मं करभरविट्तिं पवत्तेइ ॥

सूरियकंता-पदं

६७२. तस्स णं पएसिस्स रण्णो सूरियकंता नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया^१
•अहीणपडिपुण्णपंचिदियसरीरा लक्खणवंचणगुणोववेया माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजाय-
सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकारकंतपियदंसणा सुख्वा करयलपरिमियपसत्थितिवलीवलियमज्झा
कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुइरयणियरविमलपडिपुण्णसोमवयणा सिगारागार चारुवेसा
संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला पासादीया
दरिसणज्जा अभिरूवा पडिरूवा^०, पएसिणा रण्णा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्द^{१०}-
•फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणी^० विहरइ ॥

सूरियकंत-पदं

६७३. तस्स णं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नामं
कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए^१ •अहीणपडिपुण्णपंचिदियसरीरे लक्खणवंचणगुणोववेए
माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुख्वे^०
पडिरूवे^{१०} ॥

१. 'पज्जणे (क, ख, ग); 'पज्जवमाणे (घ);
'पज्जणे (च, छ, वृ); वृत्तौ 'अधम्मपज्जणे'
इति पाठो व्याख्यातोस्ति—'अधर्मं प्रकर्षेण
जनयति—उत्पादयति लोकानामपीत्यधर्म-
प्रजननः' । वृत्तिकारेण यादृशः पाठो लब्ध-
स्तादृशो व्याख्यातः । किन्तु अन्यागमानां
संदर्भेसौ पाठो विचार्यते तदा 'अधम्मपलज्जणे'
इति पाठः संगतिमर्हति । सूत्रकृतांगे (२।२।
५७) 'अधम्मपलज्जणा' इति पाठोस्ति ।
औपपातिके (सू० १६१) 'धम्मपलज्जणा'
इति पाठोस्ति । अत्रापि 'अधम्मपलज्जणे' पाठ
आसीत् । पाठसंगोधने प्रयुक्तादर्शत्रयेभ्योऽस्य
पुष्टिर्जायते । तत्र 'पज्जणे' इति पाठो लभ्यते ।
अत्र लकारो लिपिदोषेण त्यक्तोस्ति । केषु-

चिदादर्शेषु लिपिदोषेण वर्णविपर्ययो जातस्तेन
'अधम्मपज्जणे' इति पाठः संवृत्तः ।

२. भिदा० (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
३. चंडे रुद्दे खुद्दे लोहियपाणी (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
५. 'संपओगे (क, ख, ग, च) ।
६. उच्छणयाउ (क, ख, ग, च, छ) ।
७. समट्ठिओ (क, ख, ग, घ) ।
८. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. सं० पा०—सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णओ ।
१०. सं० पा०—सद् जाव विहरइ ।
११. सं० पा०—सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे ।
१२. सुकुमालपाणिपाए जाव सुन्दरे (वृ) ।

६७४. से णं सूरियकंते कुमारे जुवराया वि होत्था । पएसिस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च वलं च वाहणं च 'कोसं च' कोट्टारं च पुरं च अंतेउरं च' सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥

चित्त-सारहि-पदं

६७५. तस्स णं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे भाउय-वयंसए चित्ते णामं सारही होत्था — अड्ढे* दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे° बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड-भेय-उवप्पयाण-अत्थसत्थ-ईहामइविसारए, उप्पत्तियाए वेणत्तियाए कम्मयाए पारिणामियाए—चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुबेसु य 'मंतेसु य'° 'रहस्सेसु य गुज्जेसु य सावत्थीरहस्सेसु य निच्छएसु य'° ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे° मेढी पमाणं आहारे आलंवणं चक्खू, मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलंवणभूए चक्खुभूए, सव्वट्ठाण°-सव्वभूमियासु लद्धपच्चए° विदिण्णविचारे रज्जधुराचितए आवि होत्था ॥

कुणाला-पदं

६७६. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला° नामं जणवए होत्था—रिद्ध-त्थिमियसमिद्धे° *पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे° ॥

सावत्थी-पदं

६७७. तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नामं नयरी होत्था—रिद्ध-त्थिमियसमिद्धा जाव° पडिरूवा ॥

कोट्ठय-पदं

६७८. तीसे णं सावत्थीए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्ठए नामं चेइए होत्था—पोराणे° जाव° पासादीए ॥

जियसत्तु-पदं

६७९. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पएसिस्स रण्णो अंतेवासी जियसत्तु नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव° रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

पाहुड-उवणयण-पदं

६८०. तए णं से पएसी राया अण्णया कयाइ महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ, सज्जावेत्ता चित्तं सारहि सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छ णं

१. × (क, ख, ग, घ, च) ।

२. कोट्टागारं (छ) ।

३. च जणवयं च (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—अड्ढे जाव बहुजणस्स ।

५. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. गुज्जेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य (वृ) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सव्वट्ठा (क, ख, ग, घ, छ) ।

९. लद्धओवलद्धपच्चए (छ) ।

१०. कुणाल (क, ख, ग, घ, च) ।

११. सं० पा०—°समिद्धे ।

१२. ओ० सू० १ ।

१३. अत्र 'चिराइए' स्थाने 'पोराणे' पाठः प्रतीयते ।

१४. ओ० सू० २-७ ।

१५. राय० सू० ६७१ ।

चित्ता ! तुमं सार्वत्थि नगरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं^१ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^२ पाहुडं उवणेहि^३, जाइं तत्थ रायकज्जाणि य रायकिच्चाणि य रायणीईओ य रायववहारा^४ य ताइं जियसत्तुणा सद्धि सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहि त्ति कट्ठु विसज्जिए ॥

६८१. तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठं^५ *तुट्ठ-चित्तमाणं-दिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ^६, पडिसुणेत्ता तं महत्थं^७ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^८ पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता पएसिस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमिन्ता सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं महत्थं^९ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^{१०} पाहुडं ठवेइ, ठवेत्ता कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणु-प्पिया ! सच्छत्तं^{११} *सज्जयं सघटं सपडागं सतोरणवरं सनंदिघोसं सखिखिणि-हेमजाल-परिखित्तं हेमवय-चित्त-विचित्त-तिणि-स-कणगणिज्जुत्तदाख्यायं सुसंपिणद्धारकमंडलधुरागं कालायससुकयणेमिजंतकम्मं आइणवरतुरगसुसंपत्तं कुसलणरच्छेयसारहिमुसंपरिग्गहियं सरसयवत्तीसतोणपरिमंडियं सकंकडावयंसगं सचाव-सर-पहरण-आवरण-भरियजोहजुज्झ-सज्जं^{१२} चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठुवेह^{१३}, “उवट्ठुवेत्ता एयमाणत्तियं” पच्चप्पिणह ॥

६८२. तए णं ते कोडुंवियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठुवेति, उवट्ठुवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

६८३. तए णं से चित्ते सारही कोडुंवियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं^{१४} *सोच्चा निसम्म हट्ठुत्तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^{१५} हियए प्णाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते सण्णद्ध-वद्ध-वम्मियकवए उप्पीलिय-सरासण-पट्टिए पिणद्धगेविज्जविमलं^{१६}-वरचिधपट्टे गहियाउहपहरणे तं महत्थं^{१७} *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^{१८} पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव चाउग्घटं आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घटं आसरहं दुरुहेति, दुरुहेत्ता बहुहि पुरिसेहि सण्णद्धं^{१९} *वद्ध-वम्मियकवए उप्पीलिय-सरासणपट्टिए पिणद्धगेविज्जविमल-वरचिधपट्टे^{२०} गहियाउहपहरणेहि सद्धि संपरिवुडे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं-धरेज्जमाणेणं महया भड-चडगर-रहपहकर-विदपरिविखत्ते^{२१} साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, सुहेहि

१. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

२. अवणेहि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. ववहारा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—हट्ठ जाव पडिसुणेत्ता ।

५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

६. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

७. सं० पा०—सच्छत्तं जाव चाउग्घटं ।

८. सं० पा०—उवट्ठुवेह जाव पच्चप्पिणह ।

९. सं० पा०—एयमट्ठं जाव हियए ।

१०. सनद्धगेविज्जवद्धावद्धविमल (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

१२. सं० पा०—सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणेहि ।

१३. पंडुपरि० (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

वासोहि पायरासोहि नाइविकिट्ठोहि अंतरा वासोहि वसमाणे-वसमाणे केयइ-अद्धस्स^१ जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुणालाजणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ, सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरए निगिण्हइ, रहं ठवेति, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं^२ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^३ पाहुडं गिण्हइ, जेणेव अम्भतरिया उवट्ठाणसाला जेणेव जियसत्तु राया तेणेव उवागच्छइ, जियसत्तु रायं करयलपरिग्गहियं^४ *दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं^५ कट्ठु जएणं विजएणं वट्ठावेइ, तं महत्थं^६ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^७ पाहुडं उवणेइ ॥

६८४. तए णं से जियसत्तु राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं^८ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^९ पाहुडं पडिच्छइ^{१०}, चित्तं सारहिं सक्कारेइ सम्माणेइ^{११} पडिविसज्जेइ, रायमग्गमोगाढं च से आवासं दलयइ ॥

चित्तस्स आवास-पदं

६८५. तए णं से चित्ते सारही विसज्जिते समाणे जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिवखमइ, जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव 'चाउघटं आसरहे'^{१२} तेणेव उवागच्छइ, चाउघटं आसरहं दुरुहइ, सावत्थि नगरि मज्झंमज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, तुरए निगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकिए जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे पुक्कावरण्हकालसमयंसि गंधव्वेहि य णाडगेहि य उवनचिच्चज्जमाणे उवगाइज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

केसि-आगमण-पदं

६८६. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमार-समणे जातिसंपण्णे कुल-संपण्णे वलसंपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपण्णे चरित्तसंपण्णे लज्जा-संपण्णे लाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी^{१३} जसंसी^{१४} जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिहे जित्तिदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे^{१५} गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे निच्छयप्पहाणे^{१६} अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे भुत्तिप्पहाणे^{१७} मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे

१. अद्धाए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

३. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव कट्ठु ।

४. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

६. पिच्छइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. चाउघटं आसरहं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. वच्चंसि सोहग्गंसि (छ) ।

१०. जसंसि वायंसि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. वयप्पहाणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. × (क, ख, ग, घ, च) ।

वेयप्पहाणे^१ नयप्पहाणे^२ नियमप्पहाणे^३ सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले^४ *घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विपुलतेयलेस्से^५ चउदसपुव्वी चउणाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धि संपरिवुडे पुव्वानु-पुर्व्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्टुए चेइए तेणेव उवागच्छइ, सावत्थीनयरीए वहिया कोट्टुए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

चित्तस्स जिण्णासा-पदं

६८७. तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया जणसहे इ वा जणवूहे^६ इ वा 'जणवोले इ वा'^७ जणकलकले इ वा 'जणउम्मी इ वा'^८ जणसण्णियाए इ वा *वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जातिसंपण्णे^९ पुव्वानुपुर्व्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नगरीए वहिया कोट्टुए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! केसि कुमार-समणं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो ।

एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ति कट्ठु वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं दुपडोयारेणं—राइणा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता, अण्णे य वहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभित्तयो अप्पेगइया वंदणवत्तियं अप्पेगइया पूयणवत्तियं अप्पेगइया सक्कारवत्तियं अप्पेगइया सम्माणवत्तियं अप्पेगइया दंसणवत्तियं अप्पेगइया कोऊलवत्तियं अप्पेगइया अस्सुयाइं सुणेस्सामो सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो अप्पेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, अप्पेगइया गिहि-धम्मं^{१०} पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जीयमेयंति कट्ठु पहाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सिरसा कंठेमालकडा आविद्धमणिमुवण्णा कप्पियहारद्धहार-तिसर-पालंव-

१. × (क, ख, ग, घ, च) ।

पज्जुवासइ ।

२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. राय० सू० ६८६ ।

३. × (घ) ।

१०. अत्र औपपातिके ५२ सूत्रे 'पंचाणुव्वइयं सत्त-सिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं' इति पाठो विद्यते, किन्तु अर्थसमीक्षयास्माभिरत्र 'गिहिधम्मं' इत्येव पाठः स्वीकृतः । अर्थ-समीक्षार्थं द्रष्टव्यं ६६५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४. सं० पा०—ओराले चउदसपुव्वी ।

५. जणसमूहे (छ) ।

६. × (क, ख, ग, घ) ।

७. × (क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—जणसण्णियाए इ वा जाव परिसा

पलंवमाण-कडिसुत्त-सुकयसोहाभरणा पवरवत्थपरिहिया चंदणोलित्तगायसरीरा, अप्पेगइया ह्यगया अप्पेगइया गयगया अप्पेगइया रहगया अप्पेगइया सिवियागया अप्पेगइया संदमाणियागया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरापारिखित्ता महया उक्किट्ट-सीहणाय-वोल-कलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्धरवभूयं पिव करेमाणा सावत्थीए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता जेणेव कोट्टए चेइए जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता केसि-कुमार-समणस्स अदूरसामंते जाणवाहणाइं ठवेंति, ठवेत्ता जाणवाहणेहितो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सुसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति° ॥

६८८. तए णं तस्स सारहिस्स तं महाजणसहं च जणकलकलं च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए° *चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—किं णं अज्जं सावत्थीए णयरीए इंदमहे इ वा खंदमहे इ वा रुद्धमहे इ वा मउंदमहे इ वा 'सिवमहे इ वा वेसमणमहे इ वा' नागमहे इ वा 'जक्खमहे इ वा भूयमहे इ वा' भूयमहे इ वा चेइयमहे इ वा रुक्खमहे इ वा गिरिमहे इ वा दरिमहे इ वा अगडमहे इ वा 'नईमहे इ वा' सरमहे इ वा सागरमहे इ वा ? जं णं इमे बहवे उग्गा उग्गपुत्ता° भोगा° राइण्णा इक्खागा णाया कोरव्वा° *खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई मल्लइपुत्ता लेच्छई लेच्छइपुत्ता° इब्भा इब्भ-पुत्ता, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभित्तयो ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सिरसा कंठेमालकडा आविद्धमणिसुवण्णा कप्पियहार-अद्धहार-तिसर-पालंव-पलंवमाण-कडिसुत्तय-कयसोहाहरणा चंदणोलित्तगाय-सरीरा पुरिसवग्गुरापारिखित्ता महया उक्किट्ट-सीहणाय-वोल-कलकलरवेणं° *समुद्धरवभूयं पिव करेमाणा अवरतलं पिव फोडेमाणा° एगदिसाए एगाभिमुहा अप्पेगतिया ह्यगया अप्पे-गतिया गयगया° *अप्पेगतिया रहगया अप्पेगतिया सिवियागया अप्पेगतिया संदमाणियागया अप्पेगतिया° पायविहारचारेणं महया-महया वंदावंदएहि निग्गच्छति । एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

२. अज्ज जाव (क, च) ।

३. × (क, ख, ग, घ, च) ।

४. भूयमहे इ वा जक्खमहे इ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. × (च) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. भोगादिभिः सर्वैः सह पुत्तरूपस्य विकल्पा बोद्धव्याः ।

८. सं० पा०—कोरव्वा जाव इब्भा ।

९. सं० पा०—कलकलरवेणं....एगदिसाए जहा उववाइए जाव अप्पेगतिया । रायपसेणइय-वृत्तौ समग्रः पाठो व्याख्यातोस्ति । तत्र औप-पातिकस्य समर्पणसूचना नास्ति । आदर्शेषु सा किमर्थं कृतेति न ज्ञायते । औपपातिकस्य वृत्त्य-नुसारिपाठे 'अवरतलपिव' इत्यादि नास्ति, वाचनान्तरे तत् समुपलभ्यते । द्रष्टव्यं—औपपातिकस्य ५२ सूत्रस्य वाचनान्तरम् ।

१०. सं० पा०—अप्पेगतिया गयगया जाव पायवि-हारचारेणं ।

कंचुइ-पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—“किं णं” देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नगरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा ? ‘जं णं’ इमे वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा [जाव ?] णिग्गच्छंति ॥

कंचुइपुरिसस्स निवेदण-पदं

६८६. तए णं से कंचुइ-पुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स आगमण-गहिय-विणिच्छए चित्तं सारहिं करयलपरिग्गहियं^१ •दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेइ^२, वद्धावेत्ता एवं वयासी—णो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नगरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा । जं णं इमे वहवे उग्गा उग्गपुत्ता जाव वंदावंदएहिं निग्गच्छंति । एवं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जातिसंपण्णे जाव^३ गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए^४ •इह संपत्ते इह समोसडे इहेव सावत्थीए नगरीए बहिया कोट्टुए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे^५ विहरइ, तेणं अज्ज सावत्थीए नगरीए वहवे उग्गा जाव इब्भा इब्भपुत्ता अप्पेगितिया वंदणवत्तियाए^६ •अप्पेगइया पूयणवत्तियाए अप्पेगइया सक्कारवत्तियाए अप्पेगइया सम्माणवत्तियाए अप्पेगइया दंसणवत्तियाए अप्पेगइया कोउहलवत्तियाए अप्पेगइया अस्सुयाइं सुणेस्सामो सुयाइं निससंक्रियाइं करिस्सामो, अप्पेगइया मुंडे भविस्सा अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, अप्पेगइया गिहिधम्मं^७ पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जीयमेयंति कट्ठु ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सिरसा कंठेमालकडा आविद्ध-मणि-सुवण्णा कप्पियहारद्वहार-तिसरपवर-पालंव-पलंवमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोहाभरणा पवरवत्थ-परिहिया चंदणोलित्तगायसरीरा अप्पेगइया हयगया अप्पेगइया गयगया अप्पेगइया रहगया अप्पेगइया सिवियागया अप्पेगइया संदमाणियागया अप्पेगइया पायविहारचारेणं^८ महया-महया वंदावंदएहिं निग्गच्छंति ॥

चित्तस्स केसि-समीवे गमण-पदं

६९०. तए णं से चित्ते सारही कंचुइ-पुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठु^९—•चित्तमाणंदि ए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिस-वस-विसप्पमाणं-हियए कोडुंविय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! चाउघंटं^{१०} आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह^{११}, •उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

६९१. तए णं ते कोडुंवियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं

१. किण्हं (क, घ, च, छ) ।

६. राय० सू० ६८६ ।

२. जाव (क, ख, ग, घ, च, छ); अत्र भोगा इत्य-स्थानन्तरं जाव शब्दो युज्यते, किन्तु लिपि-दोषात् ‘जं णं’ इत्यस्य स्थाने लिखितः प्रतीयते ।

७. सं० पा०—इहमागए जाव विहरइ ।

८. सं० पा०—वंदणवत्तियाए जाव महया ।

९. द्रष्टव्यं ६८७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१०. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव हियए ।

३. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव वद्धा-वेत्ता ।

११. चाउघंटं (क, ख, ग, घ, च, छ) । द्रष्टव्यं

६८१ सूत्रम् ।

४, ५. राय० सू० ६८८ ।

१२. सं० पा०—उवट्ठवेह जाव सच्छत्तं उवट्ठवेति ।

चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव° उवट्टुवेत्ति, उवट्टुवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

६९२. तए णं से चित्ते सारही ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंक्रियसरीरे जेणेव चाउ-ग्घंटं आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ', दुरुहिता सकोरेंटमल्लदामेण' छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर'-वंदपरिखित्ते सावत्थीणगरीए मज्झमज्जेणं निगगच्छइ, निगगच्छित्ता जेणेव कोट्टए चेइए जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसि-कुमार-समणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहिता जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्ससमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ ॥

धम्मवेसणा-पदं

६९३. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—सब्बाओ पाणाइवायाओ वैरमणं, सब्बाओ मुसावायाओ वैरमणं, सब्बाओ अदिण्णादाणाओ वैरमणं, सब्बाओ परिग्गहातो वैरमणं ॥

६९४. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ॥

चित्तस्स गिहिधम्म-पडिवज्जण-पदं

६९५. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ°-तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण°हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्धामि णं भंते ! निग्गंथ° पावयणं । पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! जं णं तुब्भे वदह° त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्ण°, एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं

१. रूहइ (क, ख, ग, घ, च) ।

२. कोरेंट° (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं

६८३ सूत्रस्य पाठः ।

३. चडगरेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—हट्ठ जाव हियए ।

५. निग्गंथाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) । अस्य पाठस्य औपपातिकानुसारित्वमस्ति, तेन

‘निग्गंथ’ इति पाठः समायातः । भगवतः पाश्वर्यस्य शासने ‘श्रमण’ पदस्य ‘अर्हत्’ पदस्य वा प्रयोगः समुपलभ्यते ।

६. एवमेयं भंते २ अवितहमेयं भंते सच्चेणं एस अट्ठे जणं तुब्भे वयह (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. औपपातिके २३ सूत्रे अतोरे ‘चिच्चा सुवण्ण’ पाठो लभ्यते ।

कोसं कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-
प्पवाल-संतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडा
भविता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयंति, णो खलु अहं तहा संचाएमि चिच्चा हिरण्णं,
•एवं—धणं धन्नं वलं वाहणं कोसं कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-
मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-संतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं
परिभाइत्ता. मुंडे भविता णं अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं
अंतिए 'चाउज्जामियं गिहिधम्मं' पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध्यं करेहि ॥

६६६. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए 'चाउज्जामियं गिहि-
धम्मं' उवसंपज्जित्ताणं विहरति ॥

६६७. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, चाउग्घंटे आसरहं दुरुहइ, दुरुहिता
जामेव दिंसि पाउब्भूए तामेव दिंसि पडिगए ॥

समणोवासय-वण्णग-पदं

६६८. तए णं से चित्ते सारही समणोवासए जाए—अहिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्ण-
पावे आसव-संव-निज्जर-किरियाहिगरणबंधप्पमोक्खकुसले असहिज्जे' देवासुर-णाग-
सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किपुरिस-गहल-गंधव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि निग्गंथाओ
पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वित्तिगिच्छे'
लद्धट्ठे गहियट्ठे अभिगयट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ते
अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे' परमट्ठे सेसे अणट्ठे 'ऊसियफलहे अवंगुयदुवारे
चियत्तंतेउरधरप्पवेसे चाउदसट्ठमुद्धिदुपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे' ॥

१. दाइयं (क, ख, ग, घ, च) ।

२. सं० पा०—हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्तए ।

३. पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं (क, ख, ग, घ, च, छ); ६६३
सूत्रे केशिस्वामिना चित्तसारथ्ये चातुर्यामिको
धर्मः कथितः, तदानीं चित्तसारथिना द्वादश-
विधो गृहिधर्मः कथं स्वीकृतः ? प्रस्तुतपाठः
औपपातिकसूत्रेण पूरितः । तत्र 'पंचाणुव्वइयं
सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं' इति
पाठः आसीत्, स एवात्र अनुकृतः, किन्तु अर्थ-
समीक्षयात्र 'चाउज्जामियं गिहिधम्मं' इति
पाठो युज्यते ।

४. पडिवज्जित्तए (क, ख, ग, घ, च, छ) । एतत्
पाठस्य स्वीकारे 'अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए'

इति वाक्ये किमपि क्रियापदं न स्यात् तथा
च 'उवासगदसाओ' (११२३) सूत्रे एतत्तुल्य-
वाक्ये 'पडिवज्जिस्सामि' पाठो विद्यते । तेना-
त्रापि स एव पाठो युज्यते ।

५. करेसी (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. द्रष्टव्यं पूर्वसूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

७. जाव (क, ख, ग, घ, च) । अशुद्धं प्रति-
भाति ।

८. असहिज्ज (ख, ग, घ, च) ।

९. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. अयमट्ठे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. चाउदसट्ठमुद्धिदुपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं
सम्मं अणुपालेमाणे ऊसियफलहे अवंगुयदुवारे
चियत्तंतेउरधरप्पवेसे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल्-पायपुच्छणेणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणे-पडिलाभेमाणे, 'वहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि'" अप्पाणं भावेमाणे जाइं तत्थ रायकज्जाणि य° •रायकिच्चाणि य रायणीईओ य° रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धि सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥

जियसत्तुणा पाहुडपेसण-पदं

६९६. तए णं से जियसत्तुराया अणया कयाइ महत्थं° •मह्गं मह्रिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं सज्जेइ, सज्जेत्ता चित्तं सारहिं सद्वावेइ, सद्वावेत्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! सेयवियं नगरिं, पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं° •मह्गं मह्रिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं उवणेहि, मम पाउग्गं च णं जहाभणियं अविहमसंदिद्धं वयणं विण्णवेहि त्ति कट्ठु विसज्जिए ॥

चित्तस्स निवेयण-पदं

७००. तए णं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रण्णा विसज्जिए समाणे तं महत्थं° •मह्गं मह्रिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं 'गिण्हइ, गिण्हित्ता'° जियसत्तुस्स रण्णो अंति-याओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थीणयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, तं महत्थं° •मह्गं मह्रिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं ठवेइ, ण्हाए° •कयवलिकम्मे कयकोउयमंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाईं वत्थाइं पवर परिहिते अप्पमहग्गधाभरणालंक्रियसरीरे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं° महया पायविहारचारेणं° महया पुरिसवग्गु-रापरिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ, सावत्थीणगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, जेणेव कोट्टुए चेइए जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छति, केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा° •निसम्म हट्ठुट्ठु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमण-स्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए उट्टाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी एवं खलु

१. अहापरिग्गहेहि तवोकम्मेहि (वृ); बहूहि सीलव्वय-गुण - वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववा-सेहि (वृपा) ।

२. सं० पा०—रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि ।

३. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

४. नगरं (च, छ) ।

५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

६. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

७. गिण्हइ जाव (क, ख, ग, घ, च, छ); अत्र

‘जाव’ शब्दः अनावश्यकः प्रतिभाति । ६८१ सूत्रेण तुलनायां कृतायां ‘जाव’ शब्दस्य स्थाने ‘गिण्हित्ता’ पाठो युज्यते ।

८. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

९. सं० पा०—ण्हाए जाव सरीरे सकोरेंट महया ।

१०. पायचारविहारेणं (क, ख, ग, घ, छ); प्रस्तुतः गमस्य ६८८ सूत्रे तथा औपपातिकस्य ५२ सूत्रे तथा ‘च’ प्रती ‘पायविहारचारेणं’ पाठोस्ति, तेन स एव मूले स्वीकृतः ।

११. सं० पा०—सोच्चा जाव हट्ठु उट्टाए जाव एवं ।

अहं^१ भंते ! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं^२ •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^३ पाहुडं उवणेहि त्ति कट्ठु विसज्जिए । तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नगरि । पासादीया णं भंते ! सेयविया नगरी । दरिसणिज्जा^४ णं भंते ! सेयविया नगरी । अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी । पडिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी । समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नगरि ॥

७०१. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

७०२. तए णं चित्ते सारही केसि कुमार-समणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी— एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं^२ •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं उवणेहि त्ति कट्ठु विसज्जिए । तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नगरि । पासादीया णं भंते ! सेयविया नगरी । दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया नगरी । अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी । पडिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी^५ । समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नगरि ॥

केसिस्स पडिवयण-पदं

७०३. तए णं केसी कुमार-समणे चित्तेणं सारहिणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—चित्ता ! से जहाणामए वणसंडे सिया—किण्हे किण्होभासे^६ •नीले नीलोभासे हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे णिद्धे णिद्धोभासे तिब्बे तिब्बोभासे किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीअच्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिब्बे तिब्बच्छाए घणकडियकडच्छाए रम्मे महामेहनिकुरंवभूए^७ जाव^८ पडिरूवे । से णूणं चित्ता ! से वणसंडे बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसिवाणं अभिगमणिज्जे ? हंता अभिगमणिज्जे ।

तंसि च णं चित्ता ! वणसंडसि बहवे भिलुंगा नाम पावसउणा^९ परिवसन्ति । जे णं तेसि बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसिवाणं ठियाणं चैव मंससोणियं आहारंति । से णूणं चित्ता ! से वणसंडे तेसि णं बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसिवाणं अभिगमणिज्जे ? णो ति, कम्हा णं ? भंते ! सोवसग्गे, एवमेव चित्ता ! तुब्भं पि सेयवियाए णयरीए पएसि नामं राया परिवसइ—अहम्मिए जाव^८ णो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेइ । तं कहं णं अहं चित्ता ! सेयवियाए नगरीए समोसरिस्सामि ?

पुणो निवेयण-अब्भुवगमण-पदं

७०४. तए णं से चित्ते सारही केसि कुमार-समणं एवं वयासी—किं णं भंते ! तुब्भं पएसिणा रण्णा कायव्वं ? अत्थि णं भंते ! सेयवियाए नगरीए अण्णे बहवे ईसर-तलवर^{१०}—

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

३. एवं दरिसणिज्जा (क, ख, ग, घ, छ) ।

४. सं० पा०—महत्थं जाव विसज्जिए । चैव जाव समोसरह ।

५. सं० पा०—किण्होभासे जाव पडिरूवे ।

६. ओ० सू० ५-७ ।

७. पावसमणा (क); पासवणा (च, छ) ।

८. सं० पा०—दुपय जाव सिरीसिवाणं ।

९. राय० सू० ६७१ ।

१०. सं० पा०—ईसर-तलवर जाव सत्थवाहं ।

•माडंविय-कोडुंविय-इभ-सेट्टि-सेणावइ°-सत्थवाहपभितयो, जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति नमंसिस्संति° •सक्कारिस्संति सम्माणिस्संति कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासिस्संति, विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभिस्संति, पाडिहारिएण पीढ-फलग-सेज्जा-संथारेणं उवणिमंतिस्संति° ॥

७०५. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तं सारहि एवं वयासी—अवि याइं चित्ता ! समोसरिस्सामो° ॥

उज्जाणपाल-निहेसण-पदं

७०६. तए णं से चित्ते सारही केसि कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, केसिस्स कुमार-समणस्स अंतियाओ कोट्टयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव सावत्थी णगरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवटुवेह । जहा सेयवियाए नगरीए निग्गच्छइ, तहेव जाव° अंतरा वासेहि वसमाणे-वसमाणे कुणाला°-जणवयस्स मज्झमज्जेणं जेणेव केकय°-अद्धे जणवए जेणेव सेयविया नगरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उज्जाणपालए सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—जया णं देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमार-समणे पुज्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा तया णं तुभे देवाणुप्पिया ! केसि कुमार-समणं वंदिज्जाह नमंसिज्जाह, वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं अणुजाणेज्जाह°, पाडिहारिएणं पीढ-फलग°-•सेज्जा-संथारेणं° उवणिमंतिज्जाह, एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणे-ज्जाह ॥

७०७. तए णं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टु°-•चित्तमाणं-दिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण° हियया करयलपरिग्गहियं° •दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता° एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति ।

पाहुइ-उवणयण-पदं

७०८. तए णं चित्ते सारही जेणेव सेयविया णगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेयवियं नगरि मज्झमज्जेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहि जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिणिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं° •महत्थं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुइ° गेण्हइ, जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ, पएसि रायं करयल° •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु

१. सं० पा०—नमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति ।

२. निमेतेहि (वृ) ।

३. जाणिस्सामो (वृ); समोसरिस्सामो (वृषा) ।

४. राय० सू० ६८२, ६८३ ।

५. कुणाल (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. केसि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. अणुजाणेत्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—पीढफलग जाव उवणिमंतिज्जाह ।

९. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियया ।

१०. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव एवं ।

११. सं० पा०—महत्थं जाव गेण्हइ ।

१२. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

जएणं विजएणं वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता तं महत्थं° *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° उवणेइ° ॥

७०६. तए णं से पएसि राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं° *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° पडिच्छइ, चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ ॥

७१०. तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठं° *तुट्ठचित्त-माणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणं° हियए पएसिस्स रण्णो अंति-याओ पडिनिक्खमइ, जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घटं आसरहं दुरुहइ, सेयवियं नगरि मज्झमज्जेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ष्हाए° *कयवलिकम्मे° उप्पि पासायवरमए फुट्टमाणेहि मुइंगमत्थएहि वत्तीसइवद्धएहि नाडएहि वरतरुणी-संपउत्तेहि° 'उवणच्चिज्जमाणे उवगाइ-ज्जमाणे' उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्-फरिस°-°रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

केसिस्स सेयविया-आगमण-पदं

७११. तए णं से केसी कुमार-समणे अण्णया कयाइ पाडिहारियं पीढ-फल-सेज्जा-संथारणं पच्चप्पिणइ, सावत्थीओ नगरीओ कोट्टगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पंचहि अणगारसएहि° *सद्धि संपरिवुडे पुव्वाणुपुच्चि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं° विहरमाणे जेणेव केयइ-अद्धे जणवए जेणेव सेयविया नगरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हिता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥

७१२. तए णं सेयवियाए नगरीए सिधाडग°-°तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महा-पहपहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा जणवोले इ वा जणकलकले इ वा जणउम्मी इ वा जणसण्णिवाए इ वा जाव°° परिसा णिगच्छइ ॥

उज्जाणपालगाणं चित्तस्स निवेदन-पदं

७१३. तए णं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्टा समाणा हट्ठुट्ठ°-°चित्तमाणं-दिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं° हियया जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छंति, केसि कुमार-समणं वंदंति नमंसंति, अहापडिरूवं ओग्गहं अणुजाणंति, पाडिहारिएणं° *पीढ-फल-सेज्जा° संथारएणं उवनिमंतंति, णामं गोयं पुच्छंति ओधारेंति°,

१. सं० पा०—महत्थं जाव उवणेइ ।

२. उवणमेइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—महत्थं जाव पडिच्छइ ।

४. सं० पा०—हट्ठ जाव हियए ।

५. सं० पा०—ष्हाए जाव उप्पि ।

६. उवणच्चिज्जमाणे २ उवगेयमाणे २ (क, ख, ग, घ, च) ।

७. सं० पा०—फरिस जाव विहरइ ।

८. सं० पा०—अणगारसएहि जाव विहरमाणे ।

९. सं० पा०—सिधाडग महया जणसद्देइ वा परिसा ।

१०. राय० सू० ६८७ ।

११. सं० पा०—हट्ठुट्ठ जाव हियया ।

१२. सं० पा०—पाडिहारिएणं जाव संथारएणं ।

१३. आधारेंति (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

एगंतं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता अण्णमण्णं एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया ! चित्ते सारही दंसणं कंखइ दंसणं पत्थेइ^१ दंसणं पीहेइ दंसणं अभिलसइ, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्टुत्तु^२—*चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^३ हियए भवति, से णं एस केसी कुमार-समणे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सेयवियाए णगरीए वहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं^४ *ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अपाणं भावेमाणे^५ विहरइ तं^६ गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेएमो पियं से भवउ, अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिभुणेंति जेणेव सेयविया णगरी जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे^७ जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति, चित्तं सारहि करयलं^८ *परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु जएणं विजएणं^९ वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया ! दंसणं कंखंति^{१०} *दंसणं पत्थेति दंसणं पीहेति दंसणं^{११} अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्टु^{१२} *तुट्ठ-चित्तमाणंदिआ पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाणहियया^{१३} भवह, से णं अयं पासावच्चिज्जे केसी तामं कुमार-समणे पुव्वाणु-पुव्वि चरमाणे^{१४} *गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सेयवियाए णगरीए वहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे^{१५} विहरइ ॥

चित्तस्स केसि-पज्जुवासणा-पदं

७१४. तए णं से चित्ते सारही तेसि उज्जाणपालमाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्टुत्तु^{१६}—*चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए विगसिय-वरकमलणयणे पयलिय-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइयवच्छे पालंब-पलंबमाण-घोलंत-भूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सारही^{१७} आसणाओ अब्भुट्ठेति, पाय-पीढाओ पच्चोरुहइ, पाउयाओ ओमुयइ, एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, अंजलि-मउलियग्ग-हत्थे^{१८} केसि-कुमार-समणाभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु एवं वयासी—‘नमोत्थु णं अरहंताणं जाव’^{१९} सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं’^{२०}, नमोत्थु णं केसिस्स कुमार-समणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासइ’^{२१} मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्ठु वंदइ नमंसइ, ते उज्जाणपालए विउलेणं वत्थगंधमत्तालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, विउलं

१. वेच्छइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—हट्टुत्तु जाव हियए ।

३. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।

४. ता (क, घ, च, छ); तो (ख, ग) ।

५. गेहे (क, छ) ।

६. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेति ।

७. सं० पा०—कंखंति जाव अभिलसंति ।

८. सं० पा०—हट्टु जाव भवह ।

९. सं० पा०—चरमाणे समोसढे जाव विहरइ ।

१०. सं० पा०—हट्टुत्तु जाव आसणाओ ।

११. मउलियहत्थे (क, ख, ग, घ, च) ।

१२. राय० सू० ८ ।

१३. × (क) ।

१४. पासउ (क, ख, ग, घ, च, छ); अष्टमे सूत्रे

वृत्तिमनुसृत्य ‘पासइ’ पाठः स्वीकृतः तथैव अत्रापि ।

जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्टवेहं,
*उवट्टवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

७१५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा* तहैव पडिसुणिता° खिप्पामेव सच्छत्तं सज्जयं जाव* उवट्टवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

७१६. तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु*—चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए प्हाए कयवलिकम्मे* कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुट्ठप्पावेसाइं मंगल्लाई वत्थाई पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता* सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर-वंदपरिखित्ते सेयवियाणगरीए मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव मियवणे उज्जाणे जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसिकुमार-समणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सुसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ ॥

चाउज्जाम-धम्मवेसणा-पदं

७१७. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं । तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया° ॥

चित्तस्स निवेदण-पदं

७१८. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु*—चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अम्हं पएसी राया अधम्मिए जाव* सयस्स वि जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्ति* पवत्तेइ, तं जइ णं

१. द्रष्टव्यं ६८१ सूत्रम् ।

२. सं० पा०—उवट्टवेह जाव पच्चप्पिणह ।

३. सं० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव ।

४. राय० सू० ६८२ ।

५. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियए ।

६. सं० पा०—कयवलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव चाउग्घटे जाव दुरुहित्ता सकोरेंट महया भड-

चडगरेणं तं चेव जाव पज्जुवासइ । धम्मकहाए जाव तए णं ।

७. आरुहिता (क); रुहिता (ख, ग, घ, च)

८. सं० पा०—हट्टुट्टु तेह्व एवं ।

९. राय० सू० ६७१ ।

१०. करभरपवृत्ति (क); *पवित्ति (ख, ग, घ, च, छ) ।

देवानुप्पिया ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा । बहुगुणतरं खलु होज्जा पएसिस्स रण्णो, तेसिं च बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसवाणं, तेसिं च बहूणं समण-माहूण-भिक्खुयाणं, तं जइ णं देवानुप्पिया ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं होज्जा सयस्स वि य णं जणवयस्स ॥

केसिस्स पडिवयण-पदं

७१६. तए णं केसी कुमार-समणे चित्तं सारहि एवं वयासी—एवं खलु चउहि ठाणेहि चित्ता ! जीवे^१ केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—

आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहूणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्टाईं हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे^१ केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

उवस्सयगयं समणं वा^२ *माहूणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्टाईं हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं पुच्छइ^३ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

गोयरगगयं^४ समणं वा माहूणं वा^५ *णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं^६ पज्जुवासेइ णो विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेइ, नो अट्टाईं^७ *हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं^८ पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

जत्थ वि य^९ णं समणेण वा माहूणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थ 'वि य'^{१०} णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्टाईं^{११} *हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं^{१२} पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

एएहिं च णं चित्ता ! चउहि ठाणेहि जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए, तं जहा—

आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहूणं वा अभिगच्छइ वंदइ नमंसइ^{१३} *सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं^{१४} पज्जुवासेइ, अट्टाईं^{१५} *हेऊइं पसिणाईं कारणाईं

१. जीवा (क, छ) ।

२. जीवा (छ) ।

३. सं० पा०—समणं वा तं चेव जाव एएण ।

४. वृत्तिकृता 'प्रातिहारेण पीठफलकादिना नामनु-
त्रयतीत्यादि तृतीयम्, गोचरगतं न अशनादिना
प्रतिलाभयति—इत्यादि चतुर्थम्' कारणं स्वी-
कृतं तथा 'यत्रापि श्रमणः-साधुः माहनः—
परमगीतार्थः श्रावकोऽभ्यागच्छति तत्रापि
हस्तेन वस्त्राञ्चनेन छत्रेण वाऽऽत्मानमावृत्य न

तिष्ठति इदं प्रथमं कारणम्', एवं मूलपाठलब्धं
धर्माश्रवणस्य चतुर्थं कारणं धर्मश्रवणस्य
प्रथमकारणत्वेन निर्दिष्टम् ।

५. सं० पा०—माहूणं वा जाव पज्जुवासेइ ।

६, ६. सं० पा०—अट्टाईं जाव पुच्छइ ।

७. × (क, च, छ) ।

८. × (क, च, छ) ।

१०. सं० पा०—नमंसइ जाव पज्जुवासेइ ।

११. सं० पा०—अट्टाईं जाव पुच्छइ ।

वागरणाइं° पुच्छइ । एएण वि° ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं° लभइ सवणयाए ।

उवस्सयगयं° •समणं वा माहणं वा अभिगच्छइ वंदइ णमंसइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए° ।

गोयरग्गयं समणं वा° •माहणं वा अभिगच्छइ वंदइ णमंसइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासेइ, विउलेणं° •असणपाणखाइमसाइमेणं° पडिलाभेइ, अट्ठाइं° •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं° पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए ।

जत्थ वि य णं समणेण वा माहणेण वा सद्धि अभिसमागच्छइ तत्थ वि य णं णो हत्थेण वा° •वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं° आवरेत्ताणं चिट्ठइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए ।

तुज्झं च णं चित्ता ! पएसि राया—आरामगयं वा° •उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ । तं कहं णं चित्ता ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो ?

उवस्सयगयं समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, णो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ । तं कहं णं चित्ता ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो ?

गोयरग्गयं समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, णो विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेइ, णो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ । तं कहं णं चित्ता ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो ?

जत्थ वि य णं समणेण वा माहणेण वा सद्धि अभिसमागच्छइ तत्थ वि य णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा° अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ । तं कहं णं चित्ता ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो ? ॥

७२०. तए णं से चित्ते सारही केसि कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अण्णया कयाइ कंबोएहि चत्तारि आसा उवायणं° उवणीया, ते मए पएसिस्स रण्णो अण्णया चेव उवणेया° । तं एएणं खलु भंते ! कारणेणं अहं पएसि रायं देवाणुप्पियाणं

१. सं० पा०—एएण वि जाव लभइ ।

२. सं० पा०—उवस्सयगयं ।

३. सं० पा०—समणं वा जाव पज्जुवासेइ ।

४. सं० पा०— विउलेणं जाव पडिलाभेइ ।

५. सं० पा०—अट्ठाइं जाव पुच्छइ ।

६. सं० पा०—हत्थेण वा जाव आवरेत्ताणं ।

७. सं० पा०—आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणि-
यव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं ।

८. उवणयणं (क); उवयणं (ख, ग, घ, च, छ)

९. विणेया (क, ख, ग, घ, च)

अंतिए हव्वमाणेस्सामि । तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह । अगिलाए णं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह । छंदेणं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह ॥

७२१. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—अवि याइं चित्ता ! जाणिस्सामो ॥

७२२. तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटे आसरहं दुरुहइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

चित्त-पएसि-पवं

७२३. तए णं से चित्ते सारही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-म्मिलियम्मि अहापंडुरे^१ पभाए कयनियमावस्सए सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव पएसी राया तेणेव उवाग-च्छइ, पएसिं रायं करयलं^२ *परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थाए अंजलिं^३ कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंवोएहिं चत्तारि आसा उवायणं^४ उवणीया, ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया । तं एह णं सामी ! ते आसे चिट्ठं पासह ॥

७२४. तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी—गच्छाहिं णं तुमं चित्ता ! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं चाउग्घंटे आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेहिं^५, *एयमाणत्तियं^६ पच्चप्पिणाहि ॥

७२५. तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठुट्ठु^१—*चित्तमाणं-दिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^२ हियए उवट्ठवेइ, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥

७२६. तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठुट्ठु^१—*चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ण्हाए कय-वलिकम्मे कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिते^३ अप्पमहग्घाभरणालं कियसरीरे साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटे आसरहं दुरुहइ, सेयवियाए नगरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ ॥

७२७. तए णं से चित्ते सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ ॥

७२८. तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रह्वाएण य^४ परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—चित्ता ! परिकिलंते मे सरीरे, परावत्तेहिं रहं ॥

७२९. तए णं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ, जेणेव भियवणे उज्जाणे तेणेव उवाग-

१. 'पंडरे (क); 'पंडर (ख, ग, घ, च) ।

२. सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।

३. उवणयं (क, ख, ग, घ, च) ।

४. सं० पा०—उवट्ठवेहिं जाव पच्चप्पिणाहि ।

५. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव हियए ।

६. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव अप्पमहग्घाभरणा-लं कियसरीरे ।

७. × (क, छ) ।

च्छइ, पएसि रायं एवं वयासी—‘एस णं’ सामी ! मियवणे उज्जाणे, एत्थ णं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो’ ॥

७३०. तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी—एवं होउ चित्ता !

७३१. तए णं से चित्ते सारही जेणेव केसिस्स कुमार-समणस्स अदूरसामंते तेणेव उवामच्छइ, तुरए णिगिण्हेइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तुरए मोएति, पएसि रायं एवं वयासी—एह णं सामी ! आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो’ ॥

७३२. तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ, चित्तेण सारहिणा सद्धि आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमाणे’ जत्थ [तत्थे ?] ‘केसि कुमार-समणं’ महइमहालियाए महच्चपरिसाए मज्झगए महया-महया सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं पासइ, पासित्ता इमेयारुवे अज्झत्थिए’ *चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे’ समुप्पज्जित्था—जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति । मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति । मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति । अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति । निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति ।

से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, सिरीए हिरीए उवगए, उत्तप्पसरीरे ? एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? ‘कि परिणामेइ ?’ ‘कि खाइ ? कि पियइ ? कि दलयइ ?’ ‘कि पयच्छइ ? जेणं’ एमहालियाए मणुस्सपरिसाए महया-महया सद्देणं बूया’ । [साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए ?]’ एवं संपेहेइ, संपेहित्ता चित्तं सारहिं एवं वयासी—चित्ता ! जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति’ । *मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति । मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति । अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति । निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति । से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, सिरीए हिरीए उवगए, उत्तप्पसरीरे ? एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? कि परिणामेइ ? कि खाइ ? कि पियइ ? कि दलयइ ? कि पयच्छइ ? जेणं एमहालियाए मणुस्सपरिसाए महया-महया सद्देणं बूया । साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए ॥

७३३. तए णं से चित्ते सारही पएसि रायं एवं वयासी—एस णं सामी !

१. सरणं (क, च) ।

२-३. पवीणामो (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. पवीणेमाणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. अत्रादर्शेषु ‘जत्थ’ पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थ-विचारणया ‘तत्थ’ पाठो युज्यते ।

६. केसी कुमार-समणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

८. ववगए (क, ख, ग, घ, च) ।

९. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. दलइ (च) ।

११. जण्णं (क, ख, ग, घ, च, छ); मुद्रितवृत्तो

‘जणं एस’ इति लभ्यते ।

१२. भूभियाए (क, च); बूयाइ (छ) ।

१३. ७२७ सुत्रे केशिस्वामिना प्रदेशिराजकृतः संकल्प एव स्मारितः । तत्र ‘साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए’ इति पाठो विद्यते, तदास्मिन् प्रदेशिराजकृतसंकल्पसूत्रे स पाठांशः कथं न स्यात् ? इति पौर्वापर्यार्थविचारणया ‘साए वि...इति’ पाठांशोत्र युज्यते ।

१४. सं० पा०—पज्जुवासंति जाव बूया ।

पासवच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जातिसंपण्णे जाव' चउणाणोवगए 'अहोऽव्हिए अण्णजीविए'^१ ॥

७३४. तए णं से पएसी राया चित्तं सारहि एवं वयासी—'अहोऽव्हियं णं' वयासि चित्ता ! अण्णजीवियं णं वयासि चित्ता ! हुंता सामी ! अहोऽव्हियं^२ णं वयामि, अण्ण-जीवियं णं वयामि ॥

७३५. अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! एस पुरिसे ? हुंता सामी ! अभिगमणिज्जे । अभिगच्छामो णं चित्ता ! अम्हे एयं पुरिसं ? हुंता सामी ! अभिगच्छामो ॥

पएसि-केसि-पवं

७३६. तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धि जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, केसिस्स कुमार-समणस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी— तुब्भे णं भंते ! अहोऽव्हिया अण्णजीविया ?

७३७. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—पएसी ! से जहाणामए अंकवाणिया इ वा संखवाणिया इ वा सुंकं भंसेउकामा^३ णो सम्मं पथं पुच्छंति । एवामेव पएसी ! तुमं वि विणयं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि । से णूणं तव पएसी ! ममं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए^४ •चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे^५ समुप्पज्जित्था—जड्ढा खलु भो ! जड्ढं पज्जुवासंति^६ । •मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति । मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति । अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति । निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति । से केस णं एस पुरिसे जड्ढे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, सिरीए हिरीए उवगए, उत्तप्पसरीरे ? एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? कि परिणामेइ ? कि खाइ ? कि पियइ ? कि दलयइ ? कि पयच्छइ ? जे णं एमहालियाए मणुस्स-परिसाए महया-महया सद्देणं बूया । साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं^७ पवियरित्तए । से णूणं पएसी ! अत्थे समत्थे ? हुंता ! अत्थि ॥

७३८. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—से केस णं भंते ! तुज्झं नाणे वा दंसणे वा, जेणं^८ तुब्भं मम एयारूवं अज्झत्थियं^९ •चित्तियं पत्थियं मणोगयं^{१०} संकप्पं समुप्पणं जाणह पासह ?

७३९. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—एवं खलु पएसी ! अम्हं समणाणं निग्गंथाणं पंचविहे णाणे पणत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणे सुययाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे ॥

७४०. से कि तं आभिणिबोहियणाणे ? आभिणिबोहियणाणे चउव्विहे पणत्ते, तं जहा—उग्गहो ईहा अवाए धारणा ॥

१. राय० सू० ६८६ ।

२. अहोहिअ अण्णं जीवे (क, ख, ग); अहोहिअ अण्णजीवी

३. अहोहि अण्णं (क, ख, ग, घ) ।

४. अहोहियं (क, ख, ग, घ) ।

५. भंजेउ^१ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

७. सं० पा०—पज्जुवासंति जाव पवियरित्तए ।

८. जं णं (घ) ।

९. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव संकप्पं ।

७४१. से किं तं उगहे ? उगहे दुविहे पणत्ते, जहा नंदीए जाव^१ से तं धारणा । से तं आभिणिबोहियणाणे ॥

७४२. से किं तं सुयणाणं ? सुयणाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा—अंगपविट्ठं च, अंगवाहिरंगं च सव्वं भाणियव्वं जाव^२ दिट्ठिवाओ ॥

७४३. *से किं तं ओहिणाणं ? ओहिणाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा—भवपच्चइयं च, खओवसमियं च^३ जहा नंदीए^४ ॥

७४४. *से किं तं मणपज्जवणाणे ?^५ मणपज्जवणाणे दुविहे पणत्ते, तं जहा—उज्जुमई य विउलमई य^६ ॥

७४५. *से किं तं केवलणाणं ? केवलणाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा—भवत्थकेवलणाणं च सिद्धकेवलणाणं च^७ ॥

७४६. तत्थ णं जेसे आभिणिबोहियणाणे, से णं ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे सुयणाणे, से वि य ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे ओहिणाणे, से वि य ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे मणपज्जवणाणे, से वि य ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे केवलणाणे, से णं ममं नत्थि, से णं अरहंताणं भगवंताणं । इच्चेएणं पएसी ! अहं तव चउव्विहेणं छाउमत्थिएणं णाणेणं इमेयारूव्वं अज्झत्थियं^८ *चित्थियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं^९ समुप्पणं जाणामि पासामि ॥

७४७. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अहं णं भते ! इहं उवविसामि ? पएसी ! साए उज्जाणभूमीए तुमंसि चेव जाणए ॥

जीव-सरीर-अणत्त-पदं

७४८. तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धि केसिस्स कुमार-समणस्स अदूरसामंते उवविसइ, केसि कुमार-समणं एवं वयासी—तुव्वं णं भते ! समणाणं णिग्गंथाणं एस^{१०} सण्णा एस पइण्णा^{११} एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे^{१२} एस समोसरणे, जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं ? ॥

७४९. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—पएसी ! अहं समणाणं णिग्गंथाणं एस सण्णा^{१३} *एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे^{१४} एस समोसरणे, जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो^{१५} तं सरीरं ॥

१. नंदी सू० ४०-४६ ।

२. नंदी सू० ७३-१२६ ।

३. सं० पा०—ओहिणाणं भवपच्चइयं खओवस-मियं ।

४. नंदी सू० ७-२२ ।

५. सं० पा०—मणपज्जवणाणे ।

६. नंदी सू० २३-२५ ।

७. सं० पा०—तद्देव केवलणाणं सव्वं भाणियव्वं ।

८. नंदी सू० २७-३३ ।

९. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव समुप्पणं ।

१०. एसा (छ) ।

११. पण्णा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१३. सं० पा०—एस सण्णा जाव एस समोसरणे ।

१४. तज्जीवो (क, ख, ग, घ, च) ।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५०. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—जति णं भंते ! तुभं समणाणं णिग्गंथाणं एस सण्णा^१ *एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस^२ समोसरणे, जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो 'तं जीवो'^३ तं सरीरं—एवं खलु ममं अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए णगरीए अधम्मिए जाव^४ सयस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेति से णं तुभं वत्तव्वयाए सुवहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे । तस्स णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था—इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं जति णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा—एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेमि । तए णं अहं सुवहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता [कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु ?] नरएसु [णेरइयत्ताए ?] उववण्णे तं मा णं नत्तुया ! तुमं पि भवाहि अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेहि । मा णं तुमं पि एवं चेव सुवहुं पावकम्मं^५ *कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए^६ उववज्जिहिंसि । तं जइ णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा तो णं अहं सइहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा^७ जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं ।

जम्हा णं से अज्जए ममं आगंतुं नो एवं वयासी, तम्हा सुपइट्ठिया मम पइण्णा^८ समणाउसो ! जहा तज्जीवो तं सरीरं ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५१. तए णं से केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता णामं देवी ? हुंता अत्थि । जइ णं तुमं पएसी तं सूरियकंतं देवि ण्हायं कयबलि-कम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं^९ केणइ पुरिसेणं ण्हाएणं^{१०} *कयबलि-कम्मेणं कयकोउयमंगलपायच्छित्तेणं^{११} सव्वालंकारभूसिएणं सद्धि इट्ठे सद्-फरिस-रस-रुव-गंधे पंचविहे माणुस्सते कामभोगे पच्चणुब्भवमार्णि पासिज्जासि, तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स कं डंडं निव्वत्तेज्जासि ? अहं णं भंते ! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णं वा पायच्छिण्णं वा सूलाइगं वा सूलभिण्णं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा ।

'अहं णं' पएसी से पुरिसे तुमं एवं वदेज्जा—मा ताव मे सामी ! मुहुत्तागं^{१२} हत्थच्छि-

१. सं० पा०—एस सण्णा जाव समोसरणे ।

६. पन्ना (क, ख, ग, घ, च) ।

२. तज्जीवो (क, ख, ग, घ, च) ।

७. विभूसियं (छ) ।

३. राय० सू० ६७१ ।

८. सं० पा०—ण्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएणं ।

४. सं० पा०—पावकम्मं जाव उववज्जिहिंसि ।

९. अहण्णं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. रोवएज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. मुहुत्तागं (छ) ।

ण्णमं वा' •पायच्छिण्णमं वा सूलाइमं वा सूलभिण्णमं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं° जीवियाओ ववरोवेहि जाव ताव अहं मित्त-णाइ-णियम-सयण-संबंधि-परिजणं एवं वयामि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पावाइं कम्माइं समायरत्ता इमेयारुवं आवइं पाविज्जामि, तं मा णं देवाणु-प्पिया ! तुब्भे वि केइ पावाइं कम्माइं समायरहं, मा णं से वि एवं चेव आवइं पाविज्जि-हिहं, जहा णं अहं । तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि ? णो तिणट्ठे समट्ठे । कम्हा णं ? जम्हा णं भंते ! अवराही णं से पुरिसे । एवासेव पएसी ! तव वि अज्जए होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव' णो सम्मं करभरविंत्ति पवत्तेइ । से णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं° •पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए° उववण्णे । तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था—इट्ठे कंते° •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए वहुमाए अणुमाए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंवरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमं पुणं पासणयाए ! से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] । चउहि च णं ठाणेहि पएसी ! अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए से णं तत्थ महब्भूयं वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए नरयपालेहि भुज्जो-भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिणंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए निरयाउयंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जि-णंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

इच्चेएहि चउहि ठाणेहि पएसी अहुणोववण्णे नरएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] । तं सदहाहि णं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं ॥

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५२. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस पण्णओ उवमा, इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ—एवं खलु भंते ! मम अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नगरीए धम्मिया° •धम्मिद्वा धम्मकखाई धम्माणुया धम्मपलोई धम्मपलज्जणी धम्मसीलसमुयाचारा धम्मेण चेव विंत्ति कप्पेमाणी° समणोवासिया

१. सं० पा०—हत्थच्छिण्णमं वा जाव जीवियाओ ।

२. समायरउ (क, ख, ग, घ) ।

३. पाविज्जिहिइ (घ, च) ।

४. राय० सु० ६७१ ।

५. सं० पा०—सुबहुं जाव उववण्णे ।

६. सं० पा०—कंते जाव पासणयाए ।

७. सं० पा०—धम्मिया जाव विंत्ति ।

८. °माणा (घ) ।

अभिगयजीवा' *जीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बंधप्पमोक्ख-कुसला असहिज्जा देवासुर - णाग - सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया णिव्वित्तिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा अभिगयट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ता अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउरघरप्पवेसा चाउइसट्ठमुद्धिद्वपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणी, समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइम-साइमेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणी-पडिलाभेमाणी, बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खण-पोसहोववासेहि° अप्पाणं भावेमाणी विहरइ । सा णं तुज्झं वत्तव्वयाए सुवहं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा । तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था—इट्ठे कंते' *पिए मणुण्णे मणाभे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिज्जणणे उंवरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण° पासणयाए, तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा—एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया' *धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्माणया धम्मपलोई धम्मपलज्जणी धम्मसीलसमुयाचारा धम्मेण चेव° वित्ति कप्पेमाणी समणोवासिया जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरामि ।

तए णं अहं सुवहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता' *कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु° देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा, तं तुमं पि णत्तुया ! भवाहि धम्मिए' *धम्मिट्ठे धम्मक्खाई धम्माणए धम्मपलोई धम्मपलज्जणे धम्मसीलसमुयाचारे धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणे समणोवासए जाव अप्पाणं भावेमाणे° विहराहि । तए णं तुमं पि एयं चेव सुवहुं पुण्णोवचयं° *समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववज्जिहिसि । तं जइ णं अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा तो णं अहं सदहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तज्जीवो तं सरीरं ।

जम्हा सा अज्जिया मम आगंतुं णो एवं वयासी, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा' जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं ।

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५३. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—जति णं तुमं पएसी ! प्हायं कयवलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं उल्लापडणं भिगार-कडच्छुयहत्थगयं देवकुलमणुपविसमाणं केइ पुरिसे वच्चवरंसि ठिच्चा एवं वदेज्जा—एह ताव सामी ! इह

१. सं० पा०—अभिगयजीवा सव्वो वण्णओ जाव अप्पाणं ।

२. सं० पा०—कंते जाव पासणयाए ।

३. सं० पा०—धम्मिया जाव वित्ति ।

४. सुहं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. सं० पा०—समज्जिणित्ता जाव देवलोएसु ।

६. सं० पा०—धम्मिए जाव विहराहि ।

७. सं० पा०—पुण्णोवचयं जाव उववज्जिहिसि ।

८. पण्णा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

मुहुतागं^१ आसयह वा चिट्टह वा निसीयह वा तुयट्टह वा । तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणिज्जासि ? णो तिणट्ठे समट्ठे । कम्हा णं ? जम्हाणं भंते ! असुई असुइ-सामंतो । एवामेव पएसी ! तव वि अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए णयरीए धम्मिया जाव^२ अप्पाणं भावेमाणी विहरति । सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं^३ *पुण्णोववण्णे समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा । तीसे णं अज्जियाए तुमं गत्तुए होत्था—इट्ठे^४ *कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए^५, किमंग पुण पासणयाए ? सा णं इच्छेइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ।

चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णाए देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए—

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गट्ठिए अज्झोववण्णे, से णं माणुसे भोगे नो आढाति नो परिजाणाति । से णं इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए ।

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए^६ *गिद्धे गट्ठिए^७ अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिण्णाए भवति, दिव्वे पेम्मे संकंते भवति । से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ।

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए^८ *गिद्धे गट्ठिए^९ अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवइ—इयाणि गच्छं मुहुत्ते गच्छं जाव इह अप्पाउया णरा कालधम्मणा संजुत्ता भवन्ति, से णं इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ।

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं^{१०} *कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गट्ठिए^{११} अज्झोववण्णे, तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे भवइ, उड्ढं पिय णं चत्तारि पंचजोअणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छति^{१२} । से णं इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ।

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए । तं सद्दाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं ।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५४. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस

१. मुहुतागं (क, छ) ।

२. राय० सू० ७५२ ।

३. सं० पा०—सुबहुं जाव उववण्णा ।

४. सं० पा०—इट्ठे किमंग ।

५. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे ।

६. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे ।

७. सं० पा०—दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे ।

८. हवइ (वु) ।

पण्णओ उवमा, इमेणं पुणं^१ कारणेणं णो उवागच्छति—

एवं खलु भंते! अहं^२ अण्णया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेगगण्णायक-दंडणायम-
राईसर^३-तलवर- माडंबिय-कोडुंबिय- इब्भ-सेट्ठि - सेणावइ- सत्थवाह-मंति- महामंति-गणग-
दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमइ-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धि संपरिवुडे विहरामि ।

तए णं मम णगरगुत्तिया ससक्खं 'सहोडं सलोइं'^४ सगेवेज्जं अवउडगबंधणबद्धं चोरं
उवर्णेति । तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतं चैव अओकुंभीए पक्खिवावेमि, अओमएणं पिहाण-
एणं पिहावेमि, अएण य तउएण य कायावेमि, आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि ।

तए णं अहं अण्णया कयाइ जेणामेव सा अओकुंभी तेणामेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता
तं अओकुंभी उग्गलच्छावेमि^५, उग्गलच्छावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि, णो चैव णं तीसे
अओकुंभीए^६ केइ छिड्डे इ वा विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जओ णं से जीवे अंतोहितो
वहिया णिग्गए । जइ णं भंते ! तीसे अओकुंभीए होज्ज केइ छिड्डे इ वा^७ •विवरे इ वा
अंतरे इ वा^८ राई वा, जओ णं से जीवे अंतोहितो वहिया णिग्गए, तो णं अहं सद्देज्जा
पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं ।

जम्हा णं भंते ! तीसे अओकुंभीए पत्थि केइ छिड्डे इ वा^९ •विवरे इ वा अंतरे इ वा,
राई वा, जओ णं से जीवे अंतोहितो वहिया^{१०} निग्गए, तम्हा सुपत्तिट्ठिया मे पइण्णा^{११} जहा—
तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५५. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी पएसी ! से जहाणामए
कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा । अहं णं केइ
पुरिसे भेरि च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो-अंतो अणुप्पविसत्ति, अणुप्पविसित्ता
तीसे कूडागारसालाए सब्वतो समंता घण-निचिय-निरंतर-णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं^{१२} पिहेइ ।
तीसे कूडागारसालाए बहुमज्जदेसभाए ठिच्चा तं भेरि दंडएणं म्हाया-म्हाया सद्देणं तालेज्जा ।
से णूणं पएसी ! से सद्दे णं अंतोहितो वहिया णिग्गच्छइ ? हुंता णिग्गच्छइ । अत्थि णं
पएसी ! तीसे कूडागारसालाए केइ छिड्डे इ वा^{१३} •विवरे इ वा अंतरे इ वा^{१४} राई वा,
जओ णं से सद्दे अंतोहितो वहिया णिग्गए ? नो 'तिणट्ठे समट्ठे'^{१५} । एवामेव पएसी !
जीवे वि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा पव्वयं भिच्चा अंतोहितो वहिया
णिग्गच्छइ, तं सद्देहाहिं णं तुमं पएसी ! अण्णो जीवो^{१६} •अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं
सरीरं^{१७} ॥

१. पुण मे (क, ख, ग, च, छ) ।

२. × (क, च) ।

३. ईसर (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सहोडं (क, ख, ग, घ, छ); सहोट (च) ।

५. उल्लंछावेमि (घ) ।

६. अओकुंभीए (क, ख, ग); अयकुंभीए (घ) ।

७. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव राई ।

८. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव निग्गए ।

९. पन्ना (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. दुवारणयणाइं (ख, ग) ।

११. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव राई ।

१२. इणमट्ठे (क) ।

१३. सं० पा०—जीवो तं चैव ।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५६. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं णो उवागच्छइ—एवं खलु भंते ! अहं अण्णया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए' •अणेगगणायक-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंविद्य-कोडुंविद्य-इभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामंति-भणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्-नगर-निगम दूय-संधिवालेहिं सद्धि संपरिवुडे° विहरामि । तए णं ममं भगरगुत्तिया ससवखं' •सहोढं सलोढं सगेवेज्जं अवउडगबंधणवद्धं चोरं° उवणेति । तए णं अहं तं पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि, ववरोवेत्ता अओकुंभीए पक्खिवावेमि, अओमएणं पिहाणएणं पिहावेमि', •अएण य तउएण य कायावेमि, आय° पच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि ।

तए णं अहं अण्णया कयाइ जेणेव सा कुंभी तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता तं अओकुंभि उगलच्छावेमि, तं अओकुंभि किमिक्कुंभि पिव पासामि, णो चेव णं तीसे अओकुंभीए केइ छिड्डे इ वा° •विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जतो णं ते जीवा वहियाहितो अणुपविट्ठा । जति णं तीसे अओकुंभीए होज्ज केइ छिड्डे इ वा° •विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जतो णं ते जीवा वहियाहितो° अणुपविट्ठा, तो णं अहं सदहेज्जा' •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं° ।

जम्हा णं तीसे अओकुंभीए नत्थि केइ छिड्डे इ वा° •विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जतो णं ते जीवा वहियाहितो° अणुपविट्ठा, तम्हा सुपत्तिट्ठिआ मे पइण्णा जहा—तज्जीवो, 'तं सरीरं', •नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं° ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५७. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—अत्थि णं तुमे पएसी ! कयाइ य अए धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा ? हंता अत्थि । से णूणं पएसी ! अए धंते समाणे सव्वे अगणिपरिणए भवति? 'हंता भवति', अत्थि णं पएसी ! तस्स अयस्स केइ छिड्डे इ वा° •विवरे इ वा अंतरे वा राई वा °जेणं से जोई वहियाहितो अंतो अणुपविट्ठे ? नो तिणट्ठे समट्ठे । एवामेव पएसी ! जीवो वि अप्पडिह्यगई पुढवि भिच्चा सिलं भिच्चा पव्वयं भिच्चा वहियाहितो अंतो अणुपविसइ । तं सदहाहि णं तुमं पएसी" ! •जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं° ॥

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५८. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस

१. सं० पा०—उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि ।

२. सं० पा०—ससवखं जाव उवणेति ।

३. सं० पा०—पिहावेमि जाव पच्चइएहिं ।

४. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव राई ।

५. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव अणुपविट्ठा ।

६. सं० पा०—सदहेज्जा जहा अण्णो जीवो तं

७. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव अणुपविट्ठा ।

८. तस्सरीरं (क, ग, घ, च, छ) । सं० पा०—सरीरं तं चेव ।

९. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. सं० पा०—छिड्डे इ वा जेणं ।

११. सं० पा०—पएसी ! तहेव ।

चेव ।

पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—भंते ! से जहाणामए—केइ पुरिसे तरुणे^१ •वलवं जुगवं जुवाणे अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पिट्ठंतरोरुपरिणए घण-णिचिय-वट्ट-वलियखंधे चम्मेट्ठग-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचियगते उरस्सवलसमण्णागए तलजमलजुयलवाहू लंघण-पवण-जइण-पमद्दणसमत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेधावी णिउण^२ सिप्पोवगए पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ? हंता पभू । जति णं भंते ! सच्चेव^३ पुरिसे वाले^४ •अदक्खे अपत्तट्ठे अकुसले अमेहावी मंदविण्णाणे पभू होज्जा पंचकंडगं निसिरित्तए, तो णं अहं सदहेज्जा^५ •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं^६ । जम्हा णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जाव मंदविण्णाणे णो ‘पभू पंचकंडयं’^७ निसिरित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा—तज्जीवो^८ •तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५६. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—से जहाणामए—केइ पुरिसे तरुणे^१ •वलवं जुगवं जुवाणे अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पिट्ठंतरोरुपरिणए घण-णिचिय-वट्ट-वलियखंधे चम्मेट्ठग-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचियगते उरस्सवलसमण्णागए तल-जमल-जुयलवाहू लंघण-पवण-जइण-पमद्दणसमत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेधावी णिउण^२ सिप्पोवगए णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए^३ नवएणं उसुणा ‘पभू पंचकंडगं’^४ निसिरित्तए ? हंता पभू । सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लएणं धणुणा कोरिल्लयाए जीवाए कोरिल्लएणं उसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ? णो तिणट्ठे समट्ठे । कम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति । एवामेव पएसि ! सो चेव पुरिसे वाले^५ •अदक्खे अपत्तट्ठे अकुसले अमेहावी^६ मंदविण्णाणे अपज्जत्तोवगरणे णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए, तं सदहाहि णं तुमं पएसि ! जहा—अण्णो जीवो^७ •अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं^८ ।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७६०. तए णं पएसि राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—भंते ! से जहाणामए—केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगते पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए ? हंता पभू । सो चेव णं भंते ! पुरिसे जुण्णे जराज्जजरियदेहे सिद्धिलवलिया-वणद्धगते दंडपरिगहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले

१. सं० पा०—तरुणे जाव सिप्पोवगए ।

५. पभू यं च कंडगं (क, च) ।

२. से चेव (क) ।

६. सं० पा०—तज्जीवो तं चेव ।

३. सं० पा०—वाले जाव मंदविण्णाणे; अस्य पाठस्य पूर्तिः ‘छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेधावी’ अनेन पाठेन कृता ।

७. सं० पा०—तरुणे जाव सिप्पोवगए ।

८. पडिचियाए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. पभू णं च कंडगं (क) ।

४. सं० पा०—सदहेज्जा जहा अण्णो जीवो तं चेव ।

१०. सं० पा०—वाले जाव मंदविण्णाणे ।

११. सं० पा०—जीवो तं चेव ।

परिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा^१ •तउयभारगं वा सीसगभारगं^० वा परिवहित्तए । जति णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुण्णे जराजज्जरियदेहे^२ •सिद्धिलवलियावणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले^० परिकिलंते पभू एगं महं अयभारगं वा^३ •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा^० परिवहित्तए, तो णं अहं सदहेज्जा^४ •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तज्जीवो तं सरीरं^० । जम्हा णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुण्णे^५ •जराजज्जरियदेहे सिद्धिलवलियावणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले^० परिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा^६ •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा^० परिवहित्तए, तम्हा सुपतिट्ठिता मे पइण्णा^७ •जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं^० ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७६१. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—से जहाणामए—केइ^८ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए णवियाए विहंगियाए णवएहि सिक्कएहि णवएहि पच्छियापिडएहि^९ पभू एगं महं अयभारगं वा^{१०} •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा^० परिवहित्तए ? हंता पभू । पएसी ! से चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए जुण्णियाए दुब्बलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए^{११}, जुण्णएहि दुब्बलएहि घुणक्खइएहि सिद्धिल-तया-पिणद्धएहि सिक्कएहि, जुण्णएहि दुब्बलएहि घुणक्खइएहि पच्छियापिडएहि^{१२} पभू एगं महं अयभारगं वा^{१३} •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा^० परिवहित्तए ? णो तिणट्ठे समट्ठे । कम्हा णं ? भंते ! तस्स पुरिसस्स जुण्णाइं उवगरणाइं भवंति । एवामेव पएसी ! से चेव पुरिसे जुण्णे^{१४} •जराजज्जरियदेहे सिद्धिलवलियावणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरल-परिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले परि^{१५} किलंते जुण्णोवगारणे नो पभू एगं महं अयभारगं वा^{१६} •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा^० परिवहित्तए, तं सदहाहि णं तुभं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं ॥

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७६२. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते^{१७} ! •एस

१. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए ।	एहि (छ) ।
२. सं० पा०—जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते ।	१०. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए ।
३. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए ।	११. वाहंगियाए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. सं० पा०—सदहेज्जा तहेव ।	१२. पच्छिपिडएहि (क, ख); पत्थियापिडएहि (ग, घ); पच्छिपिडएहि (च); पच्छिपिड-एहि (छ) ।
५. सं० पा०—जुण्णे जाव किलंते ।	१३. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए ।
६. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए ।	१४. सं० पा०—जुण्णे जाव किलंते ।
७. सं० पा०—पइण्णा तहेव ।	१५. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए ।
८. के वि (घ, च) ।	१६. सं० पा०—भंते जाव नो ।
९. पच्छियापिडएहि (क); पत्थियापिडएहि (ख, ग, घ); पट्ठियापिडएहि (च); पत्थियापिड-	

पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—एवं खलु भंते ! •अहं अण्णया कयाइ वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेग-गण्णायक-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंवि-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धि संपरिवुडे° विहरामि । तए णं मम णगरगुत्तिया चोरं उवणेंति ।

तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतगं° चेव तुलेमि, तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मयं तुलेमि णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स केइ अण्णत्ते° वा नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा लहुयत्ते वा ।

जति णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स केइ अण्णत्ते वा° •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा, तो णं अहं सद्देज्जा° •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं° ।

जम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ अण्णत्ते वा° •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा, तम्हा सुपत्तिट्ठिया मे पइण्णा जहा—तज्जीवो° •तं सरीरं णो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं° ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७६३. तए णं केसी कुमार-समणे पर्एसी रायं एवं वयासी—अत्थि णं पर्एसी ! तुमे कयाइ वत्थी 'धंतपुच्चे वा धमावियपुच्चे'° वा ? हंता अत्थि । अत्थि णं पर्एसी ! तस्स वत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स, अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ अण्णत्ते वा° •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे ।

एवामेव पर्एसी ! जीवस्स अगल्लघुयत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ अण्णत्ते वा° •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा, तं सद्देहाहि णं तुमं पर्एसी° ! •जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं° ॥

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७६४. तए णं पर्एसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस° पुण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—एवं खलु भंते ! अहं अण्णया° •कयाइ वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेग-गण्णायक-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंवि-

१. सं० पा०—भंते जाव विहरामि ।

२. जीवतगं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. आणत्ते (क, ख, ग, च, छ) ।

४. सं० पा०—अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ।

५. सं० पा०—सद्देज्जा तं चेव ।

६. सं० पा०—अण्णत्ते वा°...लहुयत्ते ।

७. सं० पा०—तज्जीवो तं चेव ।

८. वातपुण्णे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. सं० पा०—अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ।

१०. सं० पा०—अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ।

११. सं० पा०—पर्एसी तं चेव ।

१२. सं० पा०—एस जाव नो ।

१३. सं० पा०—अण्णया जाव चोरं ।

कोडुविय - इब्भ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति - महामंति - गणग - दोवारिय- अमच्च-चेड-पीढमद्-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धि संपरिवुडे विहरामि । तए णं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं सहोढं सलोद्दं सगेवेज्जं अवउडगबंघणवद्धं^१ चोरं उवणेंति । तए णं अहं तं पुरिसं सव्वतो समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि ।

तए णं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं^२ करेमि, करेत्ता सव्वतो समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि । एवं तिहा चउहा संखेज्जहा फालियं करेमि^३, *करेत्ता सव्वतो समंता समभिलोएमि^४, णो चेव णं तत्थ जीवं पासामि ।

जइ णं भंते ! अहं तंसि पुरिसंसि^५, दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंमि जीवं पासंतो^६, तो णं अहं सद्देज्जा^७ *पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं^८ ।

जम्हा णं भंते ! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंमि जीवं न पासामि, तम्हा सुपत्तिट्टिया मे पइण्णा जहा—तज्जीवो तं सरीरं^९, *नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं^{१०} ॥

मूढ-कट्टुहारय-पवं

७६५, तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—मूढतराए णं तुमं पएसी ! ताओ तुच्छतराओ । के णं भंते ! तुच्छतराए ? पएसी ! से जहाणामए—केइ पुरिसा वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइंभायणं च गहाय कट्टाणं अडवि अणुप-विट्ठा ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए^१ *छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए^२ कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं पुरिसं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्टाणं अडवि पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइंभायणाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि । अहं तं जोइंभायणे जोइं विज्झवेज्जा, तो^३ णं तुमं कट्टाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि त्ति कट्टु कट्टाणं अडवि अणुपविट्ठा ।

तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्तंतरस्स तेसि पुरिसाणं असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोति-भायणे तेणेव उवागच्छइ, जोइंभायणे जोइं विज्झायमेव पासति ।

तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएति, नो चेव णं तत्थ जोइं पासति ।

तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ, फरसुं गेण्हइ, तं कट्ठं दुहा फालियं करेइ, सव्वतो समंता समभिलोएइ, णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ । एवं^४ *तिहा चउहा^५ संखेज्जहा वा

१. पालियं (च, छ) ।

२. सं० पा०—करेमि णो ।

३. तं पुरिसं (क, च, छ) ।

४. पासं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. सं० पा० सद्देज्जा तं चेव ।

६. सं० पा०—सरीरं तं चेव ।

७. अगामियाए (क, ख, ग, घ) ; अकामयाए (च, छ) ; सं० पा०—अगामियाए जाव किंचि ।

८. एत्तो (क) ; पुत्ता (च, छ) ।

९. सं० पा०—एवं जाव संखेज्जहा ।

फालियं करेइ, सव्वतो समंता समभिलोएइ, नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ ।

तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहाफालिए वा^१ *तिहाफालिए वा चउहाफालिए वा^२ संखेज्जहाफालिए वा जोइं अपासमाणे संते तंते परिस्संते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ, परियरं मुयइ, मुइत्ता एवं वयासी—अहो ! मए तेसि पुरिसाणं असणे नो साहिए त्ति कट्ठु ओहयमणसंकप्पे चितासोगसागरसंपविट्ठे^३ करयलपल्लत्थमुहे^४ अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाइ ।

तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिदंति, जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति, तं पुरिसं ओहयमणसंकप्पे^५ *चितासोगसागरसंपविट्ठं करयलपल्लत्थमुहं अट्टज्झाणोवगयं भूमिगय-दिट्ठियं^६ झियायमाणं पासंति, पासित्ता एवं वयासी—किं णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमण-संकप्पे^७ *चितासोगसागरसंपविट्ठे करयलपल्लत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए^८ झियायसि ?

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—तुभ्भे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडवि अणुपविसमाणा^९ ममं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडवि^{१०} *पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइभाय-णाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि । अहं तं जोइभायणे जोइं विज्जवेज्जा, तो णं तुमं कट्ठाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि त्ति कट्ठु कट्ठाणं अडवि अणु-^{११}पविट्ठा । तए णं अहं तओ मुहुत्तंतरस्स तुभ्भं असणं साहेमि त्ति कट्ठु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छामि जाव झियामि ।

तए णं तेसि पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए दक्खे पत्तट्ठे^{१२} *कुसले महामई विणीए विण्णाणपत्ते^{१३} उवएसलद्धे ते पुरिसे एवं वयासी—गच्छहं णं तुभ्भे देवाणुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा^{१४} *कयकोउयमंगलपायच्छित्ता^{१५} हव्वमागच्छेह जा णं अहं असणं साहेमित्ति कट्ठु परियरं बंधइ, परसुं गिण्हइ, सरं करेइ, सरेण अरणिं महेइ, जोइं पाडेइ, जोइं संधुक्खेइ, तेसि पुरिसाणं असणं साहेइ ।

तए णं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा^{१६} *कयकोउयमंगल-पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति ।

तए णं से पुरिसे तेसि पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ ।

तए णं ते पुरिसा तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा वीसाएमाणा^{१७} *परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं च णं^{१८} विहरंति । जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं

१. सं० पा०—दुहाफालिए वा णाव संखेज्जहा ।

२. *सागरं पविट्ठे (घ) ।

३. *पल्लत्थमुहे (क) ।

४. सं० पा०—मणसंकप्पं जाव झियायमाणं ।

५. सं० पा०—मणसंकप्पे जाव झियायसि ।

६. अणुपविट्ठा समाणा (घ) ।

७. सं० पा०—अडवि जाव पविट्ठा ।

८. सं० पा०—पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे ।

९. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेह ।

१०. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता ।

११. सं० पा०—वीसाएमाणा जाव विहरंति ।

समाणा आयंता चोक्खा परमसुईभूया तं पुरिसं एवं वयासी—अहो ! णं तुमं देवानुप्पिया ! जड्ढे मूढे अपंडिए णिव्विण्णाणे अणुवएसलद्धे जे णं तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहा फालियंसि वा^१ *तिहा फालियंसि वा चउहा फालियंसि वा संखेज्जहा फालियंसि वा^२ जोतिं पासित्तए । से एएणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी ! ताओ तुच्छतराओ ॥

अक्कोसं पइ पएसिस्स वितक्कणा-पदं

७६६. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—जुत्तए णं भंते ! तुभं इय छेयाणं दक्खाणं पत्तट्ठाणं^३ कुसलाणं महामईणं विणीयाणं विण्णाणपत्ताणं उवएसलद्धाणं अहं इमीसे^४ महालियाए महच्चपरिसाए मज्झे उच्चावएहि आओसेहि आओसित्तए, उच्चावयाहि उद्धंसणाहि उद्धंसित्तए, उच्चावयाहि निब्भंछणाहि निब्भंछित्तए, उच्चावयाहि निच्छोडणाहि निच्छोडित्तए ? ॥

केसिस्स समाधान-पदं

७६७. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी ! कति परिसाओ पणत्ताओ ? भंते ! जाणामि चत्तारि परिसाओ पणत्ताओ, तं जहा—खत्तियपरिसा, गाहावइपरिसा, माहणपरिसा, इसिपरिसा ।

जाणासि णं तुमं पएसी ! एयासि चउहं परिसाणं कस्स का दंड-णीई पणत्ता ? हंता ! जाणामि—जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्जइ, से णं हत्थच्छिण्णए वा पायच्छिण्णए वा सीसच्छिण्णए वा सूलाइए वा एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ । जे णं गाहावइपरिसाए अवरज्जइ, से णं तणेण वा वेढेण^५ वा पलालेण वा वेढित्ता अगणिकाएणं ज्ञामिज्जइ^६ । जे णं माहणपरिसाए अवरज्जइ, से णं अणिट्ठाहि अकंताहि^७ *अप्पियाहि अमणुणाहि^८ अमणामाहि वग्गूहि उवालभित्ता कुंडियालंछणए वा सूणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ । जे णं इसिपरिसाए अवरज्जइ, से णं णाइअणिट्ठाहि^९ *णाइअकंताहि णाइअप्पियाहि णाइअमणुणाहि^{१०} णाइअमणामाहि वग्गूहि उवालभइ । एवं च ताव पएसी ! तुमं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामं वामेणं दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टसि ॥

पएसिस्स पडिकूल-वट्टण-हेउ-पदं

७६८. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवानुप्पि-एहि पढमित्तलुएणं चेव वागरणेणं संलद्धे^१, तए णं ममं इमेयारूवे अज्झत्थिए^२ *चित्तिए पत्थिए मणोगए^३ संकप्पे समुपज्जित्था—जहा-जहा णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेणं^४

१. सं० पा० दुहाफालियंसि वा जोतिं ।

२. पट्ठाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. इमाए (क); इमीसेए (ख, ग, घ, च, छ) ।

४. वेढेण (क); वेढेण (ख, ग); × (घ) ।

५. भाविज्जइ (घ) ।

६. सं० पा०—अकंताहि जाव अमणामाहि ।

७. सं० पा०—णाइअणिट्ठाहि जाव णाइअमणा-माहि ।

८. संलत्ते (वचित्) ।

९. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव संकप्पे ।

१०. सं० पा०—वामेणं जाव विवच्चासं ।

•दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं° विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिस्सामि, तहा-तहा णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च, दंसणं च दंसणोवलंभं च, जीवं च जीवोवलंभं च उवलभिस्सामि । तं एएणं कारणेणं अहं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं° •दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं° विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिए ॥

ववहारग-पदं

७६६. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ ववहारगा पणत्ता ? हंता जाणामि, चत्तारि ववहारगा पणत्ता—देइ नामेगे णो सण्णवेइ । सण्णवेइ नामेगे नो देइ । एगे देइ वि सण्णवेइ वि । एगे णो देइ णो सण्णवेइ । जाणासि णं तुमं पएसी ! एएसि चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी ? के अव्ववहारी ? हंता जाणामि—तत्थ णं जेसे पुरिसे देइ णो सण्णवेइ, से णं पुरिसे ववहारी । तत्थ णं जेसे पुरिसे णो देइ सण्णवेइ, से णं पुरिसे ववहारी । तत्थ णं जेसे पुरिसे देइ वि सण्णवेइ वि, से पुरिसे ववहारी । तत्थ णं जेसे पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ, से णं अव्ववहारी । 'एवामेव तुमं पि ववहारी, णो चेव णं तुमं पएसी ! अव्ववहारी' ॥

जीवोवदंसणट्ठं-निवेदण-पदं

७७०. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! 'इय छेया' दक्खा° •पत्तट्ठा कुसला महामई विणीया विण्णाणपत्ता° उवएसलद्धा, समत्था णं भंते ! ममं करयलंसि वा° आमलयं जीवं सरीराओ अभिणिवट्टित्ताणं उवदंसित्तए ? ॥

केसिस्स समाधाण-पदं

७७१. तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संबुत्ते° । तणवणस्सइकाए एयइ वेयइ चलइ फंदइ घट्टइ° उदीरइ, तं तं भावं परिणमइ । तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—पाससि णं तुमं पएसी राया ! एवं तणवणस्सइकायं एयंतं° •वेयंतं चलंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरंतं° तं तं भावं परिणमतं ? हंता पासामि । जाणासि णं तुमं पएसी ! एवं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ ? असुरो वा चालेइ ? णागो वा चालेइ ? किण्णरो वा चालेइ ? किंपुरिसो वा चालेइ ? महोरगो वा चालेइ ? गंधव्वो वा चालेइ ? हंता जाणामि—णो देवो चालेइ, °णो असुरो चालेइ, णो णागो चालेइ, णो किण्णरो चालेइ, णो किंपुरिसो चालेइ, णो महोरगो चालेइ° णो गंधव्वो चालेइ, वाउयाए चालेइ ।

पाससि णं तुमं पएसी ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससररीरस्स रूवं ? णो तिणट्ठे समट्ठे ।

१. सं० पा०—वामेणं जाव विवच्चासं ।

५. व्वा (क) ।

२. एवामेव णो चेव णं तुमं पएसी अव्ववहारी

६. संजुत्ते (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

ववहारी (क, ख, ग, घ, च) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. अइछेया (क) ।

८. सं० पा०—एयंतं जाव तं तं ।

४. सं० पा०—दक्खा जाव उवएसलद्धा ।

९. सं० पा०—चालेइ जाव णो गंधव्वो ।

जइ णं तुमं पएसी ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स' *सकम्मरस सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स° ससरीरस्स रूवं न पाससि, तं कहं णं पएसी ! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं [सरीराओ अभिणिवट्टिताणं ?] उवदंसिस्सामि ?

एवं खलु पएसी ! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं जहा—
धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरवद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं, वायं, अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ, अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सइ वा नो वा करिस्सइ । एताणि चेव उप्पण्णणणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकायं', *अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरवद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं, वायं, अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ, अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सइ वा° णो वा करिस्सइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो° *अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं° ।

हत्थि-कुंथु-जीव समाणत्त-पदं

७७२. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—से णूणं भंते ! हत्थिस्स कुंथुस्स य समे चेव जीवे ? हंता पएसी ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे । से णूणं भंते ! हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव 'अप्पासवतराए चेव'° *अप्पाहारतराए चेव अप्पनीहारतराए चेव अप्पुस्सासतराए चेव अप्पनीसासतराए चेव अप्पिड्ढितराए चेव अप्पमहतराए चेव अप्पज्जुइतराए चेव° ? कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरिय'°तराए चेव महासवतराए चेव महाहारतराए चेव महानीहारतराए चेव महाउस्सासतराए चेव महानीसासतराए चेव महिड्ढितराए चेव महामहतराए चेव महज्जुइतराए चेव ?° ।

हंता पएसी ! हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव', *हत्थीओ कुंथू अप्पकिरियतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महाकिरियतराए चेव, हत्थीओ कुंथू अप्पासवतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महासवतराए चेव, एवं आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइएहि हत्थीओ कुंथू अप्पतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महातराए चेव° । कम्हा णं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?

पएसी ! से जहाणामए कूडागारसाला सिया'—*दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवाय° गंभीरा । अहं णं केइ पुरिसे जोइं व दीवं व गहाय तं कूडागारसालं अंतो-अंतो अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घण-निचिय-निरंतर-णिच्छिड्डाइं दुवार-वयणाइं पिहेति, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा । तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो-अंतो ओभासेइ उज्जोवेइ तावेति पभासेइ, णो चेव णं बाहि ।

१. सं० पा०—सरूविस्स जाव ससरीरस्स ।

इड्ढि महज्जुइ अप्पतराए चेव ।

२. सं० पा०—धम्मत्थिकायं जाव णो ।

६. सं० पा०—महाकिरिय जाव हंता ।

३. सं० पा०—जीवो तं चेव ।

७. सं० पा०—महाकम्मतराए चेव तं चेव ।

४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—सिया जाव गंभीरा ।

५. सं० पा०—एवं आहार नीहार उस्सास नीसास

अहं णं से पुरिसे तं पईवं इड्डरणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे तं इड्डरयं अंतो-अंतो ओभासेइ उज्जोवेइ तावेति पभासेइ, णो चेव णं इड्डरगस्स बाहि, णो चेव णं कूडागारसालं, णो चेव णं कूडागारसालाए बाहि । एवं--गोकिलिजेणं^१ 'पच्छियापिडएणं गंडमाणियाए'^२ 'आढएणं अद्धाढएणं पत्थएणं अद्धपत्थएणं कुलवेणं अद्धकुलवेणं चाउम्भाइयाए अट्ठभाइयाए सोलसियाए बत्तीसियाए चउसट्ठियाए'^३ अहं णं से पुरिसे तं पईवं दीवचंपएणं पिहेज्जा । तए णं से पदीवे दीवचंपगस्स अंतो-अंतो ओभासेति उज्जोवेइ तावेति पभासेइ, नो चेव णं दीवचंपगस्स बाहि, नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहि णो चेव णं कूडागारसालं, णो चेव णं कूडागारसालाए बाहि । एवामेव पएसी ! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बौद्धिं निव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहि जीवपदेसेहि सच्चित्तीकरेइ—खुड्डियं वा महालियं वा । तं सद्वहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो^४ *अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं^५ ॥

कुल-परंपरागयदिट्ठि-अच्छड्डण-पदं

७७३. तए णं पएसी राधा केसि कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एस सण्णा^१ *एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस^२ समोसरणे, जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं ।

तयाणंतरं च णं ममं पिउणो वि एस सण्णा^१ *एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस समोसरणे, जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं^२ ।

तयाणंतरं मम वि एस सण्णा^१ *एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस समोसरणे, जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं^२ ।

तं नो खलु अहं बहुपुरिसपरंपरागयं कुलणिसिसयं दिट्ठि छड्डेस्सामि^३ ॥

अयहारग-दिट्ठंत-पदं

७७४. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिरायं एवं वयासी—मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भवेज्जासि, जहा व से पुरिसे अयहारए । के णं भंते ! से अयहारए ?

पएसी ! से जहाणामए—केइ पुरिसा अत्थत्थी अत्थगवेसी अत्थलुद्धगा अत्थकखिया अत्थ-पिवासिया अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाण-पत्थयणं गहाय एणं महं अगामियं^४ छिण्णावायं^५ दीहमद्धं अडवी अणुपविट्ठा ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए^६ *छिण्णावायाए दीहमद्धाए^७ अडवीए कंचि देसं

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. गंडमाणियाए पच्छिपिडएणं (क, च); गंडमाणियाए पिडपिडएणं (ख, ग); गंडमाणियाए पिच्छिपिडएणं (छ) ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—जीवो तं चेव ।

५. सं० पा०—एस सण्णा जाव समोसरणे ।

६. सं० पा०—एस सण्णा ।

७. सं० पा०—एस सण्णा जाव समोसरणे ।

८. छंडिस्सामि (च) ।

९. अगामियं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए ।

अणुप्पत्ता समाणा एगमहं अयागरं पासंति—अएणं सव्वतो समंता आइण्णं विच्छिण्णं^१ सच्छडं^२ उवच्छडं^३ फुडं अवगाढं गाढं पासंति, पासित्ता हट्ठतुट्ठं^४ *चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं^५ हियया अण्णमण्णं सहावेत्ति, सहावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! अयभंडे इट्ठे कंते^६ *पिए मणुण्णे^७ मणामे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अमहं अयभारयं बंधित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, अयभारं बंधंति, बंधित्ता अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए^८ *छिण्णावायाए दीहमद्धाए^९ अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति—तउएणं आइण्णं^{१०} *विच्छिण्णं सच्छडं उवच्छडं फुडं अवगाढं गाढं पासंति, पासित्ता हट्ठतुट्ठं-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमण-स्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया अण्णमण्णं सहावेत्ति^{११}, सहावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! तउयभंडे^{१२} *इट्ठे कंते पिए मणुण्णे^{१३} मणामे । अप्पेणं चेव तउएणं सुवहं अए लब्भति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अयभारयं छड्ढेत्ता तउयभारयं बंधित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, अयभारं छड्ढेत्ति तउयभारं बंधंति ।

तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्ढेत्तए, तउयभारं बंधित्तए । तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! तउयभंडे^{१४} *इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे । अप्पेणं चेव तउएणं^{१५} सुवहं अए लब्भति । तं छड्ढेहि णं देवाणुप्पिया ! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि ।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—दूराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, चिराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, अइगाढबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, असिलिदुबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, धणियबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए—णो संचाएमि अयभारगं छड्ढेत्ता तउयभारगं बंधित्तए ।

तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचाएत्ति बहूहि आववणाहि य पण्णवणाहि य आघ-वित्तए वा पण्णवित्तए^{१६} वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

“*तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं तंवागरं पासंति—.....तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं रुप्पागरं पासंति—.....तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता

१. विणिच्छिण्ण (क,च) ; विणिकिण्णं (घ) ;

विणिच्छिण्णं (छ) ।

२. सच्छडं (क,ख,ग) ; सघडं (घ) ; संत्थडं (च) ; सच्छण्णं (छ) ।

३. उवत्थडं (च,छ) ।

४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।

५. सं० पा०—कंते जाव मणामे ।

६. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए ।

७. सं० पा०—आइण्णं तं चेव जाव सहावेत्ता ।

८. सं० पा०—तउयभंडे जाव मणामे ।

९. सं० पा०—तउयभंडे जाव सुवहं ।

१०. विण्णवित्तए (क,ख,ग,घ,छ) ।

११. सं० पा०—एवं तंवागरं रुप्पागरं सुवणागरं रयणागरं वइरागरं ।

समाणा एगं महं सुवण्णागरं पासंति *** तथा अहाणुपुब्बीए संपत्थिया ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं रयणागरं पासंति..... तथा अहाणुपुब्बीए संपत्थिया ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं वइरागरं पासंति—वइरेणं आइण्णं विच्छिण्णं सच्छडं उवच्छडं फुडं अवगाढं गाढं पासंति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणं दिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाणहियया अण्णमण्णं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! वइरभंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे । अप्पेणं चेव वइरेणं सुवहुं रयणे लब्भति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! रयणभारयं छड्ढेत्ता वइरभारयं बंधित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिमुणेंति, रयणभारं छड्ढेंति वइरभारं बंधंति ।

तए णं से पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्ढेत्तए, वइरभारं बंधित्तए । तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! वइरभंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे । अप्पेणं चेव वइरेणं सुवहुं अए लब्भति । तं छड्ढेहि णं देवाणुप्पिया ! अयभारगं, वइर-भारगं बंधाहि ।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—दूराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, चिराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, अइगाढबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, असिलिट्ठबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, धणियबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए—णो संचाएमि अयभारगं छड्ढेत्ता वइरभारयं बंधित्तए ।

तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचाएंति बहूहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य आघ-वित्तए वा पण्णवित्तए वा तथा अहाणुपुब्बीए संपत्थिया* ।

तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं-साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति, वइर-वेयणं करेति, सुवहुं दासी-दास-गो-महिस-गवेलगं गिण्हंति, अट्ठतलमूसिय^१-पासायवडेंसगे करावेति, ण्हाया कयवलिकम्मा उप्पि पासायवरगया फुट्टमाणेहि मुइंगमत्थएहि वत्तीसइ-वद्धएहि नाडएहि वरतरुणीसंपउत्तेहि उवणच्चिज्जमाणा उवगिज्जमाणा उवलालिज्जमाणा इट्ठे सद्-फरिस^२—रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणा^३ विहरंति ।

तए णं से पुरिसे अयभारए^४ जेणेव सए नगरे तेणेव उवागच्छइ, अयभारगं गहाय वेयणं^५ करेति । तंसि अयपुग्गलंसि निट्ठियंसि झीणपरिव्वए^६ ते पुरिसे उप्पि पासायवरगए^७ *फुट्टमाणेहि मुइंगमत्थएहि वत्तीसइवद्धएहि नाडएहि वरतरुणीसंपउत्तेहि उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए

१. मूलिय (क, ख, ग, च, छ) ।

२. सं० पा०—फरिस जाव विहरंति ।

३. पूर्व 'अयहारए' इति पाठो दृश्यते ।

४. अयवेयणं (क, ख, ग, च, छ) ।

५. पुरिसाए (क) ।

६. सं० पा०—पासायवरगए जाव विहरमाणे;
अत्र 'पच्चणुभवमाणे पासति' इत्यनेनैवार्थं
संगतिजयिते । 'पच्चणुभवमाणे विहरमाणे'
द्विरुक्तमिवाभाति, किन्तु सर्वेषु आदर्शेषु इत्यमेव
पाठो लभ्यते ।

पच्चणुभवमाणे° विहरमाणे पासति, पासित्ता एवं वयासी—अहो णं अहं अधण्णे अपुण्णे अकयत्थे अकयलक्खणे हिरिसिरिवज्जिए^१ हीणपुण्ण-चाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे । जत्ति णं अहं मित्ताण वा णाईण वा नियगाण वा सुणेलओ तो णं अहं पि एवं चेव उप्पि पासायवरगए^२ *फुट्टमाणेहि मुइंगमत्थएहि वत्तीसइवद्धएहि नाडएहि वरतरुणीसंपउत्तेहि उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे° विहरंतो ।

से तेणट्ठेणं पएसी ! एवं बुच्चइ—मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भवेज्जासि, जहा व से पुरिसे अयभारए ॥

पएसिस्स गिहिधम्म-पडिवज्जण पदं

७७५. एत्थ णं से पएसी राया संबुद्धे केसि कुमार-समणं वंदइ^३ *नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—णो खलु भंते ! अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि, जहा व से पुरिसे अयभारए, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलपण्णत्तं धम्मं निसामित्ते । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवधं करेहि । धम्मकहा जहा^४ चित्तस्स गिहिधम्मं पडिवज्जइ, जेणेव सेयविया नगरी तेणेव प्हारेत्थ गमणाए ॥

आयरिय-विणयपडिवत्ति-पदं

७७६. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ आयरिया पण्णत्ता ? हंता जाणामि, तओ आयरिआ पण्णत्ता, तंजहा—कलायरिए, सिप्पायरिए, धम्मायरिए ।

जाणासि णं तुमं पएसी ! तेसि तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा ? हंता जाणामि—कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं^५ संमज्जणं वा करेज्जा, पुप्फाणि वा आणवेज्जा, मज्जावेज्जा, मंडावेज्जा^६, भोयावेज्जा वा, विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा, पुत्ताणुपुत्तियं विट्ति कप्पेज्जा ।

जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा तत्थेव वंदेज्जा णमंसेज्जा सक्कारेज्जा सम्माणेज्जा, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा, फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएणं पीढ-फलण-सेज्जा-संथारएणं उवणिमंतेज्जा ।

एवं च ताव तुमं पएसी ! एवं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामं वामेणं° *दंडं दंडेजं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं° वट्ठित्ता ममं एयमट्ठं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया नगरी तेणेव प्हारेत्थ गमणाए ॥

पएसिस्स अत्त-निवेदण-पदं

७७७. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मम एयारूवे अज्झत्थिए^७ *चित्तिए पत्थिए मणीगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं

१. °परिवज्जिए (क, ख, ग, च, छ) ।

२. सं० पा०—पासायवरगए जाव विहरंतो ।

३. सं० पा०—वंदइ जाव एवं ।

४. राय० सू० ६६३ ।

५. उलेवणं (क, च, छ) ।

६. मुंडावेज्जा (क, छ) ।

७. सं० पा०—वामेणं जाव वट्ठित्ता ।

८. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

देवानुप्पियाणं वामं वामेणं^१ •दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं^२ वट्टिए, तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगपगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्वारागसरिसे कमलागर-णलिणिसंडवोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अंतेउर-परियालसद्धि संपरिवुडस्स^३ देवानुप्पिए वंदित्ता नमंसित्ता एतमट्ठं भुज्जो-भुज्जो सम्मं विणएणं खामित्तए सि कट्ठु जामेव दिस्सि पाउब्भूए तामेव दिस्सि पडिगए ॥

पएसिस्स खामणा-पदं

७७८. तए णं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए^४ •फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगपगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्वारागसरिसे कमलागर-णलिणिसंडवोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे^५ तेयसा जलंते हट्ठुट्ठु^६ •चित्तमाणदिए पीडमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^७ हियए जहेव कूणिए तहेव^८ निगच्छइ—अंतेउर-परियालसद्धि संपरिवुडे, पंचविहेणं अभिगमेणं^९ •अभिगच्छइ, [तंजहा—सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए, एगसाडियं उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीभावकरणेणं]^{१०} । केस्सि कुमार-समणं तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता^{११} वंदइ नमंसइ, एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो सम्मं विणएणं खामेइ ॥

चाउज्जामधम्म-कहण-पदं

७७९. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिस्स रण्णो सूरियकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसे य महत्तिमहालियाए महच्चपरिसाए^{१२} •चाउज्जामं^{१३} धम्मं परिकहेइ^{१४} ॥

रमणिज्ज-अरमणिज्ज-पदं

७८०. तए^{१५} णं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म उट्ठाए उट्ठेति, केस्सि कुमार-

१. सं० पा०—वामेणं जाव वट्टित्ता ।

२. परिवुडस्स (क, ख, ग, च) ।

३. सं० पा०—रयणीए जाव तेयसा ।

४. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव हियए ।

५. ओ० सू० ६३-७० ।

६. सं० पा०—अभिगमेणं जाव वंदइ ।

७. कोष्ठकवर्तिपाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

८. सं० पा०—महच्चपरिसाए जाव धम्मं ।

९. राय० सू० ६६३ ।

१०. केशिस्वामिना प्रदेशिराजस्य चातुर्धर्मः धर्मः कथितः । (द्रष्टव्यं सू० ७७९) प्रदेशिराजेन च देश-रूपेण चातुर्धर्मः धर्मः स्वीकृतः । (द्रष्टव्यं सू० ७८६) किन्तु अत्र तत्स्वीकारस्य नास्ति कश्चि-दुल्लेखः । ७८६ सूत्रे 'पुत्वि पि णं मए केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चवखाए' इत्यादि उल्लिखितमस्ति किन्तु इह नास्ति तस्योत्पत्तिः, तेनेति प्रतीयतेसौ पाठः संक्षिप्तपद्धत्या व्रुटितो जातः । प्रकरणानुसारेणात्र इत्थं पाठो युज्यते—तए णं सा महत्तिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिस्सि पाउब्भूया तामेव दिस्सि पडिगया ।

तए णं से पएसी राया केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठुचित्तमाणदिए पीडमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केस्सि कुमार-समणं

समणं वंदइ नमंसइ, जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

७८१. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—मा णं तुमं पएसी ! पुर्व्वि रमणिज्जे भविता पच्छा' अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा—से वणसंडेइ वा, णट्ट-सालाइ वा, इवखुवाडेइ वा, खलवाडेइ वा ॥

७८२. कहं णं भंते ! *वणसंडे पुर्व्वि रमणिज्जे भविता पच्छा अरमणिज्जे भवति ? पएसी ! — जया णं वणसंडे पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव-अईव उवसोभमाणे चिट्ठइ, तथा णं वणसंडे रमणिज्जे भवति । जया णं वणसंडे नो पत्तिए नो पुप्फिए नो फलिए नो हरियगरेरिज्जमाणे णो सिरीए अईव-अईव उवसोभमाणे चिट्ठइ तथा णं जुण्णे झडे' परिसडिय-पंडुपत्ते सुक्करुवखे इव मिलायमाणे चिट्ठइ, तथा णं वणसंडे' णो रमणिज्जे भवति ॥

७८३. [कहं णं भंते ! णट्टसाला पुर्व्वि रमणिज्जा भविता पच्छा अरमणिज्जा भवति ? पएसी ! ?] जया णं णट्टसाला गिज्जइ' वाइज्जइ नच्चिज्जइ अभिणिज्जइ हसिज्जइ रमिज्जइ, तथा णं णट्टसाला रमणिज्जा भवइ । जया णं णट्टसाला णो गिज्जइ* *णो वाइज्जइ णो नच्चिज्जइ णो अभिणिज्जइ णो हसिज्जइ* णो रमिज्जइ, तथा णं णट्टसाला अरमणिज्जा भवइ ॥

तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं । तहमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं । अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! जं णं तुब्भे वदह ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बह्वे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जाव—सू० ६८८ इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं, एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-संतसार-सावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडा भविता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयंति, णो खलु अहं तहा संचाएमि चिच्चा हिरण्णं, एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि - मोत्तिय - संख-सिल-प्पवाल-संतसार-सावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडे भविता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए चाउज्जामियं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

तए णं से पएसि राया केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए चाउज्जामियं गिहिधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ।

तए णं पएसि राया केसि कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

१. पच्छा मा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. ७८३, ७८४, ७८५ : कोष्ठकवर्तिपाठः पूर्व-

२. सं० पा०—भंते ! वणसंडे ।

सूत्रक्रमेण पूरितोस्ति ।

३. डोडे (क, ख, ग, घ); झाडे (च, छ) ।

६. वइगिज्जइ (च, छ) ।

४. वणे (क, च, छ) ।

७. सं० पा०—गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ ।

७८४. [कहं णं भंते ! इक्खुवाडे पुंवि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवति ? पएसी ! ?] जया णं इक्खुवाडे छिज्जइ भिज्जइ लुज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ, तथा णं इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ । जया णं इक्खुवाडे णो छिज्जइ* णो भिज्जइ णो लुज्जइ णो खज्जइ णो पिज्जइ णो दिज्जइ°, तथा णं इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ ॥

७८५. [कहं णं भंते ! खलवाडे पुंवि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवति ? पएसी ! ?] जया णं खलवाडे उच्छुब्भइ उडुइज्जइ° मलइज्जइ पुणिज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ, तथा णं खलवाडे रमणिज्जे भवति । जया णं खलवाडे णो उच्छुब्भइ* णो उडुइज्जइ णो मलइज्जइ नो पुणिज्जइ नो खज्जइ णो पिज्जइ णो दिज्जइ, तथा णं खलवाडे° अरमणिज्जे भवति ॥

७८६. से तेणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ—मा णं तुमं पएसी ! पुंवि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा—से वणसंडेइ वा° णट्टसालाइ वा, इक्खुवाडेइ वा° खलवाडेइ वा ॥

७८७. तए णं पएसी केसि कुमार-समणं एवं वयासी—णो खलु भंते ! अहं पुंवि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि, जहा—से वणसंडेइ वा° णट्टसालाइ वा, इक्खुवाडेइ वा° खलवाडेइ वा,—अहं णं सेयवियापामोक्खाइं सत्तगामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि—एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि, एगं भागं कोट्टागारे छुभिस्सामि, एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि, एगेणं भागेणं महत्तिमहालियं कूडागारसालं करिस्सामि । तत्थ णं वहुहि पुरिसेहि दिण्णभइ-भत्त-वेयणेहि विउलं असणं पाणं साइमं खाइमं उवक्खडावेत्ता वहुणं समण-माहण-भिव्खुयाणं पंथियं-पहियाणं परिभाएमाणे, वहुहि सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि° अप्पाणं भावेमाणे° विहरिस्सामि त्ति कट्ठु जामेव दिसि° पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

पएसिणा रज्जस्स चउभाग-करण-पदं

७८८. तए णं से पएसी राया कल्लं° णाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोग-पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-णलिणिसंडवोहए उट्ठियम्मि सूरु सहरस्सरस्सिस्मि दिणयरे° तेयसा जलंते सेयवियापामोक्खाइं सत्तगामसहस्साइं चत्तारिभाए करेइ—एगं भागं बलवाहणस्स दलयइ°,

१. सं० पा०—छिज्जइ जाव तथा णं ।

२. उडं (क, घ, च) ।

३. सं० पा०—उच्छुब्भइ जाव अरमणिज्जे ।

४. सं० पा०—वणसंडे इ वा ।

५. सं० पा०—वणसंडे इ वा जाव खलवाडे ।

६. °समक्खाइं (च, छ) ।

७. पंथियाणं (क) ।

८. सं० पा०— पोसहोववासस्स जाव

पाठः इत्थं लभ्यते—पोसहोववासेहि अहापरि-
ग्गहिर्एहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे
विहरइ । सूत्रकृताङ्गे (२।२।७२) पि इत्थ-
मेव—पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिर्एहि
तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

९. दिसं (क) ।

१०. सं० पा०—कल्लं जाव तेयसा ।

११. सं० पा०—दलयइ जाव कूडागारसालं ।

विहरिस्सामि; औपपातिके (सू० १२०) अयं

•एगं भागं कोट्टागारे छुभइ, एगं भागं अंतेउरस्स दलयइ, एगेणं भागेणं महतिमहालियं० कूडागारसालं करेइ ।

तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं० •दिण्णभइ-भत्त-वेयणेहिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं० उववखडावेत्ता वहुणं समणं० •माहण-भिवखुयाणं पंथिय-पहियाणं० परिभाएमाणे विहरइ ॥
पएसिस्स समणोवासयत्त-पदं

७८६. तए णं से पएसी राया समणोवासए अभिगयजीवाजीवे० •उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बंधपमोवख-कुसले असहिज्जे देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिवकंखिए णिव्वित्तिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे अभिगयट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिभिजपेमाणुरागरत्ते अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अट्ठे परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघर-प्पवेसे चाउइसट्ठमुद्धिपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे, समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणे-पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चवखाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे० विहरइ ॥

पएसिस्स रज्जोवरइ-पदं

७९०. जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्टागारं च पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरति ॥

सूरियकंताए सूरियकंतेण मंतणा-पदं

७९१. तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए० •चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे० समुप्पज्जित्था—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं० •च बलं च वाहणं च कोट्टागारं च पुरं च० अंतेउरं च ममं जणवयं च अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे पएसि रायं केणवि सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा उद्दवेत्ता० सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता सयमेव रज्जसिंरिं 'कारेमाणीए पालेमाणीए'० विहरित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सूरियकंतं कुमारं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च० •रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्टागारं च पुरं च० अंतेउरं च ममं जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु तव पुत्ता ! पएसि रायं केणइ सत्थप्पओगेण वा० •अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेण

१. सं० पा०—पुरिसेहिं जाव उववखडावेत्ता ।

२. सं० पा०—समण जाव परिभाएमाणे ।

३. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे.....विहरइ ।

४. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

५. रट्ठं जाव अंतेउरं ।

६. उवद्वेत्ता (छ) ।

७. कारेमाणी पालेमाणी (छ) ।

८. सं० पा०—रज्जं च जाव अंतेउरं ।

९. सं० पा०—सत्थप्पओगेण वा जाव उद्दवेत्ता ।

वा° उह्वेत्ता सयमेव रज्जसिर् 'कारेमाणस्स पालेमाणस्स' विहरित्तए ॥

७६२. तए णं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

सूरियकंताए विसप्पओग-पदं

७६३. तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए° •चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—मा णं सूरियकंते कुमारे पएसिस्स रण्णो इमं रहस्सभेयं करिस्सइ त्ति कट्ठु पएसिस्स रण्णो छिद्दाणि य मम्माणि° य रहस्साणि य विवराणि° य अंतराणि य पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

७६४. तए णं सूरियकंता देवी अण्णया कयाइ पएसिस्स रण्णो अंतरं जाणइ, जाणित्ता असणं° •पाणं खाइमं° साइमं° सव्व-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं° विसप्पजोगं पउंजइ । पएसिस्स रण्णो ण्हायस्स° •कयवलिकम्मस्स कयकोउय-मंगल° पायच्छित्तस्स सुहासणवरगयस्स तं विससंजुत्तं असणं° •पाणं खाइमं साइमं सव्व-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं° निसिरेइ ॥

पएसिस्स समाहि-मरण-पदं

७६५. तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो तं विससंजुत्तं असणं आहारेमाणस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला विपुला पगाढा कक्कसा कडुया 'फरुसा निट्ठुरा'° चंडा° तिक्वा दुक्खा दुग्गा दुरहियासा, पित्तजरपरिगयसरीरे 'दाहवक्कत्तिए यावि'° विहरइ ॥

७६६. तए णं से पएसी राया सूरियकंताए देवीए अ-प्पदुस्समाणे जेण्वे पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, पोसहसालं पविसइ°, उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, दब्भसंधारगं संधरेइ, दब्भसंधारगं दुरुहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव° सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं केसिस्स कुमार-समणस्स मम 'धम्मोवदेसगस्स धम्मायरियस्स'° वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासइ मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्ठु वंदइ नमंसइ । पुंवि पि णं मए केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए° पच्चक्खाए

१. कारेमाणे पालेमाणे (क, छ) ।

१२. पमज्जइ (च) ।

२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

१३. राय° सु० ८ ।

३. वम्माणि (च) ।

१४. धम्मोवएसट्ठाणस्स (क, ख, ग, घ, छ); × (च) ।

४. विहुराणि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. सं० पा०—असणं जाव साइमं ।

१५. सं० पा०—पच्चक्खाए जाव परिगहे; ७७६

६. वत्थं गंधं सव्वालंकारं (क); सव्वत्थ° (च, छ) ।

सूत्रानुसारेण केसिस्वामिना प्रदेशिराजाय चातुर्यामिको धर्मः कथितः । ७८० सूत्रस्य

७. सं० पा०—ण्हायस्स जाव पायच्छित्तस्स ।

पादटिप्पणगतपाठानुसारेण प्रदेशिराजेन

८. सं० पा०—असणं जाव अलंकारं ।

केसिस्वामिनोन्तिके चातुर्यामिको गृहिधर्मः

९. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

स्वीकृतः । प्रस्तुतसूत्रे पूर्वोक्तपाठानां संदर्भे

१०. वंता (क, च, छ) ।

एवासौ पाठः पूरितः तेनात्र चातुर्यामिक-

११. दाहवक्कत्तिया वि (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।

गृहिधर्मस्यैव पाठो युज्यते ।

●थूलए मुसावाए पच्चक्खाए, थूलए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, तं इयाणि पि णं तस्सेव भगवतो अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि^१ ●सव्वं मुसावायं पच्चक्खामि सव्वं^२ अदिण्णादाणं पच्चक्खामि सव्वं^३ परिग्गहं पच्चक्खामि सव्वं—कोहं^४, ●माणं, मायं, लोहं, पेज्जं, दोसं, कलहं, अब्भक्खाणं, पेमुण्णं, परपरिवायं, अरइरइं, मायामोसं^५, मिच्छादंसणसत्तलं, अकरणिज्जं जोयं पच्चक्खामि । सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि । जं पि य भे सरीरं इट्ठं^६ ●कतं पियं मणुण्णं मणामं पेज्जं वेसासियं संमयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाइय-पित्ति-सिभिय-सण्णिवाइयं^७ विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा^८ फुसंतु त्ति एयं पि य णं चरिमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्ठु आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए^९ ●देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिते अंगुलस्स असंखेज्जतिभागमेत्तीए ओगाहणाए सूरियाभदेवत्ताए^{१०} उववण्णे ॥

सूरियाम-देव-पदं

७६७. तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववण्णाए चेव समाने पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छति, [तंजहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आण-पाणपज्जत्तीए भास-मणपज्जत्तीए]^१ । तं एवं खलु गोयमा ! सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ॥

७६८. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

दढपइण्णग-पदं

७६९. से णं सूरियाभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति—अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं वित्थिण्ण-विपुल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइं बहुधण-बहुजातरूव-रययाइं 'आओग-पओग-संपउत्ताइं'^१ विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं तत्थ अण्णयरेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चाइस्सइ ॥

८००. तए^२ णं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि अम्मापिऊणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ ॥

८०१. तए णं तस्स दारयस्स नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्टमाण य राइंदियाणं

१. सं० पा०—पच्चक्खामि जाव परिग्गहं ।

२. सं० पा०—कोहं जाव मिच्छादंसणसत्तलं ।

३. सं० पा०—इट्ठं जाव फुसंतु ।

४. इह प्रथमा बहुवचनलोपो दृश्यते ।

५. सं० पा०—उववायसभाए जाव उववण्णे ।

६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।

७. × (क,ख,ग,घ,च,छ) ।

८. प्रस्तुतागमे औपपातिकसूत्रे च दृढप्रतिज्ञस्थ प्रकरणं प्रायः समानमस्ति, केवलं पाठरचनायाः किञ्चित्-किञ्चिद् भेदो दृश्यते ।

वित्तिककंताणं^१ सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिदियसरीरं लवखण-वज्जण-गुणोववेयं
माणुम्माअणमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरं ससि-सोमाकारं^२ कंतं पियदंसणं सुखं दारयं
पयाहिइ ॥

८०२. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठितिवडियं करेस्संति
ततिय दिवसे चंदसूरदंसणं करेस्संति छट्ठे दिवसे जागरियं^३ जागरिस्संति, एक्कारसमे
दिवसे वीइक्कंते संपत्ते बारसमे^४ दिवसे णिव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे चोक्खे संमज्जिओ-
वल्लिते विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेस्संति, मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-
परिजणं आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा^५ *कयकोउयमंगल-पायच्छित्ता
सुद्धपावेसाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिता अप्पमहग्घाभरणा^६ लंकिया भोयणमंडवंसि
सुहासणवरगया तेणं मित्त-णाइ^७ *णियग-सयण-संबंधि^८-परिजणेण सद्धि विउलं असणं पाणं
खाइमं साइमं आसाएमाणा वीसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं 'च णं'^९ बिहरि-
स्संति । जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्त-
णाइ^{१०} *णियग-सयण-संबंधि^{११}-परिजणं विउलेणं वत्थ-गंध-मत्तालंकारिणं सक्कारेस्संति
मम्माणिस्संति, तस्सेव मित्त^{१२}-णाइ-णियग-सयण-संबंधि^{१३}-परिजणस्स पुरतो एवं वइस्संति
—जम्हा णं देवाणुप्पिया ! इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि धम्मे दढा पइण्णा
जाया, 'तं होउ णं अम्हं एयस्स दारयस्स दढपइण्णे णामे णं'^{१४} ॥

८०३. तए णं तस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठितिवडियं च चंदसूरदरिसणं च
जागरियं च नामधिज्जकरणं च 'पजेमणं च'^{१५} पच्चकमणं च कण्णवेहणं च
संवच्छरपडिलेहणं च 'चूलोवणं च'^{१६} अण्णाणि य बहूणि गब्भाहाणजम्मणाइयाइ महया
इड्ढी-सक्कार-समुदएणं करिस्संति ॥

८०४. तए णं दढपत्तिण्णे दारगे पंचधाईपरिबिखत्ते—[खीरधाईए 'मज्जणधाईए
मंडणधाईए अंकधाईए कीलावणधाईए'^{१७}], अण्णाहि बहूहि खुज्जाहि चिलाइयाहि

१. अत्र 'सा' इति कर्तृपदं अध्याहार्यम् । द्रष्टव्यं
ठाणं ६।६२ सूत्रम् ।
२. सोम्मा^० (क, ख, ग) ।
३. धम्मजागरियं (क) ।
४. बारसाहे (क, च) ।
५. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव लंकिया ।
६. सं० पा०—णाइ जाव परिजणेण ।
७. चेव णं (क, ख, ग, च, छ) ।
८. सं० पा०—णाइ जाव परिजणं ।
९. सं० पा०—मित्त जाव परिजणस्स ।
१०. तं होउ णं अम्हं दारए दढपइण्णे णामेणं । तए
णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं

- करेहिंति दढपइण्णति (ओ० सू० १४४) ।
११. पुरगामणं च पंथगामणं च पज्जेमामणं च
पिडवद्धावणं च पज्जमाणं च (क); परं-
गामणं च पंचगामणं च पजेगामणं च पिड-
वद्धावणं च पज्जमाणं च (ख, ग, च);
पगामणं च पच्चकमणं च पजेपमाणं च पिड-
वद्धावणं च पज्जमाणं च (छ) ।
१२. चोलावणं च उवणं च (क, ख, ग, च);
चोलविणं च (च) ।
१३. मंडणधाईए मज्जणधाईए कीलावणधाईए
अंकधाईए (वृ) । कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यायः
प्रतीयते ।

वामणियाहि वडभियाहि वब्बरियाहि वउसियाहि' जोणियाहि पल्हवियाहि' ईसिणियाहि
थारुणियाहि' लासियाहि लउसियाहि दमिलाहि सिंहलीहि' पुलिदीहि आरवीहि पक्कणीहि
वहलीहि मुरंडीहि' सबरीहि' पारसीहि' णाणादेसीहि' विदेस-परिमंडियाहि' 'इंगिय-चित्तिय-
पत्थिय-वियाणयाहि' सदेश-णेवत्थ-गहिय-वेसाहि' निउणकुसलाहि' विणीयाहि, चेडिया-
चक्कवाल-वरतरुणिवंद-परियाल-संपरिवुडे वरिसधर'-कंचुइमहयखंदपरिक्खित्ते हत्थाओ
हत्थं साहरिज्जमाणे-साहरिज्जमाणे उवणचिज्जमाणे-उवणचिज्जमाणे 'अंकाओ अंक'
परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे 'उवगाइज्जमाणे-उवगाइज्जमाणे' उवलालिज्जमाणे-
उवलालिज्जमाणे 'उवगूहिज्जमाणे-उवगूहिज्जमाणे' अवतासिज्जमाणे-अवतासिज्जमाणे
'परिवंदिज्जमाणे-परिवंदिज्जमाणे' परिचुविज्जमाणे-परिचुविज्जमाणे रम्मेसु मणिकोटिस-
तलेसु परंगमाणे परंगमाणे' गिरिकंदरमल्लीणे विव' चंपगवरपायवे णिब्बाघायंसि सुहंसुहेणं
परिवड्ढिसइ ॥

८०५. तए णं तं दढपइणं दारगं अम्मापियरो सातिरेगअट्ठवासजायगं जाणित्ता
सोभणंसि तिहिकरण-णवखत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयवलिकम्मं कयकोउयमंगल-पायच्छित्तं
सब्बालंकारविभूसियं करेत्ता महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिंति ॥

८०६. तए णं से कलायरिए तं दढपइणं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउण-
रुपपज्जवसाणाओ बावत्तरि कलाओ सुत्तओ अत्थओ य गंथओ य 'करणओ य'
'सिक्खावेहिइ सेहावेहिइ', तं जहा—१. लेहं २. गणियं ३. रुवं ४. नट्टं ५. गीयं ६. वाइयं
७. सरगयं ८. पुक्खरगयं ९. समतालं १०. जूयं ११. जणवायं १२. पासगं १३. अट्ठावयं
१४. पोरेकव्वं १५. दग्गमट्ठियं १६. अन्नविहिं १७. पाणविहिं १८. वत्थविहिं १९.
विलेवणविहिं २०. सयणविहिं २१. अज्जे २२. पहेलियं २३. मागहियं २४. गाहं
२५. गीइयं २६. सिलोगं २७. हिरण्णजुत्ति २८. सुवण्णजुत्ति २९. आभरणविहिं
३०. तरुणीपडिकम्मं ३१. इत्थिलक्खणं ३२. पुरिसलक्खणं ३३. हयलक्खणं ३४.

१. बक्कं (क); चउं (ख, ग, घ); पउसियाहि

(ओ० सू० ७०) ।

२. पणं (ख, ग, घ, च) ।

३. वारुणियाहि (क, च, छ); वारुणिणियाहि
(ख, ग, घ) ।

४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. मरंडीहि (ओ० सू० ७०) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सदेसनेवच्छगहियवेसाहि इंगियचित्तियपत्थिय-
वियाणियाहि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. वरिसवर (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. अंगेण अंगं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. परिगीयमानः (वृ) ।

११. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. औपपातिक १४४ सूत्रस्य वाचनान्तरे—
'परंगिज्जमाणे' इति पाठो दृश्यते ।

१४. इव (क) ।

१५. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१६. सिक्खावेहि य सेहावेहि य (क); सेहावेहि य
सिक्खावेहि य (वृ) ।

१७. जणवयं (घ, च, छ) ।

१८. अज्जे (क, ख, ग, घ) ।

१९. मागहियं णिहाइयं (घ, च, छ) ।

२०. गीयं (च, छ) ।

गयलक्खणं ३५. गोणलक्खणं ३६. कुक्कुडलक्खणं ३७. छत्तलक्खणं ३८. चक्कलक्खणं^१ ३९. दंडलक्खणं ४०. असिलक्खणं ४१. मणिलक्खणं ४२. कागणिलक्खणं^२ ४३. वत्थुविज्जं ४४. णगरमाणं ४५. खंधावारमाणं ४६. चारं ४७. पडिचारं ४८. वूहं ४९. पडिवूहं ५०. चक्कवूहं ५१. गरुलवूहं ५२. सगडवूहं ५३. जुद्धं ५४. निजुद्धं ५५. जुद्धजुद्धं^३ ५६. अट्टिजुद्धं ५७. मुट्टिजुद्धं ५८. बाहुजुद्धं ५९. लयाजुद्धं ६०. ईसत्थं ६१. छरुप्पवायं ६२. धणुवेयं ६३. हिरण्णपागं ६४. सुवण्णपागं^४ ६५. सुत्तखेड्डं^५ ६६. वट्टखेड्डं ६७. गालियाखेड्डं ६८. पत्तच्छेज्जं ६९. कडगच्छेज्जं ७०. सज्जीवं ७१. निज्जीवं ७२. सउणस्यं इति ॥

८०७. तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणस्यपज्जवसाणाओ वावत्तरि कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंधओ य करणओ य सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिइ ॥

८०८. तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति सम्माणिस्संति, विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविसज्जेहिइति ॥

८०९. तए णं से दढपइण्णे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणग-मणुपत्ते वावत्तरिकलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहिए अट्टारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए^६ गीयरई गंधव्वणट्टकुसले सिगारागारचारुवे^७ संगय-गय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलास-णिउण-जुत्तोवयारकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमदी अलंभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी यावि भविस्सइ ॥

८१०. तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं^८ *विण्णय-परिणयमित्तं जोव्वणगमणुपत्तं वावत्तरिकलापंडियं णवंगसुत्तपडिबोहियं अट्टारसविहदे-सिप्पगारभासाविसारयं गीयरइं गंधव्वणट्टकुसलं सिगारागारचारुवं संगय-गय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलास-णिउण-जुत्तोवयारकुसलं हयजोहिं गयजोहिं रहजोहिं बाहुजोहिं बाहुप्पमदिं अलंभोगसमत्थं साहसियं^९ वियालचारिं च वियाणित्ता विउलेहिं अण्णभोगेहि य पाणभोगेहि य लेणभोगेहि य वत्थभोगेहि य सयणभोगेहि य उवनिस्संतेहिइति ॥

८११. तए णं दढपइण्णे दारए तेहि विउलेहिं अण्णभोगेहिं^{१०} *पाणभोगेहिं लेणभोगेहिं वत्थभोगेहिं^{११} सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति णो गिज्झिहिति णो मुज्झिहिति णो अज्झोववज्जिहिति । से जहाणामए पउमुप्पलेइ^{१२} वा पउमेइ वा^{१३} *कुमुएइ वा नलिणेइ वा सुभगेइ वा सुगधिणइ वा पोंडरीएइ वा महापोंडरीएइ वा^{१४} सयपत्तेइ वा सहस्सपत्तेइ वा

१. × (क, ख, ग) ।

२. कामिणिं (क) ।

३. जुद्धाइजुद्धं (क, ख, ग) ।

४. *पागं मणिपागं धाउपागं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. *खेड्डं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. *विहदेसप्पं (क, घ) ।

७. भिगारां (क) ।

८. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावं जाव वियाल-चारि ।

९. सं० पा०—अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ।

१०. 'उप्पलेइ' ओ० सू० १५०; अत्रापि 'उप्पलेइ' इति पाठो युक्तोस्ति ।

११. सं० पा०—पउमेइ वा जाव सयसहस्सपत्तेइ वा ।

पंके जाते जले संवुड्हे णोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव दढपइण्णे वि दारए कर्मेहिं जाए भोगेहिं संवड्ढिए णोवलिप्पिहिति^१ *कामरएणं णोवलिप्पिहिति भोगरएणं णोवलिप्पिहिति^२ मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं ॥

८१२. से णं तहारुवाणं थेराणं अंतिए केवलं वोहिं बुज्झिहिति, मुंडे^३ भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सति ॥

८१३. से णं अणगारे भविस्सइ—इरियासमिए^४ *भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-णिकखेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिचणे निरुवलेवे कंसपाईव मुक्कतोए, संखो इव निरंगणे, जीवो विव अप्पडिहयगइ, जच्चकणगं पिव जायरूवे, आदरिसफलमा इव पागडभावे, कुम्भो इव गुत्तिदिए, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे, गगणमिव निरालंबणे, अणिलो इव निरालए, चंदो इव सोमलेसे, सूरु इव दित्ततेए, सागरो इव गंभीरे, विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के, मंदरो इव अप्पकंपे, सारयसलिलं व सुद्धहियए, खग्गविसाणं व एगजाए, भाण्डपक्खी व अप्पमत्ते, कुंजरो इव सोडीरे, वसभो इव जायत्थामे, सीहो इव दुद्धरिसे, वसुंधरा इव सव्वफासविसहे^५, सुहयहुयासणे इव तेयसा जलंते ॥

८१४. तस्स णं भगवतो अणुत्तरेणं णाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मद्दवेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजम-सुच्चरियतवफल^६-णिग्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे णिरावरणे णिग्वाघाए केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिति ॥

८१५. तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ, सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणिहिति, तं जहा—आगतिं गतिं ठिंति चवणं 'उववायं तक्कं'^७ कडं मणोमाणसियं खइयं भुत्तं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं, अरहा अरहस्सभागी तं कालं तं मणवय-कायजोगे वट्टमाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ ॥

८१६. तए णं दढपइण्णे केवली एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं केवलि-परियायं पाउणिहिति, पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता, बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ, बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइस्सइ, जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे केसलोए बंभचेरवासे अण्हाणं अदंतमणं अच्छत्तं अणुवाहणं भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परधरपवेसो लद्धावलद्धाइं माणावसाणाइं परेसिं^८ हीलणाओ निदणाओ खिसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ उच्चावया विरुवरूवा दावीसं परीसहोवसग्गा गामकंठगा अहियासिज्जति, तमट्ठं आराहेहिइ, आराहित्ता चरिमेहिं उस्सास-निस्सासेहिं सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिग्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥

१. सं० पा०—णोवलिप्पिहिति मित्तणाइ ।

२. केवलं मुंडे (क, च, छ) ।

३. सं० पा०—इरियासमिए जाव सुहयहुयासणे ।

४. सुच्चरियतवसुच्चरियफल (क, ख, ग, घ, च, छ);

सच्चसंजमतवसुच्चरियसोवच्चियफल (प० ८१) ।

५. उववायं तत्थं (घ); उववातत्थं (च);

उववायतत्थं (छ) ।

६. औपपातिके (सू० १५४) 'परेहिं' पाठो लभ्यते ।

८१७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ,
 वंदित्ता नमंसित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।
 णमो जिणाणं जियभयाणं । णमो सुयदेवयाए भगवतीए । णमो पणत्तीए भगवईए ।
 णमो भगवओ अरहओ पासस्स । पस्से सुपस्से पस्सवणी णमो ॥

ग्रन्थ-परिमाण

अक्षर-परिमाण : ६३८६४

अनुष्टुप्-श्लोक-परिमाण : २६३४, अक्षर ६

परिशिष्ट

परिशिष्ट-१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्व-स्थल और आधार-स्थल निर्देश
ओवाइयं

संक्षिप्त-पाठ	पूर्व-स्थल सूत्र	पूर्ति आधार-स्थल सूत्र
अगामियाए जाव अडवीए	११७	११६
अट्टारस सागरोवमाई ठिई पणत्ता परलोगस्स		
आराहमा सेसं तं चेव	१५७	८६
अणत्ते जाव केवलवरणाणदंसणे	१६५	१५३
अण्णभोगेहि जाव सयणभोगेहि	१५०	१४६
अपज्जवसिया जाव चिट्ठंति	१८४	१८३
अपडिविरया एवं जाव परिग्गहाओ	१६१	११७
अभिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे		
विहरइ, णवरं ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे		
चियत्तंतेउरघरदारपवेसी ^१ एयं ण वुच्चई	१२०	वृत्ति, पृष्ठ १८८
अयबंधणाणि वा जाव महद्धणमोत्ताइं	१०६	१०५
अवहमाणए जाव से	१३७	१११
असंजए जाव एगंतसुत्ते	८५, ८७	८४
आगमेसिभद्दा जाव पडिरूवा	७२	वृत्ति, पृष्ठ १५३
आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी	२४	नंदी सू० २
आयारधरा जाव विवागसुयधरा	४५	नंदी सू० ७६
आवलियाए जाव अयणे	२८	वृत्ति, पृष्ठ ६८
इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी	१५२	२७
उदए जाव भीणे	११७	११६
एक्कत्तीसं सागरोवमाई ठिई परलोगस्स		
अणाराहमा सेसं तं चेव	१६०	८६
एवं एएणं अभिलावेणं तिरिक्खजोणिएसु	७३	७३
एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं	४०	४०

१. क्वचित्—‘चियत्तघरंतेउरपवेसी’ ति (वृ) ।

एवं जाव सव्वं परिग्गहं	११७	११७
एवं माण माया लोहा	१६८	१६८
एवं सुपण्णत्ते सुभासिए सुविणीए सुभाविए	७६	७६
एवमाइक्खइ जाव एवं	११८	११८
एवमाइक्खामि जाव पक्खेमि	११८	११८
कंदमंते जाव पविमोयणे	८	५, ७
कंदमंतो एएसि वण्णओ भाणियब्बो जाव सिविय	१०	५, ७
कंपिल्लपुरे जाव धरसए	११८	११८
करयल जाव एवं	६२	२०
करयल जाव कट्टु	२१, ११७	२०
गामागर जाव सण्णवेसेसु	६१ से ६३, ६५, ६६	८६
	१५५, १५८ से १६१,	
	१६३, १६८	
घरसए जाव वसहि	११६	११८
चंदण जाव गंधवट्ठिभूयं	५५	२
जावज्जीवाए जाव परिग्गहे णवरं सव्वे मेहुणे		
पच्चक्खाए जावज्जीवए	१२१	११७
णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए	१३६	२
ण्हाए जाव अप्प०	५३	२०
ण्हायाब्बो जाव पायच्छित्ताओ	७०	२०
तं चेव पसत्थं णेयव्वं, एवं चेव वइविणओवि		
एएहि पएहि चेव णेयव्वो	४०	४०
तं चेव सव्वं णवरं चउरासीइ वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता	६३	६१
तं चेव सव्वं णवरं ठिई चउहसवाससहस्साइं	६१	८६
तित्थगरस्स जाव संपाविउकामस्स	२१	१६
तिदंडए य जाव एगंते	११७	११७
तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई आराहगा चेव सेसं तं चेव	१६७	८६
तेरस सागरोवमाइं ठिई अणाराहगा सेसं तं चेव	१५५	८६
दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता परलोगस्स		
आराहगा सेसं तं चेव	११७	८६
दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता सेसं तं चेव	११४	८६
देवेसु.....	७३	७३
धम्मिया जाव कप्पेमाणा	१६३	१६१
नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहिता	१६६	१५४
नग्गभावे जाव मंतं	१६५	१५४
नडपेच्छा इ वा जाव मागहपेच्छा	१०२	२

पंडियं जाव अलंभोगसमत्थं	१४६	१४८
पगइभट्टयाए जाव विणीययाए	११६	६१
पडिविरया जाव सव्वाओ	१६३	११७
परिगह्वेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेसे	७१	ठाण १११४-१२५
परिव्वायए जाव वसहिं	११८, ११९	११८
पलिओवमं वाससयसहस्समग्गहियं ठिई सेसं तं चेव	६४	८६
पावयणे जाव किमंग	८०, ८१	७६
पीइमणे जाव हियए	६२	२०
बावीसं सागरोवमाइं ठिई अणाराहगा सेसं तं चेव	१५८	८६
बावीसं सागरोवमाइं ठिई आराहगा सेसं 'तं चेव'	१६२	८६
बावीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स अणाराहगा		
सेसं तं चेव	१५६	८६
भासासमिया जाव इणमेव	१६४	भगवती २११
मणुस्सेसु.....	७३	७३
महिड्डिएसु जाव महासोक्खेसु	७२	४७
महिड्डिया जाव चिरट्टिया	७२	७२
मूलभोयणे इ वा जाव बीयभोयणे	१३५	वृत्ति
लउया जाव गंदिरुक्खा	१०	६
लोभाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ	१६३	७१
लोभे अत्थि जाव मिच्छादंसणसल्ले	७१	ठाण ११००-१०७
वण्णं जाव जाणइ	१७०	१६६
वहमाणए जाव णो	११२, ११३	१११
वहमाणए जाव णो	१३८	१३७
सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव णणत्थ		
एक्काए गंगामट्टियाए	१२३-१३३	१००-११०
सगडं वा जाव संदमाणियं	१००	वृत्ति, पृष्ठ १७६
सच्चेव हेट्टिला वलव्वया जाव णिसीयइ	५३, ५४	२०, २१
सिज्झइ जाव मंतं	१८१	१७७
सिज्झिहिति जाव मंतं	१६६	१५४
सुकुमालपाणिपाए जाव ससिसोमाकारे	१४३	१५
सेसं तं चेव जाव चउसट्ठिवाससहस्साइं ठिई पणत्ता	६२	६१
सेसं तं चेव णवरं पलिओवमं वाससयसहस्समग्गहियं ठिई	६५	८६
हट्ठुट्ठु जाव हियए	२१, ५३, ५६, ६३, ८०	२०
हट्ठुट्ठु जाव हियया	२०, ७८	२०

हैदुतुद्दु जाव हिययाओ	८१	२०
हयगय जाव सण्णाहियं	६२	५७
हारविराडयवच्छा जाव पभासेमाणा	७२*	४७

रायपसेणइयं

अंकामया.....उवरिपुंछणीओ	१६०	१३०; जी० २६४
अकंताहि जाव अमणामाहि	७६७	७५०
अगामियाए जाव अडवीए	७७४	७७४
अगामियाए जाव किंचि	७६५	७७४
अग्गमहिंसीहि जाव सोलसहि	५८	७
अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ	२४०, २७६	वृत्ति, पृष्ठ २२५
अच्छं जाव पडिरुवं	३२, ३४, ३६	२१
अच्छाई जाव पडिरुवाइं	१५७	२१
अच्छाओ जाव पडिरुवाओ	१४५	२१
अच्छे जाव पडिरुवे	२३	२१
अज्झत्थिए जाव संकप्पे	७६८	६
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्या	६८८, ७३२, ७३७, ७७७, ७९१, ७९३	६
अज्झत्थियं जाव संकप्पं	७३८	६
अज्झत्थियं जाव समुप्पणं	२७६, ७४६	६
अट्टजोयणाई.....	२६१	२४४
अट्टाई जाव पुच्छइ	७१६	७१६
अड्ढावि जाव पविट्ठा	७६५	७६५
अड्ढे जाव बहुजणस्स	६७५	ओ० १४
अणगारसएहि जाव विहरमाणे	७११	६८६
अणियाहिंविणो जाव अण्णेवि	२८०	७
अणेगखंभसयसणिविट्ठं जाव जाणविमाणं	१८	१७
अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते	७६२, ७६३	७६२
अण्णत्ते वा.....लहुयत्ते	७६२	७६२
अण्णभोगेहि जाव सयणभोगेहि	८११	८१०
अण्णया जाव चोरं	७६४	७५४
अतुरिय जाव सन्वतो	१२	१२
अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं	६८८	ओ० ५२
अभवसिद्धिए जाव चरिमे	६२	६२
अभिगमेणं जाव बंदइ	७७८	ओ० ६६

१. वृत्ती विशेषणानि किञ्चिदन्पूनानि दृश्यन्ते ।

अभिगयजीवाजीवे....विहरइ	७८६	६६८
अभिगयजीवा सव्वो वण्णओ जाव अप्पाणं	७५२	६६८
अयभारमं वा जाव परिवहित्तए	७६०,७६१	७६०
असणं जाव अलंकारं	७६४	७६४
असणं जाव साइमं	७६४	७८७
असोयवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया		
उववाइयगमेणं नेया	३,४	ओ० ८,१३
अहापडिक्खं जाव विहरइ	७१३	७११
आइण्णं तं चेव जाव सदावेत्ता	७७४	७७४
आपूरेमाणाओ जाव चिट्ठंति	१३५	४०
आपूरेमाणा जाव चिट्ठंति	१३२	४०
आरामं वा जाव पवं	१२	१२
आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं		
आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं	७१६	७१६
आलिघरगेसु जाव आयंसघरगेसु	१८३	१८२
आसत्तोसत्त....कयग्गह्गहिय....धूवं	२६६	२६४
आसत्तोसत्त जाव धूवं	२६४	२६१
आसयंति जाव विहरंति	१८७	१८५
इट्ठं जाव फुसंतु	७६६	ओ० ११७
इट्ठतराए चेव जाव गंधेणं	३०	२५
इट्ठतराए चेव जाव फासेणं	३१	२५
इट्ठतराए चेव जाव वण्णे	४५	२५
इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं	२६ से २६	२५
इट्ठे... किमंग	७५३	७५०
इरियासमिए जाव सुहुयहुयासणे	८१३	ओ० २७
इहमागए जाव विहरइ	६८६	६८७
ईसर-त्तलवर जाव सत्थवाहं	७०४	६८८
उक्किट्ठाए जाव जेणेव	२७६	१०
उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखिज्जाणं	५६	१०
उक्किट्ठाए जाव बीईवयमाणा	१२	१०
उच्चत्तेणं वण्णओ	२१०	२०६
उच्छुब्भइ जाव अरमणिज्जे	७८५	७८५
उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	२८८	१६७
उत्पायपव्वएसु....पक्खंदोलएसु	१८१	१८०
उम्मुक्कबालभावं जाव वियालचारि	८१०	८०६
उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह	६८१,७१४	६८२

उवट्टवेह जाव सच्छत्तं उवट्टवेति	६६०,६६१	६८१,६८२
उवट्टवेहि जाव पच्चप्पिणाहि	७२४	७२५
उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि	७५६	७५४
उववायसभाए जाव उववण्णे	७६६	जी० ३।३३६
उवस्सयगयं....	७१६	७१६
उवागच्छइ तं चेव	३१०	३०५
उवागच्छति तहेव जेणेव	२७६	२७६
उवागच्छिता....धूमं	३०५	२६४
एएण वि जाव लभइ	७१६	७१६
एयंतं जाव तं तं	७७१	७७१
एयमट्ठं जाव हियए	६८३	६६०
एवं अब्भुए सिगारे उराले मणुण्णे	७८	७८
एवं आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइ		
अप्पतराए ^१ चेव	७७२	७७२
एवं जाव संखेज्जहा	७६५	७६४
एवं तंवागरं रुप्पागरं सुवण्णागरं रयणागरं वइरागरं	७७४	७७४
एवं पंतीओ बीही मिट्ठुणाई	१४२-१४४	१४१
एस जाव नी	७६४	७५४
एस सण्णा जाव एस समोसरणे	७४६	७४८
एस सण्णा जाव समोसरणे	७५०,७७३	७४८
एस सण्णा जाव समोसरणे....	७७३	७७३
एस सण्णा....तयाणंतरे	७७३	७७३
ओराले....चउदसपुब्बी	६८६	जी० ८२; भ० १।६
ओहिताणं भवपच्चइयं खओवसमियं	७४३	नंदी ७
कंखति जाव अभिलसंति	७१३	७१३
कंते जाव पासणयाए	७५१,७५२	७५०
कंते जाव मणामे	७७४	७७०
कयग्गहगहिय जाव धूवं	२६५	२६४
कयग्गहगहिय जाव पुंजोवयारकलियं	२६३	१२
कयबलिकम्मा जाव पायच्छिता	७६५	६६२
कयबलिकम्मा जाव संकिया	८०२	६६२
कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेइ	७६५	६६२
कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव चाउग्घंटे जाव		
दुइहिता सकोरेंट....महया....भडवडगरेणं तं चेव		

जाव पज्जुवासइ । धम्मकहाए जाव तए णं	७१६,७१७	६६२-६६४
करयल जाव कट्टु	७२३	१०
करयल जाव वट्ठावेत्ति	७१३	१२
करयल जाव वट्ठावेत्ता	७०८	१२
करयलपरिग्गहियं जाव एवं	७०७	६८६
करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु	६८३	१०
करयलपरिग्गहियं जाव पच्चप्पिणति	४६	१२
करयलपरिग्गहियं जाव पडिसुण्णै	१८	१०
करयलपरिग्गहियं जाव वट्ठावेत्ता	७२,६८६	१२
करेमि.....णो	७६४	७६४
कलकलरवेणं.....एगदिसाए जहा उववाइए जाव		
अप्पेगतिया	६८८	वृत्ति, पृष्ठ २८६
कलसाणं जाव अट्टसहस्सेणं	२८०	२७६
कल्लं जाव तेयसा	७८८	७७७
कालागरुपवर जाव चिट्ठंति	२३६	१३२
किण्हूचामरज्जए जाव सुक्किल्लचामरज्जए	२१	वृत्ति, पृष्ठ ८०
किण्होभासा.....	१७०	ओ० ४
किण्होभासे जाव पडिरूवे	७०३	ओ० ४
कुसुमियाओ सव्वरयणाईओ	१४५	ओ० ५
कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव	७१५	६८२
कोरव्वा जाव इव्वा	६८८	वृत्ति, पृष्ठ २८५
कोहं जाव मिच्छादंसणसत्तं	७६६	ओ० ११७
खुड्डागमहिदज्जए तं चेव	३५४	३५२
गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ	७८३	७८३
गिण्हित्ता तद्देव जेणेव	२७६	२७६
गोसीसच्चंदणेणं.....पुष्कारुहणं आसत्तोसत्तं.....धूवं	३१२	२६४
चरमाणे.....समोसठे जाव विहरइ	७१३	७१३
चवलाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं जाव वीतिवयमाणा	२७६	१०
चालेइ जाव णो गंधव्वो	७७१	७७१
चित्तमाणंदिए जाव परमसोमणस्सिए	६३	८
छिज्जइ जाव तया णं	७८४	७८४
छिड्डेइ वा जाव अणुपविट्ठा	७५६	७५६
छिड्डेइ वा जाव निग्गए	७५४	७५४
छिड्डेइ वा जाव राई	७५४ से ७५६	७५४
छिड्डेइ वा.....जेणं	७५७	७५४
जणसण्णिवाए इ वा जाव परिसा पज्जुवासइ	६८७	ओ० ५२

जराजज्जरियदेहे जाव परिकलिते	७६०	७६०
जहा मणोगुलिया जाव णागदंतया	२३६	२३५
जाइमंडवएसु जाव मालुयामंडवएसु	१८५	१८४
जाणविमाणं जाव दाहिणिल्लेणं	४८	४८
जाणह जाव उवदंसित्तए	६५	६३
जिणपडिमा तं चेव	३१७-३२०	३०६-३०६
जीवो तं चेव	७५५, ७५६, ७७१, ७७२	७५३
जुण्णे जाव किलंते	७६०, ७६१	७६०
जोयणाइं जाव अहावायरे	१८	१०
जोयणाइं जाव दोच्चं	२७६	१०
णाइअणिट्ठाहि जाव णाइअमणामाहि	७६७	७५०
णाइ जाव परिजणं	८०२	८०२
णाइ जाव परिजणेण	८०२	८०२
णिच्चं कुसुमियाओ....	१४५	ओ० १२
णोवलिप्पिहिति....मित्त	८११	ओ० १५०
ण्हाए जाव उप्पि	७१०	७७४
ण्हाए जाव सरीरे सकोरेंट....महया	७००	६६२
ण्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएणं	७५१	७५१
ण्हायस्स जाव पायच्छित्तस्स	७६४	६६२
तउयभंडे जाव मणामे	७७४	७७४
तउयभंडे जाव सुबहुं	७७४	७७४
तज्जीवो तं चेव	७५८, ७६२	७५२
तत्थुप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	२७६	१६७
तरुणे जाव सिप्पोवगए	७५८, ७५६	१२
तहेव केवलनाणं सव्वं भाणियव्वं	७४५	नंदी २६
तिक्खुत्तो जाव वंदित्ता	१२	१०
तिट्ठाणकरणमुद्धं....पणीयाणं	१७३	७६
तेणेव तहेव जेणेव	२७६	२७६
तेत्तलसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं	२५८, २७६	१६१
तारणाण भया छत्ताइछत्ता य णेयव्वा	१७६-१७६	२०-२३
दक्खा जाव उवएसलद्धा	७७०	७६६
दप्पणा जाव पडिरूवा	२१	वृत्ति, पृष्ठ १६
दल्लयइ जाव कूडागारसालं	७८८	७८७
दाहिणिल्ले दारे तहेव अभिसेयसभासरिसं जाव		
पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव		
उवागवच्छ २ त्ता तोरणे य तिसोवाणे य सालि-		

भंजियाओ बालरूवए य तहेव, जेणेव अभिसेयसभा
तेणेव उवागच्छइ २ ता तहेव सीहासणे च मणि-
पेढियं च सेसं तहेव आययणसरिसं जाव पुरत्थि-
मिल्ला तंदा पुक्खरिणी जेणेव अलंकारियसभा
तेणेव उवागच्छइ २ ता जहा अभिसेयसभा तहेव
सव्वं जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता
तहेव लोमहत्थयं परामुसइ पोत्थयरयणे लोमहत्थ-
एणं पमज्जइ २ ता दिव्वाए दग्धाराए अग्गेहिं
वरेहिं य गंधेहिं मल्लेहिं य अच्चेइ २ ता मणि-
पेढियं सीहासणे च सेसं तं चेव, पुरत्थिमिल्ला
तंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २
ता तोरणे य तिसोवाणं य सालिभंजियाओ य
बालरूवए य तहेव ।

३५७-६५३

२६४-३५०

दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती
उत्तरिल्ले दारे तं चेव पुरत्थिमिल्ले दारे
तं चेव

३३४-३३७

२६६-२६६

दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे

७५३

७५३

दुपय जाव सिरीसिवाणं

७०३

७०३

दुहाफालिए वा जाव संखेज्जहा

७६५

७६५

दुहाफालियंसि वा.....जोति

७६५

७६५

देवसयणिज्जे तं चेव

३५३

वृत्ति, पृष्ठ २३५

देवा जाव अब्भणुणायमेयं

११

११

देविड्ढि जाव दिव्वं

५६

५६

देविड्ढी जाव देवाणुभागे

६६७

६६७

देवे जाव पच्चप्पिणंति

६५५

१२

धम्मत्थिकायं जाव णो

७७१

७७१

धम्मिए जाव बिहराहि

७५२

७५२

धम्मिया जाव विंति

७५२

६७१

नमंसइ जाव पज्जुवासेइ

७१६

७१६

नमंसांमि जाव पज्जुवासांमि

५८

६

नमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति

७०४

६

नागदंता तं चेव जाव गणदंतसमाणा

१३२

१३२

नातामणि जाव पीवरं

७०

६६

निसिरति अहावायरे अहासुहमे दोच्चंपि

६५

१०

वेउव्वियसमुग्धाएणं जाव बहुसमं

७६०

७५३

पइण्णा तहेव

पउमलयाओ जाव सामलयाओ	१४५	ओ० ११
पउमलयापविभत्ति जाव समलयापविभत्ति	१०१	ओ० ११
पउमे इ वा जाव सयसहस्सपत्ते इ वा	८११	ओ० १५०
पएसी तं चेव	७६३	७५३
पएसी ! तहेव	७५७	७५३
पच्चक्खाए जाव परिग्गहे	७६६	६६३
पच्चक्खामि जाव परिग्गहं	७६६	६६३
पच्चत्थिमिल्ले दारे तं चेव, उत्तरिल्ले दारे		
तं चेव, पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव, दाहिणे		
दारे तं चेव	३०१ से ३०४	२६६
पज्जुवासंति जाव पबियरित्तए	७३७	७३२
पज्जुवासंति जाव ब्रूया	७३२	७३२
पडिरूवा जाव पंतीतो वीहीतो मिहुणाणि		
लयाओ	१६३-१६६	१४२-१४५
पणत्ताओ....	२३३	१७४
पतणतणायंति जाव जोयणपरिमंडलं	१२	१२
पत्तं वा तहेव	१२	६
पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे	७६५	७६६
पाडिहारिएणं जाव संथारएणं	७१३	७११
पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि	७५०	७५०
पासाईयाओ....	१३६	२१
पासाईयाओ जाव चिट्ठंति	१३३	जी० ३।३०३
पासादीए जाव पडिरूवे	६६८, ६७०	२१
पासादीया जाव पडिरूवा	१६	२१
पासायवरगए जाव विहरंतो	७७४	७७४
पासायवरगए जाव विहरमाणे	७७४	७७४
पिहावेमि जाव पच्चइएहि	७५६	७५४
पीढफल्लग जाव उवनिमंत्तिज्जाह	७०६	७०४
पुण्णोवच्चयं जाव उववज्जिहिसि	७५२	७५२
पुप्फवंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं	२५८, २७६	१५६
पुप्फपडलगाइं जाव लोमहत्थपडलगाइं	१५७	१५६
पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडलगाणं	२५८, २७६	१५६
पुप्फारुहणं....आसत्तोसत्त जाव धूवं	३००, ३०५, ३५५	२६४
पुरिसेहि जाव उवक्खडवेत्ता	७८८	७८७
पेच्छाघरमंडवे एवं धूमे जिणपडिमाओ		
चेइयस्सुखा मंहिदज्झया नंदापुक्खरिणी		

तं चेव जाव धूवं दलइ २ ता

३३८-३५०

वृत्ति, पृष्ठ २६४; सू०
३००, २६६, २६७, २६६,
२६६, ३०५, ३०६, ३०६,
३०६, ३०६, ३१०, ३११,
३१२

पोसहोववासस्स जाव विहरिस्सामि

७८७

७८६

फरिस जाव विहरइ

७१०

६८५

फरिस जाव विहरंति

७७४

६८५

बहूहि य जाव देवेहि

२६१

७

बाले जाव मंदविण्णाणे

७५८, ७५९

७५८

भंते जाव नो

७६२

७५४

भंते जाव विहरामि

७६२

७५४

भंते....वणसंडे

७८२

७८१

भूमिभागा उल्लोया

२१६

२१३

मंगलगा सज्झया जाव छत्तातिछत्ता

१६६, १६७, १६८

२१, २२, २३

मणपज्जवणाणे

७४४

तंदी २३

मणसंकप्पं जाव भियायमाणं

७६५

७६५

मणसंकप्पे जाव भियायसि

७६५

७६५

मणिपेढियं च....विग्वाए

३०५

२६४

महच्चपरिसाए जाव धम्मं

७७६

६९३

महत्थं जाव उवणेइ

७०८

७००

महत्थं जाव गेण्हइ

७०८

६८१

महत्थं जाव पडिच्छइ

७०९

६८४

महत्थं जाव पाहुडं

६८०, ६८१, ६८२, ६८४, ६८६, ७००

६८०

महत्थं जाव विसज्जिए । तं चेव

७०२

७००

जाव समोसरह

७०२

७००

महयाहिमवंत जाव विहरइ

६७१

ओ० १४

महाकम्मतराए चेव तं चेव

७७२

७७२

महाकिरिय जाव हंता

७७२

७७२

महावीरं जाव नमंसित्ता

७४

६

महिदज्झए....तं चेव

३११

३०५

महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठित्तीया

१८६

ओ० ४७

महिड्डीए जाव महाणुभागे

६६६

६६६

माहणं वा जाव पज्जुवासेइ

७१६

७१६

मित्त जाव परिजणस्स

८०२

८०२

मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे

७५३

७५३

रज्जं च जाव अंतेउरं	७६१	७६०
रट्ठं जाव अंतेउरं	७६१	७६०
रयणाणं जाव रिट्ठाणं	१२	१०
रयणीए जाव तेयसा	७७८	७७७
रयणेहि जाव रिट्ठेहि	१६५	१०
रायगणं वा जाव सव्वतो	१२	१२
रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि	६६८	६८०
वइरामया सुवण्णरुप्पामया फलगा नाणामणिमया	१६०	जी० ३।२६४
वंदइ जाव एवं	७७५	६२
वंदणवत्तिथाए जाव महया	६८६	ओ० ५२; राय० ६८८
वणसंडे इ वा....	७८६	७८१
वणसंडे इ वा जाव खलवाडे	७८७	७८१
वण्णओ सभाए सरिसो	२११-२१४	२०६, २१०, २३७, २५१
वरकमलपइट्ठाणा जाव महया	१४८	१३१
वरकमलपइट्ठाणा तहेव	१४७	१३१
वामेणं जाव वट्ठित्ता	७७६, ७७७	७६७
वामेणं जाव विवच्चासं	७६८	७६७
वावीणं जाव बिलपंतियाणं	१७५, १८०	१७४
वासधरपव्वया तहेव जेणेव	२७६	२७६
विउलेणं जाव पडिलाभेइ	७१६	७१६
विविहृतारारुवोवचिया जाव पडिरुवा	२०	१७
वीसाएमाणा जाव विहरंति	७६५	८०२
संखंके....सव्वरयणामया	२२२	१६०
संठिय जाव जोयणसहस्समूसिएणं	५६	५२
सच्छत्तं जाव चाउगघटं	६८१	१७३
सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणेहि	६८३	६८३
सत्थप्पओमेण वा जाव उह्वेत्ता	७६१	७६१
सद् जाव विहरइ	६७२	ओ० १५
सद्देहज्जा....जहा अण्णो जीवो तं चेव	७५६, ७५८	७५४
सद्देहज्जा तं चेव	७६२, ७६४	७५४
सद्देहज्जा तहेव	७६०	७५४
समज्जिणित्ता जाव देवलोएसु	७५२	७५२
समणं वा जाव पज्जुवासेइ	७१६	७१६
समणं वा तं चेव जाव एएण	७१६	७१६
समण जाव परिभाएमाणे	७८८	७८७
समाणा जाव पडिसुणेत्ता	६५५	१०
समिद्धे....	६७६	६६८
समुदया जाव सिरीए	१३२	४०

સરીરં તં ચેવ	૭૫૬,૭૬૪	૭૫૨
સરુવિસ્સ જાવ સસરીરસ્સ	૭૭૧	૭૭૧
સવ્વંતરણઈઓ જેણેવ	૨૭૬	૨૭૬
સવ્વતુયરે તહેવ જેણેવ	૨૭૬	૨૭૬
સવ્વતુયરેહિ જાવ સવ્વોસહિસિદ્ધત્થેહિ	૨૮૦	૨૭૬
સન્વિહ્લીએ જાવ (ળા) નાહ્યરવેણં	૧૩,૬૫૭	ઓ ૬૭
સસક્કં જાવ ઉવળેતિ	૭૫૬	૭૫૪
સામાણિયસાહસ્સીહિ જાવ સોલસહિ	૫૬	૭
સિઘાહગ.....મહયા જણસદ્દે વા.....પરિસા	૭૧૨	૬૮૭
સિયા જાવ મંભીરા	૭૭૨	૭૫૫
સિરિવચ્છ જાવ દપ્પણા	૪૬	૨૧
સીહાસણે જાવ સણિસણે	૨૮૬	૨૮૩
સીહાસણે તં ચેવ	૩૫૨	વૃત્તિ, પૃષ્ઠ ૨૬૬
સુકુમાલપાણિપાએ જાવ પહિરુવે	૬૭૩	૮૦૧
સુકુમાલપાણિપાયા ધારિણી વણ્ણઓ	૬૭૨	ઓ ૧૫
સુબહું જાવ ઉવવળ્ણા	૭૫૩	૭૫૨
સુબહું જાવ ઉવવળ્ણે	૭૫૧	૭૫૦
સુસિલિદ્ધ જાવ પહિરુવે	૨૪૭	૨૩૧
સુરિયાભવિસાળવાસિણો જાવ દેવીઓ	૨૮૬	૭
સોન્ના જાવ હટ્ઠ....ઉટ્ટાએ જાવ એવં	૭૦૦	૬૬૫
સોત્થિયં જાવ દપ્પણં	૨૬૧	૨૧
હંસાસળાઈ જાવ દિસાસોવત્થિયાસળાઈ	૧૮૩	૧૮૧
હટ્ઠ જાવ કરયલ જાવ પહિસુળંતિ	૭૪	૧૦
હટ્ઠ જાવ જેણેવ	૭૨	૭૧૩
હટ્ઠ જાવ પહિસુળેસા	૬૮૧	૧૦
હટ્ઠ જાવ ભવહ	૭૧૩	૭૧૩
હટ્ઠ જાવ સમણં	૬૦	૬૨
હટ્ઠ જાવ હિયએ	૪૭,૬૬૫,૭૧૦	૮
હટ્ઠ જાવ હિયયા	૧૨,૨૭૬	૮
હટ્ઠતુટ્ઠ જાવ અપ્પમહ્ઠ્ઠાભરણાલંકિયસરીરે	૭૨૬	૭૧૬
હટ્ઠતુટ્ઠ જાવ આસળાઓ	૭૧૪	૮
હટ્ઠતુટ્ઠ જાવ સુરિયામં	૨૬૦	૮
હટ્ઠતુટ્ઠ જાવ હિયએ	૧૩,૧૪,૧૭,૧૮,૬૨,૨૭૭, ૬૬૦,૭૧૩,૭૧૬,૭૨૫,૭૭૮	૮
હટ્ઠતુટ્ઠ જાવ હિયયા	૧૦,૧૬,૨૮૧,૭૦૭,૭૧૩,૭૭૪	૮
હટ્ઠતુટ્ઠ તહેવ એવં	૭૧૮	૬૬૫
હત્થચ્છિળ્ણગં વા જાવ જીવિયાઓ	૭૫૧	૭૫૧
હત્થેણ વા જાવ આવરેતાણં	૭૧૬	૭૧૬

हृयकंठाणं जाव उसभकंठाणं	२५८	१५५
हृयसंघाडा जाव उसभसंघाडा	१६२	१४१
हिरण्यं तं चेव जाव पन्वइत्तए	६६५	६६५

जीवाजीवाभिगमे

अकंततरगा चेव जाव अमणामतरगा	३१८४	३१२७८
अणिट्टा जाव अमणामा	३१६२	भ० ११२२४
अपढमसमयवेइंदिया जाव पढमसमयपंचिदिया	६११	४११,६११
अप्पा वा एवं जाव विसेसाहिया	५११६	४११६
आयामेणं जाव दो	३१३७६	६१३७२
आसयंति जाव विहरंति	३१२१७	३१२६७
आसादणिज्जे जाव इट्टतराए चेव आसादे	३१८६६	३१८६०
आसादणिज्जे जाव पल्हायणिज्जे	३१८७२	३१८६०
आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा	११२०	पण्ण० ८११
आहेवच्चं जाव दिव्वाइं	३१३५०	ओ०सू० ६८
आहेवच्चं जाव पालेमाणा	३१६३६	३१३५०
इंगाले जाव तत्थ नियमा	११७८	पण्ण० ११२६
ईहामियउसभ जाव पउमलयभत्तिचित्ता	३१३११	३१२८८
उक्किट्टाए जाव दिव्वाए	३१४४५	३१८६
उद्दाइत्ता सो चेव विही एवं धायइसंडेवि	३१७१८,७२०	३१५७५,५७६
उप्पलाइं तं चेव	३१४४५	३१४४५
उववेत्ते जाव सन्विदियगातपल्हायणिज्जे	३१८७८	३१८६०
उवागच्छित्ता जाव कट्टु	३१५५५	३१४४५
एएणं अभिलावेणं जाव दसविहा	१११०	१११०
एवं चत्तारिवि गमा, पढमबिइयभंगेसु अपरियाइत्ता	३१६६५-६६७	३१६६१-६६३
एगंतरियगा अच्छेत्ता अभेत्ता, सेसं तहेव (क,ख, ग,ट,त्रि); ते च्चेव अलावता ह्व जाव हुंता पभू (ता)	३११७८	३११७६
एवं जहा अच्छीणि णवरं एवतियाइं पंच ओवासंतराइं	११५	पण्ण० ११३
एवं जहा पण्णवणाए जाव सेत्तं	३१२२८	पण्ण० ११८७
एवं जहा पण्णवणापदे जाव पंचहिं	२११३४-१३६	४११६
कतरेहिंलो जाव विसेसाहिया	३१४५८	३१४५७
कयग्गाहग्गहित जाव पुंजोवयारकलितं	३१४६०	३१४५८
कयग्गाह जाव धूवं	३११७६	३११७५
कामावत्ताइं जाव कामुत्तरवडिसयाइं	५१८	पण्ण० १८१२६
कालं जाव असंखेज्जा	५१६	पण्ण० १८१३
कालं जाव आवलियाए	३१४४५	३१४४५
गेण्हित्ता तं चेव		

गोसीसचंदणेणं जाव चच्चए दलयति आसतोसत्त

कयग्गाह धूर्वं	३१४६१	३१४५६
चेव जाव फासेणं	३१२८४	३१२८३
चेव जाव मणामतराए	३१२८३	३१२७८
चेव जाव वणोणं	३१२७६-२८२	३१२७८
जहा अच्छीणि णवरं सत्त ओवसंतराई विक्कमे सेसं तहेव	३११८०	३११७६
जहा अविमुद्धलेस्सेणं छ आलावगा एवं विमुद्धलेस्सेणवि		
छ आलावगा भाणितव्वा जाव विमुद्धलेस्से	३१२०५-२०८	३११६६-२०२
जहा णईओ	३१४४५	३१४४५
जातीकुलकोडीजोणीपमुह जाव पणत्ता	३११६६	३११६०
जातीकुल जाव समक्खया	३११६८	३११६७
जोयणकोडी जाव अब्भतरपुक्खरत्तस्स	३१८३५	३१८३२
जोयणसहस्साई जाव परिकखेवेणं	३११०७४	३१८२
णं जाव केवचिरं	६१४१,४३	६१३६
तं चेव जाव महावेदणतरा	३११२६	३११२६
तं चेव णं जाव णो	३१११६	३१११८
तहेव जाव सायासोक्खबहुले	३१११६	३१११८
तिस्थसिद्धा जाव अणेगसिद्धा	१८	पण्ण० ११२
तिस्थाई तहेव जहेव	३१४४५	३१४४५
तुरियाए जाव दिव्वाए	३११७६	३१८६
पगतिभद्दा जाव विणीता	३१८४१	३१७६५
पच्छवि जाव आणुगामियत्ताए	३१४४२	३१४४१
पणिहाय जाव सव्वक्खुड्डिया	३११२४	३११२४
पणत्ता जाव तेसु	३१३६८	३१३६७
पत्तेयं जाव णिसीयंति	३१५६०	३१५५८
पयलाएज्ज वा जाव उसिणे	३१११६	३१११८
पुढवी जाव सव्वक्खुड्डिया	३११२५	३११२४
पुप्फारुहणं जाव धूर्वं	३१४६५	३१४५६
पोगला य जाव असासयावि	३१७२७	३१७२४
भविस्सइ जाव अवट्टिए	३१३५०	३१२७२
महज्जुतीए जाव महाणुभावे	३१३५०	३१८६
महताहतनट्टगीयवावित रवेणं दिव्वाई भोगभोगाई भुंजमाणा	३१८४५	३१८४२
महिड्ढीए जाव महाणुभागे	३१८६	वृत्ति, पत्र १०६
मुत्ताजालंतरुसिया तहेव जाव समणाउसो	३१३०२	३१३०२
लवणस्स णं पएसा धायइसंडं दीवं पुट्ठा तहेव		
जहा जंबूदीवे धायइसंडेवि सो च्चेव गमो	३१७१५-७१८	३१५७१-५७४
वट्टे जाव चिट्ठति	३१८६२, ८६५, ८७१, ८७७, ८२५	३१७०४

वलयागार जाव चिट्ठति	३१८५६	३१७०४
वलयागारसंठाणसंठिते जाव चिट्ठति	३१८६८	३१७०४
वलयागारसंठाणसंठिते जाव संपरिविखत्ताणं	३१८४८	३१७०४
वलयागारे तहेव जाव जे	३१४७	३१४६
सव्वतुवरे य तहेव	३१४४५	३१४४५
सव्वपाणा जाव देवत्ताए देवित्ताए आःण जाव हंता	३१११३०	३१११२८
सव्वपुप्फे तं चेव	३१४४५	३१४४५
मामाणियसाहस्सीहि जाव अण्णेहि	३१५५७	३१४४६
पिज्झंति जाव अंतं	११३२	ओ० सू० ७२
मेरियागुम्मा जाव महाजाइगुम्मा	३१५८०	जंबु० २११०
सेसं तं चेव	३११७८, १८२	३११७६
ओह्मीसाण जाव अणुत्तरेसु	३११०३८	पण्ण० २१४६
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	३१४४३	वृत्ति, पत्र २४३
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	३१४४५	३१४४३
हट्ठतुट्ठा करतल जाव कट्ठ एवं देवोत्ति जाव पडिसुणेत्ता	३१५५५	३१४४५
हट्ठतुट्ठा जाव हरिसवसविसप्पमाणहियया	३१४४७	३१४४१
हयकंठगाणं जाव उसभकंठगाणं पुप्फचंगेरीणं जाव		
लोमहत्थचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं अट्ठसयं		
तेत्तलसमुग्गाणं जाव धूवकडुच्छुयाणं	३१४१६	३१३२८-३३५; वृत्ति, पत्र २३४
हिमे जाव जे	११६५	पण्ण० ११२३

परिशिष्ट-२

तुलनात्मक

राज-वर्णक

ओवाइय सूत्र १४

जंबुदीवपण्णत्ती ३।२,३

अत्र राजवर्णकस्य प्रकारान्तरं चापि लभ्यते ।

देवी-वर्णक

ओवाइय सूत्र १५

नायाधम्मकहाओ १।२।८

नमोत्थु-पूर्वाविस्था-वर्णक

ओवाइय सूत्र २१,५४

रायपसेणइयं सूत्र ८,७१४

नायाधम्मकहाओ २।१।११

नमोत्थु-सूत्र

ओवाइय सूत्र २१ :

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आदिराणं
तित्थगराणं सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससी-
हाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं
अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं
जीवदयाणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवर-
चाउरंतचक्कवट्ठीणं अप्पडिह्यवरनाणदंसणधराणं
विद्यट्ठउमाणं जिणाणं जावयाणं^१ तिष्णाणं
तारयाणं मुत्ताणं मोयगाणं बुद्धाणं बोहयाणं
सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्ख-
यमव्वाबाहमपुणरावत्तणं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं
संपत्ताणं ।

रायपसेणइयं सूत्र ८ :

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आदिराणं
तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं
लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोय-
गराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं जीव-
दयाणं^१ सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्म-
देसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-
चाउरंतचक्कवट्ठीणं अप्पडिह्यवरनाणदंसणधराणं
विद्यट्ठउमाणं जिणाणं जावयाणं तिष्णाणं तारयाणं
बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्व-
दरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहम-
पुणरावत्तयं^१ सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं ।

१. २६२ सूत्रे नास्ति ।

२. १६ सूत्रे 'जाणए' पाठो विद्यते ।

३. २६२ सूत्रे सिव अयलं अरुअं अणंतं अक्खयं
अव्वाबाहं अपुणरावित्ति ।

समणे भगवं महावीरे आइगरे विभक्ति भेदेनैव
पाठो निर्दिष्टसूत्राकेषु विद्यते सूत्र १६, २१, ५४

समवाओ १।२ :

समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं
सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवर-
पोंडरीएणं पुरिसवरगंधहृत्थिणा लोगोत्तमेणं
लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जो-
यरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं
जीवदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं
धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा
अप्पडिह्यवरणाणदंसणधरेणं वियट्ठउमेणं जिणेणं
जावएणं तिण्णेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं
मोयगेणं सव्वण्णुणा सव्वदरिसिणा सिवमयलमरुय-
मणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनाम-
धेयं ठाणं संपाविउकामेणं ।

भगवती १।७

समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे
पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपोंडरीए पुरिसवर-
गंधहृत्थी लोगोत्तमे लोगनाहे लोगपदीवे लोगपज्जो-
यगरे अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए धम्म-
देसए धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी
अप्पडिह्यवरणाणदंसणधरे वियट्ठउमे जिणे जाणए
बुद्धे बोहए मुत्ते मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी सिव-
मयलमरुयमणंतमक्खयमव्वावाहं सिद्धिगतिनामधेयं
ठाणं संपाविउकामे ।

—जंबुद्दीवपण्णत्ती ५।२१

—तायाधम्मकहाओ १।१।७

—अणुत्तरोववाइयदसाओ ३।७५

प्रभात-वर्णक

ओवाइय सूत्र २२ :

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल-
कोमलुम्मिलियंमि अहपंडुरे पहाए रत्तासोगप्पसास-
किसुय-सुयमुह-मुंजद्धराग-सरिसे कमलागरसंडबोहए
उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा
जलंते ।

रायपसेणइयं सूत्र ७२३ :

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल-
कोमलुम्मिलियंमि अहपंडुरे पभाए कयनियमाव-
स्सए सहस्सररिस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ।

रायपसेणइयं सूत्र ७७७ :

कल्लं पाउप्पभाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-

म्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोयपकास-
किसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-णलिणि-
संडबोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे
तेयसा जलंते ।

भगवती २।१।६६

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल
कोमलुम्मिलियम्मि अहपंडुरे पभाए रत्तासोयपकासे
किसुय - सुयमुह - गुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंड-
बोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे
तेयसा जलंते ।

नायाधम्मकहाओ १।१।२४

(अतिरिक्त पाठ)

अणुओगदारं, लोइयं दन्वावस्सयं सू० १६

अतगार-प्रव्रज्या

ओवाइय सूत्र २३ :

चइत्ता हिरण्णं चिच्चा सुवण्णं चिच्चा धणं एवं—
धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्टागारं रज्जं रट्ठं पुरं
अंतेउरं, चिच्चा विउलधण - कणग-रयण-मणि-
मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्त-रयणमाइयं संत-सार-
सावदेज्जं, विच्छड्डेत्ता विगोवइत्ता, दाणं च दाइ-
याणं परिभायइत्ता, मुंडा भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइया ।

आयार-बूला १५।२६ :

चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा
वाहणं चिच्चा धण-धण-कणय-रयण-संत-सार-
सावदेज्जं, विच्छड्डेत्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता,
दायारेसु णं दायं पज्जभाएत्ता

रायपसेणइयं सूत्र ६६५ :

चिच्चा हिरण्णं, एवं—धणं धण्णं बलं वाहणं कोसं
कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-
रयण-मणि - मोत्तिय - संख-सिल-प्पवाल-संतसार-
सावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं
परिभाइत्ता, मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं
पव्वयंति ।

निग्रन्थ-तप-वर्णक

सूत्र २४, ३२, ३४, ३५, ३६

सूत्र २५, २६

सूत्र २७

सूत्र २७, २८, २९

पण्हावागरणाइं ६।६

रायपसेणइयं सूत्र ६८६

भगवती २।६५

नायाधम्मकहाओ १।१।४

भगवती २।५५

रायपसेणइयं सूत्र ८१३

निरयावलियाओ ३।४

पण्हावागरणाइं १०।११

जंबुदीवपण्णत्ती २।६८ से ७०
पज्जोसवणाकप्पो सूत्र ७८, ७९, ८०
द्रष्टव्यम्—अंगसुत्ताणि भाग-१

परिशिष्ट २ : आलोच्यपाठ तथा वाचनान्तर

सूत्र २७, २८, २९, ३२, ३४-३६
सूत्र ३०-४४

सूयगडो २।२।६४ से ६६
भगवती २५।५५७ से ६१८
उत्तरज्झयणाणि ३०।७-३६

बाह्यतप

सूत्र ३१

ठाणं ६।६५

यावत्कथिक

सूत्र ३२

ठाणं २।२००, २०१

ऊनोदरिका

सूत्र ३३

भगवती ७।२४
ववहारो, ८।१७

कायक्लेश

सूत्र ३६

ठाणं ७।४६

प्रतिसंलीनता

सूत्र ३७

ठाणं ४।१६०, १६२
ठाणं ५।१३५

आभ्यन्तरतप

सूत्र ३८

ठाणं ६।६६

प्रायश्चित्त

सूत्र ३९

ठाणं १०।३७

विनय

सूत्र ४०

ठाणं ७।१३०-१३७

वैयावृत्य

सूत्र ४१

ठाणं १०।१७

स्वाध्याय

सूत्र ४२

ठाणं ५।२२०

ध्यान

सूत्र ४३

ठाणं ४।६०-७२

देव-वर्णक

सूत्र ४७-५१

पण्णवणा २।४०-६३

परिषद्-गमन-वर्णक

सूत्र ५२

रायपसेणइयं सूत्र ६८८, ६८९

नगरी-सज्जा-वर्णक

सूत्र ५५

जंबुद्वीवपण्णत्ती ३।७

नित्यकर्म-वर्णक

सूत्र ६३

नायाधम्मकहाओ १।१।२४

जंबुद्वीवपण्णत्ती ३।९

निगमन-वर्णक

सूत्र ६४-६६

भगवती ६।२०४ से २०६

जंबुद्वीवपण्णत्ती ३।१७७-१८६

सूत्र ६६

पज्जोसवणाकप्पो सूत्र ७५

पर्युपासना-वर्णक

सूत्र २६, ७०

भगवती ६।३३, १४५, १४६

वासीनाम

सूत्र ७०

रायपसेणइयं सूत्र ८०४

जंबुद्वीवपण्णत्ती ३।११

नायाधम्मकहाओ १।१।८२

परिषद्-वर्णक

सूत्र ७१ :

रायपसेणइयं सूत्र ६१ :

तीसे य महत्तिमहालियाए इसिपरिसाए मुणि-
परिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए
अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहवले.... ।

तीसे य महत्तिमहालियाए इसिपरिसाए मुणि-
परिसाए जतिपरिसाए विटुपरिसाए देवपरिसाए
परिसाए अणेगसयाए अणेगवंदाए अणेगसयवंद-
परिवाराए महत्तिमहालियाए ओहवले.... ।

देवलोक और देव-वर्णक

सूत्र ७२

सुयगडो २।२

आयुबंध

सूत्र ७३

ठाणं ४।६२५, ६२८

भगवती ८।४२५ से ४२८

धर्मश्रद्धा-प्रकटन

सूत्र ७६

रायपसेणइयं सूत्र ६६५

भगवती २।५२, ६।१६४

नायाधम्मकहाओ १।१।१०१

उवासगदसाओ १।५१

गौतम-वर्णक

सूत्र ८२

भगवती १।६

उवासगदसाओ १।६६

वाणमंतर-उपपात

सूत्र ८८, ८९

भगवती १।४६

गंगाकूलवासी-वानप्रस्थक-तापस

सूत्र ९४

भगवती १।४६

निरयावलियाओ ३।३

परिव्राजक-वर्णक

सूत्र ९७

भगवती २।२४।

अम्मड-परिव्राजक

सूत्र ११२-१५४

भगवती १।४।११० से ११२

दूढप्रतिज्ञ

सूत्र १४१-१५४

रायपसेणइयं सूत्र ७६६-८१६

७२ कलाएं

सूत्र १४६	रायपसेणइयं सूत्र ८०६	जंबुदीवपण्णत्ती वृत्ति पत्र १३६, १३७	समवाओ ७२।७	णायाधम्मकहाओ १।१।८५
१. लेहं	लेहं	लेहं	लेहं	लेहं
२. गणियं	गणियं	गणियं	गणियं	गणियं
३. रुवं	रुवं	रुवं	रुवं	रुवं
४. नट्टं	नट्टं	नट्टं	नट्टं	नट्टं
५. गीयं	गीयं	गीअं	गीयं	गीयं
६. वाइयं	वाइयं	वाइयं	वाइयं	वाइयं
७. सरगयं	सरगयं	सरगयं	सरगयं	सरगयं
८. पुक्खरगयं	पुक्खरगयं	पोक्खरगयं	पुक्खरगयं	पोक्खरगयं
९. समतालं	समतालं	समतालं ^१	समतालं	समतालं
१०. जूयं	जूयं	जूअं	जूयं	जूयं
११. जणवायं	जणवायं	जणवायं	जणवायं	जणवायं
१२. पासगं	पासगं	पासयं	पोरेकव्वं	पासयं
१३. अट्ठावयं	अट्ठावयं	अट्ठावयं	अट्ठावयं	अट्ठावयं
१४. पोरेकव्वं	पोरेकव्वं	पोरेकव्वं	दगमट्टियं	पोरेकव्वं
१५. दगमट्टियं	दगमट्टियं	दगमट्टियं	अन्नविहि	दगमट्टियं

१. क्वचित् 'तालमान'मिति पाठः ।

१६. अण्णविहि	अन्नविहि	अन्नविहि	पाणविहि	अण्णविहि
१७. पाणविहि	पाणविहि	पाणविहि	लेणविहि	पाणविहि
१८. वत्थविहि	वत्थविहि	वत्थविहि	सयणविहि	वत्थविहि
१९. विलेवणविहि	विलेवणविहि	विलेवणविहि	अज्जं	विलेवणविहि
२०. सयणविहि	सयणविहि	सयणविहि	पहेलियं	सयणविहि
२१. अज्जं	अज्जं	अज्जं	मागहियं	अज्जं
२२. पहेलियं	पहेलियं	पहेलियं	गाहं	पहेलियं
२३. मागहियं	मागहियं	मागहिअं	सिलोमं	मागहियं
२४. गाहं	गाहं	गाहं	गंधजुत्ति	गाहं
२५. गीइयं	गीइयं	गीइअं	मधुसित्थं	गीइयं
२६. सिलोयं	सिलोमं	सिलोमं	आभरणविहि	सिलोयं
२७. हिरणजुत्ति	हिरणजुत्ति	हिरणजुत्ति	तरुणीपडिकम्मं	हिरणजुत्ति
२८. सुवणजुत्ति	सुवणजुत्ति	सुवणजुत्ति	इत्थीलक्खणं	सुवणजुत्ति
२९. गंधजुत्ति	आभरणविहि	चुण्णजुत्ति	पुरिसलक्खणं	चुण्णजुत्ति
३०. चुण्णजुत्ति	तरुणीपडिकम्मं	आभरणविहि	हयलक्खणं	आभरणविहि
३१. आभरणविहि	इत्थिलक्खणं	तरुणीपरिकम्मं	गयलक्खणं	तरुणीपडिकम्मं
३२. तरुणीपडिकम्मं	पुरिसलक्खणं	इत्थिलक्खणं	गोणलक्खणं	इत्थिलक्खणं
३३. इत्थिलक्खणं	हयलक्खणं	पुरिसलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं	पुरिसलक्खणं
३४. पुरिसलक्खणं	गयलक्खणं	हयलक्खणं	मिढयलक्खणं	हयलक्खणं
३५. हयलक्खणं	गोणलक्खणं	गयलक्खणं	चक्कलक्खणं	गयलक्खणं
३६. गयलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं	गोणलक्खणं	छत्तलक्खणं	गोणलक्खणं
३७. गोणलक्खणं	छत्तलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं	दंडलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं
३८. कुक्कुडलक्खणं	चक्कलक्खणं	छत्तलक्खणं	असिलक्खणं	छत्तलक्खणं
३९. छत्तलक्खणं	दंडलक्खणं	दंडलक्खणं	मणिलक्खणं	दंडलक्खणं
४०. दंडलक्खणं	असिलक्खणं	असिलक्खणं	काकणिलक्खणं	असिलक्खणं
४१. असिलक्खणं	मणिलक्खणं	मणिलक्खणं	चम्मलक्खणं	मणिलक्खणं
४२. मणिलक्खणं	कागणिलक्खणं	कागणिलक्खणं	चंदचरियं	कागणिलक्खणं
४३. काकणिलक्खणं	वत्थुविज्जं	वत्थुविज्जं	सूरचरियं	वत्थुविज्जं
४४. वत्थुविज्जं	नगरमाणं	खंधावारमाणं	राहुचरियं	खंधारमाणं
४५. खंधावारमाणं	खंधावारमाणं	नगरमाणं	गहचरियं	नगरमाणं
४६. नगरमाणं	चारं	चारं	सोभाकरं	वूहं
४७. वूहं	पडिचारं	पडिचारं	दोभाकरं	पडिवूहं
४८. पडिवूहं	वूहं	वूहं	विज्जगमयं	चारं
४९. चारं	पडिवूहं	पडिवूहं	मंतगयं	पडिचारं
५०. पडिचारं	चक्कवूहं	चक्कवूहं	रहसगयं	चक्कवूहं
५१. चक्कवूहं	गरुलवूहं	गरुडवूहं	सभासं	गरुलवूहं
५२. गरुलवूहं	सगडवूहं	सगडवूहं	चारं	सगडवूहं
५३. सगडवूहं	जुद्धं	जुद्धं	पडिचारं	जुद्धं

५४. जुद्धं	निजुद्धं	नियुद्धं	वृहं	निजुद्धं
५५. निजुद्धं	जुद्धजुद्धं	जुद्धातिजुद्धं	पडिवृहं	जुद्धाइजुद्धं
५६. जुद्धाइजुद्धं	अट्टिजुद्धं	दिट्टिजुद्धं	खंधावारमाणं	अट्टिजुद्धं
५७. मुट्टिजुद्धं	मुट्टिजुद्धं	मुट्टिजुद्धं	नगरमाणं	मुट्टिजुद्धं
५८. बाहुजुद्धं	बाहुजुद्धं	बाहुजुद्धं	वत्थुमाणं	बाहुजुद्धं
५९. लयाजुद्धं	लयाजुद्धं	लयाजुद्धं	खंधावारनिवेशं	लयाजुद्धं
६०. ईसत्थं	ईसत्थं	इसत्थं	नगरनिवेशं	ईसत्थं
६१. छरुप्पवायं	छरुप्पवायं	छरुप्पवायं	वत्थुनिवेशं	छरुप्पवायं
६२. धणुवेयं	धणुवेयं	धणुवेयं	ईसत्थं	धणुवेयं
६३. हिरण्णपागं	हिरण्णपागं	हिरण्णपागं	छरुप्पपागं	हिरण्णपागं
६४. सुवण्णपागं	सुवण्णपागं	सुवण्णपागं	आससिक्खं	सुवण्णपागं
६५. वट्टखेड्डं	सुत्तखेड्डं	सुत्तखेड्डं	हत्थिसिक्खं	वट्टखेड्डं
६६. सुत्तखेड्डं	वट्टखेड्डं	वत्थखेड्डं	धणुवेयं	सुत्तखेड्डं
६७. णालियाखेड्डं	णालियाखेड्डं	नालिआखेड्डं	हिरण्णपागं	नालियाखेड्डं
			सुवण्णपागं	
			मणिपागं	
			धातुपागं	
६८. पत्तच्छेज्जं	पत्तच्छेज्जं	पत्तच्छेज्जं	बाहुजुद्धं वंडजुद्धं	पत्तच्छेज्जं
			मुट्टिजुद्धं अट्टिजुद्धं	
			निजुद्धं जुद्धाति-	
			जुद्धं	
६९. कडगच्छेज्जं	कडगच्छेज्जं	कडच्छेज्जं	नालियाखेड्डं	कडच्छेज्जं
			वट्टखेड्डं	
७०. सज्जीवं	सज्जीवं	सज्जीवं	पत्तच्छेज्जं	सज्जीवं
			कडगच्छेज्जं	
७१. निज्जीवं	निज्जीवं	निज्जीवं	सज्जीवं	निज्जीवं
			निज्जीवं	
७२. सउणरुयं	सउणरुयं	सउणरुयं	सउणरुयं	सउणरुयं

मुनिव आराहणा

सूत्र १५४

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए
अदंतवणए केमनोए बंभवेरवासे अच्छत्तगं
अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्टसंज्जा
परघरपवेसो लद्धावलद्धं परेहिं हीलणाओ
निदणाओ खिसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ
तालणाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया

राइपसेणइयं सूत्र ८१६

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे केसलोए बंभ-
वेरवासे अण्हाणगं अदंतवणगं अच्छत्तगं अणुवाहणगं
भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परघरपवेसो लद्धावल-
द्धाइ माणावमाणाइ परेहिं हीलणाओ निदणाओ
खिसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ
विरुवरुवा बावीसं परीसहोवसग्गा

गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहिया-
सिज्जंति तमट्ठं माराहिता.... ।

गामकंटगा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेहिइ,
आराहिता.... ।

सूयगडो २।२।६७

जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे अण्हाणगे
अदंतवणगे अछत्तए अणोवाहणए भूमिसेज्जा
फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे
परधरपवेसे लद्धावलद्धं माणावमाणणाओ हीलणाओ
निदणाओ खिसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ ताल-
णाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा
अहियासिज्जंति तमट्ठं आराहेति, तमट्ठं
आराहेत्ता.... ।

ठाणं ६।६२

से जहानामए बज्जो ! मए समणणं णिग्गंथाणं
नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए अछत्तए
अणुवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा
केसलोए बंभचेरवासे परधरपवेसे लद्धावलद्धवित्तीओ
पण्णत्ताओ ।

भगवती १।४३३

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं
अदंतवणयं अछत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा
फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो
परधरप्पवेसो लद्धावलद्धो उच्चावया गामकंटगा
बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जंति तमट्ठं
आराहेइ, आराहिता.... ।

नायाधम्मकहाओ १।१६।३२४

निरयावलियाओ ५।१

देवकिल्विषक-उपपात

सूत्र १५५

भगवती ६।२४०

आवक-वर्णक

सूत्र १६१, १६२

सूत्र १६२

सूयगडो २।२।७१, ७२

रायपसेणइयं सूत्र ६६८

भगवती २।६४

अनगार-वर्णक

सूत्र १६३-१६६

सूयगडो २।२।६३, ६४, ६७

केवली-समुद्घात

सूत्र १६६-१८४

पण्णवणा ३६।७६-६४

गंधसमुद्गक विकिरण

सूत्र १७०

भगवती ६।१७३

ईषत्प्राग्भारापृथ्वी

सूत्र १६२-१६४

पण्णवणा २।६४-६६

सूत्र १६२, १६३

ठाणं ८।१०६, ११०

समवाजो १२।११

सिद्ध-वर्णक

सूत्र १६५

पण्णवणा २।६७

परिशिष्ट-३

सहस्रचो

प्रमाणविधि

- [• अव्यय, सर्वनाम, क्त्वा, तुम्, यप्, प्रत्यय के रूप और धातुरूप के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार दिया गया है ।
- रूट (√) अंकित शब्द धातुएं हैं । उनके रूप डैस (—) के बाद दिए गए हैं ।
- शब्द के बाद साक्ष्य-स्थल का अंक सूत्र का है, तथा दो अंक प्रतिपत्ति व सूत्र का है, तीसरा अंक सूत्र के अन्तर्गत गाथा का है ।
- जहां एक या दो संग्रहणी गाथाएं हैं वहां उसके प्रमाण उसी सूत्रांक में दे दिए गए हैं ।]

अ

अ [च] रा ६७५	अइवकंत [अतिक्रान्त] जी० ३१५६७
अइ [अयि] रा० ११,५६,६२	√अइवकम [अति-+क्रम्] — अइवकमंति ओ० ६२
अइ [अति] रा० ७६७	अइवकीलावास [अतिक्रीडावास] जी० ३१७५६,
अइकंत [अतिक्रान्त] जी० ३१५६७	७५७
अइकंत [अतिक्रान्त] ओ० १६८, १६५	अइगाढ [अतिगाढ] रा० ७७४
√अइवकम [अति-+क्रम्] — अइवकमंति ओ० ६२	अइदूर [अतिदूर] ओ० ४७, ५२, ८३. रा० ६८७
अइवकीलावास [अतिक्रीडावास] जी० ३१७५६,	अइबल [अतिबल] ओ० ७१. रा० ६१
७५७	अइमट्टिय [अतिमृत्तिक] रा० ६
अइगाढ [अतिगाढ] रा० ७७४	अइमुक्तकलया [अतिमुक्तकलता] जी० ३१५८४
अइदूर [अतिदूर] ओ० ४७, ५२, ८३. रा० ६८७	अइमुक्तयलया [अतिमुक्तकलता] ओ० ११.
अइबल [अतिबल] ओ० ७१. रा० ६१	रा० १४५
अइमट्टिय [अतिमृत्तिक] रा० ६	
अइमुक्तकलया [अतिमुक्तकलता] जी० ३१५८४	
अइमुक्तयलया [अतिमुक्तकलता] ओ० ११.	
रा० १४५	

अइमुक्तयलयाप्रविभक्ति [अतिमुक्तकलताप्रविभक्ति]

रा० १०१	अइरुग्गय [अचिरोद्गत] रा० ४५
अइरुग्गय [अचिरोद्गत] रा० ४५	अइरेग [अतिरेक] ओ० २३. जी० ३१५६०, ७२६,
अइरेग [अतिरेक] ओ० २३. जी० ३१५६०, ७२६,	७३१, ७३२
७३१, ७३२	अइविकिट्ट [अतिविकृष्ट] रा० ६८३
अइविकिट्ट [अतिविकृष्ट] रा० ६८३	अइसेस [अतिशेष] ओ० ५२, ६६, ७०.
अइसेस [अतिशेष] ओ० ५२, ६६, ७०.	जी० ३१५६८
जी० ३१५६८	अइव [अतीव] रा० १३२. जी० ३१५८०
अइव [अतीव] रा० १३२. जी० ३१५८०	अउणतीस [एकोनविंशत्] जी० ३१२२६५
अउणतीस [एकोनविंशत्] जी० ३१२२६५	अउणपण [एकोनपञ्चाशत्] जी० ३१२२६३
अउणपण [एकोनपञ्चाशत्] जी० ३१२२६३	अउणाणउति [एकोनवति] जी० ३१८२३
अउणाणउति [एकोनवति] जी० ३१८२३	अउणापण [एकोनपञ्चाशत्] ओ० १६२
अउणापण [एकोनपञ्चाशत्] ओ० १६२	अउणासीति [एकोनाशीति] जी० ३१५७०
अउणासीति [एकोनाशीति] जी० ३१५७०	अउत [अयुत] जी० ३१८४१
अउत [अयुत] जी० ३१८४१	

अउल [अतुल] ओ० १६५।१६. जी० ३।११६

अओकुम्भी [अयस्कुम्भी] रा० ७५४, ७५६

अओज्झ [अयोध्य] ओ० ५७

अओमय [अयोमय] रा० ७५४, ७५६.

जी० ३।११६

अंक [अङ्क] ओ० ४८, ५१. रा० १०, १२, १८,

२६, ३८, ६५, १३०, १६०, १६५, १७३, २२२,

२५६, २७६, ८०४. जी० ३।७, २८२, २८५,

३००, ३१२, ३३३, ३८१, ४१७, ५६६, ८६४

अंक (मय) [अङ्कमय] जी० ३।७४७

अंकघाई [अङ्कघात्री] रा० ८०४

अंकमय [अङ्कमय] रा० १३०, २७०.

जी० ३।३००, ३२२, ४३५

अंकवानिय [अङ्कवानिज] रा० ७३७

अंकहर [अङ्कधर] जी० ३।५६६

अंकामय [अङ्कमय] रा० १३०, १४६, १६०, २५४.

जी० ३।२६४, ३००, ४१५

अंक्रिय [अङ्कित] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७

अंकुर [अङ्कुर] ओ० ५, ८, १८४. रा० २७,

२२८. जी० ३।२७४, २८०, ३८७, ६७२

अंकुस [अङ्कुश] रा० ३६, ४०. जी० ३।३१३,

३३८, ५६७, ६३४, ८६२

अंकुसय [अङ्कुशक] ओ० ११७

अंकोल्ल [अङ्कोल] जी० १।७४

अंग [अङ्ग] ओ० १५, ६३, १४३. रा० ८०६,

८१०. जी० ३।५६६

अंगण [अङ्गन] ओ० २८

अंगपविट्ट [अङ्गप्रविष्ट] रा० ७४२

अंगबाहिरक [अङ्गबाह्यक] रा० ७४२

अंगमंग [अङ्गमङ्ग] ओ० १४. रा० ७०, ६७१.

जी० ३।५६८

अंगय [अङ्गक] ओ० ६३

अंगय [अङ्गद] ओ० ४७, ७२, १०८, १३१.

रा० २८५. ३।४५१

अंगारक [अङ्गारक] ओ० ५०

अंगुल [अङ्गुल] ओ० १६, १७०, १६२, १६५।७.

रा० ५६, १८८, ७६६. जी० १।१६, ७४, ८६, ६४,

१०१, १०३, १११, ११२, ११६, ११६, १२१,

१२३ से १२५, १३०, १३५; ३।८२, ६१, २६०,

४३६, ५६६, ५६७, ७८८, ८३८।१७, ६६६,

१०७४, १०८७, १०८६, ११११; ५।२३, २६;

६।४०, ५१, ६७, १७१

अंगुलक [अङ्गुलक] जी० ३।२६०

अंगुलम [अङ्गुलक] जी० ३।१०७४

अंगुलय [अङ्गुलक] जी० ३।८२

अंगुलि [अङ्गुलि] रा० २६२. जी० ३।४५७

अंगुलिज्जग [अङ्गुलीयक] ओ० ६३

अंगुलितल [अङ्गुलितल] ओ० २, ५५. रा० ३२,

२८१, २६३, २६५. जी० ३।३७२, ४४७, ४५८,

४६०, ५५४

अंगुलिय [अङ्गुलिक] ओ० १७०

अंगुली [अङ्गुली] ओ० १६

अंगुलीय [अङ्गुलीक] ओ० ६३. जी० ३।५६६,

५६७

अंगुलेज्जग [अङ्गुलीयक] जी० ३।५६३

√अञ्च [कृष्]—अञ्चै ओ० २१. रा० ८.

जी० ३।४५७

अञ्चितरिभित [अञ्चितरिभित] जी० ३।४४७

अञ्चिता [कृष्त्वा] रा० २६२

अञ्चिय [अञ्चित] रा० १०५, ११६, २८१.

जी० ३।४४७

अञ्चियरिभिय [अञ्चितरिभित] रा० १०७, २८१

अञ्चेत्ता [कृष्त्वा] ओ० २१. रा० ८. जी० ३।४५५

अञ्जण [अञ्जन] ओ० ४७. रा० १०, १२, १८, २५,

६५, १६१, १६५, २५८, २७६. जी० ३।७, २७८,

३३४, ४१६, ४४५

अञ्जणकेशिगा [अञ्जनकेशिका] जी० ३।२७६

अञ्जणकेशिया [अञ्जनकेशिका] रा० २६

अञ्जणग [अञ्जनक] ओ० १३. जी० ३।८८२,

८८३, ६१०, ६१३ से ६१६

अञ्जणगिरि [अञ्जनगिरि] ओ० ६३

अंजणपुलक [अञ्जनपुलक] रा० १०, १२, १८, ६५,
१६५, २७६. जी० ३१७

अंजणमय [अञ्जनमय] जी० ३१८

अंजणा [अञ्जना] जी० ३१४, ६८७

अंजलि [अञ्जलि] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६,
६२, ६६, ११७. रा० ८, १०, १२, १४, १८, ४६,
७२, ७४, ११८, २७६, २७६, २८२, २८२, ६५५,
६८१, ६८३, ६८६, ७०७, ७०८, ७१३, ७१४,
७२३, ७६६. जी० ३१४४२, ४४५, ४४८, ४५७,
५५५

अंजलिपद्मह [अञ्जलिप्रग्रह] ओ० ६६, ७०.

रा० ७७८

अंजलिपद्मह [अञ्जलिप्रग्रह] ओ० ४०

अंजू [अञ्जू] जी० ३१६२०

अंङ्ग [अण्डक] ओ० ३३

अंङ्ग [अण्डज] जी० ३१४७, १४८, १६१

अंङ्गुल [अनुवङ्ग] ओ० ६०

अंत [अन्त] ओ० ७२, ७४४, १५४, १६५, १६६,
१७७, १८१. रा० ३७, ७७१, ८१६. जी०
११३३; ३५२, १२४, १२५, ३११, ६४२, ६५३,
७२३, ७५४, ७६२, ७६८ से ७७६

अंतकर्म [अन्तकर्मन्] रा० २८५. जी० ३१४५१

अंतगाढसाधर [अन्तकृतदशाधर] ओ० ४५

अंतर [अन्तर] रा० १३२, २८१, ७५४ से ७५७,
७६३, ७६४. जी० ११४१, १४२; २१६३, ६६,
८६, ८८, ६२, १२५, १२६, १३३, १५०, १५१;
३१६० से ६३, ६५, ६६, ६८ से ७२, ११८, ११६,
२८८, ३०२, ४४७, ५७०, ५६८, ७१४, ८०२, ८१५,
८२७, ८३८, ८५२, ८५२, १०२२, ११३६,
११३७; ४१६, १७; ५१७, २३, २४, ३०;
६१०; ७१३; ८१४; ६४, १२, १३, १६, २५,
२६, ३३, ३४, ३६, ४६ से ५४, ५६, ६०, ६५, ७१,
७२, ८३, ८४, ८६, ८७, ८८, ९३, ९६, १०५ से १०७,
१११, ११७, ११६, १२६ से १२८, १३६, १३७,
१३६, १४६, १५२, १५३, १६५, १७६, १७७,

१७६, १८०, १८३ से १८५, २०४ से २०७,
२१६ से २१६, २२८ से २३०, २४१ से २४४,
२४६, २४६, २६२ से २६५, २७७ से २८५

अंतरणई [अन्तर्नदी] रा० २७६

अंतरणदी [अन्तर्नदी] जी० ३१४५५, ६३७

अंतरदीप [अन्तर्दीप] जी० २१६१

अंतरदीपक [अन्तर्दीपज, °क] जी० २१८६

अंतरदीपग [अन्तर्दीपज, °क] जी० ११५५, १०१,
११६, १२६; २१३४, ७०, ७२, ७७, ८५, ८६,
१०६, ११६, १२४, १३३, १३७, १३८, १४७,
१४६; ३१५५, २१५, २१६, २२७, ८३६

अंतरदीपय [अन्तर्दीपज, °क] जी० १११०१

अंतरदीपिया [अन्तर्दीपिका] जी० २१११, १३, ६६,
७०, ७२, १४७, १४६

अंतरा [अन्तरा] ओ० ५५. रा० २०, ६८३, ७०६.
जी० ३१७२६

अंतराय [अन्तराय] ओ० ४४

अंतरित [अन्तरित] जी० ३१४३६

अंतरिय [अन्तरित] रा० ७६६. जी० ३१८३८१६

अन्ताहार [अन्त्याहार] ओ० ३५

अन्तिय [अन्तिक] ओ० २१, ४७ से ५१, ५४, ६३,
७८, ८०, ८१, ११७, १२०, १२१, १५१. रा० १२,
१३, १५ से १७, ४७, ६२, २७७, ६६७, ६८१,
६८३, ६८५, ६८०, ६८४ से ६८६, ७००, ७०६,
७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८, ७२०, ७२६,
७७४, ७७५, ७८६, ८१२. जी० ३१४४३

अन्तेउर [अन्तःपुर] ओ० २३, ७०, १६२.

रा० ६७४, ६६५, ६६८, ७५२, ७७७, ७७८,
७८७ से ७८१

अन्तेउरिया [अन्तःपुरिकी] ओ० ६२

अन्तेपुर [अन्तःपुर] जी० ३१२८५

अन्तेवासि [अन्तेवासिन्] ओ० २३ से २५, २७, ८२,
११५. रा० ६७६

अन्तो [अन्तर] ओ० ७०, ६२ रा० २४, ३३, ६६,
१३०, १३७, १८७, २५४, ७५४, ७५५, ७५७,

७७२, जी० १।१२७; ३।७७, १११, ११८, २१४,
२७७, २८८, ३००, ३०७, ३०८, ३३६, ३५२,
३५६, ३६०, ३६४, ३६८, ३६९, ४१५,
६४८, ६७३, ७५५, ७५७, ८३८। १५, ८३६, ८४०,
८४२, ९०५

अंतोमुहुत्त [अन्तर्मुहूर्त] जी० १।५२, ५६, ६५, ७४,
७६, ८२, ८७, ८८, १०१, १०३, १११, ११६, १२१,
१२३ से १२५, १२७, १२८, १३३, १३७ से
१४०, १४२; २।२० से २२, २४ से ३४, ४६,
५०, ५३ से ६१, ६३, ६५ से ६७, ७६, ८२ से
८४, ८७, ८८, ९०, ९१, १०७, १०९ से १११,
११३, ११४, ११६, ११८ से १३३; ३।१५६,
१६१, १६२, १६५, १६६ से १६९, २१४, ११३०,
११३४ से ११३७; ४।३ से ११, १६, १७; ५।५,
७, ८, १० से १६, २१ से २४, २८ से ३०; ६।३,
८ से ११; ७।१३, १४; ८।२३ से २६, ३१, ३३,
३४, ३६, ४१, ४७, ५२, ५७ से ६०, ६८ से ७३,
७७, ७८, ८०, ८३, ८५, ८६, ९०, ९२, ९३, ९६, ९७,
१०२, १०३, १०५, ११४, ११५, ११७, ११८,
१२३, १२५, १२६, १२८, १३२, १३६, १४४,
१४६, १५०, १५२, १५३, १६०, १६४, १६५,
१७२, १७३, १७६ से १७८, १८६ से १८१,
१८३, १८४, १८८, २०२, २०४, २०७, २११,
२१६ से २१८, २२२, २२३, २२५, २२८, २२९,
२४१, २४२, २५७ से २६०, २६२, २६४, २७७,
२७८

अंतोमुहुत्तिय [अन्तर्मुहूर्तिक] ओ० १७३, १८२

अंतोसल्लभयग [अन्तर्गल्लयमृतक] ओ० ६०

अन्दोलग [अन्दोलक] रा० १८०. जी० ३।२६२

अन्दोलय [अन्दोलक] रा० १८१

अन्धकार [अन्धकार] ओ० ४६

अन्धयार [अन्धकार] ओ० ५, ८, ५७. जी० ३।२७४

अन्धिया [अन्धिका] जी० १।८६

अन्ध [आन्ध्र] जी० १।७१

अन्धड [अन्धड] ओ० ६६

अन्धपल्लवपविभक्ति [आन्ध्रपल्लवप्रविभक्ति] रा० १००

अम्बरतल [अम्बरतल] ओ० ५२. रा० ६८८

अम्बसातवण [आम्बसातवन] रा० २, ८ से १०,
१२, १३, १५, ५६

अम्बिल [अम्बल] जी० १।५; ३।२२

अम्बिलोदय [अम्बिलोदक] जी० १।६५

अम्बुभक्ति [अम्बुभक्ति] ओ० ६४

अम्बुय [अम्बुक] जी० ३।५६५

अकटय [अकण्टक] ओ० ६, १४. रा० ६७१.

जी० ३।२७५

अकण्डुय [अकण्डुक] ओ० ३६

अकत [अकान्त] रा० ७६७. जी० १।६५; ३।६२

अकततरक [अकान्ततरक] जी० ३।८४

अककस [अकर्कश] ओ० ४०

अकडुय [अकडुक] ओ० ४०

अकण [अकर्ण] जी० ३।२१६

अकम्मभूमक [अकर्मभूमक] जी० २।१३३

अकम्मभूमग [अकर्मभूमक] जी० १।५१, ५५,

१०१, ११६, १२६; २।३०, ३२ से ३४, ७७, ८५,

९६, १०६, ११६, १२४, १३७, १४७, १४८;

३।१५५, २१५, २२८, ८३६

अकम्मभूमि [अकर्मभूमि] जी० २।१३७

अकम्मभूमिक [अकर्मभूमिज, °क] जी० २।५७, ५८,
८५

अकम्मभूमिग [अकर्मभूमिज, °क] जी० २।५६ से

६१, ६६, ७०, ७२, १३८, १४७, १४८

अकम्मभूमिय [अकर्मभूमिज] जी० १।१०१

अकम्मभूमिया [अकर्मभूमिजा] जी० २।११, १३,

७०, ७२, १४७, १४८

अकयत्थ [अकृतार्थ] रा० ७७४

अकयलक्षण [अकृतलक्षण] रा० ७७४

अकरडुय [अकरण्डक] ओ० १६. जी० ३।५६६,
५६७

अकरण [अकरण] ओ० ७८ से ८१

अकरणिज्ज [अकरणीय] ओ० ११७. रा० ७६६

अकसाइ [अकपायिन्] जी० १।१३१; ६।२८,

१४८, १५१, १५४, १५५

अकाइय [अकायिक] जी० ६।१८ से २०, १८२,
१८४
अकामकुहा [अकामकुध्] ओ० ८६
अकामणिज्जरा [अकामनिर्जरा] ओ० ७३
अकामतण्हा [अकामतृष्णा] ओ० ८६
अकामबंभचेरवास [अकामब्रह्मचर्यवास] ओ० ८६
अकाल [अकाल] रा० १३, १५ से १७
अकिचण [अकिञ्चन] ओ० २७. रा० ८१३
अकिर्तिकारण [अकीर्तिकारक] ओ० १५४
अकिया [अकुत्वा] ओ० १७२
अकिरिय [अक्रिय] ओ० ४०
अकुडिल [अकुटिल] ओ० ४६
अकुणत्तर [एकोनसप्तति] जी० ३।८२७
अकुब्बमाण [अकुर्वत्] रा० ७६२
अकुसल [अकुशल] रा० ७५८, ७५६
अकुसलमण [अकुशलमनस्] ओ० ३७
अकुसलवय [अकुशलवचस्] ओ० ३७
अकोसायंत [अकोशायमान, विकसत्] ओ० १६
अक्किट्ट [अक्लिष्ट] जी० ३।६३०
अक्कोह [अक्रोध] ओ० १६८
अक्ख [अक्ष] ओ० १२२
अक्खय [अक्षय] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २००,
२६२. जी० ३।५६, २७२, ३५०, ४५७, ७६०
अक्खर [अक्षर] ओ० ७१, १८२. रा० ६१, २७०.
जी० ३।४३५
अक्खाइगपेच्छा [आख्यायकप्रेक्षा] जी० ३।६१६
अक्खाडण [अक्षवाटक] रा० ३५, ६६, २१८, ३००.
जी० ३।३७७, ४६५, ८६१
अक्खाडय [अक्षवाटक] रा० ३६, २१७, ३००,
३२१, ३३८. जी० ३।४६५, ४८६, ५०३, ८६०
अक्खात [आख्यात] जी० ३।२३२
अक्खामित्ता [अक्षमयित्वा] रा० ७७६
अक्खाय [आख्यात] रा० १२४, १२६, १६३, १६६.
जी० १।१; ३।७७, १६१, १७४, २५७, ३३५,
३५४, ३५५, ३५७, ६५८, ७२८, ७३३, १०३८

अक्खीण [अक्षीण] रा० ७५१
अक्खीणमहानसिय [अक्षीणमहानसिक] ओ० २४
अक्खुभियजल [अक्षुभितजल] जी० ३।७८३, ७८४
अक्खेवणी [आक्षेपणी] ओ० ४५
अखंड [अखण्ड] ओ० १६. जी० ३।५६६
अखुभियजल [अक्षुभितजल] जी० ३।७८३
अगड [अवट] ओ० १, ६६
अगडमह [अवटमह] रा० ६६८
अगणि [अग्नि] रा० ७५७. जी० ३।७७
अगणिकाय [अग्निकाय] रा० ७६७.
जी० ३।८४१
अगत्थिगुम्म [अगस्तिगुल्म] जी० ३।५८०
अगरला [अगरला, अगरल्लि] ओ० ७१. रा० ६१
अगरलघुयत्त [अगरलघुकत्व] रा० ७६३
अगल्लुय [अगरुक] ओ० ११०, १३३
अगामिया [अग्रामिका] ओ० ११६, ११७.
रा० ७६५, ७७४
अगार [अगार] ओ० १५, २३, ५२, ७६, ७८, १२०,
१५१. रा० ७०, १३३, ६७२, ६८७, ६८६,
६६५, ८०६, ८१०, ८१२
अगारधम्म [अगारधर्म] ओ० ७५, ७७
अगारसामाइय [अगारसामायिक] ओ० ७७
अगिला [दे० अग्लानि] ओ० ७१. रा० ७२०
अगुरु [अगुरु] रा० ३०
अगेज्झ [अग्राह्य] ओ० ५ जी० ३।२७४
अग [अग्र] ओ० २३, ६६. रा० ६६, ७०, १३३,
२६१, ३५१, ५६४. जी० ३।३०३, ४५७, ५१६,
५४७, ५८०, ५६७, ६७४
अगमहिंसी [अग्रमहिषी] रा० ७, ४२, ४७, ५६, ५८,
२८०, ६५६. जी० ३।३४०, ३५०, ३५६,
४४६, ४४८, ५५७, ५५६, ५६३, ६१६ से ६२२,
१०२३, १०२६
अगय [अग्रक] जी० ३।५६१
अगलपासाय [अर्गलाप्रासाद] रा० १३०.
जी० ३।३००

अगला [अर्गला] रा० १३०. जी० ३१३००
 अगसिहर [अग्रशिखर] ओ० ५, न. रा० ३२.
 जी० ३१२७४, ३७२
 अगस्तो [अग्रशस्त्र] जी० ११५८, ७३, ७८, ८१
 अगहृत्थ [अग्रहस्त] ओ० ४७. रा० १२, ७१४,
 ७५८ से ७६१. जी० ३१११८
 अग्नि [अग्नि] ओ० ४८, १८४. रा० ७६१.
 जी० ३१६०१, ८६६
 अग्नेज्ज्ञ [अग्नेज्ज्ञ] ओ० ८
 अग्नोदय [अग्रोदक] जी० ३१७३३
 अचंड [अचण्ड] जी० ३१५६८
 अचक्षुर्दंशनि [अचक्षुर्दंशनिन्] जी० ११२६, ८६,
 ६०; ६१३१, १३३, १३७, १४०
 अचरिम [अचरम] रा० ६२. जी० ६६३, ६५, ६६
 अचवस [अचपल] रा० १२
 अचित्त [अचित्त] ओ० २८, ४६, ६६, ७०. रा० ७७८
 अचिर [अचिर] जी० ३१५६०
 अचोक्ष [दे० अचोक्ष] रा० ६, १२. जी० ३१६२२
 √अच्च [अच्]—अच्चेइ ओ० २. रा० २६१.
 जी० ३१५१६—अच्चेति जी० ३१४५७
 अचन्त [अत्यन्त] ओ० १४. रा० ६७१
 अचनित्त [अचनीय] ओ० २. रा० २४०, २७६.
 जी० ३१४०२, ४४२, १०२५
 अचनित्ता [अचनिका] रा० ६५४, ६५५.
 जी० ३१४६३, ४६६, ५१७, ५५४, ५५५
 अच्चा [अच्चा] ओ० ७२
 अच्चासण [अत्यासन्न] ओ० ४७, ५२, ८३.
 रा० ६०, ६८७, ६६२, ७१६
 अच्चि [अचिस्] ओ० ४७, ७२. रा० १७, १८, २०,
 ३२, १२६. जी० ११७८; ३१८५, १७५, २८८,
 ३००, ३७२
 अच्चिकंत [अचिःकान्त] जी० ३१७५
 अच्चिकूट [अचिःकूट] जी० ३१७५
 अच्चिज्जय [अचिज्जय] जी० ३१७५
 अच्चिप्पभ [अचिःप्रभ] जी० ३१७५

अच्चिमालि [अचिर्मालिन्] रा० १२४
 अच्चिमाली [अचिर्मालिनी] जी० ३१६२०, १०२३,
 १०२६
 अच्चियावत् [अचिरावत्] जी० ३१७५
 अच्चिलेस्स [अचिलेस्स] जी० ३१७५
 अच्चिवण [अचिर्वण] जी० ३१७५
 अच्चिसिग [अचिः शृङ्ग] जी० ३१७५
 अच्चिसिद्ध [अचिः शिष्ट] जी० ३१७५
 अच्चुत्त [अच्युत] जी० ३१०३८, ११२२
 अच्चुत्तरवाडिसग [अचिरुत्तरावतंसक] जी० ३१७५
 अच्चुय [अच्युत] ओ० १५८, १५६, १६२, १६०,
 १६२. जी० २१६६; ३१०५४, १०५५, १०६२,
 १०६६, १०७४, १०८८, १०९१, ११११, १११२,
 १११५, १११६
 अच्चुयवड [अच्युतपति] ओ० ५१
 अच्चेत्ता [अचित्ता] रा० २६१. जी० ३१४५७
 अच्चोवग [अत्युदक] रा० ६, १२. जी० ३१४४७
 अच्चोयग [अत्युदक] रा० २८१
 अच्छ [अच्छ] ओ० १२, १६४. रा० २१ से २३.
 ३२, ३४, ३६, ३८, १२४ से १२८, १३१, १३२,
 १३४, १३७, १४१, १४५ से १४८, १५० से
 १५३, १५५ से १५७, १६०, १६१, १७४, १८०
 से १८५, १८८, १८९, १९०, २०६, २११, २१८,
 २२१, २२२, २२४, २२६, २३०, २३३, २३८,
 २४२, २४४, २४६, २५३, २५६, २६१, २७३,
 २६१. जी० ३१११८, ११६, २६१ से २६३,
 २६६, २६८, २६९, २८६, २८८ से २९७, ३०१,
 ३०२, ३०४, ३०७, ३०८, ३१२, ३१८, ३१९,
 ३२३ से ३२६, ३२८ से ३३०, ३३२, ३३४,
 ३३७, ३४७, ३४८, ३५२, ३५३, ३५५, ३६१,
 ३६५, ३७२, ३७७, ३८०, ३८१, ३८३, ३८५,
 ३८२, ३८५, ३८६, ४००, ४०४, ४०६, ४०८,
 ४१०, ४१३, ४१४, ४१८, ४२२, ४२५, ४२७,
 ४३७, ४५७, ६३२, ६३६, ६४४, ६४६, ६४६,
 ६५५, ६६१, ६६८, ६७१, ६७५, ६८६, ७२४,
 ७२७, ७३६, ७५०, ७५८, ८३६, ८४२, ८५४,

८५७, ८६३, ८८१, ८८२, ८९१, ८९३ से ८९५,
 ८९७, ८९९, ९०१, ९०४, ९०६, ९०७, ९१०,
 ९११, ९१८, ९५७, १०३८, १०३९, १०८१
 ✓अच्छ [आस्]—अच्छेज्ज ओ० १९५।१८
 अच्छ [कृष्ण] जी० ३।६२०
 अच्छणधरग [आसनगृहक] रा० १८२, १८३.
 जी० ३।२९४
 अच्छण [आच्छन्न] जी० ३।५८१
 अच्छत्तग [अच्छक] ओ० १५४, १६५, १६६.
 रा० ८१६
 अच्छरस [अच्छरस] रा० १९२. जी० ३।४५७
 अच्छरा [दे०] ओ० १७०. जी० ३।८६
 अच्छरा [अप्सरस्] रा० ३२, २०९, २११.
 जी० ३।३७२, ५९७, ६२१, ११२२
 अच्छि [अक्षि] ओ० १९. रा० २५४.
 जी० ३।१२९।८, ३०३, ४१५, ५९६
 अच्छिज्जंत [आच्छिद्यमान] रा० ७७
 अच्छिद्द [अच्छिद्र] ओ० ५, ८, १९, २६.
 जी० ३।२७४, ५९६, ५९७
 अच्छिपत्त [अक्षिपत्र] रा० २५४. जी० ३।४१५
 अच्छिवेदणा [अक्षिवेदना] जी० ३।६२८
 अच्छेत्ता [अछित्वा] जी० ३।९९०
 अच्छेयकर [अछेदकर] ओ० ४०
 अच्छेरग [आश्चर्य] जी० ३।५९७
 अज [अज] जी० ३।६१८
 अजरा [अजरा] ओ० १९५।१८
 अजहण्ण [अजघन्य] जी० ३।५९७
 अजहण्णमणुक्कोत्त [अजघन्योत्कर्ष] जी० ९।४८,
 ५०
 अजिण [अजित] ओ० २६
 अजित [अजित] जी० ३।४४८
 अजिय [अजित] ओ० ६८. रा० २८२.
 जी० ३।४४८
 अजीरग [अजीरक] जी० ३।६२८
 अजीव [अजीव] ओ० ७१, १२०, १३७, १३८, १६२.
 रा० ६९८, ७५२, ७८९

अजीवाभिगम [अजीवाभिगम] जी० १।२ से ५
 अजीगत्त [अयोगत्त्व] ओ० १८२
 अजीगि [अयोगिन्] जी० १।१३३; ९।२१, ४६,
 ४७, ५३, ११३, ११६, १२०
 अज्ज [अज] रा० ६८८, ६८९
 अज्ज [आर्य] ओ० १४६
 अज्जग [आर्यक] रा० ७५०, ७५१, ७७३
 अज्जय [आर्यक] रा० ७५०, ७५१
 अज्जव [आर्यव] ओ० २५, ४३. रा० ६८६, ८१४
 अज्जा [आर्या] रा० ८०६
 अज्जिया [आर्यिका] ओ० १९. रा० ७५२, ७५३
 अज्जुण [अर्जुन] ओ० ९, १०. जी० ३।५८३
 अज्जुणसुवण्णमसय [अर्जुनसुवर्णकमय] ओ० १९४
 अज्जत्थिय [आध्यात्मिक] रा० ९, २७५, २७६,
 ६८८, ७३२, ७३७, ७३८, ७४६, ७६८, ७७७,
 ७९१, ७९३. जी० ३।४४१, ४४२
 अज्जयण [अध्ययन] जी० १।१
 अज्जवसाण [अध्यवसान] ओ० ११९, १५६.
 जी० ३।१२९।६
 अज्जोयरय [अध्यवतरक] ओ० १३४
 ✓अज्जोववज्ज [अवि+उप+पद्]
 —अज्जोववज्जिहिति ओ० १५०. रा० ८११
 अज्जोववण्ण [अध्युपपन्न] रा० ७५३
 अट्ट [आर्त] ओ० ७४
 अट्ट [आण] [आर्तध्यान] ओ० ४३
 अट्टज्जाण [आर्तध्यान] रा० ७६५
 अट्टणसाला [अट्टनशाला] ओ० ६३
 अट्टालग [अट्टालक] जी० ३।५९४, ६०४
 अट्टालय [अट्टालक] ओ० १. रा० ६५४, ६५५.
 जी० ३।५५४
 अट्टियचित्त [आर्तितचित्त] ओ० ७४।५
 अट्ट [अर्थ] ओ० २०, २१, ५२, ५४, ५७, ५९, ६१,
 ६३, ८९ से ९५, १११ से ११४, ११७ से १२०,
 १५४, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६५ से
 १६७, १६९, १७०, १७२, १७७, १८३, १८४,
 १८९ से १९१. रा० १३, १६, २५ से ३१, ४५,

४७, ६४, १२३, १७३, १९७, १९९, २७७, ६८३,
 ६८७, ६९०, ६९८, ७०१, ७१३, ७१४, ७१६,
 ७१९, ७२६, ७५१ से ७५३, ७५५, ७५७, ७५९,
 ७६१, ७६३, ७६५, ७७१, ७७४, ७७६ से ७७८,
 ७८६, ७८९, ७९२, ८१६. जी० ३।५८, ८४, ८५,
 १९८ से २०३, २३९, २४७, २५६, २६९, २७१,
 २७८ से २८५, ३५०, ४४३, ५७७, ५९९, ६०१,
 ६०२, ६०५ से ६०७, ६०९, ६१०, ६१२ से
 ६१७, ६२२ से ६२४, ६२६, ६२८, ६३७, ६५९,
 ६७४, ७००, ७०९, ७२१, ७३१, ७३८, ७४१,
 ७४३, ७४६, ७५०, ७६०, ७६३, ७६५, ७६८,
 ७७०, ७७६, ७८२, ७८६, ७८७, ८०८, ८१९,
 ८२९, ८३३, ८३६, ८४०, ८५४, ८५७, ८६०,
 ८६३, ८६६, ८६९, ८७२, ८७५, ८७९, ८८०, ८८३,
 ८८५, ८८७, ८८९, १०२४, १०२५, १०४२,
 १०४४, १०४६, १०४९, १०५१ से १०५३
 अट्ट [अष्टन्] ओ० १२. रा० ८. जी १।३९
 अट्टअट्टमिया [अष्टाष्टिका] ओ० २४
 अट्टतीस [अष्टाविंशत्] जी० ३।७०
 अट्टपिट्टिणिट्टिता [अष्टपिष्टनिष्ठिता] जी० ३।८६०
 अट्टभाइया [अष्टभागिका] रा० ७७२
 अट्टभाग [अष्टभाग] जी० २।३९, ४४
 अट्टम [अष्टम] ओ० १७४, १७६
 अट्टमभक्त [अष्टमभक्त] ओ० ३२. जी० ३।५९९
 अट्टमी [अष्टमी] ओ० १२०, १६२. रा० ६९८,
 ७५२, ७८९. जी० ३।७२३, ७२९
 अट्टया [अर्थ] ओ० २०, १३७, १३८
 अट्टविह [अष्टविध] जी० १।५, १०; २।१७;
 ३।९१७; ८।१, २३; ९।१९७, २०९, २२०
 अट्टसिर [अष्टशिरस्] ओ० १३
 अट्टार [अष्टादशन्] ओ० १९२
 अट्टारस [अष्टादशन्] ओ० १४८. जी० २।४८
 अट्टारसविह [अष्टादशविध] रा० ८०९, ८१०
 अट्टावण [अष्टपञ्चाशत्] जी० ३।६६१
 १. ईति रहित ।

अट्टावय [अष्टापद] ओ० १४६. रा० ८०६.
 जी० ३।५९७
 अट्टावीस [अष्टाविंशति] ओ० १७०. रा० १८८.
 जी० ३।५
 अट्टावीसद्विविह [अष्टाविंशतिविध] जी० २।१२
 अट्टावीसतिविध [अष्टाविंशतिविध] जी० २।२१६
 अट्टावीसतिविह [अष्टाविंशतिविध] ओ० ५०
 अट्टासीत [अष्टासीति] जी० ३।८३७
 अट्टि [अस्थि] ओ० १२०. रा० ६९८, ७५२,
 ७८९. जी० १।९५, १३५; ३।९२, १०९०
 अट्टिबुद्ध [अस्थियुद्ध] रा० ८०६
 अट्टिसुह [अस्थिसुख] ओ० ६३
 अट्ट [अटट] जी० ३।८४१
 अट्टतालीस [अष्टचत्वारिंशत्] जी० ३।८२७
 अट्टयाल [अष्टचत्वारिंशत्] रा० १२६.
 जी० ३।३५१
 अट्टयालीस [अष्टचत्वारिंशत्] रा० २३५.
 जी० ३।६८
 अट्टयालीसग्रंसिय [अष्टचत्वारिंशदक्षिक] रा० २३९
 अट्टयालीसद्विकोडीय [अष्टचत्वारिंशत्कोटीक]
 रा० २३९
 अट्टयालीसद्विविग्गहिय [अष्टचत्वारिंशद्विग्रहिक]
 रा० २३९
 अट्टवी [अटवी] ओ० ११६, ११७. रा० ७४४, ७६५
 अट्टहत्तर [अष्टसप्तति] जी० ३।७७
 अट्ट [आढ्य] ओ० १४, १४१. रा० ६७१, ६७५,
 ७९९. जी० ३।५९४
 अट्ट [अर्घ] जी० ३।६६२
 अट्टावाट्टि [अर्घद्विषटि] जी० ३।६६३
 अट्टादज्ज [अर्धतृतीय] रा० १२९. जी० ३।९१,
 २३७, २३८, २४३, ३५५, ६३२, ६४७, ६४९,
 ६७३, ६७४, ६७६, १०५३, १०५५; ५।२९
 अणइक्कमणिज्ज [अनतिक्रमणीय] ओ० १२०,
 १६२. रा० ६९८, ७५२, ७८९
 अणइक्कमणिज्जवयण [अनतिक्रमणीयवचन]
 ओ० ९१
 अणईह [अनीति^१] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४

अर्णत [अनन्त] ओ० १६, २१, ५४, १५३, १६५,
१६६, १७२, १८२, १८५। न. रा० ८, २६२, ८१४,
जी० १।६, ६७, ७३, ७४, १३६; २।६३, ६५, ८८,
१३२; ३।४५७; ५।६, २४, २६, ४१ से ५१, ५६
से ५८; ८।४; ९।२३, २६, ३३, ६६, ७१, ७३, ७८,
१६४, १६५, १७८, २०२, २०४, २५८

अर्णतक [अनन्तक] जी० ३।४५१

अर्णतखुत्तो [अनन्तकृत्वस्] जी० ३।१२७, ६७५,
११२८ से ११३०

अर्णतग [अनन्तक] ओ० १०८, १३१. रा० २८५

अर्णतगुण [अनन्तगुण] ओ० १६५।१४.

जी० १।३५, ३७, ४०, १४३; २।१३४, १३६,
१३८ १४१, १४२, १४५, १४६, १४६;
३।११३८; ४।१६ से २१, २५; ५।१८, २०, २५,
२७, ३१, ३३, ३६, ५२, ६०; ६।१२; ७।२१ से
२३; ८।५; ९।५ से ७, १४, १७, २०, २७ से
२६, ३५, ६१, ६२, ६६, ७४, ८७, ९४, १००, १०८,
११२, १२०, १३०, १४०, १४७, १५५, १५८,
१६६, १६६, १८१, १८४, १८६, २०८, २२०,
२३१, २५१, २५३, २५५, २६६, २८७, २८८,
२९२, २९३

अर्णतपणसिय [अनन्तप्रदेशिक] जी० १।३३

अर्णतर [अनन्तर] ओ० ६४, १४१, १८२, १८२.

रा० ५० से ५५, ७०, २६२, ७७३, ७८६.

जी० १।४३, ६१, ११६; ३।१२१, १५६, ६६८,
८३८।२५, ८८२, ११२७

अर्णतरसिद्ध [अनन्तरसिद्ध] जी० १।७, ८

अर्णतवग्ग [अनन्तवर्ग] ओ० १६५।१५

अर्णतवत्तियानुपेहा [अनन्तवृत्तिता(का)नुपेक्षा]
ओ० ४३

अर्णतसंसारिय [अनन्तसंसारिक] रा० ६२

अर्णगार [अनगार] ओ० २७, ४५, ८२, १५२,

१६४, १६६. रा० ६८६, ७११, ८१३.

जी० ३।१६८ से २०६

अर्णगारधम्म [अनगारधर्म] ओ० ७५, ७६

अर्णगारसामाहय [अनगारसामायिक] ओ० ७६

अर्णगारिय [अनगारिता] ओ० २३, ५२, ७६, ७८,

१२०, १५१. रा० ६८७, ६८६, ६८५, ८१२

अर्णच्चासायणा [अनत्याशातना] ओ० ४०

अर्णच्चासायणाविणय [अनत्याशातनाविनय]
ओ० ४०

अर्णह [अनर्थ] ओ० १२०, १६०. रा० ६६८,
७५२, ७८६

अर्णह्वावंड [अनर्थदण्ड] ओ० १३६

अर्णह्यकर [अनास्नवकर] ओ० ४०

अर्णह्यवंड [अनर्थदण्ड] ओ० १०४, १२७

अर्णह्यवंडवेरमण [अनर्थदण्डविरमण] ओ० ७७

अर्णवकंक्षमाण [अनवकांक्षत्] ओ० ११७

अर्णवज्ज [अनवद्य] ओ० १३७, १३८

अर्णवहुत्पारिह [अनवस्थाप्यार्ह] ओ० ३६

अर्णवद्वित [अनवस्थित] जी० ३।८३८।१०

अर्णवद्विय [अनवस्थित] जी० ३।८३८।३२, ८४१

अर्णवणिगय [अनपन्निक] ओ० ४६

अर्णवयग [अनवदग्न] ओ० ४६

अर्णवरय [अनवरत] ओ० ६८

अर्णसण [अनशन] ओ० ३१, ३२, ११७, १४०, १५४,
१५७, १६२, १६५, १६६. रा० ८१६

अर्णह [अनघ] ओ० ६८

अर्णाइ [अनादि] ओ० ४६

अर्णाइय [अनादिक] जी० ६।११, १३, १६, ६५,
६६, ८६, १६४, १७६

अर्णाउत्त [अनाद्युक्त] ओ० ४०

अर्णागय [अनागत] ओ० १८३, १८४, १८५

अर्णागार [अनाकार] ओ० १६५।११.

जी० १।३२, ८७; ३।१०६, १५४, १११०;
६।३६, ३७

अर्णाढायमाण [अनाद्रियमाण] रा० ७६०, ७६१

अर्णादित [अनादृत] जी० ३।७००

अर्णादिय [अनादृत] जी० ३।६८०, ७००, ७०१,
७६५

अर्णादिया [अनादृता] जी० ३।७००, ७०१

अणानुपूर्वी [अनानुपूर्वी] जी० ११४८
 अणादिय [अनादिक] जी० ६१२५, १३३
 अणादीय [अनादिक] जी० ६१२३, ३१, ३४, ६४,
 ७२, ८१, ११०, १७४, २०२, २०६
 अणारंभ [अनारम्भ] ओ० १६३
 अणारिय [अनार्य] ओ० ७१. जी० ३१६२८
 अणालोड्य [अनालोचित] ओ० ६५, ११५, १५६
 अणाहारग [अनाहारक] जी० ६१३८, ५१ से ५५
 अणाहारय [अनाहारक] जी० ६१४२ से ४८
 अणिव [अनिन्द्र] जी० ३१११२०
 अणिविय [अनिन्द्रिय] जी० ६११५ से १७, १६७,
 १६६, २५६, २६१, २६५, २६६
 अणिविस्त [अनिक्षिप्त] ओ० ११६
 अणिगण [अग्न] जी० ३१५६५
 अणिच्च [अनित्य] ओ० ७४
 अणिच्चाणुपेहा [अनित्यानुपेक्षा] ओ० ४३
 अणिज्जिण [अनिर्जीर्ण] रा० ७५१
 अणिट्ट [अनिष्ट] रा० ७६७. जी० ११६५;
 ३१६२, ६७, १२२, १२३, १२८, १२९
 अणिट्टतरक [अनिष्टतरक] जी० ३१८४, ८५
 अणिट्टतरय [अनिष्टतरक] जी० ३१११८, ११६
 अणिट्ठुर [अनिष्टुर] ओ० ४०
 अणिट्ठुह्य [अनिष्टीवक] ओ० ३६
 अणित्थंत्थ [अनित्यंत्थ] ओ० १६५१८,
 जी० ११६७, ७४
 अणिय [अनीक] रा० ७, ४७, ५६, ५८, २८०.
 जी० ३१३५०, ४४६, ५५७, ५६३
 अणियट्टि [अनिवृत्ति] ओ० ४३
 अणियाण [अनिदान] ओ० २५, १६४
 अणियाहिवड [अनीकाधिपति] रा० ७, ५६, ५८,
 २८०. जी० ३१३५०, ४४६, ५५७, ५६३
 अणियाहिवति [अनीकाधिपति] रा० ४३.
 जी० ३१३४४, ५६१
 अणिल [अनिल] ओ० २७. रा० ८१३
 अणिसिद्ध [अनिसृष्ट] ओ० १३४

अणिहृतिदिय [अनिभृतेन्द्रिय] ओ० ४६
 अणीय [अनीक] रा० ५६
 अणीयाहिवड [अनीकाधिपति] रा० ५३
 अणु [अणु] जी० ११४४; ३१६६८, ६६६
 अणुगंतव्य [अनुगन्तव्य] जी० ३१५, १२, ३५५,
 ७७५
 √अणुगच्छ [अनु + गम्] —अणुगच्छइ ओ० २१,
 रा० ८ —अणुगच्छति जी० ३१४५५
 अणुगच्छिता [अनुगम्य] ओ० २१. रा० ८
 अणुगवसित [अनुववसित] रा० १४६
 √अणुचर [अनु + चर्] —अनुचरंति
 जी० ३१८३८, ११
 अणुचरंत [अनुचरत्] जी० ३१८३८, १०
 अणुचरिय [अनुचरित] ओ० १
 अणुचिण्ण [अनुचीर्ण] जी० १११
 √अणुजाण [अनु + ज्ञा] —अणुजाणत् रा० ६८.
 —अणुजाणंति रा० ७१३. —अणुजाणेज्जाह
 रा० ७०६
 अणुताव [अनुताप] जी० ३११२८
 अणुत्त [अणुत्व] जी० ३१६६६
 अणुत्तर [अनुत्तर] ओ० ७२, ७६ से ८१, १५३,
 १६५, १६६. रा० ८१४. जी० ३११२, ७७,
 ११७, १०३८, १०५६, १०८४, १०८६, १०८२,
 ११०४, ११०६ से ११११, १११३, १११८,
 ११२०, ११२३, ११२५
 अणुत्तरविमाण [अनुत्तरविमान] ओ० १६०.
 जी० ३११०६६, १०७०, १०७२, १०७४, १०७७
 से १०८२, १०८६, ११३०
 अणुत्तरोववाड्य [अनुत्तरोपपातिक] जी० १११२३;
 ३११०६४, १०६७
 अणुत्तरोववाड्यदसाधर [अनुत्तरोपपातिकदसाधर]
 ओ० ४५
 अणुत्तरोववात्ति [अनुत्तरोपपातिक] जी० २१६३,
 ६६, १४८, १४९; ३११०७६, १०८०, १०८६,
 १०८८, १०८९, ११०६, ११०८, १११४, १११६,
 १११८, ११२५

अणुद्वयकर [अनुद्वयकर] ओ० ४०

अणुपत्त [अनुप्राप्त] ओ० ११६, ११७. रा० ८०६,
८१०

अणुपदाहिण [अनुप्रदक्षिण] जी० ३।४४३

अणुपदाहिणीकरमाण [अनुप्रदक्षिणीकुर्वन्]

रा० ४७, ४८, २७७, २८३, २८६, ३१३, ३७६,
४३५, ४६६, ५५६, ६१६

अणुपरियट्टिता [अनुपरिवर्त्य] ओ० १७०

अणुपरियट्टिताणं [अनुपरिवर्त्य] जी० ३।८६

√अणुपरिवर्त्त [अनु+परि+वृत्]—अणुपरिव-
र्त्तति जी० ३।८४२

अणुपविट्ट [अनुप्रविष्ट] रा० ७५६, ७५७, ७६५,
७७४

√अणुपविस [अनु+प्र+विश]—अणुपविसइ

ओ० ५६. रा० २७७.—अणुपविसति
रा० २८३. जी० ३।४४३

अणुपविसमाण [अनुप्रविशत्] रा० ७५३, ७६५

अणुपविसिता [अनुप्रविश्य] ओ० ५६.

रा० २७७. जी० ३।४४३

√अणुपाल [अनु+पालय]—अणुपालेति ३।२१८

अणुपालेत्ता [अनुपाल्य] ओ० १६२. जी० ३।६३०

अणुपालेमाण [अनुपालयत्] ओ० १२०.

रा० ६६८, ७५२, ७८६

अणुपुर्व्व [अनुपूर्व] ओ० ५, ८, १६, ११६, ११७,

१६८. रा० ८०३. जी० ३।११८, ११९, २७४,
५६६, ५६७

अणुप्पण [अनुत्पन्न] ओ० १६६

अणुप्पत्त [अनुप्राप्त] रा० ७६५, ७७४

अणुप्पदाहिणीकरमाण [अनुप्रदक्षिणीकुर्वन्]

जी० ३।४५२

अणुप्पदाहिण [अनुप्रदक्षिण] जी० ३।४४५

अणुप्पदाहिणीकरमाण [अनुप्रदक्षिणीकुर्वन्]

जी० ३।४४६, ४५४, ४५७, ४७८, ५२३, ५२६,
५३७, ५४४, ५५१, ५५६

अणुप्पविट्ट [अनुप्रविष्ट] रा० १२२, १२३

√अणुप्पविस [अनु+प्र+विश]—अणुप्पविसति

रा० ७५५. जी० ३।४४३

अणुप्पविसमाण [अनुप्रविशत्] जी० ३।१११

अणुप्पविसिता [अनुप्रविश्य] रा० ७५५.

जी० ३।४४३

अणुप्पविसिताणं [अनुप्रविश्य] रा० १२३

√अणुप्पेह [अनु+प्र+ईह]—अणुप्पेहति
ओ० ४५

अणुप्पेहा [अनुप्रेक्षा] ओ० ४२, ४३

अणुबद्ध [अनुबद्ध] जी० ३।११६, १२६

अणुबन्ध [अनुदम्भट] जी० ३।५६७

अणुभाव [अनुभाव] जी० ३।१२६।६; ८३८।१६

अणुमय [अनुमत] ओ० ११७. रा० ७५० से
७५३, ७६६. जी० १।१; ३।५६७

अणुयत्तेमाण [अनुवर्तमान] रा० १६

अणुरत्त [अनुरक्त] ओ० १५. रा० ६७२

अणुराग [अनुराग] ओ० ६६, १२०, १६२.
रा० ६६८, ७५२, ७८६

√अणुलिप [अनु+लिप्]—अणुलिपइ

रा० २६१. जी० ३।४५७.—अणुलिपति
रा० २८५. जी० ३।४५१

अणुलिपइत्ता [अनुलिप्य] रा० २६१

अणुलिपित्तर [अनुलेपुम्] ओ० ११०, १३३

अणुलिपित्ता [अनुलिप्त] रा० २८५.
जी० ३।४५१

अणुलित्त [अनुलिप्ज] ओ० ४७, ६३

अणुलिहंत [अनुलिहत्] ओ० ६४. रा० ५०, ५२,
५६, १३७, २३१, २४७. जी० ३।३०७, ३६३

अणुलेवण [अनुलेपन] ओ० ४७, ७२

अणुवएस [अनुपदेश] रा० ७६५

अणुवत्तेमाण [अनुवर्तमान] रा० १६

अणुवाय [अनुवात] रा० ३०. जी० ३।२८३

अणुवाहणग [अनुपानत्क] रा० ८१६

अणुविद्ध [अनुविद्ध] रा० २६२. जी० ३।४५७

अणुबीद् [अनुबीचि] जी० १।१

अणुवैलम्बर [अनुवैलम्बर] जी० ३।७४७ से ७५०

अणुव्यय [अणुव्यय] ओ० ७७

√अणुसज्ज [अनु+सज्ज]—अणुसज्जति

अणोवमा (दे) खाद्यविशेष

अणुसज्जणा [अनुसज्जना] जी० ३।२१८, ६३१

अणुसार [अनुसार] जी० ३।७७

√अणुहो [अनु+भू]—अणुहोति ओ० १६५।२१

अणूण [अनूत] जी० ३।८३८, २७

अणोग [अनेक] ओ० १, ५ से ८, १०, १६, ४६, ६३,
७१, १६५. रा० ७, १७, १८, २४, ३२, ५२, ५६,
६१, ६६, १७४, २०६, २११, २३१, २४७, ७५४,
७५६, ७६२, ७६४. जी० ३।११८, ११६, २५६,
२७४ से २७७, २८६, ३७२, ३७४, ३६३, ५८१,
५८५ से ५८६, ६३६, ६४६, ६७३, ६७४, ७५६,
८८४, ८८८

अणोगजीव [अनेकजीव] जी० १।७१

अणोगवासपरियाय [अनेकवर्षपर्याय] ओ० २३

अणोगविध [अनेकविध] जी० २।१०३

अणोगविह [अनेकविध] ओ० ३२ से ३६.

जी० १।६, ६५, ७१ से ७३, ७८, ८१, ८४, ८८,

८९, १०७, १०८, ११२, ११४, ११५; २।६

अणोगसिद्ध [अनेकसिद्ध] जी० १।८

अणोगाढ [अनेकगाढ] जी० १।४२

अणोवघसिय [अनवघसित] जी० ३।३२२

अणोवम [अनुपम] ओ० १६५।१७, २२.

अणोवमा [दे०] खाद्यविशेष जी० ३।६०१

अणोवाहणम् [अनुपान्तक] ओ० १५४, १६५, १६६

अण्ण [अन्य] ओ० १७, २३, ५२, ७६ से ८१.

रा० ४०, ५६, ५८, १३२, १८५, २०५ से २०८,

२४०, २७६, २८०, २८२, २८६, २९१, ६५७,

६८७, ६८८, ७०४, ७४८ से ७६४, ७७१ से

७७३, ८०३, ८०४. जी० १।५०, ६५, ७१ से

७३, ७८, ८१, ८४, ८८, १००, १०३, १११, ११२,

११४ से ११६, ११८, १२१; ३।२६७, ३०२,

३१३, ३५०, ३५१, ३६८ से ३७१, ३८८, ३९०,

४०२, ४४२, ४४६, ४४८, ४५५, ४५७, ५५७,

५६३, ५६६, ६३७, ६३८, ६५२, ६५८ से ६६०,

६६५, ६६६, ६७६, ७१०, ७१३, ७२१, ७३६,

७४७, ७६०, ७६१, ७६३ से ७६६, ७६८, ७७०

से ७७४, ८००, ८१४, ८४३, ८४६, ८१७, १०२५

अण्ण [अन्न] ओ० १४६, १५०. रा० ८१०, ८११

अण्णउत्थिय [अन्ययूथिक] ओ० १३६.

जी० ३।२१०, २११

अण्णगिलाधय [अन्तर्गलायक] ओ० ३४

अण्णजीविय [अन्यजीविक] रा० ७३३, ७३४, ७३६

अण्णत्त [अन्यत्व] रा० ७६२, ७६३

अण्णत्थ [अन्यध] ओ० ८६ जी० ३।७२१

अण्णमण्ण [अन्योन्य] ओ० ५२, ११७, ११८.

रा० १६, ४०, १३२, १३३, ६८७, ७१३, ७७४.

जी० ३।२२, २७, ११०, १११, २६५, ३०३, ६२०,

६२५, ८४५

अण्णयर [अन्यतर] ओ० २८, ७२, ८६ से ८३,

१०५, १०६, १२८, १२९, १८६. रा० ७५० से

७५३, ७६६. जी० १।३३३; ३।२३६

अण्णया [अन्यदा] ओ० ११६. रा० ६८०

अण्णल्लिसिद्ध [अन्यलिङ्गसिद्ध] जी० १।८

अण्णविहि [अन्नविधि] ओ० १४६

अण्णाण [अज्ञान] ओ० ४६. जी० १।१०१, १२८;

३ १५२

अण्णाणदोस [अज्ञानदोष] ओ० ४३

अण्णाणि [अज्ञानिन्] जी० १।३०, ८७, ६६, ११६,

१३३, १३६; ३।१०४, १५२, ११०७, ११०८;

६।३०, ३२, ३५, १४३, १५६, १६४ से १६६

अण्णाणिय [अज्ञानिक] जी० ६।३४

अण्णायचरय [अज्ञातचरक] ओ० ३४

अण्णोण्ण [अन्योन्य] ओ० १६५।६

√अण्ह [आ+स्नु]—अण्हति ओ० ८४

अण्हयकर [आसनवकर] ओ० ४०

अण्ह्याणम् [अस्नानक] ओ० ८६, ८२. रा० ८१६

अण्ह्याणय [अस्नानक] ओ० १५४, १६५, १६६

अति [अयि] रा० १२१, ६६८

√अतिवकम [अति + कम्] — अतिवकमइ

जी० ३८३८, १६

अतित्यगरसिद्ध [अतीर्थकरसिद्ध] जी० ११८

अतित्यसिद्ध [अतीर्थसिद्ध] जी० १८

अतिदूर [अतिदूर] रा० ६०, ६६२, ७१६

अतिमद्विष्य [अतिमृत्तिक] रा० १२, २८१.

जी० ३१४४७

अतिमुत्तग [लया] [अतिमुक्तकलता]

जी० ३२२६८

अतिमुत्तमंडवग [अतिमुक्तमण्डपक]

जी० ३२२६६

अतिमुत्तलयामंडवग [अतिमुक्तलतामण्डपक]

रा० १८४

अतिमुत्तलयामंडवय [अतिमुक्तलतामण्डपक]

रा० १८५

अतिरस [अतिरस] जी० ३१५६२

अतिरेग [अतिरेक] रा० २८५. जी० ३१४५१,

५६७, ७२३, ७३०, ७३२

√अतिवय [अति + वज्] — अतिवयति

जी० ३१२६

अतिहिसंविभाग [अतिधिसंविभाग] ओ० ७७

अतीत [अतीत] ओ० १६८

अतीव [अतीव] रा० ४०, १३५, २३६.

जी० ३१२६५, ३०२, ३०३, ३०५, ३१३, ३६८,

५८१, ५६६

अतुरिय [अतुरित] रा० १२

अतुल [अतुल] ओ० १६५१२२

अत्तगवेत्तणया [आर्तगवेत्तणता] ओ० ४०

अत्तय [आत्मज] रा० ६७३

अत्तुक्कोसिय [आत्मोत्कर्षिक] ओ० १५६

अत्थ [अर्थ] ओ० ३७. रा० १५, २६२, ७३७,

७७४. जी० ३१२५०, ४५७

अत्थ [अस्त] जी० ३११७६, १७८, १८०, १८२

अत्थओ [अर्थतम्] ओ० ४६. रा० ८०६, ८०७

अत्थणिउर [अर्थनिकुर] जी० ६१८४१

अत्थत्थिय [अर्थार्थिक] ओ० ६८

अत्थमणत्थमणपविमत्ति [अस्तमनास्तमनप्रविमत्ति]

रा० ८६

अत्थरग [आस्तारक] रा० ३७. जी० ३१३११

अत्थसत्थ [अर्थशास्त्र] रा० ६७५

अत्थि [अर्थिन्] रा० ७७४

अत्थि [अस्ति] ओ० ७१. जी० ३१२२

अत्थिभाव [अस्तिभाव] ओ० ७१

अत्थिय [अस्थिक] जी० ११७२

अदंतमणग [दे० अदन्तधावनक] रा० ८१६

अदंतवणय [दे० अदन्तधावनक] ओ० १५४,

१६५, १६६

अदक्ख [अदक्ष] रा० ७५८, ७५९

अदत्तादाण [अदत्तादान] ओ० ७१, ७६, ७७

अदत्तादाणवेरमण [अदत्तादानविरमण] ओ० ७१

अद्विगुलाभिय [अद्विगुलाभिक] ओ० ३४

अद्विण्ण [अदत्त] ओ० १११ से ११३, ११७, १३७,

१३८

अद्विण्णादाण [अदत्तादान] ओ० ११७, १२१, १६१,

१६३. रा० ६६३, ७१७, ७६६

अदुत्तरं [दे०] जी० ३१२३६

अदुवा [दे०] जी० ३१२२७

अद्वुरसामंत [अद्वुरसामन्त] ओ० ५२, ६६, ७०, ८२.

रा० १२३, ६८७, ६८२, ७१६, ७३१, ७३६,

७४८, ७७१

अद् [आर्द्र] ओ० ४७

अद्धारिद्ध [आर्द्रारिष्ट] रा० २५. जी० ३१२७८

अद् [अर्ध] ओ० १७०. रा० ४०, १२८, १४६,

१८८, १८९, २०५ से २०८, २२७, २३१, २४७,

६६८, ६६९, ६८३, ७०६, ७११, ७७२.

जी० २१३८, ३६, ४१, ४२; ३१८२, १०७, २३८,

२४७, २५०, २५६, २६०, २६२, २६३, ३००,

३१०, ३१३, ३५२ से ३५४, ३५६, ३६१ से

३६४, ३६८ से ३७१, ३७७, ३८३, ३८६, ३८२,

३८३, ४०१, ४०४, ४०६, ४०८, ४२२, ४२७,

५६६, ५६८ से ५७०, ५६४, ५६६, ६३४, ६४२,

६४४, ६४६, ६५२, ६५३, ६५५, ६७२ से ६७४,
 ६७६, ६८३, ६८५, ७०६, ७०८, ७११, ७२७,
 ७३२, ७३७, ७५६, ७५८, ८००, ८१४, ८२५,
 ८५१, ८३६, ८४४, १०१२ से १०१४, १०२८,
 १०३०, १०३२, १०३३, १०७४, ११२४
 अद्धकविटु [अर्धकपित्थ] जी० ३।१००८
 अद्धकविटुक [अर्धकपित्थक] जी० ३।२५७
 अद्धकाय [अर्धकाय] जी० ३।३२२
 अद्धचंद [अर्धचन्द्र] रा० १२४, १३०, १३७.
 जी० ३।३००, ३०७, ५७७
 अद्धच्छि [अर्धशि] रा० १३३. जी० ३।३०३
 अद्धछट्टु [अर्धषष्ठ] जी० ३।४३
 अद्धट्टम [अर्धाष्टम] ओ० १४३. रा० ८०१.
 जी० ३।३६३, ४०१, ६३२
 अद्धट्टारस [अर्धाष्टादशन्] जी० ३।१०५२
 अद्धणवम [अर्धनवम] जी० ३।१०४६
 अद्धतेरस [अर्धत्रयोदशन्] ओ० ५४. रा० १२६,
 १७०. जी० ३।१६६, ३५२, ३७२, ३७४, ३७६,
 ३६५, ४१२, ४२५, ६६८
 अद्धनवम [अर्धनवम] जी० ३।१०४६
 अद्धनाराय [अर्धनाराय] जी० १।११६
 अद्धपंचम [अर्धपञ्चम] जी० २।३६; ३।४२, ४७,
 २४२, ४०२, १०४६, १०४७
 अद्धमागह [अर्धमागध] जी० ३।५६४
 अद्धमागहा [अर्धमागधी] ओ० ७१ रा० ६१
 अद्धमास [अर्धमास] जी० ३।११८, १२६
 अद्धमासपरियाय [अर्धमासपर्याय] ओ० २३
 अद्धमासिय [अर्धमासिक] ओ० ३२
 अद्धसेलसुट्टिय [अर्धशैलसुत्थित] जी० ३।५६४
 अद्धसोलस [अर्धषोडशन्] जी० ३।३६८, ३६६,
 १०५१
 अद्धाहार [अर्धहार] ओ० ५२, ६३, १०८, १३१
 रा० ४०, १३२, २८५, ६८७, से ६८६. जी०
 ३।२६५, ३०२, ४५१, ५६३
 अद्धा [अद्धा, अध्वन्] ओ० ११६, ११७, १८२ से

१८४, १६५।१४, १५, २२. रा० ७६५, ७७४
 अद्धाडय [अन्वागुष्क] जी० ३।२१४
 अद्धाडय [अर्धाडिक] ओ० ११२, १३७
 अद्धाण [अध्वन्] ओ० ६६, १२२
 अद्धासमय [अध्वसमय] जी० १।४
 अद्धुट्टु [दि०] जी० ३।१०७, २३७, २४२, २४३
 अद्धुव [अध्वुव] ओ० २३
 अद्धेकूणजति [अर्धैकोननवति] जी० ३।७५४
 अद्धेकोणजड [अर्धैकोननवति] जी० ३।७६२
 अद्धेकोणजति [अर्धैकोननवति] जी० ३।७६८
 अधण [अधन्य] रा० ७७४
 अधम्म [अधर्म] रा० ६७१
 अधम्मकेड [अधर्मकेतु] रा० ६७१
 अधम्मकखाइ [अधर्मखायाति] रा० ६७१
 अधम्मत्थिकाय [अधर्मस्तिकाय] रा० ७७१.
 जी० १।४
 अधम्मपलज्जण [अधर्मप्रज्जन] रा० ६७१
 अधम्मपलोइ [अधर्मप्रलोकिन्] रा० ६७१
 अधम्मसीलसमुदाचार [अधर्मसीलसमुदाचार]
 रा० ६७१
 अधम्माणुय [अधर्माणुग] रा० ६७१
 अधम्मिय [आधर्मिक] रा० ६७१, ७१८, ७५०, ७५१
 अधम्मिट्टु [अधर्मिष्ठ] रा० ६७१
 अधर [अधर] जी० ३।५६७
 अधिय [अधिक] जी० ३।३८७, ८७८
 अधे [अधस्] जी० ३।११११
 अधेसत्तमा [अधःसप्तमी] जी० २।१००, १०८,
 १२७, १३८, १४६; ३।२१, ३८, ४४, ४६, ४७,
 ५० से ५२, ५४ से ५६, ५८, ५९, ८३ से ८६, ८८
 से ९०, ९२, ९६, १०२, १०४, १०७, १०८, ११६,
 १२०, १२३, १२६
 अधेसत्तमी [अधःसप्तमी] जी० ३।१६६
 अन्न [अन्य] रा० ७
 अन्नविहि [अन्नविधि] रा० ८०६
 अपंडिय [अपण्डित] रा० ७३२, ७३७, ७६५
 अपच्छिम [अपश्चिम] ओ० ७७

अपञ्जत्त [अपर्याप्ति] रा० ७५६. जी० ११५१, ६३,
६५, १०१; ३१२६: ६, १३३, १३४; ४: २५;
५११७, २४, २६ से ३०, ३३, ३५, ३६, ३६ ४०,
४२, ४५, ४८, ५०, ५२, ५४ से ६०

अपञ्जत्तग [अपर्याप्तक] ओ० १८२. जी० ११४,
५८, ६७, ७३, ७८, ८१, ८४, ८८, ८९, ९२, १००,
१०३, १११, ११२, ११६, ११८, १२१, १२६, १३५;
३१३६, १३६, १४०, १४६; ४: २, ५, १८, २०,
२२, २३, २५; ५: ३, ४, ७, ११, १८ से २२, २५
ते २७, ३१ से ३४, ३६; ६: ६०, ६३, ६४

अपञ्जत्तय [अपर्याप्तक] जी० ११५५, १०१; ४: १०

अपञ्जति [अपर्याप्ति] जी० ११२७, ८६, ९६, १०१,
११६, १२८, १३३, १३६

अपञ्जवसित [अपर्यवसित] जी० ६१२३, २४, ६६,
८१, ८२, ९२, १०४, १२५, १७५, १९२, २०१, २४०

अपञ्जवसिय [अपर्यवसित] ओ० १८३, १८४, १९५.
जी० ६११० से १३, १६, २५, २६, ३१, ३३, ३४,
४५, ५४, ५८, ६०, ६५, ६८, ७१, ७२, ८६, ९८,
११०, ११६, १३३, १३५, १४५, १६३, १६४, १७४,
१७६, १८०, १९६, २०२, २०५, २०६, २१५, २१९,
२२७, २३०, २४६, २६१, २६५, २७६, २८५

अपञ्जिकूलमाण [अप्रतिकूलयत्] ओ० ६६

अपञ्जिकंत [अप्रतिक्रान्त] ओ० ६५, १५५, १५६

अपञ्जिवद्ध [अप्रतिबद्ध] ओ० ७४: ४

अपञ्जिविरय [अप्रतिविरत] ओ० १६१

अपढम [अप्रथम] जी० ११६; ७: १, ३, ५, १०, १२,
१४, १६, १८, २१ से २३; ६: १ से ७, २३२,
२३४, २३६, २३८, २४२, २४४, २४६, २४८,
२५१ से २५३, २५५, २६७, २६९, २७१, २७३,
२७६, २७८, २८०, २८२, २८५, २८७ से २९३

अपतिट्टाण [अप्रतिष्ठाण] जी० ३१२

अपत्तट्ठ [अप्राप्तार्थ] रा० ७५८, ७५९

अपद [अपद] जी० ३१९६

अपराइत्त [अपराजित] जी० ३१९४१

अपराइय [अपराजित] जी० ३१५६६

अपराजित [अपराजित] जी० ३१९१, २९६, ७०७,
७१३, ८२४

अपराजिय [अपराजित] ओ० १९२. जी० ३१७६६,
८१३

अपराजिया [अपराजिता] जी० ३६१६, १०२६

अपरिगह [अपरिग्रह] ओ० १६३

अपरितावणकर [अपरितापनाकर] ओ० ४०

अपरित [अपरीत] जी० ११६७, ७४; ६: ७५, ७६,
८७

अपरिपूय [अपरिपूत] ओ० १११ से ११३, १३७,
१३८

अपरिभूय [अपरिभूत] ओ० १४१. रा० ६७५,
७६६

अपरिमिय [अपरिमित] ओ० ४६, ७१. रा० ६१

अपरियाइत्ता [अपर्यादाय] जी० ३१६६०

अपरियाविय [अपरितामित] जी० ३१६३०

अपरिवार [अपरिवार] रा० २०७, २६५, २६७,
२६९. जी० ३१४२८, ४३१, ४३४

अपरिसेसिय [अपरिशेषित] जी० ३१७५१

अपरिक्षीण [अपरिक्षीण] ओ० १७१

अपवरक [अपवरक] जी० ३१५६४

अपसत्थकायविणय [अप्रशस्तकायविनय] ओ० ४०

अपसत्थमणविणय [अप्रशस्तमनोविनय] ओ० ४०

अपसत्थवइविणय [अप्रशस्तवाक्विनय] ओ० ४०

अपस्समाण [अपश्यत्] ओ० ११७

अपात्तमाण [अपश्यत्] रा० ७६५

अपि [अपि] ओ० २३. रा० १६. जी० ११३४

अपुट्ठ [अस्पृष्ट] जी० ११४१

अपुट्ठलाभिय [अस्पृष्टलाभिक] ओ० ३४

अपुणरावत्तग [अपुनरावर्तक] ओ० १६, २१, ५४

अपुणरावत्तय [अपुनरावर्तक] रा० ८

अपुणरावित्ति [अपुनरावृत्ति, अपुनरावर्तिन्] रा०
२६२. जी० ३१४५७

अपुणक्त [अपुनक्त] रा० २६२, जी० ३१४५७

अपुण्य [अपूर्ण] रा० ७६३

अपुण्य [अपुण्य] रा० ७७४

अपुरोपुह्य [अपुरोहित] जी० ३।११२०

अपुव्य [अपूर्व] जी० १।५०

अपूह^१ [अपोह] ओ० ११६, १५६

अपेज्ज [अपेय] जी० ३।७२१

अप्य [अल्प] ओ० २०, ५३, ६१ से ६३. रा० १२,

६८५, ६६२, ७००, ७१६, ७२६, ७५३, ७५८,

७५६, ७७२, ७७४, ८०२. जी० १।१४३; २।६८

से ७२, ७५, ६६, १३४ से १३८, १४१ से १४६;

३।११८, ६६५, १०३७, ११३८; ४. १६, २२,

२५; ५।१६, २०, २६, २७, ३२ से ३६, ५२,

५६, ६०; ७।२०, २२, २३; ६।७, १४, ५५,

२५० से २५३, २५५ २८६ से २८३

अप्य [आत्मन्] ओ० २१ से २६, ४५, ५२, ७१, ८२,

८६, ६४, ६८, १२०, १४०, १५४, १५५, १५७,

१६०. रा० ८, ६, २८५, ६८६, ६८७, ६८६, ६६८,

७११, ७१३, ७१६, ७५२, ७५३, ७८७, ७८६,

८१४, ८१६, ८१७. जी० ३।५६६, ६४४

अप्यकंष [अप्रकम्प] ओ० २७. रा० ८१३

अप्यकन्मताराय [अल्पकर्मतरक] रा० ७७२

अप्यकिरियतराय [अल्पकिरातरक] रा० ७७२

अप्यकोह [अल्पकोष] ओ० ३३

अप्यगति [अल्पगति] जी० ३।११२०

अप्यज्जुहतराय [अल्पजुहिततरक] रा० ७७२

अप्यज्ञंक्ष [अल्पज्ञंक्ष] ओ० ३३

अप्यङ्गिकम्प [अप्रतिकर्मन्] ओ० ३२

अप्यङ्गिबद्ध [अप्रतिबद्ध] ओ० २६

अप्यङ्गिलेस [अप्रतिषेय] ओ० २५

अप्यङ्गिलोमया [अप्रतिलोमता] ओ० ४०

अप्यङ्गिवाड [अप्रतिपातिन्] ओ० ४३

अप्यङ्गिह्य [अप्रतिहत] ओ० १६, २१, २७, ५४, ८४,

८५, ८७, ८८, रा० ८, २६२, ७५५, ७५७, ८१३.

जी० ३।४५७

अप्यणया [आत्मन्] जी० १. ५०, ६६

अप्यतर [अल्पतर] ओ० ८६

अप्यतराय [अल्पतरक] रा० ७७२

अप्यतिट्टाण [अप्रतिष्ठान] जी० ३।११७

अप्यवुस्तमाण [अप्रविषत्] रा० ७६६

अप्यनीसासतराय [अल्पनिःश्वासतरक]

रा० ७७२

अप्यनीहारतराय [अल्पनीहारतरक] रा० ७७२

अप्यपरिग्गह [अल्पपरिग्रह] ओ० ६१ से ६३,

१६१, १६३

अप्यबहु [अल्पबहु] जी० २।१५१; ४।२५

अप्यबहुय [अल्पबहुक] जी० ६।६

अप्यमत्त [अप्रमत्त] ओ० २७ रा० ८१३

अप्यमहतराय [अल्पमहतरक] रा० ७७२

अप्यमाण [अल्पमान] ओ० ३३

अप्यमाय [अल्पमाय] ओ० ३३

अप्यलोह [अल्पलोभ] ओ० ३३

अप्यसद् [अल्यशब्द] ओ० ३३

अप्याण [आत्मन्] जी० ३।१६८ से २०६, ४५१

अप्याबहु [अल्पबहु] जी० ४।२२; ७।२१; ६।३७

अप्याबहुग [अल्पबहुक] जी० ५।२५, ७।२०;

८।५; ६।२७

अप्याबहुय [अल्पबहुक] जी० २।६४, ५।१८, ३१;

६।१२, ६।१७, २०, ३५, ६१, ६६, ७४, ८७, ६४,

१००, १०८, ११२, १२०, १३०, १४०, १४७,

१५५, १५८, १६६, १६६, १६९, १८४, १६६,

२०८, २२०, २३१ २५४, २६६.

अप्यारंभ [अल्पारम्भ] ओ० ६१ से ६३, १६१, १६३

अप्यासवतराय [अल्पाश्रवतरक] रा० ७७२

अप्याहार [अल्पाहार] ओ० ३३

अप्याहारतराय [अल्पाहारतरक] रा० ७७२

अप्यिच्छ [अल्पेच्छ] ओ० ६१ से ६३ जी० ३।५६८

अप्यिद्धितराय [अल्पिद्धितरक] रा० ७७२

अप्यिद्धिय [अल्पिद्धिक] जी० ३।१०२१

अप्यिय [अप्रिय] रा० ७६७ जी० १।६५; ३।६२

अप्यियतरक [अप्रियतरक] जी० ३।८४

अप्युस्तासतराय [अल्पोच्छ्वासतरक] रा. ७७२

अप्युस्तुय [अल्पोस्तुय] ओ० १६४

१. वृत्ती—वूह [व्यूह] इति व्याख्यातमस्ति ।

अप्पेस [अप्पेस्य] जी० ३।११२०

अप्पोसुय [अप्पोत्सुय] ओ० २५

√अप्फाल [आ+स्फाल्]—अप्फालेइ ओ० ५६

अप्फालिउजमाण [आस्फाल्यमान] रा० ७७

अप्फालेत्ता [आस्फाल्य] ओ० ५६

अप्फुडिय [अप्फुटित] ओ० १६ जी० ३।५६६

√अप्फोड [आ+स्फोट्य]—अप्फोडेति रा०

२८१ जी० ३।४४७

अप्फोत्तामंडवग [दे० अप्फोयामण्डपक] जी०

३।२६६

अप्फोयामंडवग [दे० अप्फोयामण्डपक] जी० १८४

अप्फोयामंडवग [दे० अप्फोयामण्डपक] रा० १८५

अफदस [अफदष] ओ० ४०

अफुसमाणगइ [अप्पुषादगति] ओ० १८२

अबद्धिय [अबद्धिक] ओ० १६०

अबहिल्लेस [अबहिल्लेस्य] ओ० २५, १६४

अबहुप्पसण्ण [अबहुप्पसन्न] ओ० १११ से ११३,

१३७, १३८

अबाधा [अबाधा] जी० २।१३६; ३।३३ से ३६,

६० से ६३, ६५, ६६, ६८, से ७२, ३००,

५६६, ५७०, ६६२, ६६१, ७१४, ८२७, १०२२

अबाहा [अबाधा] ओ० १६२. रा० १७०.

जी० २।७३, ६७; ३।६६, ३५८, ५६६,

६३६, ७१४, ८०२, ८१५, ८२७, ८५२,

१००१ से १००६, १०२२

अबाहूणिग्या [अबाधोनिगा] जी० २।७३, ६७,

१३६

अबभ [अभ्र] ओ० १६. जी० ३।५६७, ६२६

अबभंतर [अभ्यन्तर] ओ० १७०. जी० ३।८३८।१२

अबभंतरय [अभ्यन्तरक] जी० ३।८६, २६०. ६८१

अबभक्खाण [अभ्याख्यान] ओ० ७१, ११७, १६१,

१६३. रा० ७६६

अबभक्खाणविवेग [अभ्याख्यानविवेक] ओ० ७१

अबभणुणाय [अभ्यनुज्ञात] रा० ११, ५६

अबभरुक्ख [अभ्ररुक्ख] जी० ३६२६

अबभवहूतय [अभ्रवादलक] रा० १२, १२३

अबभहिय [अभ्यधिक] ओ० ६५, ६४, ६५.

जी० २।३६, ४१, ४८, ४६, ५३ से ५५, ५७ से

६१, ६६, ८३, ८४, १२६; ३।१०२७ से १०३०,

११३५; ४।१६; ५।१०, २६; ६।६; ७।१२,

१३; ६।४, १७२, १७६, १८६ से १६१, १६३,

२०३, २१२, २२५, २२८, २३८, २४१, २७३, २७७

अबभासवतिय [अभ्यासवर्तित] ओ० ४०

अबिभंग [अभ्यङ्ग] ओ० ६३

अबिभगण [अभ्यङ्गन] ओ० ६३

अबिभमिय [अभ्यञ्जित] ओ० ६३

अबिभंतर [आभ्यन्तर] ओ० ६, ३०, ५५, ६० से ६२.

रा० ४३. जी० ३।२३६, २५५, २७५, ४४७,

६४३, ६५८, ७६६, ७६७, ७७५, ८३१ से ८३४,

१०५५

अबिभंतरय [आभ्यन्तरक] ओ० ३०, ३८, ४४.

जी० ३।६५८

अबिभंतरिय [आभ्यन्तरिक] रा० ६६०, ६८३.

जी० ३।२३५ से २३६, २४१ से २४३, २४६,

२४७, २४६, २५०, २५४ से २५६, २५८, ३४१,

५६०, ७३३, १०४० से १०४२, १०४४, १०४६,

१०४७, १०४६, १०५३, १०५५

अबिभंतरिल्ल [आभ्यन्तरिक] जी० ३।१००७

√अबभुक्ख [अभि+उक्]—अबभुक्खइ

जी० ३।४७०—अबभुक्खति जी० ३।४५८—

अबभुक्खेइ रा० २६३—अबभुक्खेति

जी० ३।४६०

अबभुक्खित्ता [अभ्युक्ष्य] जी० ३।४५८

अबभुक्खेत्ता [अभ्युक्ष्य] रा० २६३. जी० ३।४६०

अबभुगत [अभ्युद्गत] जी० ३।३०२, ३५६, ३६८,

३७०, ६३४, १००८

अबभुगय [अभ्युद्गत] ओ० ६७. रा० ३२, १३२,

१३७, १८६, २०४ से २०६, २०८. जी० ३।३०७

३५५, ३६४, ३६६, ३७१, ३७२, ५६७, ६७३

√अबभुदु [अभि+उत्+ष्ठा]—अबभुदुइ

ओ० २१. रा० न. जी० ३।४४३—अब्भुट्ठेति
 रा० २७७ जी० ३।४५४ अब्भुट्ठेमि. रा० ६६५
 अब्भुट्ठाण [अभ्युत्थान] ओ० ४०
 अब्भुट्ठिय [अभ्युत्थित] ओ० २६
 अब्भुट्ठेत्ता [अभ्युत्थाय] ओ० २१. रा० न.
 जी० ३।४४३ ।
 अब्भुण्णय [अभ्युन्नत] रा० १३३. जी० ३।३०३,
 ५६७
 अब्भुय [अद्भुत] रा० ७८
 अभयदय [अभयदय] ओ० १६, २१, ५४.
 रा० न, २६२. जी० ३।४५७
 अभवसिद्धि [अभवसिद्धिक] रा० ६२.
 जी० ६।१०६ से ११२
 अभासग [अभावक] जी० ६।५६, ६०, ६१
 अभासय [अभावक] जी० ६।५८
 अभिह [अभिजित्] जी० ३।८३, ३२, १००७
 अभिक्खणं [अभीक्षणम्] रा० १७३. जी० ३ २८५
 अभिक्खलाभिय [अभिक्षालाभिक] ओ० ३४
 √अभिगच्छ [अभि+गम्]—अभिगच्छइ
 ओ० ६६. रा० ७१६—अभिगच्छंति
 ओ० ७०.—अभिगच्छामो रा० ७३५
 अभिगच्छणया [अभिगमन] ओ० ४०
 अभिगम [अभिगम] ओ० ६६, ७०. रा० ७७८
 अभिगमण [अभिगमन] ओ० ५२. रा० ६, १२,
 ४७, ६८७. जी० ३।८४१
 अभिगमणिज्ज [अभिगमनीय] रा० ७०३, ७३५
 अभिगय [अभिगत] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,
 ७५२, ७८६
 अभिगिज्ज [अभिगृह्य] जी० ३।५६२
 अभिघट्टिज्जमाण [अभिघट्टयमान] रा० १७३.
 जी० ३।२८५
 अभिणंदंत [अभिनन्दत्] ओ० ६८
 अभिणंदिज्जमाण [अभिनन्दयमान] ओ० ६६
 अभिणय [अभिनय] रा० ११७, २८१. जी०
 ३।४४७
 अभिणिवट्टित्ताण [अभिनियत्य] रा० ७७०

अभिणिसिट्ठ [अभिनिसृष्ट] रा० १३२ जी०
 ३।३०२
 √अभिणिस्सव [अभि+निर्+सृ]—
 —अभिणिस्सवन्ति, रा० १७३. जी० ३।२८३
 √अभिणी [अभि+नी]—अभिणयन्ति रा० २८१.
 जी० ३।४४७—अभिणिज्जइ रा० ७८३—
 अभिणोति रा० ११७
 अभित्युणंत [अभिष्टुवत्] ओ० ६८
 अभिद्युवमाण [अभिष्टूयमान] ओ० ६६
 अभिद्वुय [अभिद्वुत] जी० ३।१२६. ७
 √अभिनिस्सव [अभि+निर्+सृ]—अभिनिस्स-
 वन्ति रा० ३०
 अभिमुह [अभिमुख] ओ० ४७, ५२, ६६, ७०, ८३.
 रा० ६०, ६८७, ६६२, ७१४, ७१६
 अभिराम [अभिराम] ओ० २, ५५, ५७, ६३. रा०
 ६, १२, १७, १८, २०, ३२, ३७, ५२, ५६, १२६,
 १३२, २३१, २३६, २४७, २८६. जी० ३।२८८,
 ३००, ३०२, ३११, ३७२, ३६३, ३६८, ४४७,
 ५८६
 अभिरुव [अभिरूप] ओ० १, ७, ८, १० से १३, १५,
 ७२, १६४. रा० १, १६ से २३, ३२, ३४, ३६ से
 ३८, १२४, १३०, १३३, १३६, १३७, १४५, १५७,
 १७४, १७५, २२८, २३१, २३३, २४५, २४७, २४६,
 ६६८, ६७०, ६७२, ६७६, ७००, ७०२. जी०
 ३।२३२, २६१, २६६, २६६, २७६, २८६ से
 २८८, २९०, ३३०, ३०३, ३०६, ३०७, ३११,
 ३८७, ३६३, ४०७, ४१०, ५८१, ५८४, ५८५,
 ५८६, ५८७, ६३६, ६७२, ८५७, ८६३, ११२१,
 ११२२
 √अभिलस [अभि+लष्]—अभिलसइ रा० ७१३
 —अभिलसन्ति ओ० २०. रा० ७१३
 अभिलाव [अभिलाप] जी० ३।४, ५, १२, ४१, ४३,
 ४४, ७७, ८८, १२५, २२६, ४५१
 अभिवंदए [अभिवन्दितुम्] ओ० ५५. रा० १३
 अभिवंदया [अभिवन्दितुम्] ओ० ६२

अभिसमण्णागय [अभिसमन्नागत] रा० ६३, ६५,
६६७, ७६७

√अभिसमागच्छ [अभि+सं+आ+गम्]

—अभिसमागच्छइ रा० ७१६.

—अभिसमागच्छति रा० ७५३

√अभिसिच [अभि+सिच्]—अभिसिचति रा०
२८०. जी० ३।४४६

अभिसिचित्ता [अभिषिच्य] रा० २८२. जी०
३।४४८

अभिसित्त [अभिषित्त] रा० २८३. जी० ३।४४६

अभितेक [अभिषेक] जी० ३४३६

अभितेगसभा [अभिषेकसभा] रा० २६५, २६७

अभितेय [अभिषेक] ओ० ६८. रा० २६६, ४७५.
जी० ३।४४७, ५३४, ५६७

अभितेयसभा [अभिषेकसभा] रा० २७७, २७९,
२८३, ४७४, ४७६, ४७७, ४८६, ५१४, ५१५.

जी० ३।४२६, ४३०, ४३१, ४३४, ४४३, ४४५,
४४६, ५५३, ५३५ से ५३६

अभिहृत् [अभिहृत] ओ० १३४

अभिहणमाण [अभिघ्नत्] जी० ३।११०

अभिहय [अभिहत] जी० ३।११८, ११९

अभूओवघाडय [अभूतोपघातिक] ओ० ४०

अमेत्ता [अमित्वा] जी० ३।६६०

अमेयकर [अमेदकर] ओ० ४०

अमच्च [अमात्य] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६,
७६२, ७६४

अमच्छरियया [अमत्सरिकता] ओ० ७३

अमणाम [दे० अमन 'आप'] रा० ७६७. जी०
१।६५; ३।६२, १२२, १२३, १२८

अमणामतरक [दे० अमन 'आप' तरक] जी०
३।८४, ८५

अमणुण [अमनोज्ञ] ओ० ४३. रा० ७६७.
जी० १।६५; ३।६२

अमणुणतरक [अमनोज्ञतरक] जी० ३।८४

अमत्त [अमृत] जी० ३. ३१२, ४१७

अमम [अमम] ओ० २७. रा० ८१३. जी० ३।६३१

अमम्मण [अमन्मत्त] ओ० ७१. रा० ६१

अमय [अमृत] रा० ३८, १६०, २२२, २५६. जी०
३।३३३, ३८१, ३८७, ८६४

अमयरत्त [अमृतरत्त] रा० २२८. जी० ३।२८६

अमर [अमर] ओ० ४६, १६५।२०. रा० ५१

अमरवह [अमरपति] ओ० ६४

अमलगंधिय [अमलगन्धिक] ओ० १२. रा० २२

अमलगंधीय [अमलगन्धिक] जी० ३।२६०

अमला [अमला] जी० ३।६२१

अमाण [अमान] ओ० १६८

अमाय [अमाय] ओ० १६८

अमिय [अमृत] ओ० १६५।१८

अमेहावि [अमेधाविन्] रा० ७५८, ७५९

अमोह [अमोघ] जी० ३।६२६, ८४१

अमोहा [अमोघा] जी० ३।६६६, ६१०

अम्मड [अम्बड] ओ० ११५, ११७ से १४१

अम्मापिड [अम्बापितृ] ओ० १४२, १४६

अम्मापिड [अम्बापितृ] ओ० १४७, १४९. रा०
८००, ८०७

अम्मापिडमुस्सुसग [अम्बापितृशुश्रूषक] ओ० ६१

अम्मापियर [अम्बापितृ] ओ० १४४, १४५. रा०
८०२, ८०३, ८०५, ८०८, ८१०

अम्ह [अस्मत्] रा० ८. जी० ३।४४१

अय [अयत्] रा० ७५४, ७५६, ७५७, ७७४

अयकोट्ट [अयःकोष्ठ] जी० ३।७८

अयगर [अजगर] जी० १।१०५, १०६; ३।६२५

अयगरी [अजगरी] जी० २।८

अयण [अयन] ओ० २८. जी० ३।८४१

अयपाय [अयस्पात्र] ओ० १०५, १२८

अयपिड [अयस्पिण्ड] जी० ३।११८, ११९

अयपुगल [अयस्पुद्गल] रा० ७७४

अयबंधण [अयोबन्धन] ओ० १०६, १२६

अयभंड [अयोभाण्ड] रा० ७७४

अयभार [अयोभार] रा० ७७४

अयभारग [अयोभारक] रा० ७६०, ७६१, ७७४

अयभारय [अयोभारक] रा० ७७४
 अयभारय [अयोहारक, अयोभारक] रा० ७७४, ७७५
 अयल [अचल] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३१४५७
 अयसकारण [अयसकारक] ओ० १५५
 अयसि [अतसी] ओ० १३, ४७. रा० २६. जी०
 ३१२७६
 अयहारय [अयोहारक, अयोभारक] रा० ७७४, ७७५
 अया [अजा] जी० ३१६१६
 अयागर [अयआकर] रा० ७७४, जी० ३११८
 अयोगि [अयोगिन्] जी० ६१११६
 अयोमय [अयोमय] जी० ३१११६
 अयोमुह [अत्रमुख] जी० ३१२१६
 अरह [अरति] ओ० ४६. जी० ३१२८१०
 अरहरह [अरतिरति] ओ० ७१, ११७, १६१, १६३
 रा० ७६६
 अरकमंडल [अरकमण्डल] रा० १७३, ६८१. जी०
 ३१२८५
 अरणि [अरणि] रा० ७६५
 अरति [अरति] जी० ३११२८
 अरतिरतिविवेक [अरतिरतिविवेक] ओ० ७१
 अरमणिज्ज [अरमणीय] रा० ७८१ से ७८७
 अरसाहार [अरसाहार] ओ० ३५
 अरह [अहं] रा० ७७१, ८१५, ८१७
 अरहंत [अहंत] ओ० २१, ४०, ५२, ५४, ७१, ११७,
 १३६. रा० ८, ११, ५६, २६२, ७१४, ७४६,
 ७६६. जी० ३१४५७, ७६५, ८४१
 अरि [अरि] जी० ३१६१२, ६३१
 अरिस [अशंस] जी० ३१६२८
 अरिह [अहं] ओ० ७१, १४७. रा० ६१, ७१४,
 ७७६, ८०८
 अरुण [अरुण] जी० ३१६२७, ६२८, ६५०
 अरुणपभ [अरुणप्रभ] जी० ३, ७४८, ७४६, ७५३
 अरुणमहावर [अरुणमहावर] जी० ३१६३०
 अरुणवर [अरुणवर] जी० ३१७७५, ६२६, ६३०

अरुणवरभद्र [अरुणवरभद्र] जी० ३१६२६
 अरुणवरमहाभद्र [अरुणवरमहाभद्र] जी० ३१६२६
 अरुणवरोद [अरुणवरोद] जी० ३१६३०, ६३१
 अरुणवरोभास [अरुणवरावभास] जी० ३१६३१,
 ६३२
 अरुणवरोभासभद्र [अरुणवरावभासभद्र] जी०
 ३१६३१
 अरुणवरोभासमहाभद्र [अरुणवरावभासमहाभद्र]
 जी० ३१६३१
 अरुणवरोभासमहावर [अरुणवरावभासमहावर]
 जी० ३१६३२
 अरुणवरोभासवर [अरुणवरावभासवर] जी० ३१६३२
 अरुणोद [अरुणोद] जी० ३१६२८, ६२६
 अरुय [अरुज] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३१४५७
 अरुवि [अरुपिन्] जी० ११३, ४
 असं [अलम्] ओ० १४८ रा० ८०६
 अलंकार [अलङ्कार] ओ० ६७, ७०, ६२, १४७,
 १६१, १६३. रा० १३, ५३, १७३, २८६, ६५७,
 ७१४, ७५१, ७६४, ८०२, ८०५, ८०८. जी०
 ३१२८५, ४४६, ४५५
 अलंकारिय [अलङ्कारिक] रा० २६८, २८४, ५३५.
 जी० ३१४३२, ५४१
 अलंकारियसभा [अलङ्कारिकसभा] रा० २६७,
 २६६, २८३, २८६, ५३४, ५३६, ५३७, ५५६,
 ५७४, ५७५. जी० ३१४३१, ४३३, ४३४, ४४६
 ४५२, ५४०, ५४२ से ५४६
 अलंकित [अलंकृत] जी० ४१४५२
 अलंकिय [अलङ्कृत] ओ० २०, ५३, ६३ रा०
 १३०, २८५, २८६, ६८५, ६८६, ६६२, ७००,
 ७१६, ७२६, ८०२. जी० ३१३००, ४५१
 अलभमाण [अलभमान] ओ० ११७
 अलाउपाय [अलाबुपाय] ओ० १०५, १२८
 अलाय [अलात] जी० ११७८; ३१८५
 अलियवयण [अलीकववन] ओ० ७३
 असेस [अलेश्य] जी० १११३३; ६१२६, १६५

अलेस्स [अलेश्य] जी० ६।१८५, १६२, १६६
 अलोय [अलोक] ओ० १६५।२
 अलोय [अलोक] ओ० ७१
 अलोह [अलोभ] ओ० १६८
 अल्लई [आर्द्रकी] जी० ३।२८१
 अल्लकी [आर्द्रकी] रा० २८
 अल्लीण [आलीन] ओ० १६, ६१ रा० ८०४.
 जी० ३।५६६ से ५६८, ७५५, ८४१
 अल्लीणया [आलीनता] ओ० ११६
 अवउडग [दे० अवकोटक] रा० ७५४, ७५६, ७६४
 अवंक [अवक] रा० ७६, १७३. जी० ३।२८५
 अवंग [अपाङ्ग] रा० १३३. जी० ३।३०३
 अवंगुयडुवार [दे० अपावृतद्वार] ओ० १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६
 अवक्कम [अप + कम्]—अवक्कमति रा० १०.
 जी० ३।८७—अवक्कमति रा० १८
 अवक्कमिस्ता [अपक्कम्य] रा०. १० जी० ३।४४५
 अवक्खेवण [अवक्षेपण] ओ० १८०
 अवगय [अपगत] ओ० ६३
 अवगाढ [अवगाढ] रा० ७७४
 अवज्झाणावरिय [अपक्षयानावरित] ओ० १३६
 अवट्ठित [अवस्थित] जी० ३।५६, ५६६
 अवट्ठिय [अवस्थित] ओ० १६. रा० २०० जी०
 ३।२७३, ३५०, ७६०, ८३८।११
 अवड्डु [अपार्ध] जी० २।६५, ८८, १३२;
 ३।८३६; ६।२३, २६, ३३, ६६, ७१, ७३, ७८,
 १४६, १६४, १६५, १७८, २०२, २०४
 अवड्ढुमोदरिय [अपार्धादिमोदरिक, उपार्धा०]
 ओ० ३३
 अवणद्ध [अवनद्ध] रा० ७६०, ७६१
 √अवणी [अप + नी]—अवणेमो रा० ७२६
 अवणीत्त [अपनीत्त] जी० ३।८७८
 अवणीयउवणीयचरय [अपनीतउपनीतचरक]
 ओ० ३४
 अवणीयचरय [अपनीतचरक] ओ० ३४

अवणेमाण [अपनयत्] रा० ७३२
 अवण्णकारग [अवर्णकारक] ओ० १५४
 अवतासिज्जमाण [अपत्रास्यमान] रा० ८०४
 √अवबाला [अव + दलय]—अवदालेइ ओ० १७०
 अवदालिय [अवदालित] ओ० १६
 अवदालेत्ता [अवदलय] ओ० १७०
 अवविणाणि [अवधिशानिन्] जी० ३।१०४, ११०७
 अवमाण [अपमान] रा० ८१६
 अवमाणण [अपमानन] ओ० ४६
 अवयंसग [अवतंसक] रा० १७३, ६८१
 अव्वर [अपर] रा० ४०, १३२, १६३, १६६
 जी० ३।२६५, २८५, ३५८, ५६५
 √अवरज्ज [अप् + गञ्]—अवरज्जइ रा० ७६७
 अवरणह [अपराह] रा० ६८५
 अवरत्त [अपरात्र] रा० १७३
 अवरविदेह [अपरविदेह] जी० २।२६, ५६, ७०,
 ७२, ८५, ६६, ११५, १२३, १३७, १३८, १४७,
 १४६; ३।४४५, ७६५
 अवरविदेहक [अपरविदेहक] जी० २।१३२
 अवरविदेहिया [अपरविदेहिका] जी० २।६५
 अवराहि [अपराधिन्] रा० ७५१
 अवरुत्तर [अपरोत्तर] रा० ४१, ६५८.
 जी० ३।३३६, ५५८, ६३५, ६५७, ६८०
 अवलंबण [अवलम्बन] रा० १६, १७५.
 जी० ३।२८७, ८६०
 अवलंबणवाहा [अवलम्बनवाहु] रा० १६, १७५.
 जी० ३।२८७
 अवलद्ध [अपलब्ध] ओ० १५४, १६५, १६६.
 रा० ८१६
 अवलि [अवलि] रा० २६ जी० ३।२८२
 अवलिया [अवलिका] रा० २५ जी० ३।२७८
 अवव [अवव] जी० ३।८४१
 अवसाण [अवसान] ओ० ६३
 अवसेस [अवशेष] ओ० ७२, ७६, १६७ रा०
 ४८, ५७, १६४ जी० १।५६, ६७; ३।२५०,
 ३४५, ३५६, ६३०, ६६४, ६६५, १०२६

अववहारि [अववहारिन्] रा० ७६६
 अवहट्टु [अपहृत्य] ओ० ६६
 अवहमाणय [अवहमानक] ओ० १११से ११३,
 १३७, १३८
 अवहार [अपहार] जी० ३१२७
 अवहित [अपहृत] जी० ३१६०
 अवहिय [अपहृत] जी० ३११०८५, १०८६
 √अवहीर [अप+हृ]—अवहीरन्ति जी० ३१६०
 अवहीरमाण [अपहृत्यमाण] जी० ३१६०, १०८६
 अवाईण [अवातीन, अवाचीन] ओ० ५, ८ जी०
 ३१२७४
 अवाउडय [अप्रावृतक] ओ. ३६
 अवाय [अवाय] रा० ७४०
 अवायविजय [अपायविचय] ओ० ४३
 अवायाणुप्पेहा [अपायानुप्रेक्षा] ओ० ४३
 अवि [अपि] रा० १२ जी० १११६
 अविओसरणया [अव्युत्सर्जन] ओ० ६६, ७०
 रा० ७७८
 अविग्गह [अविग्रह] ओ० १८२
 अविग्घ [अविघ्न] ओ० ६८
 अवित्तह [अवित्तथ] ओ० २६, ६६, ७२.
 रा० ६६६
 अविद्धत्थ [अविध्वस्त] जी० ३१११८
 अविप्पओण [अविप्रयोग] ओ० ४३
 अवियारि [अविचारिन्] ओ० ४३
 अविरत्त [अविरक्त] ओ० १५ रा ६७२
 अविरय [अविरत] ओ० ८४, ८५, ८७, ८८
 अविरला [अविरल] ओ० ५, ८, १६ जी०
 ३१२७४, ५६६, ५६७
 अविरहिय [अविरहित] जी० ३१८३८ १७
 अविराय [दे० अप्रस्फुटित] जी० ३१११८
 अवरुद्ध [अवरुद्ध] ओ० ६३
 अविलोण [अविलीन] जी० ३१११८
 अविसंघि [अविगन्धि] ओ० ७२
 अविसय [अविषय] जी० ११४७

अविस्तुद्धसेस्स [अविशुद्धलेश्य] जी० ३११६६ से
 २०४, २०६, २०८
 अविस्ताम [अविश्राम] ओ० ५०
 अवेइय [अवेदित] रा० ७५१
 अवेवग [अवेदक] जी० ६१२२, २६, २७, १२६,
 १३०
 अवेवय [अवेदक] जी० ६१२४, २८
 अवेय [अवेद] जी० १११३३
 अवेयग [अवेदक] जी० ६१२१
 अवेयय [अवेदक] ६१२२५
 अव्वत्तिथ [अव्यक्तिक] ओ० १६०
 अव्वय [अव्यय] रा० २०० जी० ३१५६, २७२,
 ३५०, ७६०
 अव्ववहारि [अव्यवहारिन्] रा ७६६
 अव्वह [अव्यय] ओ० ४३
 अव्वहित [अव्ययित] जी० ३१६३०
 अव्ववाह [अव्याबाध] ओ० १६, २१, ५४,
 १६५।१३ रा० ८, २६२ जी० ३१४५७
 अव्ववाहित [अव्याहृत] जी० ३१२३६
 √अस [अस्]—अत्थि, ओ० २८ रा० २००
 जी० ११८२—अत्थु ओ० २१ रा० ८ जी०
 ३१४५७—असि रा० ७४७—आसि रा०
 २०० जी० ३१२६—आसी ओ० १६५।३
 रा० ६६७—सिय रा० १६८—सिया ओ०
 ३३ रा० १२
 असहं [असकृत्] जी० ३१६७५
 असंकिलिहु [असंकिलिष्ट] ओ० ४७
 असंकिलिहुपरिणाम [असंकिलिष्टपरिणाम]
 ओ० ६०
 असंख [असंख्य] जी० १११२८
 असंखिज्ज [असंख्येय] रा० ५६ जी० ११८०,
 १२१; ३१८६
 असंखेज्ज [असंख्येय] ओ० १७३, १८२, रा० १०
 १२, १२४, १२६, २७६, ७७२, जी० ११३३, ५१
 ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६४, ६५, ७३, ७७ से ७९
 ८१, ८२, ८७, ८८, ९०, ९६, १०१, १०३, ११२;

११६, ११६, १२३, १२८, १३३, १३६, १३६,
१४०; २।१२०, १३१; ३।१६, २१, २६, २७,
५१, ६४, ६५, ८१, ८२, ९०, ११०, १५५, १६५,
२५७, २५६, ३५१, ४४५, ६३८, ७०१, ७१०, ७३६,
७४७, ७६१, ७६४, ७६८, ७७६ से ७७६,
८१४, ८३८।१, ८४०, ८४४, ८५२, ८५३, १००६,
१०७३, १०७४, १०८३, १०८५, १०८६, ११११,
१११५; ५।८, ६, २२, २३, २६, ४१ से ५०
५६, ५८; ८।४; ९।४०, ५१, ६७, १७१, २५७

असंखेज्जभाग [असंख्येयतमभाग] रा० ७६६.

जी० १।१६, ७४, ८६, ९४, १०१, १०३, १११,
११२, ११६, ११६, १२१, १२३, १२५, १३०,
१३५, १३६; २।२५, ३० से ३४, ५३, ५७ से
६१, ७३; ६।६७, १८६

असंखेज्जगुण [असंख्येयगुण] ओ० १८२, १६५।१०.

जी० २।६८, ७१, ७२, ८५, ८६, १३४ से १३६,
१३८, १४३ से १४६; ३।१६५, ११३८;
४।२३, २५; ५।१८ से २०, २५, २७, ३१ से
३६, ५२, ५६, ६०; ६।१२; ७।२०, २२, २३;
८।५; ९।६, ७, ५५, १००, १२०, १४०, १४७,
१५८, १६६, १८१, १८४, २०८, २२०, २३१,
२५० से २५२, २५५, २६६, २८६ से २८८,
२९०, २९१, २९३

असंखेज्जजीविय [असंख्येयजीविक] जी० १।७१, ७२

असंखेज्जतिभाग [असंख्येयतमभाग] जी० २।१३६;

३।११, १५६, २१८, ४३६, ६२६, ६६६, १०८६,
१०८७, १०८८, ११११; ५।६, २३, २४, २६;
६।४०, ५१, १७१, १८७, १८८

असंखेज्जभाग [असंख्येयभाग] ओ० १६२.

जी० ३।६१

असंग [असङ्ग] ओ० २०

असंघयण [असंहनन] जी० ३।१२६।४

असंघयाणि [असंहनिन्] जी० १।६५, १३५;

३।६२, १०६०

असंजय [असंयत] ओ० ८४, ८५, ८७, ८८.

जी० ६।१४१, १४३, १४६, १४७

असंत [असत्] ओ० १६५।१६

असंबिद्ध [असन्निदग्ध] ओ० ६६. रा० ६६६

असंनिहि [असन्निधि] जी० ३।५६८

असंपत्त [असम्प्राप्त] ओ० ४७, ८४, ८५, ८७. रा०

४०, ५६, १३२. जी १।५८, ७३, ७८, ८१;

३।२६५

असंबद्ध [असम्बद्ध] जी० ३।११०, १११५

असंभंत [असम्भ्रान्त] रा० १२

असंबुद्ध [असंवृत] ओ० ८४, ८५, ८७

असंसृष्टचरय [असंसृष्टचरक] ओ० २४

असंसारसमावण्ण [असंसारसमापन्न] जी १।६ से ६

असत्त्वामोसन्नजोण [असत्यमृषामनोयोग]

ओ० १७८

असत्त्वामोसवइजोण [असत्यमृषावाग्योग] ओ०

१७६

असण [अशन] ओ० ११७, १२०, १४७, १६२.

रा० ६६८, ७०४, ७१६, ७५२, ७६५, ७७६, ७८७

से ७८६, ७८४ से ७८६, ८०२, ८०८

असणग [अशनक] ओ० १३

असणि [अशनि] जी० २।७८

असणि [असंजिन्] जी० १।२४, ८६, ८६, १०१,

११६, १२८, १३६; ३।८८; ६।१०१, १०३,

१०६, १०८

असति [अकृत्] जी० ३।१२७

असत्त्वावपट्टवणा [असत्त्वावप्रस्थापना]

जी० ३।१०६, ११८, ११९

असत्त्वावपट्टवणा [असत्त्वावोद्भावना]

ओ० १५५, १६०

असमोहत [असमवहत] जी० १।१२८; ३।१५८,

१६८, १६९, २०४, २०५

असमोहय [असमवहत] जी० १।५३, ६०, ८७

असम्मोह [असम्मोह] ओ० ४३

असरणाणुप्पेहा [असरणानुप्रेक्षा] ओ० ४३

असरिस [असदृश] जी० ३।११०, १११५

असरीर [अशरीर] ओ० १८३, १८४, १६५, १११.
रा० ७७१

असरीरि [अशरीरिन्] जी० ६१६२, १७०, १७५,
१८०, १८१

असहिज्ज [असाहाय्य] रा० ६६८, ७५२, ७८६

असहेज्ज [असाहाय्य] ओ० १२०, १६२

असावज्ज [असावद्य] ओ० ४०

असासत्त [असाश्वत्त] जी० ३१५७, ५६

असासय [असाश्वत्त] रा० १६८, १६९. जी० ३८७,
२७०, २७१, ७२४, ७२७, १०८१

असि [असि] ओ० ६४. जी० ३११०, ६०७, ६३१

असिद्ध [अशीति] जी० ३१५

असिद्ध [असिद्ध] जी० ६१६, १११, १३, १४, १६, २६,
६२

असिपत्त [असिपत्त] जी० ३८५

असिय [असित] रा० १३३. जी० ३१३०३

असिलक्खण [असिलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

असिलिट्ठ [असिलिट्ठ] रा० ७७४

असीत्त [अशीति] जी० ३१३५५

असीत्ति [अशीति] जी० ३११७

असीय [अशीति] रा० १६३. जी० ३१३३५

असुद्ध [अशुचि] ओ० ६८, १४४. रा० ६, १२, ७५३,
८०२ जी० ३८४, ६२२

असुभ [अशुभ] रा० ७५३. जी० ११६५; ३१७७,
११६, १२६१४

असुभाणुप्पेहा [अशुभानुप्रेक्षा] ओ० ४३

असुध [अश्रुत] रा० १६

असुर [असुर] ओ० ६८, १२०, १६२. रा० २८२,
६६८, ७५२, ७७१, ७८६, ८१५. जी० ३१२३२,
४४८, ८८५

असुरकुमार [असुरकुमार] ओ० ४७. जी० २११६,
३७; ३१२३३, २३४, २४०

असुरकुमारराय [असुरकुमारराज] जी० ३१२३४
से २३६, २४३

असुरकुमारिद [असुरकुमारेन्द्र] जी० ३१२३४

असुरहार [असुरद्वार] जी० ३८८५

असुरिद [असुरेन्द्र] ओ० ४८. जी० ३१२३५ से
२३६, २४३

असुह [अशुभ] जी० ३१६२, १२६१०

असोण [अशोक] ओ० ८, ६, १२, १३. रा० ३, ४,
१३३. जी० ११७१; ३१३०३, ६२७

असोणलया [अशोकलता] ओ० ११. रा० १४५.
जी० ३२६८, ५८४

असोणलयापविभस्ति [अशोकलताप्रविभस्ति]
रा० १०१

असोणलयावत्तंसक [अशोकलतावत्तंसक] रा० १२५

असोणलयावत्त [अशोकलता] रा० १७०. जी० ३१३५८

असोय [अशोक] रा० १८६. जी० ३१३५६, ५६०

असोयपल्लवपविभस्ति [अशोकपल्लवप्रविभस्ति]
रा० १००

अस्स [अश्व] जी० ३१७६३

अस्सकणिण [अश्वकर्णी] जी० ११७३

अस्साद [आस्वाद] जी० ३१६५८

अस्साय [असात] जी० ३११२६५, १०

अस्सुय [अश्रुत] ओ० ५२

अह [अथ] ओ० २२

अहक्खायचरित्तविनय [यथाख्यातचरित्रविनय]
ओ० ४०

अहत [अहत] जी० ३१४५१

अहमिद [अहमिन्द्र] जी० ३१०५६, ११२०

अहय [अहत] ओ० ६३. रा० ७, २६१. जी० ३१४५७

अहर [अधर] ओ० १६, ४७. जी० ३१५६६

अहव [अथवा] जी० ३१५६४

अहवा [अथवा] जी० १११३३

अहवणवेव [अथर्वणवेव] ओ० ६७

अहाणुपुद्धो [यथानुपूर्वो] ओ० ६४. रा० ४६ से
५४, ७७४

अहा [अथ] रा० ७२३

अहापडिख [यथाप्रतिरूप] ओ० २१, २२, ५२.

रा० ८, ६, ६८६, ६८७, ६८८, ७०६, ७११, ७१३

अहापरिगृह्य [यथापरिगृहीत] ओ० १२०
 अहाबायर [यथाबादर] रा० १०, १२, १८, ६५,
 २७६. जी० ३।४४५
 अहासुह [यथासुख] रा० ६६५, ७७५
 अहासुह्म [यथासूक्ष्म] रा० १०, १२, १८, ६५,
 २७६. जी० ३।४४५
 अहि [अहि] जी० १।१०५, १०६, १०८;
 ३।८४, ६५, ६२५, ६३१
 अहिमय [अभिगत] रा० ६८८
 अहिनरण [अधिकरण] ओ० १२०, १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६
 अहिय [अधिक] ओ० ५७, ६३ रा० ७०, १३३,
 २३८. जी० २।१५१; ३।२२६।२, ५, ३०३,
 ६७२, ११२२; ७।१६, १८; ६।४, २४४, २४६,
 २८०, २८२, ११२२
 अहिययर [अधिकतर] रा० १३३. जी० ३।३०३,
 ११२२
 √अहियास [अधि + आस्, सह] —अहियासिज्जति
 ओ० १५४. रा० ८१६
 अहिलाण [अमिलान] ओ० ६४
 अही [अही] जी० २।८
 अहीण [अहीन] ओ० १५, १४३. रा० ६७२, ६७३
 ८०१
 अहुणा [अधुना] जी० ३।४४८
 अहुणोववण्ण [अधुनोपपन्न] रा० ७५१, ७५३
 अहुणोववण्णमित्तय [अधुनोपपन्नमात्रक]
 रा० २७४
 अहुणोववण्णय [अधुनोपपन्नक] रा० ७५१, ७५३,
 ७६७
 अहे [अधस्] ओ० १८६ रा० १३२ जी० १।४५
 अहेसत्तमा [अधःसप्तमी] जी० १।६२, ११६,
 १२२; २।१३५, १४८, १४६; ३।११ से १३,
 २७, ३२, ४३, ४७, ४६, ५३. ७६, ७७, ७८, ८०, ८२,
 ८७, ८३ से ८५, ८७, १०३, १०४, १०६, १०८,
 ११५, ११७, १२१ से १२३, १२५, १२७, १२८

अहो [अहो] रा० ६६६
 अहोनिस् [अर्हनिस्] जी० ३।१२६।८
 अहोरस् [अहोरात्र] ओ० २८ जी० ३।८४१
 अहोवहिय [आधोवधिक] रा० ७३३, ७३४, ७३६
 अहोवाय [अधोवात] जी० १।८१
 अहोसिर [अधःशिरस्] ओ० ४५, ८२

आ

आइ [आदि] ओ० २३, ६३, ६६. जी० १।१३३;
 ३।१०२७
 आइं [दे०] रा० ७०५
 √आइक्ख [आ + चक्ष्, खया] — आइक्खइ ओ० ५२.
 रा० ६८७ — आइक्खंति जी० ३।२१० —
 आइक्खह् ओ० ७६ — आइक्खामि
 जी० ३।२११ — आइक्खिस्सामो रा० ७१६
 — आइक्खेज्जा रा० ७१८ — आइक्खेज्जाह
 रा० ७२०
 आइक्खग [आख्यायक] ओ० १, २
 आइक्खगपेच्छा [आख्यायकप्रेक्षा] ओ० १०२,
 १२५
 आइक्खमाण [आनखान, आख्यात्] ओ० ७६
 से ८१ रा० ७२०, ७३२
 आइक्खित्तए [आचक्षितुम्, आख्यातुम्] ओ० ७६
 आइगर [आदिकर] ओ० १६, २१, ५२, ५४
 रा० ८
 आइच्च [आदित्य] जी० ३।८३८।४
 आइज्ज [आदेय] ओ० १६
 आइण [आजिन] रा० ३१
 आइणग [आजिनक] जी० ३।४०७, ५६५
 आइण्ण [आकीर्ण] ओ० १, १४, १६, ६४.
 रा० १७३, ६७१, ६७५, ६८१, ७७४.
 जी० ३।२८५, ६६५
 आइण्ण [आचीर्ण] रा० ११, ५६
 आइण्ण [दे०] जात्यस्व जी० ३।५६६
 आइय [आदिक] ओ० २३, १२०, १४६, १६२
 जी० ३।२५६

आईण [आजिन] जी० ३।२८४, १०७६
 आईणग [आजिनक] ओ० १३ रा० ३७, १८५,
 २४५, जी० ३।२६७, ३११
 आड [आमुष्] जी० १।१२८
 आड [दे० अप्] जी० २।१३०, १३६; ३।१२३,
 ६७४; ५।८, १२, २०, २७, २६, ३३, ३६;
 ६।२५७
 आडकाइय [अप्कायिक] जी० १।१२; ३।१८२,
 १८४, २५६, २६२, २६६; ५।६, १८; ८।५
 आडकाय [अप्काय] जी० ३।१३५, ७२५, ७२८
 आडक्काइय [अप्कायिक] जी० १।६३, ६५;
 २।१०२, १३८, १४६, १४६; ३।१३५; ५।१,
 १६, २०; ८।१
 आडक्खय [आयुःक्षय] ओ० १४१. रा० ७६६
 आडज्ज [आतोद्य] रा० ७०, ७१, ७५
 आडधागार [आयुधागार] ओ० १४. रा० ६७१
 आडय [आयुष्क] ओ० ४४, ६१ से ६३, १५७,
 १७१, १८८. रा० ७५३. जी० १।५१, ५५, ६१,
 ८७, १०१, ११६, १२७, १३३; ३।१५५, ६३०
 आडर [आतुर] रा० ७६०, ७६१. जी० ३।११८,
 ११६
 आडल [आकुल] ओ० ६३. जी० ३।८४
 आडस [आयुष्मत्] ओ० ७६, १२०, १७०. रा०
 १३१, १३२, १४७ से १५१, १८५, १८७, ६६८,
 ७५०, ७५२, ७८६. जी० १।५६, ६२, ६५, ८२, ६६,
 १२८, १४०; ३।१७६, १७८, १८०, १८२, २५६,
 २६६, २६७, ३०१, ३०२, ३२१ से ३२४, ५८२,
 ५८६ से ५८८, ५८८, ६००, ६०३ से ६०७, ६०६
 से ६१७, ६२०, ६२२ से ६२५, ६२७, ६२८, ६३०,
 ६६५, १०५६, ११२०
 आडसेस [आयुःशेष] रा० ८१६
 आडह [आयुध] रा० ६६४, ६८३. जी० ३।५६२
 आएज्ज [आदेव] जी० ३।५६७
 आएस [आदेश] जी० २।१५०, ६।१२२
 आओग [आयोग] ओ० १४, १४१ रा० ६७१, ७६६
 आओस [आक्रोश] रा० ७६६

आओसित्तए [आक्रोष्टुम्] रा० ७६६
 आकति [आकृति] रा० १४८
 आकारभाव [आकारभाव] जी० ३।२५६
 आकासतल [आकाशतल] जी० ३।५६४
 आकिति [आकृति] जी० ३।४५४
 आकोसायंत [आकोशायमान, विकसत्] जी०
 ३।५६६, ५६७
 आगइ [आगति] जी० १।१४
 आगइय [आगतिक] जी० १।७४, ७७, ८७, ८८, ८६,
 १०१
 आगतुं [आगन्तुम्] रा० ७५०
 आगच्छ [आ + गम्] — आगच्छइ ओ० १७७
 — आगच्छंति जी० ३।२३६ — आगच्छिज्जा
 रा० ७०६ — आगच्छेज्ज ओ० १८०. —
 आगच्छेज्जा ओ० २१. जी० ३।८६ —
 आगच्छेइ रा० ७६५
 आगच्छित्तए [आगन्तुम्] रा० ७५१
 आगत [आगत] रा० १७३. जी० ३।२६५, २८५
 आगति [आगति] रा० ८१५
 आगतिय [आगतिक] जी० १।५६, ६२, ६४, ६५,
 ६७, ७६, ८०, ८२, १०३, १११, ११२, ११६, ११६,
 १२१, १२३, १२८, १३४, १३६
 आगमण [आगमन] ओ० ५१. रा० ६८६
 आगमणागमणप्रविभत्ति [आगमनागमनप्रविभक्ति]
 रा० ८७
 आगमेसिभइ [आगमिष्यद्भद्र] ओ० ७२
 आगम्म [आगम्य] ओ० २
 आगय [आगत] ओ० ५२. रा० ४०, ७०, १३२,
 ६८५, ६८७, ६८८, ७१३, ७६५, ८०२.
 जी० १।६६
 आगर [आकर] ओ० ६८, ८६ से ८३, ६५, ६६,
 १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७.
 जी० ३।८४१
 आगार [आकार] ओ० १६. जी० ३।४८ से ५०,
 ३०३, ३४६, ३५७, ६३७, ६५६, ७३८, ७४३,
 ७६३, ११२२

आगारभाव [आकारभाव] जी० ३।२१८, ५७८,
५६६, ५६७

आगास [आकाश] ओ० १३, १६

आगासस्थिकाय [आकाशस्थिकाय] रा० ७७१.
जी० १।४

आगासधिमल [आकाश 'धिमल'] रा० २५
जी० ३।२७८

आगासफलह [आकाशस्फटिक] जी० ३।४५१

आवासफालिह [आकाशस्फटिक] । रा० २८५

आगासाइवाह [आकाशातिपातिन्] ओ० २४

आगासिय [आकाशिक] ओ० १६

आगिति [आकृति] रा० २८८. जी० ३।२२१

√आघव [आ+हया]—आघविज्जति जी०
३।८४१

आघवण [आख्याण] रा० ७७४

आघवित्तए [आख्यातुम्] रा० ७७४

आघवेमाण [आख्यात्] ओ० ६८

आजीवविट्ठंत [आजीवदृष्टान्त] जी० ३।१७४

आजीवय [आजीवक] ओ० १५८

√आडह [आ+धा]—आडहइ, ओ० ५६

आडहिता [आधाय] ओ० ५६

आडय [आडक] ओ० ११३, १२८. रा० ७७२

√आढा [आ+दृ]—आढाइ रा० ६४.—आढाति
रा० ७५३

आणंदा [आनन्दा] जी० ३।६१४

आणंदिय [आनन्दित] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६,
६२, ६३, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४,
१६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७,
२७८, २८१, २८०, ६५५, ६८१, ६८३, ६८०, ६८५.
७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८, ७२५,
७२६, ७७४, ७७८. जी० ३।४४३, ४४५, ४४७,
५५५

आणण [आनन] ओ० ५१, ६३, ६५

आणत [आनत] जी० २।६२, ६६, १४८, १४९;
३।१०८४, १०८६, १०८८

आणत्तिया [आज्ञप्तिका] ओ० ५५ से ६१. रा०
६, १२, १७, ४६, ७३, ११८, ६५४, ६५५, ६८१,
६८२, ६८०, ६८१, ६८६, ७१४, ७१५, ७२४,
७२५. जी० ५५४, ५५५

आणपाणपज्जत्ति [आनप्राणपर्याप्ति, आनापान-
पर्याप्ति] रा० २७४, ७६७

आणपाणुपज्जत्ति [आनप्राणपर्याप्ति, आनापान-
पर्याप्ति] जी० १।२६

आणय [आनत] ओ० ५१, १६२. जी० ३।१०३८,
१०५३, १०६२, १०६६, १०६८, १०७६, ११११

√आणव [आ+जापय]—आणविज्जइ रा० ७६७.
—आणवेइ रा० १३.—आणवेज्जा रा० ७७६

आणा [आज्ञा] ओ० ५६, ५७, ५९, ६१, ६८, ७६,
७७. रा० १०, १४, १८, ७४, २७६, २८२, ६५५,
६८१, ७०७. जी० ३।३५०, ४४५, ४४८, ५५५,
५६३, ६३७

आणापाणु [आनापान, आनप्राण] ओ० २८. जी०
३।८४१

आणापाणुअपज्जत्ति [आनापानापर्याप्ति, आनाप्राणा-
पर्याप्ति] जी० १।२७

आणापाणुपज्जत्ति [आनापानपर्याप्ति, आनप्राण-
पर्याप्ति] जी० ३।४४०

आणामित [आनामित] जी० ३।५६७

आणामिय [आनामित] ओ० १६ जी० ३।५६६

आणारुइ [आज्ञारुचि] ओ० ४३

आणाविजय [आज्ञाविचय] ओ० ४३

√आणी [आ+नी]—आणेस्सामि रा० ७२०

आणुगामियत्त [आनुगामिकत्व] ओ० ५२. रा०
२७५, २७६, ६८७. जी० ३।४४१, ४४२

आणुपुव्व [आनुपूर्व्य] रा० १७४. जी० ३।२८६

आणुपुव्वी [आनुपूर्वी] जी० १।४८

आतंक [आतङ्क] जी० ३।६२८

आतंब [आताम्र] जी० ३।५६६

आतपत्त [आतपत्र] जी० ३।४१६

आताडिज्जंत [आताड्यमान] रा० ७७

आतिय [आदिक] रा० ६३, ६५
 आतोच्च [आतोच] जी० ३।५८८
 आदंसग [आदर्शक] जी० ३।३५५
 आदंसमुह [आदर्शमुख] जी० ३।२२६
 आदर [आदर] ओ० ६७. रा० १३, ६५७
 आदर्शफलक [आदर्शफलक] ओ० २७. रा०
 ८१३
 आदि [आदि] ५२, ७०. जी० १।४६; २।१३१;
 ३।२२६, २५०, ८६६, ८७२, ८७५, ८७६, ८७६,
 ८८१, ८८६, ८८७, ८८७, ८८८, ८८८,
 ८८८, १०८४, १०८६; ६।१४६
 आदिगर [आदिकर] ओ० ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३।४५७
 आदिय [आदिक] रा० ७४, ८२, ११८. जी०
 ३. ६१७
 आदीय [आदिक] जी० ३।२५६, ६५०
 आदेज्ज [आदेय] जी० ३।५६६, ५६७
 आदेश [आदेश] जी० १।५८, ७३, ७८, ८१; २।२०,
 ४८
 आघार [आहार] जी० १।१२८
 √आघाव [आ + घाव] —आघावन्ति जी० ३. ४४७
 आपडिपुच्छमाण [आप्रतिपृच्छत्] ओ० ६६
 आपुच्छणिज्ज [आपृच्छनीय] रा० ६७५
 आपूरत्त [आपूर्यमाण] जी० ३।७३१
 आपूरमाण [आपूर्यमाण] रा० ४०, १३२,
 १३५, २३६. जी० ३।२६५, ३०२, ३०५, ३६८.
 आबाह [आबाध] ओ० १६६
 आबाहा [आबाधा] जी० ३. ६२०, ६२५
 आभरण [आभरण] ओ० २०, ५२, ५३, ६३.
 रा० ६६, ७०, १५६, १५७, २५८, २८१,
 २८६, २८१, २८४, २८६, ३००, ३०५, ३१२,
 ३५५, ६८५, ६८७, ६८६, ६८२, ७००, ७१६,
 ७२६, ८०२. जी० ३।३२६, ४१६, ४४७, ४५२,

१—आपूरयन्ति शत्रन्तस्य शाब्दि रूपम् । जी०
 वृत्ति ।

४५७, ४५६, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,
 ५१६, ५२०, ५४७, ७७५, ६३६, ११२१ से ११२३
 आभरणचित्त [आभरणचित्र] जी० ३. ५६५
 आभरणविहि [आभरणविधि] ओ० १४६ रा०
 ८०६
 आभा [आभा] ओ० ५१
 आभासित [आभाषिक] जी० ३।२१६
 आभासिय [आभाषिक] जी० ३।२१६
 आभासियदीव [आभाषिकदीव] जी० ३।२१६,
 २२३
 आभासिया [आभाषिका] जी० २।१२
 अभिओगिय [अभियोगिक] ओ० १५६. रा०
 ६, १०, १२, १३, १७ से १६, २४, ३२, ४१, ४६,
 ५४, २७८, २७९, २८०, ६५४, ६५५. जी०
 ३।४४४, ४४५, ४५०, ४५३, ४५६, ५५४, ५५५,
 ६१०
 अभिनिबोहियणाणि [अभिनिबोधिकज्ञानिन्]
 जी० ३।१०४, ११०७
 अभिनिबोहियणाण [अभिनिबोधिकज्ञान]
 ओ० ४० रा० ७३६ से ७४१, ७४६
 अभिनिबोहियणाणविणय [अभिनिबोधिकज्ञान-
 विनय] ओ० ४०
 अभिनिबोहियणाणि [अभिनिबोधिकज्ञानिन्]
 ओ० २४. जी० १।८७, ६६, ११६, १३३;
 ६।१५६, १६०, १६५, १६६-१६८, २०४, २०८
 अभिनिबोहियणाणि [अभिनिबोधिकज्ञानिन्]
 जी० ६।१६७
 अभियोग [अभियोग्य] रा० ४७
 अभियोगा [अभियोग्य] रा १०
 अभिलेक्क [अभिलेख्य] ओ० ५५ से ५७, ६२
 से ६४, ६६
 अभोएत्ता [अभियोग्य] रा० ८१६
 अभोएमाण [अभियोग्य] रा० ७
 √आमंत [आ + मन्त्र] —आमंतेइ ओ० ५५
 आमंतेत्ता [आमन्त्र्य] ओ० ५५. रा० ६६८

आमरणतदोस [आमरणान्तदोष] ओ० ४३
 आमलकल्पा [आमलकल्पा] रा० १,२,८ से १०,
 १३,१५,५६
 आमलग [आमलक] रा० ७७१ जी ११७२
 आमलय [आमलक] रा० ७७०
 आमेल [आपीड] ओ० ४६ रा० ६६,७०
 आमेलग [आपीडक] रा० १३३ जी० ३१३०३,
 ५६७
 आमेलय [आपीडक] ओ० ५७
 आमोट [आमोट] रा० ७७
 आमोडिज्जंत [आमोदयमान] रा० ७७
 आमोसहिपत्त [आमषीषधिप्राप्त] ओ० २४
 आय [आत्मन्] जी० ११५०
 आयंक [आतङ्क] ओ० ४३, ११७. रा० १२, ७५८,
 ७५६, ७६६. जी० ३१११८
 आयंत [आचान्त] ओ० २१, ५४. रा० २७७,
 २८८, ७६५, ८०२ जी० ३४४३
 आयंब [आताम्र] ओ० १६
 आयंबिलय [आचाम्लक] ओ० ३५
 आयंबिलवद्धमाण [आचाम्लवर्धमान] ओ० २४, ३५
 आयंस [आदर्श] रा० १४६, २५८, २७६, जी०
 ३१५६७
 आयंसग [आदर्शक] जी० ३३२२, ४१६, ४४५
 आयंसघरग [आदर्शगृहक] रा० १८२, १८३.
 जी० ३१२६४
 आयंसघरय [आदर्शगृहक] जी० ३१२६५
 आयंसमंडल [आदर्शमण्डल] रा० २४ जी०
 ३१२७७
 आयंसमुख [आदर्शमुख] जी० ३१२१६, २२६४
 आयंसय [आदर्शक] ओ० १३
 आयत [आयत] ओ० १६, ४७. रा० १२४. जी०
 १५१, ३१५७७, ५६६, ६३६, १०३६
 आयपच्चइय [आत्मप्रत्ययिक, प्रात्ययिक] रा०
 ७५४, ७५६
 आयय [आयत] जी० ३२२, ५६७
 आयर [आदर] जी० ३४४६

आयरकल [आत्मरक्ष] रा० ७, ४४, ५६, ५८, २८०,
 २८२, २८६, २६१, ६५७, ६६४. जी० ३१३४५,
 ३५०, ३५६, ४४६, ४४८, ५५७, ५६२, ५६३,
 ६३७, ६५६, ६८०, ७००, १०२५, १०३८
 आयरिय [आचार्य] ओ० ४०, ४१, १५५.
 रा० ७७६
 आयव [आतप] ओ० ८६
 आयवत्त [आतपत्र] ओ० ६४. रा० ५०, ५१, २५५
 आयवाभा [आतपाम] जी० ३१०२६
 आयाए [आदाय] रा० ७७४
 आयाण [आदान] ओ० १६. जी० ३१५६६
 आयाणमंडमत्तनिकखेवणासमिय [आदानमाण्डामत्र-
 निकषेपणासमित] ओ० २७, १६४
 आयाणमंडमत्तनिकखेवणासमिय [आदानमाण्डामत्र-
 निकषेपणासमित] ओ० १५२. रा० ८१३
 आयाम [आयाम] ओ० १३, १७०, १६२. रा०
 ३६, १२४, १२६, १२८, १३७, १७०, १८८, २०६,
 २११, २१८, २२१, २२२, २२४, २२६, २२७,
 २३०, २३३, २३८, २४२, २४४, २४६, २५१ से
 २५३, २६१, २६२, २७२. जी० ३५१ ८१, ८२,
 ८६, २१७, २२२, २२६, २६०, ३०७, ३१०, ३५१,
 ३५३, ३५५, ३५८, ३५९, ३६१, ३६४, ३६५,
 ३६८ से ३७२, ३७४, ३७६, ३७७, ३८०, ३८१,
 ३८३, ३८५, ३८६, ३८९, ३९५, ४००, ४०४,
 ४०६, ४०८, ४१२ से ४१४, ४२२, ४२५, ४२७,
 ४३७, ५७७, ५६७, ६३२, ६३४, ६३६, ६४२,
 ६४४, ६४६, ६४६, ६४८, ६४९, ६५५, ६६८, ६७१, ६७३
 से ६७५, ६७६, ६८३, ७३६, ७३७, ७५४, ७५८,
 ७६२, ७६५, ७६८, ८३५, ८८२, ८८४, ८८७,
 ८६१, ८६३ से ८६५, ८६७, ८६८, ८०१, ८०६,
 ८०७, ८१०, १०१० से १०१४, १०७३, १०७४
 आयामसित्त्वभोइ [आयामसिक्खभोजिन्] ओ० ३५
 आयावरधर [आचारधर] ओ० ४५
 आयावरवंत [आकारवत्] ओ० १
 आयावणभूमि [आतापनभूमि] ओ० ११६

आयावणा [आतापना] ओ० ६४

आयावय [आतापक] ओ० ३६

आयावाय [आत्मवाद] ओ० २६

आयावेमाण [आतापयत्] ओ० ११६

आयाह्णि [आदक्षिण] ओ० ४७, ५२, ६६, ७०, ७८,
८०, ८१. रा० ६, १०, १२, ५६, ५८, ६५, ७३, ७४,
११८, १२०, ६८७, ६६२, ६६५, ७००, ७१६,
७१८, ७७८

आयिण [आजिन] जी० ३१६३७

आरंभ [आरम्भ] ओ० ६१ से ६३, १६१, १६३

आरंभसमारंभ [आरम्भसपारम्भ] ओ० ६१ से ६३

आरण [आरण] ओ० ५१, १६२. जी० ३१०३८,
१०५४, १०६६, १०६८, १०७६, १०८८, ११११

आरबी [आरबी] ओ० ७०. रा० ८०४

आरभड [आरभट] रा० १०८, ११६, २८१. जी०
३१४४७

आरभडभसोल [आरभटभसोल] रा० ११०, २८१.
जी० ३१४४७

आराम [आराम] ओ० १, ३७. रा० १२, ६५४,
६५५, ७१६. जी० ३१५५४

√आराह [आ+राध्]—आराहेहिइ रा० ८१६

आराहण [आराधक] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७,
१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७

आराहणा [आराधना] ओ० ७७

आराहय [आराधक] ओ० ७६, ७७. रा० ६२

आराहिता [आराध्य] ओ० १५४. रा० ८१६

आरिय [आये] ओ० ५२, ७१. रा० ६६७, ६८७.
जी० ३१२२६

आरुहण [आरोहण] रा० २६१, २६४, २६६, ३००,
३०५, ३१२, ३५५. जी० ३१४५७, ४५६, ४६१,
४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५४७, ५६४

आरोहण [आरोहक] ओ० ६४

आलंकारिय [आलङ्कारिक] जी० ३१४५०

आलंबण [आलम्बन] ओ० ४३. रा० ६७५

आलंबणभूय [आलम्बनभूत] रा० ६७५

आलय [आलय] रा० ८१४

आलवंत [आलपत्] रा० ७७

आलावण [आलापक] जी० ३१६२; ५१५१, ५८

आलिग [आलिङ्ग] रा० २४, ६५, ६७, १७१. जी०
३१२१८, २७७, ३०६, ५७८, ५८८, ६७०, ७५५,
८८३

आलिगक [आलिङ्गक] जी० ३१७८

आलिगणवट्टिय [आलिङ्गनवर्तिक] रा० २४५.
जी० ३१४०७

आलिघरग [आलिगृहक] रा० १८२, १८३. जी०
३१२६४, ८५७

आलिघरय [आलिगृहक] जी० ३१२६५, ८५७

√आलिह [आ+लिह्]—आलिहइ रा० २६१.

—आलिखति जी० ३१४५७

आलिहिता [आलिख्य] रा० २६५. जी० ३१४५७

आलुय [आलुक] जी० ११७३

आलोइय [आलोचित] ओ० ११७, १४०, १५७,
१६२, १६४, १६५ रा० ७६६

आलोय [आलोक] ओ० ६३, ६४. रा० ५०, ६८,
२६१, ३०६. जी० ३१४५७, ४७१, ५१६

आलोयणारिह [आलोचनाह] ओ० ३६

आवइ [आपत्] रा० ७५१

आवइकाल [आपत्काल] ओ० ११७

आवकहिय [यावत्कथिक] ओ० ३२

आवज्जीकरण [आवर्जीकरण] ओ० १७३

आवड [आवृत्त] रा० २४. जी० ३१२७७

आवडपञ्चावडसेडिपसेडिसोत्थियसोवत्थियपुसमाणव-
वद्धमाणगमच्छंडमगरंडाजारामारफुल्लावलि-

पडमपत्तसागरतरंगवसंतलतापडमलयभक्तिचित्त

[आवृत्तप्रत्यावृत्तश्रेणिप्रश्रेणिवस्तिक्कसौवस्तिक्क

पुण्यमाणववर्धमाणकमत्स्याण्डमकराण्डकजारकमार-

कफुल्लावलिपद्मप्रसागरतरङ्गवास्तीलताप-

दलताभक्तिचित्र] रा० ८१

आवडिय [आपत्तित] रा० १४

आवण [आपन] ओ० १, ५५. रा० २८१. जी०
३१४४७, ५६४

आवत्त [आवर्त] रा० ६६. जी० ३१८३८१०
 आवत्तनपेठिया [आवर्तनपीठिका] रा० १३०.
 जी० ३१३००
 आवबहुल [आपबहुल] जी० ३१६, १०, १७, २५,
 ३०, ६३
 आवरण [आवरण] ओ० ५७, ६४. रा० १७३,
 ६८१. जी० ३१२८५
 आवरणावरणपविभक्ति [आवरणावरणप्रविभक्ति]
 रा० ८८
 आवरिता [आवृत्य] रा० ७१६
 √आवरित [आ+वृष]—आवरितेज्जा रा० १२
 आवरेत्ता [आवृत्य] रा० ७१६
 आवरेत्तार्ण [आवृत्य] रा० ७१६
 आवलितपविभक्ति [आवलितप्रविभक्ति] रा० ८५
 आवलितपविट्ट [आवलिकाप्रविट्ट] जी० ३१७८
 आवलितबाहिर [आवलिकाबाह्य] जी० ३१७८
 आवलिया [आवलिका] ओ० २८ जी० ११३६,
 ३, ८४१
 आवलियापविट्ट [आवलिकाप्रविट्ट] जी०
 ३१०७१
 आवलियाबाहिर [आवलिकाबाह्य] जी०
 ३१०७१
 आवस्तय [आवश्य] रा० ७२३
 आवास [आवास] ओ० १, १६२. रा० ६८४,
 ६८५, ७००, ७०६. जी० ३१२५७ ७३५ से
 ७४३, ७४५ से ७४७, ७४६ से ७५१, ७७५,
 ६३७
 आवाह [आवाह] जी० ३१६१४
 आविद [आद्विद] ओ० ५२, ६३. रा० ६६,
 ७०, १३१, १४७, १४८, २८०, ६६४,
 ६८७ से ६८९, जी० ३१३०१, ४४६
 आविल [आविल] जी० ३१७२१
 आवीकम्म [आविक्कम्मन्] रा० ८१५
 आस [अश्व] ओ० ६६, १०१, १२४. रा०

७२०, ७२३, ७२४, ७२६, ७३१, ७३२.
 जी० २१८४; ३१६१८, ६३१, १०१५
 आसकण [अश्वकर्ण] जी० ३१२१६, २२६
 आसग [आस्यक] जी० ३११०६
 आसण [आसन] ओ० १४, १४१. रा० १८५,
 ६७१, ६७५ ७१४, ७६६. जी० ३१२६७
 ५७६, ६८३, ११२८, ११३०
 आसणप्याण [आसनप्रदान] ओ० ४०
 आसणाभिग्गह [आसनाभिग्रह] ओ० ४०
 आसत्त [आसक्त] ओ० २, ५५. रा० ३२, २८१
 २६१, २६४, २६६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५.
 जी० ३१३७२, ४४७, ४५६, ४६१, ४६२,
 ४७०, ४७७, ५१६, ५२०
 आसधर [अश्वधर] ओ० ६६
 आसम [आश्रम] ओ० ६८, ८६ से ८३, ६५
 ६६, १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८.
 रा० ६६७
 आसमुह [अश्वमुख] जी० ३१२१६, २२६
 √आसय [आस]—आसयन्ति रा० १८५ जी०
 ३१२१७—आसयह रा० ७५३
 आसरह [अश्वरथ] रा० ६८१ से ६८३, ६८५, ६८७
 से ६८२, ६८७, ७०६, ७१०, ७१४, ७१६,
 ७२२, ७२४, ७२६
 आसल [आसल] जी० ३१८१६, ८६०, ६५६
 आसव [आश्रव] ओ० ७१, १२०, १६२. रा०
 ६६८, ७५२ ७८६
 आसव [आसव] जी० ३१५८६
 आसवोद [आसवोद] जी० ३१२८६
 आसवोयग [आश्वोदक] रा० १७४
 आसा [आशा] ओ० २५, ४६, रा० ६८६
 आसाएमाण [आस्वादयत्] रा० ७६५, ८०२
 आसाद [आस्वाद] जी० ३८६०, ८६६, ८७२
 ८७८, ६५५, ६६०
 आसादणिज्ज [आस्वादनीय] जी० ३१६०२, ८६०
 ८६६, ८७२, ८७८, ६५५, ६६०
 आसाय [आस्वाद] जी० ३१६०१ ६०२, ६६१

आसालिय [आशालिक] जी० १।१०५, ११०,
१३३; २।१०५

आसित्त [आसित्त] ओ० ५५, ६० से ६२

आसिय [आसित्त] रा० २८१. जी० ३।४४७

आसीत [अशीति] जी० ३।५

आसीवित्त [आसीवित्त] जी० १।१०७

✓आह [बू]—आहसु जी० १।१०—

आहिज्जति जी० १।१०

आहत [आहत] जी० ३।८४५

आहम्मन्त [आहन्मन्त] रा० ७७

आहय [आहत] ओ० ६८

✓आहर [आ+हृ]—आहरेइ ओ० ११८

आहरण [आभरण] ओ० ४६. रा० ६८८

आहाकम्मिय [आघाकम्मिक] ओ० १३४

आहार [आहार] ओ० ३३, ७३, ६२, ११७ से ११६.

रा० ७३२, ७३७, ७७२, ७६६. जी० १।१४, ३३,

५०, ५६, ६५, ८२, ८७, ६६, १०१, ११६, १३३,

१३६; ३।६७, १२७, १२६, ५६६, ६००, ६०३,

६३१; ६।६६

आहार [आधार] रा० ६७५

✓आहार [आ+हारय]—आहारेइ रा० ७३२—

आहारेति रा० ७०३. जी० १।३३

आहारपज्जति [आहारपर्याप्ति] जी० १।२७

आहारण [आहारक] जी० ६।३८ से ४०, ४६,

५०, ५५

आहारगमीसासरीर [आहारकमिश्रकशरीर] ओ०

१७६

आहारगसरीर [आहारकशरीर] ओ० १७६ जी०

६।१७८

आहारगसरीरि [आहारकशरीरिन्] जी० ६।१७०,

१७३, १८१

आहारत्त [आहारत्व] जी० ३।११००

आहारपज्जति [आहारपर्याप्ति] रा० २७४, ७६७

जी० १।२६; ३।४४०

आहारभूय [आहारभूत] रा० ६७५

आहारय [आहारक] जी० ६।३६, ४१

आहारसण्णा [आहारसंज्ञा] जी० १।२०, १३२;

३।१२८

आहारित्ता [आहार्य] जी० ३।६०३

आहारेत्तए [आहर्तुम्] ओ० ६३

आहारेमाण [आहरत्] ओ० ३३. रा० ७६५

✓आहाव [आ+धाव]—आहावति रा० २८१

आहिय [आख्यात] जी० ३।८३८।३

आहु [आहोतु] ओ० २

आहुणिज्ज [आहवनीय] ओ० २

आहुणिय [आहृत्य] रा० ६

आहेवच्च [आधित्य] ओ० ६८. रा० २८२.

जी० ३।३५०, ३५६, ४४८, ५६३, ६३७, ६५६,

७६०, ७६३

[इ]

इ [चित्] ओ० ७४।४

इ [इति] जी० ३।६५

✓इ [इ]—एति जी० ३।१७६—एह रा० ७२३

इइ [इति] रा० २४

इओ [इतस्] ओ० ८८

इंगाल [अङ्गार] रा० ४५. जी० १।७८; ३।८५,

११८

इंगालसोल्लिय [अङ्गारपक्व] ओ० ६४

इंगिय [इङ्गित] ओ० ७०. रा० ८०४

इंद [इन्द्र] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८,

७५५, ८४३, ८४६, ८४७, ८३७, १०४८

इंदकील [इन्द्रकील] ओ० १. रा० १३०

इंदखील [इन्द्रकील] जी० ३।३००

इंदगोव [इन्द्रगोप] रा० २७

इंदगोवय [इन्द्रगोपक] जी० ३।२८०

इंदगह [इन्द्रगह] जी० ३।६२८

इंदगुण [इन्द्रस्थान] जी० ३।८४८, ८४७

इंदधणु [इन्द्रधनुष्] जी० ३।६२६, ८४१

इंदभूइ [इन्द्रभूति] ओ० ८२

इंदमह [इन्द्रमह] रा० ६८८, ६८६ जी० ३।६१५

इंदभिसेग [इन्द्रभिषेक] रा० २८२, २८३.

जी० ३।४४६, ४४७

इंद्राभिसेय [इन्द्राभिषेक] रा० २७८ से २८१
जी० ३१४४, ४४८, ४४९

इन्द्रिय [इन्द्रिय] ओ० ६३. जी० ११४, २२, ८६,
८८, ९०, ९६, १०१, ११६, १२८, १३६; ३१५६२,
६०२, ६७६

इन्द्रियपञ्जति [इन्द्रियपर्याप्ति] रा० २७४, ७६७.
जी० ११२६; ३१४४०

इन्द्रियपञ्चसंलीनया [इन्द्रियप्रतिसंलीनता] ओ०
३७

इन्दु [इन्दु] रा० २५५. जी० ३१४१६

इक्षमिषक [एकैक] जी० ३१२७

इक्ष्वाग [इक्ष्वाकु] रा० ६८८

इक्ष्वागपरिषा [इक्ष्वाकुरिषद्] रा० ६१

इक्ष्वावड [इक्ष्वाट] रा० ७८१, ७८४, ७८६,
७८७

इग्यालीस [एकचत्वारिंशत्] जी० २१७६८

इच्छ [इष्]—इच्छइ रा० ७५१—इच्छसि
रा० ७६५—इच्छसी जी० ३१८३८१२६
—इच्छामि रा० ६३—इच्छेज्ज रा० ७५१
—इच्छेज्जा रा० ७५१

इच्छा [इच्छा] ओ० ४६

इच्छापरिमाण [इच्छापरिमाण] ओ० ७७

इच्छिय [इष्ट] ओ० २३, ६६. रा० ६६५

इच्छियपञ्चिच्छिय [इष्टप्रतीष्ट] ओ० ६६.

रा० ६६५

इष्टावाय [इष्टकापाक] जी० ३११८

इष्ट [इष्ट] ओ० १५, ६८, ११७. रा० ६७२, ६८५,
७१०, ७५० से ७५३, ७७४, ७८६.

जी० ११३५; ३११०६०, १०६६, ११२४

इष्टतर [इष्टतर] जी० ३११०७८, १०७६

इष्टतराय [इष्टतरक] रा० २५ से ३१, ४५.

जी० ३१२७८ से २८४, ६०१, ६०२, ८६०, ८६६,
८७२, ८७८, ८५६, ८६१

इष्टुरा [दे०] रा० ७७२

इष्टुरय [दे०] रा० ७७२

इष्टि [ऋष्टि] ओ० ४७, ६५, ६७, ७२, ८६ से ८५,
११४, ११७, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७.

रा० १३, १५ से १७, ५५, ५६, ५८, २८०, २८१,
६५७, ७७२, ८०३, ८०५. जी० ३१४४६, ४४८,
४५७, ५५७, ६०६

इण [एतत्] जी० ३१५

इणं [इदम्] ओ० ७२

इति [इति] रा० ८. जी० ३१११८

इतिहास [इतिहास] ओ० ६७

इत्तरिय [इत्तरिक] ओ० ३२

इत्ति [इति] जी० ११३६

इत्तो [इतस्] ओ० १६५११७. रा० २५.

जी० ३१२७८

इत्थ [अत्र] जी० ३१२४४

इत्थंठिय [इत्थंस्थित] ओ० ७२

इत्थि [स्त्री] जी० २११०५

इत्थिकहा [स्त्रीकथा] ओ० १०४, १२७

इत्थिया [स्त्री] ओ० ६२. जी० २१११, १५ से १६,
३७, ६७ से ७२, ७४, १४४, १४६ से १४८, १५१;
३१८८

इत्थिलक्षण [स्त्रीलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

इत्थिवेद [स्त्रीवेद] जी० ११३६; २१७३, ७४;
६१२६

इत्थिवेदग [स्त्रीवेदक] जी० ६१३०

इत्थिवेय [स्त्रीवेद] जी० ११२५, १३३

इत्थिवेयग [स्त्रीवेदक] जी० ६१२१

इत्थिवेयय [स्त्रीवेदक] जी० ६१२२

इत्थी [स्त्री] ओ० ३७. जी० २११ से ३, ६, १०,

१४, २० से ३०, ३२ से ३६, ३६ से ४६, ५४,
५६ से ६६, ७०, ७६, ७८, ८०, ८३, ८५, ८६, ८८,
१०५, १४१ से १५१; ३१४८, १४९, १६४

इत्थीलिंगसिद्ध [स्त्रीलिंगसिद्ध] जी० ११८

इदानी [इदानीम्] जी० ३१८४३

इंभ [इंभ्य] ओ० २३, ५२, ६३. रा० ६८७ से
६८९, ६९५, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४.
जी० ३१६०६

इन्मपुत्त [इन्मपुत्त] रा० ६८८, ६८९, ६९५
 इम [इदम्] ओ० ७. जी० ११०
 इयार्णि [इदानीम्] ओ० ११७. रा० ७५३
 इरियासमिय [ईर्यासमित] ओ० २७, १५२, १६४
 इव [इव] ओ० २३. रा० ७०. जी० ३४४८
 इसिपरिसा [ऋषिपरिषद्] ओ० ७१. रा० ६१,
 ७६७
 इसिवादिय [ऋषिवादिक] ओ० ४९
 इह [इह] ओ० २१. रा० ६८७. जी० १११
 इहं [इह] ओ० २१. रा० ६८७.
 जी० ३११९

इहगत [इहगत] रा० ८
 इहगय [इहगत] ओ० २१. रा० ७१४
 इहभव [इहभव] ओ० ५२. रा० ६८७
 इहलोग [इहलोक] ओ० २९

ई

ईयाल [एकचत्वारिंशत्] जी० ३१७३६
 ईरियासमिय [ईर्यासमित] रा० ८१३
 ईसत्थ [इवस्त्र] ओ० १४६. रा० ८०६
 ईसर [ईश्वर] ओ० १८, २२, ६३, ६८. रा० २८२,
 ६८७, ६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४.
 जी० ३१३५०, ४४८, ५६३, ६०९, ६३७, ७२३
 ईसा [ईषा] जी० ३२५४
 ईसाण [ईशान] ओ० ५१, १९०, १९२.
 जी० ११५९; २१९, ४७, ९६, १४८, १४९;
 ३१९९, ९२१, १०३८, १०४३, १०४४, १०५७,
 १०६५, १०६७, १०७१, १०७३, १०७५, १०७७
 से १०८३, १०८५, १०८७, १०९०, १०९१,
 १०९३, १०९७ से १०९९, ११०१, ११०५,
 ११०७, ११०९ से १११२, १११४, १११५,
 १११७, १११९, ११२१, ११२२, ११२४, ११२८
 ईसानण [ईशानक] जी० ३११०४३
 ईसि [ईषत्] ओ० १३. रा० ४. जी० ३२६५
 ईसिणिग्या [ईशानिका] ओ० ७०. रा० ८०४
 ईसी [ईषत्] ओ० ४७
 ईसीपम्भारा [ईषत्प्राग्भारा] ओ० १९१ से १९५

ईहा [ईहा] ओ० ११९, १५६. रा० ७४०
 ईहामइ [ईहामति] रा० ६७५
 ईहामिअउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नररुह-
 सरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचिसा
 [ईहामृगवृषभतुगनरमकरविहगवालयक-
 किन्नररुहसरभचमरकुंजरवनलतापवालता
 भत्तिचित्र] रा० ८३
 ईहामिय [ईहामृग] ओ० १३. रा० १७, १८, २०,
 ३२, ३७, १२९. जी० ३१२८८, ३००, ३११, ३७२

उ

उ [तु] जी० २११५१
 उंवर [उदुम्बर] जी० ११७२
 उंवरपुष्प [उदुम्बरपुष्प] रा० ७५० से ७५३
 उक्कंचण [दे०] रा० ६७१
 उक्कंचणया [दे०] ओ० ७३
 उक्कलियावाय [उत्कलिकावात] जी० ११८१
 उक्कस [उत्कर्ष] जी० ५१२८
 उक्का [उत्का] रा० ७०, १३३. जी० ११७८;
 ३१११८, ३०३, ५९०, ११२३
 उक्कापात [उत्कापात] जी० ३१६२६
 उक्कामुह [उत्कामुख] जी० ३१२१६, २२६
 उक्किट्ट [उत्कृष्ट] ओ० ५२. रा० १०, १२, ५६,
 २७९, ६८७, ६८८. जी० ३१८६, १७६, १७८,
 १८०, १८७, ४४५, ८४२, ८४५
 उक्किट्टि [उत्कृष्टि] जी० ६१४४७
 उक्किट्टिया [उत्कृष्टिका] रा० २८१
 उक्किरिज्जसाण [उत्कीर्यमाण] रा० ३०.
 जी० ३१२८३
 उक्कुडुयासणिय [उत्कुट्टकासनिक] ओ० ३६
 उक्कोडिय [औत्कोटिक] ओ० १
 उक्कोस [उत्कर्ष] ओ० ९४, ९५, ११४, १५५, १५७,
 १५९, १६०, १६२, १६७, १८७, १८८, १९५५.
 जी० १११६, ५२, ५९, ६५, ७४, ७९, ८२, ८६ से
 ८८, ९०, ९४, ९६, १०१, १०३, १११, ११२, ११६,
 ११९, १२१, १२३ से १२५, १३०, १३३, १३५

से १४०, १४२; २।२० से २२, २४ से ५०,
५३, से ६१, ६३, ६५ से ६७, ७३, ७६, ८२ से
८४, ८६ से ८८, ९० से ९३, ९७ १०० से १११,
११३, ११४, ११६ से १३३, १३६; ३।८६, ८९,
९१, १०७, ११८ से १२०, १२६।२, १३६, १६१,
१६२, १६५, १७६, १७८, १८०, १८२, १८६ से
१९२, २१८, ६२६, ८४४, ८४७, ८६०, ८६६,
१०२२, १०२७ से १०३६, १०८३, १०८४,
१०८७, १०८९, ११११, ११३१, ११३२, ११३४
से ११३७; ४।३ से ११, १६, १७; ५।५, ७, ८,
१० से १६, २१ से २४, २८ से ३०; ६।२, ३,
६, ८ से ११; ७।३, ५, ६, १०, १२ से १८;
६।२ से ४, २३ से २६, ३१, ३३, ३४, ३६, ४०, ४१,
४३, ४७, ४९, ५१, ५२, ५७ से ६०, ६८ से ७३,
७७, ७८, ८०, ८३, ८५, ८६, ९०, ९२, ९३, ९६, ९७,
१०२, १०३, १०५, १०६, ११४, ११५, ११७, ११८,
१२३ से १२८, १३२, १३४, १३६, १३८, १४२,
१४४, १४६, १४९, १५०, १५२, १५३, १६० से
१६२, १६४, १६५, १७१ से १७३, १७६ से १७८,
१८६ से १९१, १९३, १९४, १९८ से २००,
२०२ से २०४, २०६, २०७, २१० से २१४,
२१६ से २१८, २२२ से २२५, २२८, २२९,
२३४, २३६, २३८, २४१ से २४४, २४६, २५७
से २६०, २६२, २६४, २६६, २७१, २७३, २७७
से २८२

उक्कोसपद [उत्कर्षपद] जी० ३।१६५ से १६७

उक्कोसपद [उत्कर्षपद] जी० ३।१६५

उक्लिप्त [उत्क्षिप्त] रा० ११५, जी० ३।४४७

उक्लिप्ताचरय [उत्क्षिप्तचरक] ओ० ३४

उक्लिप्ताणिक्लिप्तधरय [उत्क्षिप्तनिक्षिप्तचरक]
ओ० ३४

उक्लिप्ताय [उत्क्षिप्तक] रा० १७३, २८१.

जी० ३।२८५

उक्लु [उक्लु] जी० ३।६२१

उक्लेवण [उक्लेपन] ओ० १८०

उग्ग [उग्र] ओ २३, ५२. रा० ६८७ से ६८९, ६९५

उग्गत [उद्गत] जी० ३।३००, ५६५

उग्गतव [उग्रतपस्] ओ० ८२

उग्गपुत्त [उग्रपुत्र] ओ० ५२. रा० ६८७ से ६८९,
६९५

उग्गमणुग्गमणपविभत्ति [उद्गमनोद्गमनप्रविभक्ति]
रा० ८६

उग्गय [उद्गत] रा० १७, १८, २०, ३२, १२६.

जी० ३।२८८, ३७२, ५६०

√उग्गलच्छाव [दे०] — उग्गलच्छावेमि रा० ७५४

उग्गलच्छावित्ता [दे०] रा० ७५४

उग्गह [अवग्रह] रा० ७४०, ७४१

उग्घोसेमाण [उद्घोषयत्] रा० १३, १५

उच्च [उच्च] जी० ३।३१३

उच्चंतग [उच्चन्तक] रा० २६. जी० ३।२७६

उच्चत्त [उच्चत्व] ओ० १८७. रा० ४०, १२७ से

१२६, १३७, १८६, १८९, २०४ से २१२, २२२,

२२७, २३१, २३६, २४७, २५१, २५३.

जी० ३।१२७, २६१ से २६३, ३००, ३०७,

३५२ से ३५५, ३५६, ३६४, ३६८ से ३७४,

३७६, ३८१, ३८६, ३९३, ४०१, ४१२, ४१४,

५६६, ५६७, ६३२, ६३४, ६४६, ६४७, ६५२, ६६१,

६६३, ६७२ से ६७५, ६७६, ६८६, ७०६, ७१३,

७३६, ७३७, ७५६, ७६५, ८३६, ८८२, ८८४,

८८५, ८८७, ८८८, ८९४, ८९८, ९००, ९०७,

९११, ९१८, १०६७, १०६९, १०७०

उच्चार [उच्चार] रा० ७६६

उच्चारण [उच्चारण] ओ० १८२

उच्चारपासवणखेलसिघाणजल्लपारिठ्ठावणियासमिय

[उच्चारप्रसवणखेलसिघाणजल्लपारिठ्ठापनि-

कीसमित] ओ० २७, १५२, १६४. रा० ८१३

उच्चावय [उच्चावच] ओ० १४०, १५४, १६५,

१६६. रा० ७६६, ८१६. जी० ३।२३६, ६८२

उच्छंण [उत्सङ्ग] ओ० ६४

√उच्छल [उत् + शल्] — उच्छलेति रा० २८१.

जी० ३।४४७

उच्छलंत [उच्छलत्] ओ० ४६

उच्छायणया [उच्छादना] रा० ६७१
 उच्छु [इक्षु] ओ० १. जी० ३।८७८, ६६१
 √उच्छुभ [उत् + क्षिप्] — उच्छुभइ. रा० ७८५
 उच्छुड [उत्क्षिप्त] ओ० १६. जी० ३।५६६
 उच्छुडसरीर [उत्क्षिप्तशरीर] ओ० ८२. रा० ६८६
 उच्चम [उचम] ओ० ४६
 उच्चल [उच्चल] ओ० ५, ८, १६, ५७. रा० ३२,
 ६६, ७०, २४६, ७६५. जी० ३।११०, १११,
 ११७, २७४, ३७२, ४१०, ५८६ से ५६१, ५६६
 उज्जान [उद्यान] ओ० १, ३७. रा० १२, ६५४,
 ६५५, ६७०, ७०६, ७११, ७१३, ७१६, ७१६,
 ७२६. जी० ३।५५४
 उज्जानपालग [उद्यानपालक] रा० ७०७, ७१३, ७१४
 उज्जानपालय [उद्यानपालक] रा० ७०६
 उज्जानभूमि [उद्यानभूमि] रा० ७३२, ७३७, ७४७
 उज्जालिय [उज्जालित] जी० ३।५८६
 उज्जु [ऋजु] ओ० १६, ४७. जी० ३।५६६, ५६७
 उज्जुमइ [ऋजुमति] ओ० २४. रा० ७४४
 उज्जुय [ऋजुक] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७
 उज्जुसेढी [ऋजुश्रेणी] ओ० १८२
 उज्जोइय [उद्योतित] जी० ३।५६८
 उज्जोएमाण [उद्योतयत्] जी० ३।३०३
 उज्जोय [उद्योत] ओ० १२. रा० २१, २३, २४,
 ३२, ३४, ३६, १२४, १४५, १५७, २२८, २५७.
 जी० ३।२६१, २६६, २६६, २७७, ३८७, ५८६,
 ५६०, ६७२
 √उज्जोव [उद् + व्युत] — उज्जोवेइ. रा० ७७२,
 जी० ३।३२७ — उज्जोवेति. रा० १५४. जी०
 ३।३२७ — उज्जोवेति. रा० १५४ जी० ३।७४१
 उज्जोविय [उद्योतित] ओ० ५१, ६३, ६५
 उज्जोवेमाण [उद्योतयत्] ओ० ४७, ७२. रा० ७०,
 १३३. जी० ३।११२१, ११२२
 उट्ट [उट्ट] ओ० १०१, १२४. जी० ३।६१८
 उट्टियासमण [उट्टिकाश्रमण] ओ० १५८
 उट्टी [उट्टी] जी० ३।६१६

√उट्टा [उत् + ष्ठा] — उट्टेइ. ओ० ७८. रा० ६६५
 — उट्टेति. ओ० ८१. — उट्टेति. रा० ६०
 उट्टा [उत्था] ओ० ७८. ८०. ८१, ८३. रा० ६०, ६२,
 ६६५, ७००, ७१८, ७८०
 उट्टिय [उत्थित] ओ० २२. रा० ७७७, ७७८,
 ७८८
 उट्टेसा [उत्थाय] ओ० ७८. रा० ६०
 उट्टव [उटज] तासणगृह जी० ३।७८
 √उट्ट [दे०] — उट्टइज्जइ. रा० ७८५
 उट्टवइ [उट्टपति] ओ० १६
 उट्टवति [उट्टपति] जी० ३।५६६
 उट्ट [उट्ट] ओ० ११६. १८२, १६२. रा० १२४,
 १२७ से १२६, १३७, १८६, १८६, २०४ से २१२,
 २२२, २२७, २३१, २३६, २४७, २५१, २५३,
 ७५३. जी० १।४५; ३।२५७, २६१ से २६३,
 ३००, ३०७, ३५२ से ३५५, ३५६, ३६४, ३६८
 से ३७४, ३७६, ३८१, ३८६, ३८६, ४०१, ४१२,
 ४१४, ५६६, ६३२, ६३४, ६४६, ६४७, ६६१,
 ६६३, ६७२ से ६७५, ६७६, ६८६, ७०६, ७१३,
 ७३६, ७३७, ७५६, ८३८, ८३८, ८४२, ८४५,
 ८८२, ८८४, ८८५, ८८७, ८८८, ८८४, ८८८,
 ९००, ९०७, ९११, ९१८, ९०३८, ९०६७, ९०६६,
 ९०७०, ११११
 उट्टंजाणु [उट्टंजानु] ओ० ४५. ८२
 उट्टंवाय [उट्टंवात] जी० १।८१
 उट्टीमुह [उट्टी'मुख] जी० ३।८४२
 उष्णइय [उन्नतिक] ओ० ६ जी० ३।२७५, २८६,
 ६३६, ८५७, ८६३
 उष्णत [उन्नत] रा० २४५
 √उष्णम [उत् + नम्] — उष्णमंति. रा० ७५
 उष्णमिता [उन्नम्य] रा० ७५
 उष्णय [उन्नत] ओ० १, १६. जी० ३।४०७, ५६६,
 ५६७
 उष्णयासण [उन्नतासन] रा० १८१, १८३.
 जी० ३।२६३

✓उष्णाम [उद्-+नामय्]—उष्णामिज्जह.

जी० ३।७२६

उष्ण [उष्ण] ओ० ११७. रा० ७२८, ७६६.

जी० ३।११८, ११९

उत्ताप [उत्ताप] रा० ७३२, ७३७

उत्तम [उत्तम] ओ० २३, ५१. रा० २६२.

जी० ३।४५७, ५६२, ५६६ से ५६८

उत्तमंग [उत्तमाङ्ग] जी० ३।५६६

उत्तर [उत्तर] ओ० २१. रा० १६, ४०, ४१, ४४.

१३२, १७०, १७३, २१०, २१२, २३५, २३६,

६५८, ६६४, ६८५, ७६५, ८०२. जी० २।४८;

३।५, २२, २७, ६३, ६६ से ७२, ७७, २२६, २२७,

२३२, २५७, २६५, २८५, ३३६, ३४५, ३५८,

३७३, ३६७, ३६८, ५५८, ५६२, ५६६, ५६६,

५७७, ५६५, ५६७, ६०१, ६६५, ६३८, ६३६,

६४७, ६५७, ६६०, ६६१, ६६५, ६६६, ६७३,

६८०, ६८२, ६८६, ६८२, ६८५, ६८६, ७०१,

७११, ७१३, ७२२, ७३६, ७४५, ७४७, ८१२,

८३६, ८८२, ८८५, ९०२, १००४, १००६, १०१५

उत्तरंग [उत्तरङ्ग] रा० १३०. जी० ३।३००

उत्तरकुरा [उत्तरकुरु] जी० २।१३; ३।५७८, से

५६७, ६०५ से ६२८, ६३१, ६३२, ६३६, ६६६,

६६८, ७०२

उत्तरकुरा [उत्तरकुरा] जी० ३।६१६, ६३७

उत्तरकुरु [उत्तरकुरु] जी० २३३, ६०, ७०, ७२,

६६, १३७, १३८, १४७, १४६; ३।२१८, २२८,

७६५

उत्तरकुब्रह [उत्तरकुब्रह] जी० ३।६६६

उत्तरकूलग [उत्तरकूलक] ओ० ६४

उत्तरतर [उत्तरतर] ओ० ७६ से ८१

उत्तरपञ्चस्थिम [उत्तरपाञ्चात्य] जी० ३।२२५,

६८८, ७५३

उत्तरपञ्चस्थिमिल्ल [उत्तरपाञ्चात्य] जी० ३।२२१,

६६६, ६६७, ६१८, ६२२

उत्तरपासग [उत्तरपाश्वक] रा० १३०

उत्तरपासय [उत्तरपाश्वक] जी० ३।३००

उत्तरपुरस्थिम [उत्तरपौरस्थ] ओ० २. रा० २,

१०, १२, १८, ४१, ५६, ६५, २०६, २४६, २५१,

२६०, २६२, २६५, २६७, २६६, २७२, २७३,

२७६, ६५८, ६७०, ६७८. जी० ३।३३६, ३७२,

४०८, ४१२, ४२१, ४२५, ४२६, ४३१, ४३४,

४३७, ४३८, ४४५, ५५८, ६३५, ६५७, ६६८,

६८०, ६८३, ७५०

उत्तरपुरस्थिमिल्ल [उत्तरपौरस्थ] जी० ३।२१७,

२२२, ५५६, ६८६, ६८६, ६९८, ६९९.

उत्तरमंदा [उत्तरमन्दा. उत्तरमन्दा] रा० १७३.

जी० ३।२८५

उत्तरवेज्जि [उत्तरवेज्जि] रा० १०, ४७.

जी० १।६४, ६६, १३५, १३६; ३।६१, ६३, ४४६,

१०८७, १०८८, १०६१, ११२१, ११२२

उत्तरागार [उत्तराकार] रा० १६५

उत्तरासंग [उत्तरासङ्ग] ओ० २१, ५४. रा० ८,

७१४

उत्तरासंगकरण [उत्तरासङ्गकरण] ओ० ६६.

रा० ७७८

उत्तरिज्ज [उत्तरीय] ओ० ६३

उत्तरित्तए [उत्तरीतुम्] ओ० १२२

उत्तरिल्ल [औदीच्य, औत्तराह] रा० ४८, ५६,

५७, २६७, ३०२, ३०७, ३१३ से ३१६, ३१८,

३२१ से ३३१, ३३६, ३४१ ३४६, ३७६, ३६४,

४३५, ४५३, ४६६, ५१४, ५५६, ५७४, ६१६,

६३४. जी० ३।३३, ३६, ३८, २२७, २४०, २४८,

२५०, २५६, ४६२, ४६७, ४७२ ४७८ से ४८१,

४८३, ४८६ से ४८६, ५०१, ५०६, ५११, ५२३,

५२४, ५२६, ५३०, ५३७, ५३८, ५४४, ५४५,

५५१, ५५२, ६७३, ६६७, ६६८, ६१६

उत्ताणग [उत्ताणक] ओ० १

उत्ताणयल्ल [उत्ताणकल्ल] ओ० १६४

उत्ताल्लिज्जंत [उत्ताड्यमान] रा० ७७

उत्तासणय [उत्तासनक] जी० ३।८३

उत्तामंग [उत्तामाङ्ग] ओ० १६. जी० ३।५६७

उद [उद] जी० ३।२८६

उदक [उदक] जी० ३१५८७
 उदक [उदक] रा० २६. जी० ३१८१६
 उदकजोणिय [उदकयोनि] जी० ३१७८७
 उदग [उदक] ओ० ६३, ११७. रा० १५१, २७६,
 २८१. जी० ३१४४५, ४४७, ७२१, ७२६, ८५४,
 ८५७, ८४६
 उदगत्ता [उदकत्व] जी० ३१७८७
 उदगमच्छ [उदकमत्स्य] जी० ३१६२६, ८४१
 उदगमाल [उदकमाल] जी० ३१७६२
 उदगरस [उदकरस] रा० २३३. जी० ३१२८६,
 ८१६, ८५४, ८५६, ८५७, ८६४
 उदगवारण [उदकवारण] जी० ३१११८
 उदगा [उदग] जी० ३१८३६
 उदधि [उदधि] जी० ३१०६, ५६७
 उदय [उदय] ओ० ३७, ११६, ११७
 उदय [उदक] ओ० ६, १११ से ११३, ११७, १३७,
 १३८. रा० ६, २८०, २८२, २८१, ३५१.
 जी० ३१३२४, ४४६, ४४८, ७२६, ८६०, ८६६,
 ८७२, ८७८, ८४६, ८५५, ८५७, ८६१
 उदयपत्त [उदयप्राप्त] ओ० ३७
 उदर [उदर] जी० ३१५६६
 उदहि [उदधि] ओ० ४८
 √उदि [उद् + इ] — उदेति. जी० ३१७६
 उदीण [उदीर्चन] रा० १२४. जी० ३१५७७,
 १०३६
 उदीणवाय [उदीचीनवात] जी० ११८१
 √उदीर [उद् + ईरय्] — उदीरइ. रा० ७७१.
 — उदीरेति, जी० ३१११०
 उदीरंत [उदीरयत्] रा० ७७१
 उदीरण [उदीरण] ओ० ३७
 उदीरिय [उदीरित] रा० १७३, ७७१.
 जी० ३१२८५
 उदु [ऋतु] जी० ३१६४१
 उद्दङ्ग [उद्दङ्क] ओ० ६४
 उद्दवणकर [उद्दवणकर] ओ० ४०
 उद्देत्ता [उद्देत्य] रा० ७६१

उद्दा(ण) [दे०] जी० ३१८७२
 उद्दाइत्ता [अवद्राय, अवद्रुत्य] जी० ३१५७५
 उद्दाल [अवदाल] रा० २४५. जी० ३१४०७
 उद्दाल [उद्दाल] जी० ३१६३१
 उद्दालक [उद्दालक] जी० ३१५८२
 उद्दिष्ट [उद्दिष्ट] जी० ३१८३८, २५
 उद्दिष्टा [दे० उद्दिष्टा] ओ० १२०, १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६. जी० ३१७२३, ७२६
 उद्देसिय [औद्देशिक] ओ० १३४
 उद्देसणा [उद्देसणा] रा० ७६६
 उद्देसित्त [उद्देसितुम्] रा० ७६६
 उद्देमत [उद्देमत] जी० ३१७३१
 उद्देममाण [उद्देममाण] ओ० ४६
 उद्दायमाण [उद्दायवत्] ओ० ४६
 उद्दार [उद्दार] जी० ३१६७३
 उद्दारसमय [उद्दारसमय] जी० ३१६७३
 उद्दारसागरोवम [उद्दारसागरोपम] जी० ३१६७३
 उद्दिष्य [उद्दिष्ट] ओ० १४. रा० ६७१
 उद्ध्यु [उद्ध्युत] ओ० २, ५५, ६४. रा० ६, १२३२,
 ५०, ५२, ५६, १३२, १३७, २३१, २३६, २४७,
 २८१. जी० ३१८६, १७६, १७६, १८०, १८२,
 ३०२, ३०७, ३७२, ३६३, ३६८, ४४५, ४४७,
 ४५१
 उद्ध्युमंत [उद्ध्युमायमान] रा० ७७
 उद्ध्युवमाण [उद्ध्युमान] ओ० ६५
 उद्ध्यु [उद्ध्युत] रा० १०, १२, ५६, २७६
 उन्नइय [उन्नतिक] जी० ३१११८, ११६
 उन्नय [उन्नत] ओ० १६ जी० ३१५६७, ५६८
 उपपुय [उपप्लुत] जी० ३१११६
 उपपइत्ता [उत्पत्य] ओ० १६२. जी० ३११०३८
 उपपण [उत्पन्न] ओ० १६६. रा० ७७१
 उपपणकोऊहल्ल [उत्पन्नकोऊहल्ल] ओ० ८३
 उपपणसंसय [उत्पन्नसंशय] ओ० ८३
 उपपणसद् [उत्पन्नश्रद्ध] ओ० ८३
 उपपत्ति [उत्पत्य] जी० ३१२५७

उत्पत्ति [उत्पत्ति] ओ० १८४

उत्पत्तिया [औत्पत्तिकी] रा० ६७५

√उत्पद्य [उत्+पत्]—उत्पद्यंति. रा० २८१.

जी० ३१४४७

उत्पल [उत्पल] ओ० १२, २२, १५०. रा० २३,
१३१, १४७, १४८, १७४, १६७, २७६ से २८१,
२८८, २८९, ७२३, ७७७, ७७८, ७८८.

जी० ३११८, ११६, २५६, २६६, २८६, २८९,
३०१, ४४५, ४४७, ४५४, ४५५, ५६८, ६३७,
६५६, ६६४, ७३८, ७४३, ७५०, ७६३, ७६५,
७७५, ८४१, ८३७

उत्पलगुम्भ [उत्पलगुल्म] जी० ३१६८६

उत्पलवैट्टिय [उत्पलवृत्तिक] ओ० १५८

उत्पला [उत्पला] जी० ३१६८६

उत्पलुज्जला [उत्पलोज्ज्वला] जी० ३१६८६

उत्पाइत्ता [उत्पाद्य] जी० ११५०

उत्पाइयपञ्चय [औत्पातिकपर्वत] ओ० ५७

√उत्पाड [उत्+पाद्य]—उत्पाडेंति ओ० १६६

उत्पाडवय [उत्पाटना] ओ० १०३, १२६

उत्पातपञ्चतम [उत्पातपर्वतक] जी० ३१६४८

उत्पातपञ्चय [उत्पातपर्वत] जी० ३१८५७

उत्पाव [उत्पाव] जी० ३१६१७

उत्पाय [उत्पाद] जी० ३११२६।१०

उत्पायनिर्वायपसत्त [उत्पादनिर्वातप्रसक्त]

रा० १११, २८१. जी० ३१४४७

उत्पायपञ्चत [उत्पातपर्वत] जी० ३१२६३

उत्पायपञ्चय [उत्पातपर्वत] रा० १८१. जी०
३१२६२, ८५७

उत्पायपञ्चयन [उत्पातपर्वतक] रा० १८०

उत्पि [उपरि] ओ० १६८. रा० २१. जी० ३१८०

उत्पिञ्जलभूत [उत्पिञ्जलभूत] रा० ७८

√उत्पील [उत्+पीड]—उत्पीलेति. जी०
३१७६५

उत्पीलिय [उत्पीडित] ओ० ५७. रा० ६६, ६६४,
६८३. जी० ३१५६२

उत्फेस [दे०] ओ० ६६

√उत्भाम [उद्+भ्रामय]—उत्भामेद्.

रा० ७२७

उत्भिज्जमान [उद्भिद्यमान] जी० ३१२८३

उभओ [उभतस्] ओ० ६६, ११५. रा० १३१ से
१३८, २४५, २५६, २७६. जी० ३१३०१ से
३०७, ३१५, ३५५, ४०७, ४१७, ६३२, ६३६,
७८८ से ७६०, ८३६

उभय [उभय] जी० ३१४४५

उभयओ [उभयतस्] जी० ३१८८६

उन्मज्जग [उन्मज्जक] ओ० ६४

उन्माण [उन्मान] ओ० १५, १४३. रा० ६७२,
६७३, ८०१

उन्मि [ऊर्मि] रा० ६८७

उन्मिसित [उन्मीलित] जी० ३१३०७

उन्मिलिय [उन्मीलित] ओ० २२. रा० १३७,
७२३, ७७७, ७७८, ७८८

उन्मिसिय [उन्मिषित] जी० ३११८, ११६

उन्मुक्क [उन्मुक्त] ओ० १६५।२० रा० ८०६,
८१०

उयगरस [उदकरस] रा० १७४

उयर [उदर] ओ० १६

उर [उरस्] ओ० ७१. रा० ६१, ७६

उरग [उरग] जी० ३१८८

उरगपरिसण्य [उरगपरिसर्प] जी० २११३३

उरत्थ [उरःस्थ] जी० ३१५६३

उरपरिसण्य [उरःपरिसर्प] जी० ११०४, १०५,
१११, १२२ से १२४; २१२४, १२२; ३१४३,
१४४, १६२

उरपरिसण्यी [उरःपरिसर्पिणी] जी० २१७, ८, ५२

उरम्भ [उरभ्र] रा० २४, २७. जी० २१२७७, २८०

उरस्स [ओरस्य] रा० १२, ७५८, ७५६.

जी० ३१११८

उराल [दे० उदार] रा० ४०, ७८, १३२, १७३,
७५३

उल्ल [आर्द्र] रा० ७५३

√उल्लंघ [उत् + लङ्]—उल्लंघेज्. ओ० १८०

उल्लंघण [उल्लङ्घन] ओ० ४०

√उल्लाल [उत् + लाल्]—उल्लालेति. रा० १४

उल्लालिय [उल्लालित] रा० १४

उल्लालेमाण [उल्लालयत्] रा० १३

उल्लिहिय [उल्लिखित] ओ० १५ रा० ६७२

उल्लोड्य [दे०] ओ० २, ५५. रा० ३२, २८१.

जी० ३१३७२, ४४७

उल्लोग [उल्लोक] जी० ३१३५५, ८८८

उल्लोय [उल्लोक] रा० ३४, ६६, १३०, १६४,
१८६, २०४ से २०७, २१३, २१६, २६७, २५१,
२६०. जी० ३१३००, ३०८, ३३७, ३५६, ३५६,
३६४, ३६८ से ३७१, ३७४, ३६६, ४१२, ४२१,
४२६, ६३४, ६४८, ६७३, ६०४

उवइय [उपचित] ओ० १६. जी० ३१५६६

उवउत्ता [उपगुत्त] ओ० १८२ से १८४, १६५, १११.

रा० १५. जी० ११३२, ८७, १३२, १३३;

३१०६, १५४, १११०; ६१३६, ३७

उवएस [उपदेश] ओ० ५७. रा० ७४८ से ७५०,
७६५, ७६६, ७७०, ७७३

उवएसरुड [उपदेशरुचि] ओ० ४३

उवओग [उपयोग] ओ० ४६. जी० ११४, ६६,
१०१, ११६, १२८, १३३, १३६; ३१२७, ४,
१६०; ६१६६

उवकरण [उपकरण] ओ० ३३

उवकरणत्त [उपकरणत्व] जी० ३११२८, ११३०

उवकारियलयण [उपकारिकालयन] रा० १८६

√उवकखड [उप + कृ]—उवकखडावेसंति.
रा० ८०२

उवकखड [उपस्कृत] जी० ३१५६२

उवकखडावेत्ता [उपस्कृत्य] रा० ७८७

उवग [उपग] जी० ३१८३, २१

उवगत [उपगत] रा० ७६०. जी० ३१११६, ३०३

उवगय [उपगत] ओ० ६३, ७४, १६५, १६५, १३३.

रा० १२, १३३, ६८६, ७३२, ७३३, ७३७, ७५८,
७५६, ७६१, ७६५. जी० ३१११८

उवगरण [उपकरण] ओ० ३३. रा० ७५६, ७६१

उवगाइज्जमाण [उपगीयमान] रा० ६८५, ७१०,
८०४

उवगारियालयण [उपकारिकालयन] रा० १८८.
जी० ३१३६१ से ३६४

उवगिज्जमाण [उपगीयमान] रा० ७७४

उवगूढ [उपगूढ] रा० ७६, १७३. जी० ३१२८५

उवगूह्णमाण [उपगूह्यमान] रा० ८०४

उवचय [उपचय] रा० ७५२, ७५३

उवचित [उपचित] जी० ३१२५६

उवचिय [उपचित] ओ० २, १६, ५५. रा० २०,
३२, ३७, १३०, १७४, २८१. जी० ३१११८
११६, २८६, २८८, ३००, ३११, ३७२, ४४७, ५६६

उवच्छड [उपस्तुत] रा० ७७४

उवजुंजिऊण [उपगुज्य] जी० ३१७७

उवज्जाय [उपाध्याय] ओ० ४०, १५५

उवज्जायवेयावच्च [उपाध्यायवेयावृत्त्य] ओ० ४१

√उवट्ठव [उप + स्थापय्]—उवट्ठवेइ. रा० ७२५
—उवट्ठवेति. रा० २७६. जी० ३१४४५

उवट्ठवेत्ता [उपस्थापय] ओ० ५८. रा० ६८१

उवट्ठाणसाला [उपस्थानशाला] ओ० १८, २०, ५३,
५५, ५८, ६२, ६३. रा० ६८३, ६८५, ७०८,
७५४, ७५६, ७६२, ७६४

उवट्ठाविय [उपस्थापित] ओ० ६२

उवट्ठिय [उपस्थित] ओ० ७६, ७७

उवणगरग्गाम [उपनगर्य म] ओ० १६, २०

उवणच्छिज्जमाण [उपनृच्यमान] रा० ७१०, ७७४,
८०४

उवणिमाय [उपनिर्गत] ओ० ५, ८

√उवणिमंत [उप + नि + मन्त्रय्]—उवणिमंति-
ज्जाह. रा० ७०६ - उवणिमंतिस्संति. रा०
७०४—उवणिमंतेज्जा. रा० ७७६.

—उवणिमंतेइति ओ० १४६. रा० ८१०

उवणिविट् [उपनिविष्ट] रा० १३८. जी० ३१२८८

√उवणी [उप+नी]—उवणेइ. रा० ६८३
 —उवणेति. रा० २८७. जी० ३४५०
 —उवणेहि. रा० ६८०—उवणेहिइ. रा० ८०७
 —उवणेहिओ० १४५. रा० ८०५—
 उवणेहिओ० १४६
 उवणीत [उपनीत] जी० ३१८८
 उवणीय [उपनीत] रा० ७२०, ७२३. जी०
 ३१५६२, ६०१
 उवणीयउवणीयचरय [उपनीतउपनीतरचरक]
 ओ० ३४
 उवणीयचरय [उपनीतचरक] ओ० ३४
 उवणेय [उपनेय] रा० ७२०
 √उववंस [उप+दर्शय]—उवदंसिस्सामि. रा०
 ७७१—उवदंसंति. रा० ७६. जी० ३१४४७
 —उवदंसेह. रा० ७३
 उवदंसितए [उपदर्शयितुम्] रा० ६३
 उवदंसिता [उपदर्शय] रा० ७३
 उवदंसेमाण [उपदर्शयत्] रा० ५६
 उवदिट्ट [उपदिष्ट] ओ० ४६
 उवद्व [उपद्व] जी० ३१६२४
 उवनच्चिज्जमाण [उपनृत्यमाण] रा० ६८५
 √उवनिमंत [उप+नि+मन्त्रय]—उवनिमंतंति.
 रा० ७१३
 उवनिविट्ट [उपनिविष्ट] रा० २०
 उवपयाण [उपप्रदान] रा० ६७५
 उवभोगपरिभोगपरिमाण [उपभोगपरिभोग-
 परिमाण] ओ० ७७
 उवमा [उपमा] ओ० १३, २३, १६५, १६. रा०
 १५६, ७५२, ७५४, ७५६, ७५८, ७६०, ७६२,
 ७६४. जी० ३१२७, २३२
 उवमा [दे०] खाल-विशेष जी० ३१६०१
 उवयार [उपचार] ओ० २, १५, ५५. रा० १२, ३२,
 ७०, २८१, २८१, २८३ से २८६, ३००, ३०५,
 ३१२, ३५४, ६७२, ८०६, ८१०. जी० ३७२,
 ४४७, ४५७ से ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६,
 ५२०, ५५४, ५८०, ५८१, ५८७
 उवयारियालयण [उपकारिकालयन] रा० २०३

उवयारियालेण [उपकारिकालयन] रा० २०१,
 २०२
 उवरि [उपरि] रा० १३०. जी० ३१२६४
 उवरि [उगि] ओ० १२. रा० ३७. जी० ३१७७
 उवरिचर [उपरिचर] जी० ३११७
 उवरिम [उपरितन] ओ० १६०. जी० ३१७१, ७२,
 ३१७, ३४६, ३५७
 उवरिमगेवेज्ज [उपरितनप्रवेय] जी० २१६६
 उवरिमगेवेज्ज [उपरितनप्रवेय] जी० २१४८, १४९
 उवरिमगेवेज्ज [उपरितनप्रवेय] जी० ३१०५६
 उवरिल्ल [उपरितन] ओ० १६२, १६५. जी०
 ३१६० से ७०, ७२, ६७४, ७२५, ७२८, १००३ से
 १००७, ११११
 √उवलंभ [उप+लभ]—उवलंभज्जा. जी०
 ३१११८—उवलंभिस्साम. रा० ७६८
 उवलद्ध [उपलब्ध] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,
 ७५२, ७८६
 उवलालिज्जमाण [उपलाल्यमाण] रा० ६८५,
 ७१०, ७७४, ८०४
 √उवलिप [उप+लिप्]—उवलिप्पइ. ओ० १५०.
 रा० ८११—उवलिप्पिहिति. ओ० १५०. ८११
 उवलित्त [उपलिप्त] ओ० ५५, ६० से ६२. रा०
 २८१, ८०२. जी० ३१४४७
 उवलेवण [उपलेपन] रा० ७७३
 √उववज्ज [उप+पद्]—उववज्जइ. ओ० ८७
 —उववज्जंति. ओ० ७३. जी० १५१
 —उववज्जिहिति ओ० १४०—उववज्जिहिसि
 रा० ७५०
 उववण [उपपन्न] ओ० ११७. रा० २७६, ७५०
 से ७५३, ७६६. जी० ३१५३, ११७, १२६, ५,
 ४३६, ४४०, ४४५, ८३८, ८३९, ८४३, ८४६
 उववणगा [उपपन्नक] रा० २७६ से २७८, २८४,
 २८७, ६६६. जी० ३१४४३ से ४४५, ८४२,
 ८४५
 उववणपुव [उपपन्नपूर्व] जी० ३१५३, ६७५,

११२८, ११३०
 उववत्तु [उपपत्तु] ओ० ७२, ८६ से ६५, ११४,
 १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७
 उववन्नपुण्य [उपपन्नपूर्व] जी० ३११२७
 उववात [उपपात] जी० १११२८; ३१८८, ८४४,
 ८४७, ८५६, ८८०, ८४६, १०८२
 उववातसभा [उपपातसभा] रा० २७४. जी०
 ३४३६
 उववाय [उपपात] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७,
 १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७. रा० ८१५.
 जी० १११४, ५१, ५६, ६५, ७६, ८२, ८७, ६६,
 १०१, ११६, १३३, १३६; ३११२७, ३११६६,
 १६०
 उववायसभा [उपपातसभा] रा० २६०, २६२,
 २६६, २७७, ४१४ से ४१६, ४३५, ४५३, ४५४,
 ७६६. जी० ३१४२१, ४२४, ४२५, ४४३, ५२६
 से ५३१
 उवविनिगय [उपविनिर्गत] जी० ३१२७४
 √उवविस [उप+विश्]—उवविसइ. रा० ७४८
 —उवविसामि. रा० ७४७
 उववेत [उपपेत] जी० ३१६०१, ६०२, ८६०, ८६६,
 ८७२, ८७८
 उववेय [उपपेत] ओ० १, १५, १४३. रा० ६६, ७०,
 १७३, ६७२, ६७३, ६७५, ८०१. जी० ३१२८५,
 ५८६ से ५८६
 उवसंत [उपशान्त] ओ० ६१. रा० ६, १२, २८१.
 जी० ३१४४७, ७६५, ८४१
 उवसंतया [उपशान्तता] ओ० ११६
 उवसंपज्जितारणं [उवसंपद्य] ओ० ३७. रा०
 ६६६. जी० ३१८४३
 उवसग्ग [उपसर्ग] ओ० ११७, १५४, १६५, १६६.
 रा० ७०३, ७६६, ८१६
 उवसम्म [उपशम] ओ० ७६ से ८१
 √उवसम्म [उप+शम्]—उवसम्मति रा० १२
 —उवसम्मति रा० १२

उवसमिस्सा [उपशम्य] रा० १२
 उवसमिस्सा [उपशम्य] रा० १२
 उवसोभित [उपशोभित] जी० ३१२६५, ३०२,
 ३४६
 उवसोभिय [उपशोभित] ओ० ६४. रा० २४, ४०,
 ५१, १२८, १३२, १६५, १७१, २३७. जी०
 ३१३०६, ३५३, ३५७, ३६०
 उवसोभेमाण [उपशोभमान] रा० ४०, १३२,
 १३५, १६१, २३६, ७८२. जी० ३१२६५, ३०२,
 ३०५, ३१३, ३६८, ५८०, ५८१
 उवसोहिय [उपशोभित] जी० ३१२७७
 उवस्सय [उपाख्य] रा० ७१६
 उवहण [उपधान] ओ० ३०
 उवहिविउत्सग्ग [उपधिव्युत्सर्ग] ओ० ४४
 √उवागच्छ [उप+आ+गम्]—उवागच्छइ.
 ओ० २०. रा० ४७. जी० ३१४५७
 —उवागच्छति. ओ० ५२. रा० १०.
 जी० ३१४४२—उवागच्छति रा० १४.
 जी० ३१४४३—उवागच्छामि. रा० ७५४
 उवागच्छिस्सा [उपागम्य] ओ० २०. रा० १०.
 जी० ३१४४२
 उवागय [उपागत] ओ० १६, २०
 उवाय [उपाय] ओ० १८२
 उवायण [उपायन] रा० ७२०, ७२३
 √उवालंभ [उप+आ+लम्]—उवालंभइ.
 रा० ७६७
 उवालभित्ता [उपालभ्य] रा० ७६७
 उवासग्गदसाधर [उपासकवशाधर] ओ० ४५
 √उवे [उप+इ]—उवेइ ओ० ११८.—उवेति.
 ओ० ७४. जी० ३१६०३
 उव्वट्ठणा [उद्वर्तना] जी० ११६६; ३११२१, १२७।
 ५, १५६; ६३१।३
 उव्वट्ठित्ता [उद्वर्त्य] जी० ११५४
 उव्वट्ठिय [उद्वृत्त] जी० ३१११८, ११६, १२१
 उव्वलण [उद्वलन] ओ० ६३
 उव्विग [उद्विग्न] ओ० ४६. जी० ३१२१६

उद्विद्ध [उद्विद्ध] ओ० १

उद्वेग [उद्वेग] जी० ३१६२८

उद्वेध [उद्वेध] जी० ३१७३६, ७६४, ६००, ६०१,
६१०, ६११

उद्वेह [उद्वेह] रा० २२७, २३१, २३३, २३६, २४७,
२६२. जी० ३१३८६, ३६३ ३६५, ४०१, ४२५,
६३२, ६३६, ६४२, ६५३, ६६१, ६७२, ६७६,
६८३, ६८६, ७२३, ७२६, ७८८, ७६४, ७६५,
८३६, ८८२, ८९८

उत्सह [उत्सह] रा० १८०

उत्सह्य [उत्सह्य] रा० १८१

उत्सत [उत्सत] ओ० २, ५५. रा० ३२, २८१, २८१,
२८४, २८६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५. जी०
३१३७२, ४४७, ४५६, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०,
४७७, ५१६, ५२०

उत्सभ [ऋषभ, वृषभ] ओ० १३, १६, ५१. रा० १७,
१८, २०, ३२, ३७, १२६, १४१, १६२. जी०
३१२७७, २८८, ३०० ३११, ३१८, ३७२, ५६३,
५६५ से ५६७

उत्सभकण्ठ [ऋषभकण्ठ] रा० १५५, २५८. जी०
३१३२८

उत्सभकण्ठा [ऋषभकण्ठा] जी० ३१४१६

उत्सभज्जय [ऋषभज्जय] रा० १६२. जी० ३१३३५

उत्सभनाराय [ऋषभनाराय] जी० १११६

उत्सभमण्डलप्रविभक्ति [ऋषभमण्डलप्रविभक्ति] रा०
६१

उत्सभा [ऋषभा] रा० २२५. जी० ३१३८४, ८६६

उत्सिण [उत्सिण] जी० ११५; ३१२२, ११२ से ११५,
११६

उत्सिणभूत [उत्सिणभूत] जी० ३१११६

उत्सिणभूय [उत्सिणभूय] जी० ३१११६

उत्सिणवेदना [उत्सिणवेदना] जी० ३१११२, ११४,
११८

उत्सिणवेदनिज्ज [उत्सिणवेदनीय] जी० ३१११८

उत्सिणोदय [उत्सिणोदय] जी० ११६५

उत्सिय [उत्सिय] रा० १३२. जी० ३१२०२

उत्सोर [उत्सोर] रा० ३०. जी० ३१२८३

उत्सु [उत्सु] रा० ७५६. जी० ३१६३१

उत्सृण्ण [उत्सृण्ण] बाहुल्यतः ओ० ८७. जी० ३१६६४

उत्सृण्णिणी [उत्सृण्णिणी] जी० ११३६, १४०;

२८८, १२०; ३१६०, १६५, ८४१, १०८५; ५१८,
६२३, २६; ६१२३, ४०, ६७, २५७

उत्सृण्णिय [उत्सृण्णिय] जी० ३१५८६

उत्सृण्णिय [उत्सृण्णिय] रा० ७५० से ७५३

उत्सास [उत्सास] ओ० १५४, १६५, १६६. रा०
७७२, ८१६. जी० ३११२८

उत्सासत्त [उत्सासत्त] जी० ३११०६६

उत्सिय [उत्सिय] जी० ३१६६६

उत्सुय [उत्सुय] ओ० ५१

उत्सेध [उत्सेध] जी० ३१६७६, ७८६, ७६५, ८६६

उत्सेह [उत्सेह] ओ० १३, ८२. रा० ६, १२, १३०,
२२५, २५४, २७६. जी० ३१३००, ३८४, ४१५,
४४२, ७८६, ७६४

ऊ

ऊण [ऊण] रा० १८८. जी० २१५७, ६१, ७३; ३१५,
३४, ३६, ४१, ४३, ४४, ५६७; ४६; ५१७, २८;
७३, ५६, १०, १२, १५, १७; ६१२ से ४, ४०, ५१,
१७१, २३४, २३६, २३८, २४३, २६६, २७१,
२७३, २७६, २८१

ऊणय [ऊणय] जी० २१३०, ३१, ५८ से ६०, १३६;
३१२१८, ६२६

ऊणय [ऊणय] ओ० ३३. जी० २१३२ से ३४

ऊणिया [ऊणिया] ओ० १६५१६

ऊह [ऊह] ओ० १६. रा० १२, २५४, ७५८, ७५६.
जी० ३१११८, ४१५, ५६६ से ५६८

ऊहजाल [ऊहजाल] जी० ३१५६३

ऊसड [ऊसड] जी० ३१२६२

ऊसविय [ऊसविय] ओ० ६७

ऊसास [ऊसास] ओ० ११७. रा० ७६६.
३१२७३

ऊसासता [उच्छ्वासता] जी० ३।६७
 ऊसित [उच्छ्रित] जी० ३।२१८, ३०७, ३५५, ६३४,
 ६४२, ७५४, ७६२, ७६८, ७७०, ७७२, १००८
 ऊसितोदग [उच्छ्रितोदक] जी० ३ ७८३, ७८४
 ऊसिय [उच्छ्रित] ओ० ४६, ५५, ६४, १६२.
 रा० ५०, ५२, ५६, १३७, १८६, २०४ से २०६,
 २०८, २०९, ७७४, ७८६ जी० ३ ३५६, ३६४,
 ३६८ से ३७१, ४४७, ५६७, ५६८, ६५३, ६७३,
 ७५४, ७६२, ७६६
 ऋच्छज्जय [ऋक्षध्वज] रा० १६२ जी० ३३५

(ए)

एइय [एजित] रा० १७३ जी० ३।२८५
 एऊणपण्ण [एकोनपञ्चाशत्] जी० ३।८३२
 एक [एक] जी० १।७२
 एकत्त [एकत्व] जी० ३।११०
 एकत्तीस [एकत्रिंशत्] जी० ३.६३४
 एकाणउत्ति [एकनवात्] जी० ३.८१२
 एकावलि [एकावलि] जी० ३।४५१
 एकासीड [एकाशीति] जी० ३।७०६
 एकासीति [एकाशीति] जी० ३ ७६४
 एकाह [एकाह] जी० ३ १७६, १७८, १८०, १८२
 एऊणवीसति [एकोनविंशति] जी० ३।५७७
 एकोदग [एकोदक] जी० ३।७६५
 एक्क [एक] ओ० ३. रा० ४. जी० २।४८
 एक्कतीस [एकत्रिंशत्] ओ० ३३. रा० २०७.
 जी० ३।६१
 एक्कवीस [एकविंशति] जी० ३।७३६
 एक्कार [एकादशन्] जी० ३ १००२
 एक्कारस [एकादशन्] रा० १७३ जी० ३।२८५
 एक्कारसम [एकादश] ओ० १४४. रा० ८०२
 एक्कारसमासपरियाय [एकादशमासपरियाय]
 ओ० २३
 एक्कासीत [एकाशीति] जी० ३।६३२
 एक्कासीय [एकाशीति] जी० ३।२२६।४
 एक्किकिय [एकैक] रा० ८२

एक्केक्क [एकैक] जी० ३।६६७
 एक्केक्कय [एकैक] जी० ३।८३८।४
 एक्कोणवीसति [एकोनविंशति] जी० ३.५७७
 एक्कोदक [एकोदक] जी० ३ ७६५
 एक्कोदग [एकोदक] जी० ३।७६५
 एग [एक] ओ० १६. रा० ३. जी० १।१०
 एगइय [एक] ओ० २३, ४५, ५२, ७८, ८८, १४०,
 १५६, १६५, १६६, रा० १६, १७४, २८१, ६८७,
 ६८८ जी० १।६६, ११६; ३।८६, १०४, ४४७,
 ४५५

एगओ [एकतस्] रा० ८४, १७३
 एगओखह [एकतःखह] रा० ८४
 एगओचक्कवाल [एकतश्चक्कवाल] रा० ८४
 एगओवंक [एकतोवक्क] रा० ८४
 एगंत [एकान्त] ओ० ११७. रा० ६, १२, १५,
 ७१३, ७६५
 एगंतबंड [एकान्तदण्ड] ओ० ८४, ८५, ८७
 एगंतवाल [एकान्तवाल] ओ० ८४, ८५, ८७
 एगंतसुत्त [एकान्तसुत्त] ओ० ८४, ८५, ८७
 एगखुर [एकबुर] जी० १।१०३, १२१; २।६
 एगगुण [एकगुण] जी० १।३५, ३७, ४०
 एगग [एकग] रा० १५
 एगच्च [एकार्च] ओ० ७२, १६७
 एगच्चाओ [एकस्मात्] ओ० १६१
 एगजाय [एकजात] ओ० २७. रा ८१३
 एगजीव [एकजीव] जी० १।७२
 एगजीविय [एकजीविक] जी० १।७२
 एगहु [एगाष्टि] जी० ३।७६८
 एगट्टिय [एकास्थिक] जी० १।७०, ७१
 एगतिय [एक] रा० १७४, १८५, २८१, २८६,
 २८८, ६८८, ६८९ जी० १।१३३; ३।८६,
 १०८, १७६, १७८, १८०, १८२, २८६, २८७,
 ४४७, ५७५, ५७६, ७१६, ७२०, ८०६, ८०७,
 ८५७, १०८०
 एगतो [एकतस्] रा० २७६ जी० ३।२८५, ४४५
 एगता [एकत्व] जी० ३।११०, १११५, १११६

एगत्तवियक्क [एकत्ववितर्क] ओ० ४३
 एगत्ताणुप्पेहा [एकत्वानुप्रेक्षा] ओ० ४३
 एगत्तिभावकरण [एकत्वीभावकरण] ओ० ६६, ७०
 एगत्तीभावकरण [एकत्वीभावकरण] रा० ७७८
 एगदंत [एगदन्त] जी० ३५६६
 एगदिता [एगदिशा] रा० ६८८
 एगपदेसिय [एकप्रादेशिक] जी० ३१७२३, ७२६
 एगभूय [एकभूत्] रा० ११६
 एगमेग [एकेक] रा० १२६, १६२ से १६४, १६१.
 जी० ३१०६, २६५, ३५४, ३५५, ६३२, ६६१,
 ७२३, ७२६, ६०१, १०००, १०२३
 एगराहया [एगरात्रिकी] ओ० २४
 एगसट्ठि [एकपट्टि] जी० ३११०
 एकसाडिय [एकसाटिक] ओ० २१, ५४, ६६.
 रा० ८, ७१४, ७७८
 एगसालग [एकशालक] जी० ३५६४
 एगसिद्ध [एकसिद्ध] जी० १८
 एगागार [एकाकार] जी० ११०६, ११६; ३१८ से
 ११, २१३, ६५४
 एगाभिमुह [एकाभिमुख] रा० ६८८
 एगावलि [एकावलि] ओ० २४, १०८, १३१.
 रा० ६६, २८५. जी० ३५६३
 एगावलिप्रविभत्ति [एकावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
 एगासीइ [एकाशीति] जी० ३७०६
 एगाह [एगाह] जी० ३१८६, ११८, ११६
 एगाहच्च [एकाहत्थ] रा० ७५१, ७६७
 एगाहिय [एकाहिक] जी० ३६२८
 एगिदिय [एकेन्द्रिय] जी० १५५; २१०१, १०२,
 ११०, १११, १२०, १२६, १३६, १३८, १४६, १४६;
 ३१३० से १३५, १११५; ४११ से ३, ५ से
 ७, १०, ११, १६, १६ से २२, २५; ६१२ से ७,
 १६७, १६६, २२१, २२२, २२८, २३१
 एगुणयाल [एकोनचत्वारिंशत्] जी० ३१७६४
 एगूणपण्ण [एकोनचत्वारिंशत्] रा० ७१.
 जी० ११८८
 एगूणवोस [एकोनविंशति] जी० ३१०५३
 एगूणासीति [एकोनाशीति] जी० ३१२१८

एगूरुइया [एकोरुकिका] जी० २११२
 एगूरुय [एकोरुक] जी० ३१२१६ से २२२, २२७
 एगूरुयदीव [एकोरुकदीव] जी० ३१२२२, २२७
 एगोणचत्तालीस [एकोनचत्वारिंशत्] जी० ३१७६६
 एगोणवोस [एकोनविंशति] जी० ३१०५३
 एगोदग [एकोदक] जी० ३१७६५
 एगोरुय [एकोरुक] जी० ३१२१६, २१७, २२६
 एगोरुयदीव [एकोरुकदीव] जी० ३१२१७, २१८
 एज्जमाण [एजमाण] रा० ४०, १२३, १३२.
 जी० ३१२६५
 एड [इल्, एड] — एडेइ. रा० ७६५ — एडेंति.
 रा० १२ — एडेइ. रा० ६
 एडित्ता [एलित्वा, एडित्वा] ओ० ११७. रा० १२
 एडेत्ता [एलित्वा, एडित्वा] रा० ६
 एणी [एणी] ओ० १६. जी० ३५६६
 एतारुव [एतद्रूप] जी० ३१२७८ से २८२, २८४,
 २८५, ३८७, ४४२, ८६०, ८६६, ८७२, ८७८
 एत्तो [इतस्] ओ० ३३. रा० २६. जी० ३१८४
 एत्थ [अत्र] ओ० १३. रा० ३. जी० ३१७७
 एमहज्जुईय [इयन्महद्द्युतिक] रा० ६६६
 एमहज्जुतीय [इयन्महद्द्युतिक] जी० ३१५६५
 एमहब्बल [इयन्महाबल] रा० ६६६.
 जी० ३१५६५
 एमहाणुभाव [इयन्महानुभाव] रा० ६६६.
 जी० ३१५६५, ६४०
 एमहायस [इयन्महायसस्] रा० ६६६.
 जी० ३१५६५
 एमहालत [इयन्महत्] जी० ३१८६, १७६, १७८
 एमहालय [इयन्महत्] रा० ७३२, ७३७.
 जी० ३११८२, १०८०
 एमहासोक्ख [इयन्महासोक्ख] रा० ६६६.
 जी० ३१५६५
 एमहिड्डिय [इयन्महद्धिक] जी० ३१६३८
 एमहिड्डिय [इयन्महद्धिक] रा० ६६६. जी० ३१५६५,
 ५६८, ७०१, ७६४
 एमेव [एवमेव] जी० ३१२२६

एम्महिङ्गीय [इयन्मर्हधिक] जी० ३।६६४

एय [एतत्] ओ० २१. रा० ६३. जी० १।११

√एय [एज्]—एयइ. रा० ७७१—एयंति.

जी० ३।७२६

एयंत [एजमान] रा० ७७१

एयस्व [एतद्रूप] रा० ६३, ६५

एवास्व [एतद्रूप] ओ० ३०, ६२, १४४, १५८,

१५६. रा० ६, १६, २०, २५ से ३१, ३७, ४५,

१३५, १४६, १७३, १७५, १६०, २२८, २४५,

२५४, २७०, २७५, २७६, ६८८, ७३२, ७३७,

७३८, ७४६, ७५१, ७६८, ७७७, ७६१, ७६३,

८१६. जी० ३।८४, ८५, ११८, २६४, २७८ से

२८३, २८५, २८७, ३०५, ३११, ३२२, ४०७,

४१५, ४३५, ४४१, ५६७, ६०१, ६०२, ६४३, ६५४

एरण्यवत् [ऐरण्यवत्] जी० २।१४५

एरण्यवय [ऐरण्यवत्] रा० २७६. जी० २।१३,

३१, ५८, ७०, ७२

एरवत् [ऐरवत्] जी० २।६६, १३६, १४७, १४६

एरवय [ऐरवत्] रा० २७६. जी० २।१४, २८,

५५, ७०, ७२, ११५, १२३; ३।२२६, ४४५, ७६५

एरावणहृह [ऐरावणहृह] जी० ३।६६७

एरिस् [ईदृश] ओ० ७६ से ८१

एरिस्स [ईदृशक] जी० ३।१०६

एल् [एड] जी० ३।६१८

एला [एला] रा० ३०, १६१, २५८, २७६.

जी० ३।२८३, ३३४, ४१६

एलिगा [एडिका] जी० ३।६१६

एलुय [एलुक] रा० १३०. जी० ३।३००

एव [एव] रा० १०

एवइय [एतावत्] जी० ३।१८२, ८३८।२, ३

एवं [एवम्] ओ० २०. रा० ८. जी० १।१०

एवंभूत [एवंभूत] जी० ३।२८५

एवतिथ [एतावत्] जी० ३।१७६, १७८, १८०,

६७२, ६७३

एवमेव [एवमेव] रा० ७०३. जी० ३।१७४

एवामेव [एवमेव] ओ० १५०. रा० १२.

जी० ३.११८

एसणासमिष [एषणासमित] ओ० २७, १५२, १६४.

रा० ८१३

एसणिज्ज [एषणीय] ओ० ३७, १२०, १६२.

रा० ६६८, ७५२, ७७६, ७८६

एसुत्तुम् [इयत्सूक्ष्म] जी० ३।६६३, ६६७

ओ

ओइण्ण [अवतीर्ण] ओ० ५१

ओगाढ [अवगाढ] रा० ६८४, ६८५, ७००, ७०६.

जी० १।३३, ४२, ४३, ५०; ३।२२

√ओगाह [अव + गाह्]—ओगाहइ.

जी० ३।११८—ओगाहति. जी० ३।११६

—ओगाहंति. ओ० ११७

ओगाहणा [अवगाहना] ओ० १६५।४ से ८.

रा० ७६६. जी० १।१४, १६, ७४, ८६, ८८,

६०, ६४, १०३, १११, ११२, ११६, ११६, १२१.

१२३ से १२५, १३०, १३५; ३।६१, २३६,

४३६, ६६६, १०८७, १०८८

ओगाहितए [अवगाहितुम्] ओ० ६६

ओगाहिता [अवगाह्य] ओ० ११७. जी० ३।७७

ओगाहेत्ता [अवगाह्य] ओ० ११७. रा० २४०

ओगिण्हत्ता [अवगृह्य] ओ० २१. रा० ८

ओग्गह [अवग्रह] ओ० २१, २२, ५२. रा० ८, ६,

६८६, ६८७, ६८८, ७०६, ७११, ७१३

ओग्गिण्ह [अव + ग्रह्]—ओग्गिण्हइ. रा० ६८६

ओघ [ओघ] रा० १३, १४

ओचूल [अवचूल] ओ० ५७

ओच्छण [अवच्छन्त] ओ० ६

ओच्छन्न [अवच्छन्त] ओ० ६. जी० ३।२७५

ओट्टु [ओठ] ओ० १६, ४७. रा० २५४.

जी० ३।४१५, ५६६, ५६७, ८६०

ओट्टुछिण्ण [ओठछिन्नक] ओ० ६०

√ओणम [अव + नम्]—ओणमंति. रा० ७५

ओणमित्ता [अवनम्य] रा० ७५

औणय [अवनत] ओ० ७०

औत्पय [अवस्तृक] ओ० ६३, ६५

औवण [ओदत] जी० ३।५६२

√औधार [अव+धारय्]—औधारैति. रा० ७१३

√औभास [अव+भास्]—औभासइ.

जी० ३।३२७—औभासेइ. रा० ७७२

—औभासेति. रा० १५४. जी० ३।३२७

—औभासेति. रा० १५४. जी० ३।७४१

औभासमाण [अवभासमाण] जी० ३।२५६

औभिज्जमाण [उद्भिद्यमान] रा० ३०

औमत्त [अवमत्त्व] रा० ७६२, ७६३

√औमुय [अव+मुच्]—औमुयइ. ओ० २१.

रा० ७१४

औमुइत्ता [अवमुच्य] ओ० २१

औमोदरिया [अवमोदरिका] ओ० ३३

औमोयरिया [अवमोदरिका] ओ० ३१

औयंति [ओजस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६

औयविद्य [दे०] ओ० १६, ४७. रा० ३७, २४५.

जी० ३।३११, ४०७, ५६६

औराल [दे० उदार] ओ० ८२. रा० ३०, १३२,

१३५, १७३, २३६, ६८६. जी० १।७५, ८३,

१३६; ३।२६५, २८३, २८५, ३०२, ३०५,

७२६, ७८५, ७८६, ८४१

औरालिय [औदारिक] ओ० १८२. जी० १।१५,

५६, ६४, ७४, ७६, ८५, १०१, ११६, १२८,

१३०

औरालियमोलासरीर [औदारिकमिश्रकशरीर]

ओ० १७६

औरालियसरीर [औदारिकशरीर] ओ० १७६

औरालियसरीर [औदारिकशरीर]

जी० ६।१७०, १७१, १७६, १८१

औरोह [अवरोध] ओ० १

औलंबियग [अवलम्बित] ओ० ६०

औलित [दे० उपलित] ओ० ५२. रा० ६८७ से

६८६

औवइय [दे०] जी० १।८८

औवणिहिय [औपनिधिक, औपनिहितिक]

ओ० ३४

औवम्म [औपम्य] ओ० १६५।१७. जी० ३।१७।५

√औवय [अव+पत्]—औवयति. रा० २८१.

जी० ३।४४७

औवयमाण [अवपतत्] रा० ५६

औवहिय [औपधिक] ओ० १६१, १६३

औवासंतर [अवकाशान्तर] जी० ३।१३, १६, २१,

२६, २७, ३०, ३२, ६५, ६७, १७६, १७८, १८०,

१८२, १०६२ से १०६४

औविय [दे०] परिकर्मित ओ० ६३. रा० १७,

१८, ६६, ७०. जी० ३।५६३

√औवील [अव+पीङ्]—औवीलेति.

जी० ३।७६५

औस [दे० अवव्याय] जी० १।६५

औसणकारण [अवसन्नकारण] जी० १।५०, ६५, १३६

औसणग [अवसन्नक] ओ० ६०

औसणदोल [उत्सन्नदोल] ओ० ४३

औसप्पिणी [अवसप्पिणी] जी० १।१३६, १४०;

२।१२०; ३।६०, १६५, ८४१, १०८५; ५।८,

६, २३, २६; ६।२३, ४०, ६७, २५७

√औसर [अप+सृ]—औसरति. रा० २६२.

जी० ३।४५७

औसरित्ता [अपसृत्य] रा० २६२. जी० ३।४५७

औसह [औषध] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,

७५२, ७८६

औसहि [औषधि] रा० १५२, २७६, २८०.

जी० १।६६; ३।३२५, ४४५, ४४६, ४४८

औसारिय [अवसारित] ओ० ५७

औहबल [औषबल] ओ० ७१. रा० ६१

औहय [उपहत, अवहत] ओ० १४. रा० ६७१,

७६५

औहस्वर [औवस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५,

५६८

ओहाडणी [दे० अवघाटनी] रा० १३०, १६०.

जी० ३१२६४, ३००

ओहि [अवधि] जी० ३१०७, ११११

ओहि—ओह [ओष] रा० ६, १२

ओहिणाण [अवधिज्ञान] ओ० ४०. रा० ७३६,
७४३, ७४६

ओहिणाणलद्धि [अवधिज्ञानलद्धि] ओ० ११६

ओहिणाणविनय [अवधिज्ञानविनय] ओ० ४०

ओहिणाणि [अवधिज्ञानिन्] ओ० २४.

जी० ११११६, १३३; ६११६१, १६५, १६६,
१६७, १६६, २०४, २०८

ओहिवंसणि [अवधिदर्शनिन्] जी० ११२६, ८६;

६१३१, १३४, १३८, १४०

ओहिनाणि [अवधिज्ञानिन्] जी० ११६६; ६१५६

ओहिय [औषिक] जी० २१५१; ५१२४, २६, ३०

ओहीनाण [अवधिज्ञान] जी० ३१११११

क

क [क] रा० ६५

कह [कति] ओ० १७३. रा० ७६६, ७७६.

जी० १११५, २१ से २३, २६, २७, ६४; ३१७६,
१६६ से १७१, ७४८, ८०६

कइसमइय [कतिसामयिक] ओ० १७४

कओ [कृतस्] जी० ११५१; ३११५५, १०८२

कंक [कङ्क] जी० ३१५६८

कंकड [कङ्कट] ओ० ६४. रा० १७३, ६८१.

जी० ३१२८५

√कंख [काङ्क्ष]—कंखइ. रा० ७१३—कंखति.

ओ० २०, रा० ७१३

कंखिय [काङ्क्षित] रा० ७७४

कंचण [काञ्चन] ओ० २६, ६४. रा० ३२, १५६,
२६२. जी० ३३३२, ३७२, ४५७, ४८७, ५८६,
५६३, ५६७

कंचणकोसी [काञ्चनकोशी] ओ० ६४

कंचणय [काञ्चनक] जी० ३१६६१, ६६२, ६६४,
६६६

कंचणमय [काञ्चनमय] जी० ३१६६१

कंचणिया [काञ्चनिका] ओ० ११७

कंचि [किञ्चित्] ओ० ११६, ११७. रा० ७६५

कंची [काञ्ची] जी० ३१५६३

कंचुइ [कञ्चुकिन्] रा० ६८८ से ६९०, ८०४

कंचुइज [कञ्चुकीय] ओ० ७०

कंचुय [कञ्चुक] रा० ६६, ७०

कंटक [कण्टक] जी० ३१६६२

कंटय [कण्टक] ओ० १४. रा० ६७१. जी०
३१८५, ६२२

कंठ [कण्ठ] ओ० ७१. रा० ६१, ६६, ७६

कंठमुरवि [दे० कण्ठमुरवी] ओ० १०८, १३१.

रा० २८५

कंठमुत्त [कण्ठमुत्त] जी० ३५६३

कंठगुण [कण्ठगुण] रा० १३१, १४७, १४८, २८०.

जी० ३१३०१, ४४६

कंठमालकड [कृतकण्ठमाल] ओ० ५२. रा० ६८७
से ६८६

कंड [काण्ड] रा० ६६४. जी० ३१६, ७, ६, १०, १६,
१७, २४, २५, ६० से ६३, ५६२

कंडग [काण्डक] रा० ७५८, ७५६

कंडय [काण्डक] रा० ७५८, ७५६

कंडु [कण्डु] ओ० ६६

कंडु [कन्दु] जी० ३१७८

कंत [कान्त] ओ० १५, ४६, ८८, ११७, १४३.

रा० १७, १८, ६७२, ६७३, ७५० से ७५३,
७७४, ७६६, ८०१. जी० ११३५; ३१५६७,
८७२, १०६०, १०६६

कंततराय [कान्ततरक] रा० २५ से ३१, ४५.

जी० ३१२७८ से २८४, ६०१

कंतारभक्त [कान्तारभक्त] ओ० १३४

कंतारभयग [कान्तारभूतक] ओ० ६०

कंति [कान्ति] ओ० २३, ६६, ७१. रा० ६१

कंद [कन्द] ओ० ६४, १३५. रा० २२८.

जी० ११७१; ३१३८७, ६४३, ६७२

कंदणया [कन्दन] ओ० ४३

कंदर्प [कन्दर्प] ओ० ४६
 कंदर्पिय [कन्दर्पिक] ओ० ६४, ६५
 कंदर्मत [कन्दवत्] ओ० ५, ८, १०. जी० ३१२७४,
 ३८६, ५८१
 कंदरा [कन्दरा] रा० ८०४
 कंदाहार [कन्दाहार] ओ० ६४
 कंभिय [कन्दित] ओ० ४६, ४६
 कंभुसोल्लिय [कम्बुपक्व] ओ० ६४
 कंभिय [कम्पित] रा० १७३. जी० ३१२८५
 कंभिल्लपुर [कम्पिल्लपुर] ओ० ११५, ११८
 कंभेमान [कम्पमान] ओ० ५२
 कंभल [कम्बल] ओ० १२०, १६२. रा० २७,
 ६६८, ७५२, ७५२, ७८६. जी० ३१२८०, ५६५
 कंभिया [कम्बिका] रा० २७०. जी० ३१४३५
 कंभु [कम्बु] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७
 कंभोज [कम्बोज] रा० ७२०, ७२३
 कंस [कांस्य] जी० ३१६०८
 कंसताल [कांस्यताल] रा० ७७. जी० ३१५८८
 कंसपाई [कांस्यपात्री] ओ० २७ रा० ८१३
 कंसलोह [पाय] [कांस्यलोहपात्र] ओ० १०५,
 १२८
 कंसलोह [बन्धन] [कांस्यलोहबन्धन] ओ० १०६,
 १२६
 ककारसकारगकारघकारङकारपविभक्ति [ककारख-
 कारगकारवकारङकारप्रविभक्ति] रा० ६५
 ककारपविभक्ति [ककारप्रविभक्ति] रा० ६५
 कक्करो [कर्करी] जी० ३१५८७
 कक्कस [कर्कश] रा० ७६५. जी० ३१११०
 कक्कोड [कर्कोट] जी० ३१७५०
 कक्कोडग [कर्कोटक] ३१७५०
 कक्कोडय [कर्कोटक] जी० ३१७४८ से ७५०
 कक्क [कक्ष] ओ० ६२ जी० ३१५६७
 कक्कड [कक्कट] जी० ११५, ३६, ४०, ५०; ३१२२
 कक्क [कक्ष] ओ० ५७. जी० ३६३७
 कक्कभ [कक्कप] रा० १७४. जी० ११६६, ११८;

३११८, ११६, २८६, ६६५
 कक्कभी [कक्कपी] रा० ७७. जी० ३१५८८
 कक्क [कक्कू] जी० ३१६२८
 √कज्ज [कृ]—कज्जति. ओ० १६१
 कज्ज [कार्य] रा० ६७५. जी० ३१२३६, १११५
 कज्जल [कज्जल] ओ० १६. रा० २५.
 जी० ३१२७८, ५६५, ५६६
 कज्जलंगी [कज्जलङ्गी] ओ० १३
 कज्जलपभा [कज्जलप्रभा] जी० ३१६८७
 कज्जहेउ [कार्यहेतु] ओ० ४०
 कट्ट [कृत्वा] ओ० २०. रा० ८. जी० ३१८६
 कट्ट [काष्ठ] रा० ६, १२, ७६५
 कट्टसेज्जा [काष्ठशय्या] ओ० १५४, १६५, १६६
 कट्टसोल्लिय [काष्ठपक्व] ओ० ६४
 कड [कृत] ओ० ७४, ६ रा० १८५, १८७, ८१५
 जी० ३१२१७, २६७, २६८, ३५८
 कडंब [कडम्ब] रा० ७७
 कडवल [कटाक्ष] रा० १३३. जी० ३१३०३
 कडग [कटक] ओ० २१, ४७, ५४, ६३, ७२. रा० ८,
 ६६, ७०, २८५, ७१४. जी० ३१४५१, ५६३
 कडगच्छेज्ज [कटकच्छेद्य] ओ० १४६. रा० ८०६
 कडच्छाय [कटच्छाय] ओ० ४. रा० १७०, ७०३.
 जी० ३१२७३
 कडच्छुय [दे०] रा० ७५३
 कडय [कटक] ओ० १०८, १३१. रा० ८.
 जी० ३१४५७
 कडाह [कटाह] जी० ३१७८
 कडि [कटि] ओ० १६, ६४. जी० ३१५६६
 कडिय [कटित] ओ० ४. रा० १७०, ७०३.
 जी० ३१२७३
 कडिसुत्ता [कटिसूत्र] ओ० ५२, ६३ १०८, १३१.
 रा० ६८७, ६८६
 कडिसुत्ताग [कटिसूत्रक] रा० २८५
 कडिसुत्ताय [कटिसूत्रक] रा० ६८८
 कडुच्छुय [दे०] जी० ३१६०८
 कडुच्छुय [दे०] रा० २५८, २७६, २८१, २६०,

२६२. जी० ३१४१६, ४४५, ४४७, ४५६, ४५७,
६७६
कडुय [कटुक] ओ० ४०. रा० ७६५. जी० ११५;
३१२२, ११०, ७२१, ८६०, ६५५
कड्डिज्जमाण [कृध्यमाण] रा० ५६
कटिण [कठित] ओ० ४६, ६४
कटिय [क्वथित] जी० ३१५६२, ६०१
कणइर [कणवीर] जी० ३१५६७
कणइरगुम्म [कणवीरगुम्म] जी० ३१५८०
कणग [कनक] ओ० १६, २३, ५०, ६३, ६४, ८२.
रा० २८, ३२, ६६, ७०, १२६, १३०, १३७, १७३,
२१०, २१२, २८५, ६८१, ६६५. जी० ३१२८१,
२८५, ३००, ३०७, ३५४, ३७२, ३७३, ४५१,
५८६, ५६३, ५६६, ५६७, ६४७, ७४७, ८६६,
८८५, ९३६
कणगजाल [कनकजाल] रा० १६१. जी० ३१२६५
कणगजालग [कनकजालक] जी० ३१५६३
कणगत्तायरत्ताभ [कनकत्वग्रक्ताभ]
जी० ३११०६३
कणगप्पभ [कनकप्रभ] जी० ३१८६६
कणगमय [कनकमय] जी० ३१४१५, ६४३, ६४४,
८६६
कणगमय [कनकमय] रा० २५४. जी० ३१३५२,
४१५, ६३२, ६४३, ६५४, ६५५, ७३६
कणगावलि [कनकावलि] ओ० २४, १०८, १३१.
जी० ३१४५१
कणगावलिपविभत्ति [कनकावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
कणिया [क्वणिता] जी० ३१५८८
कण्ण [कर्ण] रा० १५, ४०, १३२, १३५, १७३.
जी० ३१२६५, २८५, ३०५
कण्णछिण्णग [कर्णछिन्नक] ओ० ६०
कण्णपाउरण [कर्णप्रावरण] जी० ३१२१६
कण्णपीठ [कर्णपीठ] ओ० ४७, ७२
कण्णधूर [कर्णधूर] ओ० ५७, १०६, १३२
कण्णवाली [कर्णवाली] जी० ३१५६३
कण्णवेयणा [कर्णवेदना] जी० ३१६२८

कण्णवेहण [कर्णवेधन] रा० ८०३
कण्णिका [कर्णिका] जी० ३१३३२
कण्णिया [कर्णिका] ओ० १७०. रा० १५६.
जी० ३१६४३ से ६४५, ६५४ से ६५६
कण्णियार [कर्णिकार] जी० ३१८७२
कण्ह [कृष्ण] ओ० ६६. जी० ३१२७८, ३४८
कण्हकंद [कृष्णकन्द] जी० ११७३
कण्हकेसर [कृष्णकेसर] जी० ३१२७८
कण्हपरिववाया [कृष्णपरिव्राजक] ओ० ६६
कण्हबंधुजीव [कृष्णबन्धुजीव] जी० ३१२७८
कण्हमत्तिया [कृष्णमृत्तिका] जी० ११५८
कण्हराई [कृष्णराजी, कृष्णराजी] जी० ३१६१६
कण्हलेस [कृष्णलेश्य] जी० ६१६८६, १६३
कण्हलेसा [कृष्णलेश्या] जी० ११३३३; ३११५०
कण्हलेस्स [कृष्णलेश्य] जी० ६१६८५, १६६
कण्हलेहसा [कृष्णलेश्या] जी० ११२१
कण्हसप्प [कृष्णसर्प] जी० ३१२७८
कण्हासीय [कृष्णाणोक] जी० ३१२७८
कत [कृत] जी० ३१५६१
कसमाल [कृतमाल] जी० ३१५८२
कतर [कतर] जी० २१६८ से ७२, ६५, ६६, १३४
से १३८, १४१ से १४६; ३११३८; ५१५२,
५६; ७२०; ६१५३, २८६ से २६१, २६३
कति [कति] रा० ७६७. जी० ११६६, २०, ५६,
५६, ६२, ७४, ७६, ८२, ८५, ९०, ९३, १०१, ११६,
१२८, १३०, १३४; ३१७७, ६८, १०८, १५०,
१५७, १६०, १६५, १६७, १७२ से १७४, २३५
से २३७, २४१, २४२, २४५, २४६, २४६, २५४,
२५५, २५८, २६६, ७०३, ७०७, ७२२, ७३३ से
७३५, ७४६, ७६६, ८०६, ८१३, ८२०, ८२४,
८३७, ८५१, ८५५, ८६३ से ८६६, १०१५,
१०१७, १०२३, १०२६, १०४०, १०४१, १०४४,
१०७५, ११०१, १११२२
कतिवसुत्तो [कतिकृत्वस्] जी० ३१७३०
कतिविध [कतिविध] जी० ३१६ से ११, ३७, ३८,
१४७, १६१, १८५, ६३१; ५१३७

कतिविह [कतिविघ] जी० ३।१८३, ६७६, ६७७;

५।३८, ३६, ५३ से ५५

कतो [कुतस्] जी० ३।८८

कत्तिया [कत्तिका] जी० ३।६३७

कत्थ [कुत्र] ओ० १६५।१

कत्थ [कथ्य] रा० १७३. जी० ३।२८५

कत्थइ [कुत्रचित्] ओ० २८

कत्थुलुग्गम् [कत्थुलुगुलम्] जी० ३।५८०

कवंब [कदम्ब] जी० ३।५८३

कह्म [कर्दम] जी० ३।७५१

कह्मय [कर्दमक] जी० ३।७४८

कह्मोदय [कर्दमोदक] ओ० १।११ से १।१३, १३७, १३८

कपिहसिय [कपिहसित] जी० ३।८४१

कप्प [कल्प] ओ० २६, ६५, ६५, ६७, १।१४, १।१७, १।४०, १।५५, १।५७ से १।५६, १।६२, १।६०.

रा० ७, १।२, ५६, १।२४, २।७६, ७।६६.

जी० २।१६, ४६, ६६, १।४८, १।४६; ३।७७५, ८४२, ८४५, ६३७, १०३६, १०५७ से १०५६,

१०६२, १०६५, १०६७, १०७१, १०७३, १०७७

से १०८३, १०८५ से १०८७, १०८०, १०८१,

१०८३, १०८७ से १०८६, ११०१, ११०५,

११०७, ११०८ से १११२, १११४, १११५,

१११७, १११८, ११२१, ११२२, ११२४, ११२८

✓कप्प [कृप्] — कप्पइ. ओ० ६६. — कप्पंति. ओ० ६३. — कप्पेज्जा. रा० ७७६

कप्पणा [कल्पना] ओ० ५७

कप्पयक्ख [कल्पयक्ख] ओ० ६३

कप्पयक्खग [कल्पयक्खक] रा० २८५

कप्पयक्खसय [कल्पयक्खक] रा० ३।४५१

कप्पिय [कल्पित] ओ० ५२, ६२, ६३. रा० ६८७ से ६८६

कप्पूर [कर्पूर] रा० ३०. जी० ३।२८३

कप्पेमाण [कल्पमान] ओ० ६१ से ६३, १।६१, १।६३. रा० ६७१, ७५२

कप्पोवग [कल्पोवग] ओ० ७२

कब्बड [कवंट] ओ० ६८, ८६ से ६३, ६५, ६६,

१।५५, १।५८ से १।६१, १।६३, १।६८. रा० ६६७

कम [क्रम] जी० ३।७७८, ८३८: १।४

कमंडलु [कमण्डलु] जी० ३।५६७

कमल [कमल] ओ० २१, २२, ५४. रा० ८, १३१, १।४७, १।४८, १।४९, २८०, ७।१४, ७।२३, ७।७७, ७।७८,

७८८. जी० ३।११८, १।१६, २८६, ३।२१, ४।४६,

४।४८, ५।६७

कमलागिर [कमलाकर] ओ० २२. रा० ७७७, ७७८, ७८८

कम्म [कर्मन्] ओ० २६, ४६, ७१ से ७।५५, ७।६ से ८१, ८६, १।१६, १।५६, १।६७, १।७१, १।८२, १।८४,

१।६५।२०. रा० १।८५, १।८७, ७।५०, ७।५१, ७।७१,

७।७२. जी० २।७३, ६७, १।३६; ३।१२६।६,

२।१७, २।६७, २।६८

कम्मंत [दे० कर्मन्ति] ओ० १।६१, १।६३

कम्मंस [कर्मण] ओ० १।७१, १।८२

कम्मकर [कर्मकर] ओ० ६४

कम्मग [कर्मक] जी० ६।१७६

कम्मगसरीर [कर्मकशरीर] ओ० १।७६

कम्मगसरीरि [कर्मकशरीरिन्] जी० ६।१७०, १।७४

कम्मठिति [कर्मस्थिति] जी० २।७३, ६७, १।३६

कम्मणिसेग [कर्मनिषेक] जी० २।१३६

कम्मणिसेय [कर्मनिषेक] जी० २।७३, ६७

कम्मपयडि [कर्मप्रकृति] ओ० १।६८

कम्मभूमक [कर्मभूमक] जी० २।८६, १।३२

कम्मभूमग [कर्मभूमक] जी० १।१५६; २।१४, २८, २६, ७७, ८५, ६६, १०६, १।१५, १।२३, १।३८, १।४७,

१।४६; ३।२१२, २।२६, ८३६

कम्मभूमय [कर्मभूमज] जी० २।२७

कम्मभूमि [कर्मभूमि] जी० २।१३७

कम्मभूमिग [कर्मभूमिज] जी० २।७०, ७२, १।३८, १।४७, १।४६

कम्मभूमिय [कर्मभूमिज] जी० १।१०१

कम्मभूमिया [कर्मभूमिजा] जी० २।११, १।४, ५५,

७०, ७२, १४७, १४८
 कम्मय [कर्मक] जी० ११५, ५६, ६४, ७४, ७६, ८, २
 ५, ६३, १०१, ११६, १२८, १३०, १३५
 कम्मया [कर्मजा] रा० ६७५
 कम्मविउत्सग [कर्मवृत्त्यग] ओ० ४४
 कम्मसरीर [कर्मशरीर] ओ० १७६, जी०
 ३१२६१६
 कम्मसरीरि [कर्मशरीरिन्] जी० ६११=१
 कम्मर [दे०] जी० ३११८, ११६
 कम्मरय [दे०] जी० ३६१०
 कम्हा [कस्मात्] ओ० १७१, रा० ७०३, जी०
 ३१७२३
 कय [कृत] ओ० २, २०, ५२, ५३, ५७, ६२, ६३, ७०,
 ६२, रा० १५, १३१, १४७, १४८, २८०, ६८३,
 ६८५, ६८७ से ६८६, ६८८, ७००, ७१०, ७१६,
 ७२३, ७२६, ७५१, ७५३, ७६५, ७७४, ७६४,
 ८०२, ८०५, जी० ३१३०१, ४४६
 कय [कच] ओ० ६३, रा० १२, २६१, २६३ से
 २६६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५, जी० ३१४५७ से
 ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५५४
 कयंब [कदम्ब] जी० ३१३८८
 कयपडिकिरिया [कृतप्रतिक्रिया] ओ० ४०
 कयर [कतर] ओ० १८५ से १८८, रा० ६६७,
 जी० ११४३; ३११०७, १०२०, १०२१,
 १०३७; ४११६, २२, २५; ५११६, २०, २६, २७,
 ३२ से ३६, ६०; ७१२२, २३; ६१७, १४, ५५,
 २५० से २५२, २५५, २६२
 कयलिघरग [कदलीगृहक] रा० १८२, १८३,
 जी० ३१२६४
 कयली [कदली] जी० ३१५६७
 कयवर [कचवर] जी० ३१६२२
 कया [कदा] जी० ३२७२
 कयाइ [कदाचित्] ओ० ११६, रा० ६८०,
 जी० ३१५६
 कयाइ [कदाचित्] रा० ७५४

कयाति [कदाचित्] रा० २००
 कयावि [कदापि, कदाचित्] जी० ३१७०२
 कर [कर] ओ० १५, जी० ३१५८६, ५६७
 √कर [कृ]—करावेति रा० ७७४.—करिस्सइ
 रा० ७७१—करिस्सति रा० ८०३
 —करिस्सामि रा० ७८७.—करिस्सामो, ओ०
 ५२, रा० ६८७.—करेइ, ओ० २१, रा० ५६,
 जी० ३१४६१.—करेति, ओ० ४७, रा० १०,
 जी० ११२७.—करेज्ज, जी० ३१६६७,
 —करेज्जा, ओ० १८०, रा० १२.—करेति,
 रा० ८, जी० ३१४४३.—करेमि, रा० ७६४,
 करेस्सति, रा० ८०२.—करेह, रा० ६.—करेहि,
 ओ० ५५, रा० ६६५.—करेहिंति, ओ० १४४,
 —करेहिंति ओ० १५४, रा० ८१६,
 —कारवेति, रा० १२, कारवेह, रा० ६,
 कारवेहि, ओ० ५५.—काहिंति, ओ० १४४,
 —कीरइ, ओ० १५४, रा० ७६७
 करंडग [करण्डक] ओ० ११७, रा० ७६६
 करकंट [करकण्ट] ओ० ६६
 करग [करक] जी० ३१५८७
 करड [करट] रा० ७७
 करडी [करटी] जी० ३१५८८
 करण [करण] ओ० १६, २५, ४६, ६३, १४४, १४५,
 १६१, १६३, रा० ७६, १७३, ६८६, ८०२, ८०३,
 ८०५, जी० ३१२८५, ५६६, ८५४
 करणओ [करणतस्] ओ० १४५, रा० ८०६, ८०७
 करणया [करणता] ओ० १७१
 करणिज्ज [करणीय] रा० ११, ५६, २७५, २७६,
 जी० ३१४४१, ४४२
 करतल [करतल] रा० २४, जी० ३१२७७, ४४५,
 ४४६, ४४८, ४५८ से ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,
 ५१६, ५२०, ५५४, ५५५
 करभरवित्ति [करभरवृत्ति] रा० ६७१, ७०३, ७१८,
 ७५०, ७५१
 करय [करक] जी० १६५
 करयल [करतल] ओ० १५, २०, २१, ५३, ५४, ५६,

६२, ११७. रा० ८, १०, १२, १४, १८, ४६, ७२
७४, ११८, २७६, २७६, २८०, २८२, २८१ से
२८६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५, ६५५, ६७२,
६८१, ६८३, ६८६, ७०७, ७०८, ७१३, ७१४,
७२३, ७६५, ७७०, ७७१, ७८६. जी० ३१४४२
४५७

करवत [करपत्र] जी० ३१११०

करित्तए [कर्तुम्] ओ० १०३

करिय [कृत्वा] रा० २८२. जी० ३१४५७

करेत्ता [कृत्वा] ओ० २१. रा० ६. जी० ३१४४३

करेमाण [कुर्वाण] ओ० ५२, ६४, ६४, ११६, १५६.

रा० ६८७, ६८८. जी० ३१४४३, ४४५, ८४२,
८४५, ८१७.

करोडिआ [करोटिका] ओ० ११७

करोडी [करोटी] जी० ३१५८७

कलंक [कलङ्क] जी० ३१५६८

कलंकलीभाव [कलङ्कलीभाव] ओ० १६५

कलंब [कदम्ब] ओ० ६, १०

कलंबचीरियापत्त [कदम्बचीरिकापत्र] जी० ३१८५

कलंबुय [कदम्बक] जी० ३१८३८, १५, ८४२

कलकल [कलकल] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८.

जी० ३१८४२, ८४५

कलकलैत [कलकलायमान] ओ० ४६

कलण [कलन] ओ० ४६

कलमसालि [कलमशालि] जी० ३१५६२

कलस [कलश] ओ० २, १२, ६४. रा० २१, ४६,
२७६, २८०, २८१. जी० ३१२८६, ४४५, ४४६,
४४८, ५८७, ५८७

कलसिया [कलशिका] रा० ७७

कलह [कलह] ओ० ४६, ७१, ११७, १६१, १६३

रा० ७६६. जी० ३१६२७

कलहंस [कलहंस] ओ० ६. जी० ३१२७५

कलहविवेग [कलहविवेक] ओ० ७१

कला [कला] ओ० १४६, १४८, १४६. रा० ८०६,
८०७, ८०८, ८१०

कलायरिय [कलाचार्य] ओ० १४५ से १४७. रा०
७७६, ८०५ से ८०८

कलाव [कलाप] ओ० २, ५५. रा० ३२, १३२,
२३५, २८१, २८१, २८४, २८६, ३००, ३०५, ३१२,
३५५, ६६४. जी० ३१३०२, ३७२, ३८७, ४४७,
४५६, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०,
५६३, ५६३

कलिय [कलिङ्ग] जी० ३१५६५

कलिकलुस [कलिकलुष] रा० ७५०, ७५१

कलित [कलित] जी० ३१२७२, ४४७, ४५७, ४५६,
४६०, ५६४, ५६५

कलित्त [कटिप्र] ओ० १३

कलिय [कलित] ओ० १, २, १५, ४६, ५५ से ५७,
६२, ६५. रा० १२, १७, १८, २०, ३२, ५२, ५६,
१२६, १३७, २३१, २४७, २८१, २८१, २८३ से
२८६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५. जी० ३१२८८,
३००, ३०७, ३७२, ३८३, ४५८, ४६०, ४६२,
४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५५०, ५५४, ५८०,
५६१, ५६७

कलुस [कलुष] ओ० ४६

कलेवर [कलेवर] रा० १६०. जी० ३१२६४

कल्ल [कल्य] ओ० २२. रा० ७२३, ७७७, ७७८,
७८८

कल्लाण [कल्याण] ओ० २, ५२, ७१, १३६. रा० ६,
१०, ५८, १८५, १८७, २४०, २७६, ६८७, ७०४,
७१६, ७७६. जी० ३१२१७, २८७, २८८, ३५८,
४०२, ४४२, ५७६, ६०२

कल्लाणग [कल्याणक] ओ० ४७, ६३, ७२. जी०
३१५६५

कल्लोल [कल्लोल] ओ० ४६

कवइय [कवचिक] ओ० ५७

कवड [कपट] रा० ६७१

कवय [कवच] ओ० १६५, १२०. रा० ६६४, ६८३.
जी० ३१५६२

कवल [कवल] ओ० ३३

कषाड [कषाट] ओ० १, १७४. रा० १३०. जी० ३३००

कविट्ट [कपित्थ] जी० १७२

कवियच्छू [कपिकच्छू] जी० ३१८५

कविल [कपिल] ओ० ६. जी० ३१२७५

कवितीसग [कपिशीर्षक] ओ० १. रा० १२८.

जी० ३३५३

कवितीसय [कपिशीर्षक] रा० १२८. जी० ३३५३

कविहसिय [कपिहसित] जी० ३१६२६

कवेल्लुयावाय [कवेल्लुकापाक] जी० ३१११८

कवोत [कपोत] जी० ३१५६८

कवोल [कपाल] ओ० १६. रा० २५४.

जी० ३४१५, ५६६, ५६७

कसाय [कषाय] ओ० ४४, ४६. जी० १५, १४,
१६, ८६, ६६, १०१, ११६, १२८, १३६; ३१२३;
६१६६

कसायपडिसंलीनया [कषायप्रतिसंलीनता]
ओ० ३६

कसायविउस्सग [कषायव्युत्सर्ग] ओ० ४४

कसायसमुग्घाय [कषायसमुद्घात] जी० ११२३,
८५; ३११०८, १११२, १११३

कसिण [कृष्ण] ओ० १६, ४७. जी० ३१५६६, ५६७

कसिण [कृत्सन] ओ० १५३, १६५, १६६.

रा० ८१४

√कह [कथय्]—कहति. ओ० ४५—कहेव.
रा० ६६३

कहं [कथम्] ओ० ११८. रा० ७०३.

जी० ३१२११

कहकहभूत [कहकहभूत] रा० ७८

कहग [कथक] ओ० १, २

कहगपेच्छा [कथकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.
जी० ३१६१६

कहा [कथा] ओ० २०, ४५, ५३. रा० ७१३

कहि [वव] जी० ११२७

कहि [वव, कुत्र] ओ० १४०. रा० १२२.
जी० ११५४

काइय [कायिक] ओ० ६६

काडं [कृत्वा] ओ० १३७

काडंबरीय [काकोदुम्बरिका] जी० १७२

काडलेस [कापोतलेश्य] जी० ६११६३

काडलेसा [कापोतलेश्या] जी० ६१६८, ६६

काडलेस्स [कापोतलेश्य] जी० ६११८५, १८८, १६६

काडलेस्सा [कापोतलेश्या] जी० ११२१

काऊ [कापोती] जी० ३१७७

काकणिलक्खण [काकिणीलक्षण] ओ० १४६

काणणिलक्खण [काकिणीलक्षण] रा० ८०६

काणणिमंसस्सावियग [काकिणीमांसस्सावितक]
ओ० ६०

काणण [कानन] रा० ६५४, ६५५. जी० ३१५५४

कापिसायण [कापिषायन] जी० ३१८०

काम [काम] ओ० १५, ४३, १४६, १५०, १६८.

रा० ६७२, ६८५, ७१०, ७५१, ७५३, ७७४, ७६१,
८११. जी० ३११७६, ११२४

कामकंत [कामकान्त] जी० ३१७६

कामकूड [कामकूट] जी० ३११७६

कामगम [कामकम] ओ० ४६, ५१

कामगामि [कामकामिन्] जी० ३१५६८, ६०६

कामज्झय [कामज्जवज] जी० ३१७६

कामत्थिय [कामाधिक] ओ० ६८

कामप्पभ [कामप्रभ] जी० ३१७६

कामरय [कामरजस्] ओ० १५०. रा० ८११

कामरूवधारि [कामरूपधारिन्] ओ० ४६

कामलेस्स [कामलेश्य] जी० ३१७६

कामवण्ण [कामवर्ण] जी० ३१७६

कामसिग [कामशृङ्ग] जी० ३१७६

कामसिट्ठ [कामशिष्ट] जी० ३१७६

कामावत्त [कामावर्त] जी० ३१७६

कामुत्तरवडिसय [कामावर्तसक] जी० ३१७६

काय [काय] ओ० २४. रा० १४६, ८१५.

जी० ३१११०, ११११, १७४; ६१६६

√काय [काचय्]—कायावेमि रा० ७५४

काय [पाय] [काचपात्र] ओ० १०५, १२८

काय [बंधण] [काचबन्धन] ओ० १०६, १२६

कायअपरित्त [कायापरीत] जी० ६।७६, ८०

कायकिलेस [कायकिलेश] ओ० ३१, ३६

कायगुत्त [कायगुत्त] ओ० २७, १५२, १६४.

रा० ८१३

कायजोग [काययोग] ओ० ३७, १७५ से १७७,

१८०, १८२

कायजोगि [काययोगिन्] जी० १।३१, ८७, १३३;

३।१०५, १५२, ११०६; ६।११३, ११५, ११८,

१२०

कायद्विति [कायस्थिति] जी० ३।११३३; ६।१२२

कायपरित्त [कायपरीत] जी० ६।७६, ७७, ८३

कायबलिय [कायबलिक] ओ० २४

कायव्व [कर्त्तव्य] रा० ७२, ७०४. जी० ३।१२७;

४।६

कायविनय [कायविनय] ओ० ४०

कायसमिय [कायसमित] ओ० १६४

कायापरित्त [कायापरीत] जी० ६।८५

कारुण्डक [कारण्डक] ओ० ६. जी० ३।२७५

कारण [कारण] रा० १६, ६७५, ७१६, ७२०, ७५२,

७५४, ७५६, ७५८, ७६०, ७६२, ७६४, ७६८

कारवाहिय [कारवाहिक, कारवाधित] ओ० ६८

कारवेत्ता [कारयित्वा] ओ० ५५. रा० ६

कारावण [कारण] ओ० १६१, १६३

कारेमाण [कारयत्] ओ० ६८. रा० २८२, ७६१.

जी० ३।३५०, ४४८, ५६३, ६३७

कारोडिय [कारोटिक] ओ० ६८

काल [काल] ओ० १, १८, २३ से २५, २७, २८, ४५,

४७ से ५१, ८२, ८७, ८६ से ६५, ११४, ११७,

१४०, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७.

रा० १, ७, ६३, ६५, १७३, २७४, ६६५, ६६६,

६६८, ६७६, ६८५, ६८६, ७५०, ७५१ से ७५३,

७७१, ७८६, ७८८, ८१५. जी० १।५, ३४, ३५,

५०, ५२, ६६, १२७, १३७ से १४२; २।२० से

२४, २६ से ३०, ३२ से ३६, ३६, ४६, ६३, ६५,

६६, ७३, ७६, ८६, ८८, ८९, ९७, १०७ से १०९,

१११, ११३, ११४, ११६, १२०, १२१, १२५,

१२६, १३१ से १३३, १३६, १५०; ३।२, २२, ४५,

८३, ८०, ८४, ११७ से १२०, १५६, १८६, १८२,

१८५ से १८७, २१४, २३८, २४३, २४७, २५०,

२५२ से २५६, २५८, ४३६, ५६४, ५६५, ५८६,

५८६, ६२६, ६३०, ७२४, ८१६, ८३८। १६, १८,

२०, ८४४, ८४७, १०२७, १०४२, १०८५, १०८६,

११३१, ११३६, ११३७; ४।३, ५, ८, १६, १७;

५।५, ८, ९, २१ से २४, २८ से ३०; ७।२;

८।३।४; ६।२, ३, १२, २३, २५, २६, ३३, ४०,

४६, ५१, ५२, ५६, ६६, ७१, ७३, ७८, ८७, १६४,

१७१, १७८, २०२, २०४, २५७ से २५९

कालओ [कालतस्] ओ० २८. रा० २००.

जी० १।३३, १३६, १४०; २।४८, ४९, ५४, ५७

से ६२, ८२, ८३; ३।२७२; ४।७ से ११; ५।८,

६, १२ से १६, २३, २६; ६।८; ७।६; ६।१०, ११,

२३, २४, ३१, ३६ से ४८, ५७, ५८, ६८, ७८, ७९,

८६, ८०, ८६, ८७, १०२, १०३, ११४, ११५, १२२,

१३२, १४२, १६० से १६३, १७१, १८६ से

१८१, १८३, १८५, १८८ से २०७, २१० से

२१२, २१४, २१६, २२२ से २२५, २२७ से

२३०, २३३ से २३८, २४० से २४४, २४६,

२४६, २५७ से २६३, २६५, २६८ से २७३,

२७५ से २८२, २८४, २८५

कालतो [कालतस्] जी० २।८४, ११७ से १२०,

१२२ से १२४; ३।५६, १६३, १६४, ११३३ से

११३५; ५।८, १०, २२; ६।१६, २३, ६४, ७६, ७७

कालधम्म [कालधर्म] रा० ७५३

कालपोर [दे० कालपर्वन्] जी० ३।८७८

कालमास [कालमास] ओ० ८७, ८६ से ८५, ११४,

११७, १४०, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७.

रा० ७५० से ७५३, ७६६. जी० ३।११७,

६३०

कालमिगपट्ट [कालमृगपट्ट] जी० ३।५६५

कालमेह [कालमेघ] ओ० ५७

कालय [कालक] जी० ३।८१६
 कालसन्धिय [कालसन्धित] जी० ३।५८६
 कालागुरु [कालागुरु] रा० ८, १२, ३२, १३२,
 २३६, २८१, २६२. जी० ३।३०२, ३७२, ३६८,
 ४४७, ४५७
 कालागुरु [कालागुरु] ओ० २, ५५
 कालाभिगहचरय [कालाभिग्रहचरक] ओ० ३४
 कालायस [कालायस] ओ० ६५. रा० १७३,
 ६८१. जी० ३।२८५
 कालोद [कालोद] जी० ३।७७५, ८१० से ८१२,
 ८१४, ८१६, ८१८
 कालोभास [कालावभास] जी० ३।८३, ६४
 कालोय [कालोद] जी० ३।७७० से ७७३, ८००,
 ८०३ से ८०७, ८१३, ८१५, ८१६ से ८२१,
 ८५६, ८६४, ८६५, ८६७, ८७०
 कालोयय [कालोदक] जी० ३।७७२
 कावपेच्छा [कावप्रेक्षा] जी० ३।६१६
 काविल [कापिल] ओ० ६६
 काविसायण [काविशायन] जी० ३।५८६
 कास [काश] जी० ३।६२८
 कासिस्ता [काशित्वा] जी० ३।६३०
 किङ्कम [किङ्कतकर्मन्] ओ० ४०
 कि [किम्] रा० ६२. जी० १।२
 किङ्कर [किङ्कर] ओ० ६४. रा० ५१
 किङ्करभूत [किङ्करभूत] जी० ३।५६२
 किङ्करभूय [किङ्करभूत] रा० ६६४
 किचि [किञ्चित्] ओ० १६६. रा० ६. जी० ३।८२
 किञ्चणोमोदरिय [किञ्चित्नामोदरिक] ओ० ३३
 किपागफल [किम्पाकफल] ओ० २३
 किपुरिस [किम्पुरुष] ओ० ४६, १२०, १६२.
 रा० १४१, १७३, १६२, ६६८, ७५२, ७७१,
 ७८६. जी० ३।२६६, २८५, ३१८
 किपुरिसकण्ठ [किम्पुरुषकण्ठ] रा० ११५, २५८.
 जी० ३।३२८
 किपुरिसकण्ठम् [किम्पुरुषकण्ठक] जी० ३।४१६
 किमय [किम्मय] जी० ३।८७, १०८१

किमुय [किमुक] ओ० २२. रा० २७, ७७७, ७७८,
 ७८८. जी० ३।११८, २८०, ५६०
 किञ्च [कृत्य] रा० ११, ५६
 किञ्चा [कृत्वा] ओ० ८७. रा० ६६७,
 जी० ३।११७
 किट्टिया [कृष्टिका] जी० १।७३
 किङ्कर [कीडाकर] ओ० ६४
 किणिय [किणित] रा० ७७
 किण्णर [किन्तर] ओ० १३, ४६. रा० ६६८,
 ७५२, ७७१, ७८६. जी० ३।२६६, २८५,
 २८८, ३००, ३१८, ३७२
 किण्णरकण्ठ [किन्तरकण्ठ] जी० ३।३२६
 किण्णरकण्ठग [किन्तरकण्ठक] जी० ३।४१६
 किण्ण [कथम्] रा० ६६७
 किण्ह [कृष्ण] ओ० ४, १२, १३, १६. रा० २२,
 २४, २५, १२८, १३२, १५३, १६७, १७०,
 १७८, २३५, ७०३. जी० ३।७८१, २७३,
 २७७, २७८, २६०, २६८, ३०२, ३२६,
 ३५३, ३५८, ३८२, ३६७, ५८५, ५६७,
 ८३८।१७, १०७५
 किण्हकण्ठवीर [कृष्णकण्ठवीर] रा० २५.
 जी० ३।२७८
 किण्हकेसर [कृष्णकेसर] रा० २५
 किण्हच्छाय [कृष्णच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३।२७३
 किण्हबन्धुजीव [कृष्णबन्धुजीव] रा० २५
 किण्हलेस [कृष्णलेश्य] जी० ३।१०१
 किण्हलेस्सा [कृष्णलेश्या] जी० ३।१०१, १०२
 किण्हसप्य [कृष्णसर्प] रा० २५
 किण्हसोय [कृष्णाशोक] रा० २५
 किण्होभास [कृष्णावभास] ओ० ४. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३।२७३, २६८, ३५८, ५८५
 √कित्त [कीर्तस्] — कित्तित्ति. रा० १८५
 कित्तिय [कीर्ति] ओ० २.

किन्नर [किन्नर] ओ० १२०, १६२. रा० १७,
१८, २०, ३२, ३७, १२६, १४१, १७३, १६२.

जी० ३३११

किन्नरकण्ठ [किन्नरकण्ठ] रा० १५५, २५८

किमंग [किमङ्ग] ओ० ५२. रा० ६८७

किमि [कृमि] जी० ३१८४

किमिकुम्भी [कृमिकुम्भी] रा० ७५६

किमिय [कृमिक] जी० ३११११

किमिराग [कृमिराग] रा० २७. जी० ३१२८०

किर [किल] जी० ३१२६११

किरण [किरण] ओ० १६. जी० ३१५६०, ५६६,
५६७

किरिया [क्रिया] ओ० ४०, १२०, १६२. रा० ६६८,
७५२, ७८६. जी० ३१२१०, २११

किलंत [क्लान्त] जी० ३१११८, ११६

किलाम [क्लम] रा० ७२६, ७३१, ७३२

किलेस [क्लेश] ओ० ४६

किव्विसिय [कित्विषिक] ओ० ६८

किसलय [किसलय] ओ० ५, ८. रा० १३६.

जी० ३१२७४, ३०६

किसि [कृषि] जी० ३१६०७

किसिय [कृषित] रा० ७६०, ७६१

✓कीड [क्रोड]—कीडति जी० ३१२६८

कीयगड [कीतकृत] ओ० १३४

✓कील [क्रोड]—कीलति रा० १८५. जी० ३१२१७

कीलग [कीलक] रा० २४. जी० ३१२७७

कीलण [कीडन] ओ० ४६

कीलिया [कीलिका] जी० ११११६

कुंकुम [कुङ्कुम] ओ० ११०, १३३. रा० ३०.

जी० ३१२८३

कुंचस्सर [क्रोञ्चस्वर] रा० १३५

कुंचिय [कुञ्चित] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६६

कुंजर [कुञ्जर] ओ० १, १३, २७. रा० १७, १८,

२०, ३२, ३७, १२६, ८१३. जी० ३१११८,

११६, २८८, ३००, ३११, ३७२

कुंडधारपडिमा [कुण्डधारप्रतिमा] रा० २५७

जी० ३१४१८

कुंडल [कुण्डल] ओ० १५, २१, ४७, ४६, ५१,

५४, ६३, ६५, ७२, १०८, १३१. रा० ८,

२८५, ६७२, ७१४. जी० ३१४५१, ५६३,

७७५, ६३३

कुंडलभद्र [कुण्डलभद्र] जी० ३१६३३

कुंडलमहाभद्र [कुण्डलमहाभद्र] जी० ३१६३३

कुंडलमहावर [कुण्डलमहावर] जी० ३१६३३

कुंडलवर [कुण्डलवर] जी० ३१६३३

कुंडलवरभद्र [कुण्डलवरभद्र] जी० ३१६३३

कुंडलवरमहाभद्र [कुण्डलवरमहाभद्र] जी० ३१६३३

कुंडलवरोभास [कुण्डलवरावभास] जी० ३१६३३

कुंडलवरोभासमहावर [कुण्डलवरावभासमहावर]

जी० ३१६३३

कुंडलवरोभासवर [कुण्डलवरावभासवर]

जी० ३१६३३

कुंडिया [कुण्डिका] ओ० ११७

कुंडियालंछणय [कुण्डिकालाञ्छणक] रा० ७६७

कुंत [कुन्त] ओ० ६४. जी० ३१११०

कुंतगा [कुन्ताग्र] जी० ३१८५

कुंतगाह [कुन्तगाह] ओ० ६४

कुंथु [कुन्थु] रा० ७७२. जी० ३११११

कुंव [कुन्द] ओ० १६. रा० २६, ३८, १६०, २२२,

२५५, २५६. जी० ३१२८२, ३१२, ३३३,

३८१, ४१६, ४१७, ५६६, ५६७, ८६४

कुंदगुम्भ [कुन्दगुल्म] जी० ३१५८०

कुंदलया [कुन्दलता] ओ० ११. रा० १४५, ३१२६८,
५८४

कुंदलयापविभक्ति [कुन्दलताप्रविभक्ति] रा० १०१

कुंदुरुक [कुन्दुरुक] ओ० २, ५५. रा० ६, १२,

३२, १३२, २३६, २८१, २६२. जी० ३१३०२,

३७२, ३६८, ४४७, ४५७

कुंभ [कुम्भ] जी० ३१५६७

कुंभारावाय [कुम्भकारापाक] जी० ३१११८

कुम्भिक [कौम्भिक, कुम्भाग्र] रा० ४०. जी० ३१३१३

कृष्णी [कुष्मी] रा० ७५६

कुक्कुडय [कौकुचिक] ओ० ६५

कुक्कुड [कुक्कुट] ओ० १, ३३

कुक्कुडलक्षण [कुक्कुटलक्षण] ओ० १४६.

रा० ८०६

कुच्छि [कुक्षि] ओ० १६. जी० ३१५६६ से ५६८,

७८८

कुच्छिसूल [कुक्षिशूल] जी० ३१६२८

कुज्जायगुम्भ [कुञ्जकगुल्म] जी० ३१५८०

कुट्टिज्जंत [कुट्टयमान] रा० ७७

कुट्टिमतल [कुट्टिमतल] ओ० ६३

कुट्ट [कुठ] जी० ३१६२८

कुडभी [कुडभी] रा० ५२, ५६, २३१, २४७.

जी० ३१३६३

कुडय [कुटज] ओ० ६, १०. जी० ३१३८८, ५८३

कुडिल [कुटिल] ओ० १, ४६. जी० ३१५६७

कुडुंब [कुटुम्ब] रा० ६७५

कुडु [कुट्य] जी० ३१७२४, ७२७

कुणाला [कुणाला] रा० ६७६, ६७७, ६८३, ७०६

कुणिस [दे० कुणप] ओ० ७३. जी० ३१८४

कुतुंब [कुस्तुम्ब] रा० ७७

कुतुंबर [कुस्तुम्बर] रा० ७७

कुत्तियावण [कुत्रिकावण] ओ० २६

कुस्तुंबक [कुस्तुम्बक] जी० ३१७८

कुमार [कुमार] रा० ६७३, ६७४, ७६१ से ७६३

कुमारगह [कुमारग्रह] जी० ३१६२८

कुमारसमण [कुमारश्रमण] रा० ६८६, ६८७,

६८६, ६८२ से ६६७, ७०० से ७०६, ७११,

७१३, ७१४, ७१६ से ७२२, ७३१ से ७३३,

७३६ से ७३६ ७४७ से ७८१, ७८७, ७८६

कुमुव [कुमुव] रा० २६, ३१. जी० ३१११८,

११६, २५६, २८२, २८४, ५६७

कुमुदम्पभा [कुमुदप्रभा] जी० ३१६८३

कुमुदा [कुमुदा] जी० ३१६८३, ६१५

कुमुय [कुमुद] [कुमुद] ओ० १२, १५०.

रा० १७४, १६७, २७६, २८१, २८८, ८११.

जी० ३१२८२, २८६

कुम्भ [कूर्म] ओ० १६, २७, ३७. रा० ८११.

जी० ३१५६६, ५६७

कुरा [कुरु, कुर] जी० ३१५७८ से ५६६, ६०५ से

६२८, ६३१, ६३२, ६३६, ६६६, ६६८, ७०२,

कुव [कुरु] जी० ३१७७५, ३

कुर्विद [कुरुविन्द] ओ० १६. जी० ३१५६६

कुल [कुल] ओ० १४, २३, ४०, १४१, १५५.

रा० ७६६. जी० ३११६०

कुलकोडि [कुलकोटि] जी० ३११६० से १६२,

१६५ से १६६, १७१, १७४, ६६६, ६६८

कुलकलय [कुलकय] जी० ३१६२६, ६२८

कुलधररक्षिता [कुलगृहरक्षिता] ओ० ६२

कुलनिस्सिय [कुलनिश्चित] रा० ७७३

कुलरोग [कुलरोग] जी० ३१६२८

कुलव [कुडव] रा० ७७२

कुलवेयावृत्त [कुलवेयावृत्त्य] ओ० ४१

कुलसंपण [कुलसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

कुलिज्जय [कुलीजय] ओ० ६६

कुवलय [कुवल्य] ओ० १३. जी० ३१५६७

कुस [कुश] ओ० ८, १०. रा० ३७. जी० ३१३११,

३८६, ५८१ से ५८३, ५८६, से ५६५

कुसगा [कुशाग्र] ओ० २३

कुसल [कुशल] ओ० १५, ३७, ६३, ६४, १२० १४८,

१४६, १६२. रा० १२, ७०, १७३, ६७२, ६८१,

६८८, ७५२, ७५८, ७५९, ७६५, ७६६, ७७०,

७८६, ८०४, ८०६, ८१०. जी० ३१११८, २८५,

५८८, ५८७

कुसुम [कुसुम] ओ० १३, ४७, ४६. रा० ६, १२, २६

से २८, ३१, २२८, २६१, २६३ से २६६, ३००,

३०५, ३१२, ३५५. जी० ३१२७६ से २८१,

२८४, ३८७, ४५७ से ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,

५१६, ५२०, ५५४, ५८०, ५६०, ६७२

√कुसुम [कुसुम्य] —कुसुमति. जी० ३१५८०

कुसुमधरग [कुसुमगृहक] रा० १८२, १८३.

जी० ३१२६४, ८५७

कुसुमधरग [कुसुमगृहक] जी० ३१८५७

कुसुमदाम [कुसुमदामत्] जी० ३१५६१

कुसुमासव [कुसुमासव] ओ० ६. जी० ३१२७४

कुसुमित [कुसुमित] जी० ३१५८६

कुसुमिय [कुसुमित] ओ० ५, ८, १०, ११.

रा० १४५. जी० ३१२६८, २७४, ३६०, ५८४,

७०२, ८०८, ८२६

कुहंड [कूष्माण्ड] ओ० ४६

कुहंडिया [कूष्माण्डी] रा० २८. जी० ३१२८१

कुहणा [कुहणा] जी० ११६६, ७२

कुहर [कुहर] रा० ७६, १७३. जी० ३१२८५

कुहिय [कुहिय] जी० ३१८४

कूड [कूट] ओ० ६३. रा० १३०, १७१.

जी० ३१११६, ३००, ६८६, ६६०, ६६२ से ६६८,

७७५, ८४५, ६३७

कूडागार [कूटाकार] ओ० १६. जी० ३१५६४,

५६६, ६०४

कूडागारसाला [कूटाकारशाला] रा० १२३, ७५५,

७७२, ७८७, ७८८

कूडाहन्व [कूटाहन्व] रा० ७५१, ७६७

कूणिय [कूणिक] ओ० १४, २०, २१, ५३ से ५६,

६२ से ७१, ८०. रा० ७७८

कूल [कूल] ओ० ११५. रा० १७४, २७६.

जी० ३१२८६, ४४५, ६३२, ६३६, ६६८

कूलधम्मग [कूलध्मायक] ओ० ६४

कूवगाह [कूपगाह] ओ० ६४

कूवमह [कूपमह] जी० ३१६१५

कूवय [कूपक] ओ० ४६

केउ [केतु] ओ० ६ से ८, १०, ५०. रा० १६२,

१६३. जी० ३१२७५, २७६, ३३५, ३५५

केउकर [केतुकर] ओ० १४. रा० ६७१

केऊर [केयूर] ओ० २१, ५४, १०८, १३१.

रा० ८, ७१४

केकय [केकय] रा० ७०६

केतकी [केतकी] जी० ३१२८३

केतगी [केतकी] रा० ३०

केयइ [केकय] रा० ६६८, ६६६, ६८३, ७११

केमहालत [किष्महत्] जी० ३११७६, १७८, १८२

केमहालय [किष्महत्] जी० १११६; ३१८६ ६१,

६४, १८०, २५६, ७६० से ७६२, ६६६, १०८०,

१०८७, १०८८

केयुय [केतुक] जी० ३१७२३

केयूर [केयूर] रा० २८५. जी० ३१४५१, ५६३

केरिसग [कीदृशक] जी० ३१६४, १११६

केरिसय [कीदृशक] रा० १७३. जी० ३१८३ से

८५, ६५ से ६७, १०६, ११६, ११८, ११९, १२२,

१२३, १२८, २१८, २८३, से २८५, ५७६, ५६६,

५६७, ६०१, ६०२, ६५५, ६५८, ६६१, १०७७ से

१०७६, १०६३, १०६७ से १०६६, १११४,

१११७, ११२१ से ११२४

केरिसिय [कीदृशक] जी० ३११२२

केलास [कैलाश] जी० ३१७८८, ७४६, ७५२, ६२३

केलासा [कैलाशा] जी० ३१७५२

केली [केली] ओ० ४६

केवइ [कियत्] जी० ११४१, १४२

केवइय [कियत्] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७,

१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७. रा० ६५५,

६६६. जी० ११५२; ३१७७, ८१, २५६, ७६८,

८०२, ८३०, १००४, १०४२, १०६२, १०६७,

१०६६; ४३

केवचिरं [कियच्चिरम्] रा० २०० जी० ४१७

केवच्चिरं [कियच्चिरम्] जी० १११३६

केवति [कियत्] जी० ३१६०, १६२, १६५ से १६७,

५६६, ६२६, ११३१, ११३६, ११३७; ६११२,

५६

केवतिय [कियत्] रा० ७६८ जी० ११३७, १३८;

२१२० से २४, २६ से ३०, ३२ से ३६, ३६, ४६,

६३, ६६, ७३, ७६, ८६, ८८, ९२, ९७, १०७ से

१०६, १११, ११३, ११४, ११६, १२५, १२६,
 १३३, १३६, १५०; ३१५, १२, १४ से २१, ३३,
 ३४, ३६, ४०, ४२, ४४, ५१, ६० से ६३, ६६, ७७,
 ८०, ८१, ८६, १०७, १२०, १५६, १८६, १९२,
 २३८, २४३, २४७, २५०, २५६, ५६४, ५६५,
 ५७०, ७०६, ७१४, ७३२, ७८८, ७८६, ७९४,
 ८१२, ८१५, ८२३, ८२७, ८३२, ८३४, ८३५,
 ८३६, ८४४, ८४७, ८५०, ८५३, ८५४, ८७२,
 ८७३, १००० से १००६, १०१०, १०२२, १०२७,
 १०७३, १०८३, १०८५, ११११, ४१५, १६, १७;
 ५१५, २१, २३, २४, २६, ३०; ७१२; ६१२, ४,
 २५, २६, ३३, ४६, ५२
केवल [केवल] ओ० १५१, १५३, १६०, १६५,
 १६६. रा० ८१२, ८१४. जी० ३११०२५
केवलकल्प [केवलकल्प] ओ० १६६. रा० ७.
 जी० ३१८६
केवलज्ञान [केवलज्ञान] ओ० ४०, १६५, ११२. रा०
 ७३६, ७४५, ७४६
केवलज्ञानविनय [केवलज्ञानविनय] ओ० ४०
केवलज्ञानि [केवलज्ञानि] ओ० २४. जी० ६११६३,
 १६५, १६६, १६७, २०१, २०५, २०८
केवलदर्शानि [केवलदर्शानि] जी० ११२६, ८६;
 ६१३१, १३५, १३६, १४०
केवलदृष्टि [केवलदृष्टि] ओ० १६५, ११२
केवलज्ञानि [केवलज्ञानि] जी० ११३३
 ६१५६, १६३
केवलपरियाग [केवलपरियाग] ओ० १६५
केवलि [केवलिन्] ओ० ७२, १५४, १७१, १७२.
 रा० ७१६, ७७१, ७७५, ८१५, ८१६.
 जी० ११२६; ६१३६, ४१, ४२, ४४ से ४८, ५०,
 ५२ से ५४
केवलिपरियाग [केवलिपरियाग] ओ० १५४.
 रा० ८१६
केवलिसमुद्भाय [केवलिसमुद्भाय] ओ० १६६,
 १७४. जी० ११३३
केस [केस] ओ० १३, ४७, ६२. रा० २८६.

जी० ३१४५२
केसंतकेसभूमी [केशान्तकेशभूमी] ओ० १६.
 रा० २५४. जी० ३१४१५, ५६६
केसर [केसर] रा० २५, ३७, १७४. जी० ३१११८,
 ११६, २५६ २७८, २८६, ३११, ६४३
केसरिद्रह [केसरिद्रह] जी० ३१४४५
केसरिद्रह [केसरिद्रह] रा० २७६
केसरिया [केसरिका] ओ० ११७
केसलोय [केसलोच] ओ० १५४, १६५, १६६.
 रा० ८१६
केसव [केसव] जी० ३१२२६
केसि [केसि] रा० ६८६, ६८७, ६८८, ६९२ से
 ६९७, ७०० से ७०६, ७११, ७१३, ७१४, ७१६
 से ७२२, ७३१ से ७३३, ७३६ से ७३६, ७४७
 से ७८१, ७८७, ७८६
केसि [केसिन्] रा० १३३. जी० ३१३०३
केसुध [केसुध] रा० ४५
कोइल [कोकिल] ओ० ६. जी० ३१२७५, ५६७
कोडय [कोतुक] ओ० २०, ५२, ५३, ६३, ७०.
 रा० ६८३, ६८५, ६८७ से ६८८, ६८९, ७००,
 ७१६, ७२६, ७५१, ७५३, ७६५, ८७४, ८०२,
 ८०५
कोडयकारग [कोतुककारक] ओ० १५६
कोडहल [कोतुहल] जी० ३१६१६
कोडहल [कोतुहल] ओ० ५२. रा० १५, १६, ६८७,
 ६८८
कोच [कोच्च] रा० २६. जी० ३१२८२
कोचणिगघोस [कोच्चनिगघोष] ओ० ७१. रा० ६१
कोचस्तर [कोच्चस्तर] जी० ३१६०५, ५६८
कोचासन [कोच्चसन] रा० १८१, १८३.
 जी० ३१२६३
कोडलग [कोडलक] ओ० ६. जी० ३१२७५
कोकान्तिय [कोकान्तिक] जी० ३१६२०
कोकासित [दे०] जी० ३१५६६
कोक्कुइय [कोक्कुचिक] ओ० ६४

कौटुण [कुटुन] ओ० १६१, १६३
 कौटुज्जमाण [कुटुज्जमाण] रा० ३०
 कौटुमत्तल [कुटुमत्तल] रा० १३०, १७३, ८०४.
 जी० ३१२८५, ३००
 कौटुय [कुटुयित्वा] जी० ३११८, ११६
 कौटुज्जमाण [कुटुज्जमाण] जी० ३१२८३
 कौटु [कोष्ठ] रा० ३०, १६१, २५८, २७६.
 जी० ३१२३४, २८३, ४१६, ६३७, १०७८
 कौटुग [कोष्ठक] रा० ७११, जी० ३१५६४
 कौटुबुद्धि [कोष्ठबुद्धि] ओ० २४
 कौटुय [कोष्ठक] रा० ६७८, ६८६, ६८७, ६८६,
 ६६२, ७००, ७०६
 कौटुगार [कोष्ठागार] ओ० १४, २३.
 रा० ६७१, ६६५, ७८७, ७८८, ७६०, ७६१
 कौटुगार [कोष्ठागार] रा० ६७४
 कौडकोडी [कोटकोटी] जी० ३१७०३, ७२२, ८०६,
 ८२०, ८३०, ८३४, ८३७, ८३८, ८३९, ८५५,
 १०००
 कौडाकोडि [कोटाकोटि] ओ० १६२, रा० १२४
 कौडाकोडी [कोटाकोटी] जी० २१७३, ६७, १३६;
 ३१७०३, ८०६, १०३८; ५१२६
 कौडि [कोटि] ओ० १, १६२, रा० १२४
 कौडिकोडी [कोटिकोटी] जी० ३११०००
 कौडी [कोटी] रा० ६६४, जी० ३१२३२, ५६२,
 ५७७, ६५८, ८२३, ८३२, ८३५, ८३६, १०३८
 कौडीय [कोटीक] रा० २३६, जी० ३१४०१
 कौडुंब [कौटुम्ब] जी० ३१२३६
 कौडुंबि [कौटुम्बिन्] जी० ३११२६
 कौडुंबिय [कौटुम्बिक] ओ० १, १८, ५२, ६३.
 रा० ६८१ से ६८३, ६८७, ६८८, ६८९, ६९१,
 ७०४, ७०६, ७१४ से ७१६, ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४, जी० ३१६०६
 कोण [दे०कोण] रा० १७३, जी० ३१२८५
 कोणिय [कोणिक] ओ० १५, १६, १८, २०, ६२
 कोणिय [कोणिक] ओ० ६४
 कोहालक [कुहालक] जी० ३१५८२

कोमल [कोमल] ओ० ५, ८, १६, २२, ६३
 रा० ७२३, ७७७, ७७८, ७८८, जी० ३१२७४,
 ५६६, ५६७
 कोमुई [कौमुदी] ओ० १५, रा० ६७२.
 जी० ३१५६७
 कोयासिय [विकसित^१] ओ० १६
 कोरंट [कोरण्ट] ओ० ६३, ६४, रा० ५१, २५५
 कोरंटक [कोरण्टक] रा० २८, जी० ३१२८१
 कोरंटयमुम्म [कोरण्टकमुल्ल] जी० ३१५८०
 कोरक [कोरक] जी० ३१२७५
 कोरख [कोरख्य] ओ० २३, रा० ६८८.
 जी० ३१११७
 कोरखपरिसा [कोरखपरिषद्] रा० ६१
 कोरिल्लय [दे०] रा० ७५६
 कोरेंट [कोरण्ट] ओ० ६५, रा० ६८३, ६६२,
 ७००, ७१६, जी० ३१४१६
 कोलमुणग [कोलमुनक] जी० ३१६२०
 कोलाहल [कोलाहल] ओ० ४६
 कोव [कोप] जी० ३११२८
 कोस [कोश] १४, २३, १७०, रा० १८८, २०७,
 २०८, २३१, २४७, ६७१, ६७४, ६६५, ७६०,
 ७६१, जी० ३१४३, ४४, ८२, २६०, ३५२ से
 ३५५, ३५६, ३६१, ३६४, ३६८, ३६९, ३७२, ३७४,
 ३६३, ३६५, ४०१, ४०२, ४१२, ४२५, ६३४,
 ६४२, ६४४, ६४६, ६५३, ६५५, ६६३, ६६८,
 ६७३, ६७४, ६७६, ६८३, ६८५, ६६१, ७१४,
 ७३६, ७५४, ७५६, ७६२, ७६८ से ७७०, ७७२,
 ८०२, ८१५, ८३६, १०१२ से १०१४
 कोसंब [कोशाम्ब] जी० ११७१
 कोसंबपल्लवप्रविभक्ति [कोशाम्बपल्लवप्रविभक्ति]
 रा० १००
 कोसेज्ज [कोशेय] ओ० १३, जी० ३१५६५
 कोह [कोध] ओ० २८, ३७, ४४, ७१, ६१, ११७,
 ११६, १६१, १६३, १६८, रा० ७६६.
 जी० ३११२८, ५६८, ७६५, ८४१

कोहंगक [कोभङ्गक] ओ० ६
 कोहकसाइ [कोधकपायिन्] जी० ११३१;
 ११४८, १४९, १५२, १५५
 कोहकसाय [कोधकपाय] जी० १११९
 कोहविबेग [कोधविवेक] ओ० ७१

ख

ख [ख] रा० ६५
 खइय [क्षायिक] रा० ७६१, ८१५
 खइय [खचित] जी० ३१३७२
 खओवसम [क्षयोपशम] ओ० ११९, १५६
 खञ्जण [खञ्जन] ओ० १३. रा० २५.
 जी० ३१२७८
 खंड [खण्ड] जी० ३१५६२, ६०१, ८६६
 खंडरक्ख [खण्डरक्ष] ओ० १
 खंडिय [खण्डिक] ओ० ६८
 खंति [क्षान्ति] ओ० २५, ४३. रा० ६८६, ८१४
 खंतिखम [क्षान्तिखम] ओ० १६४
 खंवग्गह [स्कन्दग्रह] जी० ३६२८
 खंदमह [स्कन्दमह] रा० ६८८. जी० ३१६१५
 खंघ [स्कन्ध] ओ० ५, ८, १३, १९. रा० ४, १२,
 २२७, २२८, ७५८, ७५९. जी० ११५, ७१, ७२;
 ३१२७४, ३८६, ३८७, ५६६, ६७२, ६७९, ७६३
 खंघमंत [स्कन्धवत्] ओ० ५, ८. जी० ३१२७४
 खंघावारमाण [स्कन्धावारमाण] ओ० १४६.
 रा० ८०६
 खंघि [स्कन्धिन्] जी० ३१२७४
 खंभ [स्तम्भ] रा० १७ से २०, ३२, ६६, १२९,
 १३०, १३८, १७५, १९०, १९७, २०९, २११,
 २७६, २९७, ३०२, ३२५, ३३०, ३३५, ३४०.
 जी० ३१२६४, २६९, २८७, २८८, ३००, ३७२,
 ३७४, ४६२, ४६७, ४९०, ४९५, ५००, ५०५,
 ५९७, ६४६, ६७३, ६७४, ७५६, ८८४, ८८७,
 ११२८, ११३०
 खंभपुडन्तर [स्तम्भपुटान्तर] रा० १९७.
 जी० ३१२६९

खंभवाहा [स्तम्भवाहु] रा० १९७.
 जी० ३१२६९
 खंभसीस [स्तम्भशीर्ष] रा० १९७. जी० ३१२६९
 खकारपविभत्ति [खकारप्रविभक्ति] रा० ६५
 खग्ग [खड्ग] ओ० २७, ५१, ६९. रा० २४९, ६६४,
 ८१३. जी० ३१५६२
 खग्गपाणि [खड्गपाणि] रा० ६६४. जी० ३१५६२
 खचित [खचित] जी० ३१४१०
 खचिय [खचित] रा० ३२, १६०, २५६, २८५.
 जी० ३१३३३, ४५१
 खज्जूर [सार] [खर्जूरसार] जी० ३१५८६
 खज्जूरसार [खर्जूरसार] जी० ३१८६०
 खज्जूरिवण [खर्जूरीवन] जी० ३१५८१
 खट्टोदय [खट्टोदक] जी० ११६५
 खड्डहड्डा [दे०] जी० ३१२६२
 खण [क्षण] रा० ११९, ७५१, ७५३
 खत्तिय [क्षत्रिय] ओ० १४, २३, ५२.
 रा० ६७१, ६८७
 खत्तियपरिब्बाय [क्षत्रियपरिव्राजक] ओ० ६६
 खत्तियपरिसा [क्षत्रियपरिवत्] रा० ६१, ७६७
 खन्न [दे०] जी० ३१७८१, ७८२
 खम [क्षम] ओ० ५२. रा० २७५, २७६, ६८७.
 जी० ३१४४१, ४४२
 खय [क्षय] रा० ७९९
 खयर [खदिर] रा० ४५
 खर [खर] ओ० १०१, १२४. जी० ११५७, ५८;
 ३१९६, ६१८
 खरकंड [खरकाण्ड] जी० ३, ६, ७, १४, २३, २९
 खरपुडवी [खरपृथ्वी] जी० ३११८५, १९१
 खरमुहिवाय [खरमुखीवादक] रा० ७१
 खरमुही [खरमुखी] ओ० ६७. रा० १३, ७१, ७७,
 ६५७. जी० ३१४४६, ५८८
 खल [खल] ओ० २८
 खलवाड [खलवाट] रा० ७८१, ७८५ से ७८७
 खलु [खलु] ओ० ५२. रा० ९. जी० १११

√खव [क्षय]—खवेइ ओ० १८२.

जी० ३१८३८१८

खवयंत [क्षययत्] ओ० १८२

खवेत्ता [क्षययित्वा] ओ० १८८

खसर [खसर] जी० ३१८२८

खहयर [खेवर] ओ० १५६. जी० ११६८, ११३,

११६, ११७, १२५; २२५, ६६, ७२, ७६, ८३,

८७, ८६, १०४, ११३, १३१, १३६, १३८, १४६,

१४६; ३. १३७, १४५ से १४७, १६१

खहयरी [खेचरी] जी० २१३, १०, ५३, ६६, ७२,

१४४, १४६

√खा [खाद्]—खज्जइ. रा० ७८४—खाइ.

रा० ७३२

खाइ [दे०] ओ० १६२

खाइम [खाद्य] ओ० ११७, १२०, १४७, १६२.

रा० ६६८, ७०४, ७१६, ७५२, ७६५, ७७६,

७८७ से ७८६, ७८४, ७८६, ८०२, ८०८

खाओवसमिय [क्षायोपशमिक] रा० ७४३

खाणु [स्थानु] जी० ३१६२५, ६३१

√खाम [क्षम]—खामेइ. रा० ७७७

खामित्तए [क्षमयितुम्] रा० ७७७

खाय [खात] ओ० १

खायमाण [खादत्] जी० ३११११

खार [क्षार] जी० ३१६२७, ६५५

खारय [क्षारक] जी० ३१७३१

खारवत्तिथ [क्षारवर्तित] ओ० ६०

खारा [खारा] जी० २१६

खारोवय [क्षारोदक] जी० ११६५

खिलिणिजाल [किङ्किणीजाल] रा० १६१. जी०

३१२६५, ३०२

खिलिणी [किङ्किणी] ओ० ६४. रा० १३२, १७३,

६८१. जी० ३१२८५, ५६३

खिसण [खिसन] ओ० ४६

खिसणा [खिसना] ओ० १५४, १६५, १६६. रा०

८१६

खिज्जमाण [खिज्जमान] ओ० १३३. जी० ३१३०३

खित्त [क्षित्त] जी० ३१६८६

खिप्पामेव [क्षिप्रमेव] ओ० ५५. रा० ६. जी०

३१४४४

खिबित्ता [क्षिप्त्वा] जी० ३१६८८

खीण [क्षीण] ओ० १६८

खीर [क्षीर] ओ० ६२, ६३. रा० २६. जी०

३१२८२, ७७५

खीरघाई [क्षीरघात्री] रा० ८०४

खीरपूर [क्षीरपूर] रा० २६. जी० ३१२८२

खीरवर [क्षीरवर] जी० ३१८६२, ८६३, ८६५

खीरासव [क्षीराश्रव] ओ० २४

खीरोद [क्षीरोद] जी० ३१२८६, ४४५, ८६५, ८६६

८६८, ८५६, ८६३

खीरोदग [क्षीरोदक] जी० ३१४४५, ८६३

खीरोवय [क्षीरोदक] जी० ११६५

खीरोयग [क्षीरोदक] रा० १७४, २७६

खु [क्षु] जी० ३१२७, ५६२

खुज्ज [कुज्ज] जी० ११११६

खुज्जा [कुज्जा] ओ० ७०. रा० ८०४

खुड्ड [क्षुद्र] रा० १७४, १७५, १८०. जी० ३१२६६,

२८७, २६२, ४१०, ५७६, ६३७, ७३८, ७४३,

७६३, ८५७, ८६३, ८६६, ८७५, ८८१

खुड्डुखुड्डग [क्षुद्रक्षुद्रक] रा० १८०

खुड्डुखुड्डय [क्षुद्रक्षुद्रक] रा० १८१

खुड्डय [क्षुद्रक] रा० २४७. जी० ३१४०६

खुड्डा [क्षुद्रक] रा० २४८, २४९. जी० ७११७

खुड्डाग [क्षुद्रक] ओ० २४. रा० ३५४. जी०

३५१६; ७५६, ६०, १२, १५, १६, १८; ६१२ से

४, ४०, ५१, १७१, २३६, २३८, २४३, २४४, २४६,

२७१, २७३, २७६ से २८२

खुड्डापाताल [क्षुद्रकपाताल] जी० ३१७२६, ७२८,

७२६

खुड्डापायाल [क्षुद्रकपाताल] जी० ३१७२६, ७२७,

७२६

खुड्डाय [क्षुद्रक] ओ० १७०. जी० ३१८६, २६०

खुडालिजर [दे० खुदकालिञ्जर] जी० ३।७२६
 खुडिय [खुदिक] जी० ३।५६३
 खुडिया [खुदिका] ओ० २४. रा० १७४, १७५,
 १८०, ७७२. जी० ३।१२४, १२५, २८६, २८७,
 २८२, ५७६, ६३७, ७३८, ७४३, ७६३, ८५७, ८६३,
 ८६६, ८७५, ८८१
 खुत्तग [दे०] ओ० ६०
 खुद [खुद] रा० ६७१
 खुल्म [खुम्] -- खुल्मांति जी० ३।७२६
 खुभियजल [खुभितजल] जी० ३।७८३, ७८४
 खुरपत [खुरपत्र] जी० ३।८५
 खुहा [खुधा] ओ० ११७. रा० ७६६. जी०
 ३।१०६, ११८, ११९, १२८, १११४
 खेड [खेट] ओ० ६८, ८६ से ६३, ६५, ६६, १५५,
 १५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७
 खेत [क्षेत्र] ओ० २८, १६२. जी० १।५०; २।२६
 से २६, ५४ से ५६, ६५, ८४, ८८, ११४, १२३,
 १३२; ३।१०७, ७४१, ७६१, ८३८।२५,
 ११११
 खेतओ [क्षेत्रत्स] ओ० २८. जी० १।३३, १३६,
 १४०; २।१२०; ५।८, ६, २३. २६; ६।२३,
 ४०, ६७, २५७
 खेतच्छेद [क्षेत्रछेद] जी० ३।४६, ४७
 खेतच्छेय [क्षेत्रछेय] जी० ३।२१ से २७, ४५
 खेताभिगहचरय [क्षेत्राभिग्रहचरक] ओ० ३४
 खेम [क्षेम] ओ० १, १४. रा० ६७१
 खेमंकर [क्षेमङ्कर] ओ० १४. रा० ६७१
 खेमंघर [क्षेमघर] ओ० १४. रा० ६७१
 खेय [खेय] ओ० ६३
 खेलूड [दे०] जी० १।७३
 खेलीसहिपत [खेलीषधिप्राप्त] ओ० २४
 खोखुन्भमाण [चोखुन्भमाण] ओ० ४६
 खोत [क्षोद] जी० ३।६६२
 खोतरस [क्षोतरस] जी० ३।६६४
 खोतोद [क्षोदोद] जी० ३।६६१
 खोतोदग [क्षोदोदक] जी० ३।६४८

खोतोदय [क्षोदोदक] जी० १।६५
 खोद [क्षोद] जी० ३।६३१, ६४६
 खोदरस [क्षोदरस] जी० ३।८७८
 खोदवर [क्षोदवर] जी० ३।८७४, ८७५, ८७७, ८२७
 खोदोद [क्षोदोद] जी० ३।८७७, ८७८ ८८०, ८२५,
 ८२८, ८३२
 खोदोदग [क्षोदोदक] जी० ३।८७५, ८८१, ८१०
 खोदोय [क्षोदोय] जी० ३।२८६
 खोदोयग [क्षोदोदक] रा० १७४
 खोमिद [क्षोमित] रा० १७३. जी० ३।२८५
 खोम [क्षोम] रा० ३७, २४५ जी० ३।३११
 ४०७, ५६५
 खोय [क्षोद] जी० ३।७७५
 खोयरस [क्षोदरस] जी० ३।५८६

ग

ग [ग] रा० ६५
 गड [गति] ओ० १६, २१, २७, ४६, ५०, ५४, ८६ से
 ६५, ११४, ११७, १५५, १५७ से १६०,
 १६२, १६७, १७२. रा० ७५५, ७५७, ८१३
 जी० १।१४; ३।८३८।२२
 गडय [गतिक] जी० १।६४, ७४, ७७, ८७, ८८,
 ८६, १०१
 गडरडय [गतिगतिक] ओ० ५०
 गंगा [गङ्गा] ओ० ११५, ११७. रा० २४५, २७६.
 जी० ३।४०७, ४४५, ६३७
 गंगाकूला [गङ्गाकूलक] ओ० ६४
 गंगामट्टिया [गङ्गामृत्तिका] ओ० ११०, १३३
 गंगावत्तग [गङ्गावर्तक] ओ० १६
 गंगावत्तय [गङ्गावर्तक] जी० ३।५६६, ५६७
 गंठि [ग्रन्थि] ओ० १. रा० २७०. जी० ३।४३५,
 ८७८, ६६३, ६६७
 गंड [गण्ड] ओ० ४७, ६४, ७२
 गंडमाणिया [गण्डमानिका] रा० ७७२
 गंडलेहा [गण्डलेखा] ओ० १५. रा० ६७२. जी०
 ३।५६७

गंडीपय [गण्डीपद] जी० १११०३
 गंडोवहाणय [गण्डोपधानक] रा० २४५
 गंडोवहाणिया [गण्डोपधानिका] जी० ३४०७
 गंता [गत्वा] ओ० १८२ जी० ३७८८
 गतूण [गत्वा] ओ० १६५
 गंथ [ग्रन्थ] रा० २६२ जी० ३४५७
 गन्धिम [ग्रन्धिम] ओ० १०६, १३२ रा० २८५
 जी० ३४५१, ५६१
 गंध [गन्ध] ओ० २, १५, ४७, ५१, ५५, ६३, ६७, ७२, ६२, १४७, १६१, १६३, १६६, १७० रा० ६, १२, १३, ३०, ३२, ४५, १३२, १५६, १५७, १७२, १६६, २३६, २५८, २७६ से २८१, २६१, २६२, ३५१, ५६४, ६५७, ६७२, ६८५, ७१०, ७१४, ७५१, ७५३, ७७१, ७७४, ७६४, ८०२, ८०८ जी० १५, ३६, ५०, ५८, ७३, ७८, ८१, ३१२, ५८, ८४, ८७, ६५, १२७, २७१, २८३, ३०२, ३०६, ३२६, ३७२, ३६८, ४१६, ४४५ से ४४७, ४५१, ४५७, ५१६, ५४७, ५७८, ५८६, ५६२, ५६८, ६०१, ६०२, ६४५, ६४८, ६५६, ७७५, ८६०, ८६६, ८७२, ८७८, ८३७, ८७२, ८८२, १०७८, १०८१, १०६७, १११७, १११८, ११२४
 गंधओ [गन्धतस्] जी० १३७, ५०
 गंधकासाह [गन्धकाषायिन्] ओ० ६३ रा० २८५ जी० ३४५१
 गंधग [गन्धाङ्ग] जी० ३१७०
 गंधजुति [गन्धयुक्ति] ओ० १४६
 गंधतो [गन्धतस्] जी० ३१२
 गंधद्वाणि [गन्धघ्राणि] ओ० ७, ८, १० जी० ३१२७६
 गंधमंत [गन्धवत्] जी० १३३, ३६, ३४६२
 गंधमादन [गन्धमादन] जी० ३६६८
 गंधमायण [गन्धमादन] जी० ३५७७
 गंधवट्टि [गन्धवर्ति] ओ० २, ५५, ६२ रा० ६, १२, ३२, १३२, २३६, २८१ जी० ३३०२, ३७२, ४४७
 गंधव [गन्धर्व] ओ० ४६, १२०, १४८, १४६

१६२ रा० १४१, १७३, १६२, ६८५, ६६८, ७५२, ७७१, ७८६ जी० २१७, ३१२६६, २८५, ३१८, ५८८
 गंधव्वकंठ [गन्धर्वकण्ठ] रा० १५५, २५८ जी० ३१२२८
 गंधव्वकंठा [गन्धर्वकण्ठा] जी० ३४१६
 गंधव्वघरग [गन्धर्वगृहक] रा० १८२, १८३ जी० ३१२६४
 गंधव्वणट्ट [गन्धर्वनृत्य] रा० ८०६, ८१०
 गंधव्वनगर [गन्धर्वनगर] जी० ३६२८
 गंधव्वानिय [गन्धर्वानिक] रा० ४७, ५६
 गंधहृत्थि [गन्धहृस्तिन्] ओ० १४, १६, २१, ५४ रा० ८, २६२, ६७१ जी० ३४५७
 गंधावति [गन्धापातिन्] जी० ३७६५
 गंधावाति [गन्धापातिन्] रा० २७६ जी० ३४४५
 गंधिय [गन्धिक] ओ० २, ५५ रा० ६, १२, २२, ३२, १३२, २३६, २८१, २८५ जी० ३३०२, ३७२, ४४७, ४५१
 गंधीय [गन्धिक] जी० ३१२६०
 गंधीर [गम्भीर] ओ० १, ५, ८, १६, २७, ४६, ४६, ७१ रा० १३, १४, ६१, १७४, २४५, ८१३ जी० ३१८३, ११८, ११६, २७४, २८६, ४०७, ५६६, ५६७
 गकारपविभत्ति [गकारप्रविभक्ति] रा० ६५
 गगण [गगन] ओ० २७, ६४ रा० ५०, ५२, ५६, १३७, २३१, २४७, ८१३ जी० ३३०७, ३६३
 गच्छ [गम्] —गच्छ रा० ६८० —गच्छइ रा० १५ —गच्छति ओ० १७१ जी० १५४ —गच्छति रा० १३ जी० ३४४० —गच्छह रा० ६ —गच्छामि रा० १६ —गच्छामो ओ० ५२ रा० ६८७ —गच्छाहि रा० ६६६ —गच्छिहिति ओ० १४०
 गच्छंत [गच्छत्] ओ० ४०
 गच्छित्तए [गन्तुम्] ओ० १००
 गज्ज [गद्य] रा० १७३ जी० ३१२८५
 गज्ज [गर्ज] —गज्जति रा० २८१

जी० ३,४४७
 गज्जित [गजित] जी० ३।६२६
 गङ्ग [गन्त] जी० ३।६२३, ६३१, ३
 √गङ्ग [गन्] -- गङ्गेज्जा. जी० ३।६६३
 गङ्गित्तए [गङ्गयित्तुम्] जी० ३।६६०
 गङ्गिय [गङ्गित] रा० ७५३
 गण [गण] ओ० ६, १६, ४०, ४१, ४६, ५०, ६३, ६८,
 १५५, १६२, १६२. रा० ३२, २०६, २११.
 जी० ३ ११८, ११६, २७५, ३७२, ५८२, ५८६ से
 ५६६, ६००, ६०३ से ६१७, ६२०, ६२५, ६२७,
 ६२८, ६३०, ६३६, ७४६, ११२०
 गणग [गणक] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४
 गणनायक [गणनायक] ओ० १८
 गणनायक [गणनायक] ओ० ६३. रा० ७५४, ७५६,
 ७६२, ७६४
 गणविउस्सग्ग [गणव्युत्सर्ग] ओ० ४४
 गणिय [गणित] ओ० १४६. रा० ८०६, ८०७
 गणवेधावच्च [गणवेधावृत्त्य] ओ० ४१
 गणत्तिआ [दे०] ओ० ११७
 गत [गत] रा० १२२, २८३, २८६. जी० ३।४४३,
 ४४७, ४४६, ४५६, ४५७, ७४६
 गता [गदा] जी० ३।११०
 गति [गति] रा० ८१५. जी० ३।५६७, ८४२, ८४५
 गतिकल्लाण [गतिकल्याण] ओ० ७२
 गतिय [गतिक] जी० १।५६, ६२, ६५, ६७, ७६, ८०,
 ८२, १०३, १११, ११२, ११६, ११६, १२३, १२८,
 १३४, १३६
 गत्त [गात्र] ओ० ४७, ६३. रा० १२, ३७, ७५८ से
 ७६१ जी० ३।११८, ३११, ४०७
 गत्तग [गात्रक] रा० २४५
 गम्भ [गर्भ] रा० ८००, ८०२. जी० ३.५६२
 गम्भघर [गर्भगृह] जी० ३।५६४
 गम्भघरग [गर्भगृहक] रा० १८२, १८३.
 जी० ३।२६४

गम्भत्थ [गर्भस्थ] ओ० १४२, १४४
 गम्भवक्कत्तिथ [गर्भावक्रान्तिक] जी० १।६७, ११७,
 १२५, १२६, १२६; ३।१३८, १४०, १४२, १४५,
 १४६, २१२, २१५, २२६
 गम्भवास [गर्भवास] ओ० १६५
 गम्भाहाण [गर्भाधान] रा० ८०३
 √गम् [गम्] -- गमिस्सामो. ओ ६८. -- गमिहिति.
 रा० ७६६. -- गम्मन्ती. ओ० ७४
 गम् [गम्] जी० ३।२१८, ६६६, ७१३, ७४२, ७४४,
 ७४५, ६२८, ६२८, १०४५, १०४८
 गमण [गमन] ओ० ४०, ४६, ६५, ६६, १२२,
 रा० १७, १८, २८८, ६५६, ६६७, ७७५, ७७६,
 ७८०. जी० ३।४५४, ५५६
 गमय [गमक] रा० २५१, २६५. जी० ३।७५१
 गमित्तए [गन्तुम्] ओ० १००
 गय [गज] ओ० १६, ४८, ५२, ५५ से ५७, ६२, ६४,
 ६५. रा० २५, १४१, १४८, १६२, ६८७ से ६८६.
 जी० ३।२६६, २७८, ३१८, ३२१, ३५५, ४५४,
 ५८६, ५६६, ५६७, १०१५
 गय [गत] ओ० १५, १६, २१, ४६ से ४६, ६५, १७२,
 १७५, १७७, १६५।२२. रा० ८, ४७, ६८, १२२,
 १२३, १७३, २७५, २७७, २८१, २८६, २९०,
 ६५७, ६७२, ६८७ से ६८६, ७१०, ७१६, ७५३,
 ७६५, ७७४, ७६४, ८००, ८०२, ८०६, ८१०.
 जी० ३।२८५, ४४१, ४५५, ५६६, ५६७
 गयकंठ [गजकण्ठ] रा० १५५, २५८. जी० ३।३२८
 गयकंठग [गजकण्ठक] जी० ३।४१६
 गयकण्ण [गजरुर्ण] जी० ३।२१६, २२३
 गयकण्णदीव [गजरुर्णदीप] जी० ३ २२३
 गयकलभ [गजकलभ] रा० २५. जी० ३.२७८
 गयजोहि [गजयोधिन्] ओ० १४८, १४६.
 रा० ८१०, ८११
 गयदन्त [गजदन्त] रा० २६, १३२. जी० ३।२८२,
 ३०२
 गयवहया [गतपत्तिका] ओ० ६२
 गयलक्षण [गतलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

गयवह [गजपति] ओ० ५१, ६३
 गयविलंबिय [गजविडम्बित] रा० ६१
 गयविलसिय [गजविलसित] रा० ६१
 गया [गदा] ओ० १, रा० २४६
 गयहृणा [गर्हणा] ओ० १५४, १६५, १६६.
 रा० ८१६
 गरुडज्जाय [गरुडज्जाय] रा० १६२, जी० ३१३३५
 गरुड [गरुक] जी० ११५; ३१२२
 गरुडत्त [गरुकत्त] रा० ७६२, ७६३
 गरुड [गरुड] ओ० १६, ४७, ४८, १२०, १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६, जी० ३१५६६
 गरुडव्यूह [गरुडव्यूह] ओ० १४६, रा० ८०६
 गरुडासन [गरुडासन] रा० १८१, १८३.
 जी० ३१२६३
 गरु [गरु] ओ० ५७, जी० ३१५६७
 गरुक्ष [गरुक्ष] जी० ३१६०४
 गरुक्षजाल [गरुक्षजाल] रा० १३२, १६१.
 जी० ३१२६५, ३०२
 गरुक्षिण्य [दे० आच्छादनम्] रा० १५३.
 जी० ३१३२६
 गरुल [गरुल] ओ० ४७, रा० २५, जी० ३१२७८
 गरुलसग [गरुलसग] ओ० १, १४, १४१.
 रा० ६७१, ७४४, ७६६
 गरुलसण [गरुलसण] ओ० ११७, ११६, १५६
 गरुलसणया [गरुलसणया] रा० ७६५, ७७४
 गरुलसि [गरुलसि] रा० ७७४
 गरु [गरु] ओ० ५०, ६३, १६२, रा० १२, ७६, १७३,
 २६१, २६३ से २६६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५.
 जी० २११८; ३१८५, ६३१, ७०३, ८०६,
 ८३८, ३, ६, ६, २२, २६, ३०, ८४५, १०२०, १०२१,
 १०२६, १०३७, १०३८
 गरुअवसव्य [गरुअवसव्य] जी० ३१६२६
 गरुगज्जित [गरुगज्जित] जी० ३१६२६
 गरुगण [गरुगण] रा० १२४, जी० ३१५८६,
 ८३८, १०, २१, ८४१, ८४२, १०२०
 गरुजुड [गरुजुड] जी० ३१६२६

गरुणया [गरुणया] ओ० ५२, रा० ६८७
 गरुणी [गरुणी] जी० ३१५६८
 गरुदंड [गरुदण्ड] जी० ३१६२६
 गरुमुसल [गरुमुसल] जी० ३१६२६
 गरुविमाण [गरुविमाण] जी० २१४२; ३११००६,
 १०१२, १०१७, १०३१
 गरुसंघाडग [गरुसंघाडग] जी० ३१६२६
 गरुहाय [गृहीत्वा] रा० १२, जी० ३१११८
 गरुहित [गृहीत] जी० ३१३०३, ४५७, ४५६, ४६१
 ४६५
 गरुहिय [गृहीत] ओ० ४६, ४६, ७०, ११६, १२०, १६२.
 रा० १२, ६६, ७०, १३३, २६१, २६३ से २६६,
 ३००, ३०५, ३१२, ३५५, ६६४, ६८३, ६८६, ६८८,
 ७५२, ७८६, ८०४, जी० ३१४५८, ४६०, ४६२,
 ५२०, ५५४, ५६२
 गरुगा [गृ]—गायंति, रा० ११५, जी० ३१४४७.
 —गिज्जह, रा० ७८३
 गरुडय [गव्यूत, गव्यूति] ओ० १६५.
 जी० ११८८, ६०, १०३, १२१, १२४, १३०;
 ३११०७, ७८८, ६१८, १०२२
 गरुड [गरुड] रा० ७७४
 गरुत [गरुत] जी० ३१४५१, ४५७, ६०२, ८६०, ८६६,
 ८७२, ८७८
 गरुतलड्डि [गरुतलड्डि] जी० ३१५६७
 गरुथा [गरुथा] जी० ३१८८
 गरुथा [गरुथा] जी० ३१६३१
 गरुम [गरुम] ओ० १, २८, २६, ४६, ६८, ८६ से ८३,
 ८५, ८६, १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८.
 रा० ६६७, ७८७, ७८८, जी० ३१६०६, ६३१,
 ८४१
 गरुमकण्डग [गरुमकण्डग] ओ० १५४, १६५, १६६.
 रा० ८१६
 गरुमदाह [गरुमदाह] जी० ३१६२६
 गरुममारी [गरुममारी] जी० ३१६२८
 गरुमरोग [गरुमरोग] जी० ३१६२८

गामाणुगाम [गामाणुगाम] ओ० १६, २०, ५२, ५३.

रा० ६८६, ६८७, ६८८, ७०६, ७११, ७१३

गाय [गात्र] ओ० १, ३६, ३७, ५२, ६३, ७०, ८४,

११०, १३३. रा० २८५, २८१, ६८७ से ६८८.

जी० ३११८

गाय [गो] जी० ३१६३१

गायंत [गायत्] ओ० ६४

गायलट्टि [गात्रयष्टि] ओ० ७०. रा० २५४.

जी० ३१४१५

गावी [गो] जी० ३१६१६

गाह [ग्राह] जी० ११६६, ११८; ३१४५७ से ४६२,

४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५५४

√गाह [ग्राह्य] — गाहेह. ओ० ५६

गाहा [गाय] ओ० १४६. रा० ८०६. जी० ३१५,

१२, १२७, ३५५

गाहावइपरिसा [गृहपतिपरिषद्] रा० ७६७

गाहेत्ता [ग्राहयित्वा] ओ० ५६

√गिज्ज [गृष्] — गिज्जहिहि ओ० १५०.

रा० ८११

√गिण्ह [ग्रह] — गिण्हइ. ओ० १७०. — गिण्हंति.

रा० २८१. जी० ३१४४५. — गिण्हंति.

रा० २८८ — गिण्हंमो. ओ० ११७

गिण्हित्तए [ग्रहीतुम्] ओ० ११७. जी० ३१६८८

गिण्हित्ता [गृहीत्वा] ओ० १७०. रा० २८१.

जी० ३१४४५

गिद्ध [गृद्ध] रा० ७५३

गिम्ह [ग्रीष्म] ओ० २६

गिम्हकाल [ग्रीष्मकाल] ओ० ११५

गिरा [गिर्] जी० ३१५६७

गिरि [गिरि] रा० ८०४. जी० ३१५६७, ८३६

गिरिपक्खंदोल्ला [गिरिपक्षान्दोलक] ओ० ६०

गिरिपडियग [गिरिपतितक] ओ० ६०

गिरिमह [गिरिमह] रा० ६८८

गिलाणभत्त [ग्लानभक्त] ओ० १३४

गिलाणवेयावच्च [ग्लानवेयावृत्त्य] ओ० ४१

√गिलाय [ग्लै] — गिलायज्जाह. रा० ७२०

गिल्लि [दे०] ओ० १००, १२३. जी० ३१५८१.

५८५, ६१०

गिह [गृह] ओ० २०, ५३. रा० ६८१, ६८३, ७०८,

७१०, ७१३, ७२३, ७२६

गिहिधम्म [गृहिधर्म] ओ० ५२, ७८, ६३. रा० ६८७,

६८८, ६८५, ६८६, ७७५

गिहिल्लिगसिद्ध [गृहिल्लिङ्गसिद्ध] जी० १८

गीइया [गीतिका] ओ० १४६. रा० ८०६

गीत [गीत] जी० ३१८४२, ८४५

गीय [गीत] ओ० ४६, ६८, १४६. रा० ७, ७८,

८०६. जी० ३, ३५०, ५६३, १०२३

गीयजत्त [गीतयजम्] जी० ३१२५६

गीयरइ [गीतरति] ओ० १४८, १४९. रा० १७३,

८०६, ८१०

गीयरइण्णिय [गीतरतिप्रिय] ओ० ६५

गीयरति [गीतरति] जी० ३१२८५

गीवा [ग्रीवा] ओ० १६. रा० २६. जी० ३१२७६,

४१५, ५६६, ५६७

गुजंत [गुञ्जत्] ओ० ६. रा० ७६, १७३.

जी० ३१२७५, २८५

गुज्जराग [गुञ्जार्धराग] ओ० २२. रा० २७, ७७९

७७८, ७८८. जी० ३१२८०

गुंजा [गुञ्जा] रा० ७६, १७३. जी० ३१२८५

गुंजालिया [गुञ्जालिका] ओ० ६६. रा० १७४,

१७५, १८०. जी० ३१२८६

गुंजावाय [गुञ्जावात्] जी० १८१

गुज्ज [गुच्छ] ओ० ६ से ८, १०. जी० ११६६;

३१२७५

गुज्ज [गुह] रा० ६७५

गुज्जवेस [गुह्यवेश] जी० ३१५६६

गुड [गुड] जी० ३१५६२

गुण [गुण] ओ० १, १४, १५, २३, २५, ६३, ६६, १३०

१४०, १४३, १५७. रा० ६६, ७०, १७३, ६७१

६७३, ६८६, ६८८, ७३२, ७८६, ८०१.

जी० ११५०; ३२८५, ५६६, ५६७
 गुणनिष्कण [गुणनिष्कण] ओ० १४४
 गुणतर [गुणतर] रा० ७१८
 गुणभाव [गुणभाव] ओ० १६५, १२
 गुणयातीस [एकोनचत्वारिंशत्] रा० १२६
 गुणव्यय [गुणव्यय] ओ० ७७, रा० ७८७
 गुणसेदिया [गुणश्रेणिका] ओ० १८२
 गुणिय [गुणित] जी० ३८३, ८२६
 गुत्त [गुत्त] ओ० २७, १५२, १६४, रा० १२३,
 ६६४, ७७५, ७७२, ८१३, जी० ३१५६२
 गुत्तकुवार [गुत्तद्वार] रा० १२३, ७५५, ७७२
 गुत्तपालित [गुत्तपालिक] जी० ३१५६२
 गुत्तपालिय [गुत्तपालिक] रा० ६६४
 गुत्तबभयारि [गुत्तब्रह्मचारिन्] ओ० २७, १५२,
 १६४, रा० ८१३
 गुत्ति [गुत्ति] रा० ६८६, ८१४
 गुत्तिदिय [गुत्तेन्द्रिय] ओ० २७, ३७, १५२, १६४,
 रा० ८१३
 गुप्पमाण [गुप्पत्] ओ० ४६
 गुप्फ [गुल्फ] ओ० १६, जी० ३१५६६
 गुमगुमंत [गुमगुमायमान] ओ० ६, जी० ३१२७५
 गुम्म [गुल्म] ओ० ६ से ८, १०, जी० ११६६;
 ३१२७५, ५८०, ६३१
 गुरु [गुरु] रा० ६७१
 गुल [गुड] ओ० ६२, जी० ३१६०१, ८६६
 गुलइय [दे०] ओ० ५, ८, १०, रा० १४५,
 जी० ३१२६८, २७४
 गुलगुलंत [गुलगुलायमान] ओ० ५७
 गुलिका [गुलिका] ओ० ४७, रा० २५, २६, २८,
 जी० ३१२७८, २७६, २८१
 गुहा [गुहा] रा० १७३, जी० ३१२८५
 गूढ [गूढ] ओ० १६, जी० ३१५६६
 गूढवंत [गूढदन्त] जी० ३१२१६
 गेज्ज [ग्राह्य] रा० १३३, जी० ३१३०३

✓गेण्ह [ग्रह]—गेण्हह, रा० ७०८.
 जी० ३१४५६—गेण्हति, रा० ७५.
 जी० ३१४४५
 गेण्हित्तए [ग्रहीतुम्] जी० ३१६८६
 गेण्हित्ता [ग्रहीत्वा] रा० ७५, जी० ३१४४५
 गेद्धपट्टग [गृध्रपृष्ठक] ओ० ६०
 गेय [गेय] रा० ७६, ११५, १७३, २८१,
 जी० ३१२८५, ४४७
 गेविज्ज [ग्रैवेय] रा० ६६४, ६८३
 गेविज्जविमाण [ग्रैवेयविमान] ओ० १६२
 गेवेज्ज [ग्रैवेय] ओ० ५७, १६०, रा० ६६, ७०,
 जी० २१६२; ३१५६२, ५६३, १०३८, ११०३,
 ११०५, ११०७, १११६, १११७, ११२०, ११२३,
 ११२४, ११२६
 गेवेज्जक [ग्रैवेयक] जी० २११४८, १४६
 गेवेज्जक [ग्रैवेयक] ओ० ६३
 गेवेज्जविमाण [ग्रैवेयविमान] ओ० १६०,
 जी० ३११०६३, १०६६, १०६६, १०७१, १०७३,
 १०७६
 गेवेज्जा [ग्रैवेयक] जी० ३११०८४, १०८६,
 १०८२, १०८५, ११०३, ११०५, ११०७,
 १११६, १११७, ११२०, ११२३, ११२४,
 ११२६
 गेह [गेह] जी० ३१६०५, ६३१, ८४१
 गेहागार [गेहाकार] जी० ३१५६४
 गेहाययण [गेहायतन] जी० ३१६०५
 गेहाय [य?] ण [गेहायतन] जी० ३१८४१
 गो [गो] ओ० १, १४, १४१, रा० ६७१, ७७४,
 ७६६, जी० ३१८४
 गोकण [गोकर्ण] जी० ३१२१६, २२४
 गोकणवीथ [गोकर्णद्वीप] जी० ३१२२४
 गोकलिज्ज [गोकिलिज्जक] रा० १५१,
 जी० ३१३२४
 गोकिलिज [गोकिलिज्ज] रा० ७७२
 गोक्षीर [गोक्षीर] ओ० १६, १६४ जी० ३१६०१,

८६६, ६५६

गोखीर [गोखीर] ओ० ४७ रा० १३०.

जी० ३:३००, ५६६

गोघयवर [गोघृतवर] जी० ३:८७२, ६६०

गोच्छिद्य [गुच्छित] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.

जी० ३:१२६, २७४

गोण [गो] ओ० १०१, १२४, १४४.

जी० ३:६१८

गोणलक्षण [गोलक्षण] ओ० १४६ रा० ८०६

गोणस [गोनस] जी० १:१०८

गोतमदीव [गौतमद्वीप] जी० ३:७६२

गोतित्य [गोतीर्थ] जी० ३ ७६०, ७६१, ७६३

गोथूम [गोस्तूप] जी० ३:७३४ से ७४०, ७४२, ७४५, ७५०

गोथूभा [गोस्तुपा] जी० ३:७३८, ६१०, ६२१

गोघूम [गोघूम] जी० ३:६२१

गोपुच्छ [गोपुच्छ] रा० १२७. जी० ३:१६१, ३५२, ५६७, ६३२, ६६१, ६८६, ७३६, ८८२

गोपुर [गोपुर] ओ० १. रा० ६५४, ६५५.

जी० ३:५५४, ५६४, ६०४

गोल्फ [गुल्फ] जी० ३:४१५

गोमयकीड [गोमयकीट] जी० १:८६; ३:१११

गोमाणसिया [गोपानसिका] रा० १३०, २३६, २५१, २६५. जी० ३:३००, ४१२, ६०३

गोमाणसी [गोपानसी] जी० ३:३६८, ४१२, ४२१, ४२६

गोमुह [गोमुख] जी० ३:१२६

गोमुही [गोमुखी] रा० ७७

गोमेज्जमय [गोमेज्जमय] रा० १३०.

जी० ३:३००

गोय [गोत्र] ओ० २०, ४४, ५२, ५३. रा० ६, ११, ६८७, ७१३. जी० ३:१२८

गोयम [गौतम] ओ० ८३, ८६, ८८ से ६५, ११४, ११७ से १२०, १४०, १४१, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७, १७०, १७१, १७३ से १७६,

१७८, १७९, १८४ से १८८, १९२. रा० ६३, ६५, ७३, ७४, ११८, १२१, १२३, १२४, १७३, १६७ से २००, ६६५, ६६६, ६६८, ७६७ से ७६९, ८१७. जी० १:११५ से ३७, ३६ से ४६, ५१ से ५६, ५६ से ६२, ६४, ७४, ७६, ८२, ८५ से ८७, ९०, ९३ से ९६, १०१, ११६, १२७, १२८, १३० से १३४, १३७ से १४३; २:२० से २४, २६ से ३०, ३२ से ३६, ४६, ४८, ४९, ५४, ५७ से ६३, ६६, ६८ से ७४, ७६, ८२ से ८४, ८६, ८८, ९२, ९५ से ९८, १०७ से १०९, ११३, ११४, ११६ से ११९, १२२ से १२६, १३३ से १४०; ३:३ से १२, १४ से २१, २८ से ३५, ३७ से ४४, ४८ से ६३, ६६, ७३, ७६ से ९८, १०१ से १०४, १०६ से ११०, ११२ से ११६, ११८ से १२०, १२२ से १२८, १४७, १५० से १६१, १६३, १६७ से १७४, १७६, १७८, १८०, १८२, १८३, १८५ से २०३, २११, २१४, २१७ से २२३, २२७, २३२, २३५ से २३९, २४१ से २४३, २४५ से २४७, २४९, २५०, २५५ से २५९, २६६ से २७२, २७८, २८५, २८६, ३००, ३५०, ३५१, ३६४ से ३६६, ३६८ से ५७०, ५७२, ५७४ से ५८८, ५९६, ५९७, ५९९ से ६०४, ६२६ से ६३२, ६३७ से ६३९, ६५६, ६६०, ६६४, ६६६, ६६८, ७०० से ७०३, ७०५ से ७०८, ७१०, ७११, ७१४ से ७१६, ७१८ से ७२३, ७२६, ७३० से ७३६, ७३८ से ७४३, ७४५, ७४६, ७४८ से ७५०, ७५४, ७६० से ७६६, ७६८ से ७७०, ७७२, ७७६ से ७७८, ७८३, ७८४, ७८७ से ७८९, ७९७ से ८००, ८०२, ८०४, ८०६, ८०८, ८०९, ८११ से ८१५, ८१६, ८२०, ८२२ से ८२५, ८२७, ८२९, ८३०, ८३२ से ८३६, ८३९, ८४०, ८४२ से ८४७, ८४९ से ८५१, ८५४, ८५७, ८६०, ८६३, ८६६, ८६९, ८७२, ८७५, ८७८, ८८१, ८८२, ८८४, ८८६, ८८८, ८९०, ८९४, ८९५ से ८९९, ९०३ से ९०६,

६६६, ६७२ से ६७६, ६८२ से ६८७, ६८६,
६६६ से १००८, १०१०, १०११, १०१५,
१०१७, १०२० से १०२३, १०२५ से १०२७,
१०३७ से १०४२, १०४४, १०५७, १०५८,
१०६३, १०६५, १०६७, १०६६, १०७१,
१०७३ से १०७५, १०७७ से १०८१, १०८३,
१०८५ से १०८७, १०८६ से १०८३,
१०८५, १०८८, १०८६, ११०१, ११०५, ११०६ से
११२४, ११२८ से ११३१, ११३४ से ११३८;
४३३, ५ से ११, १६, १७, १६, २२, २३, २५;
५१५, ८, १०, १२ से १७, १६ से २४, २८ से
३०, ३४, ३५, ३७ से ३६, ४१ से ५०, ५२ से
५६, ५८ से ६०; ६१; ७२, ६, २०; ६१, ४,
१० से १४, १६, २३ से २६, ३१, ३३, ३६, ४१
से ४७, ४६, ५२, ५५, ५७, ५८, ६४, ६८, ७७, ७८,
८६, ८०, ८६, ८७, १०२, १०३, ११४, ११५,
१२२, १३२, १४२, १६० से १६३, १७१, १८६
से १६१, १६३, १६५, १६८ से २०७, २१० से
२१२, २१४ से २१६, २२२ से २२५, २२७ से
२३०, २३३ से २३८, २४० से २४४, २४६,
२४६ से २५३, २५५, २५७ से २६३, २६५,
२६८ से २७३, २७५ से २८२, २८४ से
२८३

गोयमदीव [गौतमदीव] जी० ३।७५४, ७५५, ७६०,
७६१

गोयमगा [गोचरगा] रा० ७१६

गोर [गौर] ओ० ८२

गोलबट्ट [गोलवृत्त] रा० २४०, २७६, ३५१. जी०
३।४०२, ४४२, ५१६, १०२५

गोलियालिछ [गोलिकालिञ्छ] जी० ३।११८

गोवद्वय [गोव्रतिक] ओ० ६३

गोसीस [गोशीर्ष] ओ० २, ५५, ६३. रा० ३२,

२७६, २८१, २८५, २८१, २८३ से २८६, ३००,
३०५, ३१२, ३५१, ३५५, ५६४. जी० ३।३७२,
४४५, ४४७, ४५१, ४५७, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,

५१६, ५२०, ५४७, ५५४

गोहा [गोघा] जी० १।११२

गोही [गोघी] जी० २।६

[घ]

घ [घ] रा० ६५

घओद [घृतोद] जी० ३।२८६

घओवय [घृतोदक] जी० १।६५

घओयग [घृतोदक] रा० १७४

घंटय [घण्टाक] जी० ३।२८५

घंटा [घण्टा] ओ० २, १२, ५७, ६४. रा० १३.१५,
२३, ३२, १३५, १७३, २५८, ६८१. जी०
३.२६१, ३०५, ३७२, ४१६

घंटाजाल [घण्टाजाल] रा० १३२, १६१. जी०

३।२६५, ३०२

घंटापास [घण्टापाश्व] रा० १३५. जी० ३।३०५

घंटाबलि [घण्टाबलि] रा० १७, १८, २०

घंटिया [घण्टिका] रा० १७, १८. जी० ३।५६३

घंस [घर्ष] जी० ३।६२३

घंसिद्यग [घर्षितक] ओ० ६०

घकारपविभक्ति [घकारप्रविभक्ति] रा० ६५

√घट्ट [घट्ट] घट्ट. रा० ७७१—घट्टंति
जी० ३।७२६

घट्टंत [घट्टयत्] रा० ७७१

घट्टणया [घट्टन] ओ० १०३, १२६

घट्टिज्जंत [घट्टयमान] रा० ७७

घट्टिय [घट्टित] रा० १७३. जी० ३।२८५

घट्ट [घट्ट] जी० १२, १६४. रा० २१, २३, ३२,
३४, ३६, १२४, १४५, १५७. जी० ३।२६१,
२६६, २६६

घडग [घटक] जी० ३।५८७

घडस [घटत्व] जी० ३।२२, २७, ७८४, ७८७

घण [घन] ओ० १, ४, ५, ८, १३, १६, ४७, ६८. रा०

७, १२, ११४, १३३, १७०, २८१, ७०३, ७५५,
७५८, ७५६, ७७२. जी० ३।६७, ८०, ११८,
२७३, २७४, ३००, ३०३, ३५०, ४४७, ५६३,

५८६, ५८६, ८४२, ८४५, १०२५, ११२२
 घणदन्त [घनदन्त] जी० ३।२१६, २२६
 घणदन्तद्वीप [घनदन्तद्वीप] जी० ३।२२६।६
 घणवात [घनवात] जी० ३।१३, १६, २१, २६, २७,
 ३७, ४७, ४६, ५०, ६४
 घणवाय [घनवात] जी० १।८१; ३।३०, ३८, ४२,
 १०५८, १०५९
 घणोदधि [घनोदधि] जी० ३।१३, २६, ३०, ३२,
 ३७ से ४०, ४५, ४६, ४८, ४९, ६० से ७२
 घणोदहि [घनोदधि] जी० ३।१८, २०, २७, ६३,
 १०५७
 घम्मा [घर्मा] जी० ३।३
 घय [घृत] जी० ३।५६२, ७७५
 घयवर [घृतवर] जी० ३।८६८, ८६९, ८७१
 घयोद [घृतोद] जी० ३।८७१, ८७२, ८७४, ८६०,
 ८६३
 घयोदग [घृतोदक] जी० ३।८६९
 घर [गृह] ओ० २८, ११८, ११९, १५४, १६२,
 १६५, १६६. रा० ६९८, ७५२, ७८६. जी०
 ३।५६४
 घरग [गृहक] जी० ३।५७६
 घरय [गृहक] ओ० ७, ८, १०. रा० १८३. जी०
 ३।५७६, ८६३
 घरसमुदाणिय [गृहसामुदानिक] ओ० १५८
 घरह [गृहक] जी० ३।८६३
 घरोलिया [गृहकोकिला] जी० २।९
 घाइ [घातिन्] ओ० ८७
 घाण [घ्राण] ओ० १७०. रा० ३०, १३२, २३६.
 जी० ३।२८३, ३०२, ३६८
 घाणिदिय [घ्राणेन्द्रिय] ओ० ३७. जी० ३।९७९
 घातक [घातक] जी० ३।६१२
 घाय [घात] रा० ६७१
 घास [घास] ओ० ३३

घुण [घुण] रा० ७६१
 घुम्मंत [घूर्ण्यमान] ओ० ४६
 घोड [घोट] जी० ३।६१८
 घोर [घोर] ओ० ४६, ८२. रा० ६८६
 घोरगुण [घोरगुण] ओ० ८२. रा० ६८६
 घोरतवस्सि [घोरतपस्विन्] ओ० ८२. रा० ६८६
 घोरवंभचेरवासि [घोरब्रह्मचर्यवासिन्] ओ० ८२.
 रा० ६८६
 घोलंत [घोलयत्] ओ० २१, ५४. रा० ८, ७१४
 घोलियग [घोलितक] ओ० ६०
 घोस [घोष] ओ० ६९
 घोसण [घोषण] रा० १५
 घोसाडिया [कोशातकी] रा० २८. जी० ३।२८१
 घोसेयव्व [घोषयितव्य] जी० ३।८८

(ङ)

ङ [ङ] रा० ६५
 ङकारपविभत्ति [ङकारप्रविभक्ति] रा० ६५

(च)

च [च] ओ० ७. रा० ७. जी० १।१
 चइत्ता [त्यक्त्वा, चित्वा] ओ० २३. रा० ७९९
 चइत्ताणं [त्यक्त्वा] ओ० १६५।१
 चउ [चतुर्] ओ० १६. रा० ७. जी० १।१६
 चउक्क [चतुक्क] ओ० १, ५२, ५५. रा० ६५४, ६८७,
 ७१२. जी० ३।२२६, ५५४
 चउक्कत [चतुक्कक] जी० ३।१४२, १४४
 चउक्कय [चतुक्कक] रा० ६५५
 चउणउय [चतुर्नवति] जी० ३।८२३
 चउत्थ [चतुर्थ] ओ० १७४, १७६. जी० १।१२१
 चउत्थग [चतुर्थक] जी० ६।१४६
 चउत्थभत्त [चतुर्थभक्त] ओ० ३२
 चउत्था [चतुर्थी] जी० ३।२
 चउत्थी [चतुर्थी] जी० २।१४८, १४९; ३।४,
 ६६, ८८, ९१. १६५, ११११
 चउदसगुव्वि [चतुर्दशपूर्विन्] रा० ६८६
 चउदस [चतुर्दशन्] ओ० १६. जी० २।४८

७६८, ७७०, ७७२, ७७४, ७७६, ७७८

चंदह [चन्द्रह] जी० ३१६६७

चंदहीव [चन्द्रहीव] जी० ३१७६३

चंदद्ध [चन्द्रार्थ] ओ० १६. रा० ७०, १३३.

जी० ३१३०३, ५६६, ११२२

चंदपडिमा [चन्द्रप्रतिमा] ओ० २४

चंदपरिणस [चन्द्रपरिवेश] जी० ३१८४१

चंदपरिवेश [चन्द्रपरिवेश] जी० ३१६२६

चंदप्पभ [चन्द्रप्रभ] रा० १६०, २६२.

जी० ३१३३३, ४५७

चंदप्पभा [चन्द्रप्रभा] जी० ३१५८६, ७६३, ८६०,

६५८, १०२३

चंदप्पह [चन्द्रप्रभ] रा० २५६

जी० ३१४१७

चंदमंडल [चन्द्रमण्डल] रा० २४, ५१, १४६.

जी० ३१२७७, ३२२

चंदमंडलप्रविभक्ति [चन्द्रमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६०

चंदवडैसय [चन्द्रावर्तसक] जी० ३११०२४,

१०२५

चंदवण [चन्द्रवर्ण] जी० ३१७६३

चंदवणभा [चन्द्रवर्णभा] जी० ३१७६३, १००८,

१०१०, १०१५

चंदविमाण [चन्द्रविमान] जी० २११८, ४०;

३११००३ से १००६, १०२७

चंदविलासिणी [चन्द्रविलासिनी] रा० १३३.

जी० ३१३०३, ११२२

चंदशालिया [चन्द्रशालिका] जी० ३१५६४

चंदसूरदंशण [चन्द्रसूरदर्शनक] रा० ८०२

चंदसूरदंशिण्या [चन्द्रसूरदर्शिका] ओ० १४४

चंदा [चन्द्रा] जी० ३१७६४, ७७६, ७७८

चंदागमणप्रविभक्ति [चन्द्रागमनप्रविभक्ति]

रा० ८७

चंदागार [चन्द्राकार] रा० १५६. जी० ३१३३२,

७६३

चंदाण्णा [चन्द्रानना] रा० ७०, १३३, २२५.

जी० ३१३०३, ३८४, ८६६, ११२२

चंदावरणप्रविभक्ति [चन्द्रावरणप्रविभक्ति]

रा० ८८

चंदावलि [चन्द्रावलि] रा० २६

चंदावलिप्रविभक्ति [चन्द्रावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

चंदिम [चन्द्रम] ओ० १६२. रा० १२४.

जी० ३१२५७, ८४१, ८४२, ८४५, ६६८ से

१०००, १०२०, १०२१, १०३८

चन्दुगमणप्रविभक्ति [चन्द्रोद्गमनप्रविभक्ति]

रा० ८६

चंपक [चम्पक] जी० ३१२८१

चंपग [चम्पक] रा० २८, ८०४. जी० ३१२८१

चंपग [लया] [चम्पकलता] जी० ३१२८८

चंपगलया [चम्पकलता] ओ० ११. रा० १४५.

जी० ३१५६४

चंपगलयाप्रविभक्ति [चम्पकलताप्रविभक्ति]

रा० १०१

चंपगवडैसय [चम्पकावर्तसक] रा० १२५

चंपगवण [चम्पकवन] रा० १७०. जी० ३१३५८.

चंपय [चम्पक] रा० २८, १८६. जी० ३१२८१,

३५६

चंपा [चम्पक] रा० २८, ३०. जी० ३१२८१, २८३

चंपा [चम्पा] ओ० १, २, १४, १६ से २२, ५२, ५३

५५, ६० से ६२, ६७, ६८, ७०

चंपाप्रविभक्ति [चम्पकप्रविभक्ति] रा० ६३

चकारवर्ग [चकारवर्ग] रा० ६६

चक्क [चक्र] ओ० १६, १६. रा० १५०, १५१

जी० ३१११०, ३२३, ३२४, ५६६, ५६७

चक्कग [चक्रक] जी० ३१५६३

चक्कज्झय [चक्रज्झय] रा० १६२. जी० ३१३३५

चक्कद्धचक्कवाल [चक्रार्थचक्रवाल] रा० ८४

चक्कपाणिहेहा [चक्रपाणिहेहा] जी० ३१५६६

चक्कल [दे०] रा० ३७. जी० ३१३११

चक्कलक्खण [चक्रलक्षण] रा० ८०६

चक्कवट्टि [चक्रवर्तिन्] ओ० १६, २१, ५४, ७१.

रा० ८, १५४, २७६, २६२. जी० ३।३२७, ४४५,
४५७, ५६२, ६०२, ७६५, ८४१, ८६६, ९५६
चक्रवाग [चक्रवाक] ओ० ६. जी० ३।२७५
चक्रवाल [चक्रवाल] ओ० ७०, १७०. रा० २०१,
८०४. जी० ३।८६, २६०, २७३, ३६२, ५८६,
७०५, ७०६, ७३२, ७६४, ७६५, ७६७, ७६८,
८११, ८१२, ८२२, ८२३, ८३२, ८४६, ८५०,
८८२, ८९८
चक्रव्यूह [चक्रव्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६
चक्रिय [चक्रिक] ओ० ६८
चक्षुदिय [चक्षुरिन्द्रिय] ओ० ३७. जी० ३।६७८
चक्षु [चक्षुष] रा० ६७५. जी० ३।६३३
चक्षुर्दंति [चक्षुर्दंतिन्] जी० १।२६, ८६, ९०;
६।१३१, १।३२, १।३६, १।४०
चक्षुर्वय [चक्षुर्वय] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८,
२६२. जी० ३।४५७
चक्षुस्पर्श [चक्षुस्पर्श] ओ० ६६, ७०. रा० ७७८
चक्षुभूय [चक्षुभूत] रा० ६७५
चक्षुल्लोयणलेस [चक्षुल्लोकेनलेस] रा० १७, १८,
२०, ३२, १।२६, १।३३. जी० ३।२८८, ३००, ३०३,
३७२
चक्षुर्हर [चक्षुर्हर] रा० २८५. जी० ३।४५१
चच्चय [चच्चक] रा० २६४, २६६, ३००, ३०५,
३१२, ३५१, ३५५, ५६४. जी० ३।४५६, ४६१,
४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५४७
चच्चर [चच्चर] ओ० १, ५२, ५५. रा० ६५४,
६५५, ६८७, ७१२. जी० ३।५५४
चच्चग [दे० चर्चाक] रा० १३१, १४७, १४८.
जी० ३।३०१
चच्चाय [दे० चर्चाक] रा० २८०. जी० ३।४४६
चच्चगर [दे०] रा० ५३, ६८३, ६८२, ७१६
चत्तालीस [चत्वारिंशत्] जी० ३।६६
चतुरासीति [चतुरशीति] जी० ३।८८२
चतुरिदिय [चतुरिन्द्रिय] जी० २।१३८, १४६;
४।२१
चमर [चमर] ओ० १३, ६८. रा० १७, १८, २०,

३२, ३७, १२६, २८२. जी० ३.२३४ से २३६,
२४३, २४५, २४७, २५०, २५६, २५८, २८८,
३००, ३११, ३७२, ४४८
चमस [चमस] ओ० १११ ने ११३, १३७, १३८
चम्म [चर्मन्] रा० २४, ६६४. जी० ३।२७७, ५६२,
चम्म [पाय] [चर्मपात्र] ओ० १०५, १२८
चम्म [बंधण] [चर्मबंधन] ओ० १०६, १२६
चम्मपक्षि [चर्मपक्षिन्] जी० १।११३, ११४, १२५
चम्मपक्षी [चर्मपक्षिणी] जी० २।१०
चम्मपाणि [चर्मपाणि] रा० ६६४. जी० ३।५६२
चम्मेट्टग [चर्मेट्टक] रा० १२, ७५८, ७५६.
जी० ३।११८
चय [चय, चयव] ओ० १४१. रा० ७६६.
जी० ३।११२७
चय [चय] [चय] ओ० १६५।१६
चय [चय] [चय] जी० ३।८७
चय [चय] [चय] जी० ३।१२६।५
चयंत [चयजन्] ओ० १६५।३
चयण [चयवन्] जी० ३।१६०
चर [चर] [चर] जी० ३।८३८।२—चरन्ति.
ओ० ४६. जी० ३।७०३—चरति
जी० ३।१००१—चरिसु. जी० ३।७०३
—चरिस्सन्ति जी० ३।७०३
चरण [चरण] ओ० १५, २५. रा० ६८६.
जी० ३।५६७
चरमअभितेयनिबद्ध [चरमअभितेयनिबद्ध]
रा० ११३
चरमंत [चरमान्त] जी० ३।६६८
चरमकामभोगनिबद्ध [चरमकामभोगनिबद्ध]
रा० ११३
चरमचवणनिबद्ध [चरमचवणनिबद्ध] रा० ११३
चरमजम्मणनिबद्ध [चरमजम्मणनिबद्ध] रा० ११३
चरमजोव्वणनिबद्ध [चरमजोव्वणनिबद्ध] रा० ११३
चरमणाणुपायनिबद्ध [चरमणाणुपायनिबद्ध]
रा० ११३

चरमतथचरणनिबद्ध [चरमतपश्चरणनिबद्ध]

रा० ११३

चरमतिस्थपवतणनिबद्ध [चरमतीर्थप्रवर्तननिबद्ध]

रा० ११३

चरमनिष्क्रमणनिबद्ध [चरमनिष्क्रमणनिबद्ध]

रा० ११३

चरमनिदाधकाल [चरमनिदाधकाल]

जी० ३११८, ११९

चरमनिबद्ध [चरमनिबद्ध] रा० ११३

चरमपरिनिष्ठाणनिबद्ध [चरमपरिनिष्ठाणनिबद्ध]

रा० ११३

चरमपुष्पभवनिबद्ध [चरमपूर्वभवनिबद्ध] रा० ११३

चरमबालभावनिबद्ध [चरमबालभावनिबद्ध]

रा० ११३

चरमसाहरणनिबद्ध [चरमसाहरणनिबद्ध] रा० ११३

चरमाण [चरत्] ओ० १६, २०, ५२, ५३.

रा० ६८६, ६८७, ७०६, ७११, ७१३

चरित [चरित्र] रा० ६८६, ८१४

चरितविणय [चरित्रविणय] ओ० ४०

चरितसंपण [चरित्रसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

चरिम [चरम] ओ० ११७, १५४, १६२, १६५।३.

रा० ६२, ७६६, ८१६. जी० ६।६३, ६४, ६६

चरिमंत [चरमान्त] जी० ३।३३, ३४, ३७, ३८,

६० से ६८, २१७, २१९ से २२५, २२७, ६३२,

६३९. ६६६, ११११

चरिमभव [चरमभव] ओ० १६५।४

चरिममोहणिज्ज [चरममोहनीय] ओ० ८६

चरिथ [चरित] ओ० ४६

चरिया [चरिका] ओ० १, १६०. रा० ६५४,

६५५. जी० ३।५५४, ५६४

चरियालिगसामण [चर्यालिङ्गसामान्य] ओ० १६०

चर [चरु] ओ० १११ से ११३, १३७, १३८

√चल [चल्] —चलइ. रा० ७७१ —चलंति.

जी० ३।७२९ —चालेइ. रा० ७७१

चलंत [चलत्] ओ० ५, ८, ४६. रा० ७७१

जी० ३।२७४

चलण [चरण] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७

चलणमालिया [चरणमालिका] जी० ३।५६३

चलणी [चलनी] जी० ३।६२३

चलिय [चलित] रा० १७, १८, २०

√चव [च्यु] —चवति जी० ३।८४३

चवण [च्यवन] रा० ८१५. जी० १।१४

चवल [चपल] ओ० २१, ४६, ४६, ५४. रा० ८,

१०, १२ १५, ३२, ५६, १७६, ७१४.

जी० ३।८६, १७६, १७८, १८०, १८२, ४४५

चवलायंत [चालायमान] जी० ३।५६७

चवलिय [चपलित] जी० ३।५८७

चसग [चपक] जी० ३।५८७

चाइ [त्यागिन्] ओ० १६४

चाउबकोण [चतुर्कोण] रा० १७४. जी० ३।११८,

११९, २८६

चाउघंट [चतुर्घण्ट] रा० ६८१ से ६८३, ६८५,

६९० से ६९२, ६९७, ७०६, ७१०, ७१४,

७१६, ७२२, ७२४, ७२६

चाउज्जातग [चतुर्जगतिक] जी० ३।८७८

चाउयाम [चतुर्याम] रा० ६९३, ७१७, ७७९

चाउज्जामिय [चतुर्यामिक] रा० ६९५, ६९६

चाउत्थगाहिय [चतुर्त्थगाहिक] जी० ३।६२८

चाउइस [चतुर्दश] रा० ७७४

चाउइसी [चतुर्दशी] ओ० १६२. रा० ६९८,

७५२, ७८९

चाउग्गाइया [चतुर्गामिका] रा० ७७२

चाउमासिय [चतुर्मासिक] जी० ३।६१७

चाउरंगणी [चतुर्रङ्गणी] ओ० ५५ से ५७, ६२,

६५

चाउरंत [चतुरन्त] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८,

१५४, २६२. जी० ३।३२७, ४५७, ६०२, ८६६,

८५९

चाउरक्क [चतुरक्क] जी० ३।६०१, ८६६

चाडुकर [चाटुकर] ओ० ६४

चामर [चामर] ओ० १२, १६, ६३ से ६५.

रा० २२, २३, ५०, १६०, १६७, १७८, २५६,
२७६. जी० ३१२६०, २६१, ३३३, ३४८, ३५५,
३८२, ४१७, ४१६, ४४५, ५६७
चामरगाह [चामरगाह] ओ० ६४
चामरधारपडिमा [चामरधारप्रतिभा] रा० २५६.
जी० ३४१७
चार [चार] ओ० ५०, १४६. रा० ८०६.
जी० ३७०३, ७२२, ८०६, ८२०, ८३०, ८३४,
८३७, ८३८, १३, २०, २२, ८४२, ८४५, १००१,
१००३ से १००७
चारगवद्धन [चारकवद्धक] ओ० ६०
चारण [चारण] ओ० २४. जी० ३७६५, ८४०,
८४१
चारि [चारिन्] ओ० ५०. जी० ३५६७
चारु [चारु] ओ० १५, १६, २५, ४६. रा० ७०, ७६,
१३३, १७३, ६६४, ६७२, ८०६, ८१०.
जी० ३१२८५, ३०३, ५६२, ५८७, ५६६, ५६७,
११२२
चारुपाणि [चारुपाणि] रा० ६६४. जी० ३५६२
चालिय [चालित] रा० १७३. जी० ३१२८५
चालेमाण [चालयत्] जी० ३१११
चाव [चाप] ओ० १६, ६४. रा० १७३, ६६४,
६८१. जी० ३१२८५, ५६२, ५६६, ५६७
चावगाह [चापगाह] ओ० ६४
चावपाणि [चापपाणि] रा० ६६४. जी० ३५६२
चास [चाप] रा० २६. जी० ३१२७६
चासपिच्छ [चापपिच्छ] रा० २६. जी० ३१२७६
चिउर [चिकुर] रा० २८. जी० ३१२८१
चिउरंगराग [चिकुराङ्गराग] जी० ३१२८१
चिउरंगरात [चिकुराङ्गराग] रा० २८
चिता [चिन्ता] ओ० ४६. जी० ३१६४८, ६४६
चितिय [चिन्तित] ओ० ७०. रा० ६, २७५, २७६,
६८८, ७३२, ७३७, ७३८, ७४६, ७६८, ७७७,
७६१, ७६३, ८०४. जी० ३१४४१, ४४२
चिध [चिह्न] ओ० ४७ से ५१. रा० ६६४, ६८३.
जी० ३५६२

चिक्कल [दे०] ओ० ४६
चिक्का [त्यक्त्वा] ओ० २३. रा० ६६५
चिद्ध [छा]—चिद्ध. ओ० ३७. रा० १२३.
जी० ३४८८.—चिद्धति ओ० १८३. रा० ४०.
जी० ३१२२.—चिद्धति. रा० २७६. जी० ३४८८.
—चिद्ध. रा० ७५३.—चिद्धेज्ज. ओ० १८०
चिद्ध [दे०] रा० ७२३
चिद्धित [चेष्टित] रा० १३३
चिद्धिय [चेष्टित] रा० ७०, ८०६, ८१०
चित [चित्त] ओ० २०, २१, ४६, ५३, ५४, ५६, ६२,
६३, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १८, २०,
२४, ३२, ३४, ३७, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४,
१२६, २७७, २७६, २८१, २८०, ६५५, ६८१,
६८३, ६८०, ६६५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३.
७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७७४, ७७८
चित [चित्र, चित्त] रा० ६७५, ६८०, ६८१, ६८३
से ६८५, ६८६, ६८०, ६८२, ६८३, ६८५ से
७१०, ७१३, ७१४, ७१६ से ७३६, ७४८
चित [चित्र] ओ० १६, ४६, ५७, ६४. रा० ६६,
१३०, १३७, १५४, १६०, १७३, २५६, २५८,
२७६, २८५, ६८१. जी० ३१२८५, ३००, ३०७,
३२७, ३३३, ३५५, ४१६, ४४३, ४४५, ४४७,
४५१, ५५५, ५६६
चित्तंग [चित्राङ्ग] जी० ३५६१
चित्तंगय [चित्राङ्गक] जी० ३५६१
चित्तंतरलेस [चित्रान्तरलेष्य] जी० ३१८४५
चित्तंतरलेसाग [चित्रान्तरलेष्याक] जी० ३१८३८२
चित्तघरण [चित्रगृहक] रा० १८२, १८३.
जी० ३१२६४
चित्तपट्ट [चित्रपट्ट] रा० ६६
चित्तरस [चित्ररस] जी० ३५६२
चित्तल [चित्रल] जी० ३१६२०
चित्तवीणा [चित्रवीणा] रा० ७७
चित्तसाल [चित्रसाल] जी० ३५६४
चिद्यत् [दे० प्रीत, सम्मत] ओ० ३३, १६२.
रा० ६६८, ७५२, ७८६

चिरट्टिइय [चिरस्त्रितिक] ओ० ७२
 चिराईय [चिरादिक, चिरानीत] ओ० २. रा० २
 चिराहड [चिराहृत] रा० ७७४
 चिलाइया [किरातिका] रा० ८०४
 चिलाई [किराती] ओ० ७०
 चिल्लय [दे०] ओ० ४६. जी० ३१५८६
 चिल्ललग [दे०] रा० ६६. जी० ३१६८२
 चीणंसुय [चीनांसुक] जी० ३१५६५
 चीणपिट्ट [चीनपृष्ट] रा० २७. जी० ३१२८०
 चुण [चूर्ण] रा० १५६, १५७, २५८, २७६,
 २८१, २६१. जी० ३१३२६, ४१६, ४४७, ४५७
 चुणजुत्ति [चूर्णयुक्ति] ओ० १४६
 चुय [च्युत] ओ० ८८
 चुलणिमुत्त [चुलनीमुत्त] जी० ३१११७
 चुलसीत [चतुरसीति] जी० ३१७२८
 चुल्लहिमवन्त [क्षुल्लहिमवन्त] रा० २७६.
 जी० ३१२१७, २१६ से २२१, ४४५, ७६५,
 ६३७
 चूचुय [चूचुक] रा० २५४. जी० ३१४१५, ५६७
 चूडामणि [चूडामणि] रा० २८५. जी० ३१४५१
 चूत [चूत] जी० ३१३५६
 चूतवण [चूतवन] जी० ३१३५८
 चूय [चूत] रा० १८६
 चूय (लया) [चूतलता] जी० ३१२६८
 चूयलया [चूतलता] ओ० ११. रा० १४५.
 जी० ३१५८४
 चूयलयापविभत्ति [चूतलतापविभत्ति] रा० १०१
 चूयवडैसय [चूतवडैसक] रा० १२५
 चूयवण [चूतवन] रा० १७०. जी० ३१३५८
 चूलामणि [चूडामणि] ओ० ४७, १०८.
 जी० ३१५६३
 चूलिया [चूलिका] जी० ३१८४१
 चूलोवणय [चूडोवणय] रा० ८०३
 चूलोवणयण [चूडोवणयण] जी० ३१६१४
 चेइय [चैय] ओ० १ से ३, १६ से २२, ५२, ५३,
 ६५, ६६, ७०, १३६. रा० २, ८ से १०, १२,

१३, १५, ५६, ५८, २४०, २७६, ६७८, ६८६,
 ६८७, ६८६, ६६२, ७००, ७०४, ७०६, ७११,
 ७१६, ७७६
 चेइयखंभ [चैत्यस्तम्भ] रा० २३६ से २४२, २४४,
 ३५१. जी० ३१४०१
 चेइययूभ [चैत्यस्तूप] रा० २२२ से २२४, २२६,
 ३०५, ३१६, ३४३. जी० ३१३८१, ३८२, ३८५,
 ४७०, ४८१, ५०८
 चेइयमह [चैत्यमह] रा० ६८८. जी० ३१६१५
 चेइयखल [चैत्यखल] रा० २२७ से २३०, ३१०,
 ३१५, ३४८. जी० ३१३८६ से ३८८, ३६१,
 ३६२, ४१२, ४७५. ४८०, ५१३
 चेट्टिय [चेष्टित] जी० ३१३०३, ५६७
 चेड [चेट] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४
 चेडिया [चेटिका] ओ० ७०. रा० ८०४
 चेतिय [चैत्य] जी० ३१४०२, ४४२
 चेतियखंभ [चैत्यस्तम्भ] जी० ३१४०२ से ४०४,
 ४०६, ४४२, ५१६, १०२५
 चेतिययूभ [चैत्यस्तूप] जी० ३१३८३, ४८१, ८६४,
 ८६५, ८६७
 चेतियखल [चैत्यखल] जी० ३१८६८, ८६६
 चेल (पाय) [चेलपाय] ओ० १०५, १२८
 चेल (बंधण) [चेलबन्धन] ओ० १०६, १२६
 चेलुखेय [चेलोत्क्षेप] रा० २८१. जी० ३१४४७
 चोउट्टि [चतुष्पष्टि] जी० ३१२१८
 चोक्क [चोक्क] ओ० २१, ५४, ६८. रा० २७७,
 २८८, ७६५, ८०२. जी० ३१४४३
 चोक्कायार [चोक्काचार] ओ० ६८
 चोलीस [चतुर्विंशत्] जी० ३१६६६
 चोदस [चतुर्दशन्] जी० ३१३६
 चोणाल [चोणाल] रा० २४६ जी० ३१४१०,
 ५२०, ६०४
 चोणालय [चोणालक] रा० ३५५
 चोय [दे०] रा० ३०. जी० ३१२८३, ३३४, ४१६, ५८६
 चोयग [दे०] रा० १६१, २५८, २७६

चौयाल [चतुश्चत्वारिणत्] जी० ३.८३०
चौयासव [दे० चौयासव] जी० ३।८६०
चोर [चोर] ओ० ११७ रा० ७५४, ७५६, ७६२
७६४, ७६६
चोरकहा [चोरकथा] ओ० १०४, १२७
चोबत्तरि [चतुःसप्तति] जी० ३।७३३

(छ)

छ [षष्] रा० १७३ जी० १।४६
छउमत्थ [छग्रस्य] ओ० १६६, १७०. रा० ७७१.
जी० १।१२६; ३।६६३, ३।६६७; ६।३६, ४२ से
४४, ४६, ५१
छउमत्थपरियाग [छग्रस्थपर्याय] ओ० १६६
छंद [छन्द] ओ० ६७ रा० ७२०
छकोडीय [षट्कोटीक] जी० ३।४०१
छगल [छगल] ओ० ५१ जी० ३।१०३८
छज्जीवणिया [षट्जीवणिका] ओ० ७४।३
छट्ट [षठ] ओ० ६७, १४४, १७४, १७६, रा०
८०२
छट्ठछट्ट [षठ्षठ] ओ० ११६
छट्टभक्त [षठ्षभक्त] ओ० ३२
छट्टा [षठ्ठी] जी० २।१३५, १३८; ३।२, ६१
१११
छट्टिया [षठ्ठिका] जी० ३।१२५
छट्टी [षठ्ठी] जी० २।१४, १४६; ३।४, ३६, ७१
७४, ७५, ७७, ८८, ११११
छडिय [छटित] रा० १५० जी० ३।३२३
√छड्ड [छर्दय, मुच्] —छड्डेति. रा० ७७४—
छड्डेस्मामि. रा० ७७३—छड्डेहि रा०
७७४
छड्डियल्लिया [छर्दिता] ओ० ६२
छड्डेतए [छर्दयितुम्] रा० ७७४
छड्डेत्ता [छर्दिता] रा० ७७४
छण [छन्न] जी० ३।२७५
छणउय [छणवति] जी० ३।८२०
छणालय [दे० पणालक] ओ० ११७

छत्त [छत्र] ओ० २, १६, ५२, ५७, ६३ से ६५,
६७, ६९, ७०. रा० १५६, १७३, २७६, ६८१
से ६८३, ६९१, ६९२, ७००, ७१५, ७१६, ७१६.
जी० ३।२६६, २८५, ३३२, ३५५, ४१६, ४४५.
५६६, ५६७, ६०४
छत्तज्जाय [छत्रध्वज] रा० १६२. जी० ३।३३५
छत्तवारपडिमा [छत्रधारप्रतिमा] जी० ३।४१६
छत्तधारपडिमा [छत्रधारकप्रतिमा] रा० २५५
छत्तय [छत्रक] ओ० ११७
छत्तलक्खण [छत्रलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६
छत्ताइच्छत्त [छत्रातिछत्र] रा० २०२, २०४,
२०५
छत्ताइछत्त [छत्रातिछत्र] ओ० १२. रा० १३७,
२२६. जी० ३।२६१, ३१४, ३५७, ३७१, ३७५,
४३३
छत्तातिच्छत्त [छत्रातिछत्र] रा० ५२, ५६, २०६,
२३१, २४७, २४८, २५०, २५६
छत्तातिछत्त [छत्रातिछत्र] रा० २३, १६८, १७६,
२०७, २०८, २२०, २२३, २३२, २३४, २६१,
जी० ३।३०७, ३४६, ३५६, ३६७ से ३७०,
३७६, ३८२, ३९१, ३९३, ३९४, ३९६, ४०३,
४११, ४२०, ४२४, ४३०, ४३६, ६६६
छत्तीस [षट्त्रिंशत्] ओ० १६. रा० २४०. जी०
३।७१०
छत्तोव [छत्रोष] ओ० ६, १०. जी० ३।५८३
छत्तोवग [छत्रोषक] जी० ३।३८८
छप्पण [षट्पञ्चाशत्] जी० ३।३००
छप्पन्न [षट्पञ्चाशत्] रा० १३० जी० ३।५६८
छप्पय [षट्पद] ओ० ६. रा० १३६, १७४. जी०
३।११८, ११९, २७५, २८६, ३०६
छव्भाग [षड्भाग] ओ० १६५
छव्भागरी [षड्भागरी] रा० ७७
छम्मासिय [षाण्मासिक] ओ० ३२
छयाल [षट्चत्वारिणत्] जी० ३।८१५
छर [त्सर] ओ० १६. जी० ३।५६६

छरूपवाद [त्सरूपवाद] ओ० १४६
 छरूपवाय [त्सरूपवाद] रा० ८०६
 छरूह [त्सरूह] जी० ३१३२२
 छत्तंस [पडंस] जी० ३१४०१
 छलसीत [पडशीति] जी० ३१७३६
 छल्ली [दे०] रा० २८, जी० ३१२८१
 छवि [छवि] जी० ३१६६, ५६८
 छविर्गहित [पडविग्रहित] जी० ३१४०१
 छविच्छेद [छविच्छेद] जी० ३१६२०
 छविच्छेय [छविच्छेद] रा० ७६२, जी० ३१६२५
 छव्विह [पडविध] ओ० ३०, ३१, ३८, जी० १११०,
 ११६; ३१८३, १८५, ६३१; ५११, ६०; ६११५६,
 १६७, १७०, १८१
 छव्वीस [षड्विंशति] जी० ३११०६६
 छाउमस्थिय [छाउस्थिक] रा० ७४६
 छादन [छादन] रा० २७०, जी० ६१२६४, ३००,
 ४३५
 छायाण [छादन] रा० १३०, १६०
 छाया [छाया] ओ० १२, ४७, ७२, १६४, रा० २१,
 २३, २४, ३२, ३४, ३६, १२४, १४६, १५६, १७०,
 २२८, ६७०, ७०३, जी० ३१२६१, २६६, २६६,
 २७७, ३२२, ३३२, ३८७, ५६८, ६०४, ६७२
 छावट्ट [षट्षष्टि] जी० ३११०२२
 छावट्टि [षट्षष्टि] जी० ३१८३८४
 छावत्तर [षट्षस्तति] जी० ३१७०३
 √छिद [छिद्] — छिद, रा० ६७१, — छिदति, रा०
 २८१, जी० ३१४४७
 √छिज्ज [छिद्] — छिज्जइ, रा० ७८४
 छिज्जमाण [छिज्जमान] जी० ३१२२ से २५, २७,
 ४५ से ४७
 छिड्ड [छिद्] रा० ७५४ से ७५७
 छिण्णावाय [छिन्नापात] ओ० ११६, ११७,
 रा० ७६५, ७७४
 छित्त [क्षेत्र] ओ० १
 छिद् [छिद्] रा० ७६३

छिप्पंत [स्पृश्यमान] रा० ७७
 छिरा [शिरा] जी० ११६५, १३५; ३१६२, १०६०
 छिरिया [दे०] जी० ११७३
 छिवाडी [दे०] रा० २६, जी० ३१२८२
 छोइत्ता [क्षुत्वा] जी० ३१६३०
 छोरेविरालिया [क्षीरविडालिका] जी० २१६
 छोरेविरलिया [क्षीरविडालिका] जी० ११७३
 छुभ [क्षिप्] — छुभइ रा० ७८८, — छुभिस्सामि
 रा० ७८७
 छुहा [क्षुप्] ओ० १६५११८
 छुहिय [क्षुधित] जी० ३१११६
 छेत्ता [छित्त्वा] जी० ३१६६१
 √छेद [छिद्] — छेदति ओ० ११७
 छेदारिह [छेदार्ह] ओ० ३६
 छेदिता [छित्त्वा] ओ० ११७
 छेदेत्ता [छित्त्वा] ओ० १६२
 छेदोवट्टावणियचरित्तविणय [छेदोपस्थापनीय
 चरित्रविनय] ओ० ४०
 √छेय [छेदय्] — छेदस्सइ, रा० ८१६
 छेय [छेक] ओ० ६३, ६४, रा० १२, १७३, ६८१,
 ७५८, ७५९, ७६५, ७६६, ७७०, जी० ३१८६,
 ११८, १७६, १७८, १८०, १८२, २८५, ४४५,
 ५६१

छेयकर [छेदकर] ओ० ४०
 छेयारिय [छेकाचार्य] ओ० १, ५७
 छेवट्ट [सेवार्त] जी० ११७, ८६, १०१, ११६
 छोडिय [छोटित] जी० ३१५६६

ज

ज [यत्] ओ० ३७, रा० ६, जी० ११५
 जइ [यदि] ओ० ५७, रा० ७१८, जी० ११५५
 जइण [जविन्] ओ० ५७, रा० १२, ७५८, ७५९,
 जी० ३८६, १७६, १७८, १८०, १८२, ४४५
 जइपरिता [यतिपरिषद्] ओ० ७१
 जओ [यतस्] रा० ७५४, ७५५, जी० ११६६
 जंघा [जङ्घा] ओ० १६, रा० २५४, जी० ३१४१५,

५६६, ५६७
 जंत [यन्त्र] ओ० १४ रा० १७, १८, २०, ३२,
 १२६, ६७१. जी० ३१२८, ३००, ३७२
 जंतकम्म [यन्त्रकर्मन्] ओ० ६४. रा० १७३, ६८१.
 जी० ३१२८५
 जंतवाहचुल्ली [यन्त्रपाटचुल्ली] जी० ३११८
 जंबूद्वीव [जम्बूद्वीप] ओ० १७०. रा० ७ से १०,
 १३, १५, ५६, १२४, ६६८. जी० ३१८६, २१७,
 २१६ से २२१, २२७ २५६, २६०, २६६.
 ३००, ३५१, ४४५, ५६६, ५६८ से ५७७, ६३८,
 ६६०, ६६५, ६६६, ६६८, ७०१ से ७०४, ७०८,
 ७२३, ७३६, ७४०, ७४२, ७४५, ७५०, ७५४,
 ७६२, ७६४ से ७६६, ७७५, ७८५. ६१६ से ६२२,
 ६५३, १०३६, १०७४, १०८०
 जंबूद्वीवग [जम्बूद्वीपक] जी० ३१७०६, ७१०,
 ७६२, ७६४ से ७६६, ८१४
 जंबूद्वीवाहिवति [जम्बूद्वीपाधिपति] जी० ३१७६५
 जंबूपेठ [जम्बूपीठ] जी० ३१६६८, ६६६
 जंबू [जम्बू] जी० ११७१; ३१६६८, ६७२, ६७३,
 ६७८ से ६८३, ६८८, ६८९, ६९२ से ७००,
 ७६५
 जंबूणदमय [जाम्बूनदमय] जी० ३१३२३
 जंबूणय [जाम्बूनद] रा० १५६, २२८.
 जी० ३१३३२, ३८७, ६७२
 जंबूणयमय [जाम्बूनदमय] रा० ३७, १५०.
 जी० ३१३११, ४०७, ६४३
 जंबूणयामय [जाम्बूनदमय] रा० १३५, १८८,
 २४५. जी० ३१३०५, ३६१, ६६६, ६८६,
 ८३६
 जंबूदीव [जम्बूद्वीप] जी० ३१७००, ७५४, १००१,
 १००७, १०२२
 जंबूदीवाहिवति [जम्बूद्वीपाधिपति] जी० ३१७००
 जंबूपल्लवपविभक्ति [जम्बूपल्लवप्रविभक्ति]
 रा० १००
 जंबूपेठ [जम्बूपीठ] जी० ३१६६८, ६७०

जंबूफल [जम्बूफल] ओ० १३. रा० २५.^१
 जी० ३१२७८
 जंबूफलकालिया [जम्बूफलकालिया] जी० ३१८६०
 जंबूवल्ल [जम्बूवल्ल] जी० ३१७०२
 जंबूवण [जम्बूवन] जी० ३१७०२
 जंबूसंड [जम्बूपण्ड] जी० ३१७०२
 जंभाइत्ता [जम्भयित्वा] जी० ३१६३०
 जवळ [यक्ष] ओ० ४६, १२०, १६२. रा० ६६८,
 ७५२, ७८६. जी० ३१७८०, ६४७, ६५०
 जवळगह [यक्षग्रह] जी० ३१६२८
 जवळपडिमा [यक्षप्रतिमा] रा० २५७. जी० ३१४१८
 जवळमंडलपविभक्ति [यक्षमण्डलप्रविभक्ति]
 रा० ६०
 जवळमह [यक्षमह] रा० ६८८. जी० ३१६१५
 जवळालित्त [यक्षादीप्त] जी० ३१६२६
 जगईपम्बय [जगतीपर्वत] रा० १८१
 जगईपम्बयग [जगतीपर्वतक] रा० १८०
 जगती [जगती] जी० ३१२६० से २६३, २७३,
 २६८
 जगतीपम्बयग [जगतीपर्वतक] जी० ३१२६२
 जघण [जघन] ओ० १५
 जकळ [जात्य] ओ० १६, ६४. जी० ३१५६६, ५६७,
 ८५४, ८७८
 जज्जकणग [जात्यकनक] ओ० २७. रा० ८१३
 जज्जहिगुलुय [जात्यहिगुलुक] जी० ३१५६०
 जज्जरिय [जज्जरित] रा० ७६०, ७६१
 जडि [जटिन्] ओ० ६४
 जडु [जाड्य] रा० ७३२, ७३५, ७६५
 जण [जन] ओ० १, ६, ६८, ११६. रा० १२३,
 ७६६
 जणइत्ता [जनयित्वा] ओ० ६६
 जणउम्मि [जनोंमि] रा० ६८७, ७१२
 जणकलकल [जनकलकल] ओ० ५२. रा० ६८७,
 ६८८, ७१२
 जणक्खय [जनक्षय] जी० ३१६२८
 जणबोल [जनबोल] ओ० ५२. रा० ६८७, ७१२

जणवय [जनपद] ओ० १४६. रा० ६६८, ६६९,
६७१, ६७६, ६८३, ७०६, ७११, ७१८, ७५०,
७७४, ७९०, ७९१

जणवयकहा [जनपदकथा] ओ० १०४, १२७

जणवयपाल [जनपदपाल] ओ० १४. रा० ६७१

जणवयपिय [जनपदप्रिय] ओ० १४. रा० ६७१

जणवयपुरोहिय [जनपदपुरोहित] ओ० १४
रा० ६७१

जणवाय [जनवाद] ओ० १४६. रा० ८०६

जणवूह [जनव्यूह] ओ० ५२. रा० ६८७, ७१२

जणसण्णवाय [जनसन्निपात] ओ० ५२.

रा० ६८७, ७१२

जणसह [जनशब्द] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८,
७१२

जणिय [जनित] ओ० ५१

जणुक्कलिया [जनात्कलिका] ओ० ५२

जणुम्मि [जनामि] ओ० ५२

जणुइ [याज्ञिक] ओ० ९४

जणु [जानु] रा० १२

जति [यदि] रा० ७५०

जतिपरिसा [यतिपरिषद्] रा० ६१

जतो [यतस्] रा० ७५६

जत्ताभिमुह [यात्राभिमुख] ओ० ५५, ५८, ६२, ७०

जत्तिय [यावत्] जी० ३७७, १२७

जत्थ [यत्र] रा० ७१९. जी० १५८

जवा [यथा] जी० ३६८

जन्म [यज्ञ] जी० ३६१४

जन्नु [जानु] रा० ९

जप्पभिइ [यत्प्रभृति] रा० ७९०, ७९१

जमइत्ता [दे०?] ओ० २६

जमय [यमक] जी० ३६३२, ६३३, ६३५, ६३७ से
६३९

जमगण्णमा [यमकप्रभा] जी० ३६३७

जमगवण [यमकवर्ण] जी० ३६३७

जमगवण्णाभ [यमकवर्णाभ] जी० ३६३७

जमगसमग [दे०] ओ० ६७. रा० १३, ६५७
जी० ३४४६

जमगा [यमका] जी० ३६३७ से ६३९

जमगागार [यमकाकार] जी० ३६३७

जमबगिगपुत्त [जमदग्निपुत्र] जी० ३६१७

जमल [यमल] ओ० १, ५७. रा० १२, १७, १८, २०,
३२, १२९, १३३, ७५८, ७५९.

जी० ३६१८, २२८, ३००, ३०३, ३७२, ५९७

जमलिय [यमलित] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.

जी० ३६६८, २७४

जम्म [जन्मन्] ओ० १८४

जम्मण [जन्मन्] ओ० ४६. रा० ८०३.

जी० २१३० से ३४, ५७ से ६१, ६६, ११६,
१२४, १३३; ३६१७

जम्हा [यस्मात्] रा० ७५०

जय [जय] ओ० २०, ५३, ६२ से ६४, ६८.

रा० १२, ४६, ७२, ११८, २७६, २७९, २८२,
६५५, ६८३, ६८९, ७०७, ७०८, ७१३, ७२३.

जी० ३४४२, ४४५, ४४८

जयंत [जयन्त] ओ० १९२. जी० ३६८१, २९९९,

५६८, ७०७, ७१२, ७९९, ८१३, ८१४, ९४१

जयंती [जयन्ती] जी० ३६१६, १०२६

जयणा [यतना] ओ० ४६

जया [यदा] ओ० २१. रा० ७०६. ३७२९

जर [जरा] ओ० ४६, १७२

जर [ज्वर] जी० ३६१८, ११९, ६२८

जरठ [जरठ] ओ० ५, ८. जी० ३२७४

जरा [जरा] ओ० ७४, १९५, १९५।८, २१.

रा० ७६०, ७६१

जल [जल] ओ० १, २३, ४६, ९८, १११ से ११३,

१२२, १३७, १३८, १५०. रा० १७४, ८११.

जी० ३६१८, ११९, २८६, ६४२, ६५३, ७५४,
७६२, ७६८, ७७०, ७७२

√जल [ज्वल्]—जलति. रा० २८१, जी० ३४४७

जलंत [ज्वलत्] ओ० २२, २७. रा० ७२३, ७७७,
७७८, ७८८, ८१३

जलकिडा [जलकीडा] रा० २७७. जी० ३।४४३

जलचर [जलचर] जी० ३।१२६।१, १६६

जलज [जलज] जी० ३।१७१

जलणपवेसि [ज्वलनप्रवेशिन्] ओ० ६०

जलपवेसि [जलप्रवेशिन्] ओ० ६०

जलमज्जण [जलमज्जन] रा० २७७.

जी० ३।४४३

जलय [जलज] ओ० १२. रा० ६, १२, २२.

जी० ३।२६०

जलयर [जलचर] ओ० १५६. जी० १।६८, ६६,
१०१, १०३, ११२, ११३, ११६ से ११६, १२१,
१२३, १२५; २।२२, ६६, ७२, ७६, ६६, १०४,
१०५, ११३, १२२, १३६, १३८, १४६, १४६;
३।१३७ से १४०, १४२, १४४

जलयरी [जलचरी] जी० २।३, ४, ५०, ५३, ६६,
७२, १४६, १४६

जलरय [जलरजस्] ओ० १५०. रा० ८११

जलरह [जलरह] जी० १।६६

जलवासि [जलवासिन्] ओ० ६४

जलसमूह [जलसमूह] ओ० ४६

जलाभिसेय [जलामिषेय] ओ० ६४. रा० २७७

जलावगाह [जलावगाह] रा० २७७

जलिय [ज्वलित] जी० ३।५६०

जल्ल [दे०] ओ० १, २, ८६, ६२. जी० ३।५६८

जल्लपेच्छा [‘जल्ल’ प्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.

जी० ३।६१६

जल्लोसहिपत्त [जल्लोषधिप्राप्त] ओ० २४

जव [यव] ओ० १. जी० ३।५६७, ६२१, ७८८,
८३६

जवण [जवन] रा० १०, १२, ५६, २७६.

जी० ३।११८

जवमज्जा [यवमज्ज] जी० ३।७८८

जवमज्जा [यवमज्जा] ओ० २४

जवलिय [यवलित] जी० ३।२६८

जवाकुसुस [जपाकुसुम] रा० ४५

जस [यजस्] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७,

१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७

जसंसि [यजस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६

जसोधरा [यशोधरा] जी० ३, ६६६

जह [यथा] ओ० ७४. जी० १।७२

जहक्कम [यथाक्रम] रा० १७२

जहण [जघन] जी० ३।५६७

जहण [जघन्य] ओ० १८७, १८८, १६५.

जी० १।१६, ५२, ५६, ६५, ७४, ७६, ८२,

८६ से ८८, ८४, ८६, १०१, १०३, १११,

११२, ११६, ११६, १२१, १२३ से १२५,

१३०, १३३, १३५ से १४०, १४२; २।२० से

२२, २४ से ५०, ५३ से ६१, ६३, ६५ से

६७, ७३, ७६, ८२ से ८४, ८६ से ८८, ६०,

से ६३, ६७, १०७ से १११, ११३, ११४,

११६ से १३३, १३६; ३।८६, ८६, ६१,

१०७, १२०, १५६, १६१, १६२, १६५,

१७६, १७८, १८०, १८२, १८६ से १६०,

२१८, ६२६, ८४४, ८४७, ६६६, १०२१,

१०२७ से १०३६, १०८३, १०८४, १०८७,

१०८६, ११११, ११३१, ११३२, ११३८ से

११३७; ४।३, ४, ६ से ११, १६, १७; ५।५,

७, ८, १० से १६, २१ से २४, २८ से ३०;

६।२, ३, ६, ८ से ११; ७।३, ५, ६, १०,

१२ से १८; ६।२ से ४, २३ से २६, ३१, ३३,

३४, ३६, ४०, ४१, ४३, ४७, ४६, ५१, ५२,

५७ से ६०, ६८ से ७३, ७७, ७८, ८०, ८३,

८५, ८६, ८०, ८२, ८३, ८६, ८७, १०२, १०३,

१०५, १०६, ११४, ११५, ११७, ११८, १२३

से १२८, १३२, १३४, १३६, १३८, १४२,

१४४, १४६, १४६, १५०, १५२, १५३, १६०

से १६२, १६४, १६५, १७१ से १७३, १७६

से १७८, १८६ से १६१, १६३, १६४, १६८

से २००, २०२ से २०४, २०६, २०७, २१०

से २१२, २१४, २१६ से २१८, २२२, २२५,
 २२८, २२९, २३४, २३६, २३८, २४१ से
 २४४, २४६, २५७ से २६०, २६२, २६४,
 २६६, २७१, २७३, २७७ से २८२
जह्णजोगि [जघन्ययोगिन्] ओ० १८२
जह्णपद [जघन्यपद] जी० ३११६५ से १६७
जहा [यथा] ओ० ६६. रा० १०. जी० ११४
जहानामत [यथानामक] जी० ३१६६०
जहानामय [यथानामक] ओ० १५०, १६४, १८४.
 रा० १२, २४, २५, २७, २८, ३०, १५४,
 १७३, ७०३, ७३७, ७५५, ७५८ से ७६१,
 ७६५, ७७२, ७७४, ८११. जी० ३१८४, ११८,
 ११९, २१८, २८०, २८१, २८३ से २८५, ३०६,
 ३२७, ५७८, ६०१, ६७०, ८८३
जहानामय [यथानामक] रा० २६, २६, ३१, ४५,
 ६५, १२३, १७१, १७३. जी० ३१८५, ६५,
 २७७ से २७९, २८२, ६०२, ७५५, ८६०,
 ८६६, ८७२, ८७८, ८५८, ८५९, ८६१,
 १०७८, १०७९
जहाभणिय [यथाभणित] रा० ६६६
जहासंभव [यथासम्भव] जी० १११३६
जहि [यत्र] जी० ३११२७
जहिच्छित [यथेप्सित] जी० ३१११५
जहिच्छिय [यथेप्सित] जी० ३१५६८, ६०६
जजा [या] - जति. जी० ३१८३८१
जाह [जाति] ओ० २३, १६५, १६५१२१
जाइमंडवग [जातिमण्डपक] रा० १८४
जाइमंडवय [जातिमण्डपक] रा० १८५
जाइसंपण [जातिसम्पन्न] ओ० २५
जाइसरण [जातिसरण] ओ० १५६, १५७
जाइहिगुलय [जातिहिङ्गुलक] रा० २७
जाईमंडवग [जातिमण्डपक] जी० ३१२६६
जाईमंडवय [जातिमण्डपक] जी० ३१२६७
जाग [याग] ओ० २
जागर [जागृ] - जागरिस्संति. रा० ८०२
जागरिया [जागरिका] ओ० १४४. रा० ८०२,

८०३

जाण [यान] ओ० १, ७, ८, १०, १४, ५२, ५५, ५८,
 ५९, ६२, ७०, १००, १२३, १४१. रा० ६७१,
 ६७५, ६८७, ७६६. जी० ३१२७६, ५८१, ५८५,
 ६१७
जाण [जा] - जाणइ. ओ० १६६. रा० ७७१.
 जी० ३११६८ - जाणंति. रा० ६३. जी०
 ३११०७ जाणंती. - ओ० १६५१२ - जाणति,
 जी० ३१२०० - जाणह. रा० ६३ - जाणामि.
 रा० ७४६ - जाणासि. रा० ७६७ - जाणि-
 स्सामो. रा० ७२१ - जाणिहि. रा० ८१५
जाणमाण [जानान, जानत्] रा० ८१५
जाणय [ज] ओ० १६, २१, ५४. रा० ७४७
जाणविमाण [यानविमान] रा० १३, १७ से १९,
 २४, ३२, ४५ से ४६, ५६, ५७, १२०
जाणसाला [यानशाला] ओ० ५६
जाणसालिय [यानशालिक] ओ० ५८, ५९
जाणिसा [जात्वा] ओ० १४५. रा० ७६४
जाणु [जानु] ओ० १६, २१, ५४. रा० २५४, २६२.
 जी० ३१४१५, ४५७, ५६६, ५६७
जात [जात] रा० ११६, ८११
जातरुव [जातरूप] रा० ७६६. जी० ३१७, ३८७
जातरुवमय [जातरूपमय] जी० ३१२६४
जाता [जाता] जी० ३११०४०, १०४४
जाति [जाति] रा० ३०. जी० ३११६० से १६२,
 १६६ से १६९, १७१, १७४, २८३, २८७, ६६६
 ६६८
जातिगुम्म [जातिगुल्म] जी० ३१५८०
जातिपसन्ना [जातिप्रसन्ना] जी० ३१८६०
जातिमंडवग [जातिमण्डपक] जी० ३१८५७
जातिमंडवय [जातिमण्डपक] जी० ३१८५७
जातिसंपण [जातिसम्पन्न] रा० ६८६, ६८८,
 ६८९, ७३३
जातिहिगुलय [जातिहिङ्गुलक] जी० ३१२८०
जाय [जात] ओ० २७, १५०. रा० १४, ६६८,
 ७६०, ७६१, ८०२, ८११

जायकम्म [जातकर्मन्] ओ० १४४
जायकोउहल्ल [जातकोतूहल्ल] ओ० ८३
जायम [जातक] ओ० १४५. रा० ८०५
जायत्थाम [जातस्थामन्] रा० ८१३
जायरूप [जातरूप] ओ० १४, २७, १४१. रा० १०,
१२, १८, ६५, १३०, १६५, २२८, २७६, ६७१,
८१३. जी० ३१३००, ६७२
जायरूप [पाय] [जातरूपपात्र] ओ० १०५,
१२८
जायरूप [बंधण] [जातरूपबन्धन] ओ० १०६,
१२६
जायरूपमय [जातरूपमय] रा० १३०, १६०. जी०
३१३००
जायसंशय [जातसंशय] ओ० ८३
जायसङ्ग [जातसङ्ग] ओ० ८३
जाया [जाता] जी० ३२३५, २३६, २४१
जार [जार] रा० २४. जी० ३१२७७
जारापविभक्ति [जाराकप्रविभक्ति] रा० ६४
जारिसय [यादृशक] रा० ७७२
जाल [जाल] ओ० १६, ६३, ६४. रा० १७, १८.
जी० ३१८४, ५६६
जालंतर [जालान्तर] रा० १३७. जी० ३१३०७
जालकडग [जालकटक] रा० १३४. जी० ३१३०४
जालकडय [जालकटक] जी० ३१२६२
जालघरग [जालगृहक] रा० १८२, १८३. जी०
३१२७५, २६४
जालपंजर [जालपञ्जर] रा० १३०. जी० ३१३००
जालवंद [जालवृन्द] जी० ३१५६४
जालहरय [जालगृहक] ओ० ६
जाला [ज्वाला] जी० ११७८; २१६८; ३१८५,
११८, ११६, ५८६
जाव [यावत्] ओ० ६०. रा० १ जी० ११३४
जावइय [यावत्] जी० ३१७६, १७८, १८०, १८२
जावं [यावत्] जी० ३१८४१
जावज्जीव [यावज्जीव] ओ० ११७, १२१, १३६,
१६१, १६३

जावतिय [यावत्] जी० ३१६७२, ६७३
जावय [जापक] ओ० २१, ५४. रा० ८, २६२.
जी० ३१४५७
जासुअण [जपासुमनम्] रा० २७
जासुयण [जपासुमनस्] जी० ३१२८०, ५६०
जाहिया [जाहिका] जी० २१६
जाहे [यदा] रा० ७७४. जी० ३१८४३
जिइंदिय [जितेन्द्रिय] ओ० २५, ४६, १६४
जिण [जित] ओ० १६, २१, २६, ५१, ५२, ५४, १७२.
रा० ८, १६, २२५, २५४, २६२, ७७१, ८१५,
८१७. जी० १११; ३१३८४, ४१५, ४४२, ४५७,
८३८, १, ८६६, ६१७
√जिण [जि]—जिणाहि. ओ० ६८. रा० २८२.
जी० ३१४४८
जिणपडिमा [जितप्रतिमा] रा० २२५, २५४ से
२५८, २७३, २६१, ३०६ से ३०६, ३१७ से
३२०, ३४४ से ३४७. जी० ३१३८४, ४१५ से
४१६, ४४२, ४५७, ४७१ से ४७४, ४८२ से
४८५, ५०६ से ५१२, ६७६, ८६६, ६०८
जिणमय [जितमत] जी० १११
जिणवर [जितवर] ओ० ४६. रा० २६२. जी०
३१४५७
जिणसकहा [दे० जिण 'सकहा'] रा० २४०, २७६,
३५१. जी० ३१४०२, ४४२, ५१६, १०२५
जिणिव [जितेन्द्र] रा० ४७
जित [जित] जी० ३१४४८
जितिय [जितेन्द्रिय] रा० ६८६
जिठभच्छिण्णग [जिह्वाछिन्तक] ओ० ६०
जिठिभंदिय [जिह्वेन्द्रिय] ओ० ३७
जिमिय [जितित] रा० ६८५, ७६५, ८०२
जिय [जित] ओ० ६८. रा० २८२, ६८६. जी०
३१४४८
जियकोह [जितक्रोध] ओ० २५. रा० ६८६
जियणिह [जितनिद्र] ओ० २५. रा० ६८६
जियपरीसह [जितपरीषह] ओ० २५. रा०
६८६

जियभय [जितभय] रा० ८१७
 जियमाण [जितमान] ओ० २५, रा० ६८६
 जियमाय [जितमाय] ओ० २५, रा० ६८६
 जियलोभ [जितलोभ] ओ० २५
 जियलोह [जितलोभ] रा० ६८६
 जियसत्तु [जितशानु] रा० ६७६, ६८०, ६८३ से
 ६८५, ६८८ से ७००, ७०२
 जीमूत [जीमूत] जी० ३१७८
 जीमूतय [जीमूतक] रा० २५
 जीय [जीत] ओ० ५२, रा० ११, १६, ५६, ६८७,
 ६८९
 जीव [जीव] ओ० २७, ७१ से ७३, ७४४, ५, ८४
 से ८६, १२०, १३७, १३८, १६२, १८५ से १८८,
 रा० ६८८, ७१६, ७४८ से ७६४, ७६८, ७७०
 से ७७३, ७८६, ८१३, ८१५, जी० ११०, ११,
 १५ से ३३, ५१ से ५४, ५६, ५६ से ६२, ६४,
 ७४, ७६, ८२, ८५ से ८७, ८०, ८३ से ८६, १०१,
 ११६, १२८, १३० से १३४, १४३, २११, १५१;
 ३११, ५३, ५४, ८७, ११८, १२६, १२७, १२७१२,
 ५, १२६१५, ६, १५० से १६०, १८३, १६२, २१०,
 २११, ५७५, ५७६, ७१६, ७२०, ७२४, ७२७,
 ७८७, ८०६, ८१८, ८२८, ८५३, ८५६, ८८०,
 ८४६, ८७४, ८७५, १०८१, ११२८, ११३०,
 ११३८; ४११, २५; ५११, ६०; ६११, १२; ७११,
 २३; ८११, ५; ९११, ७ से ९, १५, १८, २१, २२,
 २८ से ३०, ३६, ३८, ५६, ६२, ६३, ६६, ६७,
 ७५, ८८, ८५, १०१, १०६, ११२, ११३, १२१,
 १३१, १४१, १४७, १४८, १५६, १५८, १५६,
 १६७, १७०, १८१, १८२, १८५, १८६, १८७,
 २०८, २०८, २२०, २२१, २३२, २५५, २५६,
 २६७, २६३
 जीवन्जीवग [जीवन्जीवक] ओ० ६, जी० ३१७५
 जीवन्त [जीवत्] रा० ७५४, ७६२, ७६३
 जीवन्तग [जीवत्क] रा० ७६२
 जीवघण [जीवघन] ओ० १८३, १८४, १८५, १११
 जीवदय [जीवदय] ओ० १६, २१, ५४, रा० ८

जीवपएसिय [जीवप्रदेशिक] ओ० १६०
 जीवा [जीवा] रा० ७५६, जी० ३१५७७, ६३१
 जीवाजीवाभिगम [जीवाजीवाभिगम] जी० १:१, २
 जीवाभिगम [जीवाभिगम] जी० ११२, ६ से १०;
 ६१७, ८, २६३
 जीविय [जीवित] ओ० २३, २५, रा० ६८६, ७५०
 से ७५३, ७५६, ७६२, ७६७
 जीविया [जीविका] ओ० १४७, रा० ७१४, ७७६,
 ८०६
 जीवोवलम्भ [जीवोपलम्भ] रा० ७६८
 जीहा [जिह्वा] ओ० १६, ४७, रा० २५४, जी०
 ३४१५, ५६६, ५६७
 जुह [द्युति] ओ० ४७, ७२, ८६ से ८५, ११४,
 ११७, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७,
 रा० १३, ६५७
 ४/जुज [युज्]—जुज्ज, ओ० १७५
 जुजमाण [युज्जान] ओ० १७६, १७८ से १८०
 जुग [युग] ओ० १६, जी० ३१५६६, ८४१
 जुगल [युगल] रा० २३, जी० ३१५६७
 जुगव [युगपत्] ओ० १८२
 जुगव [युगवत्] रा० १२, ७५८, ७५६,
 जी० ३११८, ११६
 जुगय [युगय] ओ० १, ७, ८, १०, १००, १२३,
 जी० ३१२७६, ५८१, ५८५, ६१७
 जुजसज्ज [युज्जसज्ज] रा० १७३, ६८१
 जुण्ण [जीर्ण] रा० ७६०, ७६१, ७८२
 जुण्णय [जीर्णक] रा० ७६१
 जुति [द्युति] रा० १३, १२१, ६५७, जी० ३१४४६,
 ४५७
 जुत्त [युक्त] ओ० १५, १६, २३, ५५, ५७, ५८, ६२,
 ७०, ७१, रा० १७, १८, २०, ३२, ६१, ७०,
 १२६, २८५, २८२, ६६४, ६७२, ६८१, ६८२,
 ६८०, ६८१, ७०६, ७१४, ७२४, ८०६, ८१०,
 जी० ३१२८८, ३००, ३७२, ४५१, ४५७, ५६२,
 ५८६, ५८२, ५८६, ५८७, ८३८, ८३९
 जुत्तपालित [युक्तपालिक] जी० ३१५६२

जुत्तपालिय [युत्तपालिक] रा० ६६४
 जुत्तय [युत्तक] रा० ७७६
 जुत्तामेव [युत्तमेव] रा० ७०६
 जुत्ति [युक्ति] ओ० ६७
 जुद्ध [युद्ध] ओ० १४६. रा० ८०६.
 जी० ३१६३१
 जुद्धजुद्ध [युद्धयुद्ध] रा० ८०६
 जुद्धसज्ज [युद्धसज्ज] ओ० ५७, ६४. रा० ६८२,
 ६६१. जी० ३१२८५
 जुद्धादजुद्ध [युद्धातिपुद्ध] ओ० १४६
 जुम्ह [युष्मत्] रा० ६
 जुयल [युगल] ओ० १२, ५७. रा० १२, १७, १८,
 २०, ३२, १२६, १३३, २८५, २६१, ७५८, ७५६.
 जी० ३१११८, २८८, २६१, ३००, ३०३, ३७२,
 ४५१, ४५७, ५६७
 जुयल्लग [युगलक] जी० ३१६३०
 जुवइ [युवति] ओ० १
 जुवराय [युवराज] रा० ६७४. जी० ३१६०६
 जुधलिय [युगलित] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.
 जी० ३१२६८, २७४
 जुवाण [युवन्] रा० १२, ७५८, ७५६. जी० ३१११८
 जूय [यूत] ओ० १४६. रा० ८०६
 जूयय [यूपक] जी० ३१७२३
 जूया [यूका] जी० ३१७८६
 जूव [यूप] जी० ३१५६७
 जूवय [यूपक] जी० ३१६२६
 जूवा [यूका] जी० ३१६२४
 जूहिया [यूथिका] रा० ३०. जी० ३१२८३
 जूहियागुम्म [यूथिकामुग्म] जी० ३१५८०
 जूहियामंडवग [यूथिकामण्डपक] रा० १८४.
 जी० ३१२६६
 जूहियामंडवय [यूथिकामण्डपक] रा० १८५
 जेठु [ज्येष्ठ] ओ० ८२. रा० ६७३, ६७५
 जेठामूल [ज्येष्ठामूल] ओ० ११५
 जेणामेव [यत्रैव] रा० ७५४. जी० ३१४४३
 जोइ [ज्योतिस्] रा० ७५७, ७६५, ७७२

जोइभायण [ज्योतिर्भाजन] रा० ७६५
 जोइस [ज्योतिस्, ज्योतिष] ओ० ५०. रा० ५६.
 जी० ३१८३८२
 जोइसामयण [ज्योतिषायण] ओ० ६७
 जोइसिणी [ज्योतिषी] जी० २१७१, ७२, १४८
 जोइसिय [ज्योतिष्क, ज्योतिषिक] ओ० ५०, ६४.
 रा० ११. जी० ११३५; २११५, १८, ३६ से
 ४४, ७१ ७२, ६६; ३१२३०, ८३८, २१, ६१७
 जोईरस [ज्योतीरस] रा० १०, १२, १८, ६५, १६५,
 २७६
 जोईरसमय [ज्योतीरसमय] रा० १३०, १६०
 जोएत्ता [योजयित्वा] ओ० ५६
 जोग [योग] ओ० ११७. रा० ८१५. जी० ११३४,
 ६६, १०१, ११६, १२८, १३६; ३१२७, १६०,
 ७०३, ७२२, ८०६, ८२०, ८३०, ८३४, ८३७,
 ८३८, १०, ३२
 जोगनिरौह [योगनिरौध] ओ० १८२
 जोगपडिसंलीणया [योगप्रतिसंलीनता] ओ० ३६
 जोगि [योगिन्] ओ० ६६
 जोग्ग [योग्य] ओ० ६३. रा० ६, १२, ४७
 जोणि [योनि] ओ० १६५
 जोणिप्पमुह [योनिप्रमुख] जी० ११५८, ७३, ७८,
 ८१
 जोणिया [योनिका] ओ० ७०. रा० ८०४
 जोणिसंगह [योनिसंग्रह] जी० ३१४७
 जोणिसुल [योनिचूल] जी० ३१६२८
 जोणीपमुह [योनिप्रमुख] जी० ३११६० से १६२,
 १६६ से १६६, १७१, १७४, ६६६, ६६८
 जोणीसंगह [योनिसङ्ग्रह] जी० ३११६०, १६१,
 १६३
 जोण्ह [ज्योत्स्न] जी० ३१८३८, १६, २०
 जोति [ज्योतिस्] रा० ७६५
 जोतिभायण [ज्योतिर्भाजन] रा० ७६५
 जोतिरस [ज्योतीरस] जी० ३१७
 जोतिरसमय [ज्योतीरसमय] जी० ३१२६४, ३००
 जोतिस [ज्योतिस्, ज्योतिष] जी० ३१८५८, ८६१,

८६४, ८६७, ८७०, ८७४, ८७२, ८७२,
 १००१, १००२, १००६
जोतिसराय [ज्योतीसराय] जी० ३१२५७, २५८,
 १०२३ से १०२६
जोतिसविषय [ज्योतिर्विषय] जी० ३११००६
जोतिसिद्ध [ज्योतिरिन्द्र, ज्योतिषेन्द्र] जी० ३१२५७,
 २५८, १०२३ से १०२६
जोतिसिणी [ज्योतिषी] जी० २११४६
जोतिसिध [ज्योतिष्क, ज्योतिषिक] जी० २१६५,
 ६६, १४८, १४६; ३१२५७, ५६०, ७६३,
 १०२५
जोय [योग] ओ० ६४. रा० ५१, ७६६.
 जी० ३१७०३; ६१६६
जोय [योग] —जोइसु. जी० ३७०३—
 जोइससंति. जी० ३१७०३—जोएइ. ओ० ५६—
 जोएस्संति. जी० ३१७०३—जोयंति. ३१७०३
जोयण [योजन] ओ० ७१, १७०, १६२, १६५.
 रा० ६, १०, १२, १४, १७, १८, ३६, ५२,
 ५६, ६१, ६५, १२४, १२६ से १२६, १३७,
 १७०, १८६, १८८, १८९, २०१, २०४ से
 २१२, २१८, २२१, २२२, २२४, २२६,
 २२७, २३०, २३१, २३३, २३८ से २४०,
 २४२, २४४, २४६, २४७, २५१ से २५३,
 २६१, २६२, २६७, २७२, २७६, ७२७, ७५३.
 जी० ११७४, ८६. १०१, १११, ११६, १२३,
 १३५; ३१५, १४ से २१, २५ से २७, ३३ से
 ३६, ३६ से ४३, ४७, ६० से ७२, ७७, ८०
 से ८२, ८६, १२६१७, २१७, २१६ से २२७,
 २३२, २५७, २६० से २६३, २७३, २८८,
 ३००, ३०७, ३१०, ३५१, ३५२, ३५४,
 ३५५, ३५८, ३५९, ३६१, ३६२, ३६४,
 ३६५, ३६८ से ३७४, ३७६, ३७७, ३८०,
 ३८१, ३८३, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८,
 ३८९, ४०० से ४०२, ४०४, ४०६, ४०८,
 ४१२ से ४१४, ४२२, ४२५, ४२७, ४३७,

४४५, ५६६, ५६८ से ५७०, ५७७, ६३२,
 ६३४, ६३८, ६३९, ६४२, ६४४, ६५३, ६५६,
 ६६०, ६६१, ६६३, ६६६, ६६८, ६७१, ६७८,
 ६७९, ६८२, ६८३, ६८६ से ६८९, ७०६,
 ७१०, ७१४, ७२३ से ७२८, ७३२, ७३६,
 ७३७, ७३९ से ७४२, ७४५, ७५०, ७५४,
 ७५६, ७५८, ७६१, ७६२, ७६४ से ७७६,
 ७८८ से ७८२, ७८४, ७८५, ७८८, ८०२,
 ८१२, ८१४, ८१५, ८२३, ८२७, ८३२,
 ८३५, ८३८, ८४२, ८४५,
 ८५०, ८५२, ८८२, ८८४, ८८५, ८८७,
 ८८८, ८९१, ८९३ से ८९५, ८९७ से ९०१,
 ९०६, ९०७, ९१०, ९११, ९१८, ९४०, ९४४,
 ९६६ से ९७१, १००१ से १००६, १०१० से
 १०१२, १०३८, १०६५ से १०७०, १०७३,
 १०७४, १०८७, १०८८

जोयणय [योजनक] जी० ३१२२६, ६६३

जोयणिय [योजनिक] ओ० १६२

जोवण [यौवन] ओ० ४७. रा० ६६, ७०.

जा० ३१५६७

जोवणय [यौवनक] रा० ८०६, ८१०

जोह [योध] ओ० २३, ५२, ५५ से ५७, ६२, ६५.

रा० १७३, ६८१, ६८७, ६८८. जी० ३१२८५

ज्ञ

ज्ञा [ज्ञा] रा० ७७

ज्ञावाय [ज्ञावात] जी० ११८१

ज्ञा [दे०] रा० ७८२

ज्ञाय [ध्वज] ओ० २, १२, ५५, ५७, ६५. रा० २२,
 १६७, १७३, १७८, २०२, २०४ से २०८,
 २१४, २२०, २२३, २२६, २३२, २३४,
 २४१, २४८, २५०, २५८, २५९, २६१, २७६,
 २८१, ६८१, ७१५. जी० ३१२८५, २६०,
 ३४८, ३५६, ३६७ से ३७१, ३७५, ३७६,
 ३८२, ३८१, ३८४, ४०३, ४१२, ४१६, ४२०,
 ४२४, ४३०, ४३३, ४३६, ४४५, ४४७, ५८६
 ५८७, ६०४

अल्लरी [अल्लरी] ओ० ६७. रा० १३, ७७, ६५७.

जी० ३२८ से ३२, ७८, ४४६, ६१८

अस [अष] ओ० १६. जी० ३५६६

आण [ध्यान] ओ० ३८, ४३, ४६

आणकोटोवगय [ध्यानकोटोवगत] ओ० ४५, ८२

आम [दग्ध] जी० ३१६६

√आम [वट्] आभिज्ज रा० ७६७

√अिया [ध्ये]—अियाइ रा० ७६५—अियामि

रा० ७६५—अियायति रा० ७६५

अियायमाण [ध्यायत्] रा० ७६५

अोण [क्षीण] ओ० ११६, ११७. रा० ७७४

अोणोदग [क्षीणोदक] आ० ११७

अुसिय [गुणित] जी० ३११८, ११६

अुसिर [गुणपर] जी० ३१८०, ६६, ४४७, ५८८

अुसणा [जूषणा] ओ० ७७

अुसित्ता [जुषत्वा] आ० १४०

अुसिय [जुष्ट, गुणित] ओ० ११७

ट

टकारवग [टकारवर्ग] रा० ६७

(ठ)

√ठव [स्थापय]—ठवेइ रा० ६८१—ठवेई

रा० ५६—ठवेति ओ० ५२. रा० ६८७

—ठवेति ओ० ६६. रा० ६८३

ठवित्ता [स्थापयित्वा] रा० ७६१

ठविय [स्थापित] ओ० १३४

ठवेत्ता [स्थापयित्वा] ओ० ५२. रा० ५६

ठाण [स्थान] ओ० १६, २१, ४०, ५४, ७३, ६५,

११७, १५५, १५६. रा० ८, ७६, १७३, २६२,

६७५, ७१४, ७१६, ७५१, ७५३, ७७१, ७६६.

जी० ११२४; ३२८५, ४५७, ८४३, ८४५,

८४६

ठाणट्टिय [स्थानस्थितिक] ओ० ३६

ठाणधर [स्थानधर] ओ० ४५

ठाणपद [स्थानपद] जी० ३२३३, २३४, २४८,

२५० से २५२, २५७, १०४५

ठाणपथ [स्थानपद] जी० ३१०४८, १०५६

ठाणप्य [स्थानपद] जी० ३१७७

ठाणमगण [स्थानमार्गण] जी० ११३४, ३६, ३६

ठिइ [स्थिति] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७, १४०,

१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७, १७१. रा०

६६५, ६६६. जी० ११४, ५२, ५६, ६०; २१५१;

३१२७५, १२६५, १६०, ६३१, १०४२

ठिइक्खय [स्थितिक्षय] ओ० १४१ रा० ७६६

ठिइय [स्थितिक] ओ० ७०. जी० ११३३

ठिइवडिया [स्थितिपतिता] ओ० १४४

ठिईय [स्थितिक] जी० ३१७२१

ठिच्चा [स्थित्वा] रा० ७३६

ठित [स्थित] जी० ३३०३, ८४५

ठिति [स्थिति] रा० ७६८, ८१५. जी० ११६५,

७४, ८२, ८७, ८८, ६६, १०३, १११, ११२, ११६,

११६, १२०, १२३ से १२५, १२८, १३३, १३६

से १३८; २१२० से २४, २६ से ३०, ३२ से

३६, ३६, ४६, ७६ से ८१, ८५, १०७ से १०६,

१११ से ११४, ११६, ११८, १५०; ३१२०,

१५६, १६२, १६५, १८६, १६२, २१८, २३८,

२४३, २४७, २५०, २५६, २५८, ५६४, ५६५,

६२६, १०२७, १०४२, १०४४, १०४६, १०४७,

१०४६, १०५०, १०५२, १०५३, १०५५, ११२६,

११३१; ४१३, ५, ६; ५१५, ७, २१, २८; ६१२, ५,

७; ७१२, ८; ८१२; ६१२

ठितिपद [स्थितिपद] जी० ३११२२

ठितिवडिया [स्थितिपतिता] रा० ८०२, ८०३

ठितीय [स्थितिक] रा० १८६. जी० ३१३५०,

३५६, ६३७, ६५६, ७००, ७२४, ७२७, ७३८,

७६०, ७६३, ७६५, ८०८, ८१६, ८२६, ८४२,

८४५, ८५४, ८५७, ८६३, ८६६, ८६६, ८७२,

८७५, ८७८, ८८५, ८८३, ८८५

ठिय [स्थित] ओ० ४०. रा० १७, १८, १३०, १३३,

७०३. जी० ३१३००

ठियलेस [स्थितिलेख] ओ० ५०

(ड)

डंड [दण्ड] रा० ७५१

डज्जति [दह्यमान] जी० ३१४४७

डमर [डमर] ओ० १४. रा० ६७१.

जी० ३१६२७

डमरकर [डमरकर] ओ० ६४

डिडिम [डिण्डिम] रा० ७७. जी० ३१५८८

डिडि [डिडि] ओ० १४. रा० ६७१. जी० ३१६२७

(ढ)

ढंक [दे० ढङ्क] जी० १११५

ढिकुण [दे०] जी० ३१६२४

(ण)

ण [न] ओ० ४७. रा० ६. जी० ११८२

णउत [नयुत] जी० ३१८४१

णउत [नवति] जी० ३११००३

णउति [नवति] जी० ३११००४

णउय [नवति] जी० ३१२५७

णउल [नकुल] जी० ११११२

णउली [नकुली] जी० २१६

णं [दे०] ओ० १. रा० २. जी० १११०

णंगूलिय [लाङ्गूलिक] जी० ३१२१६

णंगूलियदीव [लाङ्गूलिकद्वीप] जी० ३१२२४

णंगोलिय [लाङ्गूलिक] जी० ३१२२०

णंगोलियदीव [लाङ्गूलिकद्वीप] जी० ३१२२०

णंदणवण [नन्दनवन] रा० २७६. जी० ३१४४५

णंदा [नन्दक^१] ओ० ६८

णंदा [नन्दा] रा० २३४, २८८, ३१३, ३७६, ४३५, ४६६, ५५६, ६१६. जी० ३१३६५. ३६६, ४१२, ४२५, ४३८, ४५४, ४७७, ४७८, ५१५, ५२३, ५२६, ५३७, ५४४, ५५१, ५५६, ६८३, ६८५, ६८६, ६८८, ६९०, ६९१, ६९४ से ६९६, ६९९

णंदिघोस [नन्दिघोष] ओ० ६४. रा० १३५.

जी० ३१२८५, ३०५

णंदिजणण [नन्दिजनन] रा० ७५०

णंदियावत्त [नन्दावर्त] ओ० ५१, ६४. रा० २१,

४६. जी० ३१२८६, ५६४

णंदिरुक्ख [नन्दिरुक्ख] ओ० ६, १०. जी० ३१५८३

णंदिवल्लणा [नन्दिवल्लणा] जी० ३१६१४

णंदिसेणा [नन्दिसेणा] जी० ३१६१०

णंदिस्सर [नन्दिस्वर] रा० १३५. जी० ३१३०५

णंदिस्सर [नन्दीश्वर] जी० ३१६४८, ६४६

णंदिस्सरवर [नन्दीश्वरवर] जी० ३१८८० से

८८२, ६६६, ६२५

णंदिस्सरोद [नन्दीश्वरोद] जी० ३१६२५, ६२७

णंदी [नन्दी] जी० ३१७७५

णंदीमुह [नन्दीमुख] ओ० ६

णंदुत्तरा [नन्दोत्तरा] जी० ३१६१४, ६१६

णक्ख [नख] ओ० १६. जी० ४१५, ५६६

णक्खत्त [नक्खत्त] ओ० ५०, १४५, १६२.

रा० ८०५. जी० ३१७७५, ८०६, ८२०, ८३०,

८३४, ८३७, ८४१, ८४२, ८४५, ८३७, १०००,

१००७, १०२०, १०२१, १०३७, १०३८

णक्खत्तविमाण [नक्खत्तविमान] जी० २१४३,

३११०१३, १०१८, १०३३

णख [नख] जी० ३१५६७

णगर [नगर] ओ० ४६. जी० ३१६०६

णगरमुत्तिथ [नगरमुत्तिक] रा० ७५४, ७५६,

७६२, ७६४

णगरमाण [नगरमान] रा० ८०६

णगररोग [नगररोग] जी० ३१६२८

णगरी [नगरी] ओ० २०, ५३. रा० ६७१, ६८६,

६६२, ७००, ७०२, ७०६, ७०८, ७१३, ७१६,

७५०

णगगभाव [नगनभाव] रा० ८१६

णग्गोह [न्यग्रोह] जी० ११७२

णग्गोहपरिमंडल [न्यग्रोहपरिमण्डल]

जी० १११६

१. नन्दति—समृद्धी भवतीति नन्दस्त्स्यामन्व-

णमिदम्, इह च दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् (वृ) ।

णञ्चत [नृत्यत] ओ० ६४
 णञ्चण [नर्तन] ओ० ४६
 णट्ट [नाट्य] ओ० १४६, १४८, १४९.
 जी० ३१६३१, १०२५
 णट्टय [नाट्यक] ओ० १, २
 णट्टयपेच्छा [नाट्यकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५
 णट्टपेच्छा [नाट्यप्रेक्षा] जी० ३१६१६
 णट्टमाल [नृत्यमाल] जी० ३१५८२
 णट्टविधि [नाट्यविधि] जी० ३१४४७
 णट्टविहि [नाट्यविधि] रा० ७३, ८१ से ८५, १००
 से १११, ११३, ११६, २८१. जी० ३१४४७
 णट्टसज्ज [नाट्यसज्ज] रा० ७६, १७३
 णट्टशाला [नाट्यशाला] रा० ७८१, ७८३, ७८६,
 ७८७
 णट्टाणिय [नाट्यानीक] रा० ४७, ५६
 णट्ट [नष्ट] रा० ६, १२. जी० ३१४४७
 णट्टपेच्छा [नटप्रेक्षा] जी० ३१६१६
 णत्तुय [नप्तृक] रा० ७५० से ७५३
 णत्थिभाव [नास्तिभाव] ओ० ७१
 णदिमह [नदीमह] जी० ३१६१५
 णपुंसग [नपुंसक] जी० ११२८, २११; ३११४८,
 १४९, १६४
 णपुंसगवेय [नपुंसकवेद] जी० ११२५, १०१
 णपुंसगवेयग [नपुंसकवेदक] जी० ११८६
 णम [नम्]—णमेइ. जी० ३१४५७
 णमंस [नमस्य]—णमंसइ. ओ० २१—णमंसति.
 ओ० ४७. रा० ६८७. जी० ३१४५७
 —णमंसति. रा० ८—णमंसह. रा० ६
 —णमंसामो. ओ० ५२. रा० १०
 —णमंसोज्जा. रा० ७७६
 णमंसण [नमस्यन] ओ० ५२
 णमंसमाण [नमस्यत्] ओ० ४७, ५२, ६६, ८३.
 रा० ६०, ६८७, ६९२, ७१६
 णमंसित्ण [नमस्यितुम्] ओ० १३६
 णमंसित्ता [नमस्यित्वा] ओ० २१. रा० ८
 जी० ३१४५७

णमिय [नमित] जी० ३१३८७, ५६७
 णमेत्ता [नमयित्वा] जी० ३१४५७
 णमो [नमस्] ओ० २१. रा० ८१७.
 जी० ३१४५७
 णय [नत] रा० २४५, ६६४. जी० ३१४०७, ५६२
 णयण [नयन] ओ० १६, २१, ४७, ५४. रा० ८.
 ७१४. जी० ३१३८७, ५६७
 णयणकीयरासि [नयनकीकाराशि] ओ० १३
 णयणुप्पाडियग [उत्पाटितकनयन] ओ० ६०
 णयर [नगर] ओ० २८, २९, ६८, ८६ से ८३, ८५,
 ८६, ११५, ११८, ११९, १५५, १५८ से १६१,
 १६३, १६८
 णयरगुत्तिथ [नगरगुप्तिक] ओ० ६०, ६१
 णयरी [नगरी] ओ० २, १४, २० से २२, ५२, ५५,
 ६० से ६२, ६७, ६८, ७०. रा० १०, १३, ६८७
 से ६८६, ७००, ७०३, ७५०, ७५३
 णर [नर] ओ० १३, ४६. रा० १२६, १७३, ६८१,
 ७५३. जी० ३१२८५, २८८, ३११, ३१८, ३७२
 णरक [नरक] जी० ३१७८ से ८१, ८४
 णरकंठक [नरकंठक] जी० ३१३५५, ३
 णरग [नरक] ओ० ७४१, ३. जी० ३११२, ७७,
 ८५ से ८७, १२७
 णरपवर [नरप्रवर] ओ० १४
 णरय [नरक] ओ० ७४. जी० ३१७७, ८५, ११७
 से ११६
 णरवइ [नरपति] ओ० १, २३, ६३, ६५
 णरवसभ [नरवृषभ] ओ० ६५
 णरसीह [नरसिंह] ओ० ६५
 णरिंद [नरेन्द्र] ओ० ६५
 णलागणि [नलाग्नि] जी० ३१११८
 णलिण [नलिन] रा० २३, १६७, २७६, ८८८.
 जी० ३१११८, ११९, २५६, २८६, २८१, ८४१
 णलिणी [नलिनी] ओ० १. रा० ७७७, ७७८,
 ७८८
 णव [नवत्] ओ० १४३. रा० ८०१.
 जी० १११०

णव [नव] ओ० १,५,८,७१. रा० ६१.

जी० ३,२७४,५६७

णवंग [नवाङ्ग] रा० ८०६,८१०

णवणवमिया [नवनवकिका] ओ० २४

णवणीइयागुम्म [नवनीतिकागुल्म] जी० ३१५८०

णवणीत [नवनीत] जी० २८४,२६७

णवणीय [नवनीत] ओ० १३,६२,६३. रा० ३१,

३७,१८५,२४५. जी० ३१४०७

णवणीय [नवनीत] जी० ३१३११

णवतय [नवत्वक्] रा० ३७

णवमिया [नवमिका] जी० ३१६२१

णवय [नवक] रा० ७५६,७६१

णवरं [दे०] जी० ११५६

णवरि [दे०] जी० ११६६

णवविष [नवविष] जी० ८११,५; ६१२२१,२३२

णह [नख] ओ० ६२. रा० ८,१०,१२,१४,१८,

४६,७२,७४,११८,१५०,२७६,६५५,६८१,

६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७१४,७२३.

जी० ३१५६७

णाइ [जाति] ओ० १५०. रा० ७५१,७७४,८०२,

८११

णाइय [नादित] ओ० ६,६७. रा० १३,५६,५८.

जी० ३१२७५,२८६,४५७,५५७

णाऊण [जात्वा] ओ० २३

णाग [नाग] ओ० ६६,१२०,१६२. रा० ६६८,

७५२,७७१,७८६. जी० ३१३३५,५६६,७३३,

८८५,९४४,९४५,९४७

णागगह [नागग्रह] जी० ३१६२८

णागदंत [नागदन्त] रा० १३२,२४०.

जी० ३१३०२,३१७,४०२

णागदंतग [नागदन्तक] जी० ३१३०२,३१७,३२६,

३६७

णागदंतय [नागदन्तक] रा० १३२,१५३,२३५,

२३६. जी० ३१३०२,३२६,३५५

णागदीव [नागद्वीप] जी० ३१६४४,६४५

णागद्वार [नागद्वार] जी० ३१८८५

णागघर [नागघर] ओ० ६६

णागपइ [नागपति] ओ० ४८

णागफड [नागस्फटा] ओ० ४८

णागमह [नागमह] जी० ३१६१५

णागराय [नागराज] जी० ३१७३४ से ७३६,

७४०,७४२,७४५,७४८ से ७५०,७८१,७८२

णागरुक्ख [नागरुक्ख] जी० ११७१

णागलया [नागलता] ओ० ११. जी० ३१५८४

णागलयामंडवण [नागलतामण्डपक] रा० १८४.

जी० ३१२६६

णागलयामंडवय [नागलतामण्डपक] रा० १८५

णाडग [नाटक] रा० ६८५

णाण [ज्ञान] ओ० ४६,५४,१५३,१६५,१६६,

१८३,१८८,१८५,१११. रा० २६२,६८६,७३३,

७३६,७४६,७७१,८१४. जी० ३११५२,४५७,

६१७

णाणत्त [नानात्व] जी० १११६; ३१६१,१६५,

२१८

णाणविणय [ज्ञानविनय] ओ० ४०

णाणसंपण [ज्ञानसम्पन्न] ओ० २५

णाणा [नाना] ओ० ५०,६३,७०. रा० १६,२०,

३२,३७,४०,१३०,१३३,१३५,१३६,१३८,

१७५,१६०,२४५,८०४. जी० ३१७८,२६४,

२६५,२८६ से २८८,३००,३०२,३०५,

३०६,३११,३२२,३७२,४३५,६५४,१०७१,

१०६१

णाणावरणिज्ज [ज्ञानावरणीय] ओ० ४४

णाणाविह [नानाविध] ओ० ६ से ८,१०,४६,५५,

१०७,१३०. रा० २४,३२,१२८,१३३,१५१,

१५२,१७१,२८१. जी० ३१२७५,२७७,३०३,

३२४,३२५,३५३,४४७

णाणि [जानित्] जी० ११८७,६६,११६,१३३,

१३६; ३१०४,१५२,११०७,११०८; ६१३०,

३१,३३,३५

णातिय [नादित] रा० २६१

नाभि [नाभि] ओ० १६. जी० ३४१५, ५६६, ५६७
 नाम [नामन्] ओ० १४, १५, २०, ४४, ५२, ५३, ८२, १४४, १७१, १६२, १६५, १६६. रा० ११, १७, १८, ७६, ८१, ८३ से ६५, १०० से १११, ११३, २८१, ६६६ से ६७२, ६७५, ६८७, ७१३, ७५१, ८०२. जी० १११; ३१३, ४, १२८, २१७, २१६ से २२३, २२५, २२७, २६०, ३००, ३५०, ३५१, ४०१, ५६६, ५६८, ५६९, ५७७, ५८२, ५८६ से ५६२, ५६५, ६३२ ६३८, ६३९, ७००, ७०१, ७०४, ७०८, ७१०, ७११, ७३६, ७४०, ७४२, ७४५, ७५०, ७५४, ७६१, ७६२, ७६५, ७६६, ७६८ से ७७०, ७७२, ७७५ से ७७८, ७८५, ७८६, ८००, ८१०, ८१४, ८२१, ८२५, ८२६, ८४८, ८५६, ८५६, ८६२, ८६५, ८६८, ८७१, ८७४, ८७७, ८८०, ८२५, ८२७ से ८३२ ८३८ से ८४१, ८४३, ८४४, ८७२, १०३६, ११२०
 नामक [नामाङ्क] ओ० ५०
 नामधेय [नामधेय] ओ० १६, २१, ५१, ५४, १४४, १६३. जी० ३१५०, ६६६, ७०२, ७६०, ८३६
 नामधेय [नामधेय] ओ० ११७. रा० २६२. जी० ३१४५७
 नामय [नामक] रा० ६६७. जी० ३१७७५
 नाय [ज्ञात] ओ० २. रा० ६८८
 नाय [ज्ञात, नाम] ओ० २३
 नायव्य [ज्ञातव्य] रा० १७२
 नाराय [नाराच] जी० ३१११०
 नारी [नारी] जी० ३१२८५
 नालबद्ध [नालबद्ध] जी० ३११७४
 नालिपरिवण [नालिकेरीवन] जी० ३१५८१
 नालियाखेडु [नालिकाखेल] ओ० १४६. रा० ८०६
 नासा [नासा] ओ० १६, ४७. जी० ३१५६६, ५६७
 नासिया [नासिका] जी० ३१४१५

निगुण [निगुण] ओ० १५, ४६, ६३. रा० १२, १७, १८, ७५८, ७५९, ८०६, ८१०. जी० ३१११६, ५८८, ५६२, ५६७
 निओग [निगोद] जी० ५१३३
 निओत [निगोद] जी० ५११६
 निओद [निगोद] जी० ५१२८ से ३०, ३७, ३८, ४१ से ४३, ५०, ५२, ५६
 निओदजीव [निगोदजीव] जी० ५१३७, ५३, ५८ से ६०
 निकरिय [निकरित] ओ० १६
 निकाय [निकाय] ओ० ४६
 निकुरंभ [निकुरम्भ] ओ० ४. रा० १७०. जी० ३१५६६
 निक्कंकड [निष्कङ्कट] जी० ३१२६१, २३६
 निक्कंलिय [निष्काङ्क्षित] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८, ७५२, ७८६
 निक्खित्तउक्खित्तचरय [निक्षिप्तउत्क्षिप्तचरक] ओ० ३४
 निक्खित्तचरय [निक्षिप्तचरक] ओ० ३४
 निक्खुड [निष्कुट] रा० १४
 निगद [निकर] रा० १३०. जी० ३१३००, ५६०, ५६७
 निगरण [निगरण] जी० ३१५८६
 निगरित [निकरित] जी० ३१५६७
 निगलमालिया [निगडमालिका] जी० ३१५६३
 निगिण्ह [निगिण्ह] —निगिण्ह रा० ६६३
 निगोदजीव [निगोदजीव] जी० ५१५६
 निगंथ [निगंथ] ओ० २५, ३३, ७२, ७६. रा० ६६८, ७४८ से ७५०, ७५२, ७८६
 निगंथी [निगंथी] ओ० ७६
 निगच्छ [निगच्छ] —निगच्छ, रा० ६६. जी० ३१४४३—निगच्छति. ओ० ५२. रा० ६८७. जी० ३१४४५
 निगच्छित्ता [निगच्छित्ता] ओ० ५२. रा० ६८७. जी० ३१४४३
 निगय [निगय] ओ० ६३. रा० ७५४, ७५५

णिग्गह [निग्रह] ओ० २५
 णिग्घात [निघात] जी० ३।६२६
 णिग्घाय [निघात] जी० १।७८
 णिग्घायण [निघातन] ओ० २६
 णिग्घोस [निघोष] ओ० ६७. रा० १३.
 जी० ३।४४६, ४५७
 णिघस [निकष] ओ० ८२
 णिचय [निचय] ओ० २३. जी० ३।२८४
 णिच्चिय [निचित] रा० १२, ७५८, ७५९.
 जी० ३।५६६
 णिच्च [नित्य] ओ० ५, ८, १०, ११. रा० १४५,
 २००. जी० ३।५६, ११६, २६८, २७२, २७४,
 ३५०, ६३७, ७०२, ७२१, ७३८, ७६०, ७६३,
 ८०८, ८१६, ८२६, ८३३, ८३६, ८३८। १७, ८४०,
 ८५४, ८२३
 णिच्चमडिया [नित्यमण्डिता] जी० ३।६६६
 णिच्चालोय [नित्यालोक] जी० ३।१०७७
 णिच्चुज्जोय [नित्योद्घात] जी० ३।१०७७
 णिच्छिद्ध [निश्चिद्ध] रा० ७४५, ७७२
 णिच्छिण्ण [निच्छिन्न] ओ० १६५।२१
 णिज्जरण [निर्जरण] ओ० ४६
 णिज्जरा [निर्जरा] ओ० ७१, १६६, १७०
 √णिज्जा [निर्+या]—णिज्जंतु. ओ० ६२.
 णिज्जाहिस्सामि. ओ० ५५
 णिज्जाणमग [निर्याणमार्ग] ओ० ७२. रा० ५६
 णिज्जामय [निर्यामक] ओ० ४६
 णिज्जास [निर्यास] जी० ३।५८६
 णिज्जुत [निर्युक्त] ओ० ४८, ४९, ६४. रा० १७३,
 ६८१
 णिज्जुह [निर्युह] जी० ३।५६४
 णिज्जोय [निर्याग] रा० ५४, ६६, ७०
 णिट्ठुर [निष्ठुर] ओ० ४०
 णिडाल [ललाट] ओ० १६. रा० १३३.
 जी० ३।५६०, ११२२
 णिडालपट्टिया [ललाटपट्टिका] रा० २५४.
 जी० ३।४१५

णिह्म [निह्व] ओ० १६०
 √णिहा [नि+द्रा]—णिहाएज्ज. जी० ३।११८
 णिद्ध [स्निग्ध] ओ० ४, १३, १६, ४७. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३।२२, २७३, ५८६, ५९६, ५९७,
 १०६८
 णिद्धंत [निष्ठर्मात] ओ० १६. ४७
 णिद्धच्छाय [स्निग्धच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३।२७३
 णिद्धोभास [स्निग्धावभास] ओ० ४. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३।२७३
 णिधि [निधि] जी० ३।६३७
 णिष्पंक [निष्पङ्क] ओ० १६४. जी० ३।२६१, २६६
 णिभय [निर्भय] ओ० ४३
 णिभिज्जमाण [निर्भिद्यमान] जी० ३।२८३
 णिभ [निभ] ओ० ६४. जी० ३।५६६
 णिमग [निमग्न] ओ० १६. जी० ३।५६६
 णिमित्तिय [निमित्तित] जी० ३।११८
 णिम्मच्छ [निर्मत्स्य] जी० ३।६६५
 णिम्मल [निर्मल] ओ० १६, ४७, १८३, १८४, १९४.
 जी० ३।२६१, २६६, २६६, ३००
 णिम्मा [नेमा] रा० १६, १३०
 णिम्माय [निर्मात] ओ० ६३
 णियद्वपक्खय [नियतिपर्वत] जी० ३।२६२
 √णियंस [नि+वस्]—णियंसेइ. जी० ३।४५१
 णियंसण [नियंसन] ओ० ४६
 णियंसेत्ता [निवसेत्ता] जी० ३।४५१
 णियग [निजक] ओ० ७०, १५०. रा० १३, ७५१,
 ८०२, ८११
 णियत्थ [दे०] रा० ६६, ७०
 णियम [नियम] ओ० ३२. जी० १।५८, ५९, ७८,
 ६१, ६६, १३३, १३६; ३।१०४, ११०७
 णियमसा [नियमसात्] ओ० १६५:१०
 णियय [नियत] रा० २००. जी० ३।५६, ३५०
 णियया [नियता] जी० ३।६६६
 णियलबद्धग [निगडबद्धग] ओ० ६०
 णियाणमयग [निदानमृतक] ओ० ६०

गिरंतर [निरन्तर] ओ० १४. रा० ६७१

जी० ३२५६, ५६७

गिरंतरित [निरन्तरित] जी० ३३००

गिरय [निरय] ओ० ४६. जी० ३११६

गिरयावास [निरयावान] जी० ३११२

गिरयुद्देश [निरयुद्देश] जी० ३१०८०

गिरवयव [निरवयव] जी० ३२५०

गिरवकांक्ष [निरवकांक्ष] ओ० ४६

गिरातंक [निरातङ्क] जी० ३१५६८

गिरावरण [निरावरण] रा० ८१४

गिरुवद्भव [निरुपद्रव] ओ० १

गिरुवलेव [निरुपलेव] ओ० १६. जी० ३१५६६

गिरुवहत [निरुपहत] जी० ३१५६२

गिरुवहय [निरुपहत] जी० ३१५६७

गिरोह [निरोध] ओ० ३७

गिरुलेव [निरुलेव] जी० ३१६५५

√गिवाड [नि+पात्]—गिवाडेह. जी० ३१४५७

गिवाय [निपात] ओ० १७०

गिवाय [निवात] रा० १२३, ७५५, ७७२

गिवायगंभीर [निवातगम्भीर] रा० १२३, ७५५, ७७२

गिबुद्धि [निबुद्धि] जी० ३१८४१

√गिबेद [नि+वेद]—गिबेदेह. ओ० १६

गिबेदेति. ओ० १७—गिबेदेमि. ओ० २०

गिब्वण [निब्वण] ओ० १६. जी० ३१५६७

गिब्वत्त [निब्वत्त] ओ० १४४. रा० ८०२

√गिब्वत्त [निर्+वत्त]—गिब्वत्तेह. रा० ७७२

गिब्वत्तिय [निर्वत्तित] जी० ३१५६२

गिब्व्याघातिम [निर्व्याघातिन्. निर्व्याघातिम]

जी० ३११०२२

गिब्व्याघाय [निर्व्याघात] ओ० १५३, १६५, १६६.

रा० ८०४, ८१४. जी० १८२

गिब्व्याणमग [निर्व्याणमार्ग] ओ० ७२. रा० ८१४

गिब्व्यादित [निर्व्यादित] जी० ३१८७८

गिब्वित्तिगिच्छ [निब्वित्तिगिच्छ] रा० ६६८,

७५२, ७८६

गिब्वुद्धकर [निब्वुद्धिकर] रा० २८८. जी० ३१३०२, ३६८

गिब्वुद्धिकर [निब्वुद्धिकर] रा० ४०, १३२.

जी० ३१२८३, २८५, ३८७

गिब्वुय [निब्वुत्त] ओ० १

गिब्वेयणी [निब्वेदनी] ओ० ४५

गिब्वत्त [निब्वत्त] रा० १५

गिब्वत्तगुरुह [निब्वत्तगुरुह] ओ० ४३

गिब्वत्त [निब्वत्त] रा० २७६. जी० ३१७६५

गिब्वत्त [निब्वत्त] ओ० ६३. जी० ३१३८४

गिब्वत्त [निब्वत्त] ओ० २१. रा० १६.

जी० ३१४४३

गिब्वत्त [निब्वत्त] जी० ३१४४५

√गिब्वत्त [नि+वत्त]—गिब्वत्तित. जी० ३१४४५

गिब्वत्त [निब्वत्त] ओ० ५४

√गिब्वत्त [नि+वत्त]—गिब्वत्तित. जी० ३१३५८

गिब्वत्त [निब्वत्त] [निब्वत्तिका, नैब्वत्तिका] जी० ३१३०३.

३०५, ३०६, ८८६

√गिब्वत्त [नि+वत्त]—गिब्वत्तित. ओ० १८०

—गिब्वत्तित. ओ० ५४—गिब्वत्तित.

रा० ४८. जी० ३१२१७

गिब्वत्त [निब्वत्त] [निब्वत्तिका, नैब्वत्तिका] रा० १३२

से १३४, १३६, १३७. जी० ३१३०१, ३०२,

३०४, ३०७, ३१५, ३५५

गिब्वत्त [निब्वत्त] [निब्वत्तिका, नैब्वत्तिका] ओ० १२०, १६२.

रा० ६६८, ७५२, ७८६

गिब्वत्त [निब्वत्त] [निब्वत्तिका, नैब्वत्तिका] जी० १५८, ७३, ७८, ८१

गिब्वत्त [निब्वत्त] [निब्वत्तिका, नैब्वत्तिका] ओ० १५४, १६५, १६६

गिब्वत्त [निब्वत्त] [निब्वत्तिका, नैब्वत्तिका] जी० १७८

गिब्वत्त [निब्वत्त] [निब्वत्तिका, नैब्वत्तिका] रा० २७५. जी० ३१४४१,

४४२

गिब्वत्त [निब्वत्त] [निब्वत्तिका, नैब्वत्तिका] जी० ३१४४७

गिब्वत्त [निब्वत्त] [निब्वत्तिका, नैब्वत्तिका] रा० ६, १२

गिब्वत्त [निब्वत्त] [निब्वत्तिका, नैब्वत्तिका] जी० ३१७७५, ८४१

गिह्य [निभृत] ओ० ४६
 गीण [गी] — गीणेश ओ० ५६
 गीणता [नीत्वा] ओ० ५६
 गीरय [नीरजस्] ओ० १६४. रा० २१, २३, ३२,
 ३४, ३६, १२४, १४५, १५७. जी० ३१२६१, २६६,
 २६६
 गील [नील] ओ० ४७. रा० २४, २६, १३२, १५३,
 ६६४. जी० ३१३२६, ५६२, ५६५, ५६६
 गीलकणवीर [नीलकणवीर] रा० २६. जी०
 ३१२७६
 गीलक [नीलक] जी० ३१२७६
 गीलपाणि [नीलपाणि] रा० ६६४. जी० ३१५६२
 गीलबन्धुजीव [नीलबन्धुजीव] रा० २६. जी०
 ३१२७६
 गीललेख [नीललेख] जी० ६१६७
 गीललेखा [नीललेखा] जी० ३१६६
 गीलवत् [नीलवत्] रा० २७६. जी० ३५७७,
 ६६०
 गीलवत्तद्गृह [नीलवत्तद्गृह] जी० ३१६५६, ६६६
 गीलाशोक [नीलाशोक] रा० २६
 गीलाशोक [नीलाशोक] जी० ३१२७६
 गीली [नीली] रा० २६. जी० ३१२७६
 गीलीगुलिया [नीलीगुलिका] रा० २६. जी०
 ३१२७६
 गीलीभेद [नीलीभेद] रा० २६. जी० ३१२७६
 गीलुप्पल [नीलोत्पल] ओ० १३. रा० २६. जी०
 ३१२७६
 गीव [नीप] ओ० ६, १०. जी० ३५८३
 गीसास [निःशवास] ओ० ११७. जी० ३१४५१
 गीहारि [निर्हारिन्] ओ० ७१. रा० ६१
 गीहारिम [निर्हारिन्] ओ० ७, ८, १०. जी०
 ३१२७६
 गीह [स्निह] जी० ११७३
 गूम [नूतम्] ओ० १६६. रा० ७०३. जी०
 ३१६८३

गेउर [नूपुर] जी० ३१५६३
 गेग [नैक] रा० ७२७
 गेमि [नेमि] ओ० ६४. रा० १७३, ६८१. जी०
 ३१२८५
 गेलव [नेतव्य] जी० ३१२१८, ६६६, ८८६, १०४८
 गेयव [नेतव्य] जी० ११४०; ३१२६८, ६६७, ७६१
 गेयाजय [नैर्यात्रिक] ओ० ७२
 गेरइय [नैरयिक] ओ० ४४, ७१, ७३, ८७. जी०
 ११६०, १२८; २१११८, १२६, १३४, १३५, १३८,
 १४४, १४५, १४८; ३१८६ से ६२, ६४, ६७,
 १०४, ११६, ११८ से १२१, ११३१ से ११३३,
 ११३६, ११३८; ६१२, ५, १०; ७१७, ८, १३, १४,
 २० से २३; ६११५६, १५८, २०६, २१०,
 २१६, २२१, २२४, २२६, २२६, २३१ से २३४,
 २३६, २४१, २४२, २४७, २५० से २५२,
 २५४, २५५, २६७ से २६६, २७४, २७७, २७८,
 २८३, २८६ से २८८, २८३
 गेरइयत्त [नैरयिकत्व] ओ० ७३. रा० ७५०,
 ७५१. जी० ३११७, ११३३
 गेवच्छ [नेपथ्य] ओ० ४६
 गेवत्थ [नेपथ्य] ओ० ७०. रा० ५३, ५४, ८०४
 गेवत्थि [नेपथ्य] ओ० ५७
 गेवुत्तिकर [निर्वृत्तिकर] जी० ३१२६५
 गेह [स्नेह] जी० ३१५८६
 गो [नो] ओ० ३३. रा० २५. जी० ११२५
 गोअपज्जात्तग [नोअपर्याप्तक] जी० ६१६३
 गोअपज्जात्तय [नोअपर्याप्तक] जी० ६१६१
 गोअपरित्त [नोअपरीत] जी० ६१८२
 गोअभवसिद्धि [गोअभवसिद्धि] जी० ६१११० से
 ११२
 गोअसंजत [नोअसंयत] जी० ६११४५
 गोअसंजय [नोअसंयत] जी० ६११४१, १४७
 गोअसणि [नोअसंज्ञिन्] जी० ६११०७
 गोअज्जात्तग [नोअपर्याप्तक] जी० ६१६३
 गोअपरित्त [नोअपरीत] जी० ६१८२, ८६, ८७
 गोअभवसिद्धि [गोअभवसिद्धि] जी० ६१११० से

११२

णीमालिया [नवमालिका] रा० ३०. जी० ३१२८३

णीमालियागुम्भ [नवमालिकागुम्भ] जी० ३१५८०

णीमालियामंडवग [नवमालिकामण्डपक] रा०

१८४. जी० ३२६६

णीमालियामंडवय [नवमालिकामण्डपक] रा०

१८५

णीसंजत [नोसंयत] जी० ६१४४५

णीसंजतासंजत [नोसंयतासंयत] जी० ६१४४५

णीसंजय [नोसंयत] जी० ६१४४१, १४७

णीसंजयासंजय [नोसंयतासंयत] जी० ६१४४१,

१४७

णीसंजिण [नोसंजिन्] जी० ६११०७

ण्हाइत्ता [स्नयित्वा] रा० २६१

ण्हाण [स्नात] ओ० १६१, १६३

ण्हाणपीठ [स्नातपीठ] ओ० ६३

ण्हाणमंडव [स्नातमण्डप] ओ० ६३

ण्हाणमल्लिया [स्नातमल्लिका] रा० ३०.

जी० ३१२८३

ण्हाय [स्नात] ओ० २०, ५२, ५३, ७०. रा० ६८३,

६८५, ६८७ से ६८९, ६९२, ७००, ७१०,

७१६, ७२६, ७५१, ७५३, ७६५, ७७४, ७८४,

८०२, ८०५

√ण्हाय [स्नपय्]—ण्हाएइ. रा० २६१

ण्हाह [स्नायु] जी० ११६५, १०५; ३१६२,

१०६०

√ण्हाव [स्नपय्]—ण्हावेति. जी० ३१४५७

ण्हावेत्ता [स्नपयित्वा] जी० ३१४५७

त

त [तत्] ओ० १. रा० १. जी० १११

तइय [तृतीय] ओ० १४४, १७४, १७६, १८२

तउआगर [त्रपुकाकर] रा० ७७४

तउय [त्रपुक] रा० ७५४, ७५६, ७७४

तउयपाय [त्रपुकात्र] ओ० १०५, १२८

तउयबंधण [त्रपुकबंधन] ओ० १०६, १२६

तउयभंड [त्रपुकभाण्ड] रा० ७७४

तउयभारग [त्रपुकभारक] रा० ७६०, ७६१,

७७४

तउयभारय [त्रपुकभारक] रा० ७७४

तउयागर [त्रपुकाकर] जी० ३१११८

तए [ततम्] ओ० ५२. रा० ६. जी० ३१४४०

तओ [ततम्] रा० ११, ५६, ७०, ८०२.

जी० ३१६८६

√तंडव [ताण्डवय्]—तंडवेति. रा० २८१.

जी० ३१४७७

तंत [तान्त] रा० ७६५

तंती [तन्त्री] ओ० ६८. रा० ७, ७६, १७३.

जी० ३१२८५, ३५०, ५६३, ८४२, ८४५,

१०२५

तंतुमय [तन्तुमय] जी० ३१५६५

तंडुल [तण्डुल] रा० १५०, २६१. जी० ३१३२३,

४५७, ५६२

तंडुलछिण्णय [तण्डुलछिन्नक] ओ० ६०

तंब [ताम्र] ओ० १६, ४७. जी० ३१५६६,

५६७

तंबच्छि [ताम्राक्षि] जी० ३१८६०

तंबपाय [ताम्रपात्र] ओ० १०५, १२८

तंबबंधण [ताम्रबंधन] ओ० १०६, १२६

तंबागर [ताम्राकर] रा० ७७४. जी० ३१११८

तंबिय [ताम्रिक] ओ० १०८, १३१

तंबोलिमंडवग [ताम्बूलीमण्डपक] रा० १८४

तंबोलिमंडवय [ताम्बूलीमण्डपक] रा० १८५

तंबोलीमंडवग [ताम्बूलीमण्डपक] जी० ३१२६६

तंस [त्र्यस] जी० ११५; ३१२२, ७८, ७९, ५६४,

१०७१, १०७५

तकारवग [तकारवर्ग] रा० ६८

तक्क [तर्क] रा० ८१५

तक्कर [तस्कर] ओ० १

तगर [तगर] रा० ३०, १६१, २५८, २७६.

जी० ३१२८३, ३३४, ४१६

तच्छ [तृतीय] रा० १२, ६५, ७०२, ७०३

तच्चसत्तराईदिया [तृतीयसत्तराईदिया]

ओ० २४

तच्चा [तृतीया] जी० १।१२५; २।१४८, १४९;

३।२, ४, ६८, ७४, ८१, १२५, ११११

तज्जण [तर्जन] ओ० १६१, १६३

तज्जणा [तर्जना] ओ० १५४, १६५, १६६.

रा० ८१६

तज्जायसंसदुचरय [तज्जातसंसदुचरय] ओ० ३४

तज्जोणिय [तद्योणिक] जी० ३।७२१, ८१५

तड [तट] जी० ३।४४५

तडवडा [दे०] रा० २८. जी० ३।२८३

तण [तृण] रा० ८, १२, १७१, १७३, ७६७.

जी० १।६६; ३।२७७ से २८५, २८८, ३६०,

५७८, ६२२, ६६०

तणवणस्सइकाइय [तृणवनस्पतिकायिक]

रा० ७७१

तणु [तनु] ओ० १६. जी० ३।५६६ से ५६८

तणुय [तनुक] रा० १२७. जी० ३।२६१, ३५२,

५६५, ५६७, ६३२, ६६१, ६८६, ७३६, ८३६,

८५४, ८८२

तणुयतर [तनुकतर] ओ० १६२

तणुयरी [तनुतरी] ओ० १६३

तणुवात [तनुवात] जी० ३।१३, १६, २१, २६,

३७, ५०, ६५, ६७

तणुवाय [तनुवात] जी० १।८१; ३।३०, ३८, ४४, ४७

तणू [तनू] ओ० १६३

तण्हा [तृष्णा] ओ० ११७, १६५।१८. रा० ७२८,

जी० ३।११८, ११९

तत [तत] रा० ११४, २८१. जी० ३।४४७, ५८८

ततिय [तृतीय] रा० ८०२

ततिया [तृतीया] जी० ३।८८

तते [ततस्] जी० ३।५५५

ततो [ततस्] ओ० १४१. जी० ३।१०२३

तत्त [तप्त] ओ० १६, ४७, ५०. जी० ३।११८,

५६०, ५६६

तत्तव [तप्ततपस्] ओ० ८२

तत्तिय [तावत्] रा० १३०. जी० ३।३००

तत्तो [ततस्] जी० ३।१२७

तत्थ [तत्र] ओ० १४. रा० ८. जी० १।११

तत्थ [तस्त] जी० ३।११६

तत्थगत [तत्रगत] रा० ८

तत्थगय [तत्रगत] ओ० २१, ५४. रा० ७१४, ७६६

तदावरणिज्ज [तदावरणीय] ओ० ११६, १५६

तदुभय [तदुभय] ओ० १५५, १६०.

जी० ३।१०६०, १०६१

तदुभयारिह [तदुभयार्ह] ओ० ३६

तद्देवसिय [तद्देविक] ओ० १६, १७

तप्पढमया [तत्प्रथमता] ओ० ६४. रा० ६६,

२८५. जी० ३।४५०

तप्पभिइ [तत्प्रभृति] रा० ७६०, ७६१

तमतमप्पभा [तमस्तमःप्रभा] जी० ३।४१

तमतमा [तमस्तमा] जी० ३।४

तमप्पभा [तमःप्रभा] जी० ३।४१, ४३, ४४

तमा [तमा] जी० ३।७८, ८१, १०२, ११५

तमाल [तमाल] ओ० ८, १०. जी० ३।३८८, ५८३

तम्हा [तस्मात्] रा० ७५०

तय [त्वच्] जी० ३।३११

तया [तदा] ओ० २१. रा० २६२

तया [त्वच्] ओ० ६४. रा० ७६१. जी० १।७१

तयामंत [त्वग्मत्] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४

तयामुह [त्वक्मुख] ओ० ६३

तयाहार [त्वगाहार] ओ० ६४

तर [तृ]—तरति. ओ० ४६

तरंग [तरङ्ग] ओ० १६, ४६. रा० २४, ८१.

जी० ३. २७७, ५६६, ५६७

तरमिल्लहायण [तरोमल्लिहायण] ओ० ६४

तरण [तरण] ओ० ५, ८, १६, ६४. रा० १२, ७५८

से ७६१. जी० ३. ११८, ११९, २७४, ५६६, ५६७

तरणी [तरणी] रा० ७१०, ७७४, ८०४

तरुणीपडिकम्म [तरुणीप्रतिकर्मन्] ओ० १४६.

रा० ८०६

तरुपखंदोलग [तरुपक्षान्दोलक] ओ० ६०

तरुपडियग [तरुपतिनक] ओ० ६०

तल [तल] ओ० १३, १६, ६३, ६४, ६८, १६४.

रा० ७, १२, ५०, ५२, ५६, ७६, ७७, १३७, १७३,

१७४, २३१, २४८, ७५८, ७५९, ७७४.

जी० ३१२८५, २८६, ३०७, ३५०, ३६३, ५६३,

५८८, ५९६, ६०४, ८४२, ८४५, १०२५

तलभंगय [तलभङ्गक] ओ० ४७. रा० ३१५६३

तलवर [दे०] ओ० १८, ५२, ६३. रा० ६८७,

६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४.

जी० ३१६०६

तलाग [तडाग] ओ० १

तलागमह [तडागमह] जी० ३१६१५

तलाय [तडाग] ओ० ६६

तलिण [तलिण] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७

तव [तप्] ओ० २१ से २४, २६, ३०, ३८, ४५,

४६, ५२, ८२, ११७. रा० ८, ६, ६८६, ६८७,

६८९, ७११, ७१३, ८१४, ८१७. जी० ३१६६६

√तव [तप्]—तवति. रा० २८१. जी० ३१४४७

—तविसु. जी० ३१७०३—तविस्सति.

जी० ३१७०३—तवति. जी० ३१८४५

तवणिज्ज [तपनीय] ओ० १६, ४७, ५०. रा० ४०,

१३०, १३२, १३७, १७४, १६१, २८८.

जी० ३१२६५, २८६, ३००, ३०२, ३०७, ३१३,

३८७, ३९७, ५६०, ५६६, ६७२

तवणिज्जमय [तपनीयमय] रा० १३०, १४६,

२४५, २५४, २७०. जी० ३१३००, ३०५, ३०८,

३११, ३२२, ३३७, ३६६, ४०७, ४१५, ४३५,

६४३, ६०४

तवणिज्जामय [तपनीयमय] रा० ३७

तवस्सि [तपस्विन्] ओ० २५

तवस्सिवेयावच्च [तपस्विवैयावृत्त्य] ओ० ४१

तवारिह [तपोर्ह] ओ० ३६

तवोकम्म [तपःकर्मन्] ओ० २४, ११६, १२०

तस [तस] ओ० ८७. जी० ११११, ७५, ८३, १३६,

१३८, १४० से १४३; ५११७

तसकाइय [तसकायिक] जी० ३१८३, १६४,

१६७; ५११, ४, ६, १०, १६, १८ से २०; ६११८२,

१८४

तसकाय [तसकाय] जी० ३११७४

तसिय [वासित] जी० ३१११६

तह [तथा] ओ० ६६. रा० १०. जी० १११४

तहप्पमार [तथाप्रकार] ओ० ४०, १०५, १०६,

१२८, १२९, १४१, १६१, १६३. जी० ११६५,

७१ से ७३, ७८, ८१, ८४, ८८, ८९, १००, १०३,

१११, ११२, ११४ से ११६, ११८, १२१

तहा [तथा] ओ० १७७. रा० १०. जी० १११४

तहाख्व [तथारूप] ओ० ५२, १५१. रा० ६६७,

६८७, ८१२

तहि [तत्र] ओ० ८६. रा० १७४. जी० ३१२६६

ताडना [ताडना] रा० ८१६

ताडिज्जंत [ताड्यमान] रा० ७७

ताण [त्राण] ओ० १६, २१, ५४

तार [तार] रा० ७६

तारग [तारक] जी० ३१८३८, ११

तारग [ताराग] जी० ३१८३८, २, २६

तारय [तारक] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २६२,

जी० ३१४५७

तारयग [तारकाग] जी० ३१८३८, २६

तारा [तारा] ओ० ५०, ६३, ६८, १६२.

रा० २५४, २८२. जी० ३१४१५, ४४८,

८३८, १, २१, ३०, १०२०, १०३७

तारागण [तारागण] जी० ३१७०३, ७२२, ८०६,

८२०, ८३०, ८३४, ८३७, ८३८, ८३९, ८५५,

१०००

तारापिड [तारापिण्ड] जी० ३१८३८, १

ताराख्व [तथारूप] रा० २०, १२४.

जी० ३१२८८, ८४१, ८४२, ८४५, ८६८, १००३

से १००६, १०२० से १०२२, १०३७, १०३८

तारावलिपविभक्ति [तारावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
 ताराविमाण [ताराविमान] जी० २१८, ४४;
 ३१००६, १०१४, १०१६, १०३५
 ताल [ताल] ओ० ६, १०, ६८. रा० ७, ७६, ७७,
 १७३. जी० १७२; ३१२८५, ३५०, ३८८,
 ५६३, ५८८, ८४२, ८४५, १०२५
 ✓ताल [ताड्य] —तालेज्जा. रा० ७५५
 तालण [ताडन] ओ० १६१, १६३
 तालणा [ताडना] ओ० १५४, १६५, १६६
 तालायर [तालाचर] ओ० १
 तालिज्जंत [ताडयमान] रा० ७७
 तालियंत [तालवृत्त] ओ० ६७
 तालु [तालु] ओ० १६, ४७. जी० ३१५६६, ५६७
 तालुय [तालुक] रा० २५४ जी० ३४१५
 ताव [तावत्] ओ० ७६. रा० ७५१. जी० २१८१
 ताव [ताप्य] —तावेइ. जी० ३१३२७ —तावेति.
 रा० १५४ जी० ३१३२७ —तावेति. रा०
 १५४ जी० ३७४१
 तावइय [तावत्] रा० १२६. जी० ३१३७३
 तावं [तावत्] जी० ३१८४१
 तावक्खेत्त [तापक्षेत्र] जी० ३१८३८, १४, १५, ८४२,
 ८४५
 तावतिय [तावत्] रा० २१०, २१२ जी ३१३००,
 ३५४, ६४७, ८८५
 तावस [तापस] ओ० ६४
 ताविय [तापयित्वा] जी० ३११८
 ताहे [तदा] जी० ३१८४३
 ति [त्रि] ओ० ७७. रा० ७. जी० १११७
 ति [इति] रा० ७०३
 तिक्खुत्तो [त्रिम्] ओ० २१, ४७, ५२, ५४, ६६, ७०, ७८,
 ८०, ८१, ८३. रा० ८ से १०, १२, से १४, ५६, ५८,
 ६५, ७३, ७४, ११८, १२०, २६२, ६८७, ६६२,
 ६६५, ७००, ७१६, ७१८, ७७८. जी० ३१४५७
 तिग [त्रिक] ओ० १, ५२
 तिगिच्छि [तिगिच्छि] रा० २७६

तिगिच्छिदह [तिगिच्छिदह] जी० ३१४४५
 तिगुण [त्रिगुण] जी० २१५१; ३१०१० से
 १०१४
 तिगुणिय [त्रिगुणित] जी० ३१८३८, २४
 तिघरंतरिय [त्रिगुहान्तरिक] ओ० १५८
 तिण [इदम्] रा० ७५१. जी० ३१२७८
 तिणिस [तिनिश] ओ० ६४. रा० १७३, ६८१
 तिण्ण [तीर्ण] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३१४५७
 तिप्त [तृप्त] ओ० १६५, १८, १६. जी० ३१०६
 तिप्त [तिक्त] जी० १५, ५०; ३१२२
 तिप्थ [तीर्थ] रा० १७४, २७६. जी० ३१२८६,
 ४४५
 तिप्थगर [तीर्थकर] ओ० १६, २१, ५२, ५४. रा० ८,
 २६२. जी० ३१४५७
 तिप्थगरसिद्ध [तीर्थकरसिद्ध] जी० ११८
 तिप्थगराभिमुह [तीर्थकराभिमुख] ओ० २१, ५४
 तिप्थयर [तीर्थकर] ओ० ६६, ७०. रा० ८
 तिप्थयराभिमुह [तीर्थकराभिमुख] रा० ८, ६८
 तिप्थसिद्ध [तीर्थसिद्ध] जी० ११८
 तिप्थाभिसेय [तीर्थभिषेक] ओ० ६८
 तिप्थोदग [तीर्थोदक] रा० २७६. जी० ३१४४५
 तिबंडय [त्रिदण्डक] ओ० ११७
 तिपडोपार [त्रिप्रत्यावतार, त्रिपदावतार] जी०
 ३१६४७
 तिपडोया [त्रिप्रत्यावतार, त्रिपदावतार] जी०
 ३१६३६, ६३८, ६५०
 तिप्पणयर [तेपन, तेवन] ओ० ४३
 तिभाग [त्रिभाग] ओ० १६५, ४ से ६, ८ जी०
 ३१३४ से ३६, ४०, ४१, ४४, ४६, ७२५, ७२८,
 ७२९, ८७८
 तिमासपरियाय [त्रिमासपर्याय] ओ० २३
 तिमिर [तिमिर] जी० ३१५८६
 तिय [त्रिक] ओ० ५५. रा० ६५४, ६५५, ६८७,
 ७१२. जी० ३१५५४

तिमाह [त्र्यह] जी ३।५६, ११८, ११९

तिरिक्ख [तिर्यक्] जी० १।५१, १२३; २।२५, ६४, १२२; ६।१

तिरिक्खजोणि [तिर्यग्योनि] ओ० ७४, १, ३ जी० २।२, ३, ६, १०, २१ से २४, ४६, ६५, ६६, ७२, १४२, १४५, १४६, १४६, १५१

तिरिक्खजोणिणी [तिर्यग्योनिक्की] ओ० ७१.

जी० ६।१, ४, ६, १२; ६।२०६, २१२, २१८, २२२

तिरिक्खजोणिय [तिर्यग्योनिक] अ० ७१, ७३, १५६. जी० १।५१, ५४, ५५, ५६, ६१, ६१, ६७, ६८, १०१ से १०३, ११६, ११७, ११६, १२५; २।७५, ७६, ८२, ८३, ८५, ८६, ८६, १०१ से १०५, १०७ से १११, ११३, ११६, १२२, १२८, १२९, १३८, १३६, १३८, १४२, १४५, १४६, १४६, १५१; ३।१, १२१, १३० से १४७, १५५, १५६, १६१ से १६३, १६६, ११३२, ११३४, ११३७, ११३८; ६।३, ८, १० से १२; ७।१, ५, ६, १०, १५, १६, २० से २३; ८।१५६, २०६, २११, २१७, २२०, २२१, २२५, २२६, २३१, २३२, २३५, २३६, २४३, से २४५, २५०, २५१, २५३, २५५, २६७, २७०, २७१, २७६, २८०, २८६, २८७, २८८, २८९

तिरिक्खजोणियत्त [तिर्यग्योनिकत्त] ओ० ७३.

जी० ३।११३४

तिरिय [त्र्यक्] ओ० ४४, ४६. रा० १०, १२, ५६, १२६, १३२, २७६. जी० १।४५, ७६ ८७, ८६, १०१, १३६; ३।१२६।२, २५७, ३०२, ३५१, ४४५, ६३८, ७०१, ७१०, ७३६, ७४७, ७६१, ७६४, ७६८, ७६८, ८१४, ८३८।१२, ८४०, ८४४, १००६, ११११; ८।१५८

तिरियक्खेवण [तिर्यक्खेवण] ओ० १८०

तिरियलोक [तिर्यग्लोक] जी० ३।२५६

तिरियवाय [तिर्यग्वाय] जी० १।८१

तिरीड [किरिड] ओ० ५१

तिरुव [त्रिरुप] जी० २।१५१

तिल [तिल] जी० १।७२; ३।६२१

तिलकरयण [तिलकरत्त] जी० ३।३०७

तिलग [तिलक] जी० ३।५६३, ६३१

तिलगरयण [तिलकरत्त] रा० १३०, १३७. जी० ३।३००

तिलपण्डिया [तिलपण्डिका] जी० १।७२।३

तिलय [तिलक] ओ० ६ से ११. रा० ६६, ७०.

जी० १।७२; ३।३८८ से ३६०, ५८३, ७७५।२

तिलागणि [तिलागि] जी० ३।११८

तिवइ [त्रिपदी] रा० २८१

तिवति [त्रिपदी] जी० ३।४४७

तिवलि [त्रिवलि] ओ० १५. रा० ६७२.

जी० ३।५६७

तिवासपरियाय [त्रिवर्षपर्याय] ओ० २३

तिविध [त्रिविध] जी० २।१०४, १०६, १५१; ३।३८, १४८, १४६, १५३, १६४, २१५, ८३६; ५।५७; ६।११२

तिविह [त्रिविध] ओ० ३३, ३७, ६६, ७०, ७८.

रा० ७६. जी० १।१०, १२, ७५, ८६, ११७, ११६, १२६, १३३, १३६; २।१ से ३, ८, ११, ७५ से ७७, ८६, १५१; ३।३७, ७८, १३७, १६१, १०७१; ६।२३, ३२, ६७, ६८, ७५, ८८, ८५, १०१, १०६, १६४, २०२

तिव्व [तीव्र] ओ० ४, ४६, ६६. रा० १७०, ७०३, ७६५. जी० ३।११०, २७३, ६०८, ६११

तिव्वच्छाय [तीव्रच्छाय] ओ० ४. रा० १७०, ७०३ जी० ३।२७३

तिव्वोभास [तीव्रोभास] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३

तिसत्तक्खुसो [त्रिसप्तकृत्वस्] ओ० १७०. जी० ३।८६

तिसर [त्रिसर] ओ० ५२, ६३. रा० ६८७ से ६८८

तिसरय [त्रिसरक] ओ० १०८, १३१

तिसालग त्रिशालक] जी० ३।५६४

तिहा [त्रिधा] रा० ७६४, ७६५
 तिहि [तिथि] ओ० १४५. रा० ८०५
 तीर [तीर] रा० १७४. जी० ३११८, ११९, २८६, ६१०
 तीस [त्रिंशत्] ओ० १६२. जी० ३११२
 तीसतिविह [त्रिंशद्विध] जी० २११३
 तीसविध [त्रिंशद्विध] जी० ३१२२८
 तु [तु] जी० ३१८३८५
 तुंग [तुङ्ग] ओ० १६, ४६, ४७, ६४. रा० ५२, ५६, १३७, २३१, २४७. जी० ३१३०७, ३६३, ५६६, ५६७
 तुंड [तुण्ड] जी० ३११११
 तुंबवीणपेच्छा [तुम्बवीणाप्रेक्षा] जी० ३१६१६
 तुंबवीणा [तुम्बवीणा] रा० ७७
 तुंबवीणिय [तुम्बवीणिक] ओ० १, २
 तुंबवीणियपेच्छा [तुम्बवीणिकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५
 तुंबा [तुम्बा] जी० ३१२५८
 तुच्छतराय [तुच्छतरक] रा० ७६५
 तुच्छत [तुच्छत्व] रा० ७६२, ७६३
 तुष्ट [तुष्ट] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३, ६८, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४, १६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७, २७९, २८१, २८०, ६५५, ६८१, ६८३, ६८०, ६८५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७७४, ७७८. जी० ३१४४३, ४४५, ४४७, ५५५
 तुडिय [तुटित] ओ० २१, ४७, ५४, ६३, ७२, १०८, १३१. रा० ८, ६६, ७०, २८५, ७१४. जी० ३१४५१, ४५७, ५६३
 तुडिय [तूर्य] ओ० ६७, ६८. रा० ७, १३, ३२, २०६, २११, ६५७. जी० ३१३५०, ३७२, ४४६, ५६३, ६४६, ८४२, ८४५
 तुडिय [दे०] जी० ३१८४१
 तुडिय [तुटिक] जी० ३१०२३ से १०२५

१. आ० चूर्णिकृत्—'तुटिकमन्तपुरमुपदिश्यते'
 [वृत्ति पत्र ३८४] ।

तुडियंग [दे०] जी० ३१५८८, ८४१
 तुडिया [तुटिता] जी० ३१२५४, २५८
 ✓ तुयट्ट [त्वग्+वृत्]—तुयट्टंति. रा० १८५.
 जी० ३१२१७—तुयट्टह. रा० ७५३.
 — तुयट्टेज्ज. ओ० १८०
 तुयट्टण [त्वग्वर्तन] ओ० ४०
 तुयवक [तुयवक] ओ० २, ५५
 तुरग [तुरग] ओ० १, १३, १६, ६४. रा० १७, १८, २०, ३२, ३७, १२६, १७३, ६८१. जी० ३१२८५, २८८, ३००, ३११, ३७२, ५६६
 तुरथ [तुरग] रा० ६८३, ६८५, ६८२, ७०८, ७१०, ७१६, ७३१
 तुरित [त्वरित] जी० ३१८६
 तुरिय [तूर्य] जी० ३१४४६
 तुरिय [त्वरित] ओ० २१, ४६, ५४. रा० ८, १०, १२, १५, ५६, २७६, ७१४. जी० ३११७६, १७८, १८०, १८२, ४४५, ६८६
 तुरियगति [त्वरितगति] जी० ३१६८६
 तुरवक [तुयवक] रा० ६, १२, ३२, १३२, २३६, २८१, २८२. जी० ३१३०२, ३७२, ३६८, ४४७, ४५७
 ✓ तुल [तोलय]—तुलेमि. रा० ७६२
 तुला [तुला] रा० ७४८ से ७५०, ७७३
 तुलिय [तुलित] रा० ७६२, ७६३
 तुलेत्ता [तोलयित्वा] रा० ७६२
 तुल्ल [तुल्य] ओ० १६. जी० १११४३; २१६८ से ७२, ६५, ६६, १३४ से १३८, १४१ से १४६; ३१७३ से ७५, ५६६, ६६८, ६६९, १०३७, ११३८, ४१६ से २३, २५; ५१६, २०, २६, २७, ३२ से ३६, ५२, ५६, ६८; ७१२०, २२, २३; ६१७, १४, ५५, १६६, १८१, २०८, २५० से २५३, २५५, २८६ से २८३
 तुल्लत [तुल्यत्व] जी० ३१६६६
 तुवर [तुवर] जी० ३१४४५, ४४६, ४४८
 तुसागणि [तुपाग्नि] जी० ३१११८
 तुसार [तुपाार] ओ० १६४. जी० ३१११६

तुसारकूड [तुषारकूट] जी० ३११६
 तुसारपडल [तुषारपटल] जी० ३११६
 तुसारपुंज [तुषारपुञ्ज] जी० ३११६
 तुसिणीय [तुष्णीक] रा० ६४, ७०१, ७६२
 तूण [तूण] रा० ७७
 तूणइल्ल [तूणावत्] ओ० १, २
 तूणइल्लपेच्छा [तूणावत्प्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.
 जी० ३१६१६
 तूयर [तूवर] रा० २७६, २८०
 तूल [तूल] ओ० १३. रा० ३७, १८५, २४५.
 जी० ३१२६७, ३११, ४०७
 तुली [तुली] रा० २४५. जी० ३४०७
 तेइंदिय [त्रीन्द्रिय] जी० १८३, ८८, ६०; २११०१,
 १०३, ११२, १२१, १३६, १३६, १४६, १४६;
 ३१३०, १६८; ४११, ४, १३, १८ से २१, २४,
 २५; ८१, ३, ५; ६१, ३, ५, ६, १६६, २२३, २३१,
 २५६, २६४, २६६
 तेज [तेजस्] जी० ११२८, १३३; २१३०;
 ५८; ६१६४, २५७
 तेजकाइय [तेजस्कायिक] जी० ५६, २६;
 ६१८२, १८४, २५६, २६२, २६६
 तेजकाइय [तेजस्कायिक] जी० १७५, ७६, ७६,
 ८०; २१००, १३६, १३८, १४६, १४६; ५११, १३,
 १८, २०; ८१, ५
 तेजलेस्स [तेजोलेश्य] जी० ६१८५, १८६, १६६
 तेजलेस्सा [तेजोलेश्या] जी० ३११०१
 तेंदिय [त्रीन्द्रिय] जी० ६१६७, २२१, २२६, २५६
 तेंदुय [तिन्दुक] जी० १७२
 तेजससमुग्धाय [तेजससमुद्घात] जी० ३१११२,
 १११३
 तेणाणुबंधि [स्तेनानुबन्धिन्] ओ० ४३
 तेणामेव [तत्रैव] रा० ७५४ जी० ३१४३
 तेजस [तेजस] जी० ३१२५
 तेतलि [तेजस्तलिन, तेतलिन्] जी ३१६३१
 तेत्तीस [त्रयस्त्रिंशत्] ओ० १६७. जी० १६६

तेत्तीसम [त्रयस्त्रिंश] रा० १६४
 तेमासिय [त्रैमासिक] ओ० ३२
 तेमासिया [त्रैमासिकी] ओ० २४
 तेय [तेजस्] ओ० २२, ४७, ५७, ६५, ७१, ७२, १८२.
 रा० ६१, १३३, ७२३, ७७७, ७७८, ७८८, ८१३.
 जी० ३१३०३, ५८६, ११२२
 तेयसि [तेजस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६
 तेयग [तेजस] जी० ६१७६
 तेयगसरीरि [तेजसशरीरिन्] जी० ६१७०, १७४
 तेयय [तेजस] जी० ११५, ५६, ६४, ७४, ७६, ८२,
 ८५, ६३, १०१, ११६, १२८, १३५
 तेया [तेजस] जी० ३१२६६; ६१८१
 तेयासमुग्घात [तेजससमुद्घात] जी० ३१११३
 तेयासमुग्घाय [तेजससमुद्घात] जी० ३१५७
 तेयाहिय [व्याहिक] जी० ३६२८
 तेर [त्रयोदशन्] जी० ३१२६६५
 तेरस [त्रयोदशन्] ओ० १५५. रा० १८८.
 जी० ३१३४
 तेरासिय [त्रैराशिक] ओ० १६०
 तेरल [तेल] ओ० ६३, ६२, ६३. रा० १६१, २५८,
 २७६. जी० ३१३३४, ४१६, ४४५
 तेरलग [तेलक] जी० ३१५८६
 तेरलापूय [तेलापूप] ओ० १७०. जी० २१२६०
 तेरलापूव [तेलापूप] जी० ३१८६
 तेखण [त्रिपञ्चाशत्] जी० १११११
 तेबीस [त्रयोविंशति] जी० ३१७३६
 तोण [तूण] ओ० ६४. रा० १७३, ६८१.
 जी० ३१२८५
 तोमर [तोमर] ओ० ६४. जी० ३१११०
 तोमरग [तोमराग्र] जी० ३१८५
 तोय [तोय] ओ० २७
 तोयपट्ट [तोयपृष्ठ] ओ० ४६
 तोरण [तोरण] ओ० १, २, ५५, ६४. रा० २० से
 २३, ३२, १३८ से १६१, १७३, १७६, २०२, २३४,
 २७७, २८१, २८८, ३१२, ४७३, ६४५, ६५५, ६८१

जी० ३।२८५, २८८ से २९१, ३१५ से ३३४,
३५५, ३६३, ३७२, ३९६, ४२५, ४४३, ४४७,
४५४, ४७७, ५३२, ५५४, ५५६, ५७६, ५९७,
६०४, ६४१, ६६६, ६८४, ८५७, ९०१

त्ति [इति] रा० ६

(थ)

थंभ [स्तम्भ] रा० २०

थंभणया [स्तम्भन] ओ० १०३, १२६

थंभिय [स्तम्भित] ओ० २१, ४७, ५४, ६३, ७२.
रा० ८. जी० ३।४५७

थक्कार [दे०]—थक्कारेति. रा० २८१.

जी० ३।४४७

थण [स्तन] ओ० १५. जी० ३।५६७

थणिय [स्तनित] ओ० ४८, ७१. रा० ६१

थणियकुमार [स्तनितकुमार] जी० २।१६

थणियकुमारी [स्तनितकुमारी] जी० २।३७

थणियसद्द [स्तनितशब्द] जी० ३।८४१

थलचर [स्थलचर] जी० २।१२२

थलज [स्थलज] जी० ३।१७१

थलय [स्थलज] रा० ६, १२

थलयर [स्थलचर] ओ० १५६. जी० १।६७, १०२
से १०४, ११२, ११७, १२०, १२४; २।६, २३,
२४, ६६, ७२, ७६, ८६, १०४, ११३, १३६, १३८,
१४६, १४९; ३।१३७, १४१ से १४४, १६१ से
१६३

थलचरी [स्थलचरी] जी० २।३, ५, ५१, ६६, ७२,
१४६, १४९

थवइय [स्तवकित] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.

जी० ३।२६८, २७४

थाम [स्यामन्] ओ० २७

थारुइणिया [थारुकिनिका] ओ० ७०. रा० ८०४

थाल [स्थाल] रा० १५०, २५८, २७६.

जी० ३।३२३, ३५५, ४१६, ४४५, ५८७, ५९७

थालइ [स्थालकिन्] ओ० ६४

थालिपाक [स्थालीपाक] जी० ३।६१४

थालिपाग [स्थालीपाक] जी० ३।६१४

थाली [स्थाली] जी० ३।७८

थावर [स्थावर] जी० १।११, १२, ७४, १३७, १३९,
१४१, १४३

थावरकाय [स्थावरकाय] जी० ३।१७४

थासग [स्थासक] ओ० ६४

थिबुग [स्तिबुक] जी० १।६४, ६५

थिभुग [स्तिबुक] जी० ३।६५६

थिभुय [स्थिबुक] जी० ३. ६४३

थिमिओवय [दे० स्तिमितोवक] ओ० १११ से
११३, १३७, १३८

थिमिय [दे० स्तिमित] ओ० १. रा० १, ७५,
६६८, ६६९, ६७६, ६७७

थिर [स्थिर] ओ० १६. रा० १२, ७५८, ७५९.
जी० ३।११८, ५६६, १०६८

थिल्लि [दे०] ओ० १००, १२३. जी० ३।५८१,
५८५, ६१७

थीह [दे०] जी० १।७३

थुक्कार [थूत्कारय]—थुक्कारेति. रा० २८१.
जी० ३।४४७

थूम [स्तूप] जी० ३।४१२, ५६७, ६०४

थूममह [स्तूपमह] रा० ६६८. जी० ३।६१५

थूभाभिमुह [स्तूपाभिमुख] रा० २२५.

जी० ३।३८४, ८६६

थूभियग्ग [स्तूपिकाग्र] ओ० १६२

थूभियाग [स्तूपिकाक] रा० ३२, १२६, १३०,
१३७, २१०, २१२. जी० ३।३००, ३०७, ३५४,
३७२, ३७३, ६४७, ८८५

थूभियाय [स्तूपिकाक] जी० ३।३००

थूल [स्थूल] ओ० ७७

थूलय [स्थूलक] ओ० ११७, १२१. रा० ७६६

थेज्ज [स्थैर्य] रा० ७५० से ७५३

थेर [स्थविर] ओ० २५, ४०, १५१. रा० ६८७,
८१२. जी० १।१; ३।१

थेरवेयावच्च [स्थविरवेयावत्त्य] ओ० ४१

थोव [स्तक] ओ० २८, १७१. जी० ११४३;
 रा६८ से ७३, ६५, ६६, १३४ से १३८, १४१
 से १४६; ३५६७. ८४१, १०३७, ११३८;
 ४, १६ से २३, २५; ५१६ से २०, २५ से २७,
 ३१ से ३६, ५२, ५६, ६०; ६१२; ७१२०, २२,
 २३; ८५; ९५ से ७, १४, १७, २०, २७ से २६,
 ३५, ३७, ५५, ६१, ६२, ६६, ७४, ८७, ९४, १००,
 १०८, ११२, १२०, १३०, १४०, १४७, १५५,
 १५८, १६६, १६६, १८१, १८४, १८६, २०८,
 २२०, २३१, २५० से २५३, २५५, २६६, २८६
 से २९३

थोवतरक [स्तोकरक] जी० ३१०१, ११४

थोवतरग [स्तोकरक] जी० ३१६६, ११३

द

दओभास [दकावभास] जी० ३१७३५, ७४०, ७४१,

दंड [दण्ड] ओ० १२, ६४, १७४. रा० १०, १२, १८,

२२, ५१, ६५, १५६, १६०, २५६, २७६, २९२,

६६४, ६७५, ७५५, ७६०, ७६१, ७६७, ७६८,

७७६, ७७७. जी० ३११७, २६०, ३३२, ३३३,

४१७, ४४५, ४५७, ५६२, ५८६

दंडणायक [दण्डनायक] ओ० १८

दंडणायग [दण्डनायक] रा० ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४

दंडणीइ [दण्डनांति] रा० ७६७

दंडनायग [दण्डनायक] ओ० ६३

दंडपाणि [दण्डपाणि] रा० ६६४

दंडय [दण्डक] रा० ७५५

दंडलक्षण [दण्डलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

दंडसंपुच्छणी [दे० दण्डसंपुच्छणी, दण्डसम्पुसनी]
 रा० १२

दंडि [दण्डिन्] ओ० ६४

दंत [दन्त] ओ० १६, २५, ४७, ६४. रा० २५४,

७६०, ७६१. जी० ३१४१५, ५६६

दंत [दन्त] ओ० १६४

दंत [पाग] [दन्तपात्र] ओ० १०५, १२८

दंत [बंधण] [दन्तबन्धन] ओ० १०६, १२६

दंतमाल [दन्तमाल] जी० ३, ५८२

दंतवेदना [दन्तवेदना] जी० ३१६२८

दंतुक्खलिय [दन्तोलूखलिक] ओ० ६४

दंत [दंश] ओ० ८६, ११७. रा० ७६६. जी०
 ३१६२४, ६३११३

दंसण [दर्शन] ओ० १५, १६ से २१, ४६, ५१ से

५४, ६४, १४३, १५३, १६५, १६६, १८३, १८४.

रा० ८, ५०, ७०, १३३, २६२, ६८६, ६८७, ६८६,

७१३, ७३८, ७६८, ७७१, ८१४. जी० ११४,

६६, १०१, ११६, १२८, १३३, १३६; ३१३०३,

४५७, ११२२

दंसणविणय [दर्शनविनय] ओ० ४०

दंसणसंपण [दर्शनसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

दंसणोवलंभ [दर्शनोपलम्भ] रा० ७६८

दक्ष [दक्ष] ओ० ६३. रा० १२, ७५८, ७५६,

७६५, ७६६, ७७०. जी० ३१११८

दक्षिण [दक्षिण] जी० ३१५६०, ५६६, ६३६, ६७३,

७४०, ७४१

दक्षिणकूलग [दक्षिणकूलग] ओ० ६४

दक्षिणपच्चत्थियम [दक्षिणपञ्चात्य] जी० ३१६८७

दक्षिणपुरत्थियम [दक्षिणपूरस्त्य] जी० ३१६८६

दक्षिणिल्ल [दाक्षिणात्य] जी० ३१४८६

दग [दक] रा० १२. जी० ३१७४१

दगएक्कारसम [दकैकादश] ओ० ६३

दगकलसग [दककलशक] रा० १२

दगकुंभग [दककुम्भक] रा० १२

दगतइय [दकतृतीय] ओ० ६३

दगथालग [दकस्थालक] रा० १२

दगधारा [दकधारा] रा० २६३ से २६६, ३००,

३०५, ३१२, ३५१, ३५५, ५६४. जी० ३१४५७

से ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१७, ५२०, ५४७,

५५४

दगपासायग [दकप्रासादक] रा० १८०. जी०

३१२६२

दगपासायय [दकप्रासादक] रा० १८१

दगबिध्य [दकद्वितीय] ओ० ६३
 दगमंचाय [दकमञ्चक] रा० १८०. जी० ३१२६२
 दगमंचाय [दकमञ्चक] रा० १८१
 दगमंडय [दकमण्डप] रा० १८१
 दगमंडव [दकमण्डप] रा० १८०
 दगमंडवग [दकमण्डपक] जी० ३१२६२
 दगमट्टिया [दकमृत्तिका] ओ० १४६. रा० ८०६
 दगमालय [दकमालक] रा० १८०. जी० ३१२६२
 दगमालय [दकमालक] रा० १८१
 दगरय [दकरजस्] ओ० १६, ४६, ४७, १६४. रा०
 ३८, १६०, २२२, २५६. जी० ३१२८२, ३१२,
 ३३३, ३८१, ४१७, ५७६, ५६७, ८६४
 दगवार [दकवार] जी० ३११६६
 दगवारक [दकवारक] जी० ३१५८७
 दगवारग [दकवारक] रा० १२
 दगसत्तम [दकसप्तम] ओ० ६३
 दगसीम [दकसीम] जी० ३१७३५, ७४५ से ७४७
 दच्छा [दत्त्वा] रा० ६६७
 दड्ड [दग्ध] ओ० १८४
 दड [दृढ] ओ० १, १४२, १४४. रा० १२, ७५८,
 ७५६, ८००, ८०२. जी० ३१११८
 ददपइण्ण [दृढप्रतिज्ञ] ओ० १४४ से १५०, १५४.
 रा० ८०२, ८०५ से ८११, ८१६
 ददपतिण्ण [दृढप्रतिज्ञ] रा० ८०४
 ददरहा [दृढरथा] जी० ३१२५४
 दढाउ [दृढावुष्] जी० ३१११७
 दहर [दे० ददर] ओ० २, ५२, ५५. रा० ३२, १५६,
 २७६, २८१, २८५. जी० ३१३२२, ३७२, ४४५,
 ४४७, ४५१, ५६४
 दहरग [दे० ददरक] रा० ७७. जी० ३१५८७
 दहरय [दे० ददरक] रा० २८१. जी० ३१७८,
 ४४७
 दहरिग [दे० ददरिका] रा० ७७
 ददुदुर [ददुर] ओ० ५१. जी० ३११०३८
 दधि [दधि] जी० ३१५६७

दधिघण [दधिघन] रा० १३०. जी० ३१३००
 दधिमुह [दधिमुख] जी० ३१६११, ६१२
 दधिवासुयमंडवग [दधिवासुयामण्डपक] जी०
 ३१२६६
 दप्पण [दर्पण] ओ० १२, १६. रा० २१, ४६, २६१.
 जी० ३१२८६, ३४७, ५६६
 दप्पणय [दर्पणक] ओ० ६४
 दप्पणिज्ज [दर्पणीय] ओ० ६३. जी० ३१६०२,
 ८६०, ८६६, ८७२, ८७८
 दढमसंधारग [दर्भसंधारक] रा० ७६६
 दमणा [दमनक] रा० ३०. जी० ३१२८२
 दमिला [द्रविडा, द्रमिला] रा० ८०४
 दमिली [द्रविडा, द्रमिला] ओ० ७०
 दयपत्त [दयाप्राप्त] ओ० १४.^१ रा० ६७१
 दयरय [दकरजस्] रा० २६
 दरिमह [दरीमह] रा० ६८८
 दरिय [दृप्त] ओ० ६. जी० ३१२७५
 दरिसण [दर्शन] रा० ८०३
 दरिसणावरणिज्ज [दर्शनावरणीय] ओ० ४४
 दरिसणिज्ज [दर्शनीय] ओ० १, ५, ७, ८, १० से १३
 १५, ४६, ६४, ७२, १६४. रा० १७ से २३, ३२, ३४
 ३६ से ३८, ५०, १२४, १३०, १३१, १३६, १३७,
 १४५, १५७, १७४, १७५, २२८, २३१, २३३,
 २४५, २४७, २४८, ६६८, ६७०, ६७२, ६७६,
 ७००, ७०२. जी० ३१८४, २३२, २६१, २६६,
 २६६, २७४, २७६, २८६ से २८८, २९०, ३००,
 ३०३, ३०६, ३०७, ३११, ३८७, ३८३, ४०७, ४१०,
 ५८१, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ६३६, ६७२,
 ८३६ ८५७, ८६३, ११२१, ११२२
 दरिसणीय [दर्शनीय] रा० १
 दरी [दरी] जी० ३१६२३
 दस [दल] जी० ३१२८२, ५६७
 दलइत्ता [दत्ता] ओ० २१. रा० २६३.
 जी० ३१४५८

१. प्राक्तकरुणागुणः [वृ] । दयाप्राप्तः स्वभावतः
 शुद्धजीवद्रव्यत्वात् ।

दलय [दलक] रा० २६

√दलय [दा]—दलस्सन्ति. ओ० १४७. रा०

८०८—दलस्सामि. रा० ७८७—दलएज्जा.

रा० ७७६—दलयइ. ओ० २१. रा० २६३

जी० ३१५१५—दलयति. रा० २८१. जी०

३१४४७—दलयति. जी० ३१४५८

दलयित्ता [दत्ता] रा० २६३

दधकर [दधकर] ओ० ६४

दधग्नि [दधग्नि] जी० २१६८; ३११८, ११६

दधग्निदग्धम् [दधग्निदग्धक] ओ० ६०

दधपिय [दधपिय] ओ० ४६

दध्व [दध्व] ओ० २८, ४६, ६६, ७०. रा० ७७८.

जी० १३३; ३१२२, २३, २७, ४५, ५०६, ५६२; ५१५१

दध्वओ [दध्वतस्] ओ० २८. जी० १३३

दध्वठ्ठ [दध्वार्थ] जी० ५१५२, ५६, ६०

दध्वद्वया [दध्वार्थ] रा० १६६. जी० ३१५८, ८७, २७१, ७२४, ७२७, १०८१

दध्वविउसण [दध्ववुत्सर्ग] ओ० ४४

दध्वभिग्गाहचरय [दध्वभिग्रहचरक] ओ० ३४

दध्वीकर [दध्वीकर] जी० ११०६, १०७

दध्वोमोदरिया [दध्वोमोदरिका] ओ० ३३

दस [दशन] ओ० ४७, रा० ८. जी० १७४

दसण [दशन] जी० ३५६७

दसणुप्पडियग [उत्पाटितकदशन] ओ० ६०

दसदसमिका [दशदशकिका] ओ० २४

दसद्ध [दशार्थ] रा० ६. जी० ३१४५७

दसमभत्त [दशमभक्त] ओ० ३२

दसविष [दशविष] जी० ६११, २५६

दसविह [दशविह] ओ० ३६, ४१. जी० ११४, १०;

२११६; ३१२३१; ६१८, २६७, २६३

दह [द्रह] रा० २७६. जी० ३१४४५, ६३६, ६४०,

६६६, ७७५, ६३७

बहमह [द्रहमह] जी० ३१६१५

दहि [दधि] ओ० ६२, ६३

दहिण [दधिघन] रा० २६. जी० ३१२८२

दहिता [दग्धा] जी० ३१५१६

दहिवण [दधिपर्ण] ओ० ६, १०. जी० ३१३८८

दहिवासुयमंडवग [दधिवासुकाभण्डक] रा० १८४

दहिवासुयमंडवय [दधिवासुकाभण्डक] रा० १८५

√दा [दा]—दिज्जइ रा० ७८४—देइ रा० ७६६

दाइय [दायिक] ओ० २३. रा० ६६५

दाऊण [दत्ता] रा० २६२. जी० ३१४५७

दाडिम [दाडिम] ओ० ६, १०. जी० १७२;

३१५६६, ५६७

दाण [दान] ओ० २३. रा० ६६५

दाणधम्म [दानधर्म] ओ० ६८

दातु [दातृ] ओ० ११७

दाम [दामन्] रा० २८, ३२, ४०, ५१, ६७, १३०,

१३२, १३७, १४०, १५८, २३५, २५५, २६५,

२८१, २८१, २८४, २८६, ३००, ३०५, ३१२,

३५५, ६८३, ६८२, ७००, ७१६. जी० ३१२८१,

३००, ३०२, ३१३, ३३१, ३३८, ३५५, ३५६,

३६७, ४१२, ६३४, ८६२

दामिणि [दामिनी] जी० ३१५६७

दामिल [द्राविड] जी० ३१५६५

दार [द्वार] ओ० १, १६२. रा० १२६ से १३८,

१६२ से १६६, २१० से २१२, २१५, २७७,

२८३, २८६, २८८, २९१, २९४ से २९६, ३०१ से

३०४, ३२२ से ३२४, ३२७ से ३२९, ३३१ से

३३४, ३३६, ३३७, ३३८, ३४१, ३४२, ३५१, ३५७,

३६४, ३६५, ४१४, ४१६, ४५३, ४५४, ४७४,

४७७, ५१४, ५१५, ५३४, ५३७, ५७४, ५७५,

५६४, ५६७, ६३४, ६३५, ६५४, ६५५, ६५७. जी०

३१२६६ से ३०७, ३१५, ३३५, ३३६, ३४६ से

३५१, ३५४ से ३५७, ३७३, ३७४, ४१२, ४२१,

४४३, ४४५, ४४६, ४५२, ४५४, ४५७, ४५६ से

४६१, ४६३, ४६४, ४६६, ४६८, ४६९, ४७५,

४७६, ४८७ से ४८९, ४९१ से ४९४, ४९६ से

४९६, ५०१, ५०२, ५०४, ५०६, ५०७, ५१६,

५१७, ५२२, ५२४ से ५२६, ५२८, ५३०, ५३१,

५३३, ५३६, ५३८ से ५४०, ५४३, ५४५ से

५४७, ५५०, ५५२ से ५५४, ५५७, ५६३, ५६६,
 ५६८ से ५७०, ५६४, ६४७, ६७३, ६७४, ७०७
 से ७११, ७१३, ७१४, ७६६ से ८०२, ८१३ से
 ८१५, ८२४ से ८२७, ८५१, ८५२, ८८५ से
 ८८८, ८३६, ८४०, ८४४, ८५५
 दारग [दारक] ओ० १४२, १४४ से १४७, रा०
 ८००, ८०२, ८०४ से ८१०
 दारचेडा [द्वारचेडा] रा० १३०, २६४, २६६, २६८
 २६९ जी० ३१३००
 दारचेडी [द्वारचेडी] जी० ३१४५६, ४६१
 दारय [दारक] ओ० १४३, १४४, १४८, से १५०
 रा० १२, ८०१, ८०२, ८०६, ८११
 जी० ३११८, ११६
 दारुङ्गजपव्वय [दारुकीयपर्वत] रा० १८१
 दारुङ्गजपव्वयय [दारुकीयपर्वतक] रा० १८०
 दारुपव्वयय [दारुपर्वतक] जी० ३१२६२
 दारुपाय [दारुपात्र] ओ० १०५, १२८
 दारुय [दारुक] आ० ६४
 दारुयाग [दारुकक] जी० ३१२-५
 दारुयाय [दारुकक] रा० १७३, ६०१
 दालिम [दाडिम] ओ० १६
 दास [दास] ओ० १४, १४१. रा० ६७१, ७७४,
 ७६६. जी० ३१६१०, ६३११२
 दासी [दामी] ओ० १४, १४१. रा० ६७१, ७७४,
 ७६६
 दाह [दाह] रा० ७६५. जी० ३१४०, ३११८,
 ११६, ६२८
 दाहिण [दक्षिण] ओ० २१, ५४. रा० ८, १६, ४०,
 ४३, ४४, ६६, १२४, १३२, १७०, १७३, २१०,
 २१२, २३५, २३६, २६२, ६६१, ६६४. जी०
 ३१२७, २१६ से २२१, २६५, २८५, ३४२,
 ३४५, ३५८, ३७३, ३६७, ३६८, ४५७, ५६२, ५६६,
 ५६७, ५६९, ५७७, ६४७, ६६८, ६८२, ६८६
 ६८२, ६८५, ६८६, ७११, ८८२, ८८५, ९०२,
 १०१५, १०३६

दाहिणपक्कत्थिम [दक्षिणपाण्चात्य] रा० ४३,
 ६६२. जी० ३१२२४, ३४३, ५६०, ७५२
 दाहिणपक्कत्थिमिल्ल [दक्षिणपाण्चात्य] जी०
 ३१२२०, ६६४, ६६५, ६१८, ६२१
 दाहिणपुरत्थिम [दक्षिणपौरस्त्य] रा० ४३, ६६०.
 जी० ३१३४१, ५६०, ७५१
 दाहिणपुरत्थिमिल्ल [दक्षिणपौरस्त्य] रा० ५६
 जी० ३१२१६, २२३, ६६२, ६६३, ६१८, ६२०
 दाहिणवाय [दक्षिणवात] जी० १८१
 दाहिणहत्थ [दक्षिणहस्त] ओ० ६६
 दाहिणिल्ल [दक्षिणिल्ल] रा० ४८, ५७, २६४ से
 ३०५, ३०६ से ३१२, ३२०, ३२१, ३२५, ३३४,
 ३३६, ३४४, ३५७, ४१६, ४७७, ५३७, ५६७.
 जी० ३१३३, ३८, २१७, २१६ से २२३, २२५,
 २३४, २४०, २५०, २५३, ४५६ से ४७०, ४७४
 से ४७७, ४८५, ४६०, ४६५, ४६६, ४७४, ५०६,
 ५२२, ५२८, ५३६, ५४३, ५५०, ६३२, ६३६,
 ६६६, ६७३, ६६३, ६६४, ६१४
 दिट्ठत्थिय [दाण्डान्तिक] रा० ११७, २८१.
 जी० ३१४४७
 दिट्ठुलाभिय [दाण्डलाभिक] ओ० ३४
 दिट्ठि [दृष्टि] रा० ७४८ से ७५०, ७७३.
 जी० ११४, ६६, १०१, ११६, १२८, १३३, १३६;
 ३१२३, १६०
 दिट्ठिय [दृष्टिक] रा० ७६५
 दिट्ठिवाय [दृष्टिवाद] रा० ७४२
 दिणयर [दिनक] जी० २२. रा० ७२३, ७७७,
 ७७८, ७८८. जी० ३१८३८१२, १३, २६
 दिण्ण [दत्त] ओ० २, १७, ५५, १११ से ११३,
 १३७, १३८. रा० १५, ३२, २८१, ७८७, ७८८.
 जी० ३४४७
 दित्त [दूत, दीप्त] ओ० १४, १४१. रा० ६७१,
 ६७५, ७६६
 दित्त [दीप्त] ओ० ६३, ६५ जी० ३१८३८२६
 दित्ततव [दीप्ततपम्] ओ० ८२
 दित्ततेय [दीप्ततेजस्] ओ० २७. रा० ८१३

दिन्न [दत्त] जी० ३३७२

दिप्यंत [दीप्यमान] ओ० ६३. रा० १३३.

जी० ३३०३, ५८६, ५६०, ११२२

दिप्यमाण [दीप्यमान] ओ० ६५. जी० ३५६१

विषद्व [द्वयर्ध, द्वयपार्ध] जी० २१७३; ३१२३८,
२४३

दिवस [दिवस] आ० १४४. रा० ८०२.

जी० ३१८३८, १८, ८४१

दिव्य [दिव्य] ओ० २, ४७, ६४, ७२. रा० ७, ६,

१०, १२, १७ से १६, २४, ३२, ४५ से ५०, ५६, ५७,

६३, ६५, ७३, ७६, ७८ से ८५, १०० से ११३.

११८ से १२०, १२२, १७३, २०६, २११, २७६,

२८१, २८५, २८३ से २८६, ३००, ३०५, ३१२,

३५१, ३५५, ५६४, ६६७, ७५३, ७६७.

जी० ३१८६, १७६, १७८, १८०, १८२, २८५,

३५०, ३७२, ४४५, ४४६, ४५१, ४५७ से ४६२,

४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५४७, ५५४,

५६३, ६४६, ८४२, ८४५, १०२४, १०२५,

दिव्या [दिव्याक] जी० १११०८

दिसा [दिशा] ओ० ४७, ७२, ७६ से ८१.

रा० २६४, ६८८. जी० ३३६, ७५२, ७५३,

१०१८, १०१९, १०२१

दिसाकुमार [दिशाकुमार] ओ० ४८

दिसादाह [दिशादाह] जी० ३१६२६

दिसापोक्खि [दिशापोक्खिन्] ओ० ६४

दिसासोत्थिय [दिशास्वस्तिक] ओ० १६

दिसासोवत्थिय [दिशासौवस्तिक] रा० १४६.

जी० ३३१६, ५६६

दिसासोवत्थियासण [दिशासौवस्तिकसन]

रा० १८१, १८३, १८५. जी० ३१२६३, २६५,

२६७, ८५७

दिसि [दिग्] रा० १६, ४४, ६१, १२०, १७०, १७५,

२०२, २१०, २१२, २२४, २३४, ३६४, ६६४,

६६७, ७१७, ७७७, ७८७. जी० ११४६, ५६,

८२, ८७, ६६, १०१; ३३४, ३५, २८७, ३५८,

३६३, ३७३, ३८३, ३९६, ६४७, ६६६, ६७३,

६७४, ६८४, ७२३, ८८२, ८८५, ८८८ ८६५,

८१०, ८१४ से ८१६, ८१६ से ८२२

दिसिद्वय [दिग्द्वय] ओ० ७७

दिसीभाग [दिग्भाग] रा० १०, १२, १८, ५६, ६५,

२७६, ६७०. जी० ३१४४५

दिसीभाय [दिग्भाग] ओ० २. रा० २, ६७८

दीणारमालिधा [दीणारमालिका] जी० ३१५६३

दीव [दीप] ओ० १६, २१, ४८, ५४, १७०. रा० ७,

१०, १२, १३, १५, ५६, १२४, २७६, ६६८.

जी० ३१८६, २१७, २१९ से २२३, २२५ से

२२७, २५७, २५९, २६०, २६६, ३००, ३५१,

४४५, ५६६, ५६८ से ५७७, ६३८, ६६०, ६६८,

७०१ से ७०४, ७०८, ७११, ७१५ से ७१६,

७२३, ७३६, ७३९, ७४०, ७४२, ७४५, ७५०,

७५४, ७५५, ७६०, ७६२, ७६४ से ७६६, ७६८

से ७८०, ७८५ से ८००, ८०२ से ८०४, ८०६,

८०८ से ८१०, ८१४, ८१६, ८१७, ८२१ से

८२५, ८२७, ८२९ से ८३१, ८३८, ८३९, ८४३,

८४८, ८५१, ८५६, ८५७, ८५९, ८६२, ८६३,

८६५, ८६८, ८६९, ८७१, ८७४, ८७५, ८७७,

८८० से ८८२, ८८८, ८८९, ८९७ से ८९५,

८९७ से ९४०, ९४३, ९४५, ९५० से ९५४,

९७२ से ९७५, १००१, १००७, १०२२, १०३६,

१०८०, ११११

दीव [दीप] रा० ७७२

दीवग [दीपक] जी० ३१७७०

दीवचंपग [दीपचम्पक] रा० ७७२

दीवचंपय [दीपचम्पक] रा० ७७२

दीवणिज्ज [दीपनीय] जी० ३१६०२, ८६०, ८६६,

८७२, ८७८

दीवसिहा [दीपशिखा] जी० ३१५८६

दीवायण [दीमायन] ओ० ६६

दीविच्चग [दीपग] जी० ३१७८०

दीविग [दीपिक] जी० ३१६२०

दीविय [दीपिक] रा० २४. जी० ३।८४, २७७

दीविता [दीविता] जी० ३.५८६

दीविल्लय [दीपण] जी० ३।७७५

दीह [दीर्घ] ओ० १४, १६, २८, ११६, ११७,
१६५।४. रा० १६०, २५६, ६७१, ७६५, ७७४.

जी० ३।३३३, ४१७, ५६६, ५६७

दीहासन [दीर्घासन] रा० १८१, १८३.

जी० ३।२६३

दीहिया [दीर्घिका] ओ० १, ६, ६६. रा० १७४,
१७५, १८०. जी० ३।२७५, २८६

√दीहीकर [दीर्घी + कृ]—दीहीकरेज्जा.

जी० ३।६६७

दीहीकरितए [दीर्घीकृतम्] जी० ३।६६४ से ६६७

दु [द्वि] रा० ४७. जी० १।६

दुंदुभिस्सर [दुन्दुभिस्वर] ओ० ७१. रा० ६१

दुंदुहिण्गवोस [दुन्दुभिनिर्घोष] ओ० ६७.

रा० १३, १३५. जी० ३।४४६, ५५७

दुंदुहिण्गवोस [दुन्दुभिनिर्घोष] रा० ६५७.

जी० ३।५५७

दुंदुहिस्सर [दुन्दुभिस्वर] रा० १३५.

जी० ३।३०५

दुंदुही [दुन्दुभी] रा० ७७

दुक्ख [दुःख] ओ० २६, ४६, ७२, ७४।१, ४, ५,
१५४, १६५, १६६, १७७, १८१, १६५।२१.

रा० ७७१, ७६५, ८१६. जी० १।१३३;

३।११०; १२६।७, ८; ८३८।१३

दुक्खुत्तो [द्विम्] जी० ३।७३०, ७३१

दुखुर [द्विधुर] जी० १।१०३

दुगुण [द्विगुण] जी० ३।२५६

दुगुणित [द्विगुणित] जी० ३।५६७

दुगुणिय [द्विगुणित] जी० ३।८३४।२४

दुगुल्ल [दुकूल] रा० ३७, २४५. जी० ३।३११,
४०७, ५६५

दुग्ग [दुर्ग] रा० ७६५. जी० ३।११०

दुग्गंघ [दुर्गन्ध] रा० ७५३

दुघण [द्विघण] रा० १२, ७५८, ७५९.

जी० ३।११८

दुघरंतरिय [द्विगृहान्तरिक] ओ० १५८

दुच्चिण्ण [दुष्चीर्ण] ओ० ७१

दुट्ठ [दुष्ट] ओ० ४६

दुत [दुत] जी० ३।४४७

दुतविलंबित [दुतविलम्बित] जी० ३।४४७

दुद्ध [दुग्ध] जी० ३।५६२

दुद्धजाति [दुग्धजाति] जी० ३।५८६

दुद्धरिस [दुर्धर्ष] ओ० २७. रा० ८१३

दुपडोयार [द्विप्रत्यावतार, द्विपदावतार] ओ० ५२.
रा० ६८७

दुपय [द्विपद] रा० ७०३, ७१८

दुपाय [द्विपक] जी० ३।११८, ११९

दुप्पय [द्विपद] रा० ६७१

दुप्पवेस [दुष्प्रवेश] जी० १

दुफास [दुःसार्श] जी० ३।६८१

दुफासत्त [दुःस्पर्शत्व] जी० ३।६८७

दुब्बल [दुर्बल] ओ० १४. रा० ६७१, ७६०, ७६१.
जी० ३।११८, ११९

दुब्बलय [दुर्बलक] रा० ७६१

दुब्बिक्ख [दुर्भिक्ष] ओ० १४. रा० ६७१

दुब्बिक्खभत्त [दुर्भिक्षभक्त] ओ० १३४

दुब्बिक्खमयग [दुर्भिक्षमृतक] ओ० ६०

दुब्बिगंध [दुर्गन्ध] रा० ६, १२. जी० १।५, ३६,
३७, ५०; ३।२२, ६२२, ६७६, ६८५

दुब्बिगंधत्त [दुर्गन्धत्व] जी० ३।६८५

दुब्बिसद्द [दुःशब्द] जी० ३।६७७, ६८३

दुब्बिसद्दत्त [दुःशब्दत्व] जी० ३।६८३

दुब्भूय [दुर्भूत] जी० ३।६२८

दुभागपत्तोमोवरिय [द्विभागपत्तावमोवरिक]
ओ० ३३

दुम [दुम] रा० १३६. जी० ३।३०६, ५८२, ५८६
से ५६५, ६०४

दुमासपरियाय [द्विमासपर्याय] ओ० २३

दुय [दुत] रा० १०२, ८८१

दुयविलंबिय [दुतविलम्बित] रा० ६१, १०४,
२८१

दुयाह [द्वयह] जी० ३१८, ११८, ११६, १७६,
१७८, १८०, १८२

दुरंत [दुरन्त] रा० ७७४

दुरभि [दुरभि] जी० ३१८

दुरस [दूरस] जी० ३१८०

दुरहिंयास [दुरध्यास, दुरधिसह] रा० ७६५.
जी० ३११०, १११, ११७

√दुरुह [आ + रुह]—दुरुहति. रा० ६८५—
दुरुहति. रा० ४८. —दुरुहति. रा० ४७—
दुरुहेति. रा० ६८३

दुरहिता [आरुह्य] रा० ४७

दुरुहेता [आरुह्य] रा० ६८३

दुरुह [आरुह] ओ० ६३, ६४. रा० १३, ४६

दुरुव [दूरुव] जी० ३१, ७८, ६८४

√दुरुह [आ + रुह]—दुरुहति. ओ० ७०

दुरुहिता [आरुह्य] ओ० ७०

दुरुहितार्ण [आरुह्य] ओ० १०१

दुल्लभ [दुल्लभ] रा० ७५० से ७५३

दुल्लभबोहिय [दुल्लभबोधिक] रा० ६२

दुव [द्वि] जी० ३२५१

दुवारवयण [द्वारवदन] रा० ७५५, ७७२

दुवालस [द्वालशन्] ओ० ३३. जी० ३१३३

दुवालसंगि [द्वालशङ्किन्] ओ० २६

दुवालसविह [द्वालशविध] रा० ५२ ७७, ७८.
जी० ११६६

दुवातपरियाय [द्विपरिप्राय] ओ० २३

दुविष [द्विविध] जी० ३१३६, १४०, १४१, १६३,
११२२; ६१३७

दुविह [द्विविध] ओ० ३२, ४०, ७४. रा० ७४१ से
७४५. जी० ११२, ३५ से ७, १०, ११, १३, १४,
५७, ५८, ६३, ६५ से ६८, ७०, ७६, ८०, ८१, ८४,
८८, ८९, ९२, ९४, ९६, ९७, १०० से १०४,
१०६, १११, ११२, ११६, ११८ से १२२, १२६,

१२८, १३३, १३५, १३६, १४३; २ ५, ७, १६;
३: ७८, ७९, ८१, ८२, ८३, ८४, १२७५, १३२ से
१३५, १३८, १३९, १४२ से १४६, २१२, २२६,
६७७ से ६८१, १०२२, १०७१ से १०७४,
१०८७, १०९१, १११०, ११२१; ४: २; ५: २ से
४, ३७ से ४०, ५३ से ५५; ६: ८, ९, ११,
१५, १६, १८, २१, २२, २४, २८ से ३१, ३६,
३८, ३९, ४२, ४४, ४६, ५६, ५८, ६२, ६३, ६५,
६६, ६८, ७६, ७९, ८१, १२५, १३३, १५१,
१७४

दुव्वण [दुव्वर्ण] जी० ३१५६७

दुहओ [द्वितस्, द्वय] रा० ६६, ७०, १३१ से १३८,
२४५, ७५५, ७७२. जी० ३१३०१ से ३०३,
३०५ से ३०७, ३१५, ३५५, ४०७, ५७७

दुहओलहा [द्वितःखहा] रा० ८४

दुहओचक्कवाल [द्वितश्चक्कवाल] रा० ८४

दुहतो [द्वितस्, द्वय] रा० १२३. जी० ३१३०४

दुहा [द्विधा] रा० ७६४, ७६५. जी० ३१८३१

दुइज्जंत [द्वयमाण] ओ० ४६

दुइज्जमाण [द्वयमाण] ओ० १६, २०, ५२, ५३.

रा० ६८६, ६८७, ६८८, ७०६, ७११, ७१३

द्वय [द्वित] ओ० १८, ६३. रा० ७५४, ७५६, ७६२,
७६४

दूर [दूर] ओ० १६२. रा० १२४.

जी० ३११०३८

दूरंगइय [दूरंगतिक] ओ० ७२

दूरसत्त [दूरसत्त्व] जी० ३१६८६

दूराहड [दूरग्रहत] रा० ७७४

दूरुवत्त [दूरुवत्त्व] जी० ३१६८४

दूस [द्वय] ओ० ५६. जी० ३१६०८

दूसरयण [द्वयपरत्न] ओ० ६३

देव [देव] ओ० ४४, ४७ से ५१, ६८, ७१, ७३, ७४,
८८ से ९५, ११४, ११७, १२०, १४०, १४१,
१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७, १७०,
१६५, १६६, १४, रा० ७, ९ से १६, २४, ३२, ४१

से ४४,४६ से ४६,४४ से ६५,६८,६९,७१
 से ७४, ११८ से १२०, १२२, १२४, १२६,
 १२५ से १८७, २४०, २४६, २६६, २६८, २७०,
 २७४ से २६१, ६५४ से ६६७, ६६८, ७५२, ७५३,
 ७७१, ७८६, ७९७ से ७९६, ८१५. जी० १।५१,
 ५४, ५६, ६१, ६५, ८२, ८७, ९१, १०१, ११६,
 १२३, १२८, १३५, १३६; २।२, १५ से १६,
 ३५ से ३७, ३९ से ४७, ६२, ६७, ६८, ७१, ७२,
 ७५, ७८, ८१, ८० से ९३, ९५, ९६, १४४, १४५,
 १४८, १४९, १५१; ३।१, ८६, १२७, १२६।२,
 १७६, १७८, १८०, १८२, १८४, १८६, १८८ से
 २०६, २१७, २३० से २३४, २३६, २३८, २३९,
 २४२ से २४४, २४६, २४७, २४९ से २५२,
 २५५ से २५७, २६७, २६८, ३३६ से ३४५,
 ३५०, ३५१, ३५८ से ३६०, ३७२, ४०२, ४१०,
 ४२६, ४३२, ४३५, ४३६ से ४५७, ५५४ से ५६५,
 ५६७, ५६८, ६३५, ६३७, ६३८, ६५६, ६६४,
 ६६६, ६८०, ७००, ७०१, ७१०, ७२१, ७२४,
 ७३८, ७४१, ७४३, ७४६, ७६०, ७६३, ७६५,
 ७७८, ७९५, ८०८, ८१६, ८२६, ८४०, ८४२,
 ८४३, ८४५, ८४६, ८५४, ८५७, ८६०, ८६३,
 ८६६, ८७२, ८७५, ८८५, ९१७, ९२३, ९२५,
 ९२७ से ९३५, ९३८ से ९४०, ९४२ से ९४५,
 ९४७, ९५०, ९५१, ९५४, ९८८ से ९९७, ९९९,
 १०१५, १०१७, १०२५, १०२७, १०२९, १०३१,
 १०३३, १०३५, १०३८, १०३९, १०४१ से
 १०४४, १०४६, १०४७, १०४९ से १०५६,
 १०८२, १०८३, १०८५ से १०८७, १०८९ से
 १०९३, १०९७ से १०९६, ११०१, ११०५,
 ११०७, ११०९ से १११२, १११४ से १११७,
 १११९ से ११२४, ११३२, ११३३, ११३७,
 ११३८; ६।१, ५, ७, ८, १२; ७.१, ७, ८, १६ से
 २१, २३; ८।१५६, १५८, २०६, २१३, २१८, २२०,
 २२१, २२६, २२९, २३१, २३२, २४८, २५४, २६७,
 २७४, २८३, २८६, २९१, २९३

देवउक्कलिया [देवोत्कलिका] जी० ३।४४७
 देवउल [देवकुल] रा० १२
 देवकज्ज [देवकार्य] जी० ३।६१७
 देवकम्म [देवकर्मन्] जी० ३।१२६।६, ८४०
 देवकहकह [देवकहकह] जी० ३।४४७
 देवकहकहग [देवकहकहक] रा० २८१
 देवकिम्बिसिय [देवकिल्बिषिक] ओ० १५५
 देवकिम्बिसियत्त [देवकिल्बिषिकत्त] ओ० १५५
 देवकुमार [देवकुमार] रा० ६६, ७१ से ७५, ७६
 से ८१, ८३, ११२ से ११८
 देवकुमारिया [देवकुमारिका] रा० ८३, ११५ से
 ११८
 देवकुमारी [देवकुमारी] रा० ७० से ७५, ७६ से
 ८१, ११२ से ११४
 देवकुरा [देवकुरु] जी० २।१३; ३।६१६, ६३७
 देवकुरु [देवकुरु] जी० २।३३, ६०, ७०, ७२, ६६,
 १३७, १३८, १४७, १४९; ३।२२८, ७६५
 देवकुल [देवकुल] ओ० ३७. रा० ७५३
 देवगह [देवगति] रा० १०, १२, ५६, २७६
 देवगण [देवगण] रा० ६६८, ७५२, ७८६.
 जी० ३।११२०
 देवगति [देवगति] जी० ३।८६, १७६, १७८, १८०,
 १८२, ४४५
 देवगुत्त [देवगुत्त] ओ० ६६
 देवच्छन्दग [देवच्छन्दक] जी० ३।६०७
 देवच्छन्दय [देवच्छन्दक] रा० २५३, २५८, २६१.
 जी० ३।४१०, ४१५, ४१६, ४५७, ६७५, ६७६,
 ६०७, ६०८
 देवजुइ [देवजुति] रा० ६३, ६५, ११६
 देवजुति [देवजुति] रा० ५६, ७३, ११८, ७६७
 देवज्जुइ [देवजुति] रा० ६६७
 देवज्जुति [देवजुति] रा० १२२
 देवता [देवता] जी० ३।७३७
 देवत्त [देवत्त] ओ० ७२, ७३, ८६ से ९५, ११४,
 ११७, १४०, १५७ से १६०, १६२, १६७.
 रा० ७५२, ७५३. जी० ३।११२८, ११३०

देवदीव [देवद्वीप] जी० ३।७७६, ७७७
 देवदीवग [देवद्वीपक] जी० ३।७७६, ७७७
 देवदुहहग [देवदुहहक] रा० २८१. जी० ३।४४७
 देवदूस [देवदूष्य] रा० २७४, २८५, २८१, ७५६.
 जी० ३।४३६, ४४३, ४५१, ४५७
 देवद्वार [देवद्वार] जी० ३।८८५
 देवद्वीवग [देवद्वीपक] जी० ३।७७६, ७७७
 देवपरिस्ता [देवपरिषद्] ओ० ७१. रा० ६१
 देवभद्र [देवभद्र] जी० ३।६४२, ६५१
 देवमहाभद्र [देवमहाभद्र] जी० ३।६४२, ६५१
 देवमहावर [देवमहावर] जी० ३।६५१
 देवय [देवत] ओ० २, ५२, १३६. रा० ६, १०, ५८,
 २४०, २७६, ६८७, ७०४, ७१६, ७७६. जी०
 ३।४०२, ४४२
 देवया [देवता] ओ० १३६
 देवरमण [देवरमण] रा० ७८, ८०, ८२, ११२
 देवराय [देवराज] जी० ३।६१६ से ६२२, १०३६
 से १०४४
 देवलोग [देवलोक] ओ० ७४।२, १४१. रा० ७६६.
 जी० ३।६३०
 देवल्लोय [देवल्लोक] ओ० ७१, ७२, ७४।२, ८६ से
 ६३. रा० ७५२, ७५३. जी० ३।६३०
 देववर [देववर] जी० ३।६५१
 देवविमाण [देवविमान] रा० १८७
 देवसण्णिवाय [देवसन्निपात] रा० २८१
 देवसन्निवाय [देवसन्निपात] जी० ३।४४७
 देवसमवाय [देवसमवाय] जी० ३।६१७
 देवसमिति [देवसमिति] जी० ३।६१७
 देवसमुदय [देवसमुदय] जी० ३।६१७
 देवसमुहग [देवसमुद्रक] जी० ३।७७८
 देवसयणिज्ज [देवसयणीय] रा० २४५, २४६, २६१,
 ३५३, ४१४, ७६६. जी० ३।४०७, ४०८, ४२३,
 ४३६, ४४३, ५१६, ५२६, ६५०, ६७३, ७५६
 देवसोख [देवसौख्य] ओ० ७४।२
 देवानुप्पिय [देवानुप्रिय] २०, २१, ५२, ५३, ५५,

५६, ५८, ६०, ६२, ११७, ११८, १२०. रा० ६, १०,
 १३, १४, १७, ५८, ६३, ६५, ७२, ७३, २७६, २७८,
 ६५४, ६८१, ६८७ से ६९०, ६९५, ७०४, ७०६,
 ७१३, ७१४, ७१८, ७२०, ७२३, ७५१, ७६५,
 ७६८, ७७४, ७७५, ७७७, ८०२. जी० ३।४४२,
 ४४४, ५५४
 देवानुभाग [देवानुभाग] रा० ६६७
 देवानुभाव [देवानुभाव] रा० ५६, ६३, ६५, ७३,
 ११८, ११९, १२२, ७६७
 देविंद [देवेन्द्र] जी० ३।६१६ से ६२२, १०३६ से
 १०४४, १०५५
 देविङ्गि [देविङ्गि] ओ० ७४।२. रा० ५६, ६३, ६५,
 ७३, ११८, ११९, १२२, ६६७, ७६७
 देवित्त [देवीत्व] जी० ३।११२८ से ११३०
 देवी [देवी] ओ० १५, ५५, ५८, ६२, ७०, ७१, ८१.
 रा० ५, ७, १५ से १७, ४८, ५४ से ५८, १८५,
 १८७, २४०, २७६, २८०, २८२, २८६ से २९१.
 ६५७, ६७२, ६७३, ७५१, ७७६, ७६१ से ७६४,
 ७६६. जी० ३।१६८ से २०६, २१७, २३७,
 २३८, २४३, २४६, २४७, २४८, २५०, २५६, २६७,
 २६८, ३५०, ३५८, ३६०, ४०२, ४४२, ४४६, ४४८,
 ४५५ से ४५७, ५५७, ५६३, ६३७, ६५६, ७६०,
 ७६३, १०२३, १०२५, १०२८, १०३०, १०३२,
 १०३४, १०३६, १०४१, १०४२, १०४४, ११२२,
 ११२६; ६।१, ६, ७, १२; ६।२०६, २१४, २१८,
 २२०
 देवुक्कलिया [देवोत्कलिका] रा० २८१
 देवुज्जोय [देवोद्धत] रा० २८१. जी० ३।४४७
 देवोद [देवोद] जी० ३।७७६, ७७७, ६४३, ६४४
 देवोदग [देवोदक] जी० ३।७७८, ७७९
 देस [देश] ओ० १६, १६५।१०. रा० १७४, १८०,
 १८२, १८४, १८८, १९२ से १९७, ७६५, ७७४,
 ८०४. जी० १।४, ५; ३।२६६ से २६६, २८६,
 २९२, २९४, २९६, ५७६ से ५६६, ६४०, ६५६,
 ६६४, ७०२, ७२६, ८०८, ८२६, ८५७, ८६३,
 ८६६, ८७५, ८८१

देसंतर [देशान्तर] ओ० ११६, ११७

देसकहा [देशकथा] ओ० १०४, १२७

देसकालण्या [देशकालज्ञता] ओ० ४०

देसभाग [देशभाग] रा० ३२, ३६, ३६, ६६, १६४,

२१८, २६१, २८१, ३००, ३२१, ३३३. जी०

३।२७५, ३६५, ३७२, ४४७, ४६०, ४६५, ५५४,

५६६, ७५६, ७६२, ७८२, ८८२, ९१३

देसभाय [देशभाग] ओ० २, ६, ८, १६, ५५, १६२.

रा० ३, ३५, १२५, १८६, २०४, २१७, २२७, २३८,

२५२, २६३, २६५, ३२६, ३३८, ३५६, ४१५,

४७६, ५३६, ५६६, ७५५, ७७२. जी० ३।२६३,

३१०, ३१३, ३३८, ३५६, ३५६, ३६१, ३६४,

३६८, ३६६, ३७७, ३८६, ४००, ४१३, ४२२,

४२७, ४५८, ४६०, ४८६, ४८१, ४८८, ५०३,

५२१, ५२७, ५३५, ५४२, ५४६, ६३४, ६३६,

६४२, ६४६, ६४६, ६६३, ६६८, ६७१ से ६७३,

६७६, ६८५, ६८१, ७३७, ७५८, ८३१, ८८४,

८६०, ८६१, ८०६, ८११, ८१८, १०२३, १०३६

देसावयासिय [देशावकाशिक] ओ० ७७

देसिय [देशित] जी० १।१

देसी [देशी] ओ० ४६, ७०. रा० ८०६, ८१०

देसीभासा [देशीभाषा] ओ० १४८, १४६

देसुण [देशोन] रा० १२८, २०१. जी० २।२६ से

३४, ३७, ५४ से ६१, ६५, ८४, ८८, ११४, ११६,

१२३, १२४, १३२; ३।२४७, २५०, २५६, २७३,

२६८, ३६२, ३६६ से ३७१, ५७०, ६२६, ६४६,

६७३, ६७४, ७०६, ७३२, ८८२; ६।२३, २६, ३३,

४१, ६६, ७३, ७८, १४२, १४४, १४६, १६२, १६४,

१६५, १७८, २००, २०२ से २०४

देसोण [देशान] जी० ३।३५३

देह [देह] रा० ७६०, ७६१. जी० ३।५६६

देहभारि [देहधारिन्] ओ० १६

दो [द्वि] ओ० १७०

दोकिरिय [द्विक्रिय] ओ० १६०

दोच्च [द्वितीय] ओ० ११७. रा० १०, १२, १८,

६५, २७६, ७०२, ७०३. जी० ३।१२४, ४४५

दोच्चा [द्वितीया] जी० १।१२४, २।१३५, १३८,

१४८, १४६; ३।२, ४, ६६, ६७, ७३, ७४, ८८, ९१,

१२५, १६१, ११११

दोणमुह [द्वोणमुख] ओ० ६८, ८६ से ९३, ९५,

९६, १५५ १५८ से १६१, १६३, १६८.

रा० ६६७

दोभग [दोभगिय] जी० ३।५६७

दोमासिय [द्वैमासिक] ओ० ३२

दोमासिया [द्वैमासिकी] ओ० २४

दोर [द्वारक] रा० २७०. जी० ३।४३५

दोवारिय [दोवारिक] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६,

७६२, ७६४

दोस [दोष] ओ० ३७, ७१, ११७, १६१, १६३.

रा० १७३, ७६६. जी० ३.२८५, ५६८

दोसिणाभा [दो ज्योत्स्नाभा] जी० ३।१०२३

घ

घंत [धमात] रा० २६, ७५७. जी० ३।२८२

घंतपुध्व [धमातपूर्व] रा० ७५७, ७६३

घण [घन] ओ० ५, १४, २३, १४१. रा० ६७१,

६६५, ७६६

घणक्खय [घनक्षय] जी० ३।६२८

घणिय [दे०] ओ० ४६. रा० ७७४.

जी० ३।५८६

घणु [धनुष्] ओ० १, ६४, १७०, १८७, १६५।५.

रा० १८८, १८९, २४६, ६६४, ७५६.

जी० १।६४, ११२, ११६, १२५; ३।८२, ८२,

२१८, २६०, २६३, ३५३, ५६२, ५६८, ६४७,

६४६, ६७३ से ६७५, ६८३, ७०६, ७८८,

१०१४, १०२२

घणुग्गह [धनुर्ग्रह] जी० ३।६२८

घणुपट्ट [धनुष्पट्ट] जी० ३।५५७, ६३१

घणुवेद [धनुर्वेद] ओ० १४६

घणुवेय [धनुर्वेद] रा० ८०६

घण्ण [धान्य] ओ० २३

घन्न [धन्य] ओ० १६४. रा० ६६५

घमावियपुव्व [उमापितपूर्व] रा० ७५७, ७६३

घम्म [धर्म] ओ० १६, २१, ४०, ४६, ५४, ६६, ७१, ७२, ७४ से ७७, ७९ से ८१, १४२, १४४, १६१, १६३. रा० ८, १६, ६१, ६२, २६२, ६६३ से ६६५, ७००, ७१७ से ७२०, ७३२, ७५२, ७७५, ७७६, ७८०, ८००, ८०२. जी० ३, ४५०

घम्मकहा [धर्मकथा] ओ० ४२, ४३. रा० ७७५

घम्म [ज्ञान] [धर्म्यध्यान] ओ० ४३

घम्मक्खाइ [धर्महियायिन्] ओ० १६१, १६३.

रा० ७५२

घम्मचरण [धर्मचरण] जी० २, २६ से २६, ५४

से ५७, ६५, ८४, ८८, ८९, ११४, १२३, १३२

घम्मचित्तग [धर्मचित्तक] ओ० ६३

घम्मज्झय [धर्मज्झज] ओ० १६

घम्मणायग [धर्मनायक] रा० २६२. जी० ३१४५७

घम्मस्थिकाय [धर्मास्तिकाय] रा० ७७१. जी० १४

घम्मदय [धर्मदय] रा० ८, २६२. जी० ३१४५७

घम्मदेशय [धर्मदेशक] रा० ८, २६२. जी० ३१४५७

घम्मनायग [धर्मनायक] रा० ८

घम्मपलउज्जण [धर्मप्ररञ्जन] ओ० १६१, १६३.

रा० ७५२

घम्मपलोइ [धर्मप्रलोकिन्] रा० ७५२

घम्मप्पलोइ [धर्मप्रलोकिन्] ओ० १६१, १६३

घम्मसमुदायार [धर्मसमुदाचार] ओ० १६१, १६३

घम्मसारहि [धर्मसारयिन्] रा० ८, २६२. जी० ३१४५७

घम्मसीलसमुयाचार [धर्मसीलसमुदाचार] रा० ७५२

घम्माणुय [धर्मानुग] ओ० १६१, १६३. रा० ७५२

घम्मारिय [धर्माचार्य] ओ० २१, ५४, ११७. रा० ७१४, ७७६, ७९६

घम्मिडु [धर्मिष्ठ] ओ० १६१, १६३. रा० ७५२

घम्मिय [धार्मिक] ओ० ५२, ५७, १६१, १६३. रा०

२७०, २८८, ६६७, ६८७, ७५२, ७५३. जी०

३१४३५, ४५४

घम्मोवदेशक [धर्मोपदेशक] ओ० २१, ५४, ११७.

रा० ७१४, ७९६

घर [घृ] -- घरंति जी० ३१७३३

घर [घर] ओ० ५, ८, १६, २१, ४७, ४९, ५४, ७२.

रा० ८, २२, १४५, २६२, ६६४, ७७१. जी०

३१२६८, २७४, ३८७, ४५७, ५६२, ५८४, ६७२

७०२, ८०८, ८२६

घरण [घरण] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३१२४४

से २४७, २५०, ४४८

घरणितल [घरणितल] ओ० २१, ५४. रा० ८,

५६, २६२. जी० ३१४५७

घरणियल [घरणितल] जी० ३१४५७, ८८२

घरिज्जमाण [ध्रियमाण] ओ० ६३, ६५. रा०

६६२, ७००, ७१६

घरिसणा [धर्पणा] ओ० ४६

घरेज्जमाण [ध्रियमाण] रा० ६८३

घव [घव] ओ० ६, १०. जी० ११७२; ३१३८८

५८३

घवल [घवल] ओ० १६, ४६, ४७, ६३, ६४. रा०

२५५, २५६, २८५. जी० ३१३७२, ४१६, ४१७,

४४१, ५६६, ५६७

घवलहर [घवलगृह] जी० ३१५६४

घाई [धात्री] रा० ८०४

घाउरत्त [धातुरत्त] ओ० १०७, ११७, १३०

घातइसंड [धातकीपण्ड] जी० ३१७११

घायइहक्ख [धातकीहक्ख] जी० ३१८०८

घायइवण [धातकीवन] जी० ३१८०८

घायइसंड [धातकीपण्ड] जी० ३१७०८, ७१५

से ७२०, ७६८, ७७०, ७७१, ७९६ से ८००,

८०२ से ८०४, ८०६, ८०८, ८०९, ८३८, ८३९, ८४०

घायई [धातकी] जी० ३१७७५, ८०८

घायईसंड [धातकीपण्ड] जी० ३१८०९, ८३८, ८४०

घायतिसंड [धातकीपण्ड] जी० ३१७६६

धारग [धारक] ओ० ६७

धारणा [धारणा] रा० ७४०, ७४१

धारि [धारिन्] ओ० ४७, ५१, ७२, जी० ३१५६७,
१०१५

धारिणी [धारिणी] ओ० १५, रा० ५

धारित्तए [धारयितुम्] ओ० १०५

धारेमाण [धारयत्] रा० २५५, जी० ३१४१६

धिद्व [धृति] ओ० ४६ जी० ३१११८

धिति [धृति] जी० ३१११८, १११६

धीर [धीर] ओ० ४६

धुरा [धूर्] ओ० ६४

धुराग [धूक्] रा० १७३, ६८१, जी० ३१२८५

ध्रुव [ध्रुव] रा० २००, जी० ३१५६, २७२, ३५०,
७६०

धूमकेतु [धूमकेतु] ओ० ५०

धूमपभा [धूमप्रभा] जी० ३१४१, ४३, ४४, १०१,
११०, ११४

धूमवट्टि [धूपवर्ति] जी० ३१४५७

धूमिया [धूमिका] जी० ३१६२६

धूया [दुहितृ] जी० ३१६११

धूलि [धूलि] जी० ३१६२३

धूप [धूप] ओ० २, ५५, रा० ६, १२, ३२, १३२,
२३६, २५८, २७६, २८१, २८०, २८२ से २८७,
३००, ३०५, ३१२, ३५१, ३५५, ३५६, जी०
३१३०२, ३७२, ३८८, ४१६, ४४५, ४४८, ४५६
से ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५५४,
६७६, ६८८

धूपघडिया [धूपघटिका] रा० २३६, जी० ३१३६८,
४१२, ६०३

धूपघडी [धूपघटी] रा० १३२, ३१३०२

धूपघट्टी [धूपवर्ति] रा० २६२

धौत [धौत] जी० ३, ५६६

धोय [धौत] ओ० १६, ४७, रा० २६, जी०
३१२८२, ५६०

न

न [न] ओ० ४७, रा० २००, जी० ३१२७२

नई [नदी] ओ० ६६, जी० ३१७७५

नईमह [नदीमह] रा० ६८८

नउल [नकुल] रा० ७७

नंगलिय [लाङ्गलिक] ओ० ६८

नंदणवण [नन्दनवन] रा० १७३, ६७०, जी०
३१२८५, ५६७

नंदा [नन्दक] रा० २८२, जी० ३१४४८

नंदा [नन्दा] रा० २३३, २७३, २८८, ३१२, ३५०,
६५६, जी० ३१५५६

नंदाचंथापविभत्ति [नन्दाचम्पाप्रविभक्ति] रा० ६३

नंदापविभत्ति [नन्दाप्रविभक्ति] रा० ६३

नंदिघोष [नन्दिघोष] रा० ७७, १७३, ६८१, जी०
३१५६८

नंदिमुयंग [नन्दिमृदङ्ग] जी० ३१७८

नंदिवावत्त [नन्द्यावर्त] ओ० १२, रा० २६१

नंदिखल [नन्दिखल] जी० ३१३८८ से ३६०

नंदिस्सर [नन्दिस्वर] जी० ३१५६८

नंदी [नन्दी] रा० ७४१, ७४३

नंदीमुद्ग [नन्दीमृदङ्ग] रा० ७७

नंदीमुह [नन्दीमुख] जी० ३१२७५

नंदीस्वरवर [नन्दीस्वरवर] रा० ५६

नक्कछिण्णाग [नक्कछिन्नक] ओ० ६०

नक्ख [नख] २५४

नक्खत्त [नक्ख] रा० १२४, जी० २१८, ३१७०३,
७२२, ८३०, ८३८, ५, ८, ११, १३, २२, ३०,
१००७

नक्खत्तविमाण [नक्खविमान] जी० २१४३;
३११००६

नखवेदणा [नखवेदना] जी० ३१६२८

नग [नग] जी० ३१५६६

नगर [नगर] ओ० १८, रा० ६६७, ७५४, ७५६,
७६२, ७६४, ७७४, जी० ३१५६६

नगरगुण [नगरगुण] ओ० १६५१६

नगरदाह [नगरदाह] जी० ३१६२६
 नगरमाण [नगरमान] ओ० १४६
 नगरी [नगरी] ओ० १६. रा० ६६६, ६७०, ६८०,
 ६८१, ६८३, ६८५, ६८७, ६८८, ६८९, ७००,
 ७०२ से ७०४, ७०६, ७०८, ७१० से ७१२,
 ७२६, ७५२, ७७५, ७७६, ७८०
 नग्नह [नग्नजित्] ओ० ६६
 नग्नभाष [नग्नभाष] ओ० १५४, १६५, १६६
 √नच्च [नृत्]—नच्चिज्जह. रा० ७८३
 नच्चंत [नृत्यत्] ओ० ४६
 नच्चणसील [नृत्यनशील] ओ० ६५
 नट्ट [नाट्य] ओ० ६८. रा० ७, ७८, ८०६. जी०
 ३१२८५, ३५०
 नट्टविधि [नाट्यविधि] रा० ७६
 नट्टविहि [नाट्यविधि] रा० ६३, ६५, ११८, २८१
 नट्टसज्ज [नाट्यसज्ज] रा० ६६, ७०
 नट्ट [नष्ट] रा० २८१
 नड [नट] ओ० १, २
 नडपेच्छा [नटप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५
 नत्तुय [नप्तु] रा० ७५०, ७५२
 √नद [नद्]—नदंति. जी० ३१४४७
 नदी [नदी] जी० ३१८४१
 नपुंसग [नपुंसक] जी० २१६६ से ११६, १२०,
 १२१, १२३, १२५ से १२६, १३२ से १३८,
 १४० से १५०
 नपुंसगलिगसिद्ध [नपुंसकलिङ्गसिद्ध] जी० ११८
 नपुंसगवेद [नपुंसकवेद] जी० २१३६, १४०;
 ६११२४, १२८
 नपुंसगवेदग [नपुंसकवेदक] जी० ६११३०
 नपुंसगवेय [नपुंसकवेद] जी० ११६६, १३६
 नपुंसगवेयग [नपुंसकवेदक] जी० ६११२१
 नपुंसय [नपुंसक] जी० २१११७ से ११६, १२२
 से १२४
 √नमंस [नमस्य]—नमंसह. रा० ७१४—
 नमंसति. रा० १०—नमंसति. रा० १२०

—नमंसह. रा० ७३—नमंसिज्जाह.
 रा० ७०६—नमंसिस्सति. रा० ७०४
 नमंसण [नमस्यण] रा० ६८७
 नमंसणिज्ज [नमस्यणीय] ओ० २
 नमंसिस्तए [नमस्यितुम्] रा० ६
 नमंसित्ता [नमस्यित्वा] ओ० ६६. रा० १०.
 जी० ३१४७१
 नमिय [नमित] रा० २२८. जी० ३१६७२
 नमो [नमस्] रा० ८
 नय [नय] ओ० २५. रा० ६८६
 √नय [नद्]—नयंति. रा० २८१
 नयण [नयन] ओ० १, १५, ६६. रा० २२८.
 जी० ३१५६६
 नयरी [नगरी] ओ० १, १६, ६६. रा० १, २, ८,
 ६, १५, ५६, ६७७ से ६७९, ६८३, ६८६ से
 ६८९, ७५०, ७५२
 नर [नर] ओ० ५, ८, ६४, ६६. रा० १७, १८, २०,
 ३२, ३७, १४१, १७३, १६२. जी० ३१२६६,
 २७४, ३००, ५६७
 नर (कंता) [नरकान्ता] रा० २७६
 नरक [नरक] जी० ३१८६
 नरकंठ [नरकंठ] रा० १५५, २५८. जी० ३१३२८
 नरकंठग [नरकंठक] जी० ३१४१६
 नरकंता [नरकान्ता] जी० ३१४४५
 नरग [नरक] ओ० ७१. जी० ३१८६, १२७
 नरघवर [नरघवर] रा० ६७१
 नरय [नरक] रा० ७५०, ७५१. जी० ३१८३,
 ८७, ११६, १२६१२
 नरयपाल [नरकपाल] रा० ७५१
 नरयावास [नरकावास] जी० ३१७७, १२७
 नरवइ [नरपति] ओ० १
 नरवसभ [नरवृषभ] जी० ३११२६११
 नरिद [नरेन्द्र] ओ० २१, ५४
 नलवण [नलवन] ओ० २६
 नलिण [नलिन] ओ० १२, १५०. रा० १७४,
 ८११. जी० ३१५६५

नलिना [नलिना] जी० ३१६८६
 नख [नख] ओ० ६३. रा० ८०१. जी० २१२०
 नव [नव] जी० ३१३११
 नवंग [नवाङ्ग] ओ० १४८, १४९
 नवनिधिपति [नवनिधिपति] जी० ३१५८९
 नवम [नवम] जी० ३१३५६
 नवय [नवक] रा० ७५९
 नवरं [दे०] जी० ११७७
 नवविह [नवविध] जी० १११०; ६१२५५
 नह [नख] जी० ३१३२३
 नाइय [नादित] रा० ५५, २८०, ६५७.
 जी० ३११८, ११९, ४४८, ८५७, ८६३
 नाउं [ज्ञातुम्] जी० ३१८३८, २६
 नाग [नाग] ओ० १९, ६८. रा० १६२, २८२.
 जी० ३१३३२, ४४८, ७३३, ७८०, ९५०
 नागकुमार [नागकुमार] जी० २१३७; ३१२४४,
 २४८
 नागकुमारराय [नागकुमारराज] जी० ३१२४४
 से २४७, २४९, २५०, ६५७, ६५९, ६६०
 नागकुमारिन्द्र [नागकुमारिन्द्र] जी० ३१२४४ से
 २४७, २४९, २५०, ६५७, ६५९, ६६०
 नागदंत [नागदन्त] रा० १३२, २४०
 नागदंतग [नागदन्तक] रा० १४०.
 जी० ३१३६८
 नागदंतय [नागदन्तक] रा० १५३, २३६.
 जी० ३१३६७, ३६८, ४०३
 नागपडिमा [नागप्रतिमा] रा० २५७.
 जी० ३१४१८
 नागमंडलप्रविभक्ति [नागमण्डलप्रविभक्ति]
 रा० ९०
 नागमह [नागमह] रा० ६८८
 नागरप्रविभक्ति [नागरप्रविभक्ति] रा० ९२
 नागराय [नागराज] जी० ३१७४८, ७५०
 नागलया [नागलता] रा० १४५. जी० ३१२६८
 नागलयाप्रविभक्ति [नागलताप्रविभक्ति] रा० १०१
 नाटय [नाटक] रा० ७१०, ७७४

नाण [ज्ञान] ओ० १९, २६. रा० ८, ६८६, ७३८,
 ७६८. जी० ११४, १०१; ३११२७, १६०;
 ६१६६
 नाणस [नानात्व] रा० ७६२, ७६३
 नाणसंपण [ज्ञानसम्पन्न] रा० ६८६
 नाणा [नाना] रा० ६९, ७०, १३०, १३२, १६०,
 १९०, २२८, २५६, २७०, ७६८. जी० १११३६;
 ३१२६४, २८८, ३११, ३८७, ४०७, ४१७, ६४३,
 ६७२
 नाणाविह [नानाविध] जी० ११७२; ३१२७७,
 ३७२
 नाणि [ज्ञानिन्] जी० २१३०; ३११०४
 नाणोवलम्भ [ज्ञानोपलम्भ] रा० ७६८
 नातव्य [ज्ञातव्य] रा० ३१६८८
 नादित [नादित] जी० ३१४४६
 नाणा [नाना] जी० ३१३३३
 नाभि [नाभि] रा० २५४
 नाम [नामन्] ओ० १, २. रा० १, २, ९, ५९, १२४,
 २४९, २८१, ६६८, ६७२, ६७३, ६७६ से ६७९,
 ६८६, ६८७, ६८९, ७०३, ७०६, ७१३, ७३२,
 ७६९. जी० ३१३, ४, १२८, ३००, ४१०, ४४७,
 ५९३, ५९४, ६३२, ६३८, ६३९, ६६०, ६६६,
 ६६८, ७११, ७५६, ७६४, ८१४, ८३१, ८३८, ३,
 ८५१, ९३३, १०५६
 नामग [नामक] जी० ३१२४
 नामाधिज [नामधेय] रा० ८०३
 नामधेज [नामधेय] जी० ३१६९९, ९७२
 नामधेय [नामधेय] रा० ८, ७१४, ७९६
 नायव्य [ज्ञातव्य] जी० ३११२६, ३
 नायाधम्मकहाधर [जाताधर्मकथाधर] ओ० ४५
 नारय [नारद] ओ० ९६
 नाराय [नाराय] जी० ११११९
 नारायग [नाराचाय] जी० ३१८५
 नारि [नारी] ओ० ६९
 नारिकंता [नारीकान्ता] रा० २७९.
 जी० ३१४४५

नारी [नारी] रा० १७३
 नाल [नाल] जी० ३१६४३
 नालिएर [नालिकेर] जी० १७२
 नाली [नाडी] जी० ३७८
 नावा [नौ] जी० ३७६३
 नासा [नासा] रा० २८५. जी० ३१४५१
 नासिगा [नासिका] रा० २५४
 निडण [निपुण] ओ० ६३. रा० ६६, ७०, ६७२,
 ७५६ से ७६१, ८०४. जी० ३१११८
 निदणा [निन्दना] ओ० १५४, १६५, १६६.
 रा० ८१६
 निब [निम्न] जी० १७१
 निकर [निकर] ओ० १३
 निकुरंब [निकुरम्ब] रा० ७०३. जी० ३१२७३
 निकुरुंब [निकुरुम्ब] ओ० १६
 निक्ककळ [निक्कळ] ओ० १२, १६४. रा० २१,
 २३, ३२, ३४, ३६, १२४, १४५, १५७.
 जी० ३१२६६
 निक्कोह [निक्कोह] ओ० १६८
 निक्कमंत [निक्कमत्] जी० ३१८३८१४
 निक्कमण [निक्कमण] जी० ३१५६४, ६१७
 निगम [निगम] ओ० १८, ६८, ८६ से ६३, ६५,
 ६६, १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८.
 रा० ६६७, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४
 √निगिह [नि-ग्रह]—निगिह. रा० ६८३
 निगांय [निगंय] ओ० २४, ७६ से ८१, १२०,
 १६२, १६४. रा० ६३, ६५, ७३, ७४, ११८,
 ६६५, ६६८, ७३८, ७५२, ७८६
 √निगच्छ [निर्+गम्]—निगच्छ. ओ० ६७.
 रा० २७७—निगच्छति. ओ० ७०. रा० ७४
 —निगच्छति. रा० २८३
 निगच्छमाण [निगच्छत्] ओ० ६८
 निगच्छिता [निगच्छिता] ओ० ६६. रा० २८३
 निगमण [निगमण] जी० ३१८४१
 निगमय [निगमय] रा० ६, ७५४

निगह [निग्रह] ओ० ३७. रा० ६८६
 निगुण [निर्गुण] रा० ६७१
 निगोस [निर्गोष] जी० ३१४४८, ५५७
 निघंटु [निघण्टु] ओ० ६७
 निघस [निकष] रा० २८. जी० ३१२८१
 निचय [निचय] रा० ३१
 निचिय [निचित] ओ० १६. रा० १२, ७५५, ७५८,
 ७५६, ७७२. जी० ३१११८, ५६६
 निच्च [नित्य] ओ० ४६. रा० १५. जी० ३१३६०,
 ५८४, ८३८ १७
 निच्छय [निश्चय] ओ० २५. रा० ६७५, ६८६
 निच्छोडणा [निश्छोटना] रा० ७७६
 निच्छोडित्तए [निश्छोटयितुम्] रा० ७७६
 निजुड [निर्युड] ओ० १४६. जी० ८०६
 निज्जरा [निर्जरा] ओ० १२०, १६२, १६६.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६
 निज्जिय [निर्जित] ओ० १४. रा० ६७१
 निज्जीव [निर्जीव] ओ० १४६. रा० ८०६
 निज्जुत्त [निर्युक्त] जी० ३१२८५
 निट्ठिय [निष्ठित] ओ० १८३, १८४. रा० ७७४
 निट्ठुर [निष्ठुर] रा० ७६५. जी० ३१११०
 निडाल [ललाट] जी० ३१३०३, ५६६
 √निद्वा [नि+द्रा]—निद्वाएज्ज. जी० ३१११६
 निद्ध [स्तिथ] जी० ११५, ५०; ३१२७५, ५६६
 निद्धंत [निध्मांत] जी० ३१५६०, ५६६
 निद्धूम [निर्धूम] जी० ३१५६०
 निद्धूय [निद्धृत] ओ० ५, ८. जी० ३१२७४
 निप्पंक [निष्पङ्क] ओ० १२. रा० २१, २३, ३२,
 ३४, ३६, १२४, १४५, १५७. जी० ३१२६६
 निप्पकंप [निष्पकम्प] ओ० ४६
 निप्पचक्खण [निष्प्रत्याख्यान] रा० ६७१
 निप्पन्न [निष्पन्न] जी० ३१६०२
 निवद्ध [निवद्ध] रा० ७७२
 निवमंछणा [निर्वमंछना] रा० ७७६
 निवमंछितए [निर्वमंछितुम्] रा० ७७६
 निम [निम] रा० ५१

निमज्जग [निमज्जक] ओ० ६४
 निमित्त [निमित्त] जी० ३१२६।६
 निमित्तिय [निमित्तिय] जी० ३११६
 निमीलिय [निमीलित] जी० ३१२६।८
 निम्मल [निर्मल] ओ० १२, १६, ४७. रा० २१,
 २३, ३२, ३४, ३६, १२४, १३०, १४५, १४६, १५७.
 जी० ३१३२२, ५६६, ५६७
 निम्माण [निर्माण] ओ० १६८
 निम्माय [निर्माय] ओ० १६८
 निम्मिय [निर्मित] रा० १७३. जी० ३१२८५
 निम्मेर [निर्मेर] रा० ६७१
 नियइपव्वय [नियतिपव्वत] रा० १८१
 नियइपव्वयग [नियतिपव्वतक] रा० १८०
 √नियंस [नि + वस्] —नियंसेइ. रा० २६१
 —नियंसेति. रा० २८५
 नियंसण [निवसन] रा० ६६
 नियंसेत्ता [निवस्य] रा० २८५
 नियग [निजक] रा० १२०. ७७४
 नियडि [निकुटि] रा० ६७१
 नियम [नियम] ओ० २५. रा० ६८६, ७२३.
 जी० १-३०, ६५, ८७, ६६, ११६, १३३, १३६;
 ३१०४; १२६।३; ८३८।१४, ६६६, ११०८
 नियय [नियत] जी० ३१७७२, ७६०
 निरंगण [निरङ्गण] ओ० २७. रा० ८१३
 निरंतर [निरन्तर] रा० १२, ७५५, ७७२
 निरंतरिय [निरन्तरित] रा० १३०
 निरय [निरय] जी० ३११२६, १२७।२
 निरयभव [निरयभव] जी० ३११६६, १२६।५
 निरयवेयणिज्ज [निरयवेदनीय] रा० ७५१
 निरयाउय [निरयायुष्क] रा० ७५१
 निरयावास [निरयावास] जी० ३११२, ७७, १२७
 निरवसेस [निरवशेष] जी० ३११८४, ४१२, ४२६,
 ७५०
 निरालंबण [निरालम्बन] ओ० २७. रा० ८१३
 निरालय [निरालय] ओ० २७. रा० ८१३
 निरावरण [निरावरण] ओ० १५३, १६५, १६६

√निरंभ [नि + रुध्] —निरंभइ ओ० १८२
 निरंभित्ता [निरुध्य] ओ० १८२
 निरुत्त [निरुत्त] ओ० ६७
 निरुवलेव [निरुपलेप] ओ० २७. रा० ८१३.
 जी० ३१५६८
 निरुवसग [निरुपसर्ग] जी० ३१४८८
 निरुवह्य [निरुपहृत] ओ० १६. जी० ३१५६६
 निरेयत्त [निरेजत्त] ओ० १८३, १८४
 निरोदर [निरोदर] जी० ३१५६७
 निरोय [निरोग] जी० ३१२७५
 निरोयय [निरोगक] ओ० ६
 निरोह [निरोध] ओ० ३७
 निलाड [ललाट] रा० ७०
 निल्लेव [निर्लेप] जी० ३११६६, १६७
 निल्लेवण [निर्लेपन] जी० ३११६६
 निल्लोह [निर्लोभ] ओ० १६८
 √निवाड [नि + पातय्] —निवाडेइ रा० २६२
 निवाडित्ता [निपात्य] रा० २६२
 निवाय [निपात] जी० ३१८६
 √निवेव [नि + वेदय्] —निवेदिज्जासि. ओ० २१
 √निवेय [नि + वेदय्] —निवेण्मो. रा० ७१३
 √निवेस [नि + वेशय्] —निवेसेइ. ओ० २१.
 रा० ८
 निवेसेत्ता [निवेशय] —ओ० २१. रा० ८
 निव्वण [निर्व्रण] जी० ३१५६६
 √निव्वत्त [निरु + वर्तय्] —निव्वत्तेज्जासि
 रा० ७५१
 निव्वय [निर्व्रत] रा० ६७१
 निव्वयाघाडम [निव्वयाघातिन्, निव्वयाघातिम]
 ओ० ३२. जी० ३११०२२
 निव्वण [निर्वण] ओ० १६५।१६
 निव्विडय [निर्विकृतिक] ओ० ३५
 निव्विण्ण [निर्विण्ण] रा० ७६५
 निव्विण्णाण [निर्विज्ञान] रा० ७३२, ७३७, ७६५
 निव्वित्तिगिच्छ [निर्विचिकित्स] ओ० १२०, १६२
 निव्विसय [निर्विषय] रा० ७६७

निव्वुडकर [निर्वृत्तिकर] रा० १७३.

जी० ३३०५, ६७२

निव्वुत्तिकर [निर्वृत्तिकर] रा० ३०, १३५

निसण्ण [निषण्ण] ओ० ११७. रा० ७६६.

जी० ३१८६६

निसम्भ [निषण्ण] रा० २२५

निसम्भ [निषण्ण] रा० १३

निसामित्तए [निशमित्तुम्] रा० ७७५

निसिय [निशित] रा० २४६

√निसिरि [नि + सृज्] --- निसिरन्ति. रा० १०---

निसिरति. रा० ६५---निसिरेइ. रा० ७६४

निसिरित्तए [निसिर्त्तुम्] रा० ७५८

निसीइत्ता [निषद्य] ओ० २१

निसीदण [निषीदन] ओ० ४०

√निसीय [नि + षद्] --- निसीयइ. ओ० २१---

निसीयन्ति. रा० ४८---निसीयइ. रा० ७५३

निसीहिवा [निषीधिका, नैषेधिकी] रा० १३१,
१३५

निस्ससंकिण [निशङ्कित] ओ० ५२. रा० ६८७,
६८६

निस्सास [निःश्वास] रा० ७६६, ८१६

निस्सील [निःशील] रा० ६७१

निस्सेयस [निःश्रेयस] ओ० ५२. रा० २७६, ६८७

निहट्ठु [निहृत्य] रा० ८

निहय [निहत] ओ० १४. रा० ६७१

नीरय [नीरजम्] ओ० १२, १८३, १८४

नील [नील] ओ० ४, १२. रा० २२, १२८, १७०,
६६४, ७०३. जी० १५, ५०; ३१२, ४५,
२७३, २६०, १०७५, १०७६

नीलच्छाय [नीलच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
१७३. जी० ३१२७३

नीललेस [नीललेश्य] जी० ६१६३

नीललेसा [नीललेश्या] जी० ३१६६, १००

नीललेस्स [नीललेश्य] जी० ६१८५, १६६

नीललेस्सा [नीललेश्या] जी० ११२१

नीलवन्त [नीलवत्] जी० ३४४५, ६३२, ६५७, ६५६
६६८, ७६५

नीलवन्तइह [नीलवद्ब्रह्म] जी० ३१६३६, ६४०, ६४८
६५६ से ६६१, ६६६

नीलवन्ता [नीलवती] जी० ३१६५६

नीलुप्पस [नीलोत्पल] ओ० १३. रा० २६

नीलोभास [नीलावभास] ओ० ४. रा० १७०,
७०३. जी० ३१२७३

नीव [नीप] जी० ३१३८८

नीसास [निःश्वाम] रा० २८५, ७७२.

जी० ३१५६८

नीहार [नीहार] रा० ७७२

नूणं [नूनम्] जी० ३१६८२

नेम [नेम] रा० १७५, १६०. जी० ३१२६४, २८७,
३००

नेयव्व [नेतव्य] जी० २१५०; ३१३०६

नेरइय [नेरयिक] रा० ७५१. जी० १५१, ५४,
६१, ८२, ८७, ६६, १०१, ११६, १२१, १२३,
१२८, १३६; २१६६, १००, १०८, १२७, १३४,
१३५, १३६, १४८, १४६; ३११, २, ७७, ८८, ६३,
६५, ६६, ६८, १०३, १०६ से ११२, ११८, ११६,
१२१ से १२३, १२८, १२६, १४, ६, ७, ८, १५५, १५१
१६२; ६११, ७, १२; ७११ से ३, १६, २२;
६१२१०, २१३, २२०

नेरइयत्त [नेरयिकत्व] जी० ३१२७

नेल [नैल] ओ० १६

नेसज्जिय [नैषयिक] ओ० ३६

नेहाणुराग [स्नेहानुराग] जी० ३१६१३

नो [नो] रा० ६२. जी० ११२४

नोअपज्जत्तग [नोअपर्याप्तक] जी० ६१८८, ६४

नोअपरित्त [नोअपरीत] जी० ६१७५, ८६, ८७

नोअभवसिद्धिय [नोअभवसिद्धिक] जी० ६११०६

नोअसण्णि [नोअसंज्ञिन्] जी० ११३३; ६११०१,
१०४, १०८

नोइंदिय [नोइन्द्रिय] जी० ११३३

नोपज्जत्त [नोपर्याप्त] जी० ६१६१

नोपज्जत्तग [नोपर्याप्तक] जी० ६।८८, ६४
 नोपरित्त [नोपरीत] जी० ६।७५
 नोबायर [नोबादर] जी० ६।६५, ६८ से १००
 नोभवसिद्धिय [नोभवसिद्धिक] जी० ६।१०६
 नोसण्णा [नोसंज्ञा] जी० १।१३२
 नोसण्णि [नोसंज्ञिन्] जी० १।८६, १३३; ६।१०१,
 १०४, १०८
 नोमुहुम [नोमुक्षम] जी० ६।६५, ६८ से १००

(प)

पइट्ठा [प्रतिष्ठा] ओ० १६, २१, ५४
 पइट्ठाण [प्रतिष्ठान] ओ० १६८, रा० १३०,
 १३१, १४७, १४८, १६०, २८०, जी० ३ २६४,
 ३०१, ३२१
 पइट्ठिय [प्रतिष्ठित] ओ० १६५।१, २,
 जी० ३।१०५७ से १०६४
 पइण्णा [प्रतिज्ञा] ओ० १४२, १४४, रा० ७४८ से
 ७५०, ७५२, ७५४, ७५६, ७५८, ७६०, ७६२,
 ७६४, ७७३, ८००, ८०२
 पइभय [प्रतिभय] ओ० ४६
 पइरक्खिया [पतिरक्षिता] ओ० ६२
 पइरक्क [दे०] जी० ३।५६४
 पइसेज्जा [पतिषाध्या] ओ० ६२
 पईव [प्रदीप] रा० ७७२
 पजंज [प्र+युज्]—पजंजइ. रा० ६७१.
 —पजंजति ओ० ६८, रा० २८२, जी० ३।४४८
 पजंजमाण [प्रयुज्जान] ओ० ६४
 पजंजियव्व [प्रयोक्तव्य] रा० ७७६
 पजहु [प्रकोष्ठ] ओ० १६, जी० ३।५६६
 पजत [प्रयुत] जी० ३।८४१
 पजम [पद्य] ओ० १२, १६, १५०, रा० २३, १३१,
 १३८, १४७, १४८, १६७, २७६, २८०, २८८,
 ८११, जी० ३।२५६, २६६, २६१, ३०१, ४४६,
 ४५४, ५६७, ५६८, ६४२, ६४३, ६५२ से ६५४,
 ६५७, ६५८, ८२६, ८४१, ८३७
 पजमगंध [पद्यगन्ध] जी० ३।६३१

पजमजाल [पद्यजाल] रा० १६१, जी० ३।२६५
 पजमइह [पद्यद्रह] जी० ३।४४५
 पजमपत्त [पद्यपत्र] रा० २४, जी० ३।२७७
 पजमपम्हगोर [पद्यपक्षमगौर] ओ० ५१, जी०
 ३।१०६४
 पजमप्पभा [पद्यप्रभा] जी० ३।६८३
 पजमरक्ख [पद्यरक्ष] जी० ३।८२६
 पजमलया [पद्यलता] ओ० ११, १३, रा० १७, १८,
 २०, ३२, ३४, ३७, १२६, १४५, १८६, जी०
 ३।२६८, २७७, २८८, ३००, ३०८, ३११, ३१८,
 ३३७, ३५६, ३७२, ३६०, ३६६, ५८४, ६०४
 पजमलयापविभत्ति [पद्यलताप्रविभक्ति] रा० १०१
 पजमवण [पद्यवन] जी० ३।८२६
 पजमवरवेइया [पद्यवरवेदिका] रा० १७४, १८६
 से १६८, २००, २०१, २३३, २६३, जी०
 ३।२१७, २५६, २६४ से २७०, २७२, २७३,
 ३६२, ३६५, ६३२, ६३६, ६६१, ६६८, ६७८,
 ६८३, ६८६, ७०६, ७३६, ७५४, ७६२, ७६६,
 ८५७
 पजमवरवेदिया [पद्यवरवेदिका] जी० ३।२१७,
 २६३, २६६, २८६, २८८, ७६८, ८१२, ८२३,
 ८३६, ८५०, ८८२, ८९१
 पजमसंड [पद्यपण्ड] जी० ३।८२६
 पजमा [पद्या] जी० ३।६८३, ६२०
 पजमासण [पद्यासन] रा० १८१, १८३, जी०
 ३।२६३, ३६६, ३७१
 पजमुत्तर [पद्योत्तर] जी० ३।६०१
 पजमुपल [पद्यमौत्पल] रा० ८११
 पजर [प्रचुर] ओ० १, १४, ४६, ७४, १४१, रा०
 ६७१, ७६६
 पजसिया [वकुसिका] ओ० ७०
 पएस [प्रदेश] ओ० १६५।१०, रा० ४०, १३२,
 १५४, जी० १।५, ३३; ३।३०२, ३६८, ५७१,
 ७१५, ८०८, ८१६
 पएसघण [प्रदेशघन] ओ० १६५।३
 १. वजसियाहि [राय० सू० ८०४]

पद्मसि [प्रदेशिन्] रा० ६७१ से ६७५, ६७६ से
 ६८१, ७००, ७०२ से ७०४, ७०८ से ७१०,
 ७१८ से ७२०, ७२३ से ७२६, ७२८ से ७३४,
 ७३६ से ७३९, ७४६ से ७८२, ७८६ से ७९१,
 ७९३ से ७९६
 पद्मयोग [प्रयोग] ओ० १४, १४१. रा० ६७१, ७९१,
 ७९६
 पद्मोदधर [प्रतोदधर] ओ० ५६
 पद्मोदधरि [प्रतोदधरि] ओ० ५६
 पद्मोदहर [पयोधर] रा० १३३. जी० ३३०३
 पद्म [पङ्क] ओ० ८६, ८२, १५०. रा० ८११.
 जी० ३, ६२३
 पद्मपद्मा [पङ्कपद्मा] जी० ३३६, ४१, ४३, ४४,
 १००, ११३
 पद्मबहुल [पङ्कबहुल] जी० ३६६, ६, १६, २५, ३०,
 ६३
 पद्मरज [पङ्करजस्] ओ० १५०. रा० ८११
 पद्मोत्पण्ण [पङ्कावसन्नक] ओ० ६०
 पद्म [पञ्चन्] ओ० ५०. रा० २४. जी० १३४
 पद्मगिताव [पञ्चागिताव] ओ० ६४
 पद्म [पञ्चम] ओ० ६७, १७४, १७६. जी०
 ३३३८
 पद्ममा [पञ्चमी] जी० ११२३; २१४८, १४९;
 ३१२, ३६
 पद्ममासिय [पञ्चमासिक] ओ० ३२
 पद्ममी [पञ्चमी] जी० ३४, ७४, ८८, ९१, १६२,
 १११११२
 पद्मविध [पञ्चविध] जी० २११०१, १०२;
 ३१३०; ४२५; ६१४८
 पद्मविह [पञ्चविध] ओ० १५, ३७, ४०, ४२, ६६,
 ७०. रा० २७४, २७५, ६७२, ६८५, ७१०,
 ७३६, ७५१, ७७४, ७७८, ७९७. जी० १५,
 ६६, ११८; २४, १८; ३१३१, ४४०, ४४१,
 ८३८२१, ८७६; ४११; ६१५६, १५८
 पद्मसगर [पञ्चसप्तति] जी० ३८३८३१

पद्मण्ड [पञ्चनवति] जी० ३१७१४
 पद्मण्डति [पञ्चनवति] जी० ३१७६८
 पद्मनडति [पञ्चनवति] जी० ३१७६६
 पद्मण्डत [पञ्चनवति] जी० ३१३६१
 पद्मण्डति [पञ्चनवति] जी० ३१७२३
 पद्मण्डव्यय [पञ्चानुव्रतिक] ओ० ५२, ७८
 पद्मिदिय [पञ्चेन्द्रिय] ओ० १५, ७३, १४३, १८२.
 रा० ६७२, ६७३, ८०१. जी० १५५; २१०१,
 ११३, १२२, १३८, १४६; ३१३०; ४११, ४, ६,
 ६, १०, १५, १६, २४, २५; ८५; ६१ से ३, ७
 पद्मिदिय [पञ्चेन्द्रिय] जी० १८३, ६१, ६७, ६८,
 १०१ से १०३, ११६, ११७, १२५, १३६;
 २११०४, १०५, १३६, १३८, १४६, १४९;
 ३१३३७ से १४७, १६१ से १६३, १६६, १११५;
 ४१६, १८, २०, २१; ६१५, ७, १६७, १६६, २२१,
 २२५, २२६, २३१, २५६, २५९, २६०, २६४,
 २६६
 पद्मर [पञ्जर] रा० १३७. जी० ३०७
 पद्मलिड [प्राञ्जलिपुट] ओ० ४७, ५२. रा० ६०,
 ६८७, ६९२, ७१६
 पद्मलिकड [कृतप्राञ्जलि] ओ० ७०
 पद्मग [पण्डक] ओ० ३७
 पद्मगण [पण्डकवन] रा० १७३, २७६.
 जी० ३१२८५, ४४५
 पद्मरग [पण्डरक] जी० ३८६३
 पद्मिदिय [पण्डित] ओ० १४८, १४९. रा० ८०६, ८१०
 पद्म [पाण्डु] ओ० ५, ८. रा० ७८२. जी० ३१२७४
 पद्मुर [पाण्डुर] ओ० १, १६, २२, ४७. रा० ७२३,
 ७७७, ७७८, ७८८. जी० ३१५६६
 पद्मुरतल [हम्मिय] [पाण्डुरतलहर्म्य] जी० ३१५६४
 पद्मुरोग [पाण्डुरोग] जी० ३१६२८
 पद्म [प्रान्त्य] रा० ७७४
 पद्माहार [प्रान्त्याहार] ओ० ३५
 पद्मि [पङ्क्ति] ओ० ६६. रा० ७५, २६७, ३०२,
 ३२५, ३३०, ३३५, ३४०. जी० ३१२६७, ३१८,
 ३५५, ४६२, ४६७, ४६०, ४६५, ५००, ५०५, ५६४,

८३८।७ से ६
 पंथ [पन्थ, पयिन्] रा० ७३७
 पंथिय [पान्थिक] रा० ७८७, ७८८
 पंथुविट्टि [पंथुवृट्टि] जी० ३६२६
 पकड्डिजमाण [प्रकृष्यमाण] ओ० १६
 √पकर [प्र+कृ]—पकरेति. ओ० ७३.
 जी० ३१२४.—पकरेति. जी० ३१२१०
 पकरेत्ता [प्रकृष्य] ओ० ७३
 पकरणता [प्रकरण] जी० ३१२१०
 पकरणया [प्रकरण] जी० ३१२११
 पकाम [प्रकाम] रा० ७३२, ७३७
 पकामरसभोज [प्रकामरसभोजित्] ओ० ३३
 पकार [प्रकार] जी० २१६८; ३१५६५
 पकारवर्ग [पकारवर्ग] रा० ६६
 पक्कणी [पक्कणी] ओ० ७०. रा० ८०४
 पक्किट्टग [पक्वेष्टक] जी० ३१८४५
 पक्कीलित [प्रकीडित] जी० ३१६७
 पक्कीलिय [प्रकीडित] रा० १७३. जी० ३१२८५
 पक्ख [पक्ष] ओ० २८. रा० १३०, १६०, १६७.
 जी० ३१२६४, २६६, ३००, ८४१
 पक्खंदोलग [पक्ष्यन्दोलक, पक्षान्दोलक] रा० १८०.
 जी० ३१२६२, ८५७
 पक्खंदोलय [पक्ष्यन्दोलक, पक्षान्दोलक] रा० १८१.
 जी० ३१२६३, ८५७
 पक्खपुडंतर [पक्षपुटान्तर] रा० १६७
 पक्खपेरंत [पक्षपर्यन्त] रा० १६७. जी० ३१२६६
 पक्खबाहा [पक्षबाहु] रा० १३०, १६०, १६७.
 जी० ३१२६४, २६६, ३००
 √पक्खाल [प्र+क्षालय्]—पक्खालेइ. रा० ३५१.
 —पक्खालेति रा० २८८. जी० ३१४५४

पक्खालण [प्रक्षालन] ओ० १११ से ११३, १३७,
 १३८
 पक्खालिय [प्रक्षालित] ओ० ६८
 पक्खालेत्ता [प्रक्षाल्य] रा० २८८. जी० ३१४५४
 पक्खासन [पक्ष्यासन, पक्षासन] रा० १८१, १८३.
 जी० ३१२६३
 पक्खि [पक्षिन्] रा० ६७१, ७०३, ७१८.
 जी० १११०१; ३१८८, १६५, ७२१
 √पक्खिव [प्र+क्षिप्]—पक्खिवइ. जी० ३१५१६.
 —पक्खिवेज्जा. जी० ३११०६
 पक्खिव [प्र+क्षेपय्]—पक्खिववेमि. रा० ७५४
 पक्खिवित्ता [प्रक्षिप्य] जी० ३१५१६
 पक्खुभित [प्रक्षुभित] जी० ३१८४२, ८४५
 पक्खुभिय [प्रक्षुभित] ओ० ४६, ५२. रा० ६८७
 पगइ [प्रकृति] ओ० ७३, ६१, ११६. रा० १७४,
 २३३. जी० ३१६२५
 पगठग [प्रकण्ठक] रा० १३७, १४६. जी० ३१३०७,
 ३५५
 पगति [प्रकृति] जी० ३१२८६ ५६८, ६२०, ७६५,
 ८१६, ८४१, ८५४, ६५६, ६५७, ६६४
 पगतित्थ [प्रकृतिस्य] जी० ३११२२१ से ११२३
 पगब्भ [प्रगल्भ] जी० ३१५६१
 पगाढ [प्रगाढ] रा० ७६५. जी० ३१११०
 √पगाय [प्र+गै]—पगाइंसु. रा० ७५
 पगार [प्रकार] रा० ८०६, ८१०. जी० २१७४,
 १४०, १५१
 पगास [प्रकाश] ओ० १३, १६, २२, ४७. रा० १३०,
 २५५, ६७०, ७७७, ७७८, ७८८. जी० ३१३००,
 ४१६, ५८६, ५८६, ५८७
 पगिज्झ [प्रगृह्य] रा० ६६४
 पगिज्झिय [प्रगृह्य] ओ० ११६
 पगीय [प्रगीत] रा० ७६, १७३. जी० ३१२८५
 √पगेणह [प्र+ग्रह्]—पगेण्हति रा० २८८
 पगेण्हित्ता [प्रगृह्य] रा० २८८
 पग्गहिन्तु [प्रगृह्य] जी० ३१४५७
 पग्गहिय [प्रगृह्य] ओ० ६७. रा० २६२

१. यत्र तु पक्षिण आगस्यात्मानमन्दोलयन्ति ते पक्ष्यन्दोलकाः [राय० वृ०] ।

२. 'गिरिपक्खंदोलया' गिरिपक्षे—पर्वतपार्श्वे छिन्न-टङ्कगिरी वात्मानमन्दोलयन्ति ये ते तथा [ओ० वृ०] ।

पञ्चकमणग [पञ्चकमणग] रा० ८०३

√पञ्चकख [प्रति+आ+ख्या]—पञ्चकखति

ओ० १५७—पञ्चकखामि, रा० ७६६

—पञ्चकखामो, ओ० ११७—पञ्चकखामिइस्तइ.

रा० ८१६

पञ्चकखान [प्रत्याख्यान] ओ० १२०, १४०, १५७.

रा० ६६८, ७५२, ७८७, ७८६

पञ्चकखाय [प्रत्याख्यात] ओ० ८४, ८५, ८७, ८८,

११७, १२१, १३६ रा० ७६६

पञ्चकखित्ता [प्रत्याख्यात] ओ० १५७

पञ्चकखुम्भवमाण [प्रत्यनुभवत्] रा० १८५, १८७,

७५१. जी० ३१०६, ११८, ११९, १२२, १२३,

२१७, २६७, २६८, ५७६

पञ्चकखुम्भवमाण [प्रत्यनुभवत्] ओ० १५.

रा० ६७२, ६८५, ७१०, ७७४. जी० ३११६,

११८, ११९, १२३, ३५८, १११४, १११७, १११८,

११२४

पञ्चकखित्थम [पाश्चात्य] रा० ४३, ४४, १७०, २३५,

२३६, २४४, २४६, ६६३, ६६४. जी० ३१३००,

३४४, ३४५, ३६७, ३६८, ४०६, ४१०, ५६१,

५६२, ५६८, ५७७, ६३२, ६६१, ६६६, ६६८,

६७३, ६८२, ६८३, ६८४, ६८७, ६८८, ७०८,

७१२, ७४२, ७४४, ७५४, ७६१, ७६५, ७६८,

७६६, ७७१ से ७७३, ७७६, ७७८, ८००, ८१४,

८२५, ८५१, ८८२, ८८५, ९०१, ९३६, ९४०,

९४४, १०१५

पञ्चकखित्थमिल्ल [पाश्चात्य] रा० २६६, २६७, ३०१,

३०६, ३१७, ३२२, ३२७, ३३५, ३४०, ३४५.

जी० ३१३३, २२०, २२१, २२४, २२५, ४६१,

४६६, ४७१, ४८२, ४८७, ४८२, ५००, ५०५,

५१०, ५७७, ६७३, ६६६ से ६६७, ७६६, ७७१,

७७३, ७७५, ७७७, ९१५

पञ्चकखुय [प्रत्यवस्तुत्] रा० ३७

√पञ्चकखिण [प्रति+अर्पय]—पञ्चकखिणइ.

ओ० ५७—पञ्चकखिणति. रा० १२.

जी० ३१५५५—पञ्चकखिणति. रा० ४६

—पञ्चकखिणह. रा० ६. जी० ३१५५४

—पञ्चकखिणहि. ओ० ५५. रा० १७

—पञ्चकखिणोज्जा. ओ० १८०

—पञ्चकखिणोज्जाह. रा० ७०६

पञ्चकमाण [पच्यमान] जी० ३१२२६८

पञ्चकामित्त [प्रत्यमित्र] ओ० १४. रा० ६७१.

जी० ३१६१२

√पञ्चाया [प्रति+आ+जन्]—पञ्चाइस्तइ.

रा० ७६७—पञ्चायति. ओ० ७१.

जी० ३१५७२—पञ्चायाहि. ओ० १४१.

पञ्चावड [प्रत्यावर्त] रा० २४. जी० ३१२७७

√पञ्चुणम [प्रति+उत्+नम्]—पञ्चुणमइ

ओ० २१. रा० २६२—पञ्चुणमति.

जी० ३१४५७

पञ्चुणमिता [प्रत्युन्नम्य] ओ० २१. रा० २६२.

जी० ३१४५७

√पञ्चुत्तर [प्रति+उत्+तृ]—पञ्चुत्तरति.

जी० ३१४४३—पञ्चुत्तरइ. रा० ६५६.

जी० ३१४५४

पञ्चुत्तरिता [प्रत्युत्तीर्य] जी० ३१४४३

पञ्चुत्तरेता [प्रत्युत्तीर्य] रा० ६५६. जी० ३१४५४

पञ्चुत्थत [प्रत्यवस्तुत्] जी० ३१३११

√पञ्चुद्धर [प्रति+उद्+धृ]—पञ्चुद्धरिस्सामि

जी० ३१११८

पञ्चुद्धरित्तए [प्रत्युद्धर्तुम्] जी० ३१११८

√पञ्चुन्नम [प्रति+उत्+नम्]—पञ्चुन्नमइ.

रा० ८

पञ्चुन्नमिता [प्रत्युन्नम्य] रा० ८

पञ्चुत्तकाल [प्रत्युत्तकाल] जी० ३१२८५

√पञ्चुवेक्ख [प्रति+उप+ईक्ष]—पञ्चुवेक्खेइ.

ओ० ५६

पञ्चुवेक्खमाण [प्रत्युपेक्षमाण] रा० ६७४, ६८०,

६८८

पञ्चुवेक्खेता [प्रत्युपेक्ष] ओ० ५६

पञ्चोणिवयंत [प्रत्यवनिपतत्] ओ० ४६

√पञ्चोत्तर [प्रति+उत्+तृ]—पञ्चोत्तरइ.

रा० २७७—पञ्चोत्तरति. रा० २८८

पञ्चोत्तरिता [प्रत्युत्तरि] रा० २७७

पञ्चोद [दे०] रा० १५४, १७४. जी० ३१२६,
३२७

√पञ्चोरुभ [प्रति + अव + रुह्] — पञ्चोरुभति.
जी० ३१५५६

पञ्चोरुभिता [प्रत्यवरुह्य] जी० ३१५५६

√पञ्चोरुह [प्रति + अव + रुह्] — पञ्चोरुह.

ओ० २१. रा० २७७. जी० ३१४४३

—पञ्चोरुहति ओ० ५२. रा० ५७

—पञ्चोरुहति रा० ८. जी० ३१४४३

पञ्चोरुहिता [प्रत्यवरुह्य] ओ० २१. रा० ८.

जी० ३१४४३

पच्छय [पच्छद] ओ० ५७

पच्छा [पश्चात्] ओ० १६५, १६६, १७७.

रा० ५६, ६३, ६५, २७५, २७६, ७८१ से ७८७,
८०२. जी० ३१४४१, ४४२, ६८६, १०४८,
१११५

पच्छाणुताविय [पश्चादनुतापिक] रा० ७७४,
७७५

पच्छयापिडय [पच्छिकापिटक] रा० ७६१, ७७२

पजेमण [प्रजेमनक] रा० ८०३

पजोग [प्रयोग] रा० ७६४

पज्ज [पद्य] रा० १७३. जी० ३१२८५

पज्जत्त [पर्याप्त] जी० ११५१, ५५, ६३, ६५;

३१३३, १३४; ४१६, २२, २३, २५; ५१७, २६,
२८ से ३०, ३२ से ३६, ३६, ४०, ४३, ४६, ४६,
५२, ५४ से ६०

पज्जत्तग [पर्याप्तिक] ओ० १८२. जी० १११४, ५८,

६७, ७३, ७८, ८१, ८४, ८८, ८९, ९२, १००, १०३,
१११, ११२, ११६, ११८, १२१, १२६, १३५;
३१३६, १३६, १४०, १४६; ४१२, ६, १८, २१ से
२३, २५; ५१३, ४, ७, १८ से २२, २४, २५, २७,
३१, ३३, ३४, ३६, ५०; ६१८, ८६, ९२, ९४

पज्जत्तय [पर्याप्तिक] ओ० १५६. जी० १११०१;

४१११; ५१२ से १६, २६, ५२, ६०

पज्जत्ति [पर्याप्ति] रा० २७४, २७५, ७६७.

जी० १११४, २६, ८६, ९६, १०१, ११६, १३३,
१३६; ३१४४०, ४४१

पज्जत्तिभाव [पर्याप्तिभाव] रा० २७४, २७५,

७६७. जी० ३१४४०, ४४१

पज्जलिय [प्रज्वलित] रा० ४५

पज्जव [पर्यव] रा० १६६. जी० ३१५८, ८७,

२७१, ७२४, ७२७, १०८१

पज्जवसाण [पर्यवसान] ओ० १४६. रा० ८०६,

८०७. जी० ११४६; ३१२५०, २५६, ६४८,
६४६

पज्जालिय [प्रज्वलित] जी० ३१५८६

√पज्जुवास [परि + उप + आस्] — पज्जुवासइ.

ओ० ६६. रा० ६ — पज्जुवासंति. ओ० ४७.

रा० ६८७. — पज्जुवासति. रा० ६०

— पज्जुवासामि. रा० ५८ — पज्जुवासामो.

रा० १० — पज्जुवासिस्संति. रा० ७०४

— पज्जुवासेइ. रा० ७१६ — पज्जुवासेज्जा

रा० ७७६

पज्जुवासणया [पर्युपासना] ओ० ४०, ५२.

रा० ६८७

पज्जुवासणा [पर्युपासना] ओ० ६६

पज्जुवासणिज्ज [पर्युपासनीय] ओ० २.

रा० २४०, २७६. जी० ३१४०२, ४४२, १०२५

पज्जुवासमाण [पर्युपासीन] ओ० ८३

पज्जुवासित्त [पर्युपासितुम्] ओ० १३६.
रा० ६

पज्जोसवणा [पर्युषणा, पर्युपशमन] जी० ३१६१७

पज्जोसमाण [पञ्चञ्जमान] रा० ४०, १३२.

जी० ३१२६५

पट्ट [पट्ट] रा० ३७, २४५, ६६४, ६८३.

जी० ३१३११

पट्टण [पत्तन] ओ० ६८, ८६ से ९३, ९५, ९६, १५५,

१५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७.

जी० ३१५६५

पट्टिया [पट्टिका] रा० १३०, १६०, ६६४, ६८३.

जी० ३१२६४, ३००, ५६२

पट्ट [पठ] जी० ३१११८

पड [पट] ओ० २३, ६३

पडंत [पतत्] जी० ३१५६०

पडग [पटक] रा० ७५३

पडवुद्धि [पटवुद्धि] ओ० २४

पडल [पटल] रा० १२, १५४, १७४.

जी० ३१११६, २८६, ३२८, ३३०, ३५५३

पडलग [पटलक] रा० १२, १५७, २५८, २७६.

जी० ३१४१६, ४४५

पडह [पटह] ओ० ६७. रा० १३, ७७, ६५७.

जी० ३११७८, ४४६, ५८८

पडागा [पताका] ओ० ५५, ६४. रा० ३२, ५०, ५२,

५६, १३७, १७३, २३१, २४७, ६८१. जी० ११८०,

८२; ३१२८५, ३०७, ३७२, ३६३

पडागाइपडागा [पताकातिपताका] ओ० २, १२,

५५. रा० २३, २८१. जी० ३१२६१

पडागातिपडागा [पताकातिपताका]

जी० ३१४४७

√पडिकप्प [प्रति + कल्प] — पडिकप्पेइ.

ओ० ५७ — पडिकप्पेहि. ओ० ५५

पडिकप्पिय [प्रतिकल्पित] ओ० ६२

पडिकप्पेत्ता [प्रतिकल्प्य] ओ० ५७

पडिकूल [प्रतिकूल] रा० ७५३, ७६७, ७६८, ७७६,
७७७

पडिकंत [प्रतिक्रान्त] ओ० ११७, १४०, १५७,

१६२. रा० ७६६

पडिकमणारिह [प्रतिक्रमणार्ह] ओ० ३६

पडिमय [प्रतिगत] ओ० ७६ से ८१. रा० ६१,

१२०, ६६४, ६६७, ७१७, ७२२, ७७७, ७८७

पडिगाहित्त [प्रतिग्रहीतुम्] ओ० १११

पडिगह [प्रतिग्रह] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,

७५२, ७८६

पडिगाहित्त [प्रतिग्रहीतुम्] ओ० ११२

पडिचंद [प्रतिचन्द्र] जी० ३१६२६, ८४१

पडिचार [प्रतिचार] ओ० १४६. रा० ८०२

√पडिच्छ [प्रति + क्ष] — पडिच्छइ. रा० ६८४

— पडिच्छए. ओ० २

पडिच्छण [प्रतिच्छन्न] जी० ३१५८१

पडिच्छमाण [प्रतीच्छत्] ओ० ६६

पडिच्छयण [प्रतिच्छदन] रा० २४५. जी० ३१३११,

४०७

पडिच्छायण [प्रतिच्छादन] रा० ३७

पडिच्छिय [प्रतीष्ट] ओ० ६६. रा० ६६५

पडिजागरमाण [प्रतिजाग्रत्] रा० ७६३

पडिजागरेमाण [प्रतिजाग्रत्] रा० ५६

पडिजाण [प्रतिधान] ओ० ६२

पडिण [प्रतीचीन] जी० ३१५७७, १०३६

पडिणिकास [प्रतिनिकाश] रा० १४६. जी०
३१२२२

√पडिणिकखम [प्रति + निस् + क्रम्] — पडिणि-

कखमइ. ओ० २०. रा० २८६. जी० ३१४५४.

— पडिणिकखमंति रा० १२. जी० ३१४४५

पडिणिकखमिन्ता [प्रतिनिष्क्रम्य] ओ० २०. रा०

१२. जी० ३१४४५

√पडिणिकखि [प्रति + नि + क्षिप्] — पडिणि-

खिखइ. रा० २८८. जी० ३१५१६. — पडिणि-

खिखेइ. जी० ३१४५४

पडिणिकखिविन्ता [प्रतिनिक्षिप्य] रा० २८८. जी०

३१५१६

पडिणिकखिवेत्ता [प्रतिनिक्षिप्य] जी० ३१४५४

√पडिणियत्त [प्रति + नि + वृत्] — पडिणियत्तइ.

ओ० १७७ — पडिणियत्तंति. जी० ३१७४६

पडिणियत्तिन्ता [प्रतिनिवृत्त्य] ओ० १७७

पडिणीय [प्रत्यनीक] ओ० १५५. जी० ३१६१२

पडिदुवार [प्रतिद्वार] ओ० २, ५५. रा० ३२, २८१.

जी० ३१३७२, ४४७

√पडिनिक्खम [प्रति + निस् + क्रम्] — पडिनिक्ख-

मइ. रा० ७१०. — पडिनिक्खमंति, रा० २७६.

— पडिनिक्खमंति जी० ३१४४६

पडिनिक्खमिन्ता [प्रतिनिष्क्रम्य] रा० २७६. जी०

३१४४६

पडिपाद [प्रतिपाद] जी० ३१४०७

पडिपाय [प्रतिपाद] रा० २४५

√पडिपिषा [प्रति+पि+घा]—पडिपिषेइ. जी०
३।५।६

पडिपिषेत्ता [प्रतिपिषाय] जी० ३।५।६

√पडिपुच्छ [प्रति+प्रच्छ]—पडिपुच्छंति. ओ० ४५

पडिपुच्छण [प्रतिप्रच्छन] ओ० ५२. रा० ६८७

पडिपुच्छणा [प्रतिप्रच्छना] ओ० ४२

पडिपुच्छणिज्ज [प्रतिपुच्छनीय] रा० ६७५

पडिपुण्ण [प्रतिपूर्ण] ओ० १४, १५, १६, ६३, ७२,

१२०, १४३, १५३, १६२, १६५, १६६, १७०.

रा० १३१, १४७, १४८, १५०, १५२, २८०, २८६,

६७१ से ६७३, ६८८, ७५२, ७८६, ८०१, ८१४.

जी० ३।३०१, ३२३, ३२५, ४४६, ४५२, ५६२,

५६६, ५६७, ६१०

पडिपुण्णचंद [प्रतिपूर्णचन्द्र] जी० ३।८६, २६०

पडिपुण्ण [प्रतिपूर्ण] जी० ३।५६६

पडिबन्ध [प्रतिबन्ध] ओ० २८. रा० ६६५, ७७५

पडिबद्ध [प्रतिबद्ध] जी० ३।२२

पडिबोहण [प्रतिबोधन] रा० १५

पडिबोहिय [प्रतिबोधित] ओ० १४८, १४९. रा०

८०६, ८१०

पडिमट्टाइ [प्रतिमास्थायिन्] ओ० ३६

पडिमोषण [प्रतिमोचन] जी० ३।२७६, ५८१, ५८५

पडियाइविखय [प्रत्याख्यात] ओ० ११७

पडिरुव [प्रतिरूप] ओ० ७, १० से १२, १५, ७२, १६४-

रा० १, २, १६ से २३, ३२, ३४, ३६ से ३८,

१२४ से १२८, १३० से १३४, १३६, १३७,

१४१, १४५ से १४८, १५० से १५३, १५५ से

१५७, १६०, १६१, १७४, १७५, १८० से १८५,

१८८, १८९, १९७, २०६, २११, २१८, २२१, २२२,

२२४, २२६, २२८, २३०, २३१, २३३, २३८, २४२,

२४४ से २४७, २४९, २५३, २५६, २५७, २६१,

२७३, ६६८ से ६७०, ६७२, ६७३, ६७६, ६७७,

७००, ७०२, ७०३. जी० ३।२३२, २६० से २६३,

२६६ से २६९, २७६, २८६ से २९७, ३०० से

३०४, ३०६ से ३०८, ३१० से ३१२, ३१८,

३१९, ३२३ से ३२६, ३२८ से ३३०, ३३३,

३३४, ३३७, ३४७, ३४८, ३५२, ३५३, ३५५, ३६१,

३६५, ३७२, ३७७, ३८०, ३८१, ३८३, ३८५, ३८७,

३९०, ३९२, ३९३, ३९६, ४००, ४०१, ४०४, ४०६

से ४०८, ४१०, ४१३, ४१४, ४१८, ४२२, ४२७,

४३७, ५८१, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ६३२, ६३६,

६४४, ६४६, ६४९, ६५५, ६६१, ६६८, ६७१, ६७२,

६७५, ६८६, ७२४, ७२७, ७३६, ७५८, ८३६, ८५७,

८६३, ८८१, ८८२, ८८३, ८८६ से ८८८, ८८९,

८९६, ९०४, ९०६, ९०७, ९११, ९१८, ९०३८,

१०३६, १०८१, ११२१, ११२२

पडिरुवण [प्रतिरूपक] रा० १६, २०, १७५ से १७९,

२०२, २३४, २६४. जी० ३।२८७, २८८, ३६३,

३६६, ५७६, ६४०, ६४१, ६६६, ६८४

पडिरुवण [प्रतिरूपक] रा० १६, ४७, ४८, ५६, ५७,

२७७, २८८, ३१२, ४७३, ६५६. जी० ३।४४३,

४५४, ४७७, ५३२, ५५६

√पडिलाभ [प्रति+लाभय]—पडिलाभिससंति.

रा० ७०४.—पडिलाभेइ. रा० ७१६.

—पडिलाभेज्जा. रा० ७७६

पडिलाभेमाण [प्रतिलाभयत्] ओ० १२०, १६०.

रा० ६६८, ७५२, ७८६

√पडिलेह [प्रति+लिख्]—पडिलेहेइ. रा० ७६६

पडिलोम [प्रतिलोम] रा० ७५३, ७६७, ७६८, ७७६,

७७७

पडिवंसण [प्रतिवंचक] रा० १३०. जी० ३।३००

√पडिवज्ज [प्रति+पद्]—पडिवज्जंति.

ओ० १८२. रा० ७७५.—पडिवज्जंति.

ओ० १५७.—पडिवज्जिस्सामि. रा० ६६५.

—पडिवज्जिस्सामो. ओ० ५२. रा० ६८७

पडिवज्जिन्ता [प्रतिपद्य] ओ० १५७

पडिवण्ण [प्रतिपन्न] ओ० २४, ७८, ८२, १८२

पडिवत्ति [प्रतिपत्ति] जी० १।१०; ६।८

पडिविरय [प्रतिविरत] ओ० १६१, १६३

√पडिविसज्ज [प्रति+वि+सर्जय्]

—पडिविसज्जेइ. ओ० ५४. रा० ६८४.

—पडिविसज्जेहिंति. ओ० १४७. रा० ८०८

पडिवूह [प्रतिव्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६

पडिसंखेवेमाण [प्रतिसंखिपत्] रा० ५६

पडिसंलीणया [प्रतिसंलीमता] ओ० ३१, ३७

पडिसंसाहणया [प्रतिसंसाधना] ओ० ४०

√पडिसार [प्रति+सं+ह]—पडिसाहरइ.

ओ० २१. रा० ८

पडिसाहरिता [प्रतिसंहृत्य] ओ० २१

पडिसाहरेत्ता [प्रतिसंहृत्य] रा० ८

पडिसाहरेमाण [प्रतिसंहरत्] रा० ५६

√पडिसुण [प्रति+श्रु]—पडिसुणति. रा० १०.

जी० ३१४४५.—पडिसुणिज्जासि. रा० ७५३.

—पडिसुणेइ. ओ० ५६. रा० १८.—पडि-

सुणेति ओ० ११७. रा० ७०७. जी० ३१५५५.

—पडिसुणेति. रा० १४. पडिसुणेज्जासि.

रा० ७५१

पडिसुणिता [प्रतिश्रुत्य] रा० १८. जी० ३१४४५

पडिसुणेत्ता [प्रतिश्रुत्य] ओ० ५६. रा० १०.

जी० ३१५५५

पडिसुय [प्रतिश्रुत] रा० १४

पडिसूर [प्रतिसूर] जी० ३१६२६, ८४१

पडिसेग [प्रतिषेक] रा० २५४

पडिसेविय [प्रतिषेवित] रा० ८१५

पडिसेह [प्रतिषेध] जी० २१६६, १०१

पडिहत [प्रतिहत] जी० ३१७४६

पडिहत्थ [दे०] रा० १७४. जी० ३१३२४, ८५७,

८६३, ८६६, ८७५, ८८१, ८८८

पडिहय [प्रतिहत] ओ० १६५, १, २

पडोण [प्रतीचीन] रा० १२४. जी० ३१६३६

पडोणवात [प्रतीचीनवात] जी० ११८१

पडोणवाय [प्रतीचीनवात] जी० ३१६२६

पडु [पटु] ओ० ६८. रा० ७, १३, ६५७.

जी० ३१३५०, ४४६, ५६३, ८४२, ८४५, १०२५

पडुच्च [प्रतीत्य] रा० ७६३. जी० ११३४

पडुत्पन्न [प्रत्युत्पन्न] जी० ३११६५ से १६७

पडुप्पाएमाण [प्रत्युत्पद्यमान] जी० ३१२५६

पडोयार [प्रत्यवतार] ओ० ४३. जी० ३१२१८,

२५६, ५७८, ५६६, ५६७

पडस [प्रथम] ओ० ४७, १४४, १७४, १७६, १८२.

रा० ८०२. जी० ३१२२६, ६८२, ६८३, ६८८;

७११, २, ४, ६, ११, १३, १५, १७, २०, २२, २३;

६११ से ७, २३२, २३३, २३५, २३७, २४१, २४३,

२४५, २४७, २५०, २५२, २५३, २५५, २६७, २६८,

२७०, २७२, २७५, २७७, २७९, २८१, २८४, २८६,

२८८ से २९३

पडमग [प्रथमक] रा० २२८. जी० ३१३८७, ६७२

पडमसत्तराईदिया [प्रथमसत्तरात्रिदिवा] ओ० २४

पडमसरयकास [प्रथमशरत्काल] जी० ३१११८, ११६

पडमा [प्रथमा] जी० ३१२, ३, ८, ११११

पडमिल्लुय [प्रथम] रा० ७६८

पणगजीव [पनकजीव] ओ० १८२

√पणच्च [प्र+नृत्]—पणच्चिसु. रा० ७५

पणतीस [पञ्चत्रिंशत्] जी० ३१८०२

पणपण [दे० पञ्चपञ्चाशत्] जी० ६१६

पणपन्न [दे० पञ्चपञ्चाशत्] जी० २१२०

पणमिय [प्रणत] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.

जी० ३१२६८, २७४

पणयाल [पञ्चचत्वारिंशत्] जी० ३१२२६६

पणयालीस [पञ्चचत्वारिंशत्] ओ० १६२.

जी० ३१३००

पणयालीसविह [पञ्चचत्वारिंशद्विध] ओ० ४०

पणयासण [प्रणतासन] रा० १८१, १८३.

जी० ३१२६३

पणव [पणव] ओ० ६७. रा० १३, ७७, ६५७.

जी० ३१७८, ४४६, ५८८

पणवणिगय [पणपन्निक] ओ० ४६

पणवीस [पञ्चविंशति] रा० १२७. जी० ३१६१

पणस [पनस] जी० ३१३८८

पणाम [प्रणाम] रा० ६८, २६१, ३०६.

जी० ३।४५७, ४७१, ५१६
 पणि [पण्य] जी० ३ ६०७
 पणिय [पणित, पण्य] ओ० १. रा० ७७४
 पणियगिह [पणित°, पण्यगृह] ओ० ३७
 पणियशाला [पणित°, पण्यशाला] ओ० ३७
 पणिहाय [पणिवाय, प्रणिहाय] जी० ३।७३ से
 ७५, १२४, १२५, ७६५, १०२५
 पणीत [प्रणीत] जी० १।१
 पणीयरसपरिच्छाय [प्रणीतरसपरित्याग] ओ० ३५
 पणुवीस [पञ्चविंशति] जी० ३।२२६।५
 पणोल्लिय [प्रणोदित] ओ० ४६
 पण्णओ [प्रज्ञातम्] रा० ७५२, ७५४, ७५६, ७५८,
 ७६०, ७६२, ७६४
 पण्णगद्ध [पन्नगार्ध] जी० ३।३०२
 पण्णट्ठ [पञ्चपण्डित] जी० ३।२२२
 पण्णट्ठि [पञ्चपण्डित] रा० १६४
 पण्णत्त [दे०] ओ० १
 पण्णत्त [प्रज्ञत्त] ओ० २. रा० ३. जी० १।१
 पण्णत्तर [पञ्चनप्तति] जी० ३।२४६
 पण्णत्तरि [पञ्चसप्तति] जी० ३।६६१
 पण्णप्ति [प्रज्ञप्ति] रा० ८१७
 पण्णरस [पञ्चदशन्] जी० ३।१२
 पण्णरसविध [पञ्चदशविध] जी० ३।२२६
 पण्णरसविह [पञ्चदशविध] जी० १।८०; २।१४
 √पण्णव [प्र-ज्ञापय] —पण्णवईसु. जी० १।१.
 —पण्णवेत्ति. ओ० ५२. रा० ६८७. —पण्णवेत्ति.
 जी० ३।२१०. —पण्णवेत्ति. जी० ३।८३८।३
 पण्णवणा [प्रज्ञापना] रा० ७७४. जी० १।५, ५८,
 ७२, १००, ११०, १११, ११६, ११८, १२६, १३५;
 २।८६; ३।१८४, २१४, २३२, २३३
 पण्णवणापव [प्रज्ञापनापद] जी० ३।२२०, २३१
 पण्णवित्तए [प्रज्ञापयितुम्] रा० ७७४
 पण्णवीस [पञ्चविंशति] जी० ३।१२
 पण्णवेमाण [प्रज्ञापयत्] ओ० ६८

√पण्णाय [प्र-ज्ञा] —पण्णायति. जी० ३।६६६
 पण्णास [पञ्चाशन्] रा० २०६. जी० २।३६
 पण्हावागरणवसाधर [प्रश्नव्याकरणदशाधर]
 ओ० ४५
 पतणतणाइत्ता [प्रतनतनाय्य] रा० १२
 √पतणतणाय [प्र-तनतनाय] —पतणतणायंति.
 रा० १२
 पतणु [प्रतनु] ओ० ६१, ११६
 पतरग [प्रतरक] जी० ३।३०२
 √पतव [प्र-तव] —पतवंति. जी० ३।४४७.
 —पतवेति. रा० २८१
 पतिट्ठाण [प्रतिष्ठान] रा० १६, १७५.
 जी० ३ २८७, ३००, ४४६, ४४८
 पत्ता [पत्र] ओ० ५, ६, ८, १३, १६, २७, ६४. रा० ६,
 १२, २६, ३१, १६१, १७४, २२८, २५८, २७०,
 २७६, ७८२. जी० १।७१, ७२; ३।११८, ११६,
 २७४, २७५, २७६, २८३, २८४, २८६, ३३४,
 ३८७, ४१६, ४३५, ४५४, ५८१, ५८६, ५६६,
 ६२२, ६४३, ६७२
 पत्त [प्राप्त] ओ० ३७, ११७, १४०, १५७, १६२,
 १६५।१६, २२. रा० १, ६३, ६५, ६६७, ७६६,
 ७६७. जी० ३।८६७
 पत्ताच्छेज्ज [पत्रच्छेद्य] ओ० १४६. रा० ८०६
 पत्तट्ठ [दे० प्राप्तार्थ] ओ० ६३. रा० १२, ७५८,
 ७५६, ७६५, ७६६, ७७०
 पत्तभार [पत्रभार] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४
 पत्तमंत [पत्रवत्] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४
 पत्तल [पत्रन] ओ० १६, ४७. जी० ३।५६६, ५६७
 पत्तासव [पत्रानव] जी० ३।८६०
 पत्ताहार [पत्राहार] ओ० ६४
 √पत्तिय [प्रति-पत्ति] —पत्तिपञ्जा. रा० ७५०.
 —पत्तियाभि. रा० ६६५
 पत्तिय [पत्रित] रा० ७८२
 पत्तियमाण [प्रतिपत्ति] जी० १।१

पत्ती [पात्री] जी० ३।५८७

पत्तेग [प्रत्येक] जी० ५।२६

पत्तेगसरौर [प्रत्येकशरीर] जी० ५।३१

पत्तेय [प्रत्येक] ओ० ५०. रा० २०, ४८, १३७,

१६४, १७०, १७४ से १७६, १८६, २११, २१५,

२१७ से २१९, २२१, २२२, २२४, २२६, २२७,

२३०, २३१, २३३, २५५, २५६, २८२, ६६४.

जी० ३।२५६, २८६ से २८८, ३०७ से ३१३,

३४५, ३४५, ३४६, ३४८, ३५६, ३६३, ३६८,

३६९, ३७२ से ३७८, ३८०, ३८१, ३८३ से

३८६, ३८९, ३९३, ३९५, ४१६, ४१७, ४४८,

५५८ से ५६२, ६३२, ६३४, ६३५, ६३७, ६४१,

६६१, ६६२, ६८३, ६८४, ७२५, ७२७, ७२८,

७६२, ७६३, ८५७, ८८२ से ८८५, ८८७ से

८९१, ८९३, ९०३, ९०६, ९०८, ९१०, ९११,

९१३, १०४८; ५।२८, ३०; ६।१७४

पत्तेयजीव [प्रत्येकजीव] जी० १।७१

पत्तेयबुद्धसिद्ध [प्रत्येकबुद्धसिद्ध] जी० १।८

पत्तेयरस [प्रत्येकरस] जी० ३।६६३

पत्तेयसरौर [प्रत्येकशरीर] जी० १।६८, ६९, ७२;

५।३१, ३३ से ३६

पत्तोमोदरिय [प्राप्तावमोदरिक] ओ० ३३

पत्थ [प्र+अर्थ]—पत्थति. ओ० २०—पत्थेइ.

रा० ७१३—पत्थेति. रा० ७१३

पत्थ [प्रस्थ] ओ० १११

पत्थ [पथ्य] जी० ३।८५४, ८७८, ९५७

पत्थड [प्रस्तट] रा० १३०, १३७. जी० ३।३००,

३०७

पत्थडोदग [प्रस्तटादक] जी० ३।७८३, ७८४

पत्थय [पथ्यक] रा० ७७२

पत्थयण [पथ्यदन] रा० ७७४

पत्थर [प्रस्तर] ओ० ४६

पत्थिज्जमाण [प्रार्थ्यमान] ओ० ६६

पत्थिय [प्राथित] ओ० ७०. रा० ६, २७५, २७६,

६८८, ७३२, ७३७, ७३८, ७४६, ७६८, ७७७,

७९१, ७९३, ८०४. जी० ३।४४१, ४४२

पद [पद] रा० ७६, २६२. जी० ३।१८४, ४५७

६३७

पदाहिण [प्रदक्षिण] जी० ३।४४३

पदाहिणावत्तमंडल [प्रदक्षिणावर्तमंडल]

जी० ३।८४२

पदीव [प्रदीप] रा० ७७२

पदेश [प्रदेश] रा० १३५, २३६, ७७२. जी० १।४;

३।३०५, ३२७, ५७३, ५९७, ६६८, ७१७, ७८८,

७८९, ८०३, ८२८, ८२९, ८४५, ८५३, ९४६;

५।५१

पदेशदुता [प्रदेशार्थ] जी० ५।५१, ५२

पदेशदुया [प्रदेशार्थ] जी० ५।५० से ५२, ५८

से ६०

पन्नगद्ध [पन्नगार्ध] रा० १३२

पन्नरस [पञ्चदशन] रा० २०८. जी० ३।३८३।

१६

पन्नरसइ [पञ्चदश] जी० ३।८३८।१६

पन्नरसविह [पञ्चदशविह] जी० २।१४

पन्नास [पञ्चाशत्] रा० १२७. जी० २।२०

पपडमोयय [पपटमोदक] जी० ३।६०१

पपकुल [प्रकुल] जी० ३।२५६

पपभट्ट [प्रभट्ट] रा० १२, २६१, २६३ से २६६,

३००, ३०५, ३१२, ३५५. जी० ३।४५७ से

४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५५४

पभार [प्राभार] ओ० ४६

पभंकरा [प्रभङ्करा] जी० ३।१०२३, १०२६

पभंजण [प्रभञ्जन] जी० ३।७२४

पभा [प्रभा] ओ० ४७, ७२. रा० २१, २३, २४,

३२, ३४, ३६, १२४, १४५, १५४, १५७, २२८, २७३

७७७, ७७८, ७८८. जी० ३।२६१, २६६, २६९.

३२७, ३८७, ६३७, ६५६, ६७२, ७२८, ७४३,

७५०, ७६३, ७६५, १०७७

पभाय [प्रभात] ओ० २२. रा० ७२३, ७७७, ७७८,

७८८

पभास [प्रभास] रा० २७६. जी० ३।४४५

√प्रभास [प्र-+भास्]—प्रभासिसु. जी० ३।७०३

—प्रभासिस्सन्ति. जी० ३।७०३—प्रभासेइ.

रा० ७७२. जी० ३।३२७—प्रभासेति.

रा० १५४. जी० ३।३२७—प्रभासेति.

रा० १५४. जी० ३।७४१

प्रभासेमाण [प्रभासमान] ओ० ४७,७२.

जी० ३.११२१

प्रभिइ [प्रभृति] रा० ७६०,७६१

प्रभिति [प्रभृति] ओ० ५२,६३. रा० ६८७,६८८,
७०४. जी० ३।८३८।२५

प्रभु [प्रभु] रा० ७५८ से ७६१. जी० ३।११०,
६८८ से ६९७, १०२३ से १०२५, १११५,
१११६

प्रभूय [प्रभूय] ओ० १,१४,४६,१४१. रा० ६,
१२,६७१,७६६. जी० ५८६

√प्रमज्ज [प्र-+मृज्]—प्रमज्जइ. रा० २६१

—प्रमज्जति. जी० ३।४५७

प्रमज्जिता [प्रमृज्य] रा० २६१. जी० ३।४५७

प्रमत्त [प्रगत] रा० १५

प्रमद्वण [प्रमदल] ओ० २६. रा० १२,७५८,७५९.
जी० ३।११८

प्रमाण [प्रमाण] ओ० १५,१६,३३,१२२,१४३.

रा० ६,१२,४०,२०५ से २०८, २२५, २५४,
२७६, ६७२, ६७३, ६७५, ७४८ से ७५०, ७७३,

८०१. जी० ३।३१३, ३६८ से ३७१, ३८४,

४०६, ४१०, ४१५, ४४२, ५६८, ५६९, ५६६, ५६७,

६५२, ६६६, ६७३, ६७६, ६७९, ६८५, ६८६,

६८८, ६९१ से ६९८, ७३७, ७५०, ७५३, ७६४,

७६५, ८००, ८०८, ८६६, ८६८, ८९६ से ९२१,

९४१, १०७४

प्रमाणपत्त [प्रमाणप्राप्त] ओ० ३३

प्रमाणभूय [प्रमाणभूत] रा० ६७५

प्रमाय [प्रमाद] ओ० ४६

प्रमावावरिय [प्रमादावरित] ओ. १३६

प्रमुइय [प्रमुदित] ओ० १,१६,४६. रा० १७३.

जी० ३।५६६

प्रमुच्चमाण [प्रमुच्चत्] जी० ३।११८

प्रमुदित [प्रमुदित] जी० ३।२८५

प्रमुह [प्रमुख] ओ० ५५, ५८, ६२, ७०, ७१, ८१.

रा० २४६, ७७६

प्रमोककल [प्रमंक्ष] रा० ६६८, ७५२, ७८६

प्रम्ह [प्रमन्] ओ० ८२

प्रम्ह [प्रम] जी० ६।१६४

प्रम्हल [प्रमल] ओ० ६३. रा० २८५.

जी० ३।४५१

प्रम्हलेस [प्रम्लेश्य] जी० ६।१६०

प्रम्हलेस्स [प्रम्लेश्य] जी० ६।१८५, १६६

प्रम्हलेस्सा [प्रम्लेश्या] जी० ३।११०२

प्रय [पद] ओ० २१, ५४. रा० ८, ७१४.

जी० ३।२३६, २८५

प्रयंठम [प्रकण्ठक] जी० ३।३२२

√प्रयच्छ [प्र-+यच्]—प्रयच्छइ. रा० ७३२

प्रयण [प्रचन] ओ० १६१, १६३

प्रयणु [प्रतनु] जी० ३।५६८, ६११, ७६५, ८४१

प्रयत [प्रयत] जी० ३।४५७

प्रयत्त [प्रयत्त] रा० २६२. जी० ३।६०१, ८६६

प्रयबद्ध [प्रदबद्ध] रा० १७३. जी० ३।२८५

प्रययदेव [प्रतगदेव, प्रतकदेव] ओ० ४६

प्रयर [प्रतर] रा० ४०, १३२

प्रयरग [प्रतरक] जी० ३।२६५, ३१३, ५६३

√प्रयला [प्र-+लाम्]—प्रयलाएज्ज.

जी० ३।११८

प्रयलिय [प्रचलित] ओ० २१, ५४. रा० ८,
७१४

प्रयसंचार [प्रदगञ्चार] रा० ७६, १७३.
जी० ३।२८५

√प्रया [प्र-+जन्]—प्रयाहिइ. रा० ८०१

—प्रयाहिति. ओ० १८३

प्रयाणुसारि [प्रदःतुसारिन्] ओ० २४

प्रयार [प्रचार] ओ० ३७

प्रयावण [प्रचन] ओ० १६१, १६३

पयाहिण [प्रदक्षिण] ओ० ४७, ५२, ६६, ७०, ७८,
८०, ८१, ८३. रा० ६, १०, १२, ५६, ५८, ६५,
७३, ७४, ११८, १२०, ६८७, ६८२, ६८५, ७००,
७१६, ७१८, ७७८

पयाहिणावत्त [प्रदक्षिणावर्त] ओ० १६.

जी० ३।५६६, ५६७, ८३८।१०, ११

पयोधर [पयोधर] जी० ३।५६७

पर [पर] ओ० १५४, १५५, १६० से १६३, १६५,
१६६. रा० ८१६

परं [परम्] जी० ३।८३८।२३

परंगमाण [पर्यङ्गम] रा० ८०४

परंपर [परम्पर] जी० १।४३

परंपरगय [परम्परगत] ओ० १६५।२०

परंपरसिद्ध [परम्परसिद्ध] जी० १।७, ६

परक्कम [पराक्रम] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७,
१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७

परग [परक] जी० ३।५८७

परधर [परगृह] रा० ८१६

परच्छंदाणुवर्तिय [परच्छन्दानुवर्तित] ओ० ४०

परपरिवाडय [परपरिवादिक] ओ० १५६

परपरिवाय [परपरिवाद] ओ० ७१, ११७, १६१,
१६३

परपरिवायविवेग [परपरिवादविवेक] ओ० ७१

परपुट्ट [परपुष्ट] रा० २५. जी० ३२७८

परम [परम] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२,
६३, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४, १६
से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, ८७७,
२७६, २८१, २८८, २९०, ६५५, ६८१, ६८३,
६९०, ६९५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४,
७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७६५, ७७४, ७७८,
८०२. जी० ३।११६, ४८३, ४४५, ४४७, ४५५

परमक्किण्ह [परमकृष्ण] जी० ३।८३, ६४

परमक्किण्हलेस्सा [परमकृष्णलेश्या] जी० ३।१०२

परमट्ट [परमार्थ] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,
७५२, ७८६

परमण [परमान्न] जी० ३।५६२

परमसीय [परमशीत] जी० ३।११५

परममुक्कलेस्सा [परममुक्कलेश्या] जी० ११०४

परममुक्किल [परममुक्कल] जी० ३।१०७६, १०६६

परमहंस [परमहंस] ओ० ६६

परमाउ [परमायुष] ओ० ६८

परमाणु [परमाणु] जी० ७७१. जी० १।५

परलो [परलोक] ओ० २६, ८६ से ६५, ११४,
११७, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७

परवाड [परवादिन्] ओ० २६

परवाय [परवाद] ओ० २६

परमु [परशु] रा० ७६५

परस्सर [पराशर] जी० ३।६२०

पराइय [पराजित] ओ० १४. जी० ६७१

√परामुस [परा+मृण्]—परामुसड. रा० २६४.
जी० ३।४६०—परामुसति. रा० २६८.

जी० ३।४५७

परामुसिता [परामृश्य] रा० २६४. जी० ३।४५७

√परावर्त्त [परा+वृत्]—परावर्त्तेड. रा० ७२६
—परावर्त्तेहि. रा० ७२८

परासर [पराशर] ओ० ६६

परिकच्छिय [परिकक्षित] रा० ५२

परिकम्म [परिकर्मन्] ओ० ३६

√परिकह [परि+कथय्]—परिकहेड ओ० ७१.
रा० ६१

परिकहेड [परिकथयितुम्] ओ० १६५।१६

परिकिलंत [परिवलान्त] रा० ७२८, ७६०, ७६१

√परिकिलेस [परि+क्लिण्]—परिकिलेसंति
ओ० ८६

परिकिलेस [परिव्लेश] ओ० १६१, १६३

परिकिलेसिता [परिव्लिशय] ओ० ८६

परिक्वित्त [परिक्लिप्त] ओ० १, ५२, ६४, ७०.

रा० १७, १८, १३२, १७०, १७४, २३३, ६८१,

६८३, ६८७, ६८८, ६८२, ७००, ७१६, ८०४.

जी० ३।२५६, २८६, ३०२, ३५८, ३६५, ६३२,

६६१, ६८३, ७६२, ८५७, ८८२, ९१०, ९११

परिक्लेष [परिक्षेप] ओ० १७०. रा० १२४, १२६,

१८८, १८९, २०१. जी० ३।५१, ८१, ८२, ८६,
१२७, २१७, २२२, २२६।३ से ६, २६०,
२६३, २७३, २८८, ३५१, ३६१, ३६२, ५७७,
६३२, ६५८, ६६१, ६६८, ६८६, ७०६, ७३६,
७५४, ७६२, ७६५, ७७०, ७८४, ७८५, ७८८,
८१२, ८२३, ८३२, ८३५, ८५०, ८८२, ८९१,
८९८, ८५२, १०१० से १०१४, १०७३, १०७४

परिखित्त [परिक्षिप्त] रा० ५६, १७३, ६८१.

जी० ३।२८५

परिगत [परिगत] जी० ३।२८८, ३००, ३३२

परिगय [परिगत] ओ० २ रा० १७, १८, २०,

३२, १२६, १५६, ७६५. जी० ३।३७२

परिग्रह [परिग्रह] ओ० ७१, ७६, ७७, ११७,

१२१, १६१, १६३. रा० ६६, ७१७, ७६६

परिग्रहवेरमण [परिग्रहविरमण] ओ० ७१

परिग्रहसण्णा [परिग्रहसंज्ञा] जी० १।२०; ३।१२८

परिग्रहिय [परिग्रहीत] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६,

६२, ६४, ११७, १३६. रा० ८, १०, १२, १४, १८,
४६, ५१, ७२, ७४, ११८, २७६, २७८ से २८२, २८२,
६५५, ६८१, ६८३, ६८६, ७०७, ७०८, ७१३, ७१४,
७२३, ७६०, ७६१, ७६६. जी० ३।४४२, ४४५,
४४६, ४४८, ४५७, ४५५, ६३०, ७२७

परिघट्टिय [परिघट्टित] रा० १७३. जी० ३।२८५

परिघट्ट [परिघट्ट] रा० ५२, ५६, २३१, २४७. जी०

३।३६३, ४०१

परिचत्त [परित्यक्त] ओ० ६२

परिचुम्बिज्जमाण [परिचुम्ब्यमाण] रा० ८०४

परिच्छेय [परिच्छेद] ओ० ५७

परिजण [परिजन] ओ० १५०. रा० ७५१, ८०२

८११

√परिजाण [परि-+जा]—परिजाणाह. रा० ७०१

—परिजाणाति. रा० ७५३

परिजूसिय [परिजुष्ट] ओ० ४३

परिणत [परिणत] जी० १।५; ३।५८७, ५८३, ५८५,

५८८

√परिणम [परि-+णम्]—परिणमइ. ओ० ७१.

रा० ७७१—परिणमति. जी० १।६५

परिणमंत [परिणमत्] रा० ७७१

परिणममाण [परिणमत्] जी० ३।६८२

परिणय [परिणत] ओ० ५, ८. रा० १२, ७५८, ७५९

८०६, ८१०. जी० १।५; ३।२२, ११८, २७४, ५८६
५८८ से ५८२, ५८४

परिणाम [परिणाम] ओ० ७१, ६०, ११६, १५६. रा०

१३३. जी० ३।१२८, ३०३, ५८६, ५८८, ५८२,
६७४, ६७६ से ६८२

√परिणाम [परि-+णाम्]—परिणामेइ. रा० ७३२

√परिणिष्ठा [परि-+निर्+वा]—परिणिष्ठाइ. ओ.

१७७—परिणिष्ठावति. ओ० ७२. जी० १।१३३

—परिणिष्ठावति. ओ० १६६—परिणिष्ठा-

विति. ओ० १५४

परिणिष्ठाण [परिनिर्वाण] ओ० ७१ जी० ३।६१७

परिणिष्ठाव [परिनिर्वृत] ओ० ७१

परिताव [परिताप] ओ० ८६

परितावणकर [परितापनकर] ओ० ४०

परिताविय [परितापित] ओ० ६२

परित्ता [परीत] जी० १।२६, ६२, ६४, ६५, ७७, ७८,

८०, ८२, ८७, ८८, ८९, १०१, १०३, ११२, ११६,
११६, १२१, १२३, १२८, १३४, १३६; ६।७५,
७६, ८७

परित्तसंसारिय [परीतसंसारिक] रा० ६४

परिष्ठाव [परि-+धाव]—परिष्ठावति. रा० २८१.

जी० २।४८७

√परिनिष्ठा [परि-+निर्+वा]—परिनिष्ठा-

विति. रा० ८१६

परिपीडय [परिपीड्य] जी० १।५०

परिपुण्ण [परिपुर्ण] रा० २४

परिपूत [परिपूत] जी० ३।८७८

परिपूय [परिपूत] ओ० १११ से ११३, १३७, १३८

परिभव [परिभव] ओ० ४६

परिभक्ता [परिभक्ता] ओ० १५४, १६५, १६६
 परिभाइत्ता [परिभाइत्ता] रा० ६६५
 परिभाएमाण [परिभाजयत्] रा० ७६५, ७८७, ७८८,
 ८०२
 परिभाइत्ता [परिभाजय] ओ० २३
 परिभुंजमाण [परिभुज्जान] ओ० ११६, ११७
 परिभुंजमाण [परिभुज्जान] रा० ७६५, ८०२
 परिभुज्जमाण [परिभुज्जमान] रा० ३०, १३६, १७४,
 ८०४, जी० ३११८, ११६, २८३, २८६, ३०६
 परिभोगत्ता [परिभोगस्व] जी० ३१६१८
 ६१६, ६२१
 परिमंडल [परिमण्डल] रा० ६, १२, १४, जी०
 ११५; ३२२
 परिमंडित [परिमण्डित] जी० ३३७२
 परिमंडिय [परिमण्डित] ओ० १, ५७, ६४, ७०, रा०
 ३२, ५२, ५६, १७३, २३१, २४७, ६८१, ८०४,
 जी० ३३३३
 परिमहण [परिमर्दन] ओ० ६३
 परिमाण [परिमाण] जी० ३१२७३३, २५०, २५८
 परिमिय [परिमित] ओ० १५, रा० ६७२
 परिमियपिडवाइय [परिमितपिण्डपातिक] ओ० ३४
 √परियट्ट [परि + वृत्] - परियट्टयति ओ० ४५
 परियट्टणा [परिवर्तना] ओ० ४२, ४३
 परियत्ता [परिवर्त] ओ० ४६
 परियर [परिकर] रा० ६६, ७६५
 √परियाइ [परि + आ + दा] —परियाइ रा०
 १८—परियायति रा० १०, जी० ३४४५
 परियाइत्ता [पर्यादा] रा० १०, जी० ३४४५
 परियाइय [पर्याप्त] रा० ६६४, जी० ३४६२
 परियाय [पर्याय] ओ० ६४, १५५, १५८ से १६०,
 १६५, १६६
 √परियाण [परि + जा] —परियाणइ रा० ६४
 परियाय [पर्याय] ओ० २३, ११४, १४०,
 रा० ८१५
 परिवारणिद्धि [परिवारणद्धि] जी० ३११०२५
 परिवाल [परिवार] ओ० २३, ७०, ७१, रा० ७७७,

७७८, ८०४
 परियावणकर [परितापनकर] ओ० १६१, १६३
 परिरय [परिरय] ओ० १६२, जी० ३१२६११,
 २, ४, ५, ८३६, ६१०
 परिरित्त [परिलीयमान] ओ० ६२, जी० ३१२७५
 परिली [वे०] रा० ७७
 परिविज्जमाण [परिविज्जमान] रा० ८०४
 परिविच्छय [परिविच्छित] ओ० ५७
 परिविज्जय [परिविज्जित] जी० ३१६२२
 √परिवड्ड [परि + वृद्ध] —परिवड्डइ, जी०
 ३१८३८१८, —परिवड्डित्सइ, रा० ८०४
 √परिवय [परि + वृत्] —परिवयति, रा० २८१,
 जी० ३४४७
 √परिवस [परि + वस्] —परिवसइ, ओ० १४,
 रा० ७०३, —परिवसति ओ० १८६,
 रा० १८६, जी० ३१२३२, —परिवसति,
 जी० ३१२३४
 परिवसन [परिवसन] जी० ३१५६८
 √परिवह [परि + वह] —परिवहति
 जी० ३११०१५
 परिवहिताए [परिवोढुम्] रा० ७६०
 परिवहणी [परिवाहिनी] जी० ३४५८८
 परिवहणी [परिवाही] रा० १३१ से १३३, १३५,
 १३६, जी० ३१३०१ से ३०३
 परिवायणी [परिवाहिनी] रा० ७७
 परिवार [परिवार] ओ० ७०, रा० ७, ४२, ४७,
 ५६, ५८, ६१, ६७, १६४, १८६, २०४ से २०६,
 २१६, २४३, २८०, जी० ३१३४०, ३५०, ३५६,
 ३६६, ३६८, ३७८, ४०५, ४४६, ४४८, ५५७,
 ५६३, ६३५, ६५७, ६६३, ६७३, ६८०, ६८५,
 ७३७, ७४०, ७४२, ७४५, ७५०, ७६२, ७६५,
 ७६८, ७७०, १०००, १०२३, १०५४
 परिवाल [परिवार] रा० १३, १२०
 परिविद्धंसइत्ता [परिविद्धवंस्य] जी० ११५०
 परिवुद्धि [परिवृद्धि] जी० ३१७८८, ७८६
 १. परिपक्षित —परिगृहीतं परिवृत्तम् (वृ) ।

परिव्यय [परिव्यय] रा० ७७४

परिव्याघय [परिव्याजक] ओ० १०१ से १३३

परिव्याया [परिव्याजक] ओ० ६६ से ६६, ११७

परिसडिय [परिसडित] ओ० ६४. रा० ७६०,
७६१, ७६२

परिसप्प [परिसर्प] जी० १।१०२, १०४, १२०,
१२२; ३।१४१, १४३

परिसप्पो [परिसर्पी] जी० २।५, ७

परिसा [परिषद्] ओ० ४३, ७६. रा० ६, ७, ४३,
५६, ५८, ६१, २७६ से २८०, २८४, २८७, ६६०
से ६६२, ६६६, ६६३, ६६४, ७१२, ७१७, ७३२,
७३७, ७६६, ७६७, ७७६. जी० ३।२३५ से २३६,
२४१ से २४३, २४५ से २४७, २४६, २५०, २५४
से २५६, २५८, ३४१ से ३४३, ३५०, ३५६, ४४२
से ४४६, ५५७, ५६०, ५६३, ८४२, ८४५, १०४०
से १०४२, १०४४, १०४६ से १०५३, १०५५

√परिसाड [परि + शाटय्]—परिसाडंति
जी० ३।४४५.—पडिसाडेइ रा० १८.

—परिसाडंति रा० १०

परिसाडइत्ता [परिशाटय] जी० १।५०

परिसाडित्ता [परिशाटय] रा० १८. जी० ३।४४५

परिसाडेत्ता [परिशाटय] रा० १०

परिसामंत [परिसामन्त] जी० ३।१२६

परिसेय [परिषेक] जी० ३।४१५

परिसोधित [परिशोधित] जी० ३।८७८

परिस्संत [परिश्रान्त] ओ० ६३. रा० ७६५

परिस्सम [परिश्रम] ओ० ६३

√परिहा [परि + धा]—परिहेइ जी० ३।४४३

परिहत्थ [वे०] ओ० ४६. रा० ६६, १५१.

जी० ३।११८, ११६, २८६

√परिहा [परि + हा]—परिहायइ.

जी० ३।८३८।१६.—परिहायति. जी० ३.१०७

परिहाणि [परिहाणि] जी० ३।६६८, ८३८।१६, २०

परिहायमाण [परिहीयमाण] ओ० १६२.

जी० ३।६६८, ८८२

परिहारविमुद्धिचरित्तविणय [परिहारविमुद्धिचरित्र-
विनय] ओ० ४०

परिहित [परिहित] रा० ६८५, ६६२, ७००, ७१६,
७२६, ८०२. जी० ३।११२२

परिहिय [परिहित] ओ० २०, ४७, ५२, ५३, ७२.
रा० ६८७, ६८६

परिहोण [परिहीण] ओ० ७४।६, १८२, १६५।८.
रा० १३, १५, १७

परिहेत्ता [परिधाय] जी० ३.४४३

परीसह [परीपह] ओ० ११७, १५४, १६५, १६६

परूढ [प्ररूढ] ओ० ६२

√परूब [प्र + रूपय्]—परूवेइ. ओ० ५२.
रा० ६८७.—परूबेति. जी० ३।२१०.

—परूबेमि. जी० ३।२११

परूविय [प्ररूपित] जी० १।१

परूबेमाण [प्ररूपयत्] ओ० ६८

पलंब [प्रलम्ब] ओ० ४७, ४६, ५७, ६४, ७२.
रा० ५१, ६६, ७०

पलंबमाण [प्रलम्बमान] ओ० २१, ५२, ५४, ६३.
रा० ८, ४०, १३२, ६८७ से ६८९, ७१४.
जी० ३।२६५

पलाल [पलाल] रा० ७६७

पलिओवम [पल्योपम] ओ० ६४, ६५. रा० १८६,
२८२, ६६५, ६६६, ७६८. जी० १।१२१, १२५,
१३३; २।२०, २१, २५ से २८, ३० से ४६, ५३
से ५५, ५७ से ६१, ७३, ८३, ८४, १३६; ३।१५६,
१६५, २१८, २३८, २४३, २४७, २५०, २५६,
२५०, ३५६, ४४८, ५६४, ५६५, ६२६, ६३७,
६५६, ७००, ७२१, ७२४, ७२७, ७३८, ७६१,
७६३, ७६५, ८०८, ८१६, ८२६, ८४१, ८५४,
८५७, ८६०, ८६३, ८६६, ८७२, ८७५,
८७८, ८८५, ८८३, ८८५, १०२७ से १०३६,
१०४२, १०४६, १०४८, १०४९ से
१०५३, १०५५, १०८६, ११३२, ११३५; ६।३,
६, ६; ७।५, ६, १२; ८।१८७ से १८६, २१२,
२१४, २२५, २३८, २७३

पलिच्छन्न [परिच्छन्न] ओ० ६, जी० ३१२७५
 पलित [प्रदीप्त] जी० ३१५८६
 पलिय [पलित] जी० ३१५६७
 पलियंक [पर्यङ्क] रा० २२५, जी० ३१३८४
 पलिह [परिघ] ओ० १६
 √पलीव [प्र+ दीपय्]—पलीवेज्जा, रा० ७७२
 √पल्लंघ [प्र+ लंघ्]—पल्लंघेज्ज, ओ० १८०
 पल्लंघण [प्रलङ्घन] ओ० ४०
 पल्लग [पल्यक] जी० ३१६११
 पल्लत्थमुह [पर्यस्तमुख] रा० ७६५
 पल्लव [पल्लव] ओ० ५, ८, रा० १३६, २२८,
 जी० ३१२७४, ३०६, ३८७, ६७२
 पल्लवपविभत्ति [पल्लवप्रविभक्ति] रा० १००
 पल्लविया [पल्लविका] ओ० ७०, रा० ८०४
 पल्लहायणिज्ज [प्रल्लादनीय] ओ० ६३
 पल्लव [प्रपञ्च] ओ० १६५
 पल्लवेमाण [प्रपञ्चयत्] जी० ३१२३६
 पल्लव [पल्लवक] ओ० १, २
 पल्लवपेच्छा [पल्लवकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५, जी०
 ३१६१६
 पल्लव [पल्लव] ओ० ४८, ५७
 पल्लव [पल्लव] रा० १२, ७५८, ७५९, जी० ३१११८
 पल्लव [प्रवृत्त] रा० १८, ७८, ८०, ८२, ११२ जी०
 ३१४४७
 √पल्लव [प्र+ वर्तय्]—पल्लवे, रा० ६७१—
 पल्लवेति, रा० ७५०—पल्लवेमि, रा० ७५०,
 पल्लवेहि, रा० ७५०
 पल्लव [प्रवर्तक] रा० ६७१
 पल्लवाय [प्रवृत्तक] जी० ३१२८५
 पल्लवणिण्हण [प्रवचननिह्वण] ओ० १६०
 पल्लव [प्रवर] ओ० २, २०, ४७, से ५३, ५५ से ५७,
 ६३ से ६५, ७२, रा० ६, १२, ३२, ५१, १३०, १३२,
 २३६, २८१, २९२, ६८५, ६८७, ६८९, ६९२,
 ७००, ७१६, ७२६, ८०२, जी० ३१३००, ३०२,
 ३७२, ३६८, ४४७, ४५७, ५६७, ११२२

पल्लवाइया [दे०] जी० २१६
 पल्लवण [प्रवहण] ओ० १००, १२३
 पल्लव [प्रवा] ओ० ३७ रा० १२
 पल्लव [प्रवादित] ओ० ६७, ६८, रा० १३, ६५७,
 जी० ३१३५०, ५६३, १०२५
 पल्लवित [प्रवादित] रा० ८४२, ८४५, जी० ३१४४६
 पल्लविय [प्रवादित] रा० ७
 √पल्लव [प्र+ वादय्]—पल्लवाम्, रा० ७५
 पल्लव [प्रवाल] ओ० ५, ८, १६, २३, ४७, रा० २७,
 २२८, ६६५, जी० ११७१, २७४, २८०, ३८७,
 ५६६, ६०८, ६७२
 पल्लवमंत [प्रवालवत्] ओ० ५, ८, जी० ३१२७४
 पल्लवण [प्रविकीर्ण] ओ० १
 पल्लवण [प्रविकीर्ण] जी० ३१११८
 पल्लवित [प्रविकीर्ण] रा० १७४
 पल्लविय [प्रविकीर्ण] जी० ३१२८६, ६३६
 पल्लव [प्रविष्ट] ओ० ६४, जी० ३१५५, ७८
 √पल्लव [प्र+ वि+ नी]—पल्लवेज्जा, जी०
 ३१११८ ।
 पल्लव [प्रविकीर्ण] ओ० १०८, ११७, १३१
 पल्लव [प्रवृत्ति] ओ० १६, १७
 पल्लवित्वाउय [प्रवृत्तिव्यापृत, प्रवृत्तिवाहुक] ओ०
 १६, १७, २०, २१, ५३, ५४
 पल्लवित्वाउय [प्रविस्तरत्] जी० ३१२५६
 पल्लवित्वाउय [प्रविध्वस्त] जी० ३१११८, ११६
 पल्लवित्वाउय [प्रविमोचन] ओ० ७, ८, १०
 पल्लवित्वाउय [प्रविचरितुम्] रा० ७३२, ७३७
 पल्लव [प्रविरल] रा० ६, १२, २८, ७६०, ७६१,
 जी० ३१४४७, ५६१
 पल्लव [दे० प्रस्फुटित] जी० ३१११८, ११६
 पल्लव [प्रविलीन] जी० ३१११८, ११६
 √पल्लव [प्र+ विञ्]—पल्लवइ, रा० ७६६,
 —पल्लवामो, रा० ७६५
 पल्लव [प्रविणत्] जी० ३१८३८, १४
 पल्लव [प्रवीजित] ओ० ६७

√पवीणी [प्र+वि+नी]—पवीणै ओ० ५६

पवीणेत्ता [प्रविणीय] ओ० ५६

√पवुच्छ [प्र+वच्] पवुच्चति जी० ३।८४१

पवेस [प्रवेश] ओ० १५४, १६२, १६५, १६६. रा०
१२६, २१०, २१२, ६६८, ७५२, ७८६, ८१६. जी०
३।३००, ३५४, ३७७, ५६४, ६४३, ८८५

पव्वइत्तए [प्रव्रजितुम्] ओ० १२०. रा० ६६५

पव्वइय [प्रव्रजित] ओ० २३, ७६, ७८, ६५, १५५,
१५६

पव्वग [पर्वग] जी० १।६६

पव्वत [पर्वत] रा० २७६. जी० ३।४४५, ६३२,
६३७, ६६१, ६६२, ६६४, ६६६, ६६८, ७३५, से
७४३, ७४५, ७४६, ७५०, ७६५, ८३१, ८३३, ८३६
से ६४२, ८४५, ८६६, ८८२, ६१० से ६१२, ६१४
से ६१६, ६१८ से ६२३

पव्वतग [पर्वतक] जी० ३।८६३, ८७५, ८८१, ६२७

पव्वतय [पर्वतक] जी० ३।८६३

√पव्वय [प्र+व्रज्]—पव्वइस्सति. रा० ८१२.

—पव्वइस्सामो. ओ० ५२. रा० ६८७.

—पव्वइहिति. ओ० १५१.—पव्वयंति

रा० ६६५.

पव्वय [पर्वत] रा० ५६, १२४, २७६, ७५५, ७५७.

जी० ३।२१७, २१६ से २२१, २२७, ३००, ५६८,
५७७, ६३२, ६३३, ६३८, ६३९, ६६८, ७०१,
७३६, ७३८, ७४०, ७४२, ७४४, ७४५, ७४७, ७४६,
७५०, ७५४, ७६२, ७६५, ७६६, ७७५, ८८३, ६३७,
१००१, १०३६

पव्वयग [पर्वतक] जी० ३।५७६

पव्वयमह [पर्वतमह] जी० ३।६१५

पव्वयराय [पर्वतराज] जी० ३।८४२

पव्वहणा [प्रव्यथना] ओ० १५४, १६५, १६६

पव्वा [पर्व] जी० ३।२५८

पसंग [प्रसङ्ग] ओ० ४६

पसंत [प्रशान्त] ओ० १४. रा० ६, १२, १५, २८१,
६७१. जी० ३।४४७

पसण्णा [प्रसन्ना] जी० ३।८६०

पसत्त [प्रसक्त] रा० १५

पसत्थ [प्रशस्त] ओ० १५, १६, ४६, ५२, ११६, १५६.

रा० ३३, १३३ ६७२. जी० १।१; ३।३०३,
३७२, ५६६ से ५६८

पसत्थकायविणय [प्रशस्तकायविनय] ओ० ४०

पसत्थमणविणय [प्रशस्तमनोविनय] ओ० ४०

पसत्थवइविणय [प्रशस्तवाम्विनय] ओ० ४०

पसत्थु [प्रशास्तु] ओ० २३. रा० ६८७, ६८८

पसन्ना [प्रसन्ना] जी० ३।५८६

√पसर [प्र+सृ]—पसरंति. रा० ७५

पसरिय [प्रसृत] ओ० ४६. जी० ३।५८६

√पसव [प्र+सृ]—पसवंति. जी० ३।६३०

पसवित्ता [प्रसूय] जी० ३।६३०

पसाधण [प्रसाधन] रा० १५२. जी० ३।३२५

पसाधणधरग [प्रसाधनगृहक] रा० १८२, १८३

√पसार [प्र+सारय्]—पसारेति. रा० ६६

पसासेमाण [प्रसासयत्] ओ० १४. रा० ६७१, ६७६

पसाहणधरग [प्रसाधनगृहक] जी० ३।२६४

पसाहा [प्रशाखा] ओ० ५, ८. रा० २२८.

जी० ३।२७४, ३८७, ६७२

पसिडिल [प्रसिधिल] ओ० ५१

पसिण [प्रश्न] ओ० २६. रा० १६, ७१६

पसु [पशु] ओ० ३७. रा० ६७१, ७०३, ७१८.

जी० ३।७२१

पसेडि [प्रश्नेणि] रा० २४. जी० ३।२७७

पस्सा [पश्या] रा० ८१७

पस्सवणी [प्रसवणी] रा० ८१७

पह [पथ] ओ० ५२, ५५. रा० ६५४, ६५५, ६८७,

७१२. जी० ३।५५४, ८३८।१५

पहकर [दे०] ओ० १, ६. रा० ६८३. जी० ३।२७५

पहगर [दे०] रा० ५३

पहट्ट [प्रहृष्ट] ओ० १६. जी० ३।५६६

पहरण [प्रहरण] ओ० ५७, ६४. रा० १७३, ६६४,

६८१, ६८३. जी० ३।२८५, ५६२

पहरणकोस [प्रहरणकोश] रा० २४६, ३५५.

जी० ३४१०, ५२०

पहरणरयण [प्रहरणरत्न] रा० २४६, ३५५.

जी० ३४१०, ५२०

पहसित [प्रहसित] जी० ३१३०७, ३६४, ६३४, ६३६,

१००८

पहसिय [प्रहसित] रा० १३७, १८३. जी० ३१३५५,

३५६, ३६८ से ३७१, ५८६, ६७३

पहा [प्रभा] ओ० १२, २२. रा० १५४.

जी० ३१५८६

पहाण [प्रधान] ओ० २३, २५, १४६. रा० ६८६,

८०६, ८०७. जी० ३१५६२, ५६७

✓पहार [प्र + धारय]—पहारेज्जा. ओ० ४०.

—पहारेत्थ. ६५, २८८. जी० ३१४५४

पहाविय [प्रधावित] ओ० ४६

पहिष्ठ [प्रहृष्ट] ओ० ५१

पहिय [पथिक] रा० ७८७, ७८८

पहियकित्ति [प्रथितकीर्ति] ओ० ६५

पहीण [प्रहीण] ओ० ७२

पहु [प्रभु] ओ० ११६. रा० ७६१

पहेलिया [प्रहेलिका] ओ० १४६. रा० ८०६

पाई [पात्री] रा० २५८, २७६

पाईण [प्राचीन] रा० १२४. जी० ३१५७७, ६३६,

१०३६

पाईणवात [प्राचीनवात] जी० १८१

पाईणवाय [प्राचीनवात] जी० ३१६२६

पाड [प्रादुस्] ओ० २२. रा० ७२३, ७७७, ७७८,

७८८

पाडम्मा [प्रायोग्य] रा० ६६६

✓पाडण [प्र + आप्]—पाडणइ. ओ० १८२.

—पाडणति. ओ० ६४—पाडणिहित.

ओ० १४०. रा० ८१६

पाडणित्ता [प्राप्य] ओ० ६४. रा० ८१६

✓ पाडम्भव [प्रादुस् + भू]—पाडम्भवति.

रा० १६—पाडम्भह. रा० १३

—पाडम्भवित्था. ओ० ४७

पाडम्भवमाण [प्रादुर्भवत्] रा० १७

पाडम्भूय [प्रादुर्भूत] ओ० ७६ से १. रा० ६१,

१२०, ६६४, ६६७, ७१७, ७२२, ७७७, ७८७, ७६५

पाडया [पादुका] ओ० २१, ५४, ६४. रा० ५१,

७१४

पाओवगमण [प्रायोपगमन] ओ० ३२

पाओवगय [प्रायोपगत] ओ० ११७

पागडभाव [प्रकटभाव] ओ० २७. रा० ८१३

पागडिय [प्रकटित] ओ० ५०, ५१

पागय [प्राकृत] जी० ३१८३८३

पागसासण [पाकशासन] जी० ३११०३६

पागार [प्राकार] ओ० १. रा० १२७, १२८, १७०,

६५४, ६५५. जी० ३१३५२, ३५३, ३५८,

५५४, ५६४

✓पाड [पातय]—पाडइ. रा० ७६५

पाडंतिय [प्रात्ययान्तिक] रा० ११७, २८१

पाडलि [पाटलि] ओ० ३०. जी० ३१२८३

पाडिमुय [प्रतिश्रुत] जी० ३१४७७

पाडियक्क [प्रत्येक] ओ० ५५, ५८, ६२, ७०

पाडिहारिय [प्रातिहारिक] ओ० १२०, १६२.

रा० ७०४, ७०६, ७११, ७१३, ७७६

पाडिहेर [प्रातिहार्य] ओ० २

पाण [पान] ओ० १४, ११७, १२०, १४१, १४७,

१४६, १५०, १६२. रा० ६७१, ६८६, ७०४,

७१६, ७५२, ७६५, ७७४, ७७६, ७८७, ७८८,

७६४, ७६७, ७६६, ८०२, ८०८, ८१०, ८११

पाण [प्राण] ओ० ८७, १६१, १६३. जी० ३११२७,

६७५, १०२८, ११३०

पाणक्खय [प्राणक्षय] जी० ३१६२६, ६२८

पाणत्त [प्राणत] जी० ३११०७६, १०८८

पाणय [प्राणत] ओ० ५१, १६२. जी० ३११०३८,

१०५३, १०६६, १०६८

पाणविहि [पाणविधि] ओ० १४६. रा० ८०६

पाणाइवाय [प्राणातिपात] ओ० ७१, ७६, ७७,

११७, १२१, १६१, १६३. रा० ६६३, ७१७,

७६६

पाणाश्वयवेरमण [प्राणातिपातविरमण] ओ० ७१

पाणि [पाणि] ओ० १५, १६, ३७, ६३, ६४, १४३.

रा० १२, ६६४, ६७२, ६७३, ७५८, ७५९, ८०१.

जी० ३११८, ५६२, ५६६

पाणिसेहा [पाणिरेखा] ओ० १६. जी० ३१५६६,
५६७

पाणिय [पाणीय] ओ० ४६

पाताल [पाताल] जी० ३१७२६, ७२८

पाती [पात्री] रा० १५१. जी० ३१३२४, ३५५,
४१६, ४४५

पाद [पाद] रा० २८१, २८८. जी० ३१३११,
४०७, ४१५, ४४७, ४४४

पादचारविहारि [पादचारविहारिन्] जी० ३६१७

पादपीठ [पादपीठ] ओ० ६४

पादव [पादप] जी० ३३०३

पामिच्च [पामृत्य] ओ० १३४

पामोक्ख [प्रमुख, प्रमुख्य] रा० ३५५, ७८७, ७८८.
जी० ३१४१०, ५२०

पाय [पात्र] ओ० ३३

पाय [पाद] ओ० १५, ३७, ५२, ६३, ६६, ६०, १११
से ११३, १३७, १३८, १४३. रा० १२, ३७,
२४५, ६५६, ६७२, ६७३, ७५८, ७५९, ८०१.
जी० ३११८, ५५६

पायप्प [पातुम्] ओ० ११४, १३५

पायच्चणी [पादकाञ्चनी] जी० ३१५८७

पायंत [प्रवृत्त, पादान्त] रा० ११५

पायंताय [प्रवृत्तक, पादान्तक] रा० २८१

पायच्छिण्णग [पादच्छिन्नक] रा० ७५१

पायच्छिण्णय [पादच्छिन्नक] रा० ७६७

पायच्छित्त [प्रायश्चित्त] ओ० २०, ३८, ३९, ५२,
५३, ७०. रा० ६८३, ६८५, ६८७ से ६८९,
६९२, ७००, ७१६, ७२६, ७५१, ७५३, ७६५,
७६४, ८०२, ८०५

पायच्छिण्णग [पादच्छिन्नक] ओ० ६०

पायजाल [पादजाल] जी० ३१५६३

पायतल [पादतल] रा० २५४. जी० ३१४१५

पायत्ता [पादात्त] ओ० ६४

पायत्ताणियाहिबड [पादातानीकाधिपति, पादात्यनी-
काधिपति] रा० १३, १६

पायत्ताणियाहिवत्ति [पादातानीकाधिपति,
पादात्यनीकाधिपति] रा० १४

पायत्ताणीय [पादातानीक, पादात्यनीक]
ओ० ६४

पायत्ताणीयाहिबड [पादातानीकाधिपति,
पादात्यनीकाधिपति] रा० १५

पायत्ताय [प्रवृत्तक, पादान्तक] रा० १७३

पायपीठ [पादपीठ] ओ० २१, ५४. रा० ८, ३७,
५१, ७१४. जी० ३१३११

पायपुंछण [पादपुञ्छण] ओ० १२०, १६२.
रा० ६६८, ७५२, ७८६

पायबद्ध [पादबद्ध] रा० १७३. जी० ३१२८५

पायरास [प्रातरास] रा० ६८३

पायव [पादप] ओ० ५, ८, ९, १२, १३. रा० ३, ४,
१३३, ८०४. जी० ३१२७४

पादविहारचार [पादाविहारचार] ओ० ५२.
रा० ६८७ से ६८९, ७००

पायवीठ [पादपीठ] ओ० १६

पायसीस [पादशीर्ष] जी० ३१४०७

पायसीसग [पादशीर्षक] रा० ३७, २४५.
जी० ३१३११

पायाल [पाताल] ओ० ४६. जी० ३१७२८,
७३१

पारंच्चियारिह [पारञ्चितार्ह] ओ० ३६

पारय [पारग] ओ० ६७

पारगय [पारगत] ओ० १६५, २०

पारगामि [पारगामिन्] ओ० २६

पारब्भमाण [पारभमान] ओ० ११७

पारसी [पारसी] ओ० ७०. रा० ८०४

पारावय [पारापत] जी० ३१३८८

पारिजातकवण [पारिजातकवन] जी० ३१५८६

पारिणामिया [पारिणामिकी] रा० ६७५

पारियाय [पारिजात] रा० ४५

पारिहेरय [प्रातिहार्यक] जी० ३५६३

पारी [दे० पारी] जी० ३५८७

पारेवय [पारापत] रा० २६. जी० ३१२७६.
५८३

√पाल [पालय्]—पालयाहि. ओ० ६८.

जी० ३१४४८—पालेति. ओ० ६१—पालेहि
रा० २८२

पालंब [पालम्ब] ओ० २१, ५२, ५४, ६३, १०८,
१३१. रा० ८, २८५, ६८७ से ६८६, ७१४.
जी० ३१५६३

पालय [पालक] ओ० ५१

पालित्ता [पालयित्वा] ओ० ६१

पालियाय [पारिजात] रा० २७. जी० ३१२८०

पालेमाण [पालयत्] ओ० ६८. रा० २८२, ७६१.
जी० ३१३५०, ४४८, ५६३, ६३७

पाव [पाप] ओ० ७१, ७६ से ८१, १२०, १६२.
रा० ६७१, ६६८, ७५२, ७८६

पाव [प्र + आप्]—पावइ. ओ० १६५, १४
—पाविज्जामि. रा० ७५१—पाविज्जिहिह.
रा० ७५१

पावकम्म [पापकर्मन्] ओ० ८४, ८५, ८७, ८८.
रा० ७५०, ७५१

पावकम्मोवएस [पापकर्मोपदेश] ओ० १३६

पावण [पापक] ओ० ७४, ६

पावय [पापक] ओ० ७१

पावयण [प्रवचन] ओ० २५, ७२, ७६ से ८१,
१२०, १६२, १६४. रा० ६६५, ६६८, ७५२,
७८६

पावसज्जण [पापशकुन्] रा० ७०३

पास [पार्श्व] ओ० १६. रा० १३१ से १३८,
२५६, ८१७. जी० ३१३५८, ४१५, ५६६, ५६७,
७७५

पास [पाश] रा० ६६४. जी० ३१५६२

पास [दृश्]—पासइ. ओ० ५४. रा० ७१४.
जी० ३१११८—पासंति. ओ० ५२.

रा० ७६५. जी० ३११०७—पासंति. रा० ७.

जी० ३१२००—पाससि. रा० ७७१—पासह.

रा० ६३—पासामि. रा० ७६६—पासिज्जा.

रा० ७७६. —पासिज्जासि. रा० ७५१.

—पासेज्जा. जी० ३१११८

पासंत [पश्यत्] रा० ७६४

पासण [पाशक] ओ० १४६. रा० ८०६

पासग्गाह [पाशग्राह] ओ० ६४

पासणया [दर्शन] रा० ७५० से ७५३

पासतो [पाश्वर्यत्] रा० ५५

पासपाणि [पाशपाणि] रा० ६६४

पासमाण [पश्यत्] रा० ८१५

पासवण [प्रसवण] रा० ७६६

पाससूल [पाश्वर्यशूल] जी० ३१६२८

पासाइय [प्रासादीय, प्रसादिक] जी० ३१२८६ से
२८८, २९०

पासाईय [प्रासादीय, प्रासादिक] ओ० ७२. रा०
२०, ३७, १३०, १३३, १३६, २५७. जी० ३१२६६,
३०६, ३११, ४०७, ४१०, ५८५, ५६६, ५६७,
६७२, ११२१

पासाण [पाषाण] रा० १७४. जी० ३१२८६

पासाद [प्रासाद] जी० ३१७६२

पासादवर्द्धसण [प्रासादावर्तंसक] जी० ३१७६२

पासादीय [प्रासादीय, प्रासादिक] ओ० १, ७, ८,
१० से १३, १५, १६४. रा० १, १६, २१ से २३,
३२, ३४, ३६, ३८, १२४, १३७, १४५, १५७,
१७४, १७५, २२८, २३१, २३३, २४५, २४७,
२४६, ६६८, ६७०, ६७२, ६७६, ६७८, ७००,
७०२. जी० ३१२३२, २६१, २६६, २७६, ३००,
३०३, ३०७, ३०७, ३६३, ५८१, ५८४, ६३६,
८५७, ८६३, ११२२

पासाय [प्रासाद] रा० १४, ७१०, ७७४. जी०
३१५६४, ६०४

पासायवर्द्धसय [प्रासादावर्तंसक] जी० ३१७७०

पासायवर्द्धसक [प्रासादावर्तंसक] जी० ३१३६६,
३७०

पासायवडैसग [पासादावर्तसक] रा० १३७, १८६,
 २०५, २०७, २०८, ७७८. जी० ३१३०७ से ३०६,
 ३१४, ३५५, ३५६, ३६४, ३६७, ३६६ से ३७३,
 ६३४, ६३६, ६८६, ६८६, ६६२ से ६६८, ७६२
 पासायवडैसत [पासादावर्तसक] रा० २०४
 पासायवडैसय [पासादावर्तसक] रा० २०४ से
 २०६. जी० ३१३५६, ३६४, ३६८ से ३७१,
 ६६३, ६७३, ६८५, ६८८, ७३७
 पासावच्चिज्ज [पाशर्वापत्य] रा० ६८६, ६८७,
 ६८६, ७०६, ७१३, ७३३
 पासि [पाशर्व] ओ० ६६. जी० ३१३०१ से ३०७,
 ३१५, ३५५, ४१७, ६३६, ७८८ से ७६०, ८३६,
 ८८६
 पासित्तए [पिटुम्] रा० ७६५
 पासित्ता [पिट्वा] ओ० ५२. रा० ८. जी०
 ३.११८
 पासेत्ता [पिट्वा] रा० ६८८
 पाट्ट [प्राभूत] रा० ६८०, ६८१, ६८३, ६८४,
 ६६६, ७००, ७०२, ७०८, ७०६
 पाहुणगभत्त [प्राघुणकभक्त] ओ० १३४
 पाहुणिज्ज [प्राह्वनीय] ओ० २
 पि [अपि] रा० १०
 पिअवंसण [प्रियदर्शन] ओ० ६३
 पिउ [पितृ] ओ० १४. रा० ६७१, ७७३
 पिगल [पिङ्गल] ओ० ६३
 पिगलक्ख [पिङ्गलाक्ष] जी० ३१२७५
 पिगलक्खग [पिङ्गलाक्षक] ओ० ६
 पिछि [पिच्छिन्] ओ० ६४
 पिज्जर [पिञ्जर] जी० ३१८७८
 पिडहलिद्दा [पिण्डहरिद्रा] जी० ११७३
 पिडि [पिण्डि] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५. जी०
 ३१२६८, २७४
 पिडिम [पिण्डिम] ओ० ७, ८, १०. जी० ३१२७६
 पिडियगगसिरय [पिण्डिताग्रशिरस्क] ओ० १६
 पिडियसिर [पिण्डितशिरम्] जी० ३१५६६

पिच्छज्जय [पिच्छध्वज] रा० १६२. जी० ३१३३५
 पिच्छणघरग [प्रेक्षणगृहक] रा० १८२, १८३
 पिच्छाघरमंडय [प्रेक्षागृहमण्डप] रा० ३२, ३३, ६६
 पिटुण [पिटुन] ओ० १६१, १६३
 पिटुओ [पृष्ठतम्] ओ० ६६. जी० ३१४१६
 पिट्ठंतर [पृष्ठान्तर] रा० १२, ७५८, ७५६. जी०
 ३१११८, ५६८
 पिटुतो [पृष्ठतम्] रा० २५५, २८६, २६०. जी०
 ३१४५५, ४५६
 पिटुपयणन [पिष्टपचनक] जी० ३१७८
 पिट्टिकरंडग [पृष्ठिकरण्डक] जी० ३१२१८, ५६८
 पिडग [पिटक] जी० ३१८३८४ से ६
 पिडय [पिटक] जी० ३१८३८३, ५, ६
 पिण्ड [पिनड] ओ० १७, ६३. रा० ६६, ७०,
 १३३, ६६४, ६८३. जी० ३१३०३, ५६२
 पिण्डय [पिनडक] रा० ७६१
 पिणय [पीनक] जी० ३१५८७
 √ पिणिद्ध [पि+नह्, पि+नि+घा]—पिणिद्धेइ.
 रा० २८५. जी० ३१४५१.—पिणिद्धेति.
 रा० २८५. जी० ३१४५१
 पिणिद्धत्ताए [पिनडुम्] ओ० १०८
 पिणिद्धेत्ता [पिनहा] रा० २८५. जी० ३१४५१
 पित्तिपिण्डनिवेदन [पितृपिण्डनिवेदन] जी० ३१६१४
 पित्तज्जर [पित्तज्वर] रा० ७६५
 पित्तिय [पित्तिक] ओ० ११७. रा० ७६६
 पिधान [पिधान] रा० १३१, १४७, १४८. जी०
 ३१४४६
 पिबित्ताए [पानुम्] ओ० १११
 पिय [प्रिय] ओ० १५, २०, ५३, ६८, ११७, १४३.
 रा० ७१३, ७५० से ७५३, ७७४, ७६६. जी०
 ११३५; ३१०६०, १०६६
 पिय [पितृ] ओ० ७१. रा० ६७१. जी० ३१६११
 √ पिय [पा]—पिज्जइ. रा० ७८४—पियइ. रा०
 ७३२
 पियंगु [प्रियङ्गु] ओ० ६, १०. जी० ३१३८८,
 ५८३

पियतराय [प्रियतरक] रा० २५ से ३१, ४५. जी०
३।२७८ से २८४, ६०१

पियबंसण [प्रियबंशण] रा० ६७२, ६७३, ८०१.
जी० ३।८०८

पियघ [प्रियघ] ओ० ६, १०

पियघर [पितृ] रा० ८०२, ८०३, ८०५, ८०८, ८१०

पियरबिलया [पितृरक्षिता] ओ० ६२

पियाल [प्रियाल] जी० ३।३८८, ५८३

पिरली [पिरली] जी० ३।५८८

पिरिपिरिया [पिरिपिरिया] रा० ७१, ७७

पिरिपिरियावायम [पिरिपिरियावादक] रा० ७१

पिव [इव] ओ० २७. रा० १७. जी० ३।४५१

पिवासा [पिपासा] ओ० ४६, ११७. रा० ७६६.

जी० ३।१०६, १२७, १२८, ५६२, १११४

पिवासिय [पिपासित] रा० ७६०, ७६१, ७७४.

जी० ३।११८, ११९

पिसाय [पिशाच] ओ० ४६. जी० ३।१७, २५२, २५३

पिसायकुमार [पिशाचकुमार] जी० ३।२५३

पिसायकुमारराय [पिशाचकुमारराज] जी०

३।२५२ से २५६

पिसायकुमारिद [पिशाचकुमारेन्द्र] जी० ३।२५३

से २५६

पिहङ्ग [पिठरक] जी० ३।७८

√पिहा [पि+धा]—पिहावेमि. रा० ७५४.

—पिहेड. रा० ७५५.—पिहेज्जा. रा० ७७२

पिहाण [पिधान] रा० २६०. जी० ३।३०१

पिहाणय [पिधानक] रा० ७५४, ७५६

पिहुणमिजिया [दे० पिहुणमज्जा] रा० २६

पिहुल [पृथुल] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७

पीडगम [प्रीतिगम] ओ० ५१

पीडवान [प्रीतिदान] ओ० २१, ५४, १४७. रा०

७१४, ७७६, ८०८

पीडमण [प्रीतिमनस्] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६,

६२, ६३, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४,

१६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७,

२७६, २८१, २८०, ६५५, ६८१, ६८३, ६८०,

६६५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६,

७१८, ७२५, ७२६, ७७४, ७७८. जी० ३।४४३,

४४५, ४४७, ५५५

पीठ [पीठ] ओ० २७, १२०, १६२. रा० ६६८,

७०४, ७०६, ७११, ७१३, ७५२, ७७६, ७८६

पीठगाह [पीठगाह] ओ० ६४

पीठमह [पीठमह] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६,

७६२, ७६४

पीण [पीन] ओ० १६. रा० १३३. जी० ३।३०३,

५६६, ५६७

√पीण [पीनम्]—पीणति. जी० ३।४४७.

—पीणति. रा० २८१

पीणजिज्ज [पीणजीय] ओ० ६३

पीत [पीत] जी० ३।५६५

पीतपाणि [पीतपाणि] रा० ६६४

पीय [पीत] रा० ६६४. जी० ३।५६२

पीयकणवीर [पीतकणवीर] रा० २८. जी० ३।२८

पीयपाणि [पीतपाणि] जी० ३।५६२

पीयबन्धुजीव [पीतबन्धुजीव] रा० २८.

जी० ३।२८१

पीयासीय [पीताशोक] रा० २८. जी० ३।२८१

पीलियम [पीडितक] ओ० ६०

पीलु [पीलु] जी० १।७१

पीवर [पीवर] ओ० १६. रा० ६६, ७०.

जी० ३।५६६, ५६७

√पीह [स्पृह]—पीहति. ओ० २०.—पीहेड.

रा० ७१३.—पीहेति. रा० ७१३

पुंछणी [पुञ्छणी] रा० १३०, १६०. जी० ३।२६४.

३००

पुंज [पुञ्ज] ओ० २, ५५. रा० १२, ३२, ३८, १६०,

२२२, २५६, २८१, २६१, २६३ से २६६, ३००,

३०५, ३१२, ३५५. जी० ३।३१२, ३३३, ३७२,

३८१, ४१७, ४४७, ४५७ से ४६२, ४६५, ४७०,

४७७, ५१६, ५२०, ५५४, ५८०, ५६०, ५६१, ८६४

पुंडग [पुण्डक] जी० ३।८७८

पुंडरिगिणी [पुण्डरीकिणी] जी० ३।६१५

पुंडरीय [पुण्डरीक] ओ० १२, १६, २१, ५४.

रा० ८, २७६, २६२. जी० ३।११८, ११६, ४५७,
५६६, ८२६

पुंडरीयद्वह [पुण्डरीयद्वह] जी० ३।४४५

पुक्खर [पुक्कर] ओ० १७०. रा० २४, ६५, १७१.

जी० ३।२१८, २७७ ३०६, ५७८, ६७०, ७५५,
७७५, ८१६, ८१७, ८२१ से ८२५, ८२७, ८२६ से
८३१, ८४८, ८८३

पुक्खरकर्णिग्या [पुक्करकर्णिका] जी० ३।८६, २६०

पुक्खरगय [पुक्करगत] ओ० १४६. रा० ८०६

पुक्खरणी [पुक्करणी] जी० ३।६०१, ६१०, ६११,
६१४ से ६१६

पुक्खरस्थिभग [पुक्करस्थिभुक] जी० ३।६५४

पुक्खरस्थिभुय [पुक्करस्थिभुक] जी० ३।६४३, ६५४

पुक्खरद्व [पुक्करार्ध] जी० ३।८३१ से ८३४

पुक्खरपत्त [पुक्करपत्र] ओ० २७. रा० ८१३

पुक्खरवर [पुक्करवर] जी० ३।७७४, ७७५

पुक्खरवरग [पुक्करवरग] जी० ३।७७४

पुक्खरिणी [पुक्करिणी] ओ० ६, ६६. रा० १७४,

१७५, १८०, २३३, २३४, २७३, २८८, ३१२, ३१३,
३५०, ३७६, ४३५, ४६६, ५५६, ६१६, ६५६.

जी० ३।११८, ११६, २७५, २८६, ३६५, ३६६,

४१२, ४२५, ४३८, ४५४, ४७७, ५१५, ५२३,

५२६, ५३७, ५४४, ५५१, ५५६, ६८३ से ६८६

पुक्खरोद [पुक्खरोद] जी० ३।४४५, ७७५, ८२५,

८४८ से ८५१, ८५४ से ८५६, ८५६, ८७६, ८४६,
८४६ ८५७, ८६२, ८६४

पुक्खरोदग [पुक्करोदक] जी० ३।४४५

पुक्खरोदय [पुक्करोदक] रा० २७६

पुग्गलपरियट्ट [पुद्गलपरिवर्त] जी० १।१३६

√पुच्छ [प्रच्छ]—पुच्छ३. रा० ७१६.—पुच्छांत.

रा० ७१३.—पुच्छसि. रा० ७३७.

—पुच्छिसामो रा० १६

पुच्छणा [प्रच्छना] ओ० ४३

पुच्छा [पृच्छा] ओ० १६०. जी० १।६१; ३।४,

१२, ३५, ४१, ४३, ८२, ६६ से १०२, ११३ से

११५, १२५, १५५, १५६, १६२, १६३, १६६,

१६८, १६९, १८७ से १६१, २३३, २३४, २४३,

७२२, ७३६; ८२०, ८३०, ८३४, ८३७, ८५६, ८५७,

८५६, ८६०, ८६८, ८७८, ८७९, १०११, १०४१,

१०४४, १०४५, १०५२, १०५६, १०६२ से १०६४,

१०६६, १०७४, १०८६, १११८, ११२६, ११३२;

४।६; ५।१७

पुच्छित्तव्य [प्रष्टव्य] जी० ३।३६, ७७

पुच्छिय [पृष्ट] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,

७५२ ७८६

पुच्छियव्य [प्रष्टव्य] जी० ३।२४४

पुट्ट [स्पृष्ट] ओ० १६५।६, १०. जी० १।४१;

३।२२, ५७१, ५७३, ५७७, ७१५, ७१७, ८०३,

८१६, ८२८

पुट्ट [पुष्ट] जी० ३।५६७

पुट्टलाभिय [पृष्टलाभिक] ओ० ३४

पुट्टि [पुष्टि] जी० ३।५६२

पुठ [पुट] रा० ३०. जी० ३।२८३, १०७८

पुठवि [पृथिवी] ओ० १८६, १६१ से १६५.

जी० १।६२, १२१ से १२५; २।१००, १०८,

१३०, १३५, १३८, १४८, १४९; ३।१६१, १६२,

१६५, १६६, ३०३, ७७५, ८३७, ८७४; ५।२०, ३३

पुढविकाइय [पृथ्वीकायिक] जी० १।१२, १३, ६२,

१२८; २।१०२, १११, १३६, १३८, १४६;

३।१३१ से १३५, १८३, १८४, १६४, १६५;

५।१, २, ५, ८, १८ से २०; ८।५; ९।१८२, १८४,

२५६, २५७, २६२, २६३, २६६

पुढविकाल [पृथ्वीकाल] जी० ५।१७, २२, ३०;

८।३; ९।७७, ८५, ८६

पुढविवकाइय [पृथ्वीकायिक] जी० १।६७;

२।१३६, १४६; ३।१२६, १३२; ५।१२, २०;

८।१, ३

पुढविसिलापट्टग [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० १८५.

जी० ३।२६७, ८५७, ८६२

पुढविसिलापट्टय [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० ४

पुढवी [पृथिवी] रा० १२४, १३३, ७५५, ७५७.

जी० २।१२७, १४८, १४९; ३।२ से ६, ११ से ३५, ३७ से ४०, ४२, ४४ से ५७, ५९ से ६६, ७३ से ८१, ८३ से ९८, १०३, १०४, १०६ से ११२, ११६, ११७, १२०, १२७, १२८; १।६।५, १८५ से १९१, २३०, २५७, ६००, ६०१, १००३, १०३८, १०५७ से १०५९, १०६३, १०६५, १०६६, ११११; ५।१७

पुढवीकाइयत्त [पृथ्वीकायिकत्व] जी० ३।१२८

पुढवीकाइयत्त [पृथ्वीकायिकत्व] जी० ३।११२८, ११३०

पुढवीसिलापट्टग [पृथ्वीशिलापट्टक] जी० ३।५७९

पुढवीसिलापट्टय [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० १३

पुण [पुनर्] ओ० ५२. रा० ७५०. जी० २।१५०

√पुण [पू]—पुणज्जइ. रा० ७८५

पुणम्भव [पुनर्भव] ओ० १९५

पुणो [पुनर्] ओ० ६३. जी० ३।८३८।१४

पुण [पूर्ण] रा० १७४, २८८, ७६३. जी० ३।११८, ११९, २८६, ४५४, ५८६, ७८४, ७८७, ८७८

पुण्य [पुन्य] ओ० ७१, १२०, १६०. रा० ६९८, ७५२, ७५३, ७७४, ७८९

पुण्यकलस [पूर्णकलस] ओ० ४८, ६४. रा० ५०

पुण्यव्यभ [पूर्णव्यभ] जी० ३।८७८

पुण्यव्यमाण [पूर्णव्यमाण] जी० ३।७८४, ७८७

पुण्यभट्ट [पूर्णभट्ट] ओ० २, ३, १९ से २२, ५२, ५३, ६५, ६६, ७०

पुण्यमासिणी [पूर्णमासी, पूर्णमासी] ओ० १२०, १६२. रा० ६९८, ७५२, ७८९. जी० ३।७२३, ७२९

पुण्यरत्ता [पूर्णरत्ता] ओ० ७१. रा० ६१

पुण्याग [पुन्याग] जी० १।७१

पुत्त [पुत्र] रा० ६७३, ७९१. जी० ३।६११

पुत्ताणुपुत्तिय [पौत्राणुपुत्रिक] रा० ७७६

पुष्प [पुष्प] ओ० २, ६, १९, ४७, ५५, ६७, ९२, ९४.

रा० १२, १३, २९, ३२, १५६, १५७, २५८, २७९

से २८१, २९१, २९३ से २९८, ३००, ३०५,

३१२, ३५१, ३५५, ५९४, ६५७, ६७०, ७७६.

जी० १।७१; ३।१७१, २७५, २८२, ३२९, ३३०,

३७२, ४१९, ४४५ से ४४८, ४५७ से ४६२,

४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५४७, ५५४,

५८०, ५८१, ५८६, ५९१, ५९६, ५९७, ६००,

६०२, ८३८, १५, ८४२, ८७२

पुष्पग [पुष्पक] ओ० ५१

पुष्पचंगेरिया [पुष्पचङ्गेरिका] रा० १२

पुष्पछज्जिया [पुष्पछाज्जिका] रा० १२

पुष्पदन्त [पुष्पदन्त] जी० ३।८६३

पुष्पमन्त [पुष्पवन्त] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४

पुष्पवदलय [पुष्पवार्दलक] रा० १२

पुष्पासव [पुष्पासव] जी० ३।८६०

पुष्पाहार [पुष्पाहार] ओ० ९४

पुष्पिय [पुष्पित] रा० ७८२

पुष्पुत्तर [पुष्पोत्तर] जी० ३।६०१

पुष्पोदय [पुष्पोदक] ओ० ६३

पुमत्त [पुस्त] ओ० १४१. रा० ७८९

पुर [पुर] ओ० २३. रा० ६७४, ६९५, ७९०, ७९१

पुरओ [पुरतम्] ओ० १९, ६४, ६६, ७०. रा० २०, १२४, १३९ से १६१, १७६, २११, २२१.

जी० ३।३२७, ३५६, ३७४, ३७६, ३८०, ३८५, ३९२, ३९५, ४१९, ८८७, ८८९

पुरओकाजं [पुरस्कृत्य] ओ० २५, १६४

पुरच्छिम [पौरस्त्य] जी० ३।३००

पुरतो [पुरतस्] रा० ४९ से ५६, २१५, २३३,

२५७, २५८, २९१, ८०२. जी० ३।२८८, ३१६ से ३२६, ३६३, ४५७, ६४१, ८९३, ८९७, ८९९, ९०१

पुरत्याभिमुह [पुरस्तादभिमुख] ओ० २१, ५४,

११७. रा० ४७, २७७, २८३, २८६, ६५७, ७६६,
 जी० ३१४४३, ४४६, ४५२, ५५७
पुराण्यम [पौरस्त्य] रा० १६, ४२, ४४, १२६, १७०,
 २१०, २१२, २३५, २३६, २४२, ६५६.
 जी० ३१३००, ३४०, ३४५, ३५१, ३७३, ३६७,
 ३६८, ४०४, ४४३, ४४६, ५५६, ५६२, ५६८,
 ५७७, ६२२, ६४७, ६६१, ६६६, ६६८, ६७३,
 ६८२, ६८४, ६८७, ६८८, ७०८, ७१०, ७३६,
 ७३६, ७६२, ७६४, ७६६, ७६८ से ७७०, ७७२,
 ७७३, ७७७, ७७८, ८००, ८१४, ८२५, ८५१,
 ८८२, ८८५, ९०२, ९३६, ९४४, १०१५,
 १०१६
पुराण्यमिल [पौरस्त्य] रा० ४७, ५६, २७७,
 २८३, २८६, २८८, २९१, २९८, ३०३, ३०८,
 ३१६, ३२४, ३२६, ३३२ से ३४३ ३४७ से
 ३५१, ३६५, ४१४, ४५४, ४७४, ५१५, ५३४,
 ५७५, ५८४, ६३५, ६५६, ६५७, ६६४.
 जी० ३१३३ से ३५, ३७, २१६, २२२, २२३,
 २२७, ४४३, ४४५, ४५२, ४५४, ४५७, ४६३,
 ४६८, ४७३, ४८४, ४८६, ४८४ ४८७ से ५०८,
 ५१२ से ५१६, ५२५, ५२६, ५३१, ५३३, ५३६,
 ५४०, ५४६, ५४७, ५५३, ५५६, ५५७, ५७७,
 ६६८, ६७३, ६८६, ६८२, ६८३, ७६८, ७७०,
 ७७२, ७७४, ७७६, ७७८, ८१०
पुरवर [पुनवर] जी० १६ जी० ३१५६६
पुरा [पुरा] रा० १८५, १८७. जी० ३१२१७,
 २६०, २६८, ३५८, ५७६
पुरिमताल [पुरिमताल] जी० ११५
पुरिस [पुनय] जी० १४, १६, १७, १८, ५२, ६३, ६४,
 १६५, १६८. रा० ८ २८, २८२, ६७१, ६८१ से
 ६८३, ६८७ से ६९१ ७००, ७०६, ७१४ से
 ७१६, ७३२, ७३५, ७३७, ७५१, ७५३ से ७५६,
 ७५८ से ७६२, ७६४, ७६५, ७६८, ७६९, ७७२,
 ७७४, ७७५, ७८७, ७८८. जी० २११, ७५ से
 ८८, ९० से ९३, ९५, ९६, ९८, १४१ से १५१;

३१२७१५, १४८, १४९, १६४, ४५७
पुरिसक्कार [पुनयकार] जी० ८६ से ९५, ११४,
 ११७, १५५ १५७ से १६०, १६२, १६७
पुरिसपुंडरीय [पुनयपुण्डरीक] जी० १४.
 रा० ६७१
पुरिसलक्षण [पुनयलक्षण] जी० १४६.
 रा० ८०६
पुरिसल्लिगसिद्ध [पुनयल्लिङ्गसिद्ध] जी० ११८
पुरिसवध [पुनयव्याघ्र] जी० १४. रा० ६७१
पुरिसवर [पुनयवर] जी० १४. रा० ६७१
पुरिसवरगन्धहस्ति [पुनयवरगन्धहस्तिन्] जी० १४,
 १६, २१, ५४. रा० ८, २६२, ६७१ जी० ३१४५७
पुरिसवरपुंडरीय [पुनयवरपुण्डरीक] जी० १६, २१,
 ५४. रा० ८, २६२. जी० ३१४५७
पुरिसवेद [पुनयवेद] जी० ११३६; २१६७, ६८;
 ६१२३, १२७
पुरिसवेदग [पुनयवेदक] जी० ६१३०
पुरिसवेध [पुनयवेद] जी० ११२५
पुरिसवेधग [पुनयवेदक] जी० ६१२१
पुरिसोह [पुनयसिंह] जी० १४, १६, २१, ५४.
 रा० ८, २६२, ६७१. जी० ३१४५७
पुरिसासीविस [पुनयसासीविष] जी० १४. रा० ६७१
पुरिसुताम [पुनयसुताम] रा० ८
पुरिसोताम [पुनयसुताम] जी० १६, २१, ५२, ५४.
 रा० २६२. जी० ३१४५७
पुरोवग [पुरोवग] जी० ६, १०
पुलंपुल [दे०] जी० ४६
पुलग [पुलक] जी० ८२. रा० १०, १२, १८, ६५,
 १६५, २७६
पुलय [पुलक] जी० ३१७
पुलाकिमिय [पुलाकमिक] जी० ११८४
पुलिदी [पुनिन्दी] जी० ७०. रा० ८०४
पुलिण [पुलिन] रा० २४५. जी० ३१४०७
पुण्य [पुर्व] जी० ७२, ११६, १५६, १६७, १८२.
 रा० ४०, १३२, १७३, ६८५, ७७२.

जी० ३१६५, २८५, ३५८, ८४१, ८८१, ६८८,
६८६

पुञ्ज [पूर्वाङ्ग] जी० ३८४१

पुञ्जकोटि [पूर्वकोटि] जी० ११०१, ११६, १२३,
१२४; २१२२, २४, २६ से ३४, ४८ से ५०, ५३
से ६१, ८३, ८४, १०६, ११३, ११४, ११६, १२२
से १२४; ३१६१, १६२, ११३५; ६६; ७११२;
६४११, १४२, १४४, १४६, १६२, २००, २०३,
२१२, २२५, २३८, २७३

पुञ्जकोटिय [पूर्वकोटिक] ओ० १८८

पुञ्जकम [पूर्वकम] जी० ३१८०

पुञ्जतथ [पूर्वतथ] रा० ४८. जी० ३१५५८ से
५६०, ५६२

पुञ्जपुरिस [पूर्वपुरिस] ओ० २

पुञ्जभजित [पूर्वभजित] जी० ३१८१

पुञ्जभव [पूर्वभव] रा० ६६७

पुञ्जरत्त [पूर्वरत्त] रा० १७३

पुञ्जविदेह [पूर्वविदेह] जी० २१२६, ५६, ६५, ७०,
७२, ८५, ६६, ११५ १२३, १३२, १३७, १३८,
१४७, १४६; ३४४५, ७६५

पुञ्जापुञ्जी [पूर्वापुञ्जी] ओ० १६, २०, ५२, ५३,
रा० ६८६, ६८७, ७०६, ७११, ७१३

पुञ्जाभिमुख [पूर्वाभिमुख] रा० ८

पुञ्जावर [पूर्वावर] रा० १६३, १६६. जी० ३१७४,
३३५, ३५५, ३५७, ६५८, ७२८, ७३३, १००६,
१०२३

पुञ्जि [पूर्व] ओ० ११७. रा० ६३, ६५, २७५,
२७६, ७८१ से ७८७. जी० २१५०; ३१४४१,
४४२

पुहत्त [पृथक्त्व] जी० ११०३, १११, ११२, ११६,
१२४, १२५; २१४८ से ५०, ५३, ५४, ५६, ८२
से ८४, ६२, ६३, १२२ से १२५, १२८; ३११०,
१६७, ११५५, १११६, ११३५, ११३७; ४११५;
५१६२६; ६१६, ११; ६१८६, ६३, १०२, १०६,
१२३, १२८, २१२, २१७, २२५, २३८, २४४,
२७३, २८०

पुहत्तावियक्क [पृथक्त्ववितर्क] ओ० ४३

पुहत्तम्म [पृथक्त्वमन्] ओ० १३४

पुहत्ताए [पृथक्त्वितुम्] ओ० १३६

पुह्य [पृथक्] ओ० १४. रा० ६७१

पुह्य [पृथक्] रा० ६, १२. जी० ३१२२२

पुय [पृथक्] ओ० ६८

पुयण [पृथक्] ओ० ५२. रा० १६, ६८७, ६८६

पुयणिज्ज [पृथक्तीय] ओ० २. रा० २४०, २७६.
जी० ३१४०२, ४४२

पुयफलिवण [पृथक्त्वलीवण] जी० ३१५८१

पूर [पूरय्]—पूरैइ. ओ० १७४

पूरिम [पूरिम, पूरय्] ओ० १०६, १३२. रा० २८५.
जी० ३१४५१, ५६१

पूस [पुष्य] जी० ३१८३८, ३२

पूसमाण [पुष्यमाण] जी० ३१७७

पूसमाणय [पुष्यमाणय] ओ० ६८

पूसमाणव [पुष्यमाणव] रा० २४

पेच्च [प्रेत्य] ओ० ८८

पेच्चभव [प्रेत्यभव] ओ० ५२. रा० ६८७

पेच्छणघरग [प्रेक्षणगृह] जी० ३१२६४

पेच्छणिज्ज [प्रेक्षणतीय] ओ० १. जी० ३१५६७

पेच्छाघर [प्रेक्षागृह] जी० ३१५६१, ६०४

पेच्छाघरमंडव [प्रेक्षागृहमण्डप] रा० ३४, २१५,
२१६, २२०, २२१, ३०० से ३०४, ३३१ से
३३५, ३३८ से ३४२. जी० ३१७७६, ३७६,
३८०, ४१२, ४६५ से ४६६, ४८६ से ४९०,
५०३ से ५०७, ८८६, ८८३

पेच्छिज्जमाण [प्रेक्ष्यमाण] ओ० ६६

पेच्छित्तए [प्रेक्षितुम्] ओ० १०२, १२५

पेज्ज [प्रेय्य] ओ० ७१, ११७, १६१, १६३.
रा० ७६६

पेज्जवंधण [प्रेय्यवंधण] जी० ३१६११

पेज्जविवेग [प्रेयोविवेक] ओ० ७१

पेढ [पीठ] जी० ३१६८८

पेम [प्रेमन्] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८, ७५२,
७८६

पेम्म [प्रेमन्] रा० ७५३
 पेया [पेया] रा० ७१, ७७
 पेयावायम [पेयावादक] रा० ७१
 पेरंत [पर्यन्त] ओ० १६२, जी० ३१२५, ३००,
 ५६६, ५६८, ५६९, ७०८, ७११, ८००, ८१४,
 ८२५, ८५१, ८३६, ८४४
 पेलव [पेलव] रा० २८५, जी० ३४५१
 पेस [प्रेष] जी० ३१६१०
 पेसल [पेसल] जी० ३१८१६, ८६०
 पेसुण्ण [पैसुण्ण] ओ० ७१, ११७, १६१, १६३,
 रा० ७६६
 पेसुण्णविजेग [पैसुण्णविवेक] ओ० ७१
 पेहुणमिजा [दे० पेहुणमज्जा] जी० ३१२८२
 पोढरीय [पोण्डरीक] ओ० १५०, रा० २३, २६,
 १३७, १७४, १६७, २७६, २८८, ८११,
 जी० २१२५६, २८२, २८६, २६१, ३०७
 पोगल [पुद्गल] ओ० १६६, १७०, रा० १०,
 १२, १८, ६५, २७६, ७७१, जी० १५५, ५०, ६५,
 १३५; ३१५५, ५६, ८७, ६२, ६७, १०६, १२७,
 १२८, १२६१३, १०, ४४५, ७२४, ७२७, ७८७,
 ६७४, ६७६, ६७७, ६८२ से ६८५, ६८८ से
 ६९७, १०८१, १०८०, १०८६
 पोगलपरियट्ट [पुद्गलपरिवर्त] जी० २१६५, ८८,
 १३२; ५६, २६; ६१३, २६, ३३, ६६, ७१,
 ७३, ७८, १४६, १६४, १६५, १७८, २०२, २०४
 पोच्छल [पो-उत्-शल्] — पोच्छलेति,
 रा० २८१, जी० ३४४७
 पोट्टरोग [दे०] जी० ३१६२८
 पोतय [पोतज] जी० ३११४६
 पोत्तिय [पोतिक] ओ० ६४
 पोत्तिया [दे०] जी० ११८६
 पोत्थयग्गाह [पुस्तकग्राह] ओ० ६४
 पोत्थययण [पुस्तकयण] रा० २७०, २८७, २८८,
 ५६४, जी० ३४३५, ४५३, ४५४, ५४७
 पोय [पात] ओ० ४६
 पोयय [पोतज] जी० ३११४७, १६१, १६३, १६४

पोराण [पुराण] ओ० २, रा० ११, ५६, १८५,
 १८७, ६७८, जी० ११५०; ३१२७, २६७, २६८,
 ३५८, ५७६
 पोरेकव्व [पुरःकाव्य] ओ० १४६, रा० ८०६
 पोरेवच्च [पीरपत्त्य, पीरोवृत्त्य] ओ० ६८,
 रा० २८२, जी० ३१३५०, ५६३, ६३७
 पोस [पोस] जी० ३५६८
 पोसह [पीपध] ओ० १२०, १६२, रा० ६७१,
 ६६८, ७५२, ७८७, ७८६
 पोसहसाला [पीपधशाला] रा० ७६६
 पोसहोववास [पीपधोपवास] ओ० ७७, १२०, १४०,
 १५७, रा० ६७१, ७५२, ७८७, ७८६

(क)

✓ फंद [सन्द] — फंदइ, रा० ७७१, — फंदंति,
 जी० ३४७२६
 फंदंत [स्पन्दमान] रा० ७७१
 फंदिय [स्पन्दि] रा० १७३, जी० ३१२८५, ५८८
 फणस [पनस] ओ० ६, १०, जी० ११७२; ३१५८२
 फरमु [परशु] रा० ७६५
 फरिस [स्पर्श] ओ० १५, १६१, १६३, रा० २८५,
 ६७२, ६८५, ७१०, ७५१, ७७४, जी० ३४५११,
 ५८६, ५८२
 फरस [परश] ओ० ४०, ४६, रा० ७६५,
 जी० ३१६६, ११८
 फल [फल] ओ० ६, ७१, १३५, रा० १५१, २२८,
 २८१, ६७०, ८१४, जी० ११७१, ७२; ३११७४,
 २७४, ३२४, ३८७, ५८६, ६००, ६०२, ६७२
 फलग [फलक] ओ० ३७, १२०, १६२, १८०, रा०
 १६, १५३, १७५, १६०, २३५, २३६, २४०, ६६८,
 ७०४, ७०६, जी० ३१२६४, २८७, ३२६, ३६७,
 ३६८, ४०२, ६०२
 फलगगाह [फलकग्राह] ओ० ६४
 फलमंत [फलवत्] ओ० ५, ८, जी० ३१२७४
 फलय [फलक] रा० ७११, ७१३, ७५२, ७७६, ७८६,
 जी० ३१३२६, ४०२

फलवित्ति [फलवृत्ति] जी० ३१२१७, २६७, २६८,
३५८, ५७६

फलविवाह [फलविपाक] ओ० ७४१६. रा० १८५,
१८७

फलहृत्सेज्जा [फलकमय्या] ओ० १५४, १६५, १६६.
रा० ८१६

फलासव [फलामव] जी० ३१८०

फलाहार [फलाहार] ओ० ६४

फलिय [फलित] रा० ७८२

फलित् [परिध] ओ० १, १६, १६२. रा० ६६८,
७५२, ७८६. जी० ३१५६६

फलित् [स्फटिक] रा० १०, १२, १८, ६५, १६५, २७६.
जी० ३१७, ४५१, ८५४

फलित्हरयण [परिधरत्न] रा० २४६, ३५५.
जी० ३१४१०, ५२०

फलित्हा [परिधा] ओ० १

फाणिय [फाणित] ओ० ६३

फालिय [स्फाटिक] ओ० १५४, १७४.
जी० ३१२८६, ३२७

फालिय [पाटित, स्फाटित] रा० ७६४, ७६५

फालियग [पाटितक, स्फाटितक] ओ० ६०

फालियमय [स्फटिकमय] जी० ३१७४७

फालियामय [स्फटिकमय] ओ० १६. रा० २५४.
जी० ३१४१५, ८५७, ६११, १००८

फास [स्पर्श] ओ० १३, २७, ५७, ५१, ७२, १६६,
१७०. रा० ३१, ३३, ३७, ४५, ६५, १७२, १८५,
१६६, २०३, २३७, २४५, ८१३. जी० ११५, ३६,
५०, ५८, ७३, ७८, ८१; ३१५८, ८५, ८७, ६६,
१२२, १२३, १२७, १३, २७१, २८४, २६७, ३०६,
३११, ३३६, ३६४, ३७६, ३६६, ४०७, ४१२,
४२१, ५०८, ६०१, ६०२, ६४५, ६४८, ६५६,
६७०, ७२४, ७२७, ७५७, ८६०, ८६६, ८७२, ८७८,
८७२, ८८१, ८८२, १०७६, १०८१, १०८८,
१११७, १११८, ११२४, ११२५

फासओ [स्पर्शवत्] जी० ११४०, ५०

फासतो [स्पर्शवत्] जी० ३१२२

फासमंत [स्पर्शवत्] जी० ११३३, ३६

फासिदिय [स्पर्शनिद्रिय] ओ० ३७. जी० ११२२;
३१६७६

फासुय [प्रासुक, स्पर्णुक] ओ० ३७, १२०, १६२.
रा० ६६८, ७५२, ७७६, ७८६

फिडिय [स्फिटित] ओ० २३

फुंफुअग्नि [दे०] जी० २१७४

फुटमाण [स्फुटत्] रा० ७१०, ७७४

फुटिज्जंत [स्फोटयमान] रा० ७७

फुड [स्पृष्ट] ओ० १६६, १७०

फुड [स्फुट] रा० ७७४

फुडिय [स्फुटित] जी० ३१६६

फुल्ल [फुल्ल] ओ० २२. रा० १७४, ७२३, ७७७,
७७८, ७८८. जी० ३११६८, ११६, २८६

फुल्लग [फुल्लक] जी० ३१५६३

फुल्लावलि [फुल्लावलि] रा० २४. जी० ३१२७७

√ फुस [स्पृश] — फुसद्. ओ० ७१. — फुसंतु.
ओ० ११७. रा० ७६६

फुसित्ता [स्पृष्टत्वा] ओ० १६६

फुसिय [स्पृष्ट] रा० ६, १२, २८१. जी० ३१४४६

फुसिज्जंत [फूत्क्रियमान] रा० ७७

फेण [फेन] ओ० १६, ४६, ४७. रा० ३८, १३०,
१६०, २२२, २५६. जी० ३१३००, ३१२, ३३३,
३८१, ४१७, ५६६, ८६४

फेणक [फेनक] रा० ६६

फोडेमाण [स्फोटयत्] ओ० ५२. रा० ६८८

(ब)

बडसिया [वकुशिका] रा० ८०४

बंध [बन्ध] ओ० ४६, ७१, १२०, १६१ से १६३.
रा० ६६८, ७५२, ७८६

बंध [बन्ध] — बन्धद्. ओ० ८६. रा० ७६५.
— बन्धति. रा० ७७४. — बन्धति रा० ७५.
— बन्धाहि. रा० ७७४

बंधठिति [बन्धस्थिति] जी० २१७५, ६७, १३६, १५१

बंधण [बन्धन] ओ० १३, ४६, १७१, १६५, २१.
रा० ७५४, ७५६, ७६४, ७७४

बंधित्तए [बद्धम्] रा० ७७४

बंधिता [बद्धवा] रा० ७५

बंधुजीवगुम्भ [बन्धुजीवकगुम्भ] जी० ३१५८०

बंध [ब्रह्मन्] ओ० २५, ५१, १६२, रा० ६८६

जी० ३१०४६, १०६६, १०८८, १०८४, १११०

बंधचेर [ब्रह्मचर्य] जी० ३१६६६

बंधचेरवास [ब्रह्मचर्यवास] ओ० १५४, १६५, १६६

रा० ८१६

बंधणय [ब्रह्मण्यक] ओ० ६७

बंधदत्त [ब्रह्मदत्त] जी० ३१११७

बंधलीग [ब्रह्मलीक] जी० ३१०७६

बंधलीय [ब्रह्मलीक] ओ० ११४, ११७, १४०

जी० २१४८, १४६; ३१०३८, १०५६, ११०२

✓बज्ज [बन्ध]—बज्जती. ओ० ७४१४

बत्तीस [द्वाविंशत्] ओ० ३३, रा० १२४

जी० ३१५

बत्तीसइगुण [द्वाविंशद्गुण] जी० २११५१

बत्तीसइबद्ध [द्वाविंशद्बद्ध] रा० ७३, ११८

बत्तीसइबद्धय [द्वाविंशद्बद्धक] रा० ७१०, ७७४

बत्तीसतिबद्ध [द्वाविंशद्बद्ध] रा० ६३, ६५

बत्तीसिध्या [द्वाविंशिका] रा० ७७२

बद्ध [बद्ध] ओ० ५, ८, ५७, रा० १३२, २३५, ६६४,

६८३, ७५४, ७५६, ७६४, ७७१, ७७४

जी० ३१२२, १७४, २७४, ३०२, ३२६, ३६७, ५६२

बद्धग [बद्धक] रा० ७७

बद्धीसा [बद्धीया] रा० ७७

बष्प [ब्रह्म] जी० ३१५६२

बव्वरिया [बव्वरिका] रा० ८०४

बव्वरी [बव्वरी] ओ० ७०

बरहिण [बहिन्] ओ० ६, जी० ३१२७४

बल [बल] ओ० २३, ६७, ७१, ८६ से ६६, ११४,

११८, १५५, १५० से १८०, १६२, १८७

रा० १२, १३, ३१, ६५७, ६७४, ६६५, ७५८, ७५६,

७८७, ७८८, ७९०, ७९१ जी० ३१११८, ४४६,

५८६, ५६२

बलदेव [बलदेव] ओ० ७१, जी० ३१७६५, ८४१

बलव [बलवत्] ओ० १४, रा० १२, ६७१, ७५८,

७५६, ३१११८, ११६

बलवाउय [बलवाउय] ओ० ५५ से ६३

बलसंपण [बलसंपन्न] ओ० २५, रा० ६८६

बलागा [बलाका] रा० २६

बलाया [बलाका] जी० ३१२८२

बलाभिओग [बलाभिओग] ओ० १०१, १२४

बलाहक [बलाहक] जी० ३१७८५, ७८६, ८४१

बलाह्य [बलाहक] रा० २६, जी० ३१२८२

बलि [बलि] जी० ३१२८० से २४३

बलिकम्म [बलिकम्म] ओ० २०, ५२, ५३, ७०,

रा० ६८३, ६८५, ६८७ से ६८६, ६८२, ७००,

७१०, ७१६, ७२६, ७५१, ७५३, ७६५, ७७४,

७६४, ८०२, ८०५

बलिपीठ [बलिपीठ] रा० २७२, २७३, ६५४, जी०

३१४३७, ४३८, ५५४, ५५६

बलिविसज्जण [बलिविसज्जन] रा० ६५४, जी०

३१५५६

बल्लकी [बल्लकी] रा० ७७

बहली [बहली] ओ० ७०, रा० ८०४

बहुव [बहु] ओ० १२, १७, २३, ४७ से ५२, रा०

१६, १७, २८, २३, ५४, ५५, ७१ से ७५, ७६ से

८१, ८३, ११२ से ११८, १३२, १५३, १६७, १६८,

१७८ से १८०, १८२, १८४, १८५, १८७, १८२

से १६४, १६६, २३५, २३६, २४०, २४६, २८०,

२८२, २८६, ६८७ से ६८६, ६८५, ७०३,

७०४, जी० ३१८७, २१७, ३४८, ३५८, ३५६,

३६७, ३६७, ३६८, ४०२, ४१०, ४११, ४२०,

४४३, ४४८, ४५५, ४५६, ५४६ से ५८३, ५८६ से

५६५, ६४०, ७०२, ७२४, ७२६, ७२७, ७२६,

७८५ से ७८७, ८०७, ८२६, ८४१, ८५७, ८०२,

८१७, १०३०, १०३६, १०८१

बहि [बहि] रा० १३०, जी० ३१३००

बहिया [बहिय, बहिस्तात्] ओ० २, रा० २, जी०

३१८३८१

बहु [बहु] ओ० १४, २३, ५२, ६३, ६४, ६८, ७०, ६१,
६२, ६४, ११४, ११७, १४०, १४१, १५४, १५५,
१५७ से १६०, १६२, १६५, १६६, १६५. रा० ७,
१५, ५१, ५६, ५८, १२४, १७४, १८१, १८३, १८५,
२४०, २७६, २८२, २८१, ६५७, ६७१, ६७५,
६८३, ६८८, ७१८, ७५२, ७७४, ७८७ से ७८९
७९६, ८०३, ८०४, ८१६. जी० ३११११, ११८,
११६, २५६, २६६, २८६, २८३, २८५, ३८८,
३९०, ४०२, ४४२, ४८८, ४५७, ५५७, ५६३,
५८६, ५८४ से ५८५, ६३७, ६५६, ७२१, ७३८,
७४३, ७५०, ७६०, ७६३, ८५७, ८६३, ८६६,
८७५, ९०१, ९१७, ९६५, १०२५, १०३८

बहुउदग [बहुदक] ओ० ६६

बहुगुणतर [बहुगुणतर] रा० ७१८

बहुजन [बहुजन] ओ० २, १४, ५२, ११८, १४१.
रा० ६७१, ६७५, ६८७

बहुतरक [बहुतरक] जी० ३१०१

बहुतरग [बहुतरक] जी० ३१६६, ११३, ११४

बहुदोस [बहुदोष] ओ० ४३

बहुपडिपुण [बहुप्रतिपुर्ण] ओ० १४३. रा० १५१,
१५२, ८०१. जी० ३१३२४, ३२५

बहुपुरिसपरंपरागय [बहुपुरिपरम्परागत] रा०
७७३

बहुप्पकार [बहुप्रकार] जी० ३१५६५

बहुप्पगार [बहुप्रकार] जी० ३१५८६ से ५८८,
५९३

बहुप्पसन्न [बहुप्रसन्न] ओ० १११ से ११३,
१३७, १३८

बहुवीय [बहुवीज] जी० ११७०, ७२

बहुवीयग [बहुवीजक] जी० ११७२

बहुमञ्ज [बहुमञ्ज] ओ० ८, १६२. रा० ३, ३२,
३५, ३६, ३६, ६६, १२५, १६४, १८६, १८८, २०४,
२१७, २१८, २२७, २३८, २५२, २६१, २६३,
२६५, ३००, ३२१, ३२६, ३३३, ३३८, ३५६,
४१५, ४७८, ५३६, ५६६, ७३५, ७७२. जी०

३१२६३, ३१०, ३१३, ३१८, ३३८, ३५६, ३५६,
३६१, ३६४, ३६५, ३६८, ३६८, ३७७, ३८६,
४००, ४१३, ४२२, ४२७, ४६०, ४६५, ४८३,
४९१, ४९८, ५०३, ५२१, ५२७, ५३५, ५४२, ५४६,
५५४, ६३४, ६३६, ६४२, ६४६, ६४६, ६६३,
६६८, ६७१ से ६७३, ६७६, ६८५, ६८१, ७३७,
७५६, ७५८, ७६२, ८३१, ८८२, ८८४, ८८७,
८९१, ९०६, ९११, ९१३, ९१८, १०३६

बहुमय [बहुमत] ओ० ११७. रा० ७५० से ७५३,
७६६

बहुमाण [बहुमान] ओ० १४, ४०. रा० ६७१

बहुय [बहुक] ओ० १७१. रा० १६७.

जी० ११७२, १४३; रा० ६८ से ७२, ६५, ६६,
१३४ से १३८, १४१ से १४६; ३१४०२, ५७६,
१०२५, १०३७, १०३८; ४१६, २२, २५; ५१६,
२०, २६, २७, ३२ से ३६, ५२, ५६, ६०; ७१२०,
२२, २३; ६१७, १४, ५५, २५० से २५३, २५५,
२८६ से २८७

बहुरय [बहुरत] ओ० १६०

बहुल [बहुल] ओ० १, ७, ८, १०, ४६, ४६.

रा० ६७१. जी० ३१११८, ११६, २३६, २७५,
२७६

बहुविह [बहुविध] ओ० १६५, १६

बहुसम [बहुसम] रा० २४, ३२, ३३, ३५, ६५, ६६,
१२४, १७१, १८६ से १८८, २०३, २०४, २१७,
२३७, २३८, २६१. जी० ३१२१८, २५७, २७७,
३०६, ३१०, ३३६, ३५६ से ३६१, ३६४, ३६५,
३६८, ३६८, ३७२, ३८६, ४००, ४२२, ४२७,
५८०, ६२३, ६३३, ६३४, ६४५, ६४६, ६४८,
६४६, ६५६, ६६२, ६६३, ६७०, ६७१, ६७३,
६८०, ६८१, ७३७, ७५५ से ७५८, ७६८, ८८३,
८८४, ८९०, ९०५, ९०६, ९१२, ९१३, १००३,
१०३८, १०३६

बाण [बाण] रा० ३६. जी० ३१२७६

बाणवृत्ति [बाणवृत्ति] जी० ३१८५५

बाणगुम्म [बाणगुल्म] जी० ३.५८०
 बादर [बादर] जी० ३।८४१; ५।२६ से ३१, ३५,
 ५१, ५२, ५८ से ६०
 बादरआउकाइय [बादरअण्कायिक] जी० ५।२८
 बादरणिओत [बादरनिगोद] जी० ५।२६
 बादरणिओव [बादरनिगोद] जी० ५।२८ से ३०,
 ४०, ४७ से ४६, ५२
 बादरणिओवजीव [बादरनिगोदजीव] जी० ५।५३.
 ५५, ५८ से ६०
 बादरनिगोद [बादरनिगोद] जी० ५।४०
 बादरतसकाइय [बादरतसकायिक] जी० ५।२८ से
 ३०, ३३, ३५
 बादरतेउक्काइय [बादरतेजस्कायिक] जी० १।७८,
 ७६; ५।२८
 बादरपत्तेयवणस्सतिकाइय [बादरप्रत्येकवनस्पति-
 कायिक] जी० ५।२६
 बादरपुढवि [बादरपृथ्वी] जी० ५।२६
 बादरपुढविकाइय [बादरपृथ्वीकायिक]
 जी० १।५८; ३।१३२, १३४; ५।२, ३, २८ से
 ३०
 बादरवणस्सइकाइय [बादरवनस्पतिकायिक]
 जी० ५।३०
 बादरवणस्सति [बादरवनस्पति] जी० ५।२६
 बादरवणस्सतिकाइय [बादरवनस्पतिकायिक]
 जी० ५।२८ से ३१
 बादरवाड [बादरवायु] जी० ५।२६
 बादरवाडकाइय [बादरवायुकायिक] जी० ५।२८,
 ३०
 बादरवाडकाइय [बादरवायुकायिक]
 जी० १।८१
 बायर [बादर] जी० १।४४; ३।८४१; ५।२८, २६,
 ३१ से ३६; ६।६५, ६७, ६६, १००
 बायरआउकाइय [बादरअण्कायिक] जी० ५।२८
 बायरआउकाइय [बादरअण्कायिक]
 जी० १।६३, ६५

बायरकाल [बायरकाल] जी० ६।६६
 बायरणिओद [बादरनिगोद] जी० ५।३८
 बायरणिओय [बादरनिगोद] जी० ५।३१, ३३, ३५,
 ३६
 बायरतसकाइय [बादरतसकायिक] जी० ५।३१ से
 ३४, ३६
 बायरतेउक्काइय [बादरतेजस्कायिक]
 जी० ५।३१, ३३, ३४
 बायरतेउक्काइय [बादरतेजस्कायिक]
 जी० १।७६; ५।३३, ३४, ३६
 बायरपुढवि [बादरपृथ्वी] जी० ५।३१, ३३, ३५, ३६
 बायरपुढविकाइय [बादरपृथ्वीकायिक]
 जी० १।१३, ५७, ६५, ७४; ५।३१, ३३, ३४, ३६
 बायरपुढविकाइय [बादरपृथ्वीकायिक]
 जी० १।५७, ५८, ६२
 बायरवणस्सइकाइय [बादरवनस्पतिकायिक]
 जी० १।६६, ६८, ६६, ७२ से ७४; ५।३३, ३४,
 ३६
 बायरवणस्सतिकाइय [बादरवनस्पतिकायिक]
 जी० ५।३१, ३३ से ३६
 बायरवाडकाइय [बादरवायुकायिक] जी० ५।३४
 बायरवाडकाइय [बादरवायुकायिक] जी० १।८०,
 ८२
 बायाल [बावत्वारिणत्] जी० ३।१०२२
 बायालीस [बावत्वारिणत्] ओ० १६२.
 जी० १।११२
 बारस [बादशन्] ओ० ६०. रा० ४३. जी० १।८६
 बारसभत्त [बादशभक्त] ओ० ३२
 बारसम [बादश] रा० ८०२
 बारसाह [बादशाह] जी० १४४
 बाल [बाल] रा० २७, ३१, ७५८, ७५६.
 जी० ३।२८०, २८४, ६६० से ६६७
 बालतवोकम्म [बालतपःकर्मन्] ओ० ७३
 बालदिवाकर [बालदिवाकर] रा० २७.
 जी० ३।२८०

बालभाव [बालभाव] रा० ८०६, ८१०

बालविहवा [बालविधवा] ओ० ६२

बालिय [बाल] रा० ४५

बावट्ट [द्रावट्ट] जी० ३१३२

बावट्टि [द्रावट्टि] रा० २०६, जी० ३१६१

बावण [द्रिपञ्चाशत्] जी० ३१६७

बावत्तर [द्रावत्तति] जी० ३१६३२

बावत्तरि [द्रावत्तति] रा० २०६, जी० १११६

बावन्न [द्रिपञ्चाशत्] ओ० १२६

बावीस [द्राविशति] ओ० १५४, रा० ८१६,

जी० ११५६

बाहल्ल [बाहल्य] ओ० १६२, रा० ३६, १३७,

१८८, २१८, २२१, २२४, २३०, २३८, २४२,

२४४, २४६, २५२, २६१, २७२, जी० ३५, १४

से २७, ३६ से ४७, ५२, ७३ से ७५, ७७, ८०,

१२४, १२५, १२७, २३२, २५७, ३०७, ३१०,

३५५, ३६१, ३६५, ३७७, ३८०, ३८३, ३८५,

३६२, ४००, ४०४, ४०६, ४०८, ४१३, ४२२,

४२७, ४३७, ६३४, ६४२, ६४४, ६४६, ६५३,

६५५, ६६८, ६७१, ७२४, ७२५, ७२७, ७२८,

७५८, ८६१, ८६३, ८६५, ८६७, ८६८, ८७६,

१००६, १०१० से १०१४, १०६५, १०६६

बाहा [बाहु] ओ० ११६, जी० ३१५४, ४१५

बाहि [बाहिस्] रा० ७७२, जी० ३१७७

बाहिर [बाह्य] ओ० ६, रा० ४३, जी० ३१७८,

२३६, २७५, ६४३, ६८१, ७६८, ७६९, ७७५,

८३१, ८३८, १२, ८४५, १०५५

बाहिरग [बाहिरक, बाह्यक] जी० ३१७८४, ७८७

बाहिरय [बाहिरक, बाह्यक] ओ० ३०, ३१, ३७,

जी० ३१६५८, ७८२, ७८६, ७८७, ६६० से ६६७

बाहिरिय [बाहिरिक, बाह्यक] रा० ६६२,

जी० ३१२३५ से २३६, २४१ से २४३, २४६,

२४७, २४८, २५०, २५४ से २५६, २५८, २४३,

४४७, ५६०, ७३३, ८४२, १०४० से १०४२,

१०४४, १०४६, १०४७, १०४८ से १०५३

बाहिरिया [बाहिरिका] ओ० १८, २०, ५३, ५५,

५८, ६० से ६३ रा० ६८३, ६८५, ७०८, ७५४,

७५६, ७६२, ७६४

बाहिरिल्ल [बाह्य] जी० ३१७२३, १००७

बाहु [बाहु] ओ० १६, रा० १२, ७५८, ७५९,

जी० ३१११८, ५६६

बाहुजुद्ध [बाहुजुद्ध] ओ० १४६, रा० ८०६

बाहुजोहि [बाहुजोधिन्] ओ० १४८, १४९,

रा० ८०६, ८१०

बाहुप्पमहि [बाहुप्पमदिन्] ओ० १४८, १४९,

रा० ८०६, ८१०

बिहय [द्वितीय] ओ० ४७, १७६, १८२,

जी० ३१२२६

बिट [वृन्त] रा० २२८

बिदिय [बिन्द्रिय] ओ० १८२

बिबु [बिन्दु] ओ० २३

बिबफल [बिम्बफल] ओ० १६, ४७, जी० ३१५६६

बिहणिज्ज [बृहणीय] जी० ३१६०२, ८६०, ८६६,

८७२, ८७८

बिबवोयण [दे०] रा० २४५, जी० ३१४०७

बिलपंतिथा [बिलपंत्तिका] रा० १७४, १७५, १८०,

जी० ३१२८६, २८७, २८२, ५७६, ६३७, ७३८,

७४३, ७६३, ८५७, ८६३

बिसालग [द्विशालक] जी० ३१५६४

बीभच्छ [बीभत्स] जी० ३१८४

बीय [बीज] ओ० १३५, १८४

बीय [द्वितीय] ओ० १७४

बीयग [बीयक] जी० ३१२८१

बीयगुम्म [बीजगुह्य] जी० ३१५८०

बीयबुद्धि [बीजबुद्धि] ओ० २४

बीयमंत [बीजवत्] ओ० ५, ८, जी० ३१२७४

बीयय [बीयक] रा० २८

बीयसत्तराहंविद्या [द्वितीयसत्तराहंविद्या] ओ० २

बीयाहर [बीजाहर] ओ० ६४

बुक्कार [दे०]—बुक्कारेति. रा० २८१,

जी० ३१४४७

√बुज्ज [दे०] — बुज्जइ. ओ० १७७. — बुज्जंति.
ओ० ७२. जी० ११३३. — बुज्जिहति.
ओ० १६६. — बुज्जिहति. ओ० १५४.
रा० ८१२

√बुज्ज [बुध्] — बुज्जिहति. ओ० १५१

बुज्जहिता [बुद्धवा] ओ० १५१

बुद्ध [बुद्ध] ओ० १६, २१, ५४, १६५, २०. रा० ८,
२६२. जी० ३४५७

बुद्धबोहियसिद्ध [बुद्धबोधितसिद्ध] जी० ११८

बुद्धि [बुद्धि] रा० ६७५

बुद्धुय [बुद्धुय] ओ० २३

बुह [बुध] ओ० ५०

√बू [बू] — बूया. रा० ७३२

बूर [बूर] ओ० १३. रा० ७३२. जी० ३१२८४,
२६७, ३११, ४०७

बेइन्द्रिय [दीन्द्रिय] जी० ११८३, ८४, ८७, ८८,
१२८; २१०१, १०३, ११२, १२१, १३१, १३६,
१३८, १४६, १४६; ३१३०, १३६, १६६;
४११, ४, ८, १२, १६, २०, २१, २३, २५; ८११,
३, ५; ६११, ३, ५, ७, २६४

बैठ [वृत्त] जी० ३१७४

बैठट्टाह [वृत्तस्थायिन्] रा० ६, १२

बैन्दिय [दीन्द्रिय] जी० ४११७; ६१६७, १६६,
२२१, २२३, २६४

बेयाहिय [द्व्याहिक] जी० ३१६२८

बेलंव [वेलम्ब] जी० ३१७२४

बेला [बेला] जी० ३१७३३

बोड [दे०] जी० ३१५६६

बोदि [दे०] ओ० ४७, ७२, १६५, १२. रा० ७७२

बोद्धव्य [बोद्धव्य] ओ० १६५१५, ६.

जी० ३१२६११०

बोधव्य [बोद्धव्य] जी० १६६

बोधि [बोधित] जी० ३१५६६, ५६७

बोल [दे०] ओ० ४६, ४६, ५२. रा० १५, ६८७,
६८८. जी० ३१६२७, ८४२, ८४५

बोह्य [बोधक] ओ० १६, २१, २२, ५४. रा० ८,

२६२, ७७७, ७७८, ७८८. जी० ३४५७

बोहि [बोधि] ओ० १५१. रा० ८१२

बोहिय [बोधिदय] रा० ८, २६२. जी० ३४५७

बोहिय [बोधित] ओ० १६

भ

भइ [भृति] रा० ७८७, ७८८

भइणी [भगिनी] जी० ३१६११

भइय [भक्त्र] ओ० १६५, १५

भइय [भृति] रा० १२

भंगुर [भङ्गुर] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७

भंजिजमाण [भज्यमान] रा० ३०

भंड [भाण्ड] ओ० ४६, ११७. रा० ३०, १५२,

२६६, २६८, २८४, ४७५, ५३५, ७७४, ७६६.

जी० ३१२८३, ३२५, ४२६, ४३२, ४५०, ५३४,

५४१, ११२८, ११३०

भंग [दे०] ओ० ५६

भंजियालिछ [भण्डिकालिञ्छ] जी० ३११८

भंत [भदन्त] ओ० ६६, ७६, ८४ से ६५, ११४,

११७, ११८, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७,

१६६ से १७२, १७४, १७५, १७७, १८१, १८४ से

१६२. रा० १०, ५८, ६२, ६३, ६५, १२१ से

१२४, १७३, १६७ से २००, ६६५ से ६६७,

६६५, ७००, ७०२ से ७०४, ७१८, ७२०, ७३६,

७३८, ७४७, ७४८, ७५० से ७५४, ७५६, ७५८

से ७६१, ७६२, ७६४ से ७६७, ७७०, ७७२ से

७७५, ७७७, ७८२ से ७८५, ७८७, ७८८, ८१७.

जी० १११५ से ३३, ४१ से ४६, ५१ से ५४,

५६, ५६ से ६२, ६४, ७४, ७६, ८२, ८५ से ८७,

६०, ६३ से ६६, १०१, ११६, १२७, १२८, १३०

से १३४, १३७ से १४३; २१२० से २४, २६ से

३०, ३२ से ३६, ३६, ४६, ४८, ४६, ५४, ५७ से

६३, ६६, ६८ से ७४, ७६, ८२ से ८४, ८६, ८८,

८२, ८५ से ८८, १०७ से १०६, १११, ११३,

११४, ११६ से ११६, १२२ से १२६, १३३ से

१५०; ३१३ से ६, ११ से २०, २४ से ३५, ३७

से ३६,४२,४४ से ६६,७३ से ६८,१०३ से
 ११०,११२,११८,११८ से १२८,१४७,१५० से
 १६२,१६५,१६७,१६६ से १८३,१८५,१८६,
 १६२ से २११,२१४,२१७ से २२३,२२७,
 २३२ से २४२,२४४ से २४६,२४८ से २५६,
 २६६ से २७२,२८३ से २८५,२८६,३००,
 ३५०,३५१,५६४ से ५७८,५८६,५८७,५८६
 से ६३२,६३७ से ६३६,६५६,६६०,६६४,६६६
 से ६६८,७००,७०१,७०३,७०५ से ७११,
 ७१३ से ७२३,७३० से ७३६,७३८,७४० से
 ७४३,७४५,७४६,७४८ से ७५०,७५४,७६०
 से ७६६,७६८ से ७७०,७७२,७७६ से ७७८,
 ७८१ से ७८५,७८७ से ८००,८०१ से ८०४,
 ८०८,८०९,८११ से ८१८,८१८ से ८२०,
 ८२३ से ८२५,८२७,८२८,८३०,८३२ से
 ८३७,८३८,८४०,८४२ से ८४७,८४८,८५०,
 ८५४,८५५,८५७,८६०,८६३,८६६,८६६,
 ८७२,८७५,८७८ से ८८१,८८६,८८०,८८४,
 ८८३ से ८८५,८८८,८८९,८९३ से ८९६,
 ८९६,८९७ से ८९७,८९८ से ८९८,८९८ से
 १००८,१०१०,१०१५,१०१७,१०२० से
 १०२७,१०३७ से १०४४,१०५४,१०५६,
 १०५६,१०६२,१०६३,१०६७,१०६८,१०७१,
 १०७३,१०७५,१०७७ से १०८३,१०८५,१०८७ से
 १०८८,१०९१,१०९५,१०९७,१०९८ से
 १११२,१११४,१११५,१११७,१११८,११२१,
 ११२२,११२४,११२८,११३०,११३१,११३३
 से ११३८; ४३,७ से ११,१३,१६,२२,२३,
 २५; ५५,८,१०,१२ से १६,१६ से २४,२६ से
 ३०,३२ से ३५,३७ से ३६,४१ से ५०,५२ से
 ५६,५८ से ६०; ६५; ७२,८,२०; ८१,७,
 १० से १४,१६,२३ से २६,३१,३३,३६,४१
 से ४८,५२,५५,५७ से ५६,५४,६८,७६ से
 ७६,८६,८०,८६,८७,१०२,१०३,११४,११५,

१२२,१२२,१४२,१६० से १६३,१७१,१८६ से
 १६३,१६५,१६८ से २०७,२१० से २१२,
 २१४ से २१६,२२२ से २२५,२२७ से २३०,
 २३३ से २३८,२४० से २४४,२४६,२४६ से
 २५३,२५५,२५७ से २६३,२६५,२६८ से
 २७३,२७५ से २८२,२८४ से २८३

भंतसंभंत [भ्रान्तमंभ्रान्त] रा० १११,२८१.

जी० ३१४७

भंभा [दे० भम्भा] रा० ७७. जी० ३१५८

भंसेलकाम [वंशयितुकाम] रा० ७३७

भगंदल [भगन्दल] जी० ३१६२

भगव [भगवत्] जी० १६,१७,१६ से २५,२७४७

से ५५,६२,६६ से ७१,७८ से ८३,११७.

रा० ८ से १३,१५,५६,५८ से ६५,६८,७३,७४,

७६,८१,८३,११३,११८,१२०,१२१,६६८,

७१४,७६६,८१४,८१५,८१७

भगवई [भगवती] रा० ८१७

भगवंत [भगवत्] जी० १६,२१,२३,२६ से ३०,

५१,५२,५४,११७,१५२,१६५,१६५. रा० ८,

८,११,५६,२६२,६८७,७१४,७५६,७६६. जी०

१११; ३१४५७

भगवती [भगवती] रा० ८१७

भगव [भगवत्] जी० ६६

भज्जा [भार्या] जी० ३१६११

भट्टित [भट्टित्व] जी० ६८. रा० २८२. जी०

३१५०,५६३,६३७

भट्ट [भट्ट] रा० ८,१२; २८१. जी० ३१४४७

भड [भट] जी० १.२३,५२. रा० ५३,६८३,६८७,

६८८,६८९,७१६

भणित [भणित] जी० ३१८८१

भणिय [भणित] जी० १५,४६,१६५१४ से ७. रा०

७०,६७२,८०६,८१०. जी० २१५०;

३१२८,५६७,८३८,१२; ८१५७

भण्ण [भण्] -- भण्णांति. जी० ३१६४६

भति [भति] जी० १७

भक्त [भक्त] ओ० १४, १७, ३२, ३३, ११७, १४०,
१४१, १५४, १५७, १६२, १६५, १६६. रा०
६७१, ७७४, ७८७, ७८८, ७८९, ८१६
भक्तकहा [भक्तकथा] ओ० १०४, १२७
भक्तपञ्चकलाण [भक्तप्रत्याख्यात] ओ० ३२
भक्तपाणविउस्सग [भक्तपाणवुत्तर्ग] ओ० ४४
भक्ति [भक्ति] ओ० ४०, ५२. रा० १६
भक्तिघर [भक्तिगृह] जी० ३१५६४
भक्तिचित्ता [भक्तिचित्त] ओ० १३, ६३. रा० १७,
१८, २०, २४, ३२, ३४, ३७, ५१, १२६, १३७,
१५६, २६२. जी० ३१२७७, २८८, ३००, ३०७,
३०८ ३११, ३३२, ३३७, ३५६, ३७२, ३६६,
४५७, ५६७, ५६३, ५६५, ६०४
भक्तिपुष्पग [भक्तिपुर्वक] रा० ६३, ६५
भद्र [भद्र] ओ० ४७, ६८, ७२. रा० २८२. जी०
३१४४८
भद्रग [भद्रक] जी० ३१५६८, ६२०, ६२५, ७६५, ८४१
भद्रपडिमा [भद्रप्रतिमा] ओ० २४
भद्रमोत्था [भद्रमुत्ता] जी० ११७३
भद्रय [भद्रक] जी० ३१७६५
भद्रया [भद्रता] ओ० ७३, ६१, ११६
भद्रसालवण [भद्रसालवन] रा० १७३, २७६.
जी० ३१२८५, ४४५
भद्रा [भद्रक] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३४४८
भद्रा [भद्रा] जी० ३१६१५
भद्रासन [भद्रासन] ओ० १२, ६४. रा० २१, ४१
से ४४, ४८, ४९, १८१, १८३, २६१, ६५८ से
६६४. जी० ३२८६, २६३, ३३६ से ३४५,
३६८, ३७०, ५५८ से ५६०, ६३५
भमंत [भ्रमत्] ओ० ४६. रा० १७४. जी०
३१११८, ११६, २८६
भममाण [भ्राम्यत, भ्रमत्] ओ० ४६
भमर [भ्रमर] ओ० ६, १६. रा० २५. जी०
३१२७५, २७८, ५६६
भमरपतंगसार [भ्रमरपतङ्गसार] रा० २५. जी०
३१२७८

भमुया [भ्रू] ओ० ३१५६७
भमुह [भ्रू] ओ० १६. रा० २५४, जी० ३१४१५
भय [भय] ओ० १४, २५, २८, ४६. रा० ६७१,
६८६. जी० ३१२७, १२८
भयंत [भयन्त] ओ० ७२, १६७
भयग [भूतक] जी० ३१६१०
भयणा [भजना] जी० ११३६; ३१५२
भयव [भगवत्] रा० १२१
भयसण्णा [भयमंजा] जी० ११२०; ३११२८
भर [भर] रा० २२८. जी० ३१३८७, ७८४, ७८७
भरणी [भरणी] जी० ३११००७
भरत [भरत] जी० २१३२, ३६७२
भरह [भरत] ओ० ६८. रा० २७६, २८२. जी०
२११४, २८, ५५, ७०, ७२, ६६, ११५, १२२, १४७,
१४६; ३१२२६, ४४५, ४४७ ७६५
भरिय [भरित] ओ० ४६, ५७, ६४. रा० १७३,
६८१
√भव [भू]—भवइ ओ० २८. रा० २००.
जी० ३१५६—भवउ. ओ० २०. रा० ७१३.
—भवति. ओ० २०. रा० १२४. जी० ३१७७
—भवति. रा० १२६. जी० ३१२७२—भवह.
रा० ७१३—भवाहि. रा० ७५०—भविस्सइ.
ओ० ५२. रा० २००—भविस्सति.
जी० ३१५६—भविस्सामि. रा० ७७५
—भवे. रा० २५. जी० ३१८४—भवेज्जासि.
रा० ७७४—भुवि. रा० २००. जी० ३१५६
भव [भव] ओ० ४६, १६५३, ७, ८
भवंत [भवत्] रा० १५
भवकलय [भवकलय] ओ० १४१, १६५६.
रा० ७६६
भयगहण [भयग्रहण] जी० ७१५, ६, १०, १२, १५
से १८; ६२ से ४, ४०, ५१, १७१, २३६, २३८,
१. 'भयंतारो' ति भदन्ताः कल्याणिनः भक्तारो वा
नैग्रन्थप्रवचनस्य सेवयितारः [वृ० पृ० १५२]
'भयंतारो' ति भक्तारः अनुष्ठानविशेषस्य
सेवयितारो भयनातारो वा [वृ० पृ० २०३] ।

२४३, २४४, २४६, २७१, २७३, २७६ से २८२
 भवण [भवन] ओ० १, १४, ६६, १८१ रा० ६७१,
 ६७५, ७६६. जी० ३२३२ से २३४, २४०,
 २४४, २४८, ५६४, ५६७, ६०४, ६४६ से ६४८,
 ६५१, ६७३, ६८२, ६८६, ६८२ से ६८८, ७५६
 भवणवद् [भवनपति] रा० ११, ५६. जी० २१६५
 भवणवति [भवनपति] जी० ३१६७
 भवजवासि [भवनवाग्निन्] ओ० ४८. जी० १.१३५;
 २१५, १६, ३६, ३७, ७१, ७२, ६१, ६५, ६६, १४८,
 १४६; ३२३० से २३२, १०४२
 भवणवासिणी [भवनवाग्निनी] जी० २१७१, ७२,
 १४८, १४६
 भवणावास [भवनावास] जी० ३२३२
 भवस्थ [भवस्थ] ६१४४ से ४८, ५२, ५३
 भवत्यकेवलणाण [भवत्यकेवलज्ञान] रा० ७४५
 भवधारणिज्ज [भवधारणीय] जी० ११६४, ६६,
 १३५, १३६; ३१६१, ६३, १०८७ से १०८६,
 १०६१, १०६२, ११२१ से ११२३
 भवपचइय [भवप्रत्ययिक] रा० ७४३
 भवसिद्धि [भवसिद्धिक] रा० ६२. जी० ६१०६
 से १११, ११२
 भविता [भूत्वा] ओ० २३. रा० ६८७
 भसोल [भसोल] रा० १०६, ११६, २८१.
 जी० ३१४४७
 भाइल्लग [भागिक] जी० ३१६१०
 भाउय [भ्रातृक] रा० ६७५
 भाग [भाग] रा० ७८७, ७८८. जी० ३१५७७,
 ६३२, ६३६, ८३८, १०१० से १०१४
 भागि [भागिन्] रा० ८१५
 भाजण [भाजन्] जी० ३५८७
 भाणितव्व [भणितव्य] जी० २१११२; ३१७४,
 १२०, १२१, १४४, २२७, ५७८, ६३१, ६५७, ६४७
 भाणितव्व [भणितव्य] रा० ८०, १६४, २०१,
 २०४ से २०६, ७४२. जी० १५१, ७२, ६६,
 ११८, १२३, १२६, १३५; २१७६, ७८, ८०, ८१,

१०५, १०८, १११, ११८, १२३; ३१७५, ७७,
 १५६, १६२, २३१, २५०, ३५८, ३५८, ३५६,
 ३६१, ४१२, ४६३, ६७३, ६७६, ६८२, ७५६,
 ७६६, ७६६, ७७५, ८००, ८०१, ८१८, ८२८,
 ८३६, ८३६, १०४४, १०५०, ११२६, ११२७;
 ८२२; ६२२६
 भामरी [भ्रामरी] रा० ७७
 भाय [भ्रातृ] जी० ३१६११
 भाय [भाग] रा० ७८८. जी० ३१५७७
 √भाय [भाज्] — भाएति. रा० २८१. जी० ३१४४७
 भायरन्धिया [भ्रातृरक्षिता] ओ० ६२
 भार [भार] रा० ७७४
 भारह [भारत] रा० ८ से १०, १३, १५, ५६, ६६८
 भारंडपखि [भारण्डपक्षिन्] ओ० २७. रा० ८१३
 भाव [भाव] रा० ६३, ६५, १३३, ७७१, ८१५.
 जी० ३१३०३, ७२६
 भावओ [भावतस्] ओ० २८. जी० ११३३, ३४,
 ३६, ३६
 भावविउत्सग [भावव्युत्सर्ग] ओ० ४४
 भावाभिगहचरय [भावाभिग्रहचरक] ओ० ३४
 भावियप्प [भावितव्यम्] ओ० १६६
 भावेमाण [भावयत्] ओ० २१ से २४, २६, ४५,
 ५२, ८२, १२०, १४०, १५७. रा० ८, ६, ६८६,
 ६८७, ६८६, ६८८, ७११, ७१३, ७५२, ७५३,
 ७८७, ७८६, ८१४, ८१७
 भावोमोदरिया [भावावमोदरिका] ओ० ३३
 √भास् [भाष्] — भासइ. ओ० ५२. रा० ६१
 — भातेति. जी० ३२१०
 भास (य) [भाषक] जी० ६१६६
 भासंत [भाषमाण] ओ० ६४. जी० ३१५६१
 भासण [भाषक] जी० ३१५६, ५६, ६१
 भासमणपज्जति [भाषामनःपयाप्ति] रा० २७४,
 ७६७. जी० ३४४०
 भासय [भाषक] जी० ६१५७
 भासरसि [भरमराशि] रा० १२४
 भासा [भाषा] ओ० ७१. रा० ६१, ८०६, ८१०

भासासमिय [भापासमित] ओ० २७, १५२, १६४.

रा० ८१३

भासुर [भासुर] ओ० ४७, ७२. रा० ६, १२

भिउव्व [भार्गव] ओ० ६६

भिग [भृङ्ग] ओ० १६. रा० २६. जी० ३:२७६

भिगंगय [भृङ्गाङ्गक] जी० ३:५८७

भिगणिभा [भृङ्गनिभा] जी० ३:६८७

भिगा [भृङ्गा] जी० ३:६८७

भिगार [भृङ्गार] ओ० ६४, ६७. रा० ५०, १४८,
२५८, २७६, २८१, २८८, ७५३. जी० ३:४४५,
४५४, ५८७

भिगारक [भृङ्गारक] ओ० ६. जी० ३:२७५,
३२१, ३५५, ४१६

भिगि [भृङ्गि] जी० ३:५६५, ५६६

भिण्डमाल [भिण्डमाल, भिन्दपाल]

जी० ३:११०

भिडिमाल [भिण्डिमाल, भिन्दिपाल] ओ० ६४

भिडिमालमा [भिण्डिमालमा, भिन्दिपालाग्र]

जी० ३:८५

√भिद [भिद]—भिद. रा० ६७१—भिज्जइ.
रा० ७८४

भिभसारपुत्ता [भिम्भसारपुत्त] ओ० १५, १८, २०,
२१, ५३ से ५६, ६२ से ६४, ६६, ६७, ६९,
७१, ८०

भिक्षलाभिय [भिक्षालाभिक] ओ० ३४

भिक्षायरिया [भिक्षाचर्या] ओ० ३१, ३४

भिक्षुपडिमा [भिक्षुप्रतिमा] ओ० २४

भिक्षुय [भिक्षुक] रा० ७१८, ७८७, ७८८

भिगु [भृगु] जी० ३:६२३

भित्त्वा [भित्त्वा] रा० ७५५

भित्ति [भित्ति] रा० १३०. जी० ३:३००

भित्तिगुलिया [भित्तिगुलिका] रा० १३०.

जी० ३:३००

भित्तमुत्तुत्त [भित्तमुत्तुत्त] जी० ३:१२६, १२, १०

भिम्भिसमाण [भाभास्थमाण] रा० १७, १८, २०,
३२, १२६. जी० ३:२८८, ३००, ३७२

भिलुंग [दे० भिलुङ्ग] रा० ७०३

भिस [विस] रा० २६, १७४. जी० ३:११८, ११९,
२८२, २८६

भिसंत [भासमान] ओ० ५, ८, ६४. रा० ५१
जी० ३:२७४

भिसकंद [विसकन्द] जी० ३:६०१

भिसमाण [भासमाण] रा० १७, १८, २०, ३२, १२६.
जी० ३:२८८, ३००, ३७२

भिसिया [वृषिका] ओ० ११७

भीत [भीत] जी० ३:११६

भीम [भीम] ओ० ४६, ५७. जी० ३:८३

भुंजमाण [भुञ्जान] ओ० ६८. रा० ७.
जी० ३:३५०, ५६३, ८४२, ८४५, १०२४,
१०२५

१ भुकुंड [दे०]—भुकुंडेति. रा० २८५.
जी० ३:४५१

भुकुंडेत्ता [दे०] जी० ३:४५१

भुजंग [भुजङ्ग] जी० ३:५६७

भुज्जतर [भूयस्तर] ओ० ८६

भुज्जो [भूयस्] ओ० १५६. रा० ७५१

भुत्त [भुक्त्त] रा० ६८५, ७६५, ८०२, ८१५

भुयग [भुजग] ओ० २, ५१

भुयगपड [भुजगपति] ओ० ४६

भुयगपरिसण्य [भुजगपरिमर्ष] जी० २:११३

भुयगपेच्छा [भुजगप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५

भुयगोसर [भुजगेश्वर] ओ० १६. जी० ३:५६६

भुयगपरिसण्य [भुजगपरिमर्ष] जी० १:१०४, ११२.
१२२, १२४; २:७, ६, २४, ५२, १२२; ३:१४३,
१४४, १६१, १६२, १६६

भुयमोयग [भुजमोचक] ओ० १६. जी० ३:५६६

भुया [भुजा] ओ० १६, २१, ४७, ५४, ६३, ७२.

रा० ८, ६६, ७०. जी० ३:४५७, ५६६

भुया [भ्रूका] जी० ३:५६६

भुसागणि [वृषाग्नि] जी० ३:११८

भूइकम्मिय [भूतिकम्मिक] ओ० १५६

भूओवघाइय [भूतोपघातिक] ओ० ४०

भूत [भूत] रा० १, १२, ३२, २८१. जी० ३३६८,
४४३, ७८०, ८४२, ८४५, ९४७, ९४९, ९५०

भूतकलय [भूतक्षय] जी० ३६२६

भूतग्रह [भूतग्रह] जी० ३६२८

भूतप्रतिमा [भूतप्रतिमा] जी० ३४१८

भूतमंडलप्रविभक्ति [भूतमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६०

भूतमह [भूतमह] जी० ३६१५

भूतवर्द्धता [भूतावर्तता] जी० ३६२१

भूता [भूता] जी० ३६२१

भूताणंद [भूतानन्द] जी० ३२५०

भूमि [भूमि] ओ० ५२. रा० ७६६

भूमिगय [भूमिगत] रा० ७६५

भूमिचवेडा [भूमिचवेटा] रा० २८१. जी० ३४४७

भूमिभाग [भूमिभाग] ओ० १६२. रा० २४, ३२,
३३, ३५, ६५, ६६, १२४, १६४, १७१, १८६ से
१८८, २०३ से २०६, २०८, २१३, २१६, २१७,
२३७, २३८, २५१, २६१. जी० ३१२८, २५७,
२७७, ३०६, ३१०, ३३६, ३५६, ३५९ से ३६१,
३६४, ३६५, ३६८ से ३७२, ३७४, ३९६, ४००,
४१२, ४२१, ४२२, ४२७, ५८०, ६२३, ६३३,
६३४, ६४५, ६४६, ६४८, ६४९, ६५६, ६६२,
६६३, ६७०, ६७१, ६७३, ६८०, ६८१, ७३७,
७५५ से ७५८, ७६२, ७६५, ७६८, ७७०, ८८३,
८८४, ८८८ से ८९०, ९०५, ९०६, ९१२, ९१३,
१००३, १०३८

भूमिभाय [भूमिभाग] जी० ३४२६

भूमिया [भूमिका] रा० ६७५

भूमिसेज्जा [भूमिशय्या] ओ० १५४, १६५, १६६.
रा० ८१६

भूमी [भूमी] जी० ३६३१

भूय [भूत] ओ० २, ४, ६, २६, ४६, ५५, ६२.

रा० १३२, १७०, २३६, ७०३. जी० ३१२७,

२७३, ३०२, ३७२, ४४७, ६७५, ११२८, ११३०

भूयपडिमा [भूतप्रतिमा] रा० २५७

भूयमह [भूतमह] रा० ६८८

भूयवादिद्य [भूतवादिद्य] ओ० ४६

भूयार्णद [भूतानन्द] जी० ३१२४६, २५०

भूसण [भूषण] ओ० २१, ४७, ५४, ५७. रा० ६६,
७०. जी० ३१५६३

भूसणघर [भूषणघर] रा० ८, ७१४

भूसिय [भूषित] ओ० ६४. रा० ५३, ७५१

भेत्ता [भित्वा] जी० ३१६६१

भेद [भेद] ओ० २६. जी० १११८, १२१, १२३,
१२४, १२६, १३५; २१७६, ७८, १०५, १०६;
३१३५, १४२, १४४, २३१, २७६, २८१, ६३६

भेय [भेद] ओ० १. रा० २८, ६७५, ७६३.
जी० ११५८; २१५१; ३१२६१६, ६५०

भेयकर [भेदकर] ओ० ४०

भेरव [भैरव] ओ० ४६

भेरी [भेरी] ओ० ६७. रा० १३, ७७, ६५७, ७५५.
जी० ३१७८, ४४६

भेरुंड [भेरुण्ड] जी० ३१८७८

भेरुयालवण [भेरुतालवत] जी० ३१५८१

भेसज्ज [भैषज्य] ओ० १२०, १६२ रा० ६६८,
७५२, ७८६

भो [भोस्] ओ० ५५. रा० १३. जी० ३४४४

भोग [भोग] ओ० १६, २३, ४३, ४६, १४८ से १५०.
रा० ६७२, ७५१, ७५३, ७६१, ८०६ से ८११.
जी० ३१५६६, ११२४

भोग [भोज] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८, ६९५

भोगस्थिय [भोगार्थिक] ओ० ६८

भोगपुत्त [भोजपुत्र] ओ० ५२. रा० ६८७

भोगभोग [भोगभोग] ओ० ६८. रा० ७.

जी० ३१३५०, ५६३, ८४२, ८४५, १०२४, १०२५

भोगरय [भोगरजस्] ओ० १५०. रा० ८११

भोक्त्वा [भुक्त्वा] रा० ६६७

भोजण [भोजन] जी० ३१५६२

भोत्तए [भोक्तुम्] ओ० १३४

भोत्तूण [भुक्त्वा] ओ० १६५१८

भोम [भूम] रा० १३०. जी० ३१३००

भोम [भौम] रा० १६४. जी० ३१३३६ से ३३८,

३४५, ३५५, ३५६
 भोमिज्ज [भोमिय] ग० २७६, २८०
 भोमेज्ज [भोमेय] जी० ३१२५१, २५२
 भोय [भोग] ओ० १५. रा० ६८५, ७१०, ७७४
 √भोय [भोजय]—भोयावेज्जा. रा० ७७६
 भोयण [भोजन] ओ० १३५, १६५। १८.
 जी० ३६०२
 भोयणमंडव [भोजनमण्डप] रा० ८०२

म

मइ [मति] ओ० ४६, ५७
 मइअण्णाणि [मत्यजानिन्] जी० १३०, ८७, ६६;
 ६१२०२, २०६, २०८
 मइ [मृदु] रा० ७६, १७३
 मउइमह [मुकुन्दमह] रा० ६८८
 मउड [मुकुट] ओ० २१, ४७, ४६ से ५१, ५४, ६३,
 ६५, ७२, १०८, १३१. रा० ८, २८५, ७१४.
 जी० ३४५१, ५६३
 मउय [मृदुक] ओ० १६. रा० २८८. जी० १५०;
 ३१२२, २८५, ३८७, ५६६, ५६७, ६७२, १०६८
 मउल [मुकुल] जी० ३५६७
 मउलि [मुकुलिन्] जी० ११०६, १०८
 मउलि [मौलि] ओ० ४७, ७२
 मउलिय [मुकुलित] ओ० २१, ५४. रा० ७१४
 मऊर [मथूर] जी० ३५६७
 मंल [मङ्ग] ओ० १, २
 मंलपेच्छा [मङ्गप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.
 जी० ३६१६
 मंगल [मङ्गल] ओ० २, १२, २०, ५२, ५३, ६३, ६८,
 ७०, १३६. ग० ६, १०, ४६, ५८, १५६, २४०,
 २७६, २६१, ६८३, ६८५, ६८७ से ६८६, ६६२,
 ७००, ७०४, ७१६, ७१६, ७२६, ७५१, ७५३,
 ७६५, ७७६, ७६४, ८०२, ८०५. जी० ३, ३३२,
 ४०२, ४४२
 मंगलग [मङ्गलक] रा० २१, १६६, १७७, २०२,
 २०४ से २०८, २१४, २२०, २२३, २२६, २३२,

२४१, २४८, २५०, २५६, २६१. जी० ३१२८६,
 ३१४, ३४७, ३५६, ३६७ से ३७१, ३०५, ३७६,
 ३८२, ३६१, ३६४, ४०३, ४११, ४२०, ४२४,
 ४३०, ४३३, ४३६, ६३६, ६५१, ६७७, ७०८,
 ७५६, ८८८, ८६२, ८६४, ८६८, ८००, ८०६, ८१३
 मंगलय [मङ्गलक] ओ० ६४. जी० ३१२५५, ४५७
 मंगल [मङ्गल्य] रा० ६८५, ६६२, ७००, ७१६,
 ७२६, ८०२
 मंचाइमंच [मञ्चातिमञ्च] ओ० ५५. ग० २८१
 मंचातिमंच [मञ्चातिमञ्च] जी० ३४४७
 मंजरि [मञ्जरी] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.
 जी० ३१२६८, २७४
 मंजु [मञ्जु] ओ० ६६. रा० १३५. जी० ३३०५,
 ५६८
 √मंड [मण्ड]—मंडावेज्जा. रा० ७७६
 मण्ड [मण्ड] जी० ३१८७२, ६६०
 मंडणधार्ई [मण्डनधार्त्री] रा० ८०४
 मंडल [मण्डल] ओ० ५०, ६४. रा० १४६. जी०
 ३३२२, ८३८। १० से १२
 मंडलग [मण्डलक] रा० २६५. जी० ३४६०
 मंडलपविभत्ति [मण्डलप्रविभक्ति] ग० ६०
 मंडलरोग [मण्डलरोग] जी० ३६२८
 मंडलिय [मण्डलिक] जी० ३१२६। १
 मण्डन्यावाय [मण्डनिकावात] जी० १। ८१
 मंडव [मण्डप] जी० ३५६४, ८६३
 मंडवग [मण्डपक] ओ० ६ से ८, १०. जी०
 ३१७५, ५०६
 मंडवय [मण्डपक] जी० ३५७६, ८६३
 मंडित [मण्डित] जी० ३, २८५, ३०२, ४४७
 मंडिय [मण्डित] ओ० २, ४७, ५५, ५६, रा०
 २८१. जी० ३, २६५, ३१३
 मंडियत [मण्डितक] रा० १३२
 मंडियाग [मण्डितक] रा० ४०
 मंत [मन्त्र] ओ० २५. रा० ६७५, ६८६, ७६१
 मंति [मन्त्रिन्] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४

मंथ [मन्थ] ओ० १७४

मंद [मन्द] रा० ७६, १७३, ७५५, ७५६. जी०
३१२५, ६०१, ८६६

मंदगति [मन्गति] जी० ३१६८६

मंदर [मन्दर] ओ० १४, २७. रा० १२४, २७६,
६७१, ६७६, ८१३. जी० ३०१७, २१६ से
२२१, २२७, ३००, ४४५, ५६६, ५६८, ५६९,
५७३, ६६८, ७०१, ७३६, ७४०, ७४२, ७४५,
७५०, ७५४, ७६२, ७६५, ७६६, ७७५, ८३७,
१००१, १०३६

मंदरगिरि [मन्दगिरि] रा० १७३. जी० ३१२५

मंदलेस [मन्दलेश] जी० ३१८३, ३१८६

मंदलेस्स [मन्दलेश] जी० ३१८४

मंदाय [मन्द] रा० ४०, ११५, १३२, १७३, २८१.
जी० ३१६५, २८५, ४४७

मंदायवलेस्स [मन्दातपलेश] जी० ३१८५

मंस [मांस] ओ० ६२, ६३. रा० ७०३

मंसल [मांसल] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७

मंसमुह [मांसमुख] ओ० ६३

मंसु [मंसु] ओ० १६. जी० ३१४१५, ५६६

मकरंडक [मकराण्डक] जी० ३१२७७

मगदंतियागुम्भ [मग] जी० ३१५८०

मगर [मकर] ओ० १३, ४६. रा० १७, १८, २०,
३२, ३७, १२६. जी० १६६, ११८; ३१२८८,
३००, ३११, ३७२, ५६६, ५६७

मगरंडग [मकराण्डक] रा० २४

मगरासन [मकरासन] रा० १८१, १८२. जी०
३१२६३

मगरिया [मकरिका] रा० ७७. जी० ३१५६३

मगुंद [मुकुन्द] जी० ३१५८६

मग्य [मार्ग] ओ० ४६, ६५, ७२

मगण [मार्गण] ओ० ११७, ११६, १५६

मगतो [पृष्ठतस्] ओ० ५५

मगदय [मार्गदय] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८,
२६२. जी० ३१४५७

मघमघेत [प्रसरत्] ओ० २, ५५. रा० ६, ६२, ३२,

१३२, २३६, २८१, २६२. जी० ३१३०२, ३७२,
३६८, ४४७

मघव [मघवत्] जी० ३११०६८

मघा [मघा] जी० ३१४

मच्चु [मृत्यु] ओ० ४६

मच्छ [मत्स्य] ओ० १२, ४६, ६४. रा० २१, ४६,
१७४, २६१. जी० १११००; ३१८८, ११८,
११६, २८६, २८६, ५६७, ६६५, ६६६, ६६८, ६६९

मच्छंडक [मत्स्याण्डक] जी० ३१२७७

मच्छंडग [मत्स्याण्डक] रा० ८४

मच्छंडापविभक्ति [मत्स्याण्डकप्रविभक्ति] रा० ६४

मच्छंडामयरंडाजारासारापविभक्ति [मत्स्याण्डकमक-
राण्डकआरकमारकप्रविभक्ति] रा० ६४

मच्छंडिया [मत्स्याण्डिका] जी० ३१६०१, ८६६

मच्छंडी [मत्स्याण्डी] जी० ३१५६२

मच्छग [मत्स्या] जी० ११६६

मच्छियपत्त [मक्षिकापत्र] ओ० १६२

मच्छी [मत्सी] जी० २१४

मज्ज [मज्ज] ओ० ६२, ६३. जी० ३१५६६

√मज्ज [मज्ज] —मज्जावेज्जा. रा० ७७६

मज्जण [मज्जन] ओ० ६३

मज्जणघर [मज्जातगृह] ओ० ६३

मज्जणघरग [मज्जातगृहक] रा० १८२, १८३.
जी० ३१२६४

मज्जणधाई [मज्जनधात्री] रा० ८०४

मज्जार [मार्जार] जी० ३१८४

मज्जिय [मज्जित] ओ० ६३

मज्ज [मज्ज] ओ० १५, १६, ६३, ६८. रा० १२५,
१२७, २४०, २४५, २८२, ६७२, ७६६.
जी० ११४६; ३१५२, ५७, ८०, २६१, ३५२,
५६६, ६३२, ६६१, ६८६, ७२३, ७२६, ७३६, ८३६,
८८२

मज्जमज्ज [मध्यमध्य] ओ० २०, ५२, ६७ से ७०.

रा० १०, १२, ५६, २७६, ६८३, ६८५, ६८७,
६६२, ७००, ७०६, ७०८, ७१०, ७१६, ७२६.
जी० ३१४४५, ५५७

मज्झिम [मध्यगत] रा० ७३२

मज्झिमिणिक [मध्यमिणिक] ओ० ६०

मज्झिम [मध्यम] ओ० १६५, ६. रा० ४३, ६६१.

जी० ३१७७, २३६, ६५८, ६८१, १०५५

मज्झिमगेविज्ज [मध्यमगैवेय] जी० २१६६

मज्झिमगेवेज्जा [मध्यमगैवेयक] जी० ३१०५६,

११११

मज्झिमिय [मध्यमिक] जी० ३१२३५ से २३६,

२४१ से २४३, २४६, २४७, २४८, २५०, २५४

से २५६, २५८, ३४२, ५६०, १०४० से १०४२,

१०४४, १०४६, १०४७, १०४८ से १०५३, १०५५

मज्झिय [मध्यक] जी० ३१५६७

मज्झित्त [मध्यम] जी० ३१७२५, ७२८

मट्टिया [मृत्तिका] ओ० ६८. रा० ६, १२, २७६ से

२८१ जी० ३१४४५, ४४६, ४४८

मट्टियापाय [मृत्तिकापात्र] ओ० १०५, १२८

मट्ट [मृत्] ओ० १२, १६, ४७, ७२, १६४. रा० २१,

२३, ३२, ३४, ३६, ५२, ५६, १२४, १४५, १५७,

२३१, २४७. जी० ३१२६१, २६६, २६८, ३६३,

४०१, ५६६, ५६७.

मड [मृत्] जी० ३१८४, ६५

मडव [मडव] ओ० ६८, ८६ से ६३, ६५, ६६, १५५,

१५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७

महुय [दे० महुक] रा० ७७

मण [मनस्] ओ० २४, ३७, ४०, ५७, ६६, ७०

रा० ३०, ४०, १३२, १३५, १७३, २२८, २३६,

७६५, ७७८, ८१५. जी० ३१२६५, २८३, २८५,

३०२, ३०५, ३८७, ३८८, ६७२

मणगुत्त [मनोगुत्त] ओ० २७, १५२, १६४.

रा० ८१३

मणगुलिया [मनोगुलिका] जी० ३१४१२, ४१६, ४४५

मणजोग [मनोयोग] ओ० ३७, १७५, १७७, १७८,

१८२

मणजोगि [मनोयोगिन्] जी० ११३१, ८७, १३३;

३१०५, १५३, ११०६; ६११३ ११४, ११७,

१२०

मणपज्जवणाण [मनःपर्यवज्ञान] ओ० ४०.

रा० ७३६, ७४४, ७४६

मणपज्जवणाणविणय [मनःपर्यवज्ञानविनय]

ओ० ४०

मणपज्जवणाणि [मनःपर्यवज्ञानिन्] ओ० २४.

जी० ११३३; ६१५६, १६२, १६५, १६६,

१६७, २०२, २०४, २०८

मणवलिय [मनोवलिक] ओ० २४

मणविणय [मनोविनय] ओ० ४०

मणसमिय [मनःसमित] ओ० १६४

मणहर [मनोहर] ओ० ७, ८, १०. रा० १७, १८,

२०, ३० ४०, ७८, १३२, १३५, १७३, २३६.

जी० ३१२७६, २८३, २८५, ३०२, ३०५

मणाभिराम [मनोभिराम] ओ० ६८

मणा [दे०] ओ० ६८, ११७. रा० ७५० से

७५३, ७७४, ७६६. जी० ११३५; ३१०६०,

१०६६

मणामतराय [दे०] रा० २५ से ३१, ४५.

जी० ३१२७८ से २८४, ६०१, ६०२, ८६०,

८६६, ८७२, ८७८, ८६०

मणि [मणि] ओ० २३, ४७, ४८, ५२, ६३, ६४.

रा० १७, १८, २४ से ३३, ३७, ४०, ४५, ५१, ६५,

६६, ७०, १३०, १३२, १३७, १५४, १६०, १७१,

१७३, १७४, २०३, २२८, २३७, २५६, २६२,

६८७ से ६८८, ६६५, ८०४. जी० ३१२६५,

२७७ से २८६, ३००, ३०२, ३०७, ३०६ से

३११, ३३३, ३३६, ३६०, ३६४, ३७२, ३७६,

३८७, ३८८, ४१२, ४१७, ४२१, ४५७, ५७८,

५८७, ५८८, ५८०, ५८३, ६०८, ६४५, ६४८,

६५६, ६७०, ६७२, ६८०, ७५७

मणि (पाय) [मणिपात्र] ओ० १०५, १२८

मणि (बंधन) [मणिबन्धन] ओ० १०६, १२६

मणिजाल [मणिजाल] रा० १६१. जी० ३१२६५,

५६३

मणिपेठिया [मणिपीठिका] रा० ३६, ३७, ६६, ६७,
२१८, २१९, २२१, २२२, २२४ से २२७, २३०,
२३१, २३८, २३९, २४२ से २४७, २५२, २५३,
२६१, २६५, २६७, २६९, ३००, ३०५ से ३११,
३१७ से ३२१, ३३८, ३४४ से ३४७, ३५२
से ३५४, ४१४, ४७४, ५३४, ५६५.

जी० ३३१०, ३११, ३६५, ३६६, ३७७, ३७८,
३८०, ३८१, ३८३ से ३८६, ३९२, ३९३, ४००,
४०१, ४०४ से ४०६, ४१३, ४१४, ४२२, ४२३,
४२७, ४२८, ४५७, ४६५, ४७० से ४७४, ४८२
से ४८६, ५०३, ५०६ से ५१२, ५१६ से ५१९,
५२६, ५३३, ५४०, ५४८, ५५७, ६३४, ६४६,
६५०, ६६३, ६७१ से ६७५, ७५८, ७५९, ७६५,
७६८, ७७०, ८६१ से ८००, ८०६, ८०७

मणिमय [मणिमय] रा० १६, २०, ३६, ३७, १३०,
१३५, १३८, १५५, १६०, २१८, २२१, २२४,
२२६, २२८, २३०, २३८, २४२, २४४ से २४६,
२६१, २७०, २७६, २८०. जी० ३१२६५, २८७,
२८८, ३००, ३०५, ३११, ३१३, ३२२, ३५३,
३६५, ३७७, ३८०, ३८३, ३८५, ३९२, ४००,
४०४, ४०६ से ४०८, ४१३, ४२२, ४२७, ४३५,
४४३, ४४५, ६४६, ६४८, ६५४, ६७१, ७५८,
८६१, ८६३, ८६५, ८६७, ८६९, ८०६

मणिमय [मण्यङ्ग] जी० ३१५६३

मणिलक्षण [मणिलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

मणिवृत्तक [मणिवृत्तक] जी० ३१५८७

मणिसिलागा [मणिशलाका] जी० ३१५८६, ८६०

मणुई [मनुजी] जी० ३१५६७

मणुण [मनोज्ञ] ओ० ४३, ६८, ११७. रा० ३०,
४०, ७८, १३२, १३५, १७३, २३६, ७५० से
७५३, ७७४, ७६६. जी० ११३५; ३१२६५,
२८३, २८५, ३०२, ३०५, १०६०, १०६६, १११७

मणुणतराय [मनोज्ञतरक] रा० २५ से ३१, ४५.
जी० ३१२७८ से २८४, ६०१

मणुय [मनुज] ओ० ४४, ६८, ६०, ६१, ६३, १६१,

१६३, १६८. रा० २८२, ८१५. जी० ११८२;
३१८८, १२६, ४४८, ५५६, ५६६, ५६८ से ६००,
६०३, ६०५ से ६२१, ६२५, ६२७ से ६३१,
७६५, ८४१, ११३७; ६१२५४

मणुयरायवसभ [मनुजराजवृषभ] ओ० ६५

मणुयलोग [मनुजलोक] जी० ३१८३८१, ४ से ६

मणुयलोय [मनुजलोक] जी० ३१८३८१

मणुस्त [मनुष्य] ओ० ७३, १७०. रा० २७, ७३२,
७३७, ७७१. जी० ११५१, ५४, ५५, ५६, ६१, ६५,
७६, ८७, ६१, ६६, १०१, ११६, १२३, १२६, १२९,
१३४, १३६; २१२, १११, १४, २६ से ३०, ३२ से
३४, ५४, ५७ से ६१, ६५, ६६, ६८, ७०, ७२, ७५,
७७, ८०, ८४, ८५, ८८, ६६, १०६, ११४, ११५,
१२३, १२४, १३२ से १३४, १३७, १३८, १४३,
१४५, १४७, १४९; ३११, ८४, ११८, २१२ से
२१५, २१७ से २२५, २२७ से २२९, २८०,
५७६, ८३६, ८३८, १३३, ८४०, ११३२, ११३५,
११३८; ६१४४, ६, १२; ७११, ६, १२, १७, १८,
२०, २३; ६११६, १५८, २०६, २१८, २२०,
२३१

मणुस्तलेत्त [मनुष्यक्षेत्र] जी० १११२७; ३१२१४,
८३५ से ८३७, ८३८, २१

मणुस्तजोणिय [मनुष्ययोनिक] जी० २१६६

मणुस्तत्त [मनुष्यत्व] ओ० ७३

मणुस्सिद [मनुष्येन्द्र] ओ० १४. रा० ६७१

मणुस्ती [मानुषी] जी० ३१५७६; ६११४, ६, १२;
६१२०६, २१८, २२०

मणूस [मनुष्य] ओ० १. जी० ३१६६३, ६६७;
६१२१२, २२१, २२५, २२६, २३२, २३७, २३८,
२४५, २४६, २५०, २५१, २५५, २६७, २७२,
२७३, २८१, २८२, २८६, २८७, २८९, २९३

मणूसपरिसा [मनुष्यपरिषद्] ओ० ७८

मणुसी [मानुषी] जी० ६१२१२

मणोगम [मनोगम] ओ० ५१

मणोगय [मनोगत] रा० ६, २७५, २७६, ६८८,

७३२, ७३७, ७३८, ७४६, ७६८, ७७७, ७८१,
७८३. जी० ३४४१, ४४२
मणोगुलिया [मनोगुलिका] रा० १५३, २३५,
२५८, २७६. जी० ३१३०६, ३५५, ३६७, ६०२
मणोज्जगुम्भ [मनोज्जगुलम्भ] जी० ३१५८०
मणोणुकूल [मनोनुकूल] जी० ३१५६४
मणोमाणसिय [मनोमानसिक] रा० ८१५
मणोरम [मनोरम] जी० ३, ६३४
मणोरमा [मनोरमा] जी० ३१६२०
मणोरह [मनोरथ] ओ० ६६
मणोसिलक [मनःशिलक] जी० ७४५
मणोसिलग [मनःशिलक] जी० ७४५
मणोसिलय [मनःशिलक] जी० ७३४, ७४३
मणोसिला [मनःशिला] रा० १६१, २५८, २७६.
जी० ३१३३४, ४१६, ७४७
मणोसिलापुढवी [मनःशिलापुढवी] जी० ३११८५.
१८६
मणोहर [मनोहर] रा० ७६, १७३. जी० ३१२६५,
२८५
मति [मति] जी० ३११८, ११६
मतिअण्णाणि [मत्यज्जाणिन्] जी० ३११०४, ११०७,
६१६७, २०२
मत्त [अमत्त] जी० ३१११२८, ११३०
मत्त [मत्त] जी० १, ६, २३, ५७, ६४. रा० १४८,
२८८. जी० ३११६८, ११६, २७५, ३२१, ४५४
मत्तंगय [मत्ताङ्गक] जी० ३१५८६
मत्तगयविलंबिय [मत्तज्जविलम्बित] रा० ६१
मत्तगयविलसिय [मत्तज्जविलसित] रा० ६१
मत्तहयविलंबिय [मत्तहयविलम्बित] रा० ६१
मत्तहयविलसित [मत्तहयविलसित] रा० ६१
मत्तयगसूल [मत्तकसूल] जी० ३१२२८
मत्तय [मत्तक] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२,
११७. रा० ८, १०, १२, १४, १८, ४६, ७२, ७४,
११८, २७६, २७६, २८२, २८२, ६५५, ६८१,
६८३, ६८६, ७०७, ७०८, ७१०, ७१३, ७१४,

७२३, ७७४, ७६६. जी० ३१४४२, ४४५, ४४८,
४५७, ५५५
मद [मद] जी० ३१८६०
मदण [मद्वेन] ओ० १६१, १६३
मदय [मद्वेक] जी० ३१५८६
मदल [मद्वेल] रा० ७७
मद्व [मद्वेव] ओ० २५, ४३. रा० ६८६, ८१४.
जी० ३१५६८, ७६५, ८४१
मधु [मधु] जी० ३१८६०
मधुर [मधुर] जी० ३१२८५
ममत्तभाव [ममत्त्वभाव] जी० ३१६०८
मम्म [मम्मन्] रा० ७६३
मय [मृत] रा० ७६२. जी० ३१८४
मयणसाला [दे०] ओ० ६. जी० ३१२७५
मयणिज्ज [मद्वेनीज] ओ० ६३. जी० ३१६०२,
८६०, ८६३, ८७२, ८७८
मयपइथा [मृतपठिका] ओ० ६२
मयर [मकर] ओ० ४८
मयरंडापविमत्ति [मकराण्डकपविमत्ति] रा० ६४
√मर [मृ]—मरंति. जी० १५३
मरगय [मरकत] ओ० १३
मरण [मरण] ओ० २५, ४६, ७४, १७२ १६५८,
१२. रा० ६८६
मरीइ [मरीवि] जी० ३११२२
मरीइया [मरीचिका] रा० २१, २३, २४, ३२, ३४,
३६, १२४ १४५
मरीचिया [मरीचिका] ओ० १६४
मरीतिकदय [मरीचिकवच] रा० ३२
मरंडो [मरुंडो] जी० ७०
मरुपखंडोलग [मरुपखान्दोलक] ओ० ६०
मरुपडियग [मरुपतितक] ओ० ६०
मरुया [मरुयक, मरुतक] रा० ३०. जी० ३२८३
मल [मल] ओ० ८६, ६२. जी० ३१५६८
√मल [मृद]—मलज्जइ. रा० ७८५

मलय [मलय] ओ० १४. रा० १५६. १७३, २७६,
३८५, ६७१, ६७६. जी० ३१२८५, ३३२, ४४५,
४५१

मलिय [मलित] ओ० १४. रा० ६७१

मल्ल [माल्य] ओ० ४७, ५१, ६७, ७२, ६२, १०६,
१३२, १४७, १६१, १६३. रा० १३, १३३, १५६,
१५७, २५८, २७६ से २८१, २८५, २८६, २८९,
३५१, ५६४, ६५७, ७००, ७१४, ७१६, ७६४,
८०२, ८०८. जी० ३१३०३, ३२६, ४१६, ४४५,
४४६, ४५१, ४५७, ५१६, ५४७, ५६१

मल्ल [मल्ल] ओ० १२

मल्लइ [मल्लवि] ओ० ५२ रा० ६८७, ६८८

मल्लहपुत्त [मल्लविपुत्त] रा० ६८७, ६८८

मल्लग [दे० मल्लक] जी० ३१५८७

मल्लजुद्ध [मल्लुद्ध] ओ० ६३

मल्लदाम [माल्यदामन्] ओ० २, ५५, ६३ से ६५.
रा० ३२, ५१, १३२, २३५, २५५, २६४, २६६३००,
३०५, ३१२, ३५५, ६८३, ६६५. जी० ३१२८२,
३०२, ३७२, ३६७, ४१६, ४४७, ४५२, ४५७, ४५६,
४६१, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०

मल्लपेच्छा [मल्लप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.

जी० ३१६१६

मल्लिया [मल्लिका] रा० ३०. जी० ३१२८३

मल्लियापुम्म [मल्लिकागुल्लम] जी० ३५८०

मल्लियामंडवग [मल्लिकामण्डपक] रा० १८४.

जी० ३१२६६

मल्लियामंडवय [मल्लिकामण्डपक] रा० १८५

मसग [मसक] ओ० ८६, ११७. रा० ७६६.

जी० ३१६२४

मसार [मसार] रा० १३

मसारगल्ल [मसारगल्ल] रा० १०, १२, १८, ६५.

१६५, २७६. जी० ३१७

मसिहार [मसिहार] ओ० ६६

मसी [मसी, मपी] रा० २५, २७०. जी० ३१२७८,

४३५, ६०७

मसीगुलिया [मसीगुलिका] रा० २५.

जी० ३१२०८

मसूर [ममूर] जी० ११८

मसूरग [मसूरक] रा० ३७. जी० ३१३११

मह [मह] ---महेइ. रा० ७६५

मह [मह] जी० ३१६३१२

मह [महत्] ओ० ३, ७, ८, १०, १४, ४६, ५२, ६७
से ६६. रा० ३, ४, १२, १३, १५, ३२, ३५ से
३६, ५३, १२३, १४८, १८८, २०४, २३८, २४२
से २४६, २५१ से २५३, २६० से २६२, २६५,
२६७, २६६, २७०, २७२, २७३, २८८, ६८८,
७६०, ७६१, ७७४. जी० ३१११०, ११८, ११६,
२७३, २७६, २६८, ३३८, ३६१, ३६४ से ३६६,
४००, ४०१, ४०४ से ४०८, ४१०, ४१२ से ४१४,
४२१ से ४२३, ४२५ से ४२८, ४३१, ४३४,
४३५, ४३७, ४३८, ४४६ से ४४६, ४५४, ६४२,
६४६, ६५०, ६७१ से ६७५, ६८२, ६८३, ६८५,
६८६, ६८२ से ६८८, ७३७, ७५६, ७५८

महइ [महती] रा० ७३२. जी० ३१७७, २६२,
७२३

महंत [महत्] ओ० १४, ४६. रा० ६७१, ६७६.

जी० ३११११, १२४, १२५

महंती [महती] रा० ७७

महगह [महागह] जी० ३१७०३, ७२२, ८०६,

८२०, ८३०, ८३४, ८३७, ८३८, १३,
१०००

महग्य [महार्घ] ओ० २०, ५३. रा० २७८, २७६,

६८०, ६८१, ६८३ से ६८५, ६८२, ६८६, ७००,
७०२, ७०८, ७०६, ७१६, ७२६, ८०२.

जी० ३१४४४, ४४५

महच्च [महार्च, महार्घ] रा० ६६३, ६६४, ७१७,

७३२, ७६६, ७७६

महज्जुइतराय [महावृत्तिरक] रा० ७७२

महज्जुइय [महावृत्तिक] ओ० ४७, ७२, १७०.

रा० १८६, ७७२. जी० ३१११६

महज्जूईय [महावृत्तिक] रा० ६६६

महज्जुतीय [महायुतिक] जी० ३१४६, ३५०,
७२१

महण [मदन] जी० ३१५६२

महता [महत्] जी० ३१३०१, ३०२, ३२१ से
३२३

महति [महती] ओ० ७१, ७८. रा० ५२, ५६, ६१,
६६३, ६६४, ७१७, ७७६, ७८७. जी० ३११२,
११७, ११३०

महती [महती] जी० ३१५८८

महत्तर [महत्तर] ओ० ७०

महत्तरगत [महत्तरगत] ओ० ६८. रा० २८२.
जी० ३१३५०, ५६३, ६३७

महत्थ [महार्थ] रा० २७८, २७९, ६८०, ६८१,
६८३, ६८४, ६८६, ७००, ७०२, ७०८, ७०९.
जी० ३१४४४, ४४५

महद्धण [महाधन] ओ० १०५, १०६, १२८, १२९

महप्पभ [महाप्रभ] जी० ३१८८५

महप्फल [महाफल] ओ० ५२. रा० ६८७

महब्बल [महाबल] ओ० ४७, ७१, ७२. १७०.
रा० ६१, ६६६. जी० ३१५६५

महब्भूय [महाभूत] रा० ७५१

मह्यर [महत्तर] रा० ८०४

महया [महत्] रा० ७, १३१, १३२, १४७ से १५१,
१६७, २८० से २८३, ६१७, ६७१, ६७६, ६८३,
६८७ से ६८९, ६९२, ७००, ७१२, ७१६, ७३२,
७३७, ७५५, ८०३, ८०५. जी० ३१३२४, ३५०,
४४७, ५६३, ८४२, ८४५, १०२५

महरिह [महारिह] ओ० ६३. रा० ६६, ७०, २७८,
२७९, ६८०, ६८१, ६८३, ६८४, ६८६, ७००,
७०२, ७०८, ७०९. जी० ३१४४४, ४४५,
५८६

महल्ल [महत्] ओ० ४६

महल्लिया [महती] ओ० २४

महासवत्तर [महासवत्तर] जी० ३११२६

महाउत्तासतराय [महाउत्तासतराय]
रा० ७७२

महाकांदिय [महाकन्दित] ओ० ४६

महाकम्मतर [महाकर्मतर] जी० ३११२६

महाकम्मतराय [महाकर्मतराय] रा० ७७२

महाकाय [महाकाय] ओ० ४६

महाकाल [महाकाल] जी० ३११२, ११७, २५२,
७२४

महाकिरियतर [महाक्रियतर] जी० ३११२६

महाकिरियतराय [महाक्रियतराय] रा० ७७२

महागुम्मिय [महागुम्मिक] जी० ३१७१

महाघोस [महाघोष] जी० ३१२५०

महाजस [महायज्ञ] ओ० १७०

महाजाइगुम्म [महाजातिगुम्म] जी० ३१५८०

महानुद्ध [महानुद्ध] जी० ३१६२७

महानई [महानदी] ओ० ११७. रा० २७६.
जी० ३१४४५, ६३६,

महाणगर [महानगर] जी० २१४४०

महाणदी [महानदी] रा० २७६. जी० ३१३००,
५६८, ६३२, ६६८, ७४६, ८००, ८१४, ८३७

महाणरग [महानरक] जी० ३११२, ११७

महाणिरय [महानरक] जी० ३१७७

महाणील [महानील] ओ० ४७

महानुभाग [महानुभाग] ओ० ४७, ७२, १७०.
रा० १८६, ६६६. जी० ३१८६, ६८८ से ६९७,
१११६

महानुभाव [महानुभाव] जी० ३१३५०, ७२१

महातराय [महतरक] रा० ७७२

महातव [महातपस्] ओ० ८२

महावायइरुक्ख [महावातकीरुक्ख] जी० ३१८०८

महानई [महानदी] ओ० ११५, ११७.
रा० २७६

महानीसासतराय [महानीसासतराय] रा० ७७२

महानीहारतराय [महानीहारतराय] रा० ७७२

महापउम [महापउम] रा० २७६

महापउमइह [महापउमइह] जी० ३१४४५

महापउमइरुक्ख [महापउमइरुक्ख] जी० ३१८२६

महापट्टण [महापत्तन] ओ० ४६
 महापरिग्रहया [महापरिग्रहता] ओ० ७३
 महापह [महापथ] ओ० ५२, ५५. रा० ६५४,
 ६५५, ६५७, ७१२. जी० ३१५५४
 महापाताल [महापाताल] जी० ३१७२३, ७२६
 महापायाल [महापाताल] जी० ३१७२३ से ७२५,
 ७२६
 महापुंडरीय [महापुण्डरीक] ओ० १२.
 जी० ३१११८, ११६
 महापुंडरीयहृह [महापुण्डरीकहृह] जी० ३१४४५
 महापुरिसनिपडण [महापुरुषनिपतन]
 जी० ३११७, ६२७
 महापौंडरीय [महापौण्डरीक] ओ० १५०.
 रा० २३, १६७, २७६, २८८, ८११.
 जी० ३१२५६, २६१
 महाबल [महाबल] रा० १८६. जी० ३१८६,
 ३५०, ७२१, १११६
 महाभद्रपडिमा [महाभद्रपतिमा] ओ० २४
 महाभरण [महाभरण] रा० ६६, ७०
 महमइ [महामति] रा० ७६५, ७३६, ७७०
 महमंति [महामन्त्रिन्] ओ० १८. रा० ७५४,
 ७५६, ७६२, ७६४
 महामहतराय [महामहतरक] रा० ७७२
 महामहिम [महामहिमन्] जी० ३१६१५, ६१७
 महामुह [महामुख] रा० १४८, २८८.
 जी० ३१३२१, ४५४
 महामेह [महामेघ] ओ० ४, ६३. रा० १७०, ७०३.
 जी० ३१२७३
 महायस [महायशस्] ओ० ४७, ७२. रा० १८६,
 ६६६. जी० ३१८६, ३५०, ७२१, १११६
 महारंभ [महारम्भ] जी० ३१२२६
 महारंभया [महारम्भता] ओ० ७३
 महारव [महारव] ओ० ४६
 महाखल [महालक्ष] जी० ३११७१
 महारोख्य [महारोसक] जी० ३११२, ११७
 महासत [महत्] रा० ५६०

महालय [महत्] ओ० २४, ७१, ७८. रा० ५२,
 ६१, ६६३, ६६४, ७६६, ७७२, ७७६, ७८७.
 जी० ३११२, ७७, ११७, ७२३, ११३०
 महालयत्त [महत्त्व] जी० ३१२७
 महालिजर [महालिञ्जर] जी० ३१७२३
 महालिया [महती] रा० ७६६, ७७२
 महावत्त [महावर्त] ओ० ४६
 महावाय [महावात] रा० १२३
 महाविजय [महाविजय] जी० ३१६०१
 महावित्त [महावृत्त] रा० २६२. जी० ३१४५७
 महाविदेह [महाविदेह] ओ० १४१. रा० ७६६.
 जी० २१४४; ३१२२६
 महाविमाण [महाविमान] ओ० १६७, १६२.
 रा० १२६
 महावीर [महावीर] ओ० १६ से २५, २७, ४५, ४७
 से ५३, ५५, ६२, ६६ से ७१, ७८ से ८३, ११७.
 रा० ८ से १३, १५, ५६, ५८ से ६५, ६८, ७३,
 ७४, ७६, ८१, ८३, ११३, ११८, १२०, १२१, १
 ६६८, ८१७
 महावेयणतर [महावेदनतर] जी० ३१२६
 महासंगाम [महासंग्राम] जी० ३१६२७
 महासत्त्वनिपडण [महासत्त्वनिपतन] जी० ३१६२७
 महासन्नाह [महासन्नाह] जी० ३१६२७
 महासमुद्र [महासमुद्र] ओ० ५२. रा० ६८७.
 जी० ३१८४२, ८४५
 महासवतराय [महासवतरक] रा० ७७२
 महाशुक्क [महाशुक्] ओ० ५१, १६२. जी० २१६६,
 १४८, १४६; ३१०३८, १०५१, १०६१, १०६६,
 १०६८, १०८६, १०८८
 महासीक्ख [महासीख्य] ओ० ४७, ७२, १७०.
 रा० १८६, ६६६
 महाहारतराय [महाहारतरक] रा० ७७२
 महाहिमवत्त [महाहिमवत्] रा० २७६.
 जी० ३१२८५, ४४५, ७६५
 महिद [महेन्द्र] ओ० १४. रा० ६७१, ६७६
 महिदकुम्भ [महेन्द्रकुम्भ] रा० १३१, १४७.

जी० ३३०१

महिदञ्जय [महेन्द्रध्वज] रा० ५२, ५६, २३१ से

२३३, २३६, २४७ से २४६, ३११, ३१४, ३४६,
३५४. जी० ३३०३ से ३६५, ४०१, ४०६,

४१०, ४१२, ४७६, ४७६, ५१४, ५१६, ६००, ६०१

महिच्छ [महेच्छ] जी० ४३

महिद्विप [महिद्विप] जी० ४० से ५१, ७२, १७०.

रा० १८६ जी० ३२५३, २५७, ६५६, ७६५,

८०८, ८२६, ८५७, ८६०, ८६३, ८६६, ८६६, ८७३,
८७५, ८७८, ८२५, १०२१

महिद्विपतराय [महिद्विपतराय] रा० ७७२

महिद्विप [महिद्विप] रा० ६६६. जी० ३१८६,

२५६, ६३७, ६३४, ७००, ७२१, ७२४, ७३८,

७४१, ७४३, ७४६, ७६०, ७६३, ७६५, ८१६,

८५४, ८५५, ८२३, ८८८ से ८६७, १०२१,

१११६

महिम [महिम्न] जी० ३६१६

महिय [महित] रा० ३८, १६०, २२२, २५६.

जी० ३३१२, ३३३, ३८१, ८६४

महिय [महित] जी० २, ५५. रा० २२, २८१.

जी० ३३७२, ४४७

महिया [महिका] जी० १६५; ३६२६

महिवद्वह [महोपतिपथ] जी० १

महिस [महिष] जी० १, १४, १६, ५१, १०१, १२४,

१४१. रा० २७, ६७१, ७७४, ७६६. जी० ३१८४,

२८०, ५६६, ६१८, १०३८

महिसी [महिषी] जी० ३६१६

महु [महु] जी० ६२, ६३. जी० ३५८६, ५६२

महुयर [महुकर] जी० ५७

महुयरी [महुकरी] जी० ६. जी० ३२७५

महुयासव [महुयासव] जी० २४

महुर [महुर] जी० ६, ७१. रा० १३, १४, १७, १८,

२०, ६१, ७६, १७२. जी० ११५, ५०; ३२२२,

११८, ११६, २७५, २८६, ५६७, ६३६, ८५७, ८६३

महेला [महेला] जी० ३५६७

महेसक [महेसाक] जी० ३६६, ३५०, ७२१,

१११६

महोरग [महोरग] जी० १२०, १६२. रा० १४१,

१७३, १६२, ६६८, ७५२, ७७१, ७८६.

जी० ११०५, १२१; ३२६६, २८५, ३१८, ६२५

महोरगकठ [महोरगकठ] रा० १५५, २५८.

जी० ३३२८

महोरगकठग [महोरगकठग] जी० ३४१६

महोरगी [महोरगी] जी० २१८

मा [मा] जी० ११७. रा० ६६५

माइय [मा] जी० ५, ८, १०. रा० १४५. जी०

३२६८ २७४

माइय [मात्रिक] जी० १६. जी० ३५६६, ५६७

माइरक्खिया [माइरक्खिया] जी० ६२

माइल्लिया [मायिता] जी० ७३

माउ [मातृ] जी० १४. रा० ६७१

मागध [मागध] जी० ३४४५

मागह [मागध] जी० २, १११ से ११३. रा० २७६

मागहपेच्छा [मागधपेक्षा] जी० १०२, १२५. जी०

३६१६

मागहय [मागधक] जी० १३७, १३८

मागहिया [मागधिका] जी० १४६. रा० ८०६

माघवती [माघवती] जी० २१४

माडंबिय [माडम्बिक] जी० १८, ५२, ६३. रा०

६८७, ६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४.

जी० ३६०६

माण [मान] जी० १५, २८, ३७, ४४, ७१, ६१, ११७,

११६, १४३, १६१, १६३, १६८. रा० ६७१ से

६७३, ७४८ से ७५०, ७७३, ७६६, ८०१, ८१६.

जी० ३१२८, ४३८, ५६८, ७६५, ८४१

माणकसाइ [माणकपायिन्] जी० ६, १४८, १४६,

१५२, १५५

माणकसाय [माणकपाय] जी० ११६

माणणिज्ज [माणनीय] रा० २४०, २७६. जी०

३४०२, ४४२

माणवक [मानवक] जी० ३१४०२, ४०४, ५१६
 मानवग [मानवक] रा० २४४, ३५१. जी०
 ३१४०३, ४०६, १०२५
 मानवय [मानवक] रा० २३६, २७६, ३५१. जी०
 ३१४०१, ४४२, ५१६
 माणविवेग [मानविवेक] ओ० ७१
 माणस [मानस] ओ० ७४. रा० १५
 माणसिय [मानसिक] ओ० ६६
 माणुस [मानुष] ओ० १६५, १३. रा० ७५१,
 ७५३. जी० ३१८३८, २
 माणुसन्नग [मानुसन्नग] जी० ३८३८२, ३२
 माणुसभाव [मानुसभाव] ओ० ७४३
 माणुसुत्तर [मानुसुत्तर] जी० ३१८३१, ८३३.
 ८३६ से ८४२ ८४५
 माणुस्स [मानुष्य] ओ० ७४१२. रा० ७५१, ७५३.
 जी० ३११६
 माणुस्सत्त [मानुष्यक] रा० ७५१
 माणुस्सय [मानुष्यक] ओ० १५. रा० ६८५, ७१०,
 ७५३, ७७४, ७६१
 मातंग [मातङ्ग] ओ० २६. जी० ३११८
 माता [मातृ] जी० ३१६११
 माता [मात्रा] जी० ३१६६८, ८८२
 माय [मा]—माएज्जा ओ० १६५१५
 मायंग [मातङ्ग] जी० ३१११६
 माया [मातृ] ओ० ७१, १६२. जी० ३१६३१२
 माया [माया] ओ० २८, ३०, ४४, ७१, ६१, ११७,
 ११६, १६१, १६३, १६८. रा० ६७१, ७६६.
 जी० ३११२८, ५६८, ७६५, ८४१
 मायाकसाइ [मायाकपायिन्] जी० ६१४८, १४६,
 १५२, १५५
 मायाकसाय [मायाकपाय] जी० ११६
 मायामोस [मायामृषा] ओ० ७१, ११७, १६१, १६३
 मायामोसविवेग [मायामृषाविवेक] ओ० ७१
 मायाविवेग [मायाविवेग] ओ० ७१
 मार [मार] रा० २४. जी० ३१२७७

मारणंतिय [मारणान्तिक] ओ० ७७. जी० १८६
 मारणंतियसमुग्धात् [मारणान्तिकसमुद्घात्] जी०
 ३१११२, ११६३
 मारणंतियसमुग्धाय [मारणान्तिकसमुद्घात्] जी०
 ११२३, ५३, ६०, ८२, १०१; ३११०८, १५८
 मारापविभत्ति [मारा क. विभक्ति] रा० ६४
 मारि [मारि] ओ० १४. रा० ६७१
 मालणीय [मालनीय] रा० १७, १८, २०, ३२, १२६.
 जी० ३१२८८, ३७२
 मालय [दे० मालक] जी० ३१५६४
 मालवत [मालवधत्] जी० ३१५७७, ६६८, ६७७
 मालवतद्दह [माल्यवद्दह] जी० ३१६६७
 मालवतपरिधाय [माल्यवत्परिधायि] रा० २७६
 जी० ३१४४८
 मालवतपरिधाय [माल्यवत्परिधायि] जी० ३१७६५
 माला [माला] ओ० ४७, ५२, ६३, ६६, ७२. जी०
 ३१५६१
 मालागार [मालाकार] रा० १२
 मालिधरग [मालिगृहक] रा० १८२ १८३. जी०
 ३१२६४
 मालिणीय [मालिनीय] जी० ३१३००
 मालुयामंडवग [मालुकामण्डपक] रा० १८४. जी०
 ३१२६६
 मालुयामंडवध [मालुकामण्डपक] रा० १८५
 मास [मास] ओ० २८, २६, ११५, १४३. रा०
 ८०१. जी० १८६; ३१११६, १७६, १७८,
 १८०, १८२, ६३०, ८४१, ८४४, ८४७, १०८०;
 ४४४, १४४
 मास [मास] जी० ३१८१६
 मासपरिधाय [मासपरिधायि] ओ० २३
 मासल [मासल] जी० ३१८१६, ८६०, ८५६
 मासिय [मासिक] ओ० ३२
 मासिया [मासिकी] ओ० २४, १४०, १५४
 माहण [माहण] ओ० ५२, ७६ से ८१. रा० ६६७,
 ६७१, ६८७, ६८८, ७१८, ७१९, ७८७, ७८८

माहणपरिव्वाय [माहणपरिव्राजक] ओ० ६६

माहणपरिस्ता [माहणपरिषद्] रा० ७६७

माहण्य [माहात्म्य] ओ० ७१. रा० ६१

माहिब [माहेन्द्र] ओ० ५१, १६२. जी० २१६६,

१४८, १४९; ३।१०३८, १०४७, १०५८, १०६६,

१०६८, १०७६, १०८८, १०८४, ११०२, ११११

मिउ [मूतु] रा० ३७, १३३. जी० ३१३०३, ३११,

५६२, ५६६, ५६८, ७६५, ८४१

मिउमह्वसंपण [मृदुमार्दवसम्पन्न] ओ० ६१

मिउमह्वसंपणया [मृदुमार्दवसम्पन्नता] ओ० ११६

मिजा [मज्जा] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,

७५२, ७८६

मिग [मृग] ओ० ५१. रा० २४. जी० ३१०३८

मिगज्जय [मृगज्वज] रा० १६२. जी० ३१३३५

मिगलुद्धम [मृगलुब्धक] ओ० ६४

मिगलोम [मृगलोम] जी० ३१५६५

मिगवण [मृगवन] रा० ६७०

मिच्छ [म्लेच्छ] ओ० १६५, १६६

मिच्छत [मिथ्यात्व] ओ० ४६

मिच्छतकिरिया [मिथ्यात्वक्रिया] जी० ३१२१०,
२११

मिच्छताभिणिवेस [मिथ्यात्वाभिनिवेश] ओ०

१५५, १६०

मिच्छदिट्ठि [मिथ्यादृष्टि] ओ० १६०. रा० ६२.

जी० ३११०३, १५१

मिच्छा [मिथ्या] जी० ३१२११

मिच्छादंसणसल्ल [मिथ्यादर्शनशल्य] ओ० ७१,

११७, १६१, १६३. रा० ७६६

मिच्छादंसणसल्लविवेग [मिथ्यादर्शनशल्यविवेग]

ओ० ७१

मिच्छादिट्ठि [मिथ्यादृष्टि] जी० ११२८, ८६;

३११०५, ११०६; ६१६७, ६६

मिणालिया [मृणालिका] जी० ३१२८२

मित [मित] जी० ३१५६६, ५६७

मित्त [मित्र] ओ० १५०. रा० ७५१, ७७४,

८०२, ८११. जी० ३१६१३, ६३१

मित्त [मात्र] रा० २५४, ८०६, ८१०

मित्तपक्ख [मित्रपक्ष] जी० ३१४४८

मिथुण [मिथुन] जी० ३१६३६

मिथुण [मिथुन] जी० ३१३५५

मिय [मृग] रा० ६७१, ७०३, ७१८

मिय [मित] ओ० १६

मियगंध [मृगगन्ध] जी० ३१६३१

मियवण [मृगवन] रा० ७०६, ७११, ७१३, ७१६,

७२६

मिरिय [मरीचि] रा० १३३. जी० ३१२६१, ३०३

मिरीइकवच [मरीचिकवच] जी० ३१३७२

मिरीय [मरीचि] जी० ३१२६६, २६६, २७७

√मिल [मिल्] —मिलंति जी० ३१४४५

√मिसाय [मिल्] —मिलायंति. रा० २७६

मिलाइत्ता [मिलित्वा] रा० २७६

मिलायमाण [म्लायत्] रा० ७८२

मिलित्ता [मिलित्वा] जी० ३१४४५

मिलेच्छ [म्लेच्छ] जी० ३१२२६

मिसिमिसंत [दे०] ओ० ६३

मिसिमिसंत [दे०] रा० १७, १८, ६६, ७०

मिस्स [मिश्र] जी० ११७११२

मिहुण [मिथुन] ओ० ६. जी० ३१२७५, २८६

मिहुणग [मिथुनक] रा० १७४. जी० ३१३१८

मिहुणय [मिथुनक] जी० ३१११८, ११६

मीरिय [मरीचि] ओ० १२

मीसजाय [मिश्रजात] ओ० १३४

मीसय [मिश्रक] ओ० ४६

मीसिय [मिश्रित] ओ० २८

मुइंग [मृदङ्ग] ओ० ६७, ६८. रा० ७, १३, २४, ७७,

६५७, ७१०, ७७४. जी० ३१२७७, ३५०, ४४६,

५६३, ५८८, ८४२, ८४५, १०२५

मुइत्ता [मुक्त्वा] रा० २८८

मुइय [मुदित] ओ० १४. रा० ६७१

मुएत्ता [मुक्त्वा] जी० ३१४५४

√मुञ्च [मुच्] -मुञ्चइ. ओ० १७७. मुच्चंति. ओ० ७२. जी० ११३३. —मुच्चंती. ओ० ७४४. मुच्चिहिति. ओ० १६६. —मुच्चिहिति. ओ० १५४. रा० ६१६.

मुंड [मुण्ड] ओ० २३, ५२, ७६, ७८, १२०. रा० ६८७, ६८९, ६९५, ७३२, ७३७, ८१२

मुंडभाव [मुण्डभाव] ओ० १५४, १६५, १६६. रा० ८१६

मुंडमाल [मुण्डमाल] जी० ३५९४

मुंडि [मुण्डिन्] ओ० ६४

मुक्क [मुक्त] ओ० २, २७, ५५. रा० १२, ३२, २८१. जी० ३१२९१६, ३७२, ४४७, ५८०, ५९१, ५९७

मुक्कतोय [मुक्ततोय] रा० ८१३

मुखछिण्ण [मुखछिन्नक] ओ० ६०

मुगुंद [मुकुन्द] रा० ७७

मुगुंदमह [मुकुन्दमह] जी० ३१६१५

मुगुंसिया [दे०] जी० २१६

मुच्छिज्जंत [मूच्छर्यमान] रा० ७७

मुच्छिता [मूच्छिता] जी० ३१२८५

मुच्छिय [मूच्छित] रा० १५, ७५३

मुच्छिया [मूच्छिता] रा० १७३

√मुज्ज [मुह्]—मुज्जिहिति. ओ० १५०. रा० ८११

मुट्टि [मुष्टि] रा० १३३. जी० ३१३०३

मुट्टिजुद्ध [मुष्टिजुद्ध] ओ० १४६. रा० ८०६

मुट्टिय [मौष्टिक, मुष्टिक] ओ० १, २. रा० १२, ७५८, ७५९. जी० ३११८

मुट्टियपेच्छा [मौष्टिकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५. जी० ३१६१६

मुणाल [मृणाल] ओ० १९४. रा० १७४. जी० ३११८, ११९, २८६

मुणालिया [मृणालिका] ओ० १६, ४७. रा० २९. जी० ३१५९६

मुणिपरिस्ता [मुनिपरिषद्] ओ० ७१. रा० ६१

मुणिय [जात्वा] ओ० २३

मुणतव्व [जातव्य] जी० ३१६३४

मुणैयव्व [जातव्य] जी० ३१८३८११, २२

मुत्त [मुक्त] ओ० १६, २१, ४६, ५४. रा० ८, २९२. जी० ३१४५७

मुत्ता [मुक्ता] रा० २०. जी० ३१२८८

मुत्ताजाल [मुक्तजाल] रा० १३२, १५६, १६१. जी० ३१२६५, ३०२, ३३२

मुत्तादामि [मुक्तादामन्] रा० ४०. जी० ३१३१३, ३५५

मुत्तालय [मुक्तालय] ओ० १६३

मुत्तावलि [मुक्तावलि] ओ० १०८, १३१. रा० २८५. जी० ३१४५१, ६३६

मुत्तावलिपविभक्ति [मुक्तावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

मुत्ति [मुक्ति] ओ० २५, ४३, १६३. रा० ६८६, ८१४

मुत्तिमग [मुक्तिमार्ग] ओ० ७२

मुत्तिमुह [मुक्तिमुख] ओ० १६५, १४

मुद्दा [मुद्रा] ओ० ४७. रा० २८५

मुद्दिया [मुद्रिका] ओ० ६३, १०८, १३१. जी० ३१४५१

मुद्दियामंडवग [मृद्रीकामण्डपक] रा० १८४. जी० ३१२९६

मुद्दियामंडवय [मृद्रीकामण्डपक] रा० १८५

मुद्दियासार [मृद्रीकासार] जी० ३१५८६, ८६०

मुद्ध [मूर्धन्] ओ० १६, २१, ५४. जी० ३१५९६

मुद्धज [मूर्धज] जी० ३१४१५

मुद्धय [मूर्धज] रा० २५४

मुद्धाण [मूर्धन्] रा० ८, २९२

मुद्धाहिसित्त [मूर्धाभिषिक्त] ओ० १४. रा० ६७१

मुम्मुर [मुर्मुर] जी० ११७८; ३१८५

मुय [मृत] रा० ७६२, ७६३

√मुय [मुच्]—मुयइ. रा० २८८. मुयति. जी० ३१४५४

सुर्यग [मृदङ्ग] जी० ३।७८
 सुर्यंत [मुञ्चत्] ओ० ७, ८, १०. जी० ३।२७६
 सुरंडी [मुरण्डी] रा० ८०४
 सुरय [मुरज] ओ० ६७. रा० १३. ७७, ६५७
 सुरव [मुरज] जी० ३।७८, ४४६
 सुरवि [दे०] जी० १०८, १३१. रा० २८५
 सुरंडी [दे०] जी० १।७३
 मुसल [मुसल] ओ० १६. जी० ३।११०, ५६६
 मुसावाय [मृषावाद] ओ० ७१, ७६, ७७, ११७,
 १२१, १६१, १६३. रा० ६६३, ७१७, ७६६
 मुसावायवेरमण [मृषावादविरमण] ओ० ७१
 मुसुडि [दे०] ओ० १. जी० ३।११०
 मुहमंगलिय [मुखमङ्गलिक] ओ० ६८
 मुहमंडव [मुखमण्डप] रा० २११ से २१५, २६५
 से २६६, ३२६ से ३३०, ३३३ से ३३७. जी०
 ३।३७४ से ३७६, ४१२, ४२१, ४६० से ४६४,
 ४६१ से ४६५, ४६६ से ५०२, ८८७ से ८८९
 मुहमूल [मुखमूल] जी० ३।७२३, ७२६
 मुहुत्त [मुहूर्त्त] ओ० २८, १४५. रा० ७५३, ८०५
 मुहुत्तंतर [मुहूर्त्तान्तर] रा० ७६५
 मुहुत्ताग [मुहूर्त्त] रा० ७५१, ७५३
 मूढ [मूढ] रा० ७३२, ७३७, ७६५
 मूढतराय [मूढतरक] रा० ७६५
 मूल [मूल] ओ० ६४, १३५. रा० १२७, २०४,
 २०५, २०६, २२८. जी० १।७१, ७२; ३।२६१,
 ३५२, ३६४, ३७२, ३८७, ६३२, ६४३, ६५४,
 ६६१, ६७२, ६७८, ६७९, ६८६, ७२३, ७२६,
 ७३६, ७६२, ८३६, ८७८, ८८२, १००७
 मूलमंत [मूलमत्] ओ० ५, ८, १०. जी० ३।२७४,
 ३८६, ५८१
 मूलय [मूलक] जी० १।७३
 मूलारिह [मूलार्ह] ओ० ३६
 मूलाहार [मूलाहार] ओ० ६४
 मूसग [मूषक] जी० ३।८४

मूसिया [मूषिका] जी० २।६
 मेइणी [मेदिनी] जी० ३।५६७
 मेंडमुह [मेघमुख] जी० ३।२१६
 मेघ [मेघ] रा० १३, १४
 मेढि [मेढी] रा० ६७५
 मेढिभूय [मेढीभूत] रा० ६७५
 मेत्त [मात्र] ओ० ३३, १२२. रा० ६, १२, ४०,
 २०५ से २०८, २२५, २७६
 मेत्तय [मात्रक] जी० ३।४४०
 मेघावि [मेघाविन्] रा० १२, ७५८, ७५९
 मेरग [मेरक] जी० ३।५८६
 मेरय [मेरक] जी० ३।८६०
 मेरु [मेरु] जी० ३।८३८, १०, ११
 मेरयालवण [मेरतालवण] जी० ३।५८१
 मेत्तिय [मेत्तित] जी० ३।५६२
 मेहुमुह [मेघमुख] जी० ३।२१६
 मेहला [मेखला] जी० ३।५६३
 मेहस्सर [मेघस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५
 मेहावि [मेघाविन्] ओ० ६३. जी० ३।११८
 मेहुण [मैथुन] ओ० ७१, ७६, ७७, ११७, १२१,
 १६१, १६३
 मेहुणवत्तिय [मैथुनप्रत्यय] जी० ३।१०२५
 मेहुणवेरमण [मैथुनविरमण] ओ० ७१
 मेहुणसण्णा [मैथुनसंज्ञा] जी० १।२०;
 ३।१२८
 मोक्ख [मोक्ष] ओ० ७१, १२०, १६२
 मोगगर [मुद्गर] जी० ३।११०
 मोगगरगुम्स [मुद्गरगुत्तम] जी० ३।५८०
 मोणचरय [मौनचरक] ओ० ३४
 मोत्तिय [मौत्तिक] ओ० २३. रा० ६६५.
 जी० ३।६०८
 √मोय [मुच्]—मोएति. रा० ७३१
 मोयग [मोचक] ओ० २१, ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३।४५६

भोयपडिमा ['भोय' प्रतिमा] ओ० २४

भोयय [भोचक] ओ० १६

भोर [मयूर] रा० २६, जी० ३१२७६

भोल्ल [मूल्य] ओ० १०५, १०६

भोसमणजोग [मृषामनोयोग] ओ० १७८

भोसवइजोग [मृषावाग्योग] ओ० १७६

भोसाणुबंधि [मृषानुबन्धिन्] ओ० ४३

भोह [मोह] ओ० ४६, रा० ७७१

√ भोह [मोहय्] — मोहंति, जी० ३१२१७

— मोहेंति, रा० १८५

भोहणघर [मोहनगृह] जी० ३१५६४

भोहणघरग [मोहनगृहक] रा० १८२, १८३,

जी० ३१२६४

भोहणिज [मोहनीय] ओ० ८५, ८६

भोहणीय [मोहनीय] ओ० ४४

भोहरिय [मौखरिक] ओ० ६५

य

य [च] ओ० ३२, रा० ७, जी० ११२

यज्जुवेद [यजुर्वेद] ओ० ६७

या [च] रा० ७०५

र

रइ [रति] ओ० ४६, रा० १५, ८०६, ८१०

रइय [रचित] ओ० १, २१, ४६, ५४, ६४, १३४,
१८२, रा० ८, ३२, ६६, ७६, १३३, ७१४,

जी० ३१३७२, ५६१, ५६६, ५६७

रइय [रतिद] ओ० १६, जी० ३१५६६, ५६७

रइय [रतिक] ओ० ६३, ६५

रइल [रजस्वत्] जी० ३१७२१

रउग्धात [रजउद्घात] जी० ३१६२६

रंगंत [रङ्गत्] ओ० ४६

रक्खंत [रक्षत्] ओ० ६४

रक्खस [राक्षस] ओ० ४६, १२०, १६२,

रा० ६६८, ७५२, ७८६

रक्खसमहोरगगंधवमंडलपविमत्ति [राक्षसमहोरग-
गन्धर्वमण्डलप्रविमत्ति] रा० ६०

√ रक्खाव [रक्षापय्] — रक्खावेमि, रा० ७५४

रक्खोवग [रक्षोपग] रा० ६६४

रगसिगा [रगसिका] जी० ३१५८८

रचिय [रचित] जी० ३१३०३

रज्ज [राज्य] ओ० १४, २३, रा० ६७१, ६७४,

६७६, ७६०, ७६१

√ रज्ज [रज्ज्] — रज्जिहिति, ओ० १५०

रज्जधुराचिंतय [राज्यधूश्चिन्तक] रा० ६७५

रज्जसिरी [राज्यश्री] रा० ७६१

रज्जु [रज्जु] रा० १३५, जी० ३, ३०५

रट्ट [राट्ट] ओ० २३, रा० ६७४, ७६०, ७६१

रण [अरण्य] ओ० २८

रतण [रत्न] जी० ३१४६६

रतणसंचया [रत्नसञ्चया] जी० ३१६२२

रतणुच्चया [रत्नोच्चया] जी० ३१६२२

रति [रति] जी० ३१११८, ११६, ५६७

रतिकर [रतिकर] रा० ५६, जी० ३१६१८ से
६२२

रतिय [रतिद] जी० ३१५६६, ५६७

रतिय [रतिक] जी० ३१८४२, ८४५

रत्त [रक्त] ओ० ४७, ५१, ६६, ७१, १०७, १२०,

१३०, १६२, रा० २७, ७६, १३३, १७३, २२८,

६६४, ६६८, ७५२, ७७७, ७७८, ७८८, ७८९,

जी० ३१२८०, २८५, ३०३, ३८७, ५६२, ५६५ से

५६७, ६७२

रत्तमुय [रक्तांशुक] रा० ३७, २४५, जी०

३१३११, ४०७

रत्तकणवीर [रक्तकणवीर] रा० २७,

जी० ३१२८०

रत्तचंदण [रक्तचन्दन] ओ० २, ५५, रा० ३२,

२८१, जी० ३१३७२, ४४७

रत्ततल [रक्ततल] ओ० १६, ४७, जी० ३१५६६

रत्तपाणि [रक्तपाणि] रा० ६६४, जी० ३१५६२

रत्तबंधुजीव [रक्तबंधुजीव] रा० २७

जी० ३१२८०

रत्नरयण [रत्नरत्न] ओ० २३

रत्नवई [रत्नवती] रा० २७६

रत्नवती [रत्नवती] जी० ३१४४५

रत्ता [रत्ता] रा० २७६. जी० ३१४४५

रत्तासोम [रत्ताशोक] ओ० २२. रा० २७, ७७७,
७७८, ७८८. जी० ३१२८०

रत्ति [रत्ति] रा० ४५

रत्तुपल [रत्तोत्पल] ओ० १६. रा० २७.

जी० ३१२८०, ५६६, ५६७

रत्त्या [रत्त्या] ओ० ५५. रा० २८१.

जी० ३१४४७

रथ [रथ] जी० ३१८६

रद्ध [रद्ध] जी० ३१५६२

रम् [रम्]—रमति. रा० १८५. जी० ३१२१७.

—रमिज्जड. रा० ७८३

रमणिज्ज [रमणीय] ओ० १६, ४७, ६३, १६२.

रा० २४, ३३, ३५, ६५, ६६, १२४, १७१, १८६

से १८८, २०३, २०४, २१७, २३७, २३८, २६१,

७८१ से ७८७. जी० ३१२१८, २५७, २७७,

३०६, ३१०, ३३६, ३५६ से ३६१, ३६४, ३६५,

३६८, ३६९, ३६९, ४००, ४२२, ४२७, ५८०,

५६६, ५६७, ६२३, ६३३, ६३४, ६४५, ६४६,

६४८, ६४९, ६५६, ६६२, ६६३, ६७०, ६७१,

६७३, ६८०, ६८१, ७३७, ७५५ से ७५८, ७६८,

८८३, ८८४, ८८०, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८,

१००३, १०३८

रम्भ [रम्भ] ओ० ४, ६. रा० १७०, १७३, ६७०,

७०३, ८०४. जी० ३१२७३, २७५, २८५, ५६१

रम्भगवास [रम्भकवर्ष] रा० २७६. जी० २१३३,

३२, ५६, ७०, ७२, ८६, १४७, १४८; ३१२२८,

४४५

रम्भगवास [रम्भकवर्ष] जी० ३१७६५

रय [रजम्] ओ० २३. रा० ६, १२, २८१.

जी० ३१४४७, ५६८

रय [रय] ओ० ४६

रयण [रत्न] ओ० २३, ४७, ४८, ६३, ६४.

रा० १०, १२, १७, १८, ३२, ३७, ४०, ५१, ६५,

६६, ७०, १३०, १३२, १३७, १६०, १६५, २२८,

२५६, २७६, २८१, २८५, २८२, ६६५, ७७४.

जी० ३१७, २४६० से ६३, २६५, ३००, ३०२.

३०७, ३११, ३३३, ३४६, ३५७, ३७२, ३८७,

४१७, ४४५, ४४७, ४५७, ५८७, ५८८, ५८९,

५८३, ६७२, ७७५, ८३६, ८३७

रयणकंड [रत्नकाण्ड] जी० ३१८, १५, २०

रयणकरंडग [रत्नकरण्डक] ओ० २६. रा० १५४,

२५८, २७६, ७५० से ७५३. जी० ३१३२७,

४१६, ४४५

रयणकरंडय [रत्नकरण्डक] रा० १५४.

जी० ३१३२७

रयणकरंडा [रत्नकरण्डक] जी० ३१३५५

रयणजाल [रत्नजाल] रा० १६१. जी० ३१२६५

रयणप्रभा [रत्नप्रभा] रा० १२४. जी० ११६२;

२११००, १२७, १३५, १३८, १४८, १४९; ३१३,

५ से ६, १२ से १६, २२ से २६, २६, ३०, ३३,

३७ से ३९, ४२, ४४, ४५, ४७ से ५७, ५८ से

६५, ७३, ७६ से ७८, ८०, ८१, ८३ से ८८, १०३

से ११०, ११२, ११६, १२० से १२४, १२६ से

१२८, २३२, २५७, १००३, १०३८, १०३९,

११११

रयणपहा [रत्नप्रभा] ओ० १८६, १६२.

जी० ११०१; २१३५

रयणभार [रत्नभार] रा० ७७४

रयणभारय [रत्नभारक] रा० ७७४

रयणमय [रत्नमय] जी० ३१७४७

रयणा [रत्ना] जी० ३१६७ से ७२, ६२२

रयणागर [रत्नाकर] रा० ७७४

रयणामय [रत्नमय] ओ० १२. रा० २१, २३, ३८,

१२४, १२५, १२७, १२८, १३१, १३४, १४१,

१४५, १४८, १५१, १५२, १५५ से १५७, १६०,

१६१, १८० से १८५, १८२, १८७, २२२, २५३,

२५६, २५७, २७२. जी० ३१२६२, २६३, २६६,

२६८, २६९, २७०, २६१ से २६६, ३०१, ३०४,
३१०, ३१२, ३१८, ३१९, ३२४, ३२५, ३२८ से
३३०, ३३३, ३३४, ३४७, ३४८, ३८१, ४१४,
४१८, ४३७, ६७५, ७५०, ७५३, ८६३, ८६६,
६०७, ६१८, १०३८, १०३९, १०८१

रयणावलि [रत्नावलि] ओ० १०८, १३१.

रा० २८५. जी० ३; ४५, १

रयणावलिप्रविभक्ति [रत्नावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

रयणि [रति] ओ० १६५।६

रयणिकर [रजनिकर] जी० ३।५६७

रयणियर [रजनिकर] ओ० १५. रा० ६७२.

जी० ३।८३८।१२, १३

रयणी [रजनी] ओ० २२. रा० ७२३, ७७७, ७७८,
७८८

रयणी [रत्नी] ओ० १८७, १६५।७.

जी० १।१३५; ३।६१, ७८८, १०८७ से १०८९

रयत [रजत] जी० ३।७, ३००, ३३३, ४१७

रयत्ताण [रजस्त्राण] रा० ३७, २४५.

जी० ३।३११, ४०७

रयय [रजत] ओ० १४, १४१. रा० १०, १२, १८,

६५, १३०, १६०, १६५, १७४, २२८, २५५,

२५६, २७६, ६७१, ७६६. जी० ३।२८६, ३००,

३८७, ४१६, ६७२, ६७६, ७४७

रयय [पाय] [रजतपाय] ओ० १०५, १२८

रयय [बंधण] [रजतबन्धन] ओ० १०६, १२६

रययामय [रजतमय] रा० ३७, १३०, १३२, १३५,

१५३, १७४, १६०, २३६, २४०, २४५, २८८,

२६१. जी० ३।२६४, २८६, ३००, ३०२, ३०५,

३११, ३२४, ३२६, ३६८, ४०२, ४०७, ४५४,

४५७, ६३६

रत्नग [रत्नक] जी० ३।५६५

रव [रवि] ओ० ४६, ५२, ६७, ६८. रा० ७, १३,

१५, ५५, ५६, ५८, २८०, २६१, ६५७, ६८७,

६८८. जी० ३।३५०, ४४६, ४५७, ५५७, ५६३,

८४२, ८४५, १०२५

रवत [रवत्] ओ० ४६

रवभूय [रवभूत] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८

रवि [रवि] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७, ८०६,
८३८।३

रस [रस] ओ० १५, १६१, १६३, १६६, १७०.

रा० १७३, १६६, ६७२, ६८५, ७१०, ७५१,

७७४. जी० १।५, ३८, ५८, ७३, ७८, ८१;

३।५८, ८७, २७१, २८५, २८६, ३८७, ५८६, ५६२,

६०१, ६०२, ७२५, ७२७, ८६०, ८६६, ८७२,

८७८, ८७२, ८८०, ८८२, १०८१, ११११, ११२४

रसओ [रसतस्] जी० १।५०

रसतो [रसतस्] जी० ३।२२

रसपरिच्छाय [रसपरित्याग] ओ० ३१, ३५

रसमंत [रसवत्] जी० १।३३

रसविगड [रसविकृति] ओ० ६३

रसिय [रसित] रा० १३, १४

रसोदय [रसोदक] जी० १।६५

रह [रथ] ओ० १, ७, ८, १०, ५२, ५५ से ५७, ६२,
६४ से ६६, १००, १२३, १७०. रा० १५१,

१७३, ६८३, ६८५, ६८७ से ६८९, ६९२, ७०८,

७१०, ७१६, ७२७ से ७२९, ७३१, ७३२.

जी० ३।२६०, २७६, २८५, ३२३, ५८१, ५८५,

५६७, ६१७

रहघणघणाइय [रथघतघनायित] रा० २८१.

जी० ३।४४७

रहजोहि [रथयोधिन्] ओ० १४८, १४९. रा०
८०६, ८१०

रहवाय [रथवात] रा० ७२८

रहस्स [रहस्य] ओ० ६७. रा० ६७५, ७६३

रहित [रहित] जी० ३।११२१ से ११२३

रहिय [रहित] ओ० १. जी० ३।५६७

रहोकम्म [रहकम्मन्] रा० ८१५

राइ [राजि] ओ० १६. रा० ७५४ से ७५७.

जी० ३।५६७

राइंदिय [रात्रिवि] ओ० २४, १४३. रा० ८०१.

जी० १।७६, ८८; ३।६३०; ४।४, १३; ५।६, १३,

२८, २९

राइण [राजय] ओ० २३, ५२. रा० ६८७, ६८८
राइय [रात्रिक] ओ० २६

[एगराइय (एकरात्रिक) पंचराइय (पंचरात्रिक)]

राईभोयण [रात्रिभोजन] ओ० ७६

राम [राग] ओ० ३७, ४६, ५२, ५५, ७४६, १०७,
१३०, १६८. रा० १६, १३३, २८१, ७७१. जी०
३१३०३, ४४७, ५६५

रार्तिदिव [रात्रिदिव] जी० ३१२१८

राम [नाम] ओ० ६६. जी० ३१११७

रामरक्षिता [रामरक्षिता] जी० ३१६१६

रामा [रामा] जी० ३१६१६

राय [राजन्] ओ० १४ से १६, १८, २०, २१, ५२
से ५६, ६२ से ६८, ७०, ७१, ८०, ८६. रा० ५,
६, १५४, ६०१ से ६७५, ६७६ से ६८१, ६८३ से
६८५, ६८७, ६८८, ६८९ से ७००, ७०२ से
७०४, ७०८ से ७१०, ७१८ से ७२०, ७२३ से
से ७२६, ७२८ से ७३४, ७३६ से ७३६, ७४७
से ७८१, ७८८ से ७८१, ७८३ से ७८६. जी०
३१२६, ३२७, ५६२, ६०२, ६०६, ६३१, ७४७,
८६६, ८५६

रायगण [राजाङ्गण] रा० १२, १७३. जी०
३१२८५

रायतेउर [राजान्तःपुर] रा० १२, १७३

रायकउह [राजकुह] ओ० ६६

रायकज [राजकार्य] रा० ६८०, ६८८

रायकहा [राजकथा] ओ० १०४, १२७

रायकिच [राजकृत्य] रा० ६८०, ६८८

रायकुल [राजकुल] रा० ६७१

रायणीइ [राजनीति] रा० ६८०, ६८८

रायघाणी [राजघाणी] जी० ३१४४६, ७००, ७०१

रायमग [राजमार्ग] ओ० १. रा० ६८४, ६८५,
७००, ७०६

रायवख [राजवख] ओ० ६, १०. जी० ३१३८८,
५८३

रायलवखण [राजलक्षण] रा० ६७१

रायववहार [राजववहार] रा० ६८०, ६८८

रायहाणी [राजघाणी] रा० २८२, ६६७. जी०

३१३५०, ३५१, ३५४, ३५५, ३५७, ३५८, ३६०,

४३६, ४४२, ४४५, ४४७, ४४८, ४४९, ४५४, ४५५,

४५७, ४६३, ४६७ से ४६६, ४६७, ४६८, ४६९,

४७०, ४६५, ४६६, ७०१, ७१०, ७१२, ७१३,

७२१, ७३८, ७३९, ७४१, ७४४, ७४७, ७५१ से

७५३, ७६०, ७६१, ७६३ से ७८०, ८००, ८१४,

८०२, ८१६ से ८२२, ८४०, ८४५

रायारिह [राजार्ह] रा० ६८०, ६८१, ६८३, ६८४,
६८६, ७००, ७०२, ७०८, ७०९

रासि [राशि] ओ० १६५१५. रा० २७, २६, ३१.
जी० ३१२८०, २८२, २८४, ८१६, ८३६

राहु [राहु] ओ० ५०

राहुविमाण [राहुविमान] जी० ३१८३८१७

रिउवेद [ऋग्वेद] ओ० ६७

रिगिसिया [दे० रिङ्गिसिका] रा० ७७

रिख [ऋक्ष] ओ० ६३. जी० ३१८३८२६

रिद्ध [रिष्ट] रा० १०, १२, १८, ६५, १६५, २७६.
जी० ३१७, ८, १५, २४, ३०, ६२, ३४६, ४४५

रिद्धमय [रिष्टमय] जी० ३१४३५

रिद्धय [रिष्टक] ओ० १३

रिद्धा [रिष्टा] जी० ३१४

रिद्धाभ [रिष्टाभ] जी० ३१५८६

रिद्धामय [रिष्टमय] रा० १६, १३०, १७५, १६०,
२२८, २५४, २७०. जी० ३१२६४, २८७, ३००,
३८७, ४१५, ४३५, ६४३, ६७२

रिद्ध [ऋद्ध] ओ० १. रा० १, ६६८, ६६९, ६७६,
६७७

रिभित [रिभित] जी० ३१४४७

रिभिय [रिभित] रा० ७६, १०६, ११६, १७३,
२८१. जी० ३१२८५

रिधारिय [रितारित] रा० १११, २८१.
जी० ३१४४७

रिसि [ऋषि] ओ० ७१

रीतिया (पाय) [रीतिकापात्र] ओ० १०५,

१२८

रीतिया(बंधन) [रीतिकाबन्धन] ओ० १०६, १२६

रुह [रुचि] रा० ७४८ से ७५०, ७७३

रुहर [रुचिर] जी० ३१५६६, ६७२

रुहल [रुचिर] ओ० ५, ८, १६. रा० २२८.

जी० ३१२७४, ३८७, ५६६, ५६७

रुंद [दे०] विस्तीर्ण ओ० ४६

रुक्म [रुक्म] रा० ७८२, जी० १६६, ७०, ७२;

३१५८१, ६०३, ६०४, ६३१, ६७६, ६३७

रुक्मगेहालय [रुक्मगेहालय] जी० ३१६०३, ६०५

रुक्ममह [रुक्ममह] रा० ६८८, जी० ३१६१५

रुक्ममूल [रुक्ममूल] ओ० ८, १०. जी० ३१३८६,

५८१ से ५८३, ५८६ से ५८५

रुक्ममूलिय [रुक्ममूलिक] ओ० ६४

रुचिज्जमाण [रुच्यमान] जी० ३१२८३

रुद्र [रौद्र] रा० ६७१

रुद्र (भाण) [रौद्रध्यान] ओ० ४३

रुद्रमह [रुद्रमह] रा० ६८८, जी० ३१६१५

रुपकूला [रूपकूला] रा० २७६.

जी० ३१४४५

रुप्यच्छद [रूप्यच्छद] जी० ३१३३२

रुप्यपट्ट [रूप्यपट्ट] रा० २२, २६. जी० ३१२८२,

२६०

रुप्यमणिमय [रूप्यमणिमय] रा० २७६, २८०

रुप्यमय [रूप्यमय] रा० १५६, २७६, २८०

रुप्यागर [रूप्याकर] रा० ७७४, जी० ३१११८

रुप्यामणिमय [रूप्यमणिमय] जी० ३४४५

रुप्यामय [रूप्यमय] जी० ३१४४५, ४४६

रुप्यि [रुपिमन्] रा० २७६. जी० ३१४४५,

७६५

रुयग [रुचक] जी० ८७. जी० ३१५६६, ५६७,

७७५, ६४२, ६५२

रुयगवर [रुचकवर] जी० ३१६३४

रुयगवरभट्ट [रुचकवरभट्ट] जी० ३१६३४

रुयगवरमहाभट्ट [रुचकवरमहाभट्ट] जी० ३१६३४

रुयगवरोभास [रुचकवरावभास] जी० ३१६३४

रुयगवरोभासभट्ट [रुचकवरावभासभट्ट]

जी० ३१६३४

रुयगवरोभासमहाभट्ट [रुचकवरावभासमहाभट्ट]

जी० ३१६३४

रुयगवरोभासमहावर [रुचकवरावभासमहावर]

जी० ३१६३४

रुयगवरोभासवर [रुचकवरावभासवर]

जी० ३१६३४

रुयय [रुचक] ओ० १६. जी० ३१६३४

रुह [रुह] ओ० १३. रा० १७, १८, २०, ३२, ३७,

१२६. जी० ३१२८८, ३००, ३११, ३७२

रुहिर [रुधिर] रा० २७. जी० ३१२८०

रुत [रुत] जी० ३१४०७

रुय [रुत] ओ० १३. रा० ३१, ३७, १८५, २४५.

जी० ३१२८४, २६७, ३११

रुव [रूप] ओ० १५, २३, ४७, ६३, ७२, १४६, १६१,

१६३, १६२. रा० १०, ४७, ५४, ६६, ७०, ७६,

१७३, १६०, ६७२, ६८५, ७१०, ७५१, ७७१,

७७४, ८०६, ८०६ ८१०. जी० २११५१;

३१११०, १११, २६४, २८५, ५६०, ५६४, ५६६,

५६७, ६८२, १११५, १११७, ११२४

रुवग [रूपक] रा० १७, १८, २०, ३२, १२६, १३२.

जी० ३१२८८, ३००, ३७२

रुवसंपण्य [रूपसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

रुवि [रुपिन्] रा० ७७१. जी० ११३, ५

रेणु [रेणु] रा० ६, १२, २८१. जी० ३१४४७

रेयग [रेवक] रा० ७६

रेरिज्जमाण [राराज्जमान] रा० ७८२

रोइयावसाण [रोचितावसान] रा० ११५, १७३,

२८१. जी० ३१४४७

रोएमाण [रोचमान] जी० ११

रोचियावसाण [रोचितावसान] जी० ३१२८५

रोग [रोग] ओ० ४६, ११७. रा० ७६६.

जी० ३१६२८, ६३१

रोम [रोमन्] ओ० ६२. जी० ३।५६७

रोमराइ [रोमराजि] ओ० १६. रा० २५४.

जी० ३.४१५,५६६,५६७

रोमसुह [रोमसुख] ओ० ६३

√रोय [रुच्]—रोएज्जा रा० ७५०

रोएमि. रा० ६६५

रोहय [रोहक] जी० ३।१२,११७

रोहिणिय [रोहिणिक] जी० १।८८

रोहिणी [रोहिणी] जी० ३।६२१

रोहितांसा [रोहितांसा] जी० ३।४४५

रोहिया [रोहिता] रा० २७६. जी० ३.४४५

रोहियंसा [रोहितांसा] रा० २७६

ल

लउड [लकुट] जी० ३।११०

लउय [लकुच] ओ० ६ से ११. जी० १।७२;
३।५८३

लउल [लकुट] ओ० ६४

लउलग [लकुटाग्र] ओ० ३।८५

लउसिया [लाओसिया, लउसिया] रा० ७०.

रा० ८०४

लंख [लङ्ख] ओ० १,२

लंखपेच्छा [लङ्खपेक्षा] ओ० १०२,१२५.

जी० ३।६१६

लंघण [लङ्घन] रा० १२,७५८,७५९.

जी० ३।११८

लंतक [लान्तक] ओ० ५१,१६२. जी० ३।१०३८,

१०५०,११११

लंतय [लान्तक] ओ० १५५. जी० २।१४८,

१४९; ३।१०६०,१०६६,१०६८,१०७६,

१०८८,१०९५,११०३

लंबंत [लम्बमान] जी० ३।५६१

लंबियग [लम्बितक] ओ० ६०

लंबूसग [लम्बुसक] रा० ४०,१३२,१६१.

जी० ३।२६५,३०२ ३।१३,३६७

लबखण [लक्षण] ओ० १४,१५,१६,४३,१४३,

१६५।११. रा० १३३,६७२,६७३,७७४,८०१.

जी० ३।३०३,५६६,५६७

लबखारसग [लाक्षारसक] रा० २७

लबखारसय [लाक्षारसक] जी० ३।२८०

लग्ग [लग्न] ओ० २३

लच्छी [लक्ष्मी] ओ० ६५

लज्जा [लज्जा] ओ० २५

लज्जासंपण [लज्जासम्पन्न] ओ० २५.

रा० ६८६

लज्जु [लज्जावत्] ओ० १६४

लट्ट [लट] ओ० १,१६,६३. रा० ३२,५२,५६,

२३१,२४७. जी० ३।३७२,३६३,४०१,५६६,
५६७

लट्टवंत [लट्टवन्त] जी० ३।२१६

लट्टिगाह [लट्टिगाह] ओ० ६४

लडह [दे०] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६७

लणह [लक्षण] ओ० १२,१६४. रा० २१,२३,३२,

३४,३६,१२४,१४५,१५७. जी० ३।२६१,

२६६,२६९

लता [लता] जी० १।६६; ३।१७३,३५५

लसिया [दे०] रा० ७७

लड [लघ] ओ० २०,४६,५३,१२०,१५४,१६२,

१६५,१६६. रा० ६३,६५,६६७,६६८,७१३,

७५२,७६५,७६६,७७०,७८६,७८७,८१६

लडपच्चय [लघप्रत्यय] रा० ६७५

√लभ [लभ्]—लभति. रा० ७७४. —लभइ.

रा० ७१६. —लभेज्ज. रा० ७१६

लय [लय] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५

लया [लता] रा० १३६. जी० ३।३०६,६३१

लयाघरग [लतागृहक] रा० १८२,१८३.

जी० ३।२६४

लयाजुद्ध [लतागृह] ओ० १४६. रा० ८०६

लयापविभति [लताप्रविभक्ति] रा० १०१

√लल [लल्]—ललति. रा० १८५. जी० ३।२१७

ललिय [ललित] ओ० १५,५७,६३. रा० ७०,७६,

१७३,६७२. जी० ३।२८५,५६७

लव [लव] ओ० २८. जी० ३८४१
लवइय [दे० लवकिन] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.
जी० ३१२६८, २७४
लवंग [लवङ्ग] रा० २६, ३०. जी० ३२८२
लवण [लवण] जी० ३१२१७, २१६ से २२७, ३००,
५६६, ५६८, ५६९, ५७१, से ५७६, ७०४ से
७०८, ७१०, ७११, ७१३ से ७२३, ७२६, ७२८ से
७३१, ७३३, ७३६, ७३९ से ७४१, ७४५, ७४७,
७५०, ७५४, ७६१, ७६२, ७६५ से ७६९, ७७५,
७८१ से ७८६, ७८८ से ७९६, ८३८, ८५४,
८६३, ८६६, ८६९
लवणग [लवणक] जी० ३१७१०
लवणतोय [लवणतोय] जी० ३१८३८, २३
लवणसिंहा [लवणसिंहा] जी० ३१७३२
लवणाहिबइ [लवणाधिपति] जी० ३१७२१, ७५४,
७५६, ७६१
लवणोदय [लवणोदक] जी० ११६५
लवय [लवक] जी० ३१३८८
लहु [लघु] जी० ३१२२
लहुय [लघुक] ओ० ४६. जी० ११५; ३१८७८
लहुयत्त [लघुकत्व] रा० ७६२, ७६३
लाइय [दे०] ओ० २, ५५. रा० ३२, २८१.
जी० ३१३७२, ४४७
लाघव [लाघव] ओ० २५. रा० ६८६, ८१४
लाघवसंपण [लाघवसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६
लाभस्थिय [लाभाधिक] ओ० ६८
लाला [लाला] रा० १३५, २८५. जी० ३१३०५,
४५१
लावणग [लावणिक] जी० ३१७६६ से ७६९
लावणिक [लावणिक] जी० ३१८३८, २४
लावण्य [लावण्य] ओ० १५, २३. रा० ६९, ७०.
जी० ३१५६७
√लास [लास्य]—लामेंति. रा० २८१.
जी० ३१४४७
लासग [लासक] ओ० १, २
लासगपेच्छा [लासकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.

जी० ३१६१६
लासिया [लहागिका] ओ० ७०. रा० ८०४
लिध [लिन्द्र] जी० ३१७२१
लिब [लिम्ब] रा० ३७
लिक्खा [लिखा] जी० ३१६२४, ७८८
लिच्च [लिच्च] जी० ३१३११
लित्त [लिप्त] रा० १२३, ७५५, ७७२
लिप्पासन [लिप्पासन] रा० २७०. जी० ३१४३५
लीला [लीला] रा० १७, १८, १३०, १३३.
जी० ३१३००, ३०३
लुक्ख [लुक्ख] जी० ११५, ३६, ४०, ५०; ३१२२
लुद्धग [लुद्धक] रा० ७७४
√लुय [लू]—लुज्जइ. रा० ७८४
लूसणया [लूपण] ओ० १०३, १२६
लूसमाण [लूषत्] रा० १३३
लूसमाण [लूषत्] जी० ३१३०३
√लूह [लूह्य, मृज्]—लूहेति. रा० २८५.
जी० ३१४५१
लूहाहार [लूहाहार] ओ० ३४
लूहिय [लूहित] ओ० ६३
लूहेत्ता [लूहयित्वा] रा० २८५. जी० ३१४५१
लेख [लेख्य] रा० २७०. जी० ३१४३५
लेच्छइ [लेच्छवि, लेच्छवि] ओ० ५२. रा० ६८७.
६८८
लेच्छईपुत्त [लेच्छविपुत्र, लेच्छविपुत्र] ओ० ५२.
रा० ६८७, ६८८
लेच्छतिपुत्त [लेच्छविपुत्र, लेच्छविपुत्र] जी० ३१११७
लेट्टु [लेट्टु] ओ० २६
लेण [लयन] ओ० १४६, १५०. रा० ८१०, ८११.
जी० ३१५६४
लेस [लेषया] रा० ७७१
लेसणया [लेशन] ओ० १०३, १२६
लेसा [लेषया] ओ० ४७, ७२, ११६ जी० १११४
२१, ५६, ८६, ९६, १०१, १२८; ३१६८, ९६,
१२७४, १२८, १५०, ८४१; ९६६

लेस्सा [लेस्या] ओ० १५६, जी० ११२१, ७६,
११६, १३६, ३११०१, १२८, १५०, १६०,
११०१

लेह [लेख] ओ० १४६, रा० ८०६, ८०७

लेहणी [लेखनी] रा० २७०, जी० ३४३५

लीग [लोक] रा० ७५१, ७५३, ८१५, जी० १११४०;
३१७६५, ८३८२, ६७२; ५१६

लीगंत [लोकान्त] ओ० १६५, १६५१६

लीगट्टिति [लोकस्थिति] जी० ३१७६५

लीगणाह [लोकनाथ] रा० २६२, जी० ३४५७

लीगनाली [लीगनाडी, "नाली"] जी० ३११११

लीगनाह [लीगनाथ] रा० ८

लीगपईव [लोकप्रदीप] रा० ८, २६२, जी० ३४५७

लीगपजोयगर [लीगप्रद्योतकर] रा० ८, २६२,
जी० ३४५७

लीगमज्जावसाणिय [लोकमज्जावसानिक]

रा० ११७, २८१ जी० ३४४७

लीगहिय [लीकहित] रा० ८, २६२, जी० ३४५७

लीगाणुभाव [लोकानुभाव] जी० ३१७६५

लीगुत्तम [लीकोत्तम] रा० ८, २६२, जी० ३४५७

लीगोवयारविणय [लीकोपचारविणय] ओ० ४०

लीण [लवण] ओ० ६२, जी० ३१७२१

लीढ [लीघ] ओ० ६, १०, जी० ११७२; ३१३८८,
५८३

लीभ [लीभ] ओ० ४६, ७१, जी० ३१२८, ५६८,
७६५, ८४१

लीभकसाइ [लीभकपायिन्] जी० ११३११;

६११४८, १५०, १५५

लीभबिवेक [लीभविवेक] ओ० ७१

लीभपक्खि [लीभपक्खिन्] जी० १११३३, ११५

लीमहत्थ [लीमहस्त] ओ० २, रा० १५६, १५७,
२५८, २७६, २६५ से २६६, ३५१, जी० ३१३२६,
३३०, ४१६, ४६०

लीमहत्थय [लीमहस्तक] रा० २६१, २६४ से
२६६, २६८, ३००, ३०५, ३१० से ३१२, ३५१
से ३५६, ४१४, ४०३ से ४७५, ५३४, ५३५,

५६४, ५६५, जी० ३४४५, ४५७, ४६० से
४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५३२,
५४७

लीमहत्थय [लीमहस्तक] रा० २६१, २६४ से
२६७, ३००, ३०५, ३१० से ३१२, ३५२ से
३५६, ४१४, ४०३ से ४७५, ५३४, ५३५, ५६४
५६५, जी० ३४५८

लीमहरिस [लीमहर्ष] जी० ३१८३

लीय [लोक] ओ० ७१, १६६, १७०, १७४,

जी० ११३६६; २१२०, १३१; ३११८, ११६,
८४१; ५१८, २२; ६१२५७

लीयंत [लीकान्त] जी० ३१३३ से ३६, १००२

लीयण [लीकाय] ओ० १६८, १६३, १६५१२

लीयणयूभिधा [लीकायस्तूपिका] ओ० १६३

लीयणपडिबुद्धणा [लीकायप्रतिबोधना]
ओ० १६३

लीयण [लीचन] जी० ३५६७

लील [लील] ओ० ६, जी० ३१२७५

लीव [लीप] ओ० ११७

लीह [लीम] ओ० २८, ३७, ४४, ६१, ११७, १६१,
१६३, १६८, रा० ७६६, जी० ३१२८

लीहकसाइ [लीभकपायिन्] जी० ६१५३

लीहकसाय [लीभकपाय] जी० १११६

लीहया [लीमता] ओ० ११६

लीहारंबरिस [लीहकारम्बरीष] जी० ३११८

लीहित [लीहित] रा० १२८, १३६, जी० ३१२२,
४५

लीहितक्ख [लीहिताक्ष] जी० ३१७, ३००, ४१५

लीहितक्खमणि [लीहिताक्षमणि] जी० ३१२८०

लीहितक्खमय [लीहिताक्षमय] रा० १६, १७५,
१६०, जी० ३१२६४, २८७, ३००

लीहितग [लीहितक] जी० ३१२८०

लीहिय [लीहित] ओ० १२, रा० २२, २४, २७,
१५३, जी० ११५०; ३१११, २६०, ३२६,
१०७५, १०७६

लीहियक्ख [लीहिताक्ष] रा० १०, १२, १८, ६५,

१३०, १६५, २५४, २७६. जी० ३१४१५
लोहियवखमणि [लोहिताक्षमणि] रा० २७
लोहियवखमय [लोहिताक्षमय] रा० १३०, २४५
जी० ३१४०७, ४७७
लोहितपाणि [लोहितपाणि] रा० ६७१
लोही [लोही] जी० ११७३
लोही [लोही] जी० ३१७८

व

व [व] ओ० २७
व [व] जी० ३१२६१६
वइ [वाच्] ओ० ३७, ४०
वइकच्छिण्णम [वैकक्षिण्णम] ओ० ६०
वइगुत्त [वाग्गुत्त] ओ० १६४
वइजोग [वाग्गोम] ओ० ३७
वइजोगि [वाग्गोमिन्] जी० ११३१, ८७, १३३;
३११०५, १५३, ११०६; ६१११३, ११४, ११७,
१२०
वइर [वज्र] ओ० १२, १६, ४८. रा० १०, १२,
१७, १८, २०, २२, ३२, ६५, १२६, १५६, १६०,
१६५, २५६, २७६, २८१, २८२, ७७४.
जी० ३१७, ६१ से ६३, २८८, २९०, ३००, ३३२,
३३३, ३४६, ३७२, ४१७, ४५७, ५६६
वइरणाभ [वज्रनाभ] जी० ३१३२३
वइरनाभ [वज्रनाभ] रा० १५०
वइरभंड [वज्रभाण्ड] रा० ७७४
वइरभार [वज्रभार] रा० ७७४
वइरभारय [वज्रभारक] रा० ७७४
वइरमज्झा [वज्रमज्झा] ओ० २४
वइररिसहणाराय [वज्ररूपभनाराच] ओ० ८२
वइरागर [वज्राकर] रा० ७७४
वइरामय [वज्रमय] रा० १६, ३५, ३७, ३९, ४०,
५२, ५६, १३०, १३२, १३५, १३७, १५३, १७५,
१६०, २१७, २१८, २२८, २३१, २३५, २३६,
२४०, २४५, २४७, २४९, २५४, २७०, २७६,

३००, ३२१, ३३८, ३५१. जी० ३१८७, १११,
२६१, २६४, २८६, २८७, ३००, ३०२, ३०५,
३०७, ३११, ३१३, ३२२, ३२६, ३५५, ३७७,
३८७, ३९३, ३९७, ३९८, ४०१, ४०२, ४०७,
४१०, ४१५, ४३५, ४४२, ४६५, ४८६, ५०३,
५१६, ५६२, ६४३, ६५४, ६७२, ६७६, ७२४,
७२७, ८८१, ८८१, ९००, ९२७, ९४८, १०२५

वइरोयणराय [वैरोचनराज] जी० ३१२४० से
२४३

वइरोयणिद [वैरोचनेन्द्र] जी० ३१२४० से २४३

वइरोसभनाराय [वज्ररूपभनाराच] ओ० १८५

वइरोसभनाराय [वज्ररूपभनाराच] जी० ११११६

वइविणय [वाग्गविणय] ओ० ४०

वइसमिय [वाक्समित] ओ० १६४

वंक [वक्र] ओ० १

वंग [वङ्ग] जी० ३१५६५

वंग [व्यङ्ग] जी० ३१५६७

वंचण [वञ्चन] रा० ६७१

वंचणया [वञ्चनता] ओ० ७३

वंचण [व्यञ्जन] ओ० १५, १४३. रा० ६७२,

६७३, ८०१. जी० ३१५६६

वंद [वन्द]—वन्द. ओ० २१.—वंदति

ओ० ४७. रा० १०.—वंदति. रा० ८.

जी० ३१४५७.—वन्द. रा० ६.—वंदामि.

ओ० २१. रा० ८.—वंदामो. ओ० ५२.

रा० १०.—वदिज्जाह. रा० ७०६.

—वदिससति रा० ६०४.—वदेज्जा. रा०

७७६

वंद [वृन्द] ओ० ७०, ७१. रा० ६१, ६६२, ७१६,
८०४

वंदण [वन्दन] ओ० २, ५२. रा० १६, ६८७, ६८९

वंदणकलस [वन्दनकलश] ओ० २, ५५. रा० ३२,

१३१, १४७, २५८, २८१, २८०. जी० ३१३०१,

३२०, ३५५, ३७२, ४१६, ४४७, ४५६, ८८६

वन्दणकाम [वन्दनकाम] ओ० ५१

वन्दणघट [वन्दनघट] ओ० २, ५५. रा० ३२,
२८१. जी० ३१३७२, ४४७

वन्दणज [वन्दनीय] ओ० २. रा० २४०, २७६.
जी० ३१४०२, ४४२

वन्दावन्दय [वृन्दवृन्दक] रा० ६८८, ६८९

वन्दितए [वन्दितुम्] ओ० १३६. रा० ६

वन्दिता [वन्दित्वा] ओ० २१. रा० ८.

जी० ३१४५७

वंस [वंश] ओ० १४. रा० ७६, ७७, १३०, १७३,
१६०, ६७१. जी० ३१२६४, २८५, ३००, ५८८

वंसकवेल्लुय [वशकवेल्लुक] रा० १३०, १६०.

जी० ३१२६४, ३००

वंसग [वंशक] रा० १३०. जी० ३१३००

वंसा [वंश] जी० ३४

वक्कंति [अवक्रांति] जी० ११५१; ३१२१, १५६,
१०८२

वक्कंतिय [अवक्रांतिक] रा० ७६५

√वक्कम [अव + क्रम्]—वक्कमति जी० ११५८

वक्ख [वक्ष] जी० ३१५६७

वक्खार [वक्षार, वक्षत्कार] रा० २७६.

जी० ३१४४५, ५७७, ६६८, ७७५, ६३७

√वग्ग [वल्ग]—वग्गति. रा० २८१.

जी० ३१४४७

वग्गण [वल्गन] ओ० ६३

वग्गवग्गु [वर्गवर्ग] जी० १६५११४

वग्गु [वाक्] ओ० ६८. रा० ७६७

वग्गुरा [वागुरा] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८,
७००

वग्गुलि [वल्गुलि] जी० ११११४

वग्घ [व्याघ्र] रा० २४. जी० ३१८४, २७७, ६२०

वग्घमुह [व्याघ्रमुख] जी० ३१२१६

वग्घारित्त [दे०] जी० ३१३०३, ३६७, ४४७, ४५६

वग्घारिय [दे०] ओ० २, ५५. रा० ३२, १३२,

२३५, २८१, २६१, २६४, २६६, ३००, ३०५,

३१२, ३५५. जी० ३१३०२, ३७२, ४६१, ४६२,

४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०

√वच्च [वृत्]—वच्चंति. जी० ३१२६१६

वच्चंसि [वर्चस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६

वच्चग [वच्चक] जी० ३१५८८

वच्चघर [वर्चोगृह] रा० ७५३

वच्छ [वक्षम्] ओ० १६, २१, ४७, ५४, ५७,

६३, ६५, ७२. रा० ८, ६६, ७१४, जी०

३५६६, ११२१

वज्ज [वर्ज] ओ० २६. जी० ११५१, ५५, ६१,

८७, १०१, ११६, १२३, १२८; ३१५५, ६०५;

६११०

वज्ज [वज्र] जी० ३१५६७

वज्जकंद [वज्रकन्द] जी० ११७३

वज्जरिसभनाराय [वज्ररूपभनाराय] जी०
३१५६८

वज्जित्ता [वर्जयित्वा] जी० ३१७७

वज्जिय [वर्जित] ओ० ४८. रा० ७७४,

जी० ३१५६८

वज्जेत्ता [वर्जयित्वा] रा० २४०. जी० ३१४०२

वज्जवत्तिय [वर्धवर्तित] ओ० ६०

वट्ट [वृत्त] ओ० १, २, १६, ५५, १७०. रा० १२,

३२, ५२, ५६, २३१, २८१, २६१, २६६,

३००, ३०५, ३१२, ३५५, ७५८, ७५६.

जी० ११५; ३१२२, ४८ से ५०, ७७ से ७९,

८६, २६०, २७४, ३५२, ३७२, ३६३, ४०१,

४४७, ४५६, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,

५१३, ५२०, ५६४, ५६६, ५६७, ७०४, ७६३,

७६६, ८१०, ८२१, ८३१, ८४८, ८५६, ८५६,

८६२, ८६५, ८६८, ८७१, ८७४, ८७७, ८८०,

८१०, ८२५, ८२७ से ८३२, ८३८, ८४३, १०७१,

१०७२

√वट्ट [वृत्]—वट्टसि. रा० ७६७.---वट्टिस्सामि.

रा० ७६८

वट्टक [वर्तक] जी० ३१५८७

वट्टखेहु [वृत्तखेल] ओ० १४६. रा० ८०६

वट्टभाव [वृत्तभाव] ओ० ५, ८. जी० ३१२७४

वट्टमार्ग [वृत्तमार्ग, वर्तमानमार्ग] ओ० ५६

वट्टमाण [वर्तमान] ओ० ४७. रा० २८१, ८१५.

जी० ३, ४४७

वट्टमाल [वृत्तमाल] जी० ३:५८२

वट्टलोह [पाय] [वृत्तलोहपात्र] ओ० १०५, १२८

वट्टलोह [वंगण] [वृत्तलोहबन्धन] ओ० १०६,
१२६

वट्टवेतङ्ग [वृत्तवेताढ्य] जी० ३:४४५

वट्टवेयङ्ग [वृत्तवेताढ्य] रा० २७६. जी० ३:४४५,
७६५

वट्टि [वर्ति] जी० १:७०, ३:५८६

वट्टिज्जमाणचरय [वर्त्यमानचरक] ओ० ३४

वट्टित्ता [वर्तित्ता] रा० ७७६

वट्टिय [वर्तित] ओ० १६, ७१. रा० ६१, १३३,
२४५, ७६८, ७७७. जी० ३:१७२, ३०३, ५६६,
५६७

वडभिधा [वडभिका] रा० ८०४

वडभी [वडभी] ओ० ७०

वडिसण [अवतंसक] ओ० १०

वडिसय [अवतंसक] ओ० १२. जी० ३:५८४

वडैसण [अवतंसक] ओ० ५, ८, ६४. रा० १२५,
१४५. जी० ३:२६८, २७४, २८५, ७०२, ८०८,
८२६, १०३६

वडैसय [अवतंसक] रा० १२५

१. वड्डु [वृत्] - वड्डुइ. जी० ३:७३१. - - - वड्डुए.
जी० ३:८३८, १४४. - - - वड्डुइति. जी० ३:७२३

वण [वन] रा० ४५, ६५४, ६५५, ७६५.

जी० ३:५५४, ५८१

वण (वया) [वनलता] जी० ३:२६८

वणत्थि [वनाधिन्] रा० ७६५

वणप्फइकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० ३:१६६

वणप्फति [वनस्पति] जी० ३:१२३

वणप्फतिकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० ३:१२६,
१६६

वणमाला [वनमाला] ओ० ४७, ४८, ७२.

रा० १३६, २१०, २१२. जी० ३:३०६, ३५४,
३७३, ५६१, ६४७, ६७३, ८८६, ८८८

वणराइ [वनराजि] रा० ६५४, ६५५. जी०

३:२७६, ५५४, ५५५, ५८५, ६३१

वणराति [वनराजि] रा० २६

वणलया [वनलता] ओ० ११, १३. रा० १७, १८, २०,
३२, ३७, १२६, १४५. जी० ३:२८८, ३००, ३११,
३७२, ५८४

वणलयापविभत्ति [वनलताप्रविभक्ति] रा० १०१

वणसंड [वनषण्ड] ओ० ३, ४, ८. रा० ३, १७०,
१७१, १७४, १८२, १८४, १८६, १८६, २०१,
२३३, २६३, ६५४, ६५५, ७०३, ७०१, ७८२,
७८६, ७८७. जी० ३:२१७, २५६, २७३, २७७,
२८६, २८४, २८६, २८८, ३५८, ३५६, ३६२,
३६५, ५५४, ६३२, ६३६, ६६१, ६६८, ६८१ से
६८३, ६८८, ६८६, ७०६, ७३६, ७५४, ७६२,
७६५, ७६८, ७६८, ८१२, ८२३, ८३६, ८५०,
८५७, ८८२, ८१०, ८११

वणस्सइ [वनस्पति] जी० ८:३

वणस्सइकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० १:१२, ६६
से ७४; २:१३८; ३:१३१, १३५; ५:६, १५;
८:१; ९:१८४, २६३

वणस्सइकाइयत्त [वनस्पतिकायिकत्व] जी०
३:१२७

वणस्सइकाल [वनस्पतिकाल] जी० १:१४२;

२:६३, ६५ से ६७, ११७, १२६, १२७, १३०;

४:१२७; ९:११७, १२७, २६४, २७१

वणस्सति [वनस्पति] जी० ५:१७

वणस्सतिकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० २:१०२,
१२०, १३१, १३६, १३८, १४६, १४६; ३:१३५;
५:१, ३, ६, १८ से २०; ८:४, ५; ९:१८२, २५६,
२५८, २६६

वणस्सतिकाल [वनस्पतिकाल] जी० २:८६ से
८८, ९० से ९२, ११६, १३१, १३३; ३:११३४

११३७; ४।७; ५।१७, ३०; ६।८, १०; ७।१०,
१३ से १५, १७, १८, १९, ४, ५, ५६, ८०, ८३,
१०३, १०५, ११५, १२४, १२६, १३६, १३८,
१७७, १८४, २०७, २११, २१६, २१८, २२२,
२२६, २३६, २४१ से २४३, २४६, २६२, २७७
से २७९, २८१, २८२

वर्णय [वर्णय] ओ० १

वर्णोवजीवि [वर्णोवजीवि] रा० ७६५

वर्ण [वर्ण] ओ० २, १३, २३, २५, ४७, ४९ से ५१,
५५, ७२, १६६, १७०, १६४. रा० ६, १२, २४
से २६, ३२, ४५, ५२, ५६, १२८, १३०, १७१, १६६,
२३१, २४७, २८१, २८५, २८१, २८३ से २८६,
३००, ३०५, ३१२, ३४५. जी० १।५, ३४, ३८, ५०,
५८, ७३, ७८, ८१; ३।५, ८३, ८७, ८४, १२७,
२७१, २७७ से २८२, ३००, ३०६, ३५३, ३६०,
३७२, ३८३, ४४७, ४५१, ४५७ से ४६२, ४६५,
४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५५४, ५७८, ५८०,
५८६, ५९१, ५९२, ५९६, ५९७, ६०१, ६०२,
६३७, ६४५, ६४८, ६५६, ६५६, ७२४, ७२७, ७३८,
७४३, ७६३, ८६०, ८६६, ८७२, ८७८, ८७२,
१०७५, १०७६, १०८१, १०८३ से १०८६

वर्णो [वर्णो] जी० १।३५, ५०, ६६, १३६

वर्णक [वर्णक] ओ० ६३, १६१, १६३

वर्णक [वर्णक] रा० २४३, जी० ३।२१७

वर्णक [वर्णक] जी० ३।२२, २७, ४५

वर्णक [वर्णक] जी० १।३३, ३४

वर्णक [वर्णक] रा० ६९, १५६, १६४, १७०, २०१,
२०२, २०४ से २०८, २१६, २३८, २३९, २६१,
२६३. जी० ३।२६, ३१५ से ३१७, ३२०, ३२१,
३३८, ३५४, ३५५, ३५८, ३६२, ३६३, ३६६,
३६८, ३७३, ३७४, ३७८, ३८५, ३८६, ४०१, ४०६,
४२३, ४२५, ४२८, ४३२ से ४३४, ४३६ से ४४१,
४४६, ४४७, ४५०, ४६१, ४६८, ४७३, ४७४,
४७८, ४७९, ४८३ से ४८५, ४८६, ७०६, ७३६,
७५४, ७५६, ७५८, ७६२, ७६८, ८१२, ८२३, ८३६,

८५०, ८५७, ८८२, ८८४, ८८५, ८८७, ८९०,
८९१, ८९६, १००८

वर्णसंज्ञलजया [वर्णसंज्ञलजया] ओ० ४०

वर्णाभ [वर्णाभ] रा० १२५. जी० ३।७७, ६३७,
६५६, ६६४, ७३८, ७४३, ७६३, ८१६, ८५४,
८७२

वर्णावास [वर्णावास] रा० १६, २०, २५ से २६,
३७, ४५, १३५, १४६, १७५, १८०, २२८, २४५,
२५४, २७०. जी० ३।२६४, २७८ से २८२,
२८७, ३०५, ३११, ३२२, ३५६, ३८७, ४०७,
४१५, ४३५, ४४३, ४५४, ८६८

वर्त्त [वर्त्त] ओ० १६. जी० ३।५६६

वर्त्तमंडल [वर्त्तमंडल] ओ० ६४

वर्त्तव्य [वर्त्तव्य] ओ० ३३. जी० ६२५, ६८२

वर्त्तव्यता [वर्त्तव्यता] जी० ३।५६६, ८५६, ८८६,
८९३, ८९५, ८९७, ८९८, ८९९, ९३५

वर्त्तव्यता [वर्त्तव्यता] रा० ८२, २१५, ३२१, ७५०
से ७५३. जी० ३।३२, २५०, ४१२, ४३१, ४३४,
६७६, ६९१, ७०१, ७१०, ७७६, ८००, ८५६

वर्त्तय [वर्त्तय] ओ० ५२. रा० १६, ६८७, ६८८

वर्त्तय [वर्त्तय] ओ० २०, ३३, ४७, ४८, ५१ से ५३, ७२,
१०७, १२०, १३०, १४७, १४८, १५०, १६७.

रा० १५६, १५७, २५८, २७६, २८६, २८९,

६८५, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ७०१, ७१४,

७१६, ७१८, ७२६, ७५२, ७८६, ७८४, ८०२,

८०८, ८१०, ८११. जी० ३।३२६, ४१६, ४४७,

४५२, ५६५, ६७३, ७७५, ८७८, ८९७, ११२२

वर्त्तय [वर्त्तय] रा० ६६

वर्त्तयविहि [वर्त्तयविधि] ओ० १४६. रा० ८०६

वर्त्तयव्य [वर्त्तयव्य] रा० २८२. जी० ३।४४२, ४४८,
५२७

वर्त्तयव्य [वर्त्तयव्य] जी० ३।३५०, ४४६, ५६३

वर्त्तय [वर्त्तय] रा० ७६३. जी० ३।५६७

१. वर्त्त च सूत्रवर्त्तनकम् [ओ० वृ०] ।

वर्त्त — सूत्रवर्त्तनकम् [जी० वृ०] ।

वत्सु [वस्तु, वास्तु] ओ० १

वत्सुलगुम्भ [वास्तुलगुत्तम] जी० ३१५८०

वत्सुविज्जा [वास्तुविद्या] ओ० १४६. रा० ८०६

√वद [वद्]—वदह्. ओ० ६६. रा० ६६५.

—वदेज्जा. रा० ७५१

वदन [वदन] जी० ३१५६६ से ५६८

वदित्ता [वदित्वा] ओ० ७६

वदित्तियामत्त [वदित्तिकामत्त] ओ० १३४

वद्वण [वर्धन] जी० ३१५६२

वद्वणी [वर्धनी] जी० ३१५८७

वद्वमाण [वर्धमान] ओ० ४८, ६८

वद्वमाणय [वर्धमानक] ओ० १२, ६४. रा० २१,

२४, ४६, २६१. जी० ३१२७७, २८६

वद्वमाणा [वर्धमाना] रा० २२५. जी० ३३८४,

८६६

√वद्वान्व [वर्धय]—वद्वान्वेह. ओ० २०. रा० ६८०,

—वद्वान्वेति. रा० १२. जी० ३१४४२.

—वद्वान्वेति. रा० ४६

वद्वान्वेत्ता [वर्धयित्वा] ओ० २०. रा० १२.

जी० ३१४४२

वद्व [वप्] रा० १७४. जी० ३१११८, ११६, २८६

वद्विणी [वे०] ओ० १

वद्विमय [वर्मित] रा० ६६४, ६८३. जी० ३१५६२

वय [वचस्] ओ० २४. रा० ८१५

वय [वयस्] ओ० ४७

वय [वत] ओ० २५, ४६

√वय [वद्]—वदस्मति. रा० ८०२.—वएज्जा.

रा० ७५०.—वयइ. ओ० ७१.—वयामि.

रा० ७३४.—वयामि. ओ० २०. रा० ७३४.

जी० ३१४४८.—वयासी. रा० ८.

जी० ३१४४२.—वयाहि. रा० १३

√वय [वच्]—वांच्छं. ओ० १६५, १७.

जी० ३१२२६

वयंस [वयस्य] जी० ३१६१३

वयंसय [वयस्यक] रा० ६७५

वयगुत्त [वचोगुत्त] ओ० २७, १५२. रा० ८१३

वयजोग [वचोयोग] ओ० १७५, १७७, १७६, १८२

वयण [वचन] ओ० ४६, ५६, ५७, ५६, ६१, ६६.

रा० १०, १४ से १६, १८, ७४, २७६, ६५५, ६८१,

६६६, ७०७. जी० ३१४४५, ५५५

वयण [वचन] ओ० १५, १६, २१, ५४. रा० ६७२.

जी० ३१५६७

वयवलिय [वचोबलिक] ओ० २४

वयरामय [वज्रमय] रा० १७४

वर [वर] ओ० १२, ५, ८ से १०, १२ से १४, १६,

२१, ४६, ४८, ४६, ५१, ५४, ५७, ५६, ६३ से ६५,

६७, १०७, १५३, १६५, १६६, १७२. रा० ३, ४,

८, ६, १२, १३, २८, ३२, ४७, ५२, ५६, ६८ से ७०,

७६, १२६, १३१ से १३३, १४७, १४८, १५६,

१६२, १०३, १८५, २१०, २१२, २२८, २३१, २३६,

२४७, २७७, २८०, २८३, २८६, २६१, २६२, ३५१,

५६४, ६५७, ६६४, ६७१, ६८१, ६८३, ७१०,

७१४, ७६५, ७७४, ७६४, ८०२, ८०४, ८१४.

जी० ३१२७४, २८१, २८२, २८५, २६७, ३०० से

३०३, ३२१, ३३२, ३३५, ३५४, ३७२, ३७३,

३८७, ४४३, ४४६ से ४४६, ४५७, ५१६, ५४७,

५५७, ५६२, ५८६, ५६१ से ५६३, ५६५ से ५६७,

६०४, ६४७, ६७२, ८५७, ८६०, ८८५

√वर [वरय]—वरइ. जी० ३१८३८, १६

वरंग [वराङ्ग] जी० ३१३२२

वरदास [वरदामन्] रा० २७६. जी० ३१४४५

वरपुरिस [वरपुरुष] जी० ३१२८१

वराह [वराह] ओ० १६, ५१. रा० २४, २७.

जी० ३१२७७, २८०, ५६६, १०३८

वरिसघर [वर्षघर] ओ० ७०. रा० ८०४

वरुण [वरुण] जी० ३१७७५, ८५७

वरुणपभ [वरुणप्रभ] जी० ३१८५७

वरुणवर [वरुणवर] जी० ३१८५१, ८५६, ८५७,

८५६

वरुणोद [वरुणोद] जी० ३१२८५, ८५६, ८६०,

८६२, ८५८, ८६३

बलवत्त [बलवत्त] जी० ३३२२, ५६३

बलभी [बलभी] जी० ३६०४, ७६३

बलभीघर [बलभीगृह] जी० ३५६४

बलय [बलय] जी० १६६; ३३७ से ४०, ४२,

४४ से ५०, ५६३, ७०४, ७६३, ७६६, ८१०,

८२१, ८३१, ८४८, ८५६, ८६२, ८६५, ८६८,

८७१, ८७४, ८७७, ८८०, ८८५

बलयमयग [बलयमृतक] ओ० ६०

बलयामुह [बलयामुख] जी० ३१७२३

बलयावलिपविभक्ति [बलयावलिप्रविभक्ति]

रा० ८५

बलि [बलि] जी० ३५६७

बलित [बलित] जी० ३५६६

बलिय [बलित] ओ० १५, १६. रा० १२, ६७२,

७५८ से ७६१. जी० ३५६७

बल्ली [बल्ली] जी० १६६, ३१७२

बवगत [व्यपगत] जी० ३५६७, ६१०, ६१२ से

६१६, ६२४, ६२७, ६२८

बवगय [व्यपगत] ओ० १४, ६२. रा० ६७१.

जी० ३६०७, ६०६, ६२२

√बवरोव [व्यप+रोपय्]—बवरोवएज्जा.

रा० ७५१—बवरोविज्जइ. रा० ७६७

—बवरोवेमि. रा० ७५६—बवरोवेहि.

रा० ७५१

बवरोवेत्ता [व्यपरोप्य] रा० ७५६

√बवस [वि+अव+सो]—बवसइ. रा० २८८.

जी० ३४५४

बवसइत्ता [व्यवसाय] रा० २८८. जी० ३४५४

बवसाय [व्यवसाय] ओ० ४६. रा० २८८.

जी० ३४५४

बवसायसभा [व्यवसायसभा] रा० २६६, २७१,

२७२, २८६, २८८, ५६४, ५६६, ५६७, ६१६,

६३४, ६३५. जी० ३४३४, ४३६, ४३७, ४५२,

४५४, ५४७, ५४६ से ५५३

बवहार [व्यवहार] रा० ६७५

बवहारग [व्यवहारक] रा० ७६६

बवहारि [व्यवहारिन्] रा० ७६६

बस [वस] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३,

७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४, १६ से

१८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७, २७८,

२८१, २८०, ६५५, ६८१, ६८३, ६८०, ६८५,

७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८,

७२५, ७२६, ७७४, ७७८. जी० ३४४३, ४४५,

४४७, ५५५

√बस [वस्]—बसाहि. ओ० ६८. रा० २८२.

जी० ३४४८

बसंतलया [वासन्तीलता] रा० २४

बसट्टमयग [वशातमृतक] ओ० ६०

बसण [वसन] रा० २६, २८, ६६, ७०, १३३.

जी० ३१७६, २८१, ३०३, ११२१ से

११२३

बसणभूत [व्यसनभूत] जी० ३६२८

बसणुप्पाडियग [उत्पादितकवृषण] ओ० ६०

बसभ [वृषभ] ओ० २७. रा० ८१३.

जी० ३११०५

बसमाण [वसत्] रा० ६८३, ७०६

बसह [वृषभ] रा० २४

बसहि [वसति] ओ० ३७, ११८, ११९, १६५.

जी० ३६०३

बसु [वसु] जी० ३१११७

बसुंधरा [वसुन्धरा] ओ० २७. रा० ८१३.

जी० ३६२२

बसुगुत्ता [वसुगुप्ता] जी० ३६२२

बसुमिता [वसुमित्रा] जी० ३६२२

बसु [वसु] जी० ३६२२

बह [वध] ओ० ४६, ७३, १६१, १६३.

रा० ६७१

बहक [वधक] जी० ३६१२

बहमाणय [बहमानक] ओ० १११ से ११३, १३७,

१३८

वा [वा] ओ० ५२. रा० ६. जी० ३१११७

वाङ्मञ्जरी [वाच्यमान] रा० ७७
 वाङ्म [वादित्र] रा० ११४, २८१
 वाङ्म [वाद्य] जी० ३१४४७
 वाङ्म [वादित्र] ओ० ६८, १४६. रा० ७, ७८,
 ८०६. जी० ३३५०, ५६३, १०२५
 वाङ्म [वातिक] ओ० ११७. रा० ७६६
 वाङ्म [वाचिक] ओ० ६६
 वाङ्म [वाद्यु] ओ० ४६. जी० ११२८, १३३;
 २ १३०, १३६; ३: ३०७, ३६३; ५: १७, २०, २४,
 २५ २७
 वाङ्मकाङ्म [वायुकायिक] जी० २१३८; ५: ११, ६,
 २६, ३१, ३३, ३६; ८: ५; ११८२, १८४, २५६,
 २५७, २६२, २६६
 वाङ्मकाय [वायुकाय] रा० ७७१. जी० ३१३५,
 ७२५, ७२८
 वाङ्मकलिया [वातोत्कलिका] जी० १८१
 वाङ्मकाङ्म [वायुकायिक] जी० ११७५, ८०, ८२;
 २१०२, १४६, १४६; ३: १६५; ५: ८, १४, २०,
 ८१, ३
 वाङ्मभाम [वातोद्भाम] जी० १८१
 वाङ्मयाय [वायुकाय] रा० ७७१
 वाङ्मवेग [वायुवेग] जी० ३१५६८
 वाङ्म [वाचयित्वा] रा० २८८. जी० ३१४५४
 वाङ्मवासि [वाङ्मवासिन्] ओ० ६४
 वाङ्म [वि + आ + कृ]—वाङ्मरेड. ओ० ६६
 वाङ्मरण [व्याकरण] ओ० २६, ६७. रा० १६,
 ७१६, ७६८
 वाङ्ममाण [व्याकुर्माण] ओ० २६
 वाङ्मरेड [व्याकर्तव्य] जी० ३१७७
 वाङ्म [व्याघातिन् व्याघातिम] ओ० ३२.
 जी० ३१०२२
 वाङ्म [व्याघातिन्, व्याघातिम] जी० ३१०२२
 वाङ्म [व्याघात] जी० २१४६, ८२
 वाङ्म [वाङ्म, वाङ्म] जी० ३१८७८
 वाङ्म [वाङ्म] ओ० १३
 वाङ्मपथ [वाङ्मपथ] ओ० ६४

वाङ्ममंतर [वाङ्ममन्तर] ओ० ४६, ८६ से ६३.
 रा० ११, ५६. जी० ११०१, १३५; २१५,
 १६, ७१, ७२, ६५, ६६, १४८, १४८; ३: २१७,
 २३०, २५१, २६७, २६८, ३५८, ४०२, ४४६,
 ४४८, ४५५, ४५७, ६३७, ६५६, ७६०, ८५७, ६१७
 वाङ्ममन्तरी [वाङ्ममन्तरी] जी० २१३८, ७१, ७२,
 १४८, १४६
 वाङ्मज्ज [वाङ्मज्ज] जी० ३१६०७
 वाङ्म [वाङ्म] रा० १७३
 वाङ्मकरग [वाङ्मकरग] जी० ३३५५, ४१६, ४४५
 वाङ्म [वाङ्म]—वाङ्म, जी० ३१४४७
 वाङ्म [वाङ्म] जी० ३१८४२, ८४५
 वाङ्म [व्याघात] जी० ३१६२०, ६२५
 वाङ्म [वाङ्म] ओ० २१, ५७, ५४. रा० ८, ७०,
 १३३, २६२, ७६७, ७६८, ७७६, ७७७. जी० ३१४५
 वाङ्म [वाङ्म, व्याङ्म] ओ० ५, ८ जी० ३१७७४
 वाङ्म [वाङ्म] जी० ११११६
 वाङ्मगिया [वाङ्मगिया] रा० ८०४
 वाङ्मणी [वाङ्मणी] ओ० ७०
 वाङ्महण [वाङ्महण] ओ० ६३
 वाङ्महृत् [वाङ्महृत्] जी० ३१३०३
 वाङ्ममुत्तम [वाङ्ममुत्तम, व्याङ्ममुत्तम] जी० ३१५६३
 वाङ्म [वाङ्म] ओ० ४६, ६४. रा० ४०, ५०, ५२, ५६,
 १३२, १३७, २३१, २४७, २८५, ७७१.
 जी० ३१२६५, २८५, ४५१, ५८०, ७२६
 वाङ्म [वाङ्म]—वाङ्म, रा० २८८.
 जी० ३१४५४. वाङ्मति.—ओ० ४५
 वाङ्म [वाङ्म]—वाङ्मज्ज रा० ७८३—वाङ्मति
 रा० ११४
 वाङ्म [वाङ्म] ओ० ६४
 वाङ्मकरग [वाङ्मकरग] रा० १५३, २५८, २७६.
 जी० ३१२६६
 वाङ्म [वाङ्म] ओ० ४२, ४३

१. अनेकाभिन्तरवामाभिः सुप्रसारिताभिः (ओ० वृ०
 अनेकैर्नरव्यामैः पुरुषव्यामैः सुप्रसारितैः
 (जी० वृ०))

वायमंडलिया [वातमण्डलिका] जी० १।८१

वायाम [व्यायाम] ओ० ६३

वारण [वारण] ओ० १६

वारय [वारक] जी० ३।५६६

वारि [वारि] रा० १३१, १४७, १४८, १८०.

जी० ३।३०१, ४४६

वारिसेणा [वारिषेणा] रा० २२५. जी० ३।३८४,
८६६

वारुणि [वारुणी] जी० ३।८६०

वारुणिकंत [वारुणिकान्त] जी० ३।८६०

वारुणिवरोदय [वारुणीवरोदक] जी० ३।८५७

वारुणी [वारुणी] जी० ३।५८६

वारुणोद [वारुणोद] जी० ३।२८६

वारुणोदय [वारुणोदक] जी० १।६५

वारुणोयग [वारुणोदक] रा० १७४. जी० १।७४

वाल [व्याल] ओ० ११७. रा० ७६६.

जी० ३।३००, ६२५, ८२२

वाल [वाल] रा० १६०, २५६. जी० ३।३३३,
४१७

वालग [व्यालक] ओ० १३. रा० १७, १८, २०,
३२, ३७, १२६. जी० ३।२८८, ३००, ३११,
३७२

वालग [वालाग] जी० ३।७८८, ७८६

वालगपोतिया [दे० बालागपोतिका] जी० ३।६०४

वालरुवग [व्यालरूपक] रा० १३०

वालरुवय [व्यालरूपक] रा० २६४, २६६ से
२६६, ३१२, ४७३. जी० ३।४५६, ४६१, ४६२,
४७७, ५३२

वालवीइय [वालवीजित] ओ० ६३

वालवीयणय [वालवीजनक] ओ० ६६

वालवीयणी [वालवीजनी] ओ० ६७

वाली [दे०] रा० ७७

वालुयण्यभा [बालुकाप्रभा] जी० ३।३५, ४१, ४३,
४४, ६६, ११२

वालुया [बालुका] रा० १३०, १३७, १७४, २४५.

जी० ३।२८६, ३००, ३०७, ४०७

वालुयापुदवी [बालुकापृथ्वी] जी० ३।१८५, १८८

वालुयासंयारय [बालुकासंस्तारक] ओ० ११७

वावण [व्यापन] जी० ३।८४

वावत्तरि [द्विमपत्तति] ओ० १४६

वावी [वापी] ओ० ६, ६६. रा० १७४, १७५,
१८०. जी० ३।२७५, २८६, २८७, २८२, ५७६,
५६७, ६६४, ८७५, ८८१, ६४८

वास [वर्ष] ओ० ६८, ८६ से ६५, ११४, १४०,
१४१, १४५, १४४, १५५, १५७ से १६०, १६५,
१६६, १८८, १६२. रा० ८ से १०, १२, १३,
१५, ५६, २७६, २८१, ६६८, ७६६, ८०५, ८१६.
जी० १।५१, ५५, ५६, ६१, ६५, ७४, ८२, ८७, ६६,
१०१, १०३, १११, ११२, ११६, ११६, १३३,
१३६, १३७; २।३५ से ३६, ४१, ६६, ७३, ६२,
६३, ६६, ६७, १०८, ११०, १११, ११८, १२६,
१३६; ३।१५५, १८६ से १६२, ४४५, ४४७,
७८५, ७८६, ७८५, ८४१, १०२७ से १०३०,
१०३८, ११३१; ४।३, ६, ११, १२, १६; ५।५,
६, १०, १२, १४, १५, २८, २६; ६।२, ६; ७।३,
१३; ६।२, ४, २१०, २१४, २२४, २२८, २३४,
२४१, २६६, २७७

वास [वास] रा० ३०, ६८३, ७०६. जी० ३।२८३

✓वास [वृप्]—वासंति. रा० १२.

जी० ३।४४७—वासह. रा० ६

वासंति [वासन्ती] जी० ३।५६७

वासंतिकलया [वासन्तिकलता] जी० ३।५८४

वासंतिमंडवग [वासन्तीमण्डपक] रा० १८४

वासंतिमंडवय [वासन्तीमण्डपक] रा० १८५

वासंतिष [लया] [वासन्तिकलता] जी० ३।२६८

वासंतियलया [वासन्तिकलता] ओ० ११.

रा० १४५

वासंतियलयापविभसि [वासन्तिकलताप्रविभसि]

रा० १०१

वासंतियागुम्म [वासन्तिकागुल्म] जी० ३।५८०

वासंतिसया [वासन्तीलता] जी० ३।२७७

वासंतीमंडवग [वासंतीमण्डपक] जी० ३।२६६
 वासधर [वर्षधर] रा० २७६. जी० ३।२१७, २१६
 से २२१, २२७, ४४५, ६३२, ६६५, ७६५, ८४१,
 ९३७
 वासपरियाय [वर्षपर्याय] ओ० २३
 वासवहलय [वर्षवार्दलक] रा० १२३
 वासहर [वर्षधर] रा० २७६. जी० ३।४४५,
 ७७५, ७६५
 वासा [वर्षा] रा० ६, १२
 वासावास [वर्षावास] ओ० २६
 वासिक [वार्षिक] रा० १६७. जी० ३।२६६
 वासिन्ता [वर्षित्वा] रा० २०
 वासी [वासी] ओ० २६
 वासुदेव [वासुदेव] ओ० ७१. जी० ३।७६५,
 ८४१
 वासेत्ता [वर्षित्वा] रा० २०
 वाहण [वाहन] ओ० १४, २३, ५२, ५६, ६६, १४१.
 रा० ६७१, ६७४, ६७५, ६८७, ६६५, ७८७, ७८८
 ७६०, ७६१, ७६६
 वाहनशाला [वाहनशाला] ओ० ५६
 वाहणा [उपानह] ओ० ११७
 बाहा [बाहु] जी० ३।५६७
 बाहि [व्याधि] ओ० ७४२. जी० ३।१२८,
 ५६७
 बाहित [व्याहत] जी० ३।२३६
 बि [अपि] ओ० ६७. रा० २७६
 बिअट्टच्छउम [विवृत्तच्छदम्] जी० ३।४५७
 बिइय [द्वितीय] ओ० १८२
 बिउक्कम [वि+उत्+कम्]—विउक्कमंति.
 जी० ३।८७
 बिउल [विपुल] ओ० १, २, ५, ८, १४, १६, २३, ४६,
 ५२, ५५, ६८, १४१, १४७, १४६, १५०. रा० ७,
 १५, ३२, २२८, २७८, २७६, २८१, २८१, २८४,
 २८६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५, ६७१, ६७५,
 ६८०, ६८१, ६८३, ६८४, ६८७, ६८५, ६८६,

७००, ७०२, ७०४, ७०८, ७०९, ७१४, ७१६,
 ७६५, ७७४, ७७६, ७८७, ७८८, ७८९, ८०२,
 ८०८, ८१०, ८११. जी० ३।११०, ११७, २७४,
 ३७२, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६,
 ५२०, ५६६
 बिउलकयवित्ति [विपुलकृतवृत्तिक] ओ० १६
 बिउलमइ [विपुलमति] ओ० २४. रा० ७४४
 ५/विउव्व [वि+कृ]—विउव्वइ. रा० ३२.
 —विउव्वति. रा० १०. जी० ३।११०.
 —विउव्वति. रा० १६.—विउव्वहि. रा० १७.
 —विउव्विसु. जी० ३।१११६.—विउव्विस्सति.
 जी० ३।१११६
 बिउव्विणिड्डिमत्त [विक्रियद्विप्रमाप्त] ओ० २४
 बिउव्वणा [विकरण] जी० ३।१२७।४, १२६।२
 से ४
 बिउव्वित्तए [विकर्तुम्] जी० ३।११०
 बिउव्वित्ता [विकृत्य] रा० १० जी० ३।११०
 बिउव्विमम [विकृत] ओ० ४६
 बिउव्वेमाण [विकुर्वाण] जी० ३।११०, १११५
 बिउव्वेसग [व्युत्सर्ग] ओ० ३८, ४३, ४४
 बिउव्वेसगारिह [व्युत्सर्गहि] ओ० ३६
 बिओग [वियोग] ओ० ४६
 बिओसरणया [व्युत्सर्जन] ओ० ६६, ७०. रा० ७७८
 बिद [वृन्द] रा० ६८३. जी० ३।५८६
 बिह्णिज्ज [वृहणीय] ओ० ६३
 बिकच्छमुत्तग [वैकक्षसूत्रक] रा० २८५
 बिकल्प [विकल्प] ओ० ५७. जी० ३।५६४
 बिकिट्ठ [विकृष्ट] ओ० १. रा० ६८३
 बिकुस [विकुश] ओ० ८, १०. जी० ३. ३८६, ५८१
 से ५८३, ५८६ से ५८५
 बिक्कम [विक्रम] ओ० १६, २३. जी० ३।१७६,
 १७८, १८०, १८२, ५६६
 बिकिरिज्जमाण [विकीर्यमाण] रा० ३०
 बिकल्प [विकल्प] ओ० १३, १७०, १६२.
 रा० ३६, १२४, १२६ से १२६, १३७, १७०,
 १८६, १८८, १८९, २०१, २०४ से २१२, २१८,

२२१, २२२, २२४, २२६, २२७, २३०, २३१,
 २३३, २३८, २३९, २४२, २४४, २४६, २४७,
 २५१ से २५३, २६१, २६२, २७२. जी० ३।५१
 ८१, ८२, ८६, १२७, २१७, २२२, २२६, २६० से
 २६३, २७३, २९८, ३००, ३०७, ३१०, ३५१ से
 ३५५, ३५८, ३५९, ३६१, ३६२, ३६४, ३६५,
 ३६८ से ३७४, ३७६, ३७७, ३८०, ३८१, ३८३,
 ३८५, ३८८, ३९२, ३९३, ३९५, ४००, ४०१,
 ४०४, ४०८, ४०८, ४१२ से ४१४, ४२२, ४२५,
 ४२७, ४३७, ५७७, ६३२, ६३४, ६३६, ६४२,
 ६४४, ६४६, ६४७, ६४९, ६५३, ६५५, ६६१,
 ६६३, ६६८, ६७१ से ६७५, ६७६, ६८३, ६८५,
 ६८६, ७०६, ७२३, ७२६, ७३२, ७३६, ७३७,
 ७५४, ७५६, ७५८, ७६२, ७६५, ७६८, ७७०,
 ७९४, ७९५, ७९८, ८१२, ८२३, ८३२, ८३५,
 ८३६, ८५०, ८८२, ८८४, ८८५, ८८७, ८८८,
 ८९१, ८९३ से ८९५, ८९७, ८९९ से ९०१,
 ९०६, ९०७, ९१०, ९११, ९१८, ९५२, १०१० से
 १०१४, १०७३, १०७४

विकखरिज्जमाण [विकीर्यमाण] जी० ३।२८३

विक्षेवणी [विक्षेपणी] ओ० ४५

विग [वृक] जी० ३।८४, २७७, ६२०

विगय [विगत] जी० ३।८४

विगसिय [विकसित] रा० ८, ७१४

विगोवइत्ता [विगोप्य] ओ० २३. रा० ६९५

विगह [विग्रह] ओ० ५६

विगहिय [विगृहीत] जी० ३।५९८

विचरिय [विचरित] जी० ३।११८, ११९

विचिक्की [दे०] रा० ७७

विचित्त [विचित्र] ओ० ६, ४७, ४८, ६३, ७२.

रा० १७३, २२८, ६८१. जी० ३।२७५, २८५,

३८७, ५८७, ५८९, ५९१, ६७२

विच्छड्डइत्ता [विच्छर्द्य] ओ० २३

विच्छड्डित्ता [विच्छर्द्य] रा० ६९५

विच्छड्डिय [विच्छर्द्यित] ओ० १४, १४१. रा० ६७१,
 ७९९

विच्छविय [विच्छविक] जी० ३।९६

विच्छिण्ण [विस्तीर्ण] ओ० १४, १९. रा० ६७५,

७७४. जी० ३।२६१, ३५२. ५९६, ५९७, ६३२,

६३६, ६८९, ८८२

विच्छिन्न [विस्तीर्ण] रा० ६७१

विच्छिप्पमाण [विस्पृश्यमाण] ओ० ६९

विच्छुय [वृश्चिक] जी० ३।८५

विजह [वित्यक्त] जी० ३।५४, ५६

विजहपुम्भ [वित्यक्तपुं] जी० ३।५४, ५६

विजय [विजय] ओ० २०, ५३, ६२, ६४, ६८, १९२.

रा० १२, ४६, ५०, ५२, ५६, ७२, ११८, १३७,

२३१, २४७, २७६, २७९, ६६५, ६८३, ६८६,

७०७, ७०८, ७१३, ७२३. जी० ३।१८१, २९९ से

३०७, ३१५, ३३५, ३३६, ३३९ से ३५१, ३७२,

३९३, ४०२, ४१०, ४२६, ४३२, ४३५, ४३६ से

४५७, ५५५ से ५६५, ६०१, ६३८, ६६०, ६६५,

७०१, ७०७ से ७१०, ७१३, ७६२, ७७५, ७९९,

८००, ८१३, ८१४, ८२४, ८२५, ८५१, ८६८,

९१६, ९३७, ९३९, ९४०, ९४४

विजयदूत [विजयदूत] रा० ३८, ३९.

जी० ३।३१२, ३१३, ३३८, ६३४, ८९२

विजया [विजया] जी० ३।३५०, ३५१, ३५४, ३५५,

३५७, ३५८, ३६०, ४३९, ४४२, ४४५ से ४४८,

५५४, ५५५, ५५७, ७०४, ७१०, ७३९, ७४४, ९०२

विजाति [विजाति] जी० ३।७८१, ७८२

विज्जा [विद्या] ओ० २५. रा० ६८६

विज्जाधर [विद्याधर] जी० ३।७९५

विज्जाहर [विद्याधर] ओ० २४. रा० १७, १८,

२०, ३२, १२९. जी० ३।२८८, ३००, ३७२, ७९५,

८४०, ८४१

विज्जु [विद्युत्] ओ० ४८, ५७. रा० १३३.

जी० १।७८; ३।३०३, ५९०, ११२२

विज्जुकार [विद्युत्कार] जी० ३।८९१

विज्जुत [विद्युत्] जी० ३।६२६

विज्जुवंत [विद्युदन्त] जी० ३।२१६

विज्जुप्यभ [विद्युत्प्रभ] जी० ३१७४६

विज्जुप्यभा [विद्युत्प्रभा] जी० ३१७५१

विज्जुमुह [विद्युन्मुख] जी० ३१२१६

विज्जुयंतरिय [विद्युदन्तरिक] ओ० १५८

विज्जुयाइत्ता [विद्युतायित्वा] रा० १२

✓ विज्जुयाय [विद्युताय]— विज्जुयायंति. रा० १२.

जी० ३१४४७

विज्जुयार [विद्युत्कार] जी० ३१४४७

✓ विज्जव [वि + ध्यापय]— विज्जवेज्जा. रा० ७६५

विज्झाय [विद्ययान] रा० ७६५

विट्ठर [विट्ठर] जी० ३१५८७

विडंग [विटङ्ग] जी० ३१५६४

विडाल [विडाल] जी० ३१६२०

विडिम [दे० विटप] ओ० ५, ८, ५१. रा० २२७,

२२८. जी० ३१२७४, ३८६, ३८७, ५६८, ६७२,

६७४, ६७६

विणइय [विनयित] रा० ७२३

विणट्ट [विनष्ट] जी० ३१८४

विणमिय [विनत] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.

जी० ३१२६८, २७४

विणय [विनय] ओ० २, २३, ३८, ४०, ४७, ५२, ५६,

५७, ५९, ६१, ६६, ७०, ८३, १३६. रा० १०, १४,

१८, ६०, ७४, २७६, ६५४, ६७१, ६८१, ६८७, ६८२,

७०७, ७१६, ७३७, ७७७, ७७८. जी० ३१४४५,

५५५

विणयओ [विनयतस्] रा० ६६४

विणयतो [विनयतस्] जी० ३१५६२

विणयपडिवत्ति [विनयप्रतिपत्ति] रा० ७७६

विणयसंपण [विनयसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

विणासण [विनाशन] रा० ६, १२, २८१.

जी० ३१४४७

विणिच्छय [विनिश्चय] रा० ६८६

विणिच्छिय [विनिश्चित] ओ० १२०, १६२.

रा० ६६८, ७५२, ७८६

विणिम्भयंत [विनिर्मुञ्चत्] रा० ३२, २६२.

जी० ३१३७२, ४५७

विणिम्भयमाण [विनिर्मुञ्चत्] जी० ३१११८

विणिवाय [विनिपात] ओ० ४६

विणीत [विनीत] जी० ३१७६५, ८४१

विणीय [विनीत] ओ० ६१. रा० ७६५, ७६६,

७७०, ८०४. जी० ३१५६८, ७६५, ८४१

विणीयया [विनीतता] ओ० ११६

विणाय [विज्ञक] रा० ८०६, ८१०

✓ विणव [वि + ज्ञपय]— विणवेहि. रा० ६६६

विण्णाण [विज्ञान] ओ० २३. रा० ७५८, ७५९,

७६५, ७६६, ७७०

वितण्ह [वितुण] जी० ३११०६

वितत [वितत] रा० २४, ११४, २८१.

जी० ३१२७७, ४४७, ५८८

विततपक्खि [विततपक्खिन्] जी० ११११३;

२१०

वितार [वितार] रा० ७६

वितिष्कंत [व्यतिक्रान्त] रा० ८०१

वितिमिर [वितिमिर] जी० ३१५८६

वित [वित] ओ० १४, १४१. रा० ६७१, ६७५

वित्ति [वृत्ति] ओ० ६१ से ६३, १६१, १६३.

रा० ७५२, ७७६

वित्थड [विस्तृत] ओ० ७१. रा० ६१.

जी० ३१८१, ८२; ८३८१५, १०७३, १०७४

वित्थरतो [विस्तरतस्] जी० ३१२५६

वित्थार [विस्तार] जी० ३१७३

वित्थिण [विस्तीर्ण] ओ० १४१. रा० १७, १८,

१२४, १२७, ७६६. जी० ३१५७७, ६६१, ७३६, १०३६

विदिणविचार [विदत्तविचार] रा० ६७५

विदित [विदित] ओ० २६

विदिता [विदिता] जी० ३१६१८

विदिसीवाय [विदिग्वात] जी० १८१

विदुपरिसा [विद्वत्परिषद्] रा० ६१

विदेस [विदेश] ओ० ७०. रा० ८०४

विदेह [विदेह] ओ० ६६. जी० २१८६

विदेहजन्तु [विदेहजन्तु] जी० ३१६६६
 विधाण [विधान] जी० ३१२५६
 विधि [विधि] जी० ३१६०, २५६, ४४७, ५८७ से
 ५८६, ५६५, ६३४
 विपंची [विपञ्ची] रा० ७७. जी० ३१५८८
 विपक्व [विपक्व] जी० ३१५६२
 विपरिणामानुपेक्षा [विपरिणामानुपेक्षा] ओ० ४३
 विपुल [विपुल] रा० ६८६, ७६५. जी० ३१४४४,
 ४४५, ४४७, ४५६, ५६६
 विप्यङ्गु [विप्यङ्गु] जी० ३१५६१
 विप्ययोग [विप्ययोग] ओ० ४३
 विप्यजह्णा [विप्यजह्णा] ओ० १८२
 विप्यजहिता [विप्यजहिता] ओ० १८२
 विप्यमुक्क [विप्यमुक्क] ओ० १४, २५, २७, ३६,
 १७२, १६५। रा० १२, १७३, २६१, २६३
 से २६६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५, ६७१, ६८६,
 ८१३. जी० ३१२८५, ४५७
 विप्यरिणामइत्ता [विप्यरिणामय] जी० ११५०
 विप्योसहिपत्त [विप्योसहिप्राप्त] ओ० २४
 विप्यलिय [विप्यलिय] जी० ३१५६६
 विप्यलीकरण [विप्यलीकरण] ओ० ३७
 विप्यभ [विप्यभ] जी० ३१५६४
 विप्यगणानि [विप्यगणानि] जी० ११६६;
 ३१०४, ११०७; ६१६७, २०३, २०७, २०८
 विप्यत्त [विप्यत्त] जी० ३१५६७
 विप्यमाण [विप्यमाण] जी० ३१८३१
 विप्यत्ति [विप्यत्ति] जी० ३१५६४
 विप्यग [विप्यग] जी० ३१५६१
 विप्यासा [विप्यासा] जी० ३१२२७
 विप्युह [विप्युह] ओ० ६७. रा० १३, ६५७
 विप्युत्ति [विप्युत्ति] जी० ३१४४६
 विप्युण [विप्युण] ओ० ४६
 विप्युसा [विप्युसा] ओ० ३६, ६७. रा० १३,
 ६५७. जी० ३१४४६, ११२१ से ११२३
 विप्युसित [विप्युसित] जी० ३१४५१

विप्युसिय [विप्युसित] ओ० ६३, ७०. रा० २८५,
 २८६, ८०५. जी० ३१४५२
 विमउल [विमुकुल] ओ० १
 विमउलिय [विमुकुलित] जी० ३१५६०
 विमल [विमल] ओ० १५, १६, ४६, ४७, ५१, ६३,
 ६४, १६४. रा० ३२, ५१, ६६, ७०, १३०, १५६,
 १७४, २८८, २९२, ६६४, ६७२, ६८३.
 जी० ३१११८, ११६, २८६ ३००, ३३२, ३७२,
 ४५४, ४५७, ५६२, ५८६, ५८६, ५८७ ८६६
 विमलप्यभ [विमलप्यभ] जी० ३१८६६
 विमाण [विमान] ओ० ५१. रा० ७, १२ से १४,
 १२४ से १२६, १२६, १६२, १६३, १६६, १७०,
 २७४, २७६, २७६, २८१, २८२, ६५४, ६५५,
 ७६६. जी० ३११७५ से १८२, २५७, ८४२,
 ८४५, १०२४ से १०२६, १०३८, १०३६,
 १०४३, १०४८, १०५६ से १०५६, १०६५,
 १०६७, १०७१, १०७३, १०७५ से १०८१,
 १०८७, ११११
 विमाणावास [विमानावास] रा० १२४.
 जी० ३१२५७, १०३८, १०३६, ११२८
 विमुक्क [विमुक्त] ओ० १६५। रा० १८, २१.
 जी० ३१४५७ से ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,
 ५१६, ५२०, ५५४, ५६७
 विमहावण [विमहावण] ओ० ११६
 विमहृच्छम [विमहृच्छम] ओ० १६, २१, ५४.
 रा० ८
 विमड [विकट] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७
 विमडावति [विकटापातिन्] जी० ३१७६५
 विमडावाति [विकटापातिन्] रा० २७६.
 जी० ३१४४५
 विमसंत [विकसत्] ओ० ४६
 विमसिय [विकसित] ओ० २१, ४७, ५४.
 रा० १३७. जी० ३१३०७
 विमणंत [विमणन्त] ओ० १६५। रा० १६
 विमणय [विमणय] रा० ८०४

विद्याणिता [विज्ञाय] ओ० १४६. रा० ८१०
 विद्याणिय [विज्ञात] ओ० ७०
 विद्यालचारि [विकालचारिन्] ओ० १४८, १४९.
 रा० ८०६, ८१०
 विरइय [विरचित] ओ० ६, ६३. जी० ३१२, ७५
 विरचिय [विरचित] रा० ६६, ७०
 विरत [विरत] ओ० ४६
 विरय [विरत] ओ० १६८
 विरल्लिय [विरल्लित] जी० ३५६१
 विरसाहार [विरसाहार] ओ० ३५
 विरहित [विरहित] जी० ३१७६१, ८४४
 विरहिय [विरहित] ओ० ३७. जी० ३१८७७
 विराइय [विगजित] ओ० १४, ४७, ५७, ७२.
 रा० ७०, ६७१. जी० ३५६७, ११२१
 विरागया [विरागता] ओ० ४६
 विरायंत [विराजत्] ओ० २१, ५४, ५७. रा० ८,
 ७१४
 विरायमाण [विराजमान] ओ० १
 विराहय [विराधक] रा० ६२
 विरिय [वीर्य] जी० ३५६२
 विरुद्ध [विरुद्ध] ओ० ६३
 विरुवह्व [विरुवरूप] रा० ८१६
 विलंबिय [विलम्बित] रा० १०३, २८१.
 जी० ३१४४७
 विलवणया [विलपनता] ओ० ४३
 विलविय [विलपित] ओ० ४६
 विलसिय [विलसित] ओ० १६
 विलास [विलास] ओ० १५. रा० ७०, ६७२,
 ८०६, ८१०. जी० ३५६७
 विलासित [विलासित] जी० ३५६६
 विलीण [विलीन] जी० ३१८४
 विलेवण [विलेपन] ओ० ६३, १६१, १६३, १७०
 विलेवणविहि [विलेपनविधि] ओ० १४६.
 रा० ८०६
 विव [विव] ओ० १६. रा० १३३. जी० ३११११

विवच्चास [विपर्यास] रा० ७६७, ७६८, ७७६,
 ७७७
 विवणि [विपणि] ओ० १. जी० ३१६०७
 विवर [विवर] रा० ७५४ से ७५७, ७६३
 विवागविजय [विवाकविजय] ओ० ४३
 विवागसुवधर [विपाकश्रुतधर] ओ० ४५
 विवाह [विवाह] जी० ३१६३१
 विवाहपण्णत्तिधर [व्याख्याप्रज्ञप्तिधर] ओ० ४५
 विवित्तसयणासणसेवणया [विवित्तयनासन-
 सेवनता] ओ० ३७
 विविध [विविध] जी० ३१३०२, ३८७, ५८८, ५९४
 विविह [विविध] ओ० १, ४६, ५१, ११७. रा० २०,
 ४०, १३२, १३७, २२८, ७६६. जी० ३१२६५,
 २८८, ३०७, ३११, ५८६, ५८७, ५८८ से ५९३,
 ५९५, ६७२
 विवेग [विवेक] ओ० ४३, ७६ से ८१
 विवेगारिह [विवेकार्हा] ओ० ३६
 विस [विष] रा० ७६१, ७६४, ७६५
 विसज्जित [विसर्जित] रा० ६८५
 विसज्जिय [विसर्जित] ओ० २१. रा० ६८०
 ६६६, ७००, ७०२, ७१०
 विसण्णमाण [विशण्णत्] ओ० २०, २१, ५३, ५४,
 ५६, ६२, ६३ ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२,
 से १४. १६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४,
 २७७, २७८, २८१, २८०, ६५५, ६८१, ६८३,
 ६८७, ६८८, ७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४,
 ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७७४, ७७८.
 जी० ३१४४३, ४४५, ४४७, ५५५, ५६७
 विसभक्खियण [विषयक्षितक] ओ० ६०
 विसम [विषम] ओ० १७१. जी० ३१६२३, ७०५,
 ७६७, ८११, ८२२, ८४६
 विसय [विशय] रा० १३३. जी० ३१३०३, ५६२,
 ५६६
 विसय [विषय] ओ० २३, ३७. रा० १५. जी०
 ३१६७६, ६७७

विसह [विषह] ओ० २७. रा० ८१३

विसाण [विषाण] ओ० २७. रा० ८१३

विसाय [विषाद] ओ० ४६

विसारय [विशारद] ओ० ६७, १४८, १४९.

रा० ६७५, ८०६, ८१०

विसाल [विशाल] ओ० ६४. रा० २२८. जी०

३१३७, ५६७, ६७२

विसाला [विशाला] जी० ३१६६६, ६१५

विसिद्ध [विशिष्ट] ओ० १६, ६३. रा० ३२, ५२

५६, १०५, २३१, २४७. जी० ३१२६७, ३७२,

३६३, ५६२, ५६६, ५६७, ६०४, ८५७

विसुज्जमाण [विशुध्यमान] ओ० ११६, १५६

विसुद्ध [विशुद्ध] ओ० ८, १०, १४, ४६, १८३, १८४.

रा० २६२, ६७१. जी० ३१३८६, ४५७, ५८१

से ५८३, ५८६ से ५८५

विसुद्धलेस [विशुद्धलेश्य] जी० ३११६६, २०१,

२०३ से २०६

वितेस [विशेष] ओ० १६५, १७. रा० ५४, १८८.

जी० ३१२६१५, २१७, २२६१५, ३५८, ५७६,

८३८, १३

वितेसहीण [विशेषहीन] जी० ३१७३

वितेसाधिय [विशेषाधिक] जी० ३१८२

वितेसाहिय [विशेषाधिक] ओ० १७०, १६२. जी०

११४३; २१६८ से ७२, ६५, ६६, १३४ से १३८,

१४१ से १४६; ३१७३, ७५, ८६, १६७, २२२,

२६०, ३५१, ३६१, ६३२, ६६१, ६६८, ७३६,

८१२, ८३२, ८३५, ८३६, ८८२, १०३७, ११३८;

४११६ से २२, २५; ५११८ से २०, २५ से २७

३१ से ३६, ५२, ५६, ६०; ७१२०, २२, २३;

८५; ६५, ७, १४, ५५, १५५, १६६, १६६, १८४,

१६६, २०८, २३१, २५० से २५३, २५५, २६६,

२८६ से २६३

विस्संत [विथान्त] जी० ३१८७२

विस्सुयकित्तिय [विश्रुतकीर्तिक] ओ० २

विहंगिया [विहङ्गिका] रा० ७६१

विहग [विहग] ओ० १३, १६, २७. रा० १७, १८,

२०, ३२, ३७, १२६, ८१३. जी० ३१२८८, ३००,

३११, ३७२, ५६६

विहत्थि [विहस्ति] जी० ३१७८८

√विहर [वि+हृ] -विहरइ. ओ० १४. रा०

६. जी० ३१२३६.—विहरति. ओ० २३. रा०

१८५. जी० ३११०६.—विहरति. रा० ७.

जी० ३१२३४.—विहरामि. रा० ७५२.—

विहराहि. ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३१४४८

—विहरिस्सम. रा० ८१५.—विहारस्सति.

रा० ८०२.—विहरिस्सामि. रा० ७८७.

—विहरज्जा. ओ० २१

विहरंत [विहरत्] रा० ७७४

विहरमाण [विहर्त्तु] ओ० १६, ३०, ७६, ७७, ६२,

६५, ११४, १५३, १५८, १६५. रा० ६८६,

७११, ७७४, ८१६

विहरित्तए [विहर्तुम्] ओ० ११७. रा० ७६१.

जी० ३११०२४

विहर्तिता [विहृत्य] ओ० १५५

विह्व [विभव] रा० ५४

विहस्सति [वृहस्पति] ओ० ५०

विहाड [वि+घटय्]—विहाडेइ. रा० २८८.

जी० ३१५१६.—विहाडेति. ओ० ७४१५.

—विहाडेति. जी० ३१४५४

विहाडित्ता [विघटय] रा० २८६

विहाडेत्ता [विघटय] रा० ३५१. जी० ३१४५४

विहाण [विधान] रा० ७१, ७५. जी० ११५८, ७३,

७८, ८१

विहाणमग्गण [विधानमार्गण] जी० ११३४, ३६,

३६

विहार [विहार] ओ० ३०, ६२, ६५, ११४, ११५,

१५३, १५८, १५६, १६५. रा० ८१४, ८१६

विहि [विधि] ओ० ६३. रा० २८१.

जी० ३१४७५. ४७६, ५८६, ५८८, ५९० से

५९५, ८३८, १३३; ५१३०

विहिय [विहित] ओ० १५. रा० ६७२

विहय [विहय] जी० ३५८०

विहूण [विहीन] जी० ३२६८, ३६०

वीहकन्त [वीतिकान्त] ओ० १४३, १४४.

रा० ८०२

वीहवइत्ता [व्यतिवज्य] ओ० १६२. रा० १२६.

जी० ३६३८

वीहवयमाण [व्यतिवज्य] रा० १०, १२, २७६.

जी० ३४४५

वीचि [वीचि] ओ० ४६. जी० ३२५६

वीचिपट्ट [वीचिपट्ट] जी० ३५६७

वीजेमाण [वीजयत्] जी० ३४१७

वीणग्गाह [वीणाग्राह] ओ० ६४

वीणा [वीणा] रा० ७७, १७३. जी० ३२८५

वीतसोग [वीतशोक] जी० ३६२७

वीतिवइत्ता [व्यतिवज्य] जी० ३७३६

वीतिवत्तिता [व्यतिवज्य] जी० ३३५१

√वीतिवय [वि + यति + वज्] — वीतिवईसु.

जी० ३८४० — वीतिवइस्सति. जी० ३८४०

— वीतिवएज्जा. जी० ३८६ — वीतिवयंति.

जी० ३८४०

वीतिवयमाण [व्यतिवज्य] रा० ५६. जी० ३८६,

१७६, १७८, १८०, १८२

वीतीवइत्ता [व्यतिवज्य] रा० १२६

वीधि [वीधि] जी० ३३५५

वीरवलय [वीरवलय] ओ० ६३

वीरासणिय [वीरासनिक] ओ० ३६

वीरिय [वीर्य] ओ० ७१, ८६ से ६५, ११४, ११७,

१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७. रा० ६१.

जी० ३५८६

वीरियलद्धि [वीर्यलद्धि] ओ० ११६

वीवाह [विवाह] जी० ३६१४

√वीसंद [वि + स्यन्द] — वीसंदति. जी० ३५८६

वीसंदित [विस्यन्दित] जी० ३८७२

वीसत्थ [विसत्थ] ओ० १

वीससा [विससा] जी० ३५८६ से ५६५

वीसाएमाण [विसादयत्] रा० ७६५, ८०२

वीसादणिज्ज [विसादनीय] जी० ३६०२, ८६०,

८६६, ८७२, ८७८

वीहि [वीहि] जी० ३६२१

वीहि [वीधि] जी० ३२६८, ३१८

वीहिया [वीधिका] ओ० ५५. रा० २८१.

जी० ३४४७

वीस [विसति] जी० ३१३६

वुग्गाहेमाण [व्युद्ग्राहयत्] ओ० १५५, १६०

√वुच्च [वच्] — वुच्चइ. ओ० ८६. रा० १२३.

जी० ३२३६ — वुच्चंति. जी० ३५८

— वुच्चति. रा० १२३. जी० ३२३६

वुड्डसावग [वृद्धसावक] ओ० ६३

वुड्ढि [वृद्धि] जी० ३७८१, ७८२, ८४१

वुत्त [उक्त] ओ० ५६. रा० १०, १२, १४, १८,

६०, ६३, ६४, ७४, २७६, ६५५, ६८१, ७०१,

७०३, ७०७, ७२५, ७६२. जी० ३४४५, ५५५

वुप्पाएमाण [वृत्तादयत्] ओ० १५५, १६०

वूह [व्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६

वेइय [व्येजित] रा० १७३. जी० ६२८५

वेइयपुडंतरे [वेदिकापुटान्तरे] रा० १६७

वेइयफलक [वेदिकाफलक] रा० १६७

वेइया [वेदिका] रा० १७, १८, २०, ३२, १२६,

१६७. जी० ३३७२, ६०४, ७२३, ७७६, ७७७,

७७६, ६१०

वेइयावाहा [वेदिकावाहु] रा० १६७

वेडव्वि [विकारिन्] ओ० ५१

वेडव्विउं [विकर्तुम्] रा० १८

वेडव्विय [वैक्रिय] रा० २७६, २८०. जी० १८२,

६३, ११६, १३५; ३१२६१४, ४४५, ८४२

वेडव्विभीसासरीर [वैक्रियकमिषकसरीर]

ओ० १७६

वेडव्वियलद्धि [वैक्रियलद्धि] ओ० ११६

वेडव्वियसमुग्धात [वैक्रियसमुग्धात]

जी० ३११११२, १११३

वेदव्ययसमुच्चाय [वैक्रियसमुद्घात] रा० १०, १२,
१८, ६५, ७७६. जी० १८२; ३१०८, ४४५

वेदव्ययसरीर [वैक्रियसरीर] ओ० १७६.

जी० ६११७०

वेदव्ययसरीर [वैक्रियसरीरिन्] जी० ६ १७०,
१७७, १८१

वेद [वृन्त] जी० ३१८७, ६७२

वेग [वेग] ओ० ४६, ५७

वेच्च [व्युत्, व्यूत्] रा० ३७, २४५. जी० ३१३११,
४०७

वेजयंत [वैजयन्त] ओ० १६२. जी० ३१८१,
२६६, ५६६, ५६७, ७०७, ७११, ७६६, ८१३,
८२४, ८४१

वेजयंती [वैजयन्ती] ओ० ६४. रा० ५०, ५२, ५६,
१३०, २३१, २४७. जी० ३१३०७, ३६३, ६१६,
१०२६

वेडंतिय (पाय) [दे०] ओ० १०५, १२८

वेडंतिय (बंधन) [दे०] ओ० १०६, १२६

वेढ [वेष्ट] रा० ७६७

वेढण [वेष्टनक] जी० ३, ५६३

वेढिता [वेष्टित्वा] रा० ७६७

वेढिम [वेष्टिम] ओ० १०६, १३२. रा० २८५.
जी० ३१४५१, ५६१

वेणतिरा [वेणयिकी] रा० ६७५

वेणु [वेणु] जी० ३१५८८

वेणुदेव [वेणुदेव] जी० ३१२५०

वेणुसलाइरा [वेणुसलाहिकी] रा० १२

वेव [वेद] ओ० ६७. जी० २१५११

√वेद [वेद] — वेदति. जी० ३१११२

वेदणा [वेदना] जी० ३११११ से ११५, ११७,
१२८

वेदणासमुच्चाय [वेदनासमुद्घात] जी० ३११११२,
१११३

वेदणासमुच्चाय [वेदनासमुद्घात] जी० ३११०८,
१५७

वेदिया [वेदिका] जी० ३१२६६, २८८, ३००, ३७२,
७६५, ७६६ से ७७५, ७७८

वेदियापुडंतर [वेदिकापुटान्तर] जी० ३१२६६

वेदियाबाहा [वेदिकाबाहु] जी० ३१२६६

वेदेमाण [वेदयत्] ओ० ८६. रा० ७५१

वेदामिणी [वैमानिकी] जी० २१७१, ७२, १४८,
१४६

वेदामिय [वैमानिक] ओ० ५०. रा० ७, ११, १५

से १७, ५५, ५६, ५८, ५९, १८५, १८७, २७६,

२८६, २८९, ६५७. जी० ११३५; २१५, १६,

४५, ४६, ७१, ७२, ६५, ६६, १४८, १४९; ३१३०,
६१७, १०३८

वेद्य [वेद] ओ० २५. रा० ६८६, ७७१.

जी० १११४, ११६; २११११; ६१६६

√वेद्य [वि + एज्] — वेद्यइ. रा० ७७१. — वेद्यंति.
जी० ३१७२६

वेद्यंत [व्येजमान] रा० ७७१

वेद्यण [वेदन] रा० ७८७, ७८८

वेद्यण [दे० विक्रय] रा० ७७४

वेद्यणा [वेदना] ओ० १७, ४६, ७१, ७४, १६५.

रा० ७५१, ७६५. जी० १८६; ३१७७, ११०,

१२७४, ५, १२८१, १२८६७

वेद्यणासमुच्चाय [वेदनासमुद्घात] जी० ११२३, ८२.
१३३

वेद्यणिज्ज [वेदनीय] ओ० ८६, १७१

वेद्यणीय [वेदनीय] ओ० ४४

वेद्यहिय [वित्तविक] ओ० २

वेद्यालिया [वेद्यालिकी] रा० १७३.

जी० ३१२८५

वेद्यावच्च [वेद्यावृत्त्य] ओ० ३८, ४१

वेर [वेर] जी० ३१६२७

वेरग [वेराम्य] ओ० ४६, ७४५

वेरमण [विरमण] ओ० ७६, ७७, ७८ से ८१,

१२०, १४०, १५७. रा० ६६३, ६६८, ७१७,

७५२, ७८७, ७८६

वेराणुबन्ध [वेराणुबन्ध] जी० ३१६१२

वेरि | वैरिन् | जी० ३१६१२
 वेरिय | वैरिक | जी० ३१६३१
 वेरुलिथ [वैडूर्य] ओ० ६४. रा० १०, १२, १८,
 ३२, ५१, ६५, १५४, १५६, १६०, १६५, १७४,
 २२८, २५६, २७६, २६२. जी० ३१७, ३३२,
 ३३३, ३४६, ३७२, ३८७, ४१७, ४५७, ६७२
 वेरुलियमणि [वैडूर्यमणि] जी० ३१२८६, ३२७
 वेरुलियमय [वैडूर्यमय] रा० १३०, १५३, २७०.
 २६२. जी० ३१३२२, ४३५
 वेरुलियामय [वैडूर्यमय] रा० १६, १३२, १७५,
 १६०, २३६. जी० ३१२६४, २८७, ३००, ३०२,
 ३२६, ३६८, ४५७, ६४३, ८७५
 वेल्धर [वेल्धर] जी० ३१७३४ से ७३६, ७४०,
 ७४२, ७४५, ७४७, ७८१, ७८२
 वेल्ब [वेल्म्ब] जी० ३१७२४
 वेल्बग [विडम्बक] ओ० १, २
 वेल्बगपेच्छा [विडम्बकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.
 जी० ३१६१६
 वेल्वासि [वेल्वासिन्] ओ० ६४
 वेला [वेला] ओ० ४६. जी० ३१७३२
 वेलु [वेणु] रा० ७७
 वेस [वेण] ओ० १५, ४६, ५३, ७०. रा० ७०,
 १३३, ६७२, ८०४. जी० ३१३०३, ५६७,
 ११२२
 वेसमण [वैश्रमण] ओ० ६५
 वेसमणमह [वैश्रमणमह] रा० ६८८.
 जी० ३१६१५
 वेसाणिय [वैषाणिक] जी० ३१२१६, २२१
 वेसाणियदीव [वैषाणिकदीप] जी० ३१२२१,
 २२५
 वेसासिय [वैश्वसिक] ओ० ११७. रा० ७५० से
 ७५३, ७६६
 वेहाणसिय [वैखानसिक] ओ० ६०
 वोच्छिणय [व्यवच्छिन्नक] रा० ७५३

वोञ्ज [उहा] रा० २८५. जी० ३१४५१
 वोल्हमाण [व्यपलोत्] जी० ३१७८४, ७८७
 वोसहमाण [विकसत्] जी० ३१७८४, ७८७
 वोसिर [वि + उत् + गृज्] — वोसिरामि.
 ओ० ११७. रा० ७६६
 वव [इव] ओ० १६. रा० १३७. जी० ३१३०७

स

स [स] ओ० २, १२, १५, १६, ३०, ५४, ६० से ६५,
 ७०, ६७, १७०, १६४. रा० ७, ८, २१, २४, ३२,
 ३४, ३६, ३७, ४२, ४७, ५०, ५१, ५६, ५८, ६७,
 ६६, ७६, १२४, १४५, १५७, १६३, १६४, १६६,
 १७३, १८६, २०४ से २०६, २१६, २४३, २४५,
 २५५, २५६, २८०, ६७२, ६८१ से ६८३, ६६१,
 ६६२, ७००, ७०३, ७१४ से ७१६, ७७१, ८१५.
 जी० ३१३५, ३६, ४०, ४१, ४३, ४४, ४६, १७४,
 २६१, २६६, २६६, २७७, २८५, २८८, ३००,
 ३०६, ३०७, ३११, ३३५, ३४०, ३५०, ३५२,
 ३५५, ३५६, ३६६, ३७२, ३७४, ३७८, ३८७,
 ३६५, ४०५, ४०७, ४१२, ४१६, ४२५, ४४६ से
 ४४८, ५५७, ५६३, ५६२, ५६६, ६५८, ६६३,
 ६७२, ६७३, ६८५, ७२८, ७३३, ७३७, ७४०,
 ७४२, ७४५, ७५०, ७६२, ७६५, ७६८, ७७०,
 ८३८, ११२, १००६, १०३३, १०५४
 स [स्व] ओ० ६४, ७१. रा० ६, ११, १३, ५६, १५४
 २८१, ६८३, ७२३, ७२६, ७३२, ७३७, ७४७,
 ७७४. जी० ३१३२७, ३५६
 सह [स्मृति] ओ० ४३
 सहंविद्य [सेन्द्रिय] जी० ६१५ से १७, ६६
 सह्य [शतिका] ओ० १८७. जी० ३१६८१
 सउण [शकुन] ओ० ६. रा० १७४. जी० ३१११
 ११६, २७५, २८६, ६६६
 सउणहय [शकुनहय] ओ० १४६. रा० ८०६, ८०
 सउणि [शकुनि] जी० ३१५६८
 सउणिज्जय [शकुनिज्जय] रा० १६२.
 जी० ३१३३५

संकत [सङ्क्रान्त] रा० ७५३

संकड [सङ्कट] ओ० ४६. रा० २८५.

जी० ३१४५१

संकण्य [सङ्कल्प] रा० ६. २७५, २७६, ६८८, ७३२,

७३७, ७३८, ७४६, ७४८ से ७५०, ७६५, ७६८,

७७३, ७७७, ७६१, ७६३ जी० ३१४४१, ४४२

संकम [सङ्क्रम] जी० ३१८३८१२

संकमण [सङ्क्रमण] जी० ३१८३८१२

संकला [शृङ्खला] रा० १३५, २७०.

जी० ३१३०५, ४३५

संकसमाण [सङ्कसत्] जी० ३१११८, ११६

संकिट्ट [सङ्कट्ट] ओ० १

√संकलितस [सं + क्लिप्] — संकलितसंति.

ओ० ७४४

संकु [सङ्कु] रा० २४. जी० ३१२७७

संकुड्य [सङ्कुचित] ओ० ६६. जी० ३१८०

संकुचियपसारिय [सङ्कुचितप्रसारित] रा० १११,

२८१. जी० ३१४४७

संकुच [सङ्कुच] जी० ३१८३८१५

संकुल [सङ्कुल] ओ० ४६. रा० १४

संकुसुमिय [सङ्कुसुमित] रा० ४५

संख [शङ्ख] ओ० १६, २३, २७, ४७, ६७, १६४.

रा० १३, २६, ३८, ७१, ७७, १६०, २२२, २५६,

६५७, ६६५, ८१३. जी० ३१२८२, ३१२, ३३३,

३८१, ४१७, ४४६, ५६६, ५६७, ६०८, ७३४,

७३५, ७४२ से ७४४, ८६४

संख [साङ्ख्य] ओ० ६६

संख (पाय) [शङ्खपात्र] ओ० १०५, १२८

संख (बंधन) [शङ्खबन्धन] ओ० १०६, १२६

संखतल [शङ्खतल] रा० १३०. जी० ३१३००

संखधमग [शङ्खध्मायक] ओ० ६४

संखमाल [शङ्खमाल] जी० ३१५८२

संखवाणिय [शङ्खवाणिज] रा० ७३७

संखवाय [शङ्खवादक] रा० ७१

संखान [सङ्ख्यान] ओ० ६७

संखावत्तिय [सङ्ख्यावत्तिक] ओ० ३४

संखिज्ज [सङ्ख्येय] जी० ४१११

संखित्त [सङ्खित्त] रा० १२३. जी० ३१२६१,

३५२, ६३२, ६६१, ६८६, ७३६, ८३६, ८८२

संखित्तविउल्लतेयलेसस [सङ्खित्तविउल्लतेजोल्लेख्य]

ओ० ८२. रा० ६८६

संखिय [शाङ्खिक] ओ० ६८

संखियवाय [शङ्खिकावादक] रा० ७१

संखिया [शङ्खिका] रा० ७१, ७७. जी० ३१५८८

संखेज्ज [सङ्ख्येय] रा० १०, १२, १८, ६५, २७६.

जी० ११५८, ७३, ७८, ८१, १०१, १३४, २१६३,

१२१, १२६; ३१८१, ८२, ८६, १०, ४४५, ८५०,

८५२, ८५५, ८५८, ८६१, ८६४, ८६७, ८७०,

८७६, ८८४, ८८६, १०७३, १०७४, १०८३,

१०८४, १११५; ४८, १२ से १४, १६; ५११०,

१२ से १५, २६, ४१ से ५०, ५६, ५८; ८१३;

६१३, ४, २२३, २२८, २५६

संखेज्जभाग [सङ्ख्येयतमभाग] जी० ११६४,

१२४, १३५

संखेज्जगुण [सङ्ख्येयगुण] जी० २१६६ से ७२,

६५, ६६, १३६ से १३८, १४१ से १४६; ३१७३,

७५, १०३७; ४१२२, २५; ५११६, २०, २६, २७,

३५, ३६, ५२, ५८, ६०; ६११२, ६१३७, ६४, १३०,

१६६, २२०

संखेज्जतिभाग [सङ्ख्येयतमभाग] जी० ३१६१,

१०८७

संखेज्जभाग [सङ्ख्येयभाग] जी० ३१६१

संखेज्जहा [सङ्ख्येयधा] रा० ७६४, ७६५

संग [सङ्ग] ओ० १६८

संगत [सङ्गत] जी० ३१५६६, ५६७

संगतिय [साङ्गतिक] जी० ३१६१३

संगय [सङ्गत] ओ० १५, १६ रा० ६६, ७०, ७५.

६७२, ८०६, ८१० जी० ३१५६७

संगामिय [साङ्गामिक] ओ० ५७

संगेलि [दे०] ओ० ६६

संगोवत [सङ्गोपाङ्ग] ओ० ६७

संघ [सङ्घ] ओ० ४० रा० ३२, २०६ २११
जी० ३७२

संघयण [सङ्घन] ओ० ८२, १८५ जी० ११४,
१७, ८६, ६५ १२८, १३५; ३१६२, १२७३,
५६८, १०६०

संघयणि [सङ्घयिन्] जी० ११६५, १०१, ११६,
१३०, ३१६२, १०६०

संघरितसमुद्रिय [संघर्षितमुद्रिय] जी० ११७८

संघवेयावच्च [सङ्घवेयावृत्त्य] ओ० ४१

संघाइम [सङ्घातिम] ओ० १०६, १३२,
रा० २८५ जी० ३१४५१, ५६१

संघाड [सङ्घाट] रा० १४१, १६२ जी० ३१२६४
२६६, ३१८, ३५५

संघाडम [सङ्घाटम्] रा० १६०

संघातत्त [सङ्घातत्त्व] जी० ३१०६०

संघाय [सङ्घात] ओ० ४७, ७२, जी० ११७२१२, ३

संघायत्त [सङ्घायत्त्व] जी० ११३५; ३१६२

संघय [सङ्घय] ओ० ४६ जी० ३१५६८

√संघाय [सं+शक्] —संघाएइ. रा० ७५१

—संघाएति. रा० ७७४ —संघाएज्जा.

जी० ३१११६ —संघाएति. रा० ७५३

जी० ३१११८ —संघाएमि रा० ६६५

√संघिट्ट [सं+ष्ठा] —संघिट्टइ. रा० ७०१

—संघिट्टति. रा० ६४ जी० ३१७२५

संघिट्टणा [संघान] जी० ११४१; २१६२, ८३,
८५, १५०, १५१; ५१२६; ६७; ७१८, ८३;
६३, १६, ३६, १५७, १६८, १८३, २६३

संछण [सङ्छन्न] जी० ३१११८, ११६, २८६

संछन्न [सङ्छन्न] रा० १७४

संजतासंजत [संयतासंयत] जी० ६, १४४

संजम [संयम] ओ० २१ से २४, ४५, ४६, ५२, ८२
रा० ८, ६, ६८६, ६८७, ६८८, ७११, ७१३, ८१४,
८१७

संजमासंजम [संयमासंयम] ओ० ७३

संजय [संयत] जी० ४६ जी० ६१४१, १४२, १४६

१४७

संजयासंजय [संयतासंयत] जी० ६१४१, १४६,
१४७

संजायकोऊहल [संजातकोतूहल] ओ० ८३

संजायसंसय [सञ्जातसंशय] ओ० ८३

संजायसङ्ग [सञ्जातश्रद्ध] ओ० ८३

संजुत [संयुक्त] रा० ७५३, ७६५ जी० ३१५६२

संजोग [संयोग] ओ० २८, ४६

संजग्गराय [संख्याभ्रराय] रा० २७ जी० ३१२८०

संज्ञा [संख्या] जी० ३१६२६

संज्ञाविराग [संख्याविराग] जी० ३१५८६

संठाण [संस्थान] ओ० ४७, ५०, ७२, ८२, १७०,
१८६, १६४, १६५, ३, ४, ८ रा० १२४, १२७,
१३२, १८५ जी० ११४, १४, ७२, १२८, १३६;
३१२२, ४८ से ५०, ७८, ८६, १२७, १३, १२६, ३,
४, २५७, २६०, २६१, २६७, ३०२, ३५२, ५७७,
५६८, ६०४, ६३२, ६६१, ६८६, ७०४, ७२३,
७२६, ७३६, ७६६, ८१०, ८२१, ८३१, ८३६,
८४१, ८४२, ८४५, ८४८, ८५७, ८५६, ८६२,
८६५, ८६८, ८७१, ८७४, ८७७, ८८०, ८८२,
८९१, ८९८, ९२५, १००८, १०७१, १०८१,
१०८२

संठाणओ [संस्थानतस्] जी० ३१२५६

संठाणतो [संस्थानतस्] जी० ३१२२

संठाणविजय [संस्थानविजय] ओ० ४३

संठित [संस्थित] रा० १२४ जी० ३१२८ से ३२;
४८ से ५०, ७८ ७६, ८६, ८३, २६०, २६१,
२६७, ३०२, ३५२, ५७७, ५६७, ६३२, ६६१,
७०४, ७०५, ७६३, ७६६, ७६७, ८१०, ८११,
८२१, ८२२, ८३१, ८३६, ८४२, ८४५, ८४८,
८४६, ८५७, ८५६, ८६२, ८६५, ८६८, ८७१,
८७४, ८७७, ८८०, ८८२, ८९१, ८९५, १००८,
१०८१, १०८२

संठिति [संस्थिति] जी० ३१८११

संठिय [संस्थित] ओ० १, १३, १६, ५०, ८२, १७०,
१६४. रा० ३२, ५२, ५६, १२७, १३२, १३३,
१८५, २३१, २४७. जी० १११, ६४, ६५, ६७,
७४, ७७, ७९, ८६, ९६, ११०, ११६, १३०, १३६;
३१३०, ५०, ७८, २५७, २५९, २६७, ३०३, ३०७,
३७२, ३६३, ४०१, ५६४, ५६६ से ५६८, ६०४,
६८६, ७२३, ७२६, ७३६, ७६३, ८३८, ११५,
६१५, ६१८, १०७१

संठ [षण्ठ] ओ० २२. रा० ७७७, ७७८, ७८८

संढासय [संदशक] जी० ३११८, ११६

संढेय [षण्ढेय] ओ० १

संणिक्खित्त [सन्निक्षिप्त] जी० ३४१५

संत [सत्] ओ० २३. रा० ६६५. जी० ३१६०८

संत [श्रान्त] ओ० ६३. रा० ७६५

संताण [सन्तान] ओ० ४६

संति [सत्] जी० ११७२३

√संथर [सं+स्तृ]—संथरइ. रा० ७६६.

—संथरति. ओ० ११७

संथरित्ता [सस्तृत्य] ओ० ११७

संथार [संस्तार] रा० ६६८, ७०४, ७०६, ७५२,
७८६

संथारय [संस्तारक] ओ० ३७, १२०. रा० ७११

संथारय [संस्तारक] ओ० १६२, १८०. रा० ७१३,
७७६

√संथुण [सं+स्तु]—संथुणइ. रा० २६२. जी०
३४५७

संथुणित्ता [सस्तृत्य] रा० २६२. जी० ३४५७

संवट्ट [सन्दट्ट] जी० ३१३२३

संदमानिया [स्यन्दमानिका] ओ० १, ५२, १००,
१२३. रा० ६८७ से ६८९. जी० ३१२७६,
५८१, ५८५, ६१७

संदमाणो [स्यन्दमाणी] रा० १७३

संदमाणोया [स्यन्दमानिका] जी० ३१२८५

संदिट्टु [सन्दिट्ट] रा० १५०

√संदिस्स [सं+दिण्]—संदिस्संतु रा० ७२

संधि [सन्धि] ओ० १६. रा० १६, ३७, १३०,

१५६, १७५, १६०, २४५, ६६४. जी० ३१२६४,

२८७, ३००, ३११, ३३२, ४०७, ५६२, ५६६, ५६७

संधिवाल [सन्धिपाल] ओ० १८, ६३. रा० ७५४,
७५६, ७६२, ७६४

√संधुक्ख [सं+धुक्]—संधुक्खइ. रा० ७६५

संनिकास [सन्निकाय] जी० ३१३०३

संनिक्खित्त [सन्निक्षिप्त] जी० ३४०२, ४१०,
४१८, ४१९, ४२६, ४३२, ४३५, ४४२

संनिक्खित्त [सन्निक्षिप्त] रा० २४०, २४६, २५४,
२५७, २५८, २६६, २६८, २७६

संनिविट्टु [सन्निविष्ट] जी० ३२८५, ३७२, ३७४,
६४६, ६७३, ६७४, ८८४, ८८७

संपउत्त [सम्प्रयुक्त] ओ० १४, २१, ४३, ६४, १४१.
रा० ६७१, ७१०, ७७४, ७६६

संपओग [सम्प्रयोग] ओ० ४३. रा० ६७१

संपक्खाल [सम्प्रक्षाल] ओ० ६४

संपगाढ [सम्प्रगाढ] जी० ३१२६१७

संपट्ठिय [सम्प्रस्थित] ओ० ६४, ११५

संपणाइय [सम्प्रनादित] रा० ३२, २०६, २११.
जी० ३१३७२, ६४६

संपण्ण [सम्पन्न] जी० ३१५६८

संपत्त [सम्प्राप्त] ओ० २१, ५२, ५४, ११७, १४४.

रा० ८, २६२, ६८७, ६८९, ७१३, ७१४, ७६६,
८०२. जी० ३४५७

संपत्ति [सम्पत्ति, सम्प्राप्ति] जी० ३१११६

संपस्थिय [सम्प्रस्थित] रा० ४६ से ५४, ७७४

संपन्न [सम्पन्न] जी० ३१७६५, ८४१

√संपमज्ज [सं+प्र+मृज्]—संपमज्जइ. ओ०
५६. —संपमज्जेज्जा. रा० १२

संपमज्जेत्ता [सम्प्रमृज्य] ओ० ५६

संपरिक्खित्त [सम्परिक्षिप्त] ओ० ३, ६, ११. रा०
१२७, २०१, २६३. जी० ३१२१७, २६०, २६२,
२६५, ३१३, ३५२, ३६२, ३६८ से ३७१, ३८८,
३९०, ६३६, ६५२, ६५८, ६६८, ६७८, ६७९,
६८१, ६८६, ७०४, ७०६, ७३६, ७५४, ७६६.

७६८, ८१०, ८१२, ८२१, ८२३, ८३३, ८३६,
 ८४८, ८५०, ८५६, ८६२, ८६५, ८६८, ८७१,
 ८७४, ८७७, ८८०, ८२५
 संपरिविख्यताणं [सम्परिविख्य] जी० ३१४८
 संपरिविख्य [सम्परिविख्य] रा० ४०, १८६, १६१
 २०५ से २०८
 संपरिवृद्ध [सम्परिवृद्ध] ओ० १८, १६, ६३, ६८,
 ७०, रा० ७, १३, ४७, ५६, ५८, १२०, २६१,
 ६५७, ६८३, ६८६, ७११, ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४, ७७७, ७७८, ८०४, जी० ३१४५७, ५५७,
 १०२५
 संपललित्य [सम्प्रललित] ओ० २३
 संपललित्य [सम्प्रललित] ओ० ११७, रा० ७६६,
 जी० ३१८६६
 संपललित्य [सम्प्रललित] रा० ७६५
 संपाविजकाम [सम्प्राप्तुकाम] ओ० १६, २१, ५४,
 ११७, रा० ८
 संपिडिय [सम्पिडित] ओ० ६, जी० ३१२७५
 संपुच्छण [सम्प्रक्ष] जी० ३१२३६
 संपुड [सम्पुट] जी० ३१७६३
 संपेह [सं + प्र + ईह] — संपेहेह, रा० ६
 संपेहिता [सम्प्रेक्ष्य] रा० ६
 संपेहेता [सम्प्रेक्ष्य] रा० ६८८
 संवधि [सम्बन्धिन] जी० १५०, रा० ७५१, ८०२
 ८११
 संवद्ध [सम्बद्ध] जी० ३१११०, १११५
 संवाह [सम्बाध] ओ० ८६ से ६३, ६५, ६६, १५५,
 १५८ से १६१, १६३, १६८, रा० ६६७
 संवाहणा [सम्बाधना] ओ० ६३
 संवाहिय [सम्बाधित] ओ० ६३
 संबुद्ध [सम्बुद्ध] रा० ७७५
 संभम [सम्भ्रम] ओ० ६७, रा० ८, १३, ६५७,
 ७१४, जी० ३१४४६
 संभार [सम्भार] जी० ३१५८६
 संभिण [सम्भिन्न] जी० ३१११११३

संभिणसोय [सम्भिन्नसोय] ओ० २४
 संभोग [सम्भोग] ओ० ४०
 संमज्जण [सम्माज्जन] रा० ७७६
 संमज्जिय [सम्माजित] रा० २८१, ८०२
 संमट्ट [सम्पुट] रा० २०१
 संमय [सम्मत] ओ० ११७, रा० ७६६
 ✓ संमुच्छ [सं + मुच्छ] — संमुच्छति,
 जी० ३११२७
 संमुच्छिम [सम्मुच्छिम, सम्मुच्छिनज] जी० ११६६
 से ६८, १०१ से १०५, ११२, ११६, १२६ से
 १२८, ३११३८, १३६, १४२, १४५ से १४७,
 १४६, १६१, १६३, १६४, २१२ से २१४
 संमुहाय [सम्मुखागत] जी० ३१२८५
 संलद्ध [संलब्ध] रा० ७६८
 संलाव [संलाप] आ० १५, रा० ७०, ६७२,
 जी० ३१५६७
 संलेहणा [संलेखना] ओ० ७७, ११७, १४०, १५४
 संवच्छर [संवत्सर] जी० ११८७, २१६७,
 ३१८४१, ४१४
 संवच्छरपडिलेहण [संवत्सरप्रतिषेधनक]
 रा० ८०३
 संवट्ट [सं + वर्त] — संवट्टेह, ओ० ५६
 संवट्टगवाय [संवर्तकवात] जी० ११८१
 संवट्टगवाय [संवर्तकवात] रा० १२
 संवट्टेता [संवर्त्य] ओ० ५६
 संवट्टिय [संवर्धित] रा० ८११
 संवर [मवर] ओ० ४६, ७१, १२०, १६२,
 रा० ६६८, ७५२, ७८६
 संवाह [संवाह] ओ० ६८
 संविकिण [संविकीर्ण] रा० ३२, २०६, २११,
 जी० ३१३७२
 संविट्टणित्ता [संविधूय] ओ० २३
 संवुद्ध [संवृद्ध] ओ० १५०, रा० ८११
 संवृत्त [संवृत्त] जी० ३१४०७
 संवृत्त [संवृत्त] रा० ७७१

संयुय [संयुत] रा० ३७, २४५. जी० ३३११
 संगेग [संवेग] ओ० ६६
 संवेयणी [संवेदनी] ओ० ४५
 संवेलित [वे०] जी० ३३०३
 संवेलितय [वे०] रा० ६६, ७०, १७३
 संसट्टचरय [संसुष्टचरक] ओ० ३४
 संसत्त [संसक्त] ओ० ३७. जी० ३५४
 संसार [संसार] ओ० २६, ४६, १६५
 संसारअपरित्त [संसारपरीत] जी० ६१७६
 संसारपरित्त [संसारपरीत] जी० ६१७६, ७८, ८४
 संसारविडस्सगम [संसारव्युत्सर्ग] ओ० ४४
 संसारसमावण्ण [संसारसमापन्न] जी० १६, १०
 संसारसमावण्णग [संसारसमापन्नक] जी० १११०,
 ११, १४३; २११, १५१; ३११, १८३, ११३८;
 ४११, २५; ५११, ६०; ६११, १२; ७११, २३;
 ८११, ५; ९११, ७
 संसारसमावण्णय [संसारसमापन्नक] जी० १११०
 संसारानुपेहा [संसारानुप्रेक्षा] ओ० ४३
 संसारापरित्त [संसारपरीत] जी० ६१८१, ८६
 संसुद्ध [संशुद्ध] ओ० ७२
 √ससेय [सं+स्विद्]—संसेयन्ति. जी० ३१७२६
 संहत [संहत] जी० ३१५६७
 संहरण [संहरण] जी० २३० से ३४, ५७ से ६१,
 ६६, १३३
 संहित [संहित] जी० ११७२३; ३१५६६, ५६७
 संहिय [संहित] रा० १७३. जी० ३१५६७
 सक [स्वक] ३१७६५, ७७०
 सकक्कस [सककश] ओ० ४०
 सकसाइ [सकपायिन्] जी० ६१२८
 सकाइय [सकपायिक] जी० ६११८ से २०
 सकिरिय [सक्रिय] ओ० ४०, ८४, ८५, ८७
 सक [शक] जी० ३१६२०, ६२१, ६३७, १०३६
 से १०४२, ११११

सक्कय [संस्कृत] जी० ३ ५६५
 सक्करप्पभा [शर्कराप्रभा] जी० २११००; ३१४,
 ११, २०, २१, २७, ३१, ३२, ३४, ४०, ४३, ४४, ४६,
 ६८, १०७
 सक्करा [शर्करा] रा० ६, १२. जी० ३१६०१,
 ६२२
 सक्करापुढवी [शर्करापुष्पवी] जी० ३१६५, १६०
 √सक्कार [सत्+कृ]—सक्कारिस्सन्ति रा० ७०४
 —सक्कारेइ. ओ० २१. रा० ६८४
 —सक्कारेज्जा. रा० ७७६ —सक्कारेमि.
 रा० ५८ —सक्कारेमो. ओ० ५२.
 रा० १० —सक्कारेस्सन्ति. रा० ८०२.
 —सक्कारेहिंति. ओ० १४७
 सक्कार [गत्कार] ओ० ४०, ५२. रा० १६, ६८७,
 ६८६, ८०३, ८०५. जी० ३१६०६
 सक्कारणिज्ज [सत्कारणीय] ओ० २. रा० २४०
 २७६. जी० ३१४०२, ४४२
 सक्कारित्तए [सत्कर्तुम्] ओ० १३६. रा० ६
 सक्कारेत्ता [सत्कर्तव्य] ओ० २१
 सक्कुलिकण [शक्कुलिकर्ण] जी० ३१२१६, २२५
 सक्कुलिकणदीव [शक्कुलिकर्णदीव] जी० ३१२२५
 सग [स्वक] जी० ३१७६८, ७६६, ७७२, ७७३, ७७६
 से ६७६, ११११
 सगड [शकट] ओ० १००, १२३. जी० ३१२७६,
 ५८१, ५८५, ६१७, ६३१
 सगडवूह [शकटव्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६
 सगल [सकल] जी० ११७२; ३१५६२
 सगल [शकल] जी० ३१५६६
 सगेवेज्ज [सगैवेय] रा० ७५४, ७५६, ७६४
 सग [सर्ग] ओ० ६८
 सचित्त [सचित्त] ओ० २८, ४६, ६६, ७०. रा०
 ७७८
 √सचित्तीकर [सचित्तीकृ]—सचित्तीकरेइ. रा०
 ७७२
 सची [शची] जी० ३१६२०

सक्च [सत्य] ओ० २, २५, ७२, ११८. रा० ६८६
 सच्चमणजोग [सत्यमनोयोग] ओ० १७८
 सच्चवइजोग [सत्यवाग्योग] ओ० १७६
 सच्चामोसमणजोग [सत्यमूषामनोयोग] ओ० १७८
 सच्चामोसवइजोग [सत्यमूषावाग्योग] ओ० १७६
 सच्चोवात [सत्यावपात] ओ० २
 सच्छंद [स्वच्छन्द] ओ० ४६
 सच्छड [संस्तुत] रा० ७७४
 सजोगि [सयोगिन्] ओ० १८१. जी० ६११, ४६,
 ४८, ५२
 सज्ज [सज्ज] ओ० ६४. रा० १७, १८, १७३,
 ६८१, ६८२, ६८१. जी० ३१२८५
 सज्ज [सज्ज] जी० ३१८७२
 √सज्ज [सज्ज]—सज्जवेइ रा० ६८०.
 —सज्जिहित्ति. ओ० १५०. रा० ८११.
 —सज्जेइ. रा० ६६६
 सज्जावेत्ता [सज्जयित्वा] रा० ६८०
 सज्जिय [सज्जित] जी० ३१५६२
 सज्जीव [सजीव] ओ० १४६. रा० ८०६
 सज्जेत्ता [सज्जित्वा] रा० ६६६
 सज्जाय [स्वाध्याय] ओ० ३८, ४२
 सट्ठाण [स्वस्थान] जी० ६१६६, २०८
 सट्ठि [षट्ठि] ओ० १४०. रा० २३१.
 जी० ३१११८
 सट्ठित्त [षट्ठित्तन्त्र] ओ० ६७
 सडंमवि [षडङ्गविद्] ओ० ६७
 सड्डइ [श्राद्धकिन्] ओ० ६४
 सण [सन] ओ० १३
 सणकुमार [सनत्कुमार] ओ० ५१, १६०, १६२.
 जी० २१६६, १४८, १४६; ३११०३८, १०४५,
 १०४६, १०५८, १०६६, १०६८, १०८८, १०८४,
 ११०२, ११११, ११२६
 सणप्फई [सनखपदी] जी० २१६
 सणप्फय [सनखपद] जी० १११०३
 सणिच्चर [शनैश्चर] जी० ३१६३१

सणिच्चर [शनैश्चर] ओ० ५०
 सण्णद्ध [सन्नद्ध] ओ० ५७. रा० ६६४, ६८३
 सण्णय [सन्नत] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७
 √सण्णव [संज्ञापय]—सण्णवेइ. रा० ७६६
 सण्णा [संज्ञा] रा० ७४८ से ७५०, ७७३.
 ओ० १११४, २०, ८६, ६६, १०१, ११६, १२८,
 १३६; ३११२८२
 √सण्णाह [सं+नह]—सण्णाहेहि. ओ० ५५
 सण्णाहिय [सन्नद्ध] ओ० ६२
 सण्णाहेत्ता [संनह्य] ओ० ५६
 सण्णि [संज्ञिन्] ओ० १५६, १८२. रा० १११४,
 २४, ८६, ६६, १०१, ११६, १३३, १३६; ६११०१,
 १०२, १०५, १०८
 सण्णिकास [सन्निकाश] जी० ३१३३३, ३८१, ४१७,
 ८६४, ११२२
 सण्णित्त [सन्नित्त] जी० ३११०२५
 सण्णिणाय [सन्निनाद] ओ० ६७. रा० १३,
 ६५७. रा० ३१४४६
 सण्णिपंचिदिय [संज्ञिपञ्चेन्द्रिय] ओ० १५६
 सण्णिभ [सन्निभ] रा० १६, ४७, ६३, ६५.
 जी० ३१५६६
 सण्णिमहिय [सन्निमहित] ओ० १
 सण्णिवाइय [सन्निपातिक] ओ० ७१, ११७.
 रा० ६१, ७६६
 सण्णिविट्ठ [सन्निविण्ट] ओ० १. रा० १७, १८,
 २०. जी० ३१२८८
 सण्णिवेत्त [सन्निवेश] ओ० ६८, ८६ से ६३, ६५,
 ६६, १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८.
 रा० ६६७
 सण्णिवेत्ताह [सन्निवेशदाह] जी० ३१६२६
 सण्णिसण्ण [सन्निषण्ण] रा० ८, ४७, ६८, २७७,
 २८३. जी० ३१४४३, ४४६, ४५२, ५५७, ८३६
 सण्णिहिय [सन्निहित] ओ० २
 सण्ह [श्लक्ष्ण] ओ० १२, १६४. रा० २१ से २३,
 ३२, ३४, ३६, ३८, १२४, १३०, १३७, १४५, १५७,

१७४, २६१. जी० ११५७, ५८; ३१२६१, २६२,
२६६, २६६, २८६, २६०, ३००, ३०७, ३६५,
४२५, ४५७, ५६२, ६३६, ८३६

सण्हपुढवी [षलक्षणपृथ्वी] जी० ३११८५, १८६

सत [शत] रा० १२६. जी० ३१८२, १७२, १७३,
१६७, २२६, २४६, २५५, २५७, २६०, २८५,
३३५, ३५३, ३५४, ३५७, ३५८, ३६१, ३७२,
४१५, ४१६, ४४२, ५७७, ५६८, ६३२, ६३६,
६४६, ६४७, ६४६, ६५२, ६६१, ६६६, ६६८,
६७३, ६७४, ६७६, ७०३, ७१४, ७२४ से
७२६, ७२८, ७३३, ७३६, ७५०, ७५६, ७८८,
७६४, ७६५, ७६८, ८०६, ८१२, ८१५, ८२०,
८२७, ८३०, ८३२, ८३५, ८३७, ८३६, ८४१,
८४५, ८८२, ८८४, ८८७, ९०१, ९०८, ९११,
९१८, ९७०, १००० से १००४, १००६, १०१६,
१०३०, १०३८, १०४४, ११३७; ५१२६;
६१११; ७१६६; ८१८६, १०२, २१७

सतपत्त [शतपत्र] रा० २३. जी० ३१२५६, २६१

सतसहस्र [शतसहस्र] जी० ११५८; ३१२२, २७,
६७ से ७२, ८६, १६१, १६७, १६६, १७४, २५७,
२६६, ६०२, ६५८, ७०३, ७०६, ७१४, ७२३,
७६४, ७६५, ७६८, ८२३, ८३६, ८१०, ८६६,
८६८, १०३८, १०८७, १०८८, ११२८

सताउ [सतायुष्] जी० ३१५८६

सति [स्मृति] जी० ३१११८, ११६

सतिय [शक्ति] जी० ३१६७३, ६७४

सत्त [सप्तन्] ओ० २१. रा० ७. जी० ११६५

सत्त [सत्त्व] जी० ३११२७, ७२१, ६५५, ११२८,
११३०

सत्तग [शत्रुयग्र] जी० ३१८५

सत्तघरंतरिय [सप्तगृहान्तरिक] ओ० १५८

सत्तट्टि [सप्तषण्टि] जी० ३१७२२

सत्तणउय [सप्तनवति] जी० ३१२२६

सत्ततीस [सप्तत्रिंशत्] जी० ३१३५१

सत्तपण [सप्तपर्ण] रा० १८६

सत्तम [सप्तम] ओ० १७४, १७६, १८६

सत्तमा [सप्तमी] जी० ३१२, ४, ७२, ७५, ७७, ६१,
१११

सत्तमासिया [सप्तमासिकी] ओ० २४

सत्तमी [सप्तमी] जी० ३१३६, ८८, १११११३

सत्तरस [सप्तदशन्] जी० ३१३५६

सत्तरि [सप्तति] जी० ३१२४६

सत्तवण्णवडेंसय [सप्तपर्णवितसक] रा० १२५

सत्तवण्णवण [सप्तपर्णवन] रा० १७०. जी०
३१५८१

सत्तविष [सप्तविध] जी० २११००; ३१२; ६११८२

सत्तविह [सप्तविध] ओ० ४०. जी० १११०, ५८,
६२; ६११, १२; ६११८५, १६६

सत्तसत्तमिया [सप्तसप्तकिका] ओ० २४

सत्तसिखावडय [सप्तसिखाव्रतिक] ओ० ५२, ७८

सत्ताणउति [सप्तनवति] जी० ३११०३८

सत्तावीस [सप्तविंशति] ओ० १७०. रा० १८८.
जी० ३१८२

सत्तावीसतिगुण [सप्तविंशतिगुण] जी० २११५१

सत्तावीसय [सप्तविंशति] जी० २११५१

सत्ति [शक्ति] ओ० ६४

सत्तिवण्ण [सप्तपर्ण] ओ० ६, १०. जी० ३१३५६,
३८८, ५८३

सत्तिवण्णवण [सप्तपर्णवन] जी० ३१३५८

सत्तु [शत्रु] ओ० १४. रा० ६७१

सत्तुपण [शत्रुपक्ष] जी० ३१४४८

सत्थ [शास्त्र] ओ० ६७

सत्थ [शस्त्र] रा० ७६१

सत्थवाह [सार्थवाह] ओ० १८, ४६, ५२. रा०
६८७, ६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४.

जी० ३१६०६

सत्थोवाडियग [शस्त्रावपाठितक] ओ० ६०

सदारसंतोस [स्वदारसन्तोष] ओ० ७७

सदेस [स्वदेश] ओ० ७०. रा० ८०४

सह [शब्द] ओ० ६, १५, ६३, ६४, ६७, ६८, १६१,

१६३. रा० १३ से १५, ३२, ४०, १३२, १३५,
१७३, २०६, २११, २८२, ६५७, ६७२, ६८५,
७१०, ७३२, ७३७, ७५१, ७५५, ७७१, ७७४.
जी० ३१११८, ११६, २६५, २७५, २८५, २८६,
२९८, ३०५, ३६०, ३७२, ४४६, ४४८, ५७८,
६३६, ६४६, ६६०, ८५७, ८६३, ९०५, ९७७,
९८२, १११७, १११८, ११२४, ११२५

√सदृह [श्रुत् + धा]—सदृहामि. रा० ६६५.

—सदृहाहि. रा० ७५१.—सदृहेज्जा.

रा० ७५०

सदृहमाण [श्रुतान] जी० १११

सदृहल [दे०] जी० ३११२२

√सदृहव [शब्दव]—सदृहवे. ओ० ५८. रा० ६.

—सदृहवेति. ओ० ११७. रा० २७८. जी०

३१४४४. - सदृहवेति. रा० १३. जी० ३१५५४

सदृहवति [शब्दापातिन्] जी० ३१७६५

सदृहवाति [शब्दापातिन्] रा० २७६. जी० ३१४४५

सदृहविय [शब्दायित, शब्दित] रा० ७२

सदृहवेत्ता [शब्दयित्वा] ओ० ५८. रा० ६.

जी० ३१४४४

सदृह्य [शब्दित] ओ० २

सदृह्यल [शब्दल] ओ० १६. जी० ३१५६६

सदृह [श्रुत] जी० ३१६१४

सदृहि [सदृहिम्] ओ० १५. रा० ७. जी० ३१२३६

सन्नद्ध [सन्नद्ध] जी० ३१५६२

सन्निकास [सन्निकाश] रा० १३३. जी० ३१३१२

सन्निकृष्ट [सन्निकृष्ट] जी० ३१४४२

सन्निकृष्ट [सन्निकृष्ट] रा० २२५, २७०

सन्निकास [सन्निकाश] रा० ३८, १६० २२२, २५६

सन्निभ [सन्निभ] ओ० १६. जी० ३१५६६

सन्निविष्ट [सन्निविष्ट] रा० ३२, ६६, १३८, २०६,

२११. जी० ३७५६

सन्निवेश [सन्निवेश] जी० ३१६०६, ८४१

सन्निवेशमारी [सन्निवेशमारी] जी० ३१६२८

सन्निषन्न [सन्निषन्न] रा० १७३

सपञ्जवसित [सपर्यवसित] जी० ६१२४, ३१, ६८,
६९, ८१, १२५, १७४, २०२

सपञ्जवसिय [सपर्यवसित] जी० ६१११, १३, १६,
२३, २५, २६, ३१, ३३, ३४, ५८, ६०, ६४, ६८, ६९,
७१, ७२, ८६, ११०, १२५, १३३, १४६, १६४,
१६५, १७६, २०२, २०६

सपञ्जिकम् [सप्रतिकर्मन्] ओ० ३२

सपि [सपिस्] ओ० ६२, ६३

सपियासव [सपिराश्रव] ओ० २४

सफल [सफल] ओ० ७१

सबरी [सबरी] ओ० ७०. रा० ८०४

सभा [सभा] रा० ७, १२ से १४, २०६, २१०, २३५
से २३७, २५०, २५१, २७६, ३५१, ३५६, ३५७,
३७६, ३६४, ३६५, ६५६, ६५७. जी० ३१३७२,
३७३, ३६७ से ३६६, ४११, ४१२, ४२६, ४४२,
५१६, ५२१, ५२२, ५२४, ५२५, ५५६, ५५७,
१०२४, १०२५

सभाव [स्वभाव] जी० ३१५६७

सम [सम] ओ० १६, २६, ५६, १७१, १६२. रा०

७०, ७५, ७६, ८०, ११२, १३३, १७३, १७४, ७७२.

जी० ३१५२, ११८, ११९, २८५, २८६, ३०३,

३६२, ३८७, ५८६, ५८६, ५८७, ७०५, ७२४,

७२७, ७३२, ७८४, ७८७, ७८७, ८११, ८२२,

८४६, ८१०, ८११, ८१८, ८६८, ११२२

सम [श्रम] रा० ७२६, ७३१, ७३२

समइक्षकत [समतिक्रान्त] ओ० ४७

समइच्छमाण [समतिक्रामत्] ओ० ६६

समइय [सामयिक] ओ० १७३, १७४, १८२, जी०
६३, ५

समंता [समन्तात्] ओ० ३. रा० ६. जी० ३१४६

समवलाय [समाख्यात्] जी० ३१६७ से १६६

समग्र [समग्र] ओ० ६८

समचउरंस [समचतुरस्र] ओ० ८२. जी० २१११६,
१३६; ३१५६८, १०६१, १०६२

समजोतिभूत [समज्योतिभूत] जी० ३।११८

समज्जिणित्ता [समज्य] रा० ७५०

समज्जुइय [समवृत्तिक] जी० ३।११२०

समट्ट [समर्थ] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७, १२०,
१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७, १६९, १७०,
१७२, १७७, १८१, १८६ से १९१. रा० २५ से
३१, ४५, १७३, ७५१, ७५३, ७५५, ७५७, ७५९,
७६१, ७६३, ७७१. जी० ३।८४, ८५, ११८,
१६८ से २०३, २७८ से २८५, ६०१, ६०२,
६०५ से ६०७, ६०९, ६१०, ६१२ से ६१७,
६२२ से ६२४, ६२६, ६२८, ७८२, ७८६, ८६०,
८६६, ८७२, ८७८, ९६० से ९६२, ९६४ से
९६६, १०२४

समण [श्रमण] ओ० १९ से २५, २७, ३३, ४६ से
५३, ५५, ६२, ६९ से ७१, ७८ से ८३, ९५, ११७,
१२०, १५५, १५९, १६२, १७०. रा० ८ से १३,
१५, ५६, ५८ से ६५, ६८, ७३, ७४, ७९, ८१, ८३,
११३, ११८, १२०, १२१, १३१, १३२, १४७ से
१५१, १८५, १९७, ६६७, ६६८, ६७१, ६९८,
७१८, ७१९, ७३९, ७४८ से ७५०, ७५२, ७८७ से
७८९, ८१७. जी० १।५६, ६२, ६५, ८२, ९६,
१२८; २।१४०; ३।१७६, १७८, १८०, १८२,
२५९, २६९, २९७, ३०१, ३०२, ३२१ से ३२४,
५८२, ५८६ से ५९५, ५९८, ६००, ६०३ से
६०७, ६०९ से ६१७, ६२०, ६२२ से ६२५,
६२७, ६२८, ६३०, ७९५, ८४१, ९६५, १०५६,
११२०

समणी [श्रमणी] जी० ३।७९५, ८४१

√समणुगच्छ [सम् + अनु + गम्]—समणुगच्छति
रा० ५५

समणुगम्भमाण [समनुगम्भमान] ओ० ६५.

जी० ३।१७४

समणुगाहिज्जमाण [समनुग्राह्यमान] जी० ३।१७४

समणुचित्तिज्जमाण [समनुचिन्त्यमान] जी० ३।१७४

समणुपेहिज्जमाण [समनुप्रेक्ष्यमान] जी० ३।१७४

समणुबद्ध [समनुबद्ध] रा० १४९, ६७०.

जी० ३।३२२, ५९१

समणोवासग [श्रमणोपासक] ओ० १६२

समणोवासय [श्रमणोपासक] ओ० ७७, १२०, १४०,
१६२. रा० ६९८, ७५२, ७८९ से ७९१

समणोवासिया [श्रमणोपासिका] ओ० ७७.
रा० ७५२

समण्णाय [समन्वागत] ओ० ४३. रा० १२,
७५८, ७५९. जी० ३।११८, २८५

समतल [समतल] ओ० १९. जी० ३।५९६

समताल [समताल] ओ० १४६. रा० ८०६

समतुरंगेमाण [समतुरङ्गायत्] जी० ३।१११

समत्त [समस्त] ओ० ६३. जी० ३।७०१

समत्तगणपिटग [समस्तगणपिटक] ओ० २६

समत्थ [समर्थ] ओ० १४८, १४९. रा० १२, ७३७,
७५८, ७५९, ७७०, ८०९. जी० ३।११८

समन्नाय [समन्वागत] रा० १७३

समप्पभ [समप्रभ] रा० २८५. जी० ३।४५१

समबल [समबल] जी० ३।११२०

समभिजाणित्ता [समभिजाय] रा० २७६.

जी० ३।४४२

√समभिलीय [सं + अभि + लोक्]—समभिलोएइ.

रा० ७६५—समभिलोएति. रा० ७६५.

—समभिलोएमि रा० ७६४

समय [समय] ओ० १, १८, १९, २३ से २५, २७,

२८, ४५, ४७ से ५१, ८२, ११५, १७३, १७४,

१८२, १९५; ३. रा० १, ७, ७६, १७३, २७४,

६६८, ६७६, ६८५, ६८६, ७७१. जी० १।९, ३३;

२।४८, ५४ से ५६, ६५, ८६, ८८, ८९, ११७,

१२३, १३२; ३।८९, ९०, ११८, ११९, २१०,

२११, २८५, ४३९, ५८८, ५८९, ८४१, ८४४,

८४७, ९७३, १०८३, १०८५, १०८६; ७।१ से

६, ९ से १८, २० से २३; ९।१ से ७, २४,

२५, ४०, ४३, ४८ से ५१, ५७, ६०, ११४, ११८,

१२४, १२५, १२७, १३४, १३८, १४२, १४६,

१५०, १५२, १६१, १६२, १७१, १७२, १७६,

१६६, २००, २०३, २३२ से २३८, २४१ से
२४८, २५० से २५३, २५५, २६७ से २७३,
२७५ से २८२, २८४ से २८३

समय [समक] जी० ३१२७३, २६८
समयओ [समयतस्] रा० ६६४
समयखेत्त [समयक्षेत्र] रा० २७६, जी० ३१४४५
समयग [समयक] जी० ७४
समयतो [समयतस्] जी० ३१५६२
समयस [समयशस्] जी० ३१११२०
समयिक [सामयिक] जी० ६१२ से ५
समयिग [सामयिक] जी० ६१६
समरस [समरस] रा० २२८, जी० ३१३८७
समरसोद [समरसोद] जी० ३१२८६
√समलंकर [सं-+अलं-+कृ]—समलंकरेइ.

ओ० ५६

समलंकरेत्ता [समलङ्कृत्य] ओ० ५६
समल्लीण [समालीन] ओ० १३, रा० ४
समवायधर [समवायधर] ओ० ४५
समसोक्ख [समसोक्ख] जी० ३१११२०
समहिट्टिज्जमाण [समधिष्ठीयमान] रा० ७५१
समाइण्ण [समाकीर्ण] ओ० ७१, रा० ६१
समाउत्त [समावृत्त] ओ० ६४, रा० ५१
समाउल [समाकुल] रा० १३६, जी० ३१३०६
समाण [सत्] ओ० २०, ५२, ५६, ६३, ६४, ६८,
११७, १४२, १४४, १५७, रा० १०, १२ से १५,
१८, ४६, ६०, ६३, ६४, ७२, ७४, २७४, २७५,
२७६, २८३, २८६, ६५५, ६८१, ६८५, ७००,
७०१, ७०३, ७०७, ७१०, ७१३, ७२५, ७२८,
७५७, ७६५, ७७४, ७६२, ७६७, ८००, ८०२,
जी० ३१११८, ११६, ४४०, ४४१, ४४५, ४४६,
४५२, ५५५, ६१७, ६८६

समाण [समान] ओ० २३, २६, २६, ११७,
रा० १३१, १३२, १४७ से १५१, १६७, २८८,
७५० से ७५३, ७६६, जी० २१७४, ६८, १४०;
३११११, ११८, ११६, २६६, ३०१, ३०२, ३२१

से ३२४, ४५४

समाणुभाग [समानुभाग] जी० ३१११२०
समादाण [समादान] जी० ३१११७
समामेव [समकमेव] रा० ७५
√समायर [समा+चर]—समायरह, रा० ७५१
समायरित्ता [समाचर्य] रा० ६६७
समायरेत्ता [समाचर्य] रा० ७५१
समारंभ [समारम्भ] ओ० ६१ से ६३, १६१, १६३
समावडिय [समापतित] ओ० ४६
समावण्णम [समापन्नक] जी० ३१८४२, ८४५
समास [समास] जी० ३१८३८१
समासओ [समासतस्] जी० ११५, ५८, ६५, ७३,
८४, ८८, ८९, ९२, १००, १०३, १११, ११२, ११६,
११८, १२१, १२६, १३५
समासतो [समासतस्] जी० ११७८, ८१; ३१२२६
समाहय [समाहृत] ओ० ४६, रा० १२, ७५८,
७५९, जी० ३१११८
समाहि [समाधि] ओ० ११७, १४०, १५७, १६२,
रा० ७६६
समिड्डोय [समाधिक] जी० ३१११२०
समिता [समिता] जी० ३१२३५, १०४०, १०४४,
१०४६
समिद्ध [समृद्ध] ओ० १, १४, रा० १, ६६८ से
६७१, ६७६, ६७७
समिया [समिता] जी० ३१२३६, २४१
समुग [समुद्ग] ओ० ७४१५, रा० १६१, २५८,
२७६, ३५१, जी० ३१३३४, ४१६, ४४५, ५६६
समुगक [समुद्गक] जी० ३१४०२, ५१६
समुग्ग [समुद्गक] जी० ३१३००
समुग्गपक्खि [समुद्गपक्षिन्] जी० ११११३, ११६
समुग्गय [समुद्गक] ओ० १७०, रा० १३०, २४०
२७६, ३५१, जी० ३१४०२, ४४२, ५१६, १०२५
समुग्घात [समुद्घात] जी० ३११०८, १५७, १११८
समुग्घाय [समुद्घात] ओ० १७१, १७२, १७५,
१७७, जी० ११४, २३, ८२, ८६, ६६, १०१,
११६, १३३, १३६; ३१२७४, १६०

समुच्छिष्टाकारि [समुच्छिष्टाकारि] ओ० ४३

समुद्धित [समुद्धित] जी० ३।३०३

समुद्धि [समुद्धि] रा० १३३, ६७१

समुदय [समुदय] ओ० ६७. रा० १३, ४०, १३२,
६५७, ८०३, ८०५. जी० ३।३०२, ४४६, ५६१

समुद् [समुद्] ओ० १७०. रा० १०, १२, ५६,
२७६, ६८८. जी० ३।८६, २१७, २१६ से २२७,
२५६, २६०, ३००, ३५१, ४४५, ५६६, ५६६,
५७१ से ५७६, ६३८, ७०४ से ७०८, ७१०, ७११,
७१३ से ७२३, ७२६, ७२८ से ७३१, ७३३, ७३६,
७३६ से ७४१, ७४५, ७४७, ७५०, ७५४, ७६१,
७६२, ७६४ से ७६६, ७७२ से ७६६, ८००,
८०३, ८०४, ८०६, ८१० से ८१६, ८१८ से ८२१,
८३८, ८४८ से ८५१, ८५४ से ८५६,
७५६, ८६०, ८६२, ८६५, ८६६, ८६८, ८७१,
८७२, ८७४, ८७७, ८७८, ८८०, ८८५, ८८७,
से ८९५, ८९८, ८९९, ९०३ से ९०६, ९०६, ९०६,
९०७ से ९०९

समुद्ग [समुद्ग] जी० ३।७७५, ७७८

समुद्गलिक्का [समुद्गलिक्का] जी० १।८४

समुपविष्ट [समुपविष्ट] जी ३।२८५

√समुपज्ज [सं + उत् + पद] —समुपज्जित्या.
रा० ६—समुपज्जइ. ओ० १५६—समुप-
ज्जति. जी० ३।५६६—समुपज्जित्या. रा०
६८८. जी ३।४४१—समुपज्जिहिति. ओ०
१५३. रा० ८१४

समुप्यण [समुप्यण] ओ० ११६ १५७. रा०

२७६, ७३८, ७४६. जी० ३।४४२

समुप्यणकोऊहल [समुप्यणकोऊहल] ओ० ८३

समुप्यणसंशय [समुप्यणसंशय] ओ० ८३

समुप्यणसङ्ग [समुप्यणसङ्ग] ओ० ८३

समुप्यण [समुप्यण] जी० ३।२३६

समुपागत [समुपागत] जी० ३।६१७

समुपविष्ट [समुपविष्ट] रा० १७३

समुत्सिध [समुत्सिध] रा० ५१

समूत्सिध [समुच्छिष्ट] ओ० ६४

समूह [समूह] रा० १२३

समोपाद [समोपाद] ओ० १६५।६. जी० ३।८४५

√समोय [सं + अव + त्] —समोयन्ति. जी०
३।१७४

समोसद [समोसद] ओ० ५२, ५३. रा० ६,
६८७, ६८६, ७१३

√समोसर [सं + अव + स्] समोसरह. रा०
७००—समोसरिज्जा. ओ० २१—समोस-
रिस्सामि. रा० ७०३ समोसरिस्सामो. रा०
७०५

समोसरण [समोसरण] रा० ७५, ८०, ८२, ११२,
७४८ से ७५०, ७७३

समोसरिउकाम [समोसरिउकाम] ओ० १६, २०

समोहण [सं + अव + हन्] —समोहणति, ओ०
१७१—समोहणिस्सु. जी० ३।१११३
—समोहणिस्संति. जी० ३।१११३

समोहणित्ता [समोहणित्ता] रा० १०. जी० ३।४४५

समोहण [सं + अव + हन्] —समोहणइ. रा०
१८—समोहणति. रा० १०. जी० ३।४४५

समोहत [समोहत] जी० १।१२८; ३।१५८,
२००, २०१, २०६, २०७

समोहतासमोहत [समावहतासमोहत] जी०
३।२०२, २०३, २०८, २०९

समोहय [समोहत] ओ० १६६. जी० १।५३, ६०, ८७

सम्मं [सम्यक्] ओ० १६२. रा० ६७१, ६६८,
७०३, ७१८, ७२६, ७३१, ७३२, ७३७, ७५०
से ७५२, ७७७, ८७८, ७८६

सम्मज्जय [सम्मज्जय] ओ० ६४

सम्मज्जित [सम्मज्जित] जी० ३।४४७

सम्मज्जिय [सम्मज्जित] ओ० ५५, ६० से ६२.
जी० ३।४४७

सम्मट्ट [सम्मट्ट] ओ० ५५. जी० ३।४४७

सम्मत्त [सम्यक्त्व] ओ० ४६

सम्मत्तकारि [सम्यक्त्वक्रिया] जी० ३।२१०
२११

सम्मदिट्टि [सम्यग्दृष्टि] रा० ६२. जी० ११२८,
८६; ३११०३, १५१, ११०५, ११०६; ६६७,
६८, ७१, ७४

सम्मय [सम्मत्] रा० ७५० से ७५३

सम्माण [सम्मान] ओ० ४०, ५२. रा० १६, ६८७,
६८६

√सम्माण [सं. मानय]—सम्माणस्सन्ति. रा०
७०४—सम्माणेइ. ओ० २१. ७०६—सम्मा-
णेज्जा. रा० ७७६—सम्माणेति. रा० ६८४
सम्माणेमि. रा० ५८—सम्माणेमो. ओ०
५२. रा० १०—सम्माणेहि. ओ० १४७

सम्माणणिज्ज [सम्माननीय] ओ० २. जी०
३४०२, ४४२

सम्मानित्तए [सम्मानयितुम्] ओ० १३६. रा०
६

सम्माणेत्ता [सम्मान्य] ओ० २१

सम्मानिच्छदिट्टि [सम्यग्मिथ्यादृष्टि] जी०
११२८, ८६; ३११०५, ११०६

सम्मानिच्छादिट्टि [सम्यग्मिथ्यादृष्टि] जी०
३११०३, १५१; ६६७, ७०, ७३, ७४

सम्मुइ [सम्मति] जी० ३१२३६

सय [शत] ओ० ६३, ६४, ६८, ७१, ११५, ११८,
११६, १७०, १६२, १६५।५. रा० १७, १८, ३२,
६१, ६६, ६६ से ७१, १२४, १२७, १२६, १३७,
१६२, १७०, १७३, १८६, १८८, २०४ से २०६,
२०६, २११, २३३, २५१, २५४, २५८, २६२,
२६२, ६८१, ६८६, ७११, ७५३. जी० ११६४;
२।४१, ४८, ७३, ६२, ६७, १२५, १२८; ३।८२,
६१, १२६।६, १७४, २१७ से २२६, २२६।१, ३,
६, २२७, २३७, २४६, २४६, २५५, २५७, २६०,
२६२, २६३, ३५१, ३५८, ३६१, ३७४, ४१६,
४५७, ६३२, ६४७, ६४६, ६७४ से ६७६, ६८३,
७०३, ७०६, ७२२, ७३६, ७५४, ८०२, ८०६,
८२०, ८२३, ८३०, ८३४, ८३७, ८३८।६, ८३९,
८३९, ८८७, ९०८, ९१८, ९६६, १००३, १००५,

१०१४, १०१६, १०२२, १०४१, १०५२, १०५३,
१०५५, १०६५ से १०७०; ४।१५; ५।१६, २६;
६।६३, १०६, १२३, १२८, १४४

सय [स्वक] ओ० २०, ५३. रा० ५४, ६७१, ६८१,
७१०, ७१८, ७५०, ७७४

√सय [शी]—सयति रा० १८५. जी० ३।२१७

सयंपभा [स्वयंप्रभा] जी० ३।१०७७

सयंबुद्धसिद्ध [स्वयंबुद्धसिद्ध] जी० १।८

सयंभूमहावर [स्वयंभूमहावर] जी० ३।६५१

सयंभूरमण [स्वयंभूरमण] जी० ३।२५६, ६४६ से
६५१, ६६२, ६६४, ६६५, ६६८

सयंभूवर [स्वयंभूवर] जी० ३।६५१

सयंभूरमण [स्वयंभूरमण] जी० ३।६७१

सयंभूरमणग [स्वयंभूरमणक] जी० ३।७८०

सयंसंबुद्ध [स्वयंसंबुद्ध] रा० ८, २६२.

जी० ३।४५७

सयग्घि [शतघ्न] ओ० १

सयण [शयन] ओ० १४, १४१, १४६, १५०.

रा० १८५, ६७१, ६७५, ७६६, ८१०, ८११.

जी० ३।२६७, ८५७, ११२८, ११३०

सयण [स्वजन] ओ० १५०. रा० ७५१, ८०२,
८११

सयणविहि [शयनविधि] ओ० १४६. रा० ८०६

सयणिज्ज [शयनीय] रा० २६१, २७७.

जी० ३।६५०, ६८२

सयपत्त [शतपत्र] ओ० १२, १५०, रा० ८११.

जी० ३।११८, ११६, २८६

सयपाग [शतपाक] ओ० ६३

सयपोराम [शतपर्वक] जी० ३।१११

सयमेव [स्वयमेव] रा० ६७४, ६८०, ६६८, ७५४,
७६१

सयराहं [सप्तति] जी० ३।१०००

सयराह [दे०] अकस्मात् ओ० १२२

सयत्त [शकल] ओ० १६, ४७

सयवत्त [शतपत्र] ओ० ४७. रा० १३७, १७४,
१६७, २७६, २८८. जी० ३।३०७

सयसहस्र [शतसहस्र] ओ० १,२१,४६,५४,६८,
६४,६५,१७०,१६२. रा० १४,१७,१८,१२४,
१२६,१७०,१८८. जी० ११७३,७८,८१,१३५;
३१२,६३ से ६६,७७,८२,१२७,१६०,१६२,
१६६ से १६८,१७१,२३२,२६०,७०६,७१०,
७२२,७२३,७६४,८०२,८०६,८१२,८१५,
८२०,८२३,८२७,८३०,८३२,८३४,८३५,
८३७,८३८,८४०,८४१,८४२,८४३,८४४,८४५,
८४६,८४७,८४८,८४९,८५०,८५१,८५२,८५३,
८५४,८५५,१०२७,१०३०,१०३६,१०७४

सयसाहस्रिय [शतसाहस्रिक] रा० ५६

सयसाहस्री [शतसाहस्री] जी० ३६५८

सर [शर] ओ० ६४. रा० १७३,६८१,७६५.

जी० ३२८५

सर [स्वर] ओ० ६,७१. रा० १७,१८,२०,६१.

जी० ३११८,११६,२७५,२८५,२८६,८५७,
८६३

सर [सरस्] ओ० ६६

सरंधी [दे०] जी० २१६

सरग [सरक] जी० ३१५८७

सरगय [स्वरगत] ओ० १४६. रा० ८०६

सरडी [सरटी] जी० २१६

सरण [शरण] ओ० १६,२१,५४. जी० ३१५६४

सरणवय [शरणवय] ओ० १६,२१,५४. रा० ८,
२६२. जी० ३१४५७

सरतल [सरस्तल] रा० २४. जी० ३१२७७

सरपत्तिया [सरःपत्तिका] रा० १७४,१७५,१८०.

जी० ३१२८६

सरभ [शरभ] जी० १३. रा० १७,१८,२०,३२,

३७,१२६. जी० ३१२८८,३००,३११,३७२

सरमह [सरोमह] रा० ६८८

सरय [शरद्] जी० ३१५६०

सरल [सरल] जी० ११७२

सरलवण [सरलवन] जी० ३१५८१

सरस [सरस] ओ० २,५५,६३. रा० ३२,२७६,२८१,

२८५,२८१,२८३ से २८६,३००,३०५,३१२,

३५१,३५५,५६४. जी० ३१३७२,४४५,४४७,

४५१,४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,

५२०,५४७,५५४

सरसरपत्तिया [सरःसरःपत्तिका] रा० १७४,

१७५,१८०. जी० ३१२८६

सरसी [सरसी] रा० १७४,१७५,१८०.

जी० ३१२८६

सरस्सी [सरस्वती] ओ० ७१. रा० ६१

सरागसंजम [सरागसंजम] ओ० ७३

सरासन [शरासन] रा० ६६४,६८३.

जी० ३१५६२

सरि [सदृश] जी० ३१६६६,७७५

सरिता [सरिता] जी० ३१४४५

सरित्तय [सदृक्त्वय] रा० ६६,७०

सरिख्य [सदृक्त्वय] रा० ६६,७०

सरिस [सदृश] ओ० १६,२२,४७. रा० ६६,७०,

२७०,७७७,७७८,७८८. जी० ३११०,४१२,

५६६ से ५६८,६८२,७०८,७१०,८१४,६२८,

६४६,१११५

सरिसक [सदृशक] जी० ३१६६६

सरिसय [सदृशक] रा० ६६,७०. जी० ३१६६५,

७६२

सरिसव [सर्षप] जी० ११७२

सरिसवविगड [सर्षपविकृति] ओ० ६३

सरिसिख [सरीसृप] रा० ६७१

सरीर [शरीर] ओ० १५,२०,५२,५३,८२,११७,

१४३. रा० १२२,१२३,६७२,६७३,६८६ से

६८६,६८२,७००,७१६,७२६,७२८,७३२,

७३७,७४८ से ७६४,७७० से ७७३,७६५,

७६६,८०१. जी० ११४४,१६ से १८,५०,

७२१२,३,७४,८६,८८,९०,९४ से ९६,१०१,

१११,११२,११६,११६,१२१,१२३,१२४,

१३०,१३५; ३१६१ से ६३,१२६४,१०,५६८,

६६६,१०८७,१०८६ से १०८२

सरीरग [शरीरक] रा० ७६५. जी० ११५,५६,

७४,७७,७६,८०,८२,८५,९०,९३,१०१,१०३,

११६,१२८,१३०,१३५; ३१६४,१३६,१०६०,

१०६१, १०६३, १०६७, १०६८
 सरीरस्थ [शरीरस्थ] ओ० १७४
 सरीरपञ्जति [शरीरपर्याप्ति] रा० २७४, ७६७.
 जी० ११२६; ३, ४४०
 सरीरय [शरीरक] जी० १६४; ३१६२, ६५, ६६,
 सरीरविडस्सग [शरीरव्युत्सर्ग] ओ० ४४
 सरीरि [शरीरिन्] जी० ६६६
 सरीसिब [सरीसृप] जी० ३१८८
 सलिल [सलिल] ओ० २७, ४६. रा० १७४, २८८.
 जी० ३११८, ११६, २८६, ४५४
 सलिला [सलिला] रा० २७६. जी० ३१४४५
 सलील [सलील] रा० २५५, २५६. जी० ३१४१६,
 ४१७
 सलेस [सलेष्य] जी० ६१२६
 सलोद् [सलोप्] रा० ७५४, ७५६, ७६४
 सल्ल [सल्ल] ओ० ७२
 सल्लई [सल्लकी] जी० ३१८७२
 सल्ली [दे०] जी० २१६
 सवण [श्रवण] ओ० १६. रा० २५४.
 जी० ३१४१५, ५६६, ५६७
 सवणया [श्रवणता] ओ० २०, ५२, ५३. रा० ६८७,
 ७१३, ७१६, ७५० से ७५३
 सवियारि [सविचारिन्] ओ० ४३
 सविसय [सविषय] जी० ११४७
 सविसेस [सविशेष] जी० ३११०१०, १०१४
 सवेदग [सवेदक] जी० ६१२२, २५, २७
 सवेदय [सवेदक] जी० ६२३, २८, ३२
 सव्व [सर्व] ओ० २७. रा० ६. जी० ११५०
 सव्वओ [सर्वतस्] ओ० ३, ६, २७, ७६, ११७.
 रा० ६, १२, ३०, ४०, ६३, ६५, १२७, १३२,
 १३५, १५४, १७३, १८६, २०१, २०५ से २०७,
 २३६, २६३, २८१, ६७०, ८१३. जी० ३१२१७,
 ३८८, ८१२, ८२३, ८५०
 सव्वओभद्द [सर्वतोभद्र] ओ० ५१
 सव्वओभद्दपडिमा [सर्वतोभद्रप्रतिमा] ओ० २४

सव्वंग [सर्वाङ्ग] ओ० १५. रा० ६७२, ६७३,
 ८०१. जी० ३१५६६, ५६७
 सव्वकामगुणिय [सर्वकामगुणित] ओ० १६५, १६८
 सव्वकाल [सर्वकाल] ओ० १६५, १६८
 सव्वक्खरसण्णिवाद्द [सर्वाक्षरसंनिपातिन्] ओ० २६
 सव्वग्ग [सर्वाग्र] रा० २२७. जी० ३१३८६, ६४२,
 ६५३, ६७२, ६७६, ७६४, ७६५
 सव्वट्ठ [सर्वार्थ] जी० ३१६३४
 सव्वट्ठसिद्ध [सर्वार्थसिद्ध] ओ० १६७, १६२.
 जी० २१७८, ८१; ३११८४, १६२
 सव्वट्ठसिद्धग [सर्वार्थसिद्धक] जी० २१८५, ६६;
 ३१२३१
 सव्वण्णु [सर्वज] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३१४५७
 सव्वतो [सर्वतस्] रा० १२, ४५, १६१, २०८, ७५५,
 ७६४, ७६५, ७७२, ७७४. जी० ३१४६, ५०,
 २६०, २६२, २६५, २८३, २८५, ३०२, ३०५,
 ३१३, ३२७, ३५२, ३६२, ३६८ से ३७१, ३६०,
 ३६८, ४४७, ५६१, ६३६, ६५२, ६५८, ६६८,
 ६७८, ६७६, ६८१, ६८६, ७०४, ७०६, ७३६,
 ७४१, ७५४, ७७०, ७७२, ७६६, ७६८, ८१०,
 ८२१, ८३३, ८३६, ८४५, ८४८, ८५६, ८६२,
 ८६५, ८६८, ८७१, ८७४, ८७७, ८८०, ८२५
 सव्वत्ता [सर्वता] ओ० ७६
 सव्वत्थ [सर्वार्थ] ओ० ४०
 सव्वत्थ [सर्वत्र] जी० २१८५
 सव्वदरिसि [सर्वदर्शिन्] ओ० १६, २१, ५४.
 रा० ८१२६२. जी० ३१४५७
 सव्वट्ठपिण्डिय [सर्वाष्ट्रपिण्डित] ओ० १६५, १६४,
 १५
 सव्वट्ठा [सर्वाष्ट्र] जी० ३१६३, १६४
 सव्वपाणभूयजीवसत्तमुहावहा [सर्वप्राणभूतजीव-
 सत्त्वमुखावहा] ओ० १६३
 सव्वभाव [सर्वभाव] ओ० १६५, १२
 सव्वभासाणुगामि [सर्वभाषाणुगामिन्] ओ० २६

सव्यभासानुगामिणी [सर्वभासानुगामिणी]

ओ० ७१. रा० ६१

सव्यरतणा [सर्वरतना] जी० ३१६२२

सव्यगास [सर्वकाश] ओ० १६५।१५

सर्व्विदिय [सर्व्वेन्द्रिय] जी० ३।६०२, ८६०, ८६६,
८७२, ८७८

सर्व्विदियकायजोमज्जुंजया [सर्व्वेन्द्रियकाययोग-
योजनता] ओ० ४०

सव्योउय [सर्व्वतुक्] ओ० ४६. रा० १५६, ६७०.
जी० ३।३३२

सव्योसहिपत्त [सर्व्वौषधिप्राप्त] ओ० २४

सस [शश] रा० २७

ससंभम [ससम्भ्रम] ओ० २१, ५४

ससक [शशक] जी० ३।२८०

ससक्खं [ससाक्ष्य, ससाक्षात्] रा० ७५४, ७५६,
७६४

ससग [शशक] जी० ३।६२०

ससण [श्वसन] ओ० १६. जी० ३।५६६

ससरीरि [सशरीरिन्] जी० ६।६२

ससि [शशिन्] ओ० १५, १६, ४७, ६३, १४३.

रा० ६७२, ६७३, ८०१. जी० ३।५६३, ५६६,
५६७, ८०६, ८३८।३, २४, २६, २८, ३०, ३१,
१०००

ससुरकुलरत्तिया [श्वसुरकुलरक्षिता] ओ० ६२

सस्तिरीय [सश्रीक] ओ० ६३. रा० १३६, २२८.

जी० ३।३०६, ३८७, ५६६, ६७२

सस्तिरीयक्ख [सश्रीकरूप] रा० १७, १८, २०, ३२,

१२६, १३०, १३७. जी० ३।२८८, ३००, ३०७,
३७२

सह [सह] जी० ३।६११

सहसंबुद्ध [स्वयंसम्बुद्ध] ओ० १६, २१, ५२, ५४

सहसा [सहसा] जी० ३।५८६

सहस्स [सहस्र] ओ० १६, ६८, ६९, ८६ से ६३,

१७०, १६२. रा० १७, १८, २०, २४, ३२, ५२,
५६, १२४, १२६, १२८, १५६, १६३, १६६,

१८८, २३१, २४७, २७६, २८०, ७८७, ७८८.

जी० १।५८, ५६, ६५, ७३, ७४, ७८, ८१, ६४,

६६, १०१, १०३, १११, ११२, ११६, ११६,

१२३, १३६, १३७; २।३५ से ३६, ६६, १०८,

११०, १११, ११८, १२८, १२९, १३६; ३।१४ से

२१, २३ से २७, ५१, ६० से ६३, ७७, ८० से

८२, ६१, ११८, १७४, १८६ से १६२, २२६।६,

२४२, २४६, २६०, २७७, २८८, ३००, ३३२,

३३५, ३३६, ३५१, ३५५, ३५८, ३६१, ३७२,

३६३, ३६८, ४४५, ४४६, ४४८, ५६६, ५६८ से

५७०, ५७७, ५६०, ५६८, ६३२, ६३८, ६३६,

६६०, ७०३, ७०६, ७१४, ७२२, ७२३, ७२५,

७२६, ७२८, ७३२, ७३३, ७३६, ७३६, ७४०,

७४२, ७४५, ७५०, ७५४, ७६१, ७६२, ७६४

से ७७६, ७८८ से ७६२, ७६४, ७६५, ७६८,

८०२, ८०६, ८१२, ८१४, ८१५, ८२०, ८२३,

८२७, ८३०, ८३२, ८३४, ८३५, ८३७, ८३८।२७,

३१, ८३६, ८४१, ८८२, ६११, ६१८, ६७१,

१०००, १०१५, १०१७ से १०१६, १०२२,

१०२३, १०२८, १०२९, १०३८, १०५१,

१०७३, १०७४, ११३१; ४।३, ६, ६, ११, १६;

५।५, ६, १०, १२, १४, १५, २८, २६; ६।२,

६, ७।३, १३; ८।३; ९।२ से ४, १३२, २१०,

२१४, २२४, २२८, २३४, २४१, २६०, २६६,

२७७

सहस्सपत्त [सहस्रपत्र] ओ० १२, १५०. रा० २३,

१७४, २२३, २७६, २८१, २८८, २८८, ८११.

जी० ३।११८, ११६, २५६, २६६, २८६, २८१,

३१५, ४४५, ४४७, ४५४, ४५५, ६३६, ६३७,

६५१, ६५६, ६७७, ७३८, ७४३, ७६३, ८६४

सहस्सपाग [सहस्रपाक] ओ० ६३

सहस्सभाग [सहस्रभाग] ओ० २

सहस्सरत्तिस [सहस्ररश्मि] ओ० २२. रा० ७२३,

७७७, ७७८, ७८८

सहस्सवत्त [सहस्रपत्र] रा० १६७, २७६

सहस्ससो [सहस्रशस्] जी० ३।१२६।६

सहस्रार [सहस्रार] ओ० ५१, १५७, १६२.

जी० १११६, १२३; २ ६१, ६६, १४८, १४९;
३ १०३८, १०५२, १०६१, १०६६, १०६८,
१०७६, १०८३, १०८५, १०८८

सहस्रारग [सहस्रारक] जी० ३११११

सहा [सभा] ओ० ३७. जी० ३४१२

सहिणग [सलक्षणक] जी० ३१५६५

सहित [सहित] जी० २११०५; ३ २८५, ६२७

सहिय [संहत] ओ० १६

सहिय [सहित] रा० ७५. जी० ३१३३२५

सही [सखी] जी० ३६१३

सहोड [सहोड] रा० ७५४, ७५६, ७६४

साइ [साचि] रा० ६७१

√साइज्ज [स्वाद] - साइज्जामो. ओ० ११७

साइज्जणया [स्वादन्] ओ० ३३

साइज्जित्तए [स्वादयितुम्] ओ० ११७

साइम [स्वाद्य] ओ० ११७, १२०, १४७, १६२.

रा० ६६८, ७०४, ७१६, ७५२, ७६५, ७७६,
७८७ से ७८९, ७९४, ७९६, ८०२, ८०८

साइरेग [सातिरेक] ओ० २३, १४५, १८८.

रा० १७०, २११, २२२, २२७, २५३.

जी० २१६३; ३ २५०, ३५८, ३७४, ३७६, ३८६,
४१४, ६५३, ६७५, ८८२, ८८७, ८९४; ६ ३४,
८६, ६३, १३४, १६०, १६१, १६५

साउ [स्वादु] ओ० ६. जी० ३. २७५

सागर [सागर] ओ० २७, ४६, ७४५, ६६,

१६५, २२. रा० २४, ७६५, ८१३.

जी० ३१७७, ५६६, ८३८, २३

सागरनागरपविभत्ति [सागरनागरप्रविभक्ति]

रा० ६२

सागरपविभत्ति [सागरप्रविभक्ति] रा० ६२

सागरमह [सागरमह] रा० ६८८, ६८९

सागरोवम [सागरोपम] ओ० ११४, ११७, १४०,

१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७. रा० २८२.

जी० ११६६, १३६, १३८; २ ७३, ७६, ८२,

८३, ८७, १०७, १०८, ११८, १२५, १२७, १२९,

१३६; ३ १६२, १६७, ४४८, ८४१, १०४६,

१०४७, १०४९ से १०५३, १०५५, ११३१,

११३७; ४ ४८, ६५, १५, १६; ५ ६, १०, १६ २८,

२९; ६ २, ११; ७ ३, १६; ८ ३; ९ २ से ४,

३१, ३४, ६८, ७२, ८६, ८३, १०२, १०६, १२३,

१२८, १३२, १३४, १६०, १६१, १६५, १७२,

१७६, १८६ से १९१, १९३, १९८, १९९, २०३,

२०६, २१०, २१७, २२४, २२८, २३४, २४४,

२६०, २६६, २८०

सागार [साकार] ओ० १८२, १९५, १११.

जी० १३२, ८७; ३ १०६, १५४, १११०;

६ ३६, ३७

साणुक्कोसिया [साणुकोषता] ओ० ७३

सातासोक्ख [सातसौख्य] जी० ३१११७

साति [साचि] जी० १११६

साति [स्वाति] जी० ३११०७

सातिरेग [सातिरेक] रा० ८०५. जी० १७४;

२ ४३, ४४, ४७, ८२, १२५, १२८; ३ २४७,

२५६, ३८१, ६४२, ६७२, ६७६, ६८६, ६९७,

१०३४, १०३६, ११३७; ४ ६, १५; ५ १६,

२६; ६ ११; ७ १६; ८ ३; ९ ३, ६८, ७२,

१०२, १०६, १२३, १२८, १३२, १६८, १६९,

२०६, २१७, २४४, २६०, २८०

सादीय [सादिक] ओ० १८३, १८४, १९५.

जी० ६ २४, २५, ३१, ३३, ३४, ८२, ११०, १२५,

१६३, १६२, १६५, २०१, २०२, २०५, २०६,

२१५, २१६, २२७, २३०, २४०, २४६, २६१,

२६५, २७६, २८५

साभाविय [स्वाभाविक] रा० २७६, २८०.

जी० ३ ४४५, ४४६

साम [सामन्] रा० ६७५

सामंत [सामन्त] रा० ७५३

सामण्यपरियाग [श्रामाध्यपर्याय] ओ० ६५, १५५,

१५६, १६०

सामन्त्रोविणिवाइय [सामान्यतोविनिपातिक]

रा० ११७, २८१

सामन्त्रतोविणिवातिथ [सामान्यतोविनिपातिक]

जी० ३१४४७

सामलतामंडवग [श्यामलतामण्डपक]

जी० ३१८५७

सामलतामंडवय [श्यामलतामण्डपक]

जी० ३१८५७

सामलया [श्यामलता] ओ० ११. रा० १४५.

जी० ३१२६८, ३०८, ३७७, ३६०, ५८४

सामलयापविभक्ति [श्यामलताप्रविभक्ति] रा० १०१

सामलयामंडवग [श्यामलतामण्डपक] जी० ३१२६६

सामलयामंडवय [श्यामलतामण्डपक] जी० ३१२६७

सामलि [शालमली] जी० ३१५६६

सामवेद [सामवेद] ओ० ६७

सामाहय [सामायिक] ओ० ७७

सामाहयचरित्विणय [सामायिकचरित्रविनय]

ओ० ४०

सामाणिय [सामानिक] रा० ७, ४१, ४८, ५६ से

५८, २७६ से २८०, २८२, २८४, २८७, २८९,

२९१, ६५७, ६५८, ६६६. जी० ३१३३६, ३५०,

३५६, ४४२ से ४४६, ४४८, ४५५, ४५७, ५५७,

५५८, ५६३, ५६५, ६३५, ६३७, ६५७, ६५९, ६८०,

७००, ७२१, ७३८, ७६०, ७६३, ८४३, ८४६,

१०२५

सामाय [श्यामाक] रा० २६. जी० ३१२७६

सामि [स्वामिन्] ओ० ५६. रा० ६, ६८१, ७०७,

७२३, ७२६, ७३१, ७३३ से ७३५, ७५१, ७५३

सामित्त [स्वामित्व] ओ० ६८. रा० २८२.

जी० ३१३५०, ५६३, ६३७

सामुग्ग [समुद्ग] ओ० १६

सामुच्छेइय [सामुच्छेदिक] ओ० १६०

सामुद्ग [सामुद्ग] जी० ३१७८०

साय [सात] जी० ३११२६६

साया [सात] जी० ३१११८, ११९

सार [सार] ओ० १४, २३, ४६. रा० ३७, १७३,

६७१, ६७६, ६६५. जी० ३१२८५, ३११, ५८६,

६०८

सारइय [शारदिक] जी० ३१२८२, ८७२, ६६०

सारस्वणाणुबंधि [सारस्वणाणुबन्धिन्] ओ० ४३

सारग [सारक, स्मारक] ओ० ६७

सारतिथ [शारदिक] रा० २६

सारय [शारद] ओ० २७, ७१. रा० ६१.

जी० ३१५६२, ५६७

सारयसलिल [शारदसलिल] रा० ८१३

सारस [सारस] ओ० ६. जी० ३१२७५

सारहि [सारधि] ओ० ६४. रा० १७३, ६७५,

६८०, ६८१, ६८३ से ६८५, ६८८ से ६९०,

६९२, ६९३, ६९५ से ७१०, ७१३, ७१४, ७१६

से ७३४, ७३६, ७४८. जी० ३१२८५

सारा [दे०] जी० २१६

सारिज्जंत [सार्यमान] रा० ७७

सारीर [शारीर] ओ० ७४

साल [शाल] ओ० ६, १०. जी० ११७१; ३१५८३

सालघरण [शालागृहक] रा० १८२, १८३.

जी० ३१२६४

सालणग [शालनक] जी० ३१५६२

सालभंजिया [शालभञ्जिका] रा० १३३, १३६,

२६४, २६६ से २६९, ३१२, ४७३. जी० ३१३००,

३०३, ३१६, ३५५, ३७२, ४५६, ४६१, ४६२,

४७७, ५३२

सालभंजियाग [शालभञ्जिका] रा० १७, १८,

३२, १३०

सालमंत [शालावत्] ओ० ५, ८. जी० ३१२७४

सालवण [शालवन] जी० ३१५८१

साला [शाखा] रा० १३३, २२८. जी० ३०३, ३८७,

५८०, ६२१, ६७२ से ६७४

१. 'सारय' ति अध्यापनद्वारेण प्रवर्तकाः स्मारका
वा अन्येषां विस्मृतस्य स्मरणान् (वृ) ।

सालि [शालि] ओ० १. रा० १५०. जी० ३।६२१,
६३१

सालिपिट्ट [शालिपिट्ट] रा० २६. जी० ३।२८२

सालिसय [सदुशक] रा० २४५. जी० ३।४०७

सावएज्ज [स्वापतेय] रा० ६६५. जी० ३।६०८

सावज्ज [सावद्य] ओ० ४०, १३७, १३८

सावज्जजोग [सावद्ययोग] ओ० १६१, १६३

सावतेज्ज [स्वापतेय] ओ० २३

सावत्थी [आवत्सी] रा० ६७५, ६७७ से ६८०

६८३, ६८५ से ६८६, ६८२, ७००, ७०६,

७११

सावय [स्वापद] ओ० ४६. जी ३।६२०

सावय [आवक] जी० ३।७६५, ८४१

सावाणुग्गहसमत्थ [शापानुग्रहसमर्थ] ओ० २४

साविद्या [आविक्का] जी० ३।७६५, ८४१

सावैत्त [आवयत्] ओ० ६४

सास [श्वास] जी० ३।६२८

सासत्त [शासत्] ओ० ६४

सासत्त [शाश्वत्] जी० ३।५७, ५८, ८७, ७०२,

७६०

सासय [शाश्वत्] ओ० १८३, १८४, १६५।१६, २१.

रा० १३३, १६८ से २००. जी० ३।५६,

१२७।२, २७० से २७२, ३०३, ३५०, ७२१,

७२४, ७२६, ७६०, १०८१

सासा [स्वाशा, शास्या] ओ० ४६

√साह [कथय्, शास्]—साहिति. रा० ११

—साहेति. रा० २८१. जी० ३।४४७

—साहेह. रा० ६

√साह [साध्]—साहेइ रा० ७६५—साहेज्जासि.

रा० ७६५. —साहेमि. रा० ७६५

साहददु [संहृत्य] ओ० २१

√साहण [स+हन्]—साहणेज्जा. जी० ३।११८

साहम्मियवेवावच्च [साधमिकवैवावृत्त्य] ओ० ४१

साहय [संहत] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७

√साहर [स+ह]—साहरति जी० ३।४५७

साहरण [संहरण] जी० २।११६, १२४

साहरणसरीर [साधारणशरीर] जी० १।६८, ७३

साहरिज्जमाण [संह्रियमाण] रा० ३०, ८०४.

जी० ३।२८३

साहरिज्जमाणचरय [संह्रियमाणचरक] ओ० ३४

साहरित्ता [संहृत्य] जी० ३।४५७

साहसिय [साहसिक] ओ० १४८, १४९. रा०

८०६, ८१०

साहस्सित [साहसिक] जी० ३।८४२

साहस्सिय [साहसिक] रा० ५६. जी० ३।८४२,

८४५

साहस्सी [साहसी] ओ० १६. रा० ७, ४१ से ४४,

४८, ५६ से ५८, २३५, २३६, २८०, २८२, २८६,

२६१, ५६८, ६५७, ६५८, ६६० से ६६२, ६६४.

जी० ३. २३६, २४६, २५५, ३३६, ३४१ से

३४५, ३५०, ३६७, ३६८, ४४६, ४४८, ४५५,

४५७, ५५७, ५५८, ५६०, ५६२, ५६३, ६३५,

६३७, ६५७ से ६५९, ६८०, ७००, ७२१, ७३३,

७३८, ७६० से ७६३, ६०२, ६०३, १०२५,

१०३८, १०४१, १०४४, १०४६, १०४९ से

१०५२

साहस्सीय [साहसिक] रा० ६७१

साहा [शाखा] ओ० ५, ८. रा० २२८.

जी० ३।२७४, ३८७, ६७२

साहिता [कथयित्वा] रा० ६

साहिय [साधिक] ओ० १६५।७

साहिय [सहित] जी० ३।६२५

साहिय [साधित] रा० ७६५

साहु [साधु] ओ० ४६, १६१, १६३

सिग [शृङ्ग] रा० ७१, ७७

सिगवेर [शृङ्गवेर] जी० १।७३

सिगमेव [शृङ्गमेव] ओ० १३

सिगमाल [शृङ्गमाल] जी० ३।५८२

सिगवाय [शृङ्गवादक] रा० ७१

सिंगार [शृङ्गार] ओ० १५. रा० ७०, ७८, १३३,

६७३, ८०६, ८१०. जी० ३।३०३, ५६७, ११२२

सिधाडग [शृङ्गाटक] ओ० १,५२,५५. रा० ६८७,
७१२. जी० ३।५५४,५५५

सिधाडय [शृङ्गाटक] रा० ६५४,६५५

सिधुवार [सिन्धुवार] जी० ३।२८२

सिधुवारगुम्भ [सिन्धुवारगुम्भ] जी० ३।५८०

सिधु [सिन्धु] रा० २७६. जी० ३।४४५,५६५
६३७

सिभिध [श्लैष्मिक] ओ० ११७. रा० ७६६

सिह [सिंह] जी० ३७८१,७८२,१०३८

सिहली [सिहली] ओ० ७०. रा० ८०४

सिक्कग [शिक्यक] रा० १३२,१५३,२३६,२४०.
जी० ३।३२६,४०२

सिक्कय [शिक्यता] रा० १३२,१४०,७६१. जी०
३।३०२,३२६,३६८,४०२

सिक्खा [शिक्षा] ओ० ७६,७७,६७

सिक्खाव [शिक्षा] —सिक्खाविहित ओ० १४६
—सिक्खावेहिह. रा० ८०६

सिक्खावय [शिक्षावय] ओ० ७७

सिक्खावित्ता [शिक्षावित्ता] ओ० १४६

सिक्खवेत्ता [शिक्षावित्ता] रा० ८०७

सिघ [श्रीघ] रा० १०,१२,५६,२७६. जी०
३।८६,१७६,१७८,१८०,१८२,४४५

सिघगति [श्रीघगति] जी० ३।६८६,१०२०

सिघगमन [श्रीघगमन] रा० १७,१८

✓सिज्ज [सिद्ध] —सिज्जह. ओ० १७७—

सिज्जह. ओ० १६५।१२—सिज्जति. ओ०

७२. जी० १।१३३—सिज्जिहिति. ओ०

१६६—सिज्जिहिति ओ० १५४ रा० ८१६

सिज्जमाण [सिध्यत्] ओ० १८५

सिद्धिल [शिथिल] रा० ७६०,७६१

सिणाइत्तए [सनातुम्] ओ० १११

सिणेह [स्नेह] ओ० १६८. जी० ३।२२

सिता [स्यात्] जी० ३।६०,१०६,११८,११९,
१७६,१७८,१८०,१८२,१६५,१६६

सित्त [सित्त] ओ० ५५. जी० ३।५६२

सित्थ [सिक्थ] जी० ३।५६२

सिद्ध [सिद्ध] ओ० ७१,७४।३,६,१८३,१८४,
१८६ से १६२,१६५।१,२,४ से ११,१३,१५,
१७,१९ से २१. जी० १।६; ६।६,१०,१२,
१४,१६,२६,४४,४५,५४,६२,६६,१५६,
१५८,२०६,२१५,२१६ से २२१,२२७,२३०
से २३२,२४०,२४६,२६५,२६७,२७५,२७६,
२८४ से २८७,२६२,२६३

सिद्धकेवलणाण [सिद्धकेवलज्ञान] रा० ७४५

सिद्धत्थ [सिद्धार्थ] रा० १५६,१५७,२५८,२७६.
जी० ३।३२६,४१६,४४५

सिद्धत्थय [सिद्धार्थक] रा० २७६,२८०.

जी० ३।४४५,४४६,४४८,५६३

सिद्धवसहि [सिद्धवसति] ओ० ७४।३

सिद्धाधत्तण [सिद्धाधत्तन] रा० २५१,२५२,२५६,
२६०,२७६,२८८,२६१,२६३,२६४,३१३,
३३१,३३२. जी० ३।४१२,४१३,४२०,४२१,
४५४,४५७ से ४५६,४७८,४६६,४६७,६७४,
६७६,६७७,६६१ से ६६८,८२५,८८४,६०१
से ६०५,६०६,६१३

सिद्धालय [सिद्धालय] ओ० ७४।६,१६३

सिद्धि [सिद्धि] ओ० ७१,१७२,१६३

सिद्धिगह [सिद्धिगति] ओ० १६,२१,५४,११७.
रा० ८,२६२,७१४,७६६. जी० ३।४५७

सिद्धिमग्न [सिद्धिमार्ग] ओ० ७२

सिद्धिमहापट्टणाभिमुह [सिद्धिमहापत्तनाभिमुख]
ओ० ४६

सिप्प [शिल्प] ओ० ६३. रा० १२,७५८ से ७६१.
जी० ३।११८,११९

सिप्पायरिय [शिल्पाचार्य] रा० ७७६

सिप्पि [शिल्पिन्] ओ० १

सिप्पि [शुक्ति] जी० ३।७६३

सिप्पिय [शिल्पिक] जी० ३।५६१

सिबिया [शिविका] ओ० ५२

सिय [सित] ओ० ४६

सिध [स्यात्] जी० १।४६, ७३, ८२; ३।५७, ५८,
२७०

सिधरक्त [सितरक्त] ओ० ४७

सिधा [स्यात्] जी० ३।८४, ८५, ११८, १६७,
२७८ से २८५, ६०१, ६०२, ८६०, ८६६, ८७२
से ८७८, ९८२, १०८५, १०८६

सिधाल [शृगाल] जी० ३।६२०

सिध [शिरस्] ओ० ५२, ७१. रा० ६१, ७६, ६८७
से ६८९

सिधय [शिरोज] ओ० १६, ५१. रा० १३३.
जी० ३।३०३, ५६६, ५६७

सिधय [शिरस्क] ओ० ६३, ६५

सिधसावत्त [शिरसावर्त] ओ० २०, २१, ५३, ५४,
५६, ६२, ११७. रा० ८, १०, १२, १४, १८, ४६,
७२, ७४, ११८, २७६, २७९, २८२, २८२, ६५५,
६८१, ६८३, ६८६, ७०७, ७०८, ७१३, ७१४,
७२३, ७६६. जी० ३।४४२, ४४५, ४४८, ४५७,
५५५

सिरिकंता [श्रीकान्ता] जी० ३।६८८

सिरिचंदा [श्रीचन्द्रा] जी० ३।६८८

सिरिणिलया [श्रीनिलया] जी० ३।६८८

सिरिबाम [श्रीदामन्] जी० ३।५६७

सिरिधर [श्रीधर] जी० ३।८५४

सिरिप्पभ [श्रीप्रभ] जी० ३।८५४

सिरिमहिया [श्रीमहिता] जी० ३।६८८

सिरिली [दे० श्रीली] जी० १।७३

सिरिवच्छ [श्रीवत्स] ओ० १२, १६, ५१, ६४.
रा० २१, ४६, २५४, २६१. जी० ३।२८६,
३४७, ४१५, ५६६^१

सिरी [श्री] रा० ४०, १३२, १३५, २३६, ७३२,
७३७, ७७४, ७८२. जी० ३।२६५, ३०२, ३०५,
३१३, ३६८, ५८०, ५८१, ५६१

सिरीस [शिरीष] ओ० ६, १०. रा० ३१.

जी० ३।२८४, ३८८, ५८३

सिरीसव [सरीसृप] रा० ७१८. जी० ३।७२१

सिरीसिध [सरीसृप] रा० ७०३

सिरीवेदना [शिरीवेदना] जी० ३।६२८

सिलप्पवालमय [शिलाप्रवालमय] रा० २५४.

सिला [शिला] ओ० १६, २३, ४७. रा० २७,
६६५, ७५५, ७५७. जी० ३।२८०, ५६६, ६०८

सिलातल [शिलातल] जी० ३।५६६

सिलायल [शिलातल] ओ० १६

सिलिष [सिलिन्ध्र] ओ० ४७

सिलेस [श्लेष] जी० १।७२।५

सिलोय [श्लोक] ओ० १४६. रा० ८०६

सिव [शिव] ओ० १४, १६, २१, ५४. रा० ८,
२६२, ६७१. जी० ३।४५७

सिवग [शिवक] जी० ३।७४०

सिवमह [शिवमह] रा० ६८८. जी० ३।६१२

सिवय [शिवक] जी० ३।७३४, ७४१

सिवा [शिवा] जी० ३।६२०।१, ६२२

सिविया [शिविका] जी० ३।७४१

सिविया [शिविका] ओ० ७, ८, १०. रा० ६८७ से
६८९. जी० ३।२८५

सिस्स [शिष्य] जी० ३।६१०

सिस्सरिली [दे०] जी० १।७३

सिहंडि [शिखण्डिन्] ओ० ६४

सिहर [शिखर] ओ० ५. रा० ५२, ५६, १३७,
२३१, २४७. जी० ३।२७४, ३०७, ३७३

सिहरि [शिखरिन्] रा० २७६. जी० ३।२२७,
४४५, ७६५

सीचंडी [दे०] जी० १।७३

सीओदा [शीतोदा] जी० ३।५६८, ७०८

सीओभास [शीतावभास] ओ० ४. रा० १७०,
१७३. जी० ३।२७३

सीओया [शीतोदा] जी० ३।४४५

सीओसिणवेदना [शीतोष्णवेदना] जी० ३।११२,
११३, ११४

१. श्रीवृक्षेणाङ्कितं—लाङ्कितं वक्षो येषां ते
श्रीवृक्षलाङ्कितवक्षसः (वृ० पत्र २७१) ।

सीत [शीत] जी० ३।२२, ११३, ११४, ११८,
११९

सीतल [शीतल] जी० ३।११८, ११९

सीतवेदना [शीतवेदना] जी० ३।११२ से ११४,
११९

सीता [शीता] रा० २७९. जी० ३।३००, ६३२,
६३९, ६६८, ७४६

सीतीभूय [शीतीभूत] जी० ३।११८

सीतोदय [शीतोदक] जी० १।६२

सीतोदा [शीतोदा] रा० २७९. जी० ३।७४६,
८१४

सीतोसिण [शीतोष्ण] जी० ३।११२, ११५

सीधु [सीधु] जी० ३।५८६, ८६०

सीमंकर [सीमंकर] ओ० १४. रा० ६७१

सीमंतोवणयण [सीमंतोवणयन] जी० ३।६१४

सीमंवर [सीमंवर] ओ० १४. रा० ६७१

सीमा [सीमा] ओ० १

सीय [शीत] ओ० ४, ८९, ११७. रा० १७०, ७०३,
७९६. जी० ३।११२, ११३, ११५, ११८, ११९,
२७३

सीय [सित] ओ० १९५

सीयच्छाय [शीतच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
७०३. जी० ३।२७३

सीयकूट [शीतकूट] जी० ३।११९

सीयपटल [शीतपटल] जी० ३।११९

सीयपुंज [शीतपुंज] जी० ३।११९

सीयभूय [शीतीभूत] जी० ३।११८, ११९

सीयल [शीतल] रा० १५९, १७४, ६७०.
जी० ३।२८८, ३३२, ६०४

सीयवेदनिज्ज [शीतवेदनीय] जी० ३।११९

सीयवेयनिज्ज [शीतवेदनीय] जी० ३।११९

सीया [शीता] जी० ३।४४५, ८००

सीया [सिबिका] ओ० १, १००, १२३.

रा० १७३. जी० ३।२७६, ५८१, ५८५, ६१७

सील [शील] ओ० ४६

सीलह [शीलजित्] ओ० ९६

सीलव्यय [शीलव्रत] ओ० १२०, १४०, १५७.

रा० ६९८, ७५२, ७८७, ७८९

सीवण्णी [श्रीवर्णी] जी० १।७१

सीसगपाय [सीसकपात्र] ओ० १०५, १२८

सीसगबंधण [सीसकबन्धन] ओ० १०६, १२९

सीसगभारग [सीसकभारक] रा० ७६०, ७६१

सीसघडी [सीसघटी] रा० २५४. जी० ३।४१५

सीसछिण्णय [सीसछिन्नक] ओ० ९०

सीसछिण्णय [सीसछिन्नक] रा० ७६७

सीसपहेलियंग [सीसपहेलिकाङ्ग] जी० ३।८४१

सीसपहेलिया [सीसपहेलिका] जी० ३।८४१

सीसागर [सीसाकर] जी० ३।११८

सीह [सीघ्र] जी० ३।९८९

सीह [सिंह] ओ० १९, २७, ४८. रा० २४, ३७,
८१३. जी० ३।८४, ८८, २७७, ३११, ५९६,
५९७, ६२०, ६३१, ७८२, १०१५

सीहकण्ण [सिंहकर्ण] जी० ३।२१६

सीहकण्णी [सिंहकर्णी] जी० १।७३

सीहगति [सीघ्रगति] जी० ३।९८९

सीहघोस [सिंहघोष] जी० ३।५९८

सीहज्जय [सिंहज्वज] रा० १६३. जी० ३।३३५

सीहणाय [सिंहनाद] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८.
जी० ३।८४२, ८४५

सीहणिक्कीलिय [सिंहनिष्कीलित] ओ० २४

सीहणिसाह [सिंहनिषादिन्] जी० ३।८३९

सीहनाद [सिंहनाद] जी० ३।४४७

सीहनाय [सिंहनाद] रा० २८१

सीहनिक्कीलिय [सिंहनिष्कीलित] ओ० २४

सीहपुच्छियग [सिंहपुच्छितक] ओ० ९०

सीहमंडलपविभत्ति [सिंहमण्डलप्रविभक्ति]
रा० ९१

सीहमुह [सिंहमुख] जी० ३।२१६

सीहस्सर [सिंहस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५,
५९८

सीहासण [सिहासन] ओ० १३, १९, २१, ५४, ६४.

रा० ७, ८, ३७, ३९, ४१ से ४४, ४७, ५१, ६७,

६८, १५८, १६४, १८१, १८३, १८६, २०४ से
२०७, २१६, २४३, २६५, २६७, २६६, २७७,
२७६, २८३, २८६, २८८, ३००, ३२१, ३३८,
३५२, ४७४, ५३४, ५६५, ६५७. जी० ३१२६३,
३११, ३१२, ३३१, ३३६, ३४५, ३५५, ३५६,
३५६, ३६६, ३६८, ३७८, ४०५, ४१६, ४२८,
४३१, ४३४, ४४३, ४४५, ४४६, ४५२, ४५४,
४६५, ४८६, ५०३, ५१७, ५३३, ५४०, ५४८,
५५७, ६३४, ६३५, ६६३, ६७३, ६८५, ७३७,
७४०, ७४२, ७४५, ७५०, ७६२, ७६५, ७६८,
७७०, ८६२, १०२४ से १०२६

सुअवखाय [स्वाख्यात] ओ० ७६ से ८१
सुअलंकित [स्वलङ्कृत] जी० ३१३०३
सुअलंकिय [स्वलङ्कृत] रा० १३३
सुइ [शुचि] ओ० १६, ५५, ६३, ६८. रा० १६,
२८१. जी० ३१४४७, ५६६, ५६७

सुइभूय [शुचीभूत] ओ० २१. रा० ७६५, ८०२
सुइसमाचार [शुचिसमाचार] ओ० ६८
सुईभूय [शुचीभूत] ओ० ५४. रा० २७७
सुउत्तार [सुखोत्तार] रा० १७४. जी० ३१२८६
सुउमाल [सुकुमार] ओ० ६३
सुओपार [सुवावतार] रा० १७४
सुक [शुक्] रा० ७२७

सुवर [सुन्दर] ओ० १५, १६, १४३. रा० ६७३,
८०१. जी० ३१५६६, ५६७

सुंदरंगी [सुन्दराङ्गी] ओ० ६५. रा० ६७२
सुंसुमार [शुंशुमार, शिशुमार] जी० ११६६, ११८
सुंसुमारिया [शिशुमारिका] रा० ७७
सुंसुमारी [शुंशुमार, शिशुमारी] जी० २१४
सुक [शुक्] जी० ३१५६७
सुकंत [सुकान्त] जी० ३१८७२
सुकवित [सुकवधित] जी० ३१८७२
सुकविय [सुकवधित] जी० ३१८६६
सुकय [सुकृत] ओ० २, ५२, ५५, ६३ से ६५.

रा० ३२, १७३, २८१, ६८१, ६८७, ६८६.

जी० ३१२८५, ३७२, ४४७

सुकुमाल [सुकुमार] ओ० ५, ८, १५, १६, ६३,
१४३. रा० २२८, २८०, ६७२, ६७३, ८०१.

जी० ३१३८७, ४४६, ५६६, ५६७, ६७२, १०६८

सुकक [शुक्] ओ० ५०. जी० ३१११११

सुकक [शुक्] रा० २६, ७८२ जी० ३१२८२

सुकक [शुक्ल] जी० ६११५४

सुकक [झाण] [शुक्लध्यान] ओ० ४३

सुककपक्क [शुक्लपक्ष] जी० ३१८३८१८

सुककलेस [शुक्ललेश्य] जी० ६११६१

सुककलेसा [शुक्ललेश्या] जी० ३११५०

सुककलेस्त [शुक्ललेश्य] जी० ३११८५, १६६

सुककलेस्ता [शुक्ललेश्या] जी० ३१११०३

सुक्किल [शुक्ल] ओ० १२. रा० २२, २४, २६,
१२८, १३२, १५३. जी० ११५, ३४, ३५, ५०,
१३६; ३१२२, ४५, २७८, २८२, २६०, ३०२,
३२६, ३५३, ३६७, ५६५, १०७५, १०७६, १०६५

सुक्किलग [शुक्लक] जी० ३१२८२

सुक्क [सौख्य] ओ० १६५१२१

सुमंथ [सुगन्ध] ओ० २, ५५, ६३. रा० ६, १२, ३२,
१३२, २३६, २८१, २८५. जी० ३१३०२, ३७२,
४४७, ४५१, ५६२, ५६६

सुमंथि [सुगन्धि] ओ० ७, ८, १०. रा० १५६.

जी० ३१२७६, ३३२

सुमंथिय [सौगन्धिक] ओ० १५०. रा० २७६,
८११. जी० ३१४४५

सुगुणवेस [सुगुणवेश] ओ० १६

सुगूढ [सुगूढ] जी० ३१५६७

सुघोसा [सुघोषा] रा० ७७. जी० ३१७८, ५८८

सुवरिय [सुवरित] रा० ८१४

सुचि [शुचि] जी० ३१५६६

सुचिण [सुचीर्ण] ओ० ७१. रा० १८५, १८७.

जी० ३१२१७, २६७, २६८, ३५८, ५७६

सुजात [सुजात] जी० ३१३८७, ५८६, ५६६, ५६७

मुजाय [मुजात] ओ० ५, ८, १४, १५, १६, १४३.

रा० १७४, २८८, ६७१ से ६७३, ८०१.

जी० ३११८, ११६, २७४, २८६, ५६६, ५६७, ६७२

मुजाया [मुजाता] जी० ३१६६१२

मुज्ज [दे०] रा० १७४. जी० ३१२८६

मुट्ठिय [सुस्थित] जी० ३१५६४, ७२१, ७५४, ७५६, ७६०, ७६१

मुट्ठिया [सुस्थिता] जी० ३१७६१

√सुण [शृ]—सुणंतु. रा० १५—सुणह.

ओ० १६५, १७—सुणिस्सामो. रा० १६

—सुणस्सामो. ओ० ५२. रा० ६८७

मुण [श्वन्] जी० ३१८४

मुणग [शुनक] जी० ३१६२०

मुणत्ति [सुनत्ति] रा० ७६, १७३. जी० ३१२८५

मुणिज्जण [सुनिपुण] रा० ५७

मुणिद्ध [सुस्तिग्ध] ओ० १६

मुणिम्मिय [सुनिमित्त] जी० ३१५६७

मुणित्तिय [सुनिशित] जी० ३१४१०

मुणोत्त [शृण्वत्] रा० ७७४

मुणोत्ता [श्रुत्वा] रा० ६८८

मुण्हा [स्नुषा] जी० ३१६११

मुत्तिक्खधार [मुत्तीक्ष्णधार] रा० २४६.

जी० ३१४१०

मुत्त [सूत्र] रा० १३२, १५३, २३५. जी० ३१३०२, ३२६, ३६७

मुत्त [सुप्त] ओ० १४८, १४९. रा० ८०६, ८१०

मुत्तओ [सूत्रतस्] ओ० १४६. रा० ८०६, ८०७

मुत्तग [सूत्रक] जी० ३१५६३

मुत्तखेड्ड^१ [सूत्रखेल] ओ० १४६. रा० ८०६

मुत्तरुड्ड [सूत्ररुचि] ओ० ४३

मुत्ति [शुक्ति] जी० ३१५८७

मुत्थिय [सुस्थित] जी० ३१७६१

मुत्तंसण [मुत्तर्णन] जी० ३१८०६

मुत्तंसणा [मुत्तर्णना] जी० ३१६६८, ६७२, ६७३,

६७८ से ६८३, ६८८, ६८९, ६९२ से ७००,

७६५, ६९०, ६९१

मुत्तुत्तार [मुत्तुस्तार] ओ० ४६

मुत्त [शुद्ध] ओ० २७. रा० ७६, १७३, ८१३.

जी० ३१२८५, ५८८

मुत्तवंत [शुद्धवन्त] जी० ३१२१६

मुत्तवंता [शुद्धवन्ता] जी० २११२

मुत्तप्पावेत्त [शुद्धप्रावेश, शुद्धप्रावेश्य, शुद्धात्मवेश]

ओ० २०, ५३. रा० ६८५, ६९२, ७००, ७१६,

७२६, ८०२

मुत्तपुढवी [शुद्धपृथ्वी] जी० ३१८५, १८७

मुत्तवात्त [शुद्धवात्त] जी० ३१६२६

मुत्तवाय [शुद्धवात्त] जी० ११८१

मुत्तागणि [शुद्धाग्नि] जी० ११७८, ८५

मुत्तैत्तणिय [शुद्धैषणिक] ओ० ३४

मुत्तोदय [शुद्धोदक] ओ० ६३. जी० ११६५

मुत्तम्मा [मुत्तर्मा] रा० २६७, ६५६. जी० ३१३७२,

३६६, ४१२, ४२१, ४२६, ४४२, १०२४, १०२५

मुत्तिउण [सुनिपुण] रा० १२

मुत्तिवेत्तिय [सुत्तिवेशित] ओ० ६. जी० ३१२७५

मुत्तइट्ठ [सुप्रतिष्ठ] रा० २५८

मुत्तइट्ठक [सुप्रतिष्ठक] जी० ३१५६७

मुत्तइट्ठग [सुप्रतिष्ठक] रा० १५२. जी० ३१५८७

मुत्तइट्ठिय [सुप्रतिष्ठित] रा० १३३, १७३, २२८,

७५०, ७५२, ७५८. जी० ३१२८५, ३०३, ६७६

मुत्तक्क [सुप्रक्क] जी० ३१५८६, ८६०

मुत्तडियान्णं [सुप्रत्यानन्द] ओ० १६३

मुत्तण्णत्त [सुप्रजण] जी० ७६ से ८१

मुत्तण्ह [सुप्रण्ह] ओ० ४६

मुत्ततिट्ठ [सुप्रतिष्ठ] रा० २७६. जी० ३१३५५

मुत्ततिट्ठक [सुप्रतिष्ठक] जी० ३१४१६, ४४५

मुत्ततिट्ठग [सुप्रतिष्ठक] जी० ३१३२५

मुत्ततिट्ठित [सुप्रतिष्ठित] जी० ३१३८७, ३६३,

४०१

१. सूत्रखेलं—सूत्रक्रीडा, अत्र खेलशब्दस्य 'खेड्ड'
इत्यादेशः (जंबु, वृत्ति)

सुप्रतिद्विध [सुप्रतिष्ठित] रा० ५२, ५६, २३१,
२४७, ७५४, ७५६, ७६०, ७६२, ७६४.

जी० ३५६६, ६७२

सुप्ररक्तंत [सुप्ररोकान्त] रा० १८५, १८७.

जी० ३१२१७, २६७, २६८, ३५८, ५७६

सुपरिणिद्विध [सुपरिनिष्ठित] ओ० ६७

सुपस्था [सुपस्था] रा० ८१७

सुपिणद्ध [सुपिणद्ध] जी० ३१२८५

सुप्पद्विध [सुप्रतिष्ठित] ओ० १६

सुप्पडियाणंद [सुप्रत्यानन्द] ओ० १६१

सुप्पबुद्धा [सुप्रबुद्धा] जी० ३६६६

सुप्पभ [सुप्रभ] जी० ३१८७५

सुप्पभा [सुप्रभा] ओ० १६४

सुप्पमाण [सुप्रमाण] ओ० १३, १६. जी० ३५६६,
५६७

सुप्पसारिय [सुप्रसारित] ओ० ५, ८. जी० ३१२७४

सुप्पसूय [सुप्रसूत] आ० १४. रा० ६७१

सुफास [सुस्पर्श] जी० ३६८१, ६८७

सुबद्ध [सुबद्ध] ओ० १६. रा० १७४.

जी० ३१२८६, ५६६, ५६७

सुबहु [सुबहु] रा० २६६, २६८, ७५० से ७५३,
७७४. जी० ३४३२, ५४४, ५४१

सुभिगंघ [सुगन्ध] जी० ११५, ३६, ३७, ५०;
३६७६, ६८५

सुभिगंघत्त [सुगन्धत्त] जी० ३६८५

सुभिंसद् [सुशब्द] जी० ३६७७, ६८३

सुभिंसद्दत्त [सुशब्दत्त] जी० ३६८३

सुभ [सुभ] ओ० ५१, ११६, १५६. रा० १८५,
१८७, ६७० जी० ११३४; ३१२१७, २६७,
२६८, ३५८, ५७६, ६७२, १०६०, १०६६

सुभग [सुभग] ओ० १२, १५०. रा० २३, १७४,
१६७, २७६, २८८, ८११. जी० ३१११८, ११६,
२५६, २८६, २८९

सुभचक्षुकंत [सुभचक्षुकान्त] जी० ३६३३

सुभद् [सुभद्] जी० ३६२८

सुभद्वा [सुभद्वा] ओ० ५५, ५८, ६२, ७०, ७१, ८१.
जी० ३६६६

सुभाविय [सुभावित] ओ० ७६ से ८१

सुभासिय [सुभापित] ओ० ७६ से ८१

सुभिवत्त [सुभिक्ष] ओ० १, १४. रा० ६७१

सुभूम [सुभूम] जी० ३१११७

सुमज्झ [सुमध्य] रा० १३३. जी० ३१३०३

सुमण [सुमनस्] जी० ३६२५, ६३४

सुमणदाम [सुमनोदामन्] रा० २७६, २८५.
जी० ३४४५, ४५१

सुमणभद् [सुमनोभद्] जी० ३६२८

सुमणा [सुमनसी] जी० ३६६६, ६२०

सुमहग्घ [सुमहार्घ्य] ओ० ६३

सुय [शुक] ओ० ६. जी० ३१२७५

सुय [श्रुत] ओ० ५२. रा० १६, ६८७, ६८६

सुयअण्णाणि [श्रुताज्ञानिन्] जी० १३०, ८७, ६६;
३११०४, ११०७; ६१६७, २०२, २०६, २०८
सुयणाण [श्रुतज्ञान] ओ० ४०. रा० ७३६, ७४२,
७४६

सुयणाणविणय [श्रुतज्ञानविनय] ओ० ४०

सुयणाणि [श्रुतज्ञानिन्] ओ० २४. जी० ११८७,
६६, ११६, १३३; ३११०४, ११०७; ६१५६,
१६०, १६५, १६६, १६७, १६८, २०४, २०८

सुयदेवया [श्रुतदेवता] रा० ८१७

सुयनाणि [श्रुतज्ञानिन्] जी० ११३३

सुयपिच्छ [शुकपिच्छ] रा० २६. जी० ३१२७६

सुयमुह [शुकमुख] ओ० २२. रा० ७७७, ७७८,
७८८

सुरद् [सुरति] रा० ७६, १७३

सुरइय [सुरचित] ओ० ४६

सुरति [सुरति] जी० ३१२८५

सुरभि [सुरभि] ओ० २, ७, ८, १०, ४६, ५५.

रा० ३२, १३१, १४७, १४८, १५६, २२८, २८०,
२८१, २८५, २८९, ३५१, ६७०. जी० ३१२२,
२७६, ३०१, ३३२, ३७२, ३८७, ४४६, ४४७,
४५१, ५६८

सुरभिगंध [सुरभिगन्ध] रा० ६, १२

सुरम्भ [सुरम्भ] ओ० १, ६ से ८, १०, १३.

रा० २२, ३७, २४५. जी० ३१२७५, २७६,

३११, ३८६, ४०७, ५८१, ५८५

सुरवर [सुरवर] रा० ८, ६, १२

सुरस [सुरस] जी० ३१६८०, ६८६

सुरहि [सुरभि] ओ० ६३. जी० ३१६७२

सुरा [सुरा] जी० ३१५८६

सुरूव [सुरूव] ओ० १५, ४७ से ५१, १४३.

रा० ५३, ६७२, ६७३, ८०१. जी० ३१२६०,

६७८, ६८४

सुरूवग [सुरूवग] जी० ३१५६६

सुरूवत्त [सुरूवत्त] जी० ३१६८४

सुलभबोहिय [सुलभबोधिक] रा० ६२

सुललिष [सुललित] रा० १७३. जी० ३१२८५

सुवण [सुवर्ण] ओ० २३, ५२, ६३. रा० ४०, १३२,

१७४, २८१, ६८७ से ६८९. जी० ३१२६५,

२८६, ३०२, ३१३, ४४७, ६०८, ८४०, ८८५,

११२२

सुवण [सुपर्ण] ओ० ४८, १२०, १६२. रा० ६६८,

७५२, ७८६. जी० ३१२३२

सुवणकूला [सुवर्णकूला] रा० २७६. जी० ३१४४५

सुवणजुति [सुवर्णमुक्ति] ओ० १४६. रा० ८०६

सुवणजूहिया [सुवर्णयूधिका] रा० २८.

जी० ३१२८१

सुवणहार [सुपर्णहार] जी० ३१८८५

सुवणपाग [सुवर्णपाक] ओ० १४६. रा० ८०६

सुवणमणिमय [सुवर्णमणिमय] रा० २७६, २८०.

जी० ३१४४५

सुवणरूपमणिमय [सुवर्णरूपमणिमय] रा० २७६,

२८०. जी० ३१४४५

सुवणरूपमय [सुवर्णरूपमणिमय] रा० १७५.

जी० ३१४०२, ६०२

सुवणरूपमणिमय [सुवर्णरूपमणिमय]

जी० ३१४४५

सुवणरूपमय [सुवर्णरूपमय] रा० १६, १५३,

१६०, २३५, २३६, २४०, २७५, २८०.

जी० ३१२६४, २८७, ३२६, ३६७, ३६८, ४४५

सुवणगर [सुवर्णगर] रा० ७७४. जी० ३११८

सुवयण [सुवचन] ओ० ५२. रा० ६६७, ६८७

सुवासित [सुवासित] जी० ३१८७८

सुविणीय [सुविनीत] रा० ७६ से ८१

सुविभक्त [सुविभक्त] ओ० १, ५, ८, १०, १६.

रा० ३२, १४५. जी० ३१२६८, २७४, ३७२,

५६६, ५६७

सुविरद्वय [सुविरचित] रा० ३७, २४५.

जी० ३१४०७, ५६६, ५६७

सुविरचित [सुविरचित] जी० ३१३११

सुविहि [सुविधि] जी० ३१५६४

सुव्वत्त [सुव्वत्त] ओ० ७१. रा० ६१

सुव्वय [सुव्वत्त] ओ० १६१, १६३

सुसंपत्त [सुसम्प्रमुक्त] ओ० ४६, ६४. रा० ७६,

१७३, ६८१. जी० ३१२८५, ५८८

सुसंपगहित [सुसम्प्रगृहीत] जी० ३१२८५, ३०२

सुसंपगहित [सुसम्प्रगृहीत] ओ० ६४. रा० १३२,

१७३

सुसंपरिगहित [सुसम्परिगृहीत] जी० ३१२८५

सुसंपरिगहित [सुसम्परिगृहीत] रा० १७३, ६८१

सुसंपिण्ड [सुसंपिण्ड] रा० १७३, ६८१

सुसंभास [सुसंभाष] ओ० ४६

सुसंवृय [सुसंवृत] ओ० ६३

सुसंहय [सुसंहत] ओ० १६

सुसक्कय [सुसंस्कृत] जी० ३१५६२

सुसज्ज [सुसज्ज] ओ० ५७. रा० ५३

सुसमाहित [सुसमाहित] ओ० ३७

सुसवण [सुश्रवण] जी० ३१५६६

सुसव्व [सुसर्व] रा० १५२. जी० ३१३२५

सुसामण्णरय [सुश्रामण्णरत] ओ० २५, १६४

सुसाहत [सुसंहत] जी० ३१५६६

सुसिणिद्ध [सुस्निग्ध] जी० ३१५६७

सुसिर [सुविर] रा० ११४, २८१

मुसिलिट्ट [मुसिलिट्ट] ओ० १६, ६३, ६४. रा० ३२,
५२, ५६, २३१, २४७. जी० ३१३७२, ३६३, ४०१,
५६६
मुसील [मुसील] ओ० १६१, १६३
मुसुड [मुश्रुति] ओ० ४६
मुस्तर [मुस्तर] रा० १३५. जी० ३१३०५, ५६७,
५६८
मुस्तरघोस [मुस्तरघोष] रा० १३५. जी० ३१३०५
मुस्तरणिघोस [मुस्तरनिघोष] जी० ३१५६८
मुस्तरा [मुस्तरा] रा० १४
मुस्तवण [मुस्तवण] ओ० १६
मुस्तसणविणय [मुस्तसणविनय] ओ० ४०
मुस्तसमाण [मुस्तसमाण] ओ० ४७, ५२, ६६, ८३.
रा० ६०, ६८७, ६६२, ७१६
मुह [मुख] ओ० १, २३, २६, ५२, १६५, ११५, १६,
२२. रा० १५, २७५, २७६, ६८३, ६६७.
जी० ३१२१६, ४४१, ४४२, ५६४, ६०४,
८३८, १३
मुह [मुह] ओ० ६ से ८, १०. जी० ३१२७५, २७६
मुहमुह [मुखंमुख] ओ० १६. रा० ६८६, ७११,
८०४. जी० ३१६१७
मुहफास [मुखस्पर्श, मुहस्पर्श] रा० १७, १८, २०,
३२, १२६, १३०, १३७. जी० ३१२८८, ३००,
३०७, ३७२
मुहम्मा [मुधर्मा] रा० ७, १२ से १४, २०६, २१०,
२३५ से २३७, २५०, २५१, २७६, ३५१, ३५६,
३५७, ३७६, ३६४, ३६५, ६५७, ७६५, ७६४,
८०२. जी० ३१३६७, ३६८, ४११, ४१२, ५१६,
५२१ से ५२५, ५५६, ५५७
मुहलेसा [मुभलेष्या] जी० ३१८३८, २६
मुहलेस्ता [मुभलेष्या] जी० ३१८४५
मुहविहार [मुखविहार] जी० ३१५६४
मुहासन [मुखासन] रा० ७६५, ७६४, ८०२
मुहि [मुखिन्] ओ० १६५, १६८, २२
मुहिय [मुह्य] जी० ३१६१३

मुहिरण [मुहिरण] रा० २८
मुहिरणया [मुहिरणया] जी० ३१२८१
मुहुम [सूक्ष्म] ओ० ४७, १७०, १८२. रा० १६०,
२५६. जी० ३११३३, ३३३, ४१७, ५६६;
५१२१ से २३, २५ से २७, ३४ से ३६, ५१, ५२,
५७ से ६०; ६१६५, ६६, ६६, १००
मुहुमआउ [सूक्ष्माप्] जी० ५१२५
मुहुमआउकाइय [सूक्ष्माप्कायिक] जी० ५१२७, ३४
मुहुमआउक्काइय [सूक्ष्माप्कायिक] जी० ११६३, ६४
मुहुमकाल [सूक्ष्मकाल] जी० ६१६६
मुहुमकिरिय [सूक्ष्मक्रिय] ओ० ४३
मुहुमणिओद [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१३८, ३६, ४४
से ४६, ५२, ६०
मुहुमणिओदजीव [सूक्ष्मनिगोदजीव] जी० ५१५३,
५४, ५६, ६०
मुहुमणिओय [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१२१, २२, २५,
२७, ३४, ३५
मुहुमनिगोद [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१४४
मुहुमनिगोदजीव [सूक्ष्मनिगोदजीव] जी० ५१६०
मुहुमनिगोय [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१२६, ३६
मुहुमतेउकाइय [सूक्ष्मतेजस्कायिक] जी० ५१२५,
२७, ३६
मुहुमतेउक्काइय [सूक्ष्मतेजस्कायिक] जी० ११७६,
७७; ५१३४
मुहुमनिओम [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१२४
मुहुमनिओय [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१३४, ३५
मुहुमनिगोद [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१३४
मुहुमपुठविकाइय [सूक्ष्मपृथ्वीकायिक] जी० १११३१
१४, ५६; ३१३२, १३३, ५१२, ३, २४, २५,
२७, ३४
मुहुमपुठवी [सूक्ष्मपृथ्वी] जी० ५१२७
मुहुमवणस्सइकाइय [सूक्ष्मवनस्पतिकायिक]
जी० ११६६, ६७; ५१२७, ३४, ३६
मुहुमवणस्सति [सूक्ष्मवनस्पति] जी० ५१२४
मुहुमवणस्सतिकाइय [सूक्ष्मवनस्पतिकायिक]
जी० ५१२५, २७, ३६

सुहमवाउकाइय [सूक्ष्मवायुकायिक] जी० ५।२७,
३४

सुहमवाउकाइय [सूक्ष्मवायुकायिक] जी० १।८०
सुहमसंपरायचरित्तविनय [सूक्ष्मसंपरायचरित्त-
विनय] ओ० ४०

सुहमसरीर [सूक्ष्मशरीर] जी० ३।१२६।६

सुहृद्य [सुहृत] ओ० २७. रा० ८१३

सुहोत्तार [सुखोत्तार] जी० ३।५६४

सुहोदय [सुभोदक, सुखोदक] ओ० ६३

सुहोदार [सुखावतार] जी० ३।२८६

सुहभूत [सूचीभूत] जी० ३।४४३

सुई [सूत्री] रा० १६, १३०, १७५, १८०, १६७.

जी० ३।२६४, २६६, २८७, ३००

सुईकलाव [सूचीकलाप] जी० १।७७, ७६

सुईपुडंतर [सूचोपुटान्तर] रा० १६७.

जी० ३।२६६

सुईकलय [सूचीकलक] रा० १६७. जी० ३।२६६

सुईभूय [सूचीभूत] रा० २८८

सुईमुख [सूचीमुख] रा० १६७

सुईमुह [सूचीमुख] जी० ३।२६६

सूचिकलाव [सूचिकलाप] जी० ३।८५

सूणगलछणय [सूणालाञ्छणक] रा० ७६७

सूमाल [सुकुमार] रा० २८५. जी० ३।२७४, ४५१

सूयगडधर [सूयकृतधर] ओ० ४५

सूयपुरिस [सूयपुरुष] जी० ३।५६२, ५६७

सूर [सूर] ओ० १६, २२, २७, ५०. रा० १३३,

७७७, ७७८, ७८८, ८०३, ८१३. जी० २।१८;

३।२५८, ३०३, ५८६, ५६३, ५६६, ७६५, ७६७,

७६६, ७७१, ७७३, ७७५, ७७७, ७७९, ८३८।४,

१०, १५, २१, २३, २४, २७, २८, २९, ३२, ६३७,

६५०, ६५३, १०१६, १०२०, १०२१, १०२६,

११२२

सूरकंतमणि [सूरकान्तमणि] जी० १।७८

सूरणकंद [सूरणकन्द] जी० १।७३

सूरस्थमणपविभक्ति [सूरास्तमनप्रविभक्ति] रा० ८६

सूरबीव [सूरद्वीप] जी० ३।७६५, ७६६, ७७१, ७७७

सूरद्वीव [सूरद्वीप] जी० ३।६३७

सूरपरिणस [सूरपरिवेश] जी० ३।८४१

सूरपरिवेस [सूरपरिवेश] जी० ३।६२६

सूरण्यभा [सूरप्रभा] जी० ३।७६५, १०२६

सूरमंडल [सूरमण्डल] रा० २४. जी० ३।२७७,

५६०

सूरमंडलपविभक्ति [सूरमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६०

सूरवडेंसय [सूरावतंसक] जी० ३।१०२६

सूरवरोभास [सूरवरावभास] जी० ३।६३८

सूरविमाण [सूरविमान] जी० २।४१; ३।१००३

से १००५, १००६, १०११, १०२६

सूरागमणपविभक्ति [सूरागमनप्रविभक्ति] रा० ८७

सूराभिमुह [सूराभिमुख] ओ० ११६

सूरावरणपविभक्ति [सूरावरणप्रविभक्ति] रा० ८८

सूरावलिपविभक्ति [सूरावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

सूरिय [सूर्य] ओ० १६२. रा० ४५, १२४.

जी० ३।१७६, १७८, १८०, १८२, २५७, ७०३,

७२२, ८०६, ८२०, ८३०, ८३४, ८३६, ८४१, ८४२,

८४५, ६८८ से १०००, १०२०, १०३७, १०३८

सूरियकंत [सूर्यकान्त] रा० ६७३, ६७४, ७६१ से

७६३

सूरियकंता [सूर्यकान्ता] रा० ६७२, ६७३, ७५१,

७७६, ७६१ से ७६४, ७६६

सूरियाभ [सूर्याभ] रा० ७, ६, १०. १२ से १८, ४१

से ४४, ४६ से ४६. ५५ से ६५, ६८, ६९, ७१ से

७४, ११८ से १२०, १२२, १२४, १२६, १२६,

१६२, १६३, १६६, १७०, १८७, २४०, २४०, २६६,

२६८, २७०, २७४ से २६१, ६५४ से ६६७,

७६६ से ७६६

सूरियाभविमाणपड [सूर्याभविमानपति] रा०

सूरियाभविमाणवासि [सूर्याभविमानवासिन्]

रा० ७, १५ से १७, ५५, ५६, ५८, २८०, २८२,

२८६, २६१, ६५७

सूरिल्लिमंडवग [दे० सूरिल्लिमण्डवक] रा० १८४.

जी० ३।२६६

सूरिल्लिमंडवय [दे० सूरिल्लिमण्डपक] रा० १८५
 सूहगमणपविभक्ति [सूरोद्गमनप्रविभक्ति] रा० ८६
 सूरोवराग [सूरोवराग] जी० ३६२६, ८४१
 सुल [शूल] ओ० ६४. जी० ३११०
 सुलग [शूलाय] जी० ३. ८५
 सुलभिणग [शूलभिन्नक] ओ० ६०. रा० ७५१
 सुलाइग [शूलातिग] रा० ७५१
 सुलाइय [शूलातिग] रा० ७६७
 सुलाइयग [शूलाचितक, शूलातिग] ओ० ६०
 से [दे०] ओ० ३१. रा० १२. जी० ११२
 सेव [सेतु] ओ० १, ७, ८, १०. जी० ३१२७६
 सेउकर [सेतुकर] ओ० १४. रा० ६७१
 सेउजा [शय्या] ओ० ३७, १२०, १६२, १८०.
 रा० ६६८, ७०४, ७०६, ७११, ७१३, ७५२, ७७६,
 ७८६
 सेट्टि [दे० श्रेष्ठिन्] ओ० १८, २३, ५२, ६३.
 रा० ६८७, ६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४. जी० ३६०६
 सेढी [श्रेणी] ओ० १६, ४७. रा० २४, ७६०, ७६१.
 जी० ३२७७, ५६६, ७२३, ७२६
 सेणा [सेना] ओ० ५५ से ५७, ६२, ६५
 सेणावह [सेनापति] ओ० १८, २३, ५२, ६३.
 रा० ६८७, ६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४
 सेणावच्च [सेनापत्य] ओ० ६८. रा० २८२.
 जी० ३३५०, ४४८, ५६३, ६३७
 सेणावति [सेनापति] जी० ३६०६
 सेत [श्वेत] जी० ३३००, ३५४, ४५४, ८८५
 सेतासोय [श्वेताशोक] जी० ३१८२
 सेषा [दे०] जी० २१६
 सेय [श्वेत] ओ० ५१, ६५, ६७, १६४. रा० १२६,
 १३०, १६२, १६०, २१०, २१२, २२२, २८८.
 जी० ३१६४, ३००, ३१२, ३३५, ३७३, ३८१,
 ६४७
 सेय [स्वेद] ओ० ८६, ८२. जी० ३१५६८
 सेय [श्रेयस्] ओ० ११७. रा० ६, २७५, २७६,
 ७७४, ७७७, ७८१. जी० ३१४४१, ४४२

सेय [सेक] जी० ३१५६२
 सेयकणवीर [श्वेतकणवीर] रा० २६.
 जी० ३१८२
 सेयबंघुजीव [श्वेतबन्धुजीव] रा० २६.
 जी० ३१८२
 सेयमाल [श्वेतमाल] जी० ३१५८२
 सेयविया [श्वेतविका] रा० ६६६ से ६७१, ६८१,
 ६८३, ६६६, ७००, ७०२ से ७०४, ७०६, ७०८,
 ७१० से ७१३, ७१६, ७२६, ७५० से ७५३,
 ७७५, ७७६, ७८०, ७८७, ७८८
 सेयासोय [श्वेताशोक] रा० २६
 सेरियागुम्म [सेरिकागुल्लम] जी० ३१५८०
 सेल [शैल] ओ० ४६. जी० ३१५६४
 सेलपाय [शैलपाय] ओ० १०५, १२८
 सेलबंघण [शैलबन्धन] ओ० १०६, १२६
 सेला [शैला] जी० ३१४
 सेलु [शैलु] जी० ११७१
 सेलेसी [शैलेसी] ओ० १८२
 सेवालगुम्म [शैवालगुल्लम] जी० ३१५८०
 सेवालभक्खि [शैवालभक्षिन्] ओ० ६४
 सेस [शेष] ओ० १२०, १६२. रा० २३६, ६६८,
 ७५२, ७८६. जी० ११६४, ६५, ७७, ७६, ८२,
 ८८, ९०, १०१, १०३, १११, ११२, ११६, १२१,
 १२३, १२४; २१३७, ८६, १२०; ३६८ से ७२,
 १६१, १६५, २१६ से २२६, २४३, २५८, ३५५,
 ६८७, ७०६, ७११, ७४१, ७५०, ७६२, ७६५,
 ७६६, ७६६, ७७०, ७७२, ८३६, ८४२, ८५१,
 ८१४ से ८१६, ८३६, ८५०, ८६२, ११२२;
 ५३१, ३४; ६४४, ६
 सेहवेयावच्च [शैक्षवेयावृत्त्य] ओ० ४१
 √सेहाव [शिक्षय] —सेहाविहिती. ओ० १४६.
 —सेहावेहिद्. रा० ८०६
 सेहावित्ता [शिक्षयित्वा] ओ० १४६
 सेहावेत्ता [शिक्षयित्वा] रा० ८०७
 सोईदिय [श्रीवेन्द्रिय] ओ० ३७. जी० ११३३

सौंडियालिख [मुण्डिकालिख] जी० ३११८

सौंडीर [शीण्डीर] ओ० २७. रा० ८१३

सोक्ख [सौख्य] ओ० २३, १६५, १३, १४, १७.

जी० ३११८, ११६

सोग [शोक] ओ० ४६. रा० ७६५. जी० ३१२८

सोगंधिय [सौगन्धिक] ओ० १२. रा० १०, १२,

१८, २३, ६५, १६५, १७४, १६७, २८८.

जी० ३११८, ११६, २५६, २८६, २६१

सोच्चा [श्रुत्वा] ओ० २१. रा० १३.

जी० ३१४४३

सोणंद [दे०] त्रिपदिका ओ० १६. जी० ३१५६६

सोणि [श्रोणि] जी० ३१५६७

सोणिय [शोणित] रा० ७०३

सोसुणित्तग [श्रोणिसूत्रक] जी० ३१५६३

सोत [श्रोतस्] जी० ३१७४६

सोतिदिय [श्रोत्रेन्द्रिय] जी० ३१६७६, ६७७

सोत्थि [स्वस्ति] जी० ३१७७

सोत्थिकूढ [स्वस्तिकूढ] जी० ३१७७

सोत्थिय [स्वस्तिक] रा० २१, २४, ४६, ८१, २६१.

जी० ३१७७, २८६, ३१४, ३४७, ३५५, ५६७

सोत्थियकंत [स्वस्तिककान्त] जी० ३१७७

सोत्थियज्झय [स्वस्तिकज्झय] जी० ३१७७

सोत्थियपभ [स्वस्तिकप्रभ] जी० ३१७७

सोत्थियलेस [स्वस्तिकलेश] जी० ३१७७

सोत्थियवण [स्वस्तिकवर्ण] जी० ३१७७

सोत्थियसिरिवच्छनेदियावत्तवद्धमाणमभद्रासण-

कलसमच्छदप्पणमंगलभत्तिचित्त [स्वस्तिक-

श्रीवत्तनन्धावत्तवर्धमानकभद्रासनकलशमत्स्य-
दर्पणमङ्गलभक्तिचित्र] रा० ७६

सोत्थियावत्त [स्वस्तिकावत्त] जी० ३१७७

सोत्थिसिग [स्वस्तिशिङ्ग] जी० ३१७७

सोत्थिसिद्ध [स्वस्तिशिष्ट] जी० ३१७७

सोत्थुत्तरवडिसग [स्वस्त्युत्तरावत्तग]

जी० ३१७७

सोधम्म [सौधम] रा० ५६०. जी० २१६६, १४८,
१४६; ३१०३८, १०३६

सोधम्मक [सौधमक] जी० २१४८, १४६

सोधम्मग [सौधमग] जी० ३१०३६

सोधम्मवडिसग [सौधमवित्तमक] रा० १२६

सोधम्मवडिसय [सौधमवित्तसक] रा० १२५

सोपाण [सोपान] जी० ३१४५४, ५६४

सोभ [शोभ] ओ० ६३. जी० ३१७२२, ८२०, ८३०,
८३४, ८३७, ८५५

√सोभ [शोभय] -- सोभति. जी० ३१७०३.

सोभिमु. जी० ३१७०३. -- सोभिस्मति.

जी० ३१७०३. -- सोभेसु. जी० ३१८०५

सोभंत [शोभमान] ओ० ४६. रा० ६६.

जी० ३१३०६, ५६७

सोभग [शोभाय] ओ० २३

सोभण [शोभन] ओ० १४५. रा० ८०५

सोभमाण [शोभमान] जी० ३१५६१

सोभिध [शोभित] ओ० १

सोभेमाण [शोभमान] जी० ३१५८६

सोम [सौम्य] ओ० १५, १६. रा० ७०, १३३,

६७२ जी० ३१३०३, ५६६, ५६७, ११२२

सोमणस [सौमनस] ओ० ५१. जी० ३१६२५, ६३४

सोमणसवण [सौमनसवण] रा० १७३, २७६.

जी० ३१२८५, ४४५

सोमणसा [सौमनसा] जी० ३१६६६, ६२०

सोमणस्सिय [सौमनस्सिय, सौमनस्सिक] ओ० २०

२१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३, ७८, ८०, ८१. रा० ८,

१०, १२ से १४, १६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३,

७२, ७४, २७७, २७६, २८१, २८०, ६५५, ६८१,

६८३, ६९०, ६९५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३,

७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७३४, ७७८.

जी० ३१४४३, ४४५, ४४७, ५५५

सोमलेस [सौमलेश] ओ० २७. रा० ८१३

सोमाकार [सौम्याकार] ओ० १५, १४३.

रा० ६७२, ६७३, ८०१

सोमान [सोमान] रा० ४७, १७५ से १७६, ६५६.

जी० ३, ५५६, ६४०, ६४१, ८५७

सोय [शौच] ओ० २५. रा० ६८६

सोय [श्रोतस्] ओ० १२२

सोयधिय [सौगन्धिक] जी० ३१७

सोयणया [शोचनता] ओ० ४३

सोयधम्म [शौचधर्म] ओ० ६७

सोल [पोडश] जी० ३१२२६१२

सोलस [पोडशन्] ओ० ३३. रा० ७. जी० ३१४

सोलसय [पोडशक] जी० ३१५

सोलसभक्त [पोडशभक्त] ओ० ३२

सोलसविध [पोडशविध] जी० ३१७, ३५७

सोलसविह [पोडशविध] रा० १६५. जी० ३१३४६

सोलसिया [पोडशिका] रा० ७७२

सोल्लिय [एक्क] ओ० १६४

सोवणिय [सौवर्णिक] रा० ३७, २४५, २७६, २८०.

जा० ३१३११, ४०७, ४४५, ४४६, ४४८

सोवत्थिय [सौवस्तिक] ओ० १२, ६४. रा० २४.

जी० ३१२७७, ५६६

सोवाण [सोपान] रा० १६, २० ४८, ५६, ५७,

२०२, २३४, २६४, २७७, २८८, ३१२, ४७३.

जी० ३१२८७, २८८, ३६३, ३६६, ४४३, ४४७,

५३२, ५७६, ६६६, ६८४

सोस [शोष] जी० ३१६२८

सोह [शोभ] ओ० ५२. रा० ६८७ से ६८६

सोहंत [शोभमान] रा० १३६

सोहग [सौभाग्य] ओ० ६६

सोहम्म [सौधर्म] ओ० ५१, ६५, १६०, १६२.

रा० ७, १२, ५६, १२४, २७६, ७६६. जी० ११५६;

२११६, ४६, १४६; ३१६३७, १०३८, १०५७,

१०६५, १०६७, १०७१, १०७३, १०७५, १०७७

से १०८३, १०८५, १०८७, १०८०, १०८१,

१०८३, १०८७ से १०८६, ११०१, ११०५,

११०७, ११०८ से १११२, १११४, १११७,

११६, ११२१, ११२२, ११२४, ११२८

सोहम्मा [सुधर्मा] जी० ३१३७३

सोहि [शोधि] ओ० २५

सोहिय [शोमित] ओ० ५, ६, ८, १६४ जी० ३१२७४,

२७५

ह

हंत [हन्त] रा० १५

हंता [हन्त] ओ० ८४. रा० १७३. जी० ३११३

हंस [हंसा] ओ० ६६. रा० २६. जी० ३१२८२,

५६७

हंसगम्भ [हंसगर्भ] रा० १०, १२, १८, ६५, १६५,

२७६. जी० ३१७, २८४

हंसगम्भतुलिया [हंसगर्भतुलिका] रा० ३१

हंसगम्भतुली [हंसगर्भतुली] जी० ३१२८४

हंसगम्भमय [हंसगर्भमय] रा० १३०. जी० ३१३००

हंसस्तर [हंसस्तर] रा० १३५. जी० ३१३०५, ५६८

हंसावलिपविभक्ति [हंसावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

हंसासण [हंसासन] रा० १८१, १८३, १८५.

जी० ३१२६३, २६५, २६७, ८५७

√हवकार [आ+कारय]—हवकारेति रा० २८१.

जी० ३१४४७

हट्ट [हृष्ट] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३,

६८, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४, १६

से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७, २७६,

२८१, २८०, ६५५, ६८१, ६८३, ६८०, ६८५, ७००,

७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६,

७७४, ७७८. जी० ३, ४४३, ४४५, ४४७, ५५५

हडप्पगाह [हडप्पगाह] ओ० ६४

हडिबद्धग [हडिबद्धक] ओ० ६०

√हण [घातय]—हण रा० ७६१

हणु [हनु] ओ० १६

हणुया [हनुका] जी० ३१५६६, ५६७

हत्थ [हस्त] ओ० २१, ५४, ६६, १११ से ११३,

१३७, १३८. रा० १३३, २८१, २८८ से २९०,

६५६, ७१६, ७५३, ८०४. जी० ३१४४७, ४५४

से ४५६, ५६७

हृत्थ [दे०] ओ० ५७

हृत्थग [हस्तक] ओ० १२. जी० ३१२६१, ३१५,
६३६, ६५१, ६७७, ८६४

हृत्थच्छिण्णग [हस्तच्छिन्नक] रा० ७५१

हृत्थच्छिण्णय [हस्तच्छिन्नक] रा० ७६७

हृत्थछिण्णग [हस्तच्छिन्नक] ओ० ६०

हृत्थतल [हस्ततल] रा० २५४. जी० ३१४१५

हृत्थमालग [हस्तमालक] जी० ३१५६३

हृत्थय [हस्तक] रा० २३, २२३

हृत्थाभरण [हस्ताभरण] ओ० ४७, ७२

हृत्थि [हस्तिन्] ओ० १०१, १२४. रा० ७७२.

जी० ३१८४, ६१८

हृत्थिक्खंघ [हस्तिस्कन्ध] ओ० ६५

हृत्थिगुलमुलाइय [हस्तिगुलमुलायित] रा० २८१.

जी० ३१४४७

हृत्थितावस [हस्तितापस] ओ० ६४

हृत्थिमुह [हस्तिमुख] जी० ३१२१६

हृत्थिरयण [हस्तिरत्न] ओ० ५५ से ५७, ६२ से
६४, ६६

हृत्थिवाउय [हस्तिव्यापृत] ओ० ५६, ५७

हृत्थिसौंड [हस्तिशौण्ड] जी० ११८८

हृत्थिमय [हृत्थि] जी० ३१५६४, ६०४

हृय [हय] ओ० १६, ४८, ५१, ५२, ५५ से ५७, ६२,
६५. रा० १४१ से १४४, १६२ से १६५,

२८५, ६८७ से ६८९. जी० ३१२६६, २६७,

३१८, ३५५, ४५१, ५६६

हृयकंठ [हृयकण्ठ] रा० १५५, २५८. जी० ३१३२८

हृयकंठग [हृयकण्ठक] जी० ३१४१६

हृयकण [हृयकर्ण] जी० ३१२१६, २२२ से २२५,
२२६, ३१

हृयकण्णदीव [हृयकर्णद्वीप] जी० ३१२२२

हृयजोहि [हृयजोधिन्] ओ० १४८, १४९.

रा० ८०६, ८१०

हृयलक्खण [हृयलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

हृयविलंबिय [हृयविलम्बित] रा० ६१

हृयविलसिय [हृयविलसित] रा० ६१

हृयहेसिय [हृयहेसित] रा० २८१. जी० ३१४४७

हरतणुय [हस्तनुक] जी० १६५

हरय [हृद] रा० २६२ से २६५, २७३, २७७,
४७३. जी० ३१४२५, ४२६, ४३८, ४४३, ५३२

हरि [हरित्] रा० २७६. जी० ३१४४५

हरिओभास [हरितावभास] रा० १७०, ७०३.

जी० ३१२७३

हरिकंता [हरिकान्ता] रा० २७६. जी० ३१४४५

हरितकाय [हरितकाय] जी० ३१७४

हरितग [हरितक] जी० ३१३२४

हरिताभ [हरिताभ] जी० ३१८७८

हरिताल [हरिताल] जी० ३१८७८

हरिय [हरित] ओ० ४, ५, ८, १०३, १२६, १३५.

रा० १७०, ७०३. जी० १६६, ३१२७३, २७४

हरिय [भरित] जी० ३१८८५

हरियकाय [हरितकाय] जी० ३१७४

हरियग [हरितक] रा० १५१, ७८२

हरियच्छाय [हरितच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
७०३. जी० ३१२७३

हरियाल [हरिताल] रा० २८, १६१, २५८, २७६.
जी० ३१२८१, ३३४, ४१६

हरियालिया [हरितालिका] रा० २८

हरियोभास [हरितावभास] ओ० ४

हरिवास [हरिवर्ष] रा० २७६. जी० ३११३, ३२,
५६, ७०, ७२, ६६, १४७, १४९; ३१२२८, ४४५,
७६५

हरिवाहण [हरिवाहन] जी० ३१६२३

हरिस [हृष] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३, ७८,
८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४, १६ से १८,
४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७, २७९, २८१,
२८०, ६६५, ६८१, ६८३, ६८०, ६८५, ७००, ७०७,
७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७७४,
७७८. जी० ३१४४३, ४४५, ४४७, ५५५

हरिसय [हृषक] जी० ३१५६३

हरिसिय [हृषित] रा० १७३. जी० ३१८८५

हल [हल] ओ० १. जी० ३१११०

हलधर [हलधर] ओ० १३. रा० २६.

जी० ३।२७६

हलिद्रा [हरिद्रा] रा० २८. जी० ३।२८१

√हव [भू]—हवति ओ० १८३. जी० ३।१२

—हवेज्ज ओ० १६५।४.—हवेज्जा

ओ० १६५।१५

हव्व [अर्वाच्] ओ० ५७

हव्वं [अर्वाच्] ओ० १७०. रा० ७२०. जी० ३।८६

√हस [हस्]—हसति रा० १८५.—हसिज्जइ

रा० ७८३

हसंत [हसत्] ओ० ६४

हसिय [हसित] ओ० १५, ४६. रा० ७०, ६७२,

८०६, ८१०. जी० ३।५६७

हस्स [हस्व] ओ० १८२, १६५।४

√हाय [हा]—हायइ जी० ३।७३१.—हायति

जी० ३।७२३

हायण [हायन] जी० ३।११८, ११६

हार [हार] ओ० २१, ४७, ५२, ५४, ६३, ६५, ७२,

१०८, १३१, १६४. रा० ८, २६, ४०, १३२,

२८५, ६८७ से ६८६, ७१४. जी० ३।२६५,

२८२, ३०२, ५६२, ६३५, ११२१

हारपुब्बय (पाय) [हारपुट्कपात्र] ओ० १०५,

१२८

हारपुब्बय (बंधण) [हारपुट्कबन्धन] ओ० १०६,

१२६

हारभद्द [हारभद्र] जी० ३।६३५

हारमहाभद्द [हारमहाभद्र] जी० ३।६३५

हारमहावर [हारमहावर] जी० ३।६३५

हारवर [हारवर] जी० ३।६३५

हारवरभद्द [हारवरभद्र] जी० ३।६३५

हारवरमहाभद्द [हारवरमहाभद्र] जी० ३।६३५

हारवरमहावर [हारवरमहावर] जी० ३।६३५

हारवरोभास [हारवरावभास] जी० ३।६३५

हारवरोभासभद्द [हारवरावभासभद्र]

जी० ३।६३५

हारवरोभासमहाभद्द [हारवरावभासमहाभद्र]

जी० ३।६३५

हारवरोभासमहावर [हारवरावभासमहावर]

जी० ३।६३५

हारवरोभासवर [हारवरावभासवर]

जी० ३।६३५

हालिद्द [हारिद्र] ओ० १२. रा० २२, २४, २८,

१२८, १३२, १५३. जी० १।५, १३६; ३।२२,

४५, २८१, २६०, ३२६, १०७५, १०७६

हालिद्दग [हारिद्रक] जी० ३।२८१

हास [हास] ओ० २८, ४६, ५१

हास [हस्व] जी० ३।७८१, ७८२

हासकर [हासकर] ओ० ६४

हिगुल्लय [हिङ्गुलक] रा० १६१, २५८, २८१.

जी० ३।३३४, ४१६

हिसप्पयाण [हिसप्रदान] ओ० १३६

हिसाणुबंधि [हिसानुबन्धिन्] ओ० ४३

हिद्धिमय [अधस्तन] जी० ३।५

हित [हित] जी० ३।४४१, ४४२

हिम [हिम] रा० २५५. जी० १।६५; ३।११६,

४१६

हिमकूळ [हिमकूट] जी० ३।११६

हिमपडल [हिमपटल] जी० ३।११६

हिमपुब्ब [हिमपुञ्ज] जी० ३।११६

हिमवंत [हिमवत्] ओ० १४. रा० १७३, ६७१,

६७६

हियज्जप्पाडियग [उत्पाटितकहृदय] ओ० ६०

हिय [हित] ओ० ५२. रा० १५, २७५, २७६, ६८७

हियय [हृदय] ओ० २०, २१, २७, ५३, ५४, ५६, ६२,

६३, ६६, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४,

१६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७,

२७८, २८१, २८०, ६५५, ६८१, ६८३, ६८०,

६६५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६,

७१८, ७२५, ७२६ ७५० से ७५३, ७७४, ७७८,

८१३. जी० ३।४४३, ४४५, ४४७, ५५५

हिययगमणिज्ज [हृदयगमनीय] ओ० ६८

हियसूल [हृदयसूल] जी० ३।११६, ६२८

हिरण्य [हिरण्य] ओ० २३. रा० २८१, ६६५.

जी० ३।४४७, ६०८, ६३१

हिरण्यजुति [हिरण्ययुक्ति] ओ० १४६. रा० ८०६

हिरण्यपाण [हिरण्यपाक] ओ० १४६. रा० ८०६

हिरण्यवय [हिरण्यवत] जी० ३।२८८

हिरिति [दे०] जी० १।७३

हिरी [ह्री] रा० ७३२, ७३७, ७७४

हीण [हीन] ओ० १६५।४. रा० ७७४.

जी० ३।७३

हीर [हीर] जी० ३।६२२

हीरय [हीरक] जी० ३।६२२

हीलणा [हीलना] ओ० १५४, १६५, १६६,

रा० ८१६

√हु [भू]—हुंति. जी० १।१४

हुंढ [हुण्ड] जी० १।८६, ६५, १०१, ११६; ३।६३,

१२६।३, ४

हुंबज्जु [दे०] ओ० ६४

हुडुक्क [हुडुक्क] ओ० ६७. रा० १३, ६५७.

जी० ३।४४६

हुडुक्की [हुडुक्की] रा० ७७

हुतवह [हुतवह] जी० ३।५६६

हुयवह [हुतवह] ओ० १६, ४७. जी० ३।५६०

हुयासन [हुतासन] ओ० २७. रा० ८१३

हुडुय [हुडुक्क] जी० ३।८४१

हुडुयमाण [दे० जाज्वल्यमान] जी० ३।११८

हेउ [हेतु] ओ० ११६. रा० १६, ७१६, ७४८ से

७५०, ७७३

हेडा [अधस्] ओ० १३, १८२. रा० ४, २४०.

जी० ३।७७, ८०, ३५६, ४०२

हेट्टि [अधस्] जी० ३।६६८

हेट्टिम [अधस्तन] जी० ३।७० से ७२, ११११।३

हेट्टिमगेविज्ज [अधस्तनग्रैवेय] जी० २।६६

हेट्टिमगेवेज्जण [अधस्तनग्रैवेयक] जी० ३।१०५६

हेट्टिममज्झिमिल्ल [अधस्तनमध्यम] जी० ३।७२६

हेट्टिल्ल [अधस्तन] जी० ३।६०, ६२ से ७१, ७२५,

७२८, ७२९, १००३, १००४, १००७, ११११

हेट्टिल्लमज्झिल्ल [अधस्तनमध्यम] जी० ३।७२६

हेट्टिल्लातो [अधस्तनतस्] जी० ३।६६, ७२

हेमंतिण [हैमन्तिक] ओ० २६. रा० ४५

हेमजाल [हेमजाल] रा० १३२, १७३, १६१, ६८१.

जी० ३।२६५, २८५, ३०२, ५६३

हेमण [हेमात्मन्] जी० ३।५६५

हेमवत्त [हैमवत] जी० २।६६, १४७, १४६; ३।७६५

हेमवय [हैमवत] ओ० ६४. रा० १७३, २७६, ६८१.

जी० २।१३, ३१, ५८, ७०, ७२; ३।२२८, २८५,

४४५

हेरणवत्त [हैरण्यवत] जी० २।६६, १४७; ३।७६५

हेरणवय [हैरण्यवत] जी० २।१४६; ३।४४५

हेस [हेस] जी० ३।६३१

हेसयालवण [हेसतालवन] जी० ३।५८१

√हो [भू]—होइ ओ० १६५।५. रा० १३०.

जी० १।१३६—होई. जी० ३।१२६।३

—होउ. ओ० १४४. रा० ७३०—होति.

रा० १३०. जी० १।७२—होति. ओ० १६५।८.

जी० ३।१६४—होज्ज. रा० ७५४.

जी० ३।५६२.—होज्जा. रा० ७१८,—होत्था

ओ० १. रा० १

होत्तिण [होत्रिक] ओ० ६४

होरंभा [होरम्भा] रा० ७७. जी० ३।५८८

√ह्रस्वीकर [ह्रस्वी+कृ]—ह्रस्वीकरेज्ज

जी० ३।६६७

ह्रस्वीकरित्तए [ह्रस्वीकर्तुम्] जी० ३।६६४

शुद्धि-पत्र

पृ०	पं०	अशुद्ध	'शुद्ध
३	१२	बससंडेअं	वणसंडेअं
१६	१७	धम्मोप°	धम्मोव°
१७	६	भगवाओ	भगवओ
२७	७	विउसअमे	विउस्सअमे
३६	३	विह्णि°	विह्णि°
५६	७	तुंबविणिपेच्छा	तुंबविणियपेच्छा
६७	१२	सयमेव	सयमेव
८४	२२	जायमेव	जीयमेव
६३	३	घोसेडिया	घोसाडिया
६३	१२	पोंडरिय°	पोंडरीय°
१०५	२	डिडिमाअ	डिडिमाअ
११६	६	रुच्छ°	अरुच्छ°
२७३	१५	गुब्बअ	गुब्बअ
२६७	१	ऊसित्ता	ऊसिता
३१५	११	सुअ	सुअ
३१५	टि० १३ का अन्तिम		'सुवण्णसुअरययवालुयाओ' इति सुवण्णं—पीतकान्तिहेम सुअं— रूप्यविशेषः रजतं—प्रतीतं तन्मय्यो वालुका यासु ताः सुवण्णसुअ- रजतवालुका (मवू)
३२०	पं० ११	°विअ्वुइ°	°विअ्वुइ°
३७५	टि० १२	३१६८६	३१६८६
३८१	पं० १६	पत्तेय-	पत्तेय-
४२६	पं० ६	उववेता	उववेता
४५७	पं० ६	वाघाइमे	वाघाइमे
४६५	पं० ६	अणत्तरो°	अणत्तरो°
४७३	पं० ४	तिरिअख°	तिरिअख°
६७६		पमोकअख	पमोकअख

